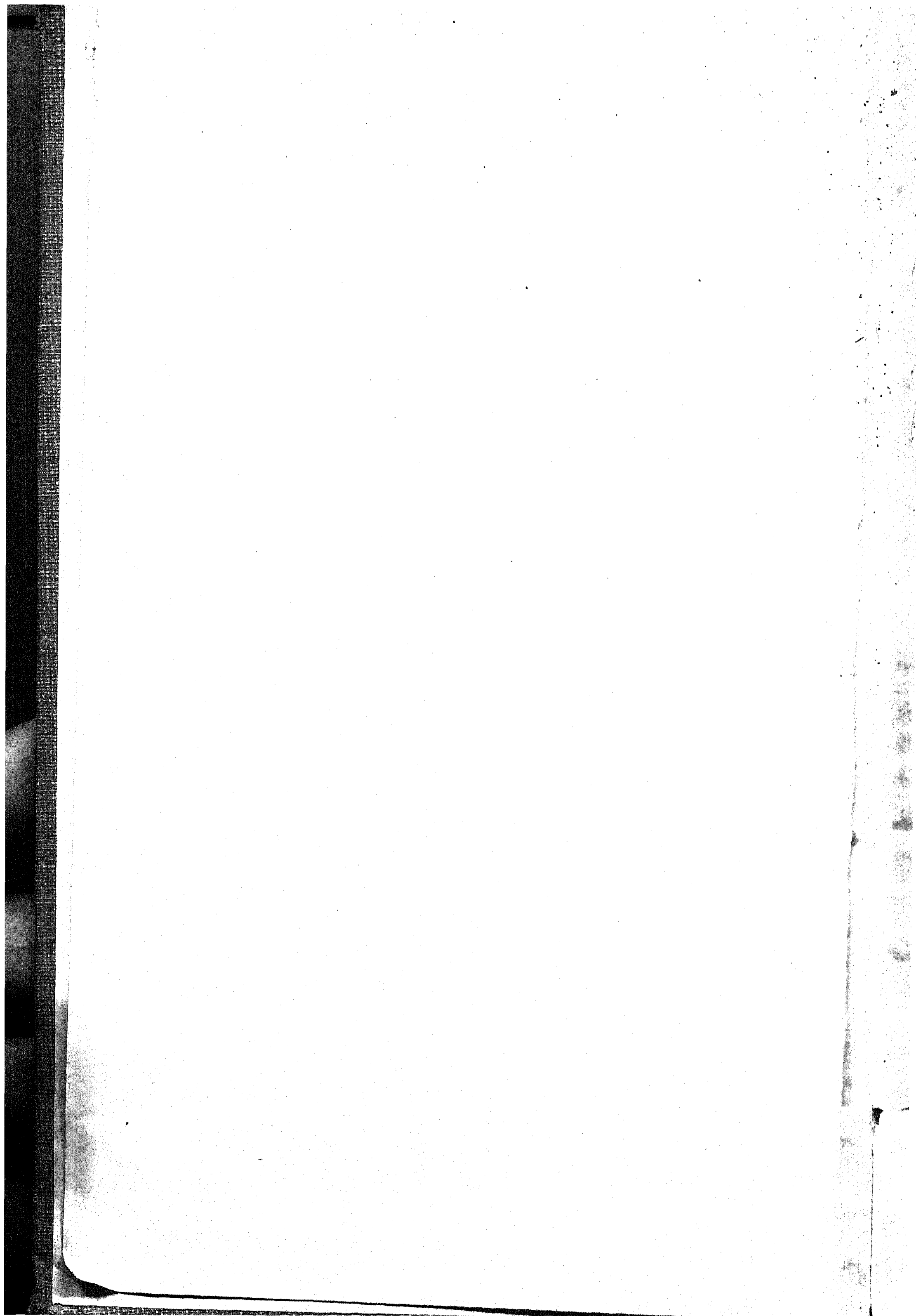
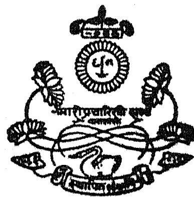


सूर्यकुमारी पुस्तकमाला—३५

मानस अनुशीलन

[श्री शंभुनारायण चौबे]

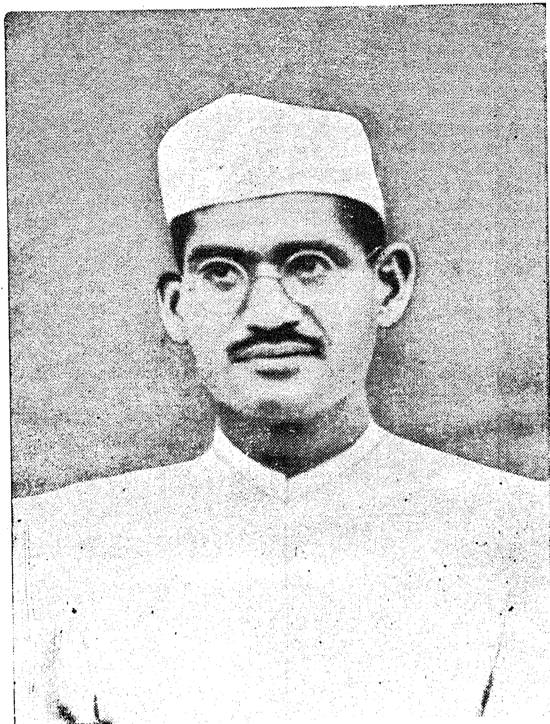


संपादक

सुधाकर पांडेय

नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

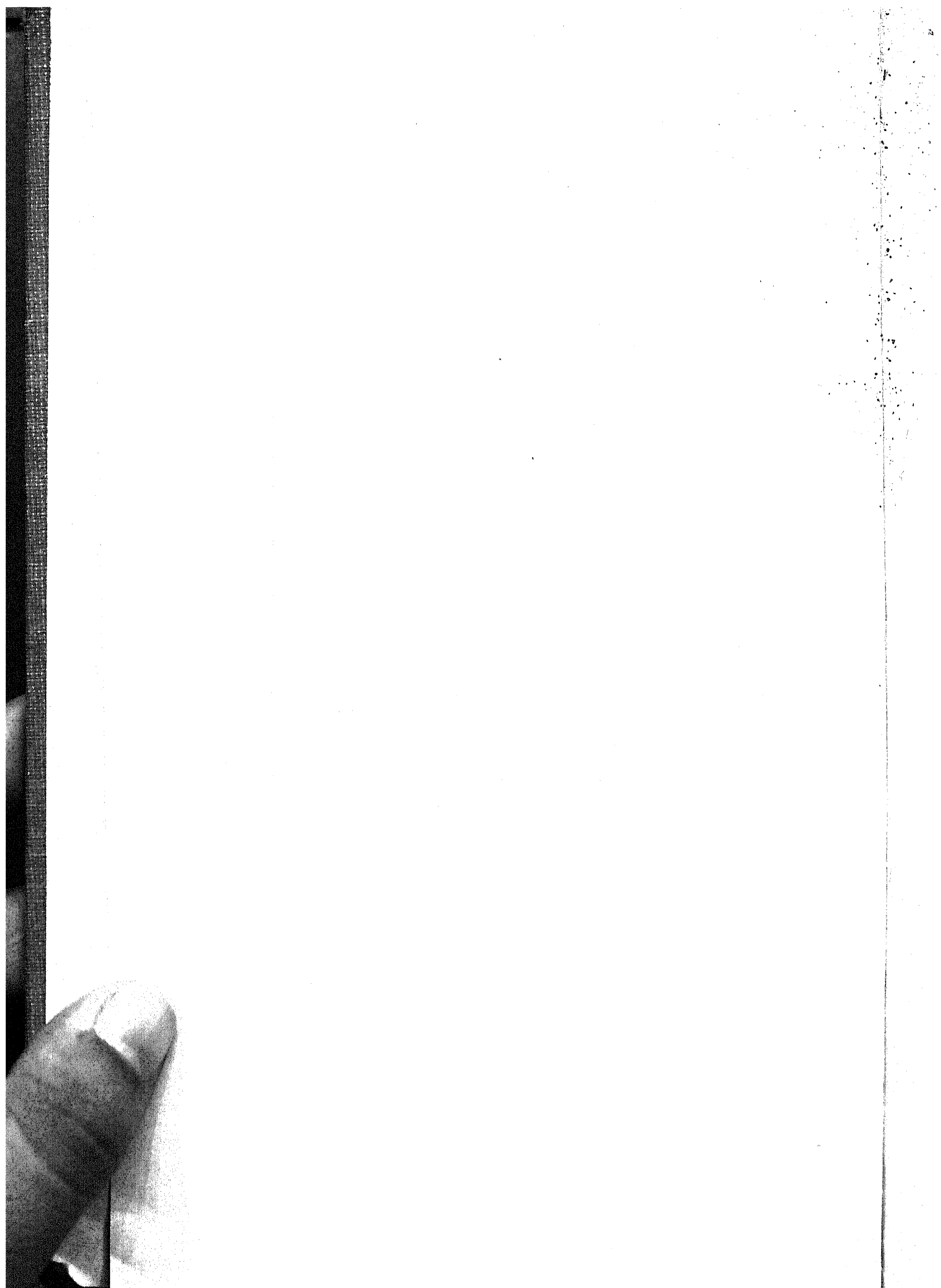
प्रकाशक—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।
मुद्रक—शंभुनाथ वाजपेयी, नागरी मुद्रण, काशी।
मूल्य—१६.७५।
प्रथम संस्करण, १६०० प्र०, सं० २०२४ वि०।



मानसमराल स्व० पं० शंभुनारायण जी चौबे

जन्म
१७ अक्टूबर, १९०३ ई०

निधन
२ मार्च, १९४७ ई०



ग्रंथमाला का परिचय

जयपुर राज्य के शेखावाटी प्रांत में खेतड़ी राज्य था। वहाँ के राजा श्री अजीतसिंहजी बहादुर बड़े यशस्वी और विद्याप्रेमी हुए। गणितशास्त्र में उनकी अद्भुत गति थी। विज्ञान उन्हें बहुत प्रिय था। राजनीति में वे दक्ष और गुणग्राहिता में अद्वितीय थे। दर्शन और अध्यात्म की रुचि उन्हें इतनी थी कि विलायत जाने से पहले और पीछे स्वामी विवेकानंद उनके यहाँ महीनों रहे। स्वामीजी से घंटों शास्त्रचर्चा हुआ करती थी। राजपूताने में प्रसिद्ध है कि जयपुर के पुण्यश्लोक महाराज श्री रामसिंहजी को छोड़ कर ऐसी सर्वतोमुखी प्रतिभा तब राजा श्री अजीतसिंह में ही दिखाई दी थी।

राजा श्री अजीतसिंह जी की रानी चाँपावत जी, आउआ (मारवाड़), के गर्भ से तीन संतति हुईं — दो कन्या, एक पुत्र। ज्येष्ठ कन्या श्रीमती सूर्यकुमारी थीं, जिनका विवाह शाहपुरा के राजाधिराज सर श्री नाहरसिंहजी के ज्येष्ठ चिरंजीव और युवराज राजकुमार श्री उमेदसिंह जी से हुआ। छोटी कन्या श्रीमती चाँदकुँवर का विवाह प्रतापगढ़ के महारावल सर रघुनाथसिंह जी साहब के युवराज महाराजकुमार श्री मानसिंह जी से हुआ। तीसरी संतान युवराज राजकुमार जयसिंहजी थे, जो राजा श्री अजीतसिंहजी के स्वर्गवास के पीछे खेतड़ी के राजा हुए।

इन तीनों के शुभचिंतकों के लिये तीनों की स्मृति, संचित कर्मों के परिणाम से दुःखमय हुई। जयसिंह जी का स्वर्गवास सत्रह वर्ष की अवस्था में हुआ। सारी प्रजा, सब शुभचिंतकों, संबंधियों, मित्रों और गुरुजनों के हृदय आज भी उस आँच से जल ही रहे हैं। अश्वत्थामा के व्रण की तरह यह घाव कभी भरने का नहीं। ऐसे आशामय जीवन का ऐसा निराशात्मक परिणाम कदाचित् ही हुआ हो। श्रीमती सूर्यकुमारीजी को एकमात्र भाई के वियोग की ऐसी ठेस लगी कि तदनंतर दो ही तीन वर्ष में उनका शरीरांत हो गया। श्री चाँदकुँवरजी को वैधव्य की विषम यातना भोगनी पड़ी, और भ्रातृवियोग तथा पतिवियोग दोनों का असह्य दुःख वे झेल रही हैं। किंतु इतने से ही दुर्दैव का कोप पूरा नहीं हुआ। उनके एकमात्र पुत्र, प्रतापगढ़ के महारावल सर रामसिंहजी, जिनके लिये इस परिचय में लिखते आए हैं, कि उनके एकमात्र चिरंजीव

ग्रंथमाला का परिचय

जयपुर राज्य के शेखावाटी प्रांत में खेतड़ी राज्य था। वहाँ के राजा श्री अजीतसिंहजी बहादुर बड़े यशस्वी और विद्याप्रेमी हुए। गणितशास्त्र में उनकी अद्भुत गति थी। विज्ञान उन्हें बहुत प्रिय था। राजनीति में वे दक्ष और गुणग्राहिता में अद्वितीय थे। दर्शन और अध्यात्म की रुचि उन्हें इतनी थी कि विलायत जाने से पहले और पीछे स्वामी विवेकानंद उनके यहाँ महीनों रहे। स्वामीजी से घंटों शास्त्रचर्चा हुआ करती थी। राजपूताने में प्रसिद्ध है कि जयपुर के पुण्यश्लोक महाराज श्री रामसिंहजी को छोड़ कर ऐसी सर्वतोमुखी प्रतिभा तब राजा श्री अजीतसिंह में ही दिखाई दी थी।

राजा श्री अजीतसिंह जी की रानी चाँपावत जी, आउआ (मारवाड़), के गर्भ से तीन संतति हुईं — दो कन्या, एक पुत्र। ज्येष्ठ कन्या श्रीमती सूर्यकुमारी थीं, जिनका विवाह शाहपुरा के राजाधिराज सर श्री नाहरसिंहजी के ज्येष्ठ चिरंजीव और युवराज राजकुमार श्री उमेदसिंह जी से हुआ। छोटी कन्या श्रीमती चाँदकुँवर का विवाह प्रतापगढ़ के महारावल सर रघुनाथसिंह जी साहब के युवराज महाराजकुमार श्री मानसिंह जी से हुआ। तीसरी संतान युवराज राजकुमार जयसिंहजी थे, जो राजा श्री अजीतसिंहजी के स्वर्गवास के पीछे खेतड़ी के राजा हुए।

इन तीनों के शुभचिंतकों के लिये तीनों की स्मृति, संचित कर्मों के परिणाम से दुःखमय हुई। जयसिंह जी का स्वर्गवास सत्रह वर्ष की अवस्था में हुआ। सारी प्रजा, सब शुभचिंतकों, संबंधियों, मित्रों और गुरुजनों के हृदय आज भी उस आँच से जल ही रहे हैं। अश्वत्थामा के व्रण की तरह यह घाव कभी भरने का नहीं। ऐसे आशामय जीवन का ऐसा निराशात्मक परिणाम कदाचित् ही हुआ हो। श्रीमती सूर्यकुमारीजी को एकमात्र भाई के वियोग की ऐसी ठेस लगी कि तदनंतर दो ही तीन वर्ष में उनका शरीरांत हो गया। श्री चाँदकुँवरजी को वैधव्य की विषम यातना भोगनी पड़ी, और भ्रातृवियोग तथा पतिवियोग दोनों का असह्य दुःख वे झेल रही हैं। किंतु इतने से ही दुर्दैव का कोप पूरा नहीं हुआ। उनके एकमात्र पुत्र, प्रतापगढ़ के महारावल सर रामसिंहजी, जिनके लिये इस परिचय में लिखते आए हैं, कि उनके एकमात्र चिरंजीव

कुँवर रामसिंह जी से मातामह राजा श्री अजीतसिंहजी का कुल प्रजावान् है' का भी जनवरी, १९४६ ई० में देहांत हो गया। यों श्रीमती चाँदकुँवरजी को पुत्रवियोग का यह महान् दुःख भी तब से भोगना पड़ रहा है।

श्रीमती सूर्यकुमारीजी की कोई संतति जीवित न रही। उनके बहुत आग्रह करने पर भी राजकुमार श्री उमेदसिंह जी ने उनके जीवनकाल में दूसरा विवाह नहीं किया, किंतु उनके वियोग के पीछे, उनके आज्ञानुसार कृष्णगढ़ में विवाह किया, जिससे उनके चिरंजीव वंशांकुर, शाहपुरा के वर्तमान राजाधिराज श्रीसुदर्शनदेव, विद्यमान हैं।

श्रीमती सूर्यकुमारी जी बहुत शिक्षिता थीं। उनका अध्ययन विस्तृत था। उनका हिंदी का पुस्तकालय परिपूर्ण था। हिंदी इतनी अच्छी लिखती थीं और अक्षर इतने सुंदर होते थे कि देखनेवाला चमत्कृत रह जाता। स्वर्गवास के कुछ समय पूर्व श्रीमती ने कहा था कि स्वामी विवेकानंद जी के सब ग्रंथों, व्याख्यानों और लेखों का प्रामाणिक हिंदी अनुवाद मैं छपवाऊँगी। बाल्यकाल से ही स्वामीजी के लेखों और अध्यात्म, विशेषतः अद्वैत वेदांत, की ओर श्रीमती जी की रुचि थी। श्रीमती जी के निर्देशानुसार इसका कार्यक्रम बाँधा गया। साथ ही श्रीमती जी ने यह इच्छा प्रकट की कि इस संबंध में हिंदी में उत्तमोत्तम ग्रंथों के प्रकाशन के लिये एक अक्षय निधि की व्यवस्था का भी सूत्रपात हो जाए। इसका व्यवस्थापत्र बनते न बनते श्रीमती का स्वर्गवास हो गया।

राजकुमार श्री उमेदसिंह जी ने (जो बाद में शाहपुरा के राजाधिराज हुए और जिनका स्वर्गवास सन् १९५४ ई० में हुआ) श्रीमती की इस अंतिम कामना के अनुसार बीस हजार रुपए देकर काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा इस ग्रंथमाला के प्रकाशन की व्यवस्था की।

तीस हजार रुपए के सूद से गुरुकुल विश्वविद्यालत, कांगड़ी, में 'सूर्य-कुमारी आर्यभाषा गद्दी (चेयर)' की स्थापना की। पाँच हजार रुपए से उपर्युक्त गुरुकुल में चेयर के साथ ही सूर्यकुमारी निधि की स्थापना कर वहाँ से भी सूर्यकुमारी ग्रंथावली के प्रकाशन की व्यवस्था की थी।

पाँच हजार रुपए दरबार हाई स्कूल, शाहपुरा, में 'सूर्यकुमारी विज्ञानभवन' के लिये प्रदान किए।

नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी द्वारा प्रकाशित की जा रही, इस सूर्यकुमारी ग्रंथमाला में स्वामी विवेकानंद जी के यावत् निबंधों के अतिरिक्त और भी उत्तमोत्तम ग्रंथ छापे जा रहे हैं और अल्प मूल्य पर सर्वसाधारण के लिये सुलभ किए जा रहे हैं। ग्रंथमाला की बिक्री की आय भी इस में लगाई जा रही है। यों श्रीमती सूर्यकुमारी तथा श्रीमान् उमेदसिंह जी के पुण्य तथा यश की निरंतर वृद्धि आगे भी होती रहेगी और हिंदी भाषा का अभ्युदय तथा उसके पाठकों को ज्ञानलाभ होगा।

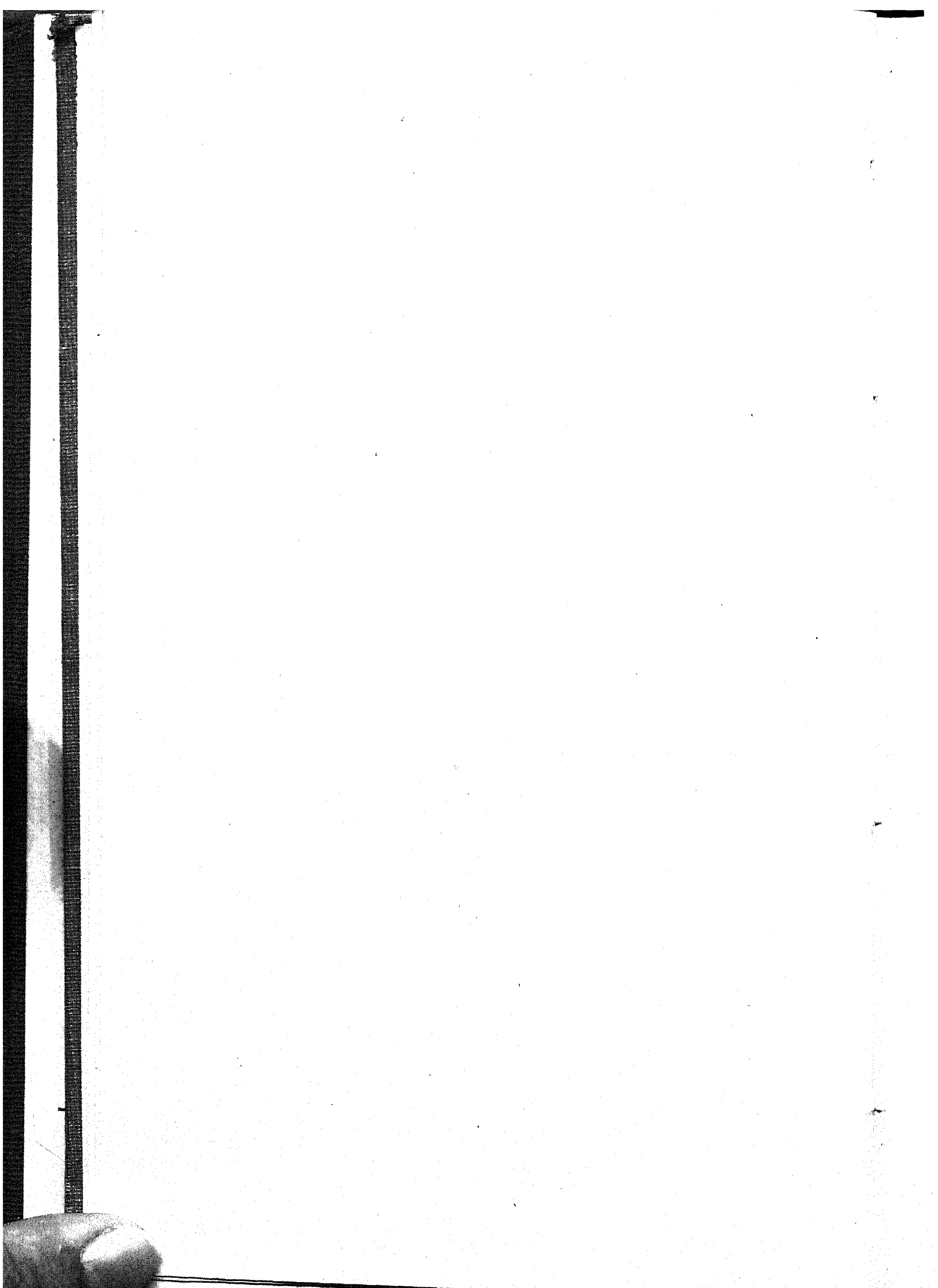
———

श्री पं० कमलापति त्रिपाठी को

जिनके लिये

"सुख दुख सरिस प्रसंसा गारी"

है।



विभागीय निवेदन

हस्तलेखों का प्रामाणिक संपादन आज बहुत कुछ वैज्ञानिक पद्धति पर चल रहा है। वैज्ञानिक संपादन पर अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित हो गए हैं। भाषा और साहित्य की उच्चतर कक्षाओं में पाठालोचन और वैज्ञानिक संपादन का गहन अध्ययन होने लगा है। उक्त विषय पर अध्यापन भी होता है और परीक्षाएँ भी होती हैं। अतएव हस्तलेखों के आधार पर वैज्ञानिक संपादन को एक विशिष्ट विज्ञान कहा जा सकता है। इस विषय के सिद्धांतों और ग्राह्य दृष्टिबिंदुओं की विस्तृत विवेचना यहाँ अभीष्ट नहीं है। यहाँ केवल संपादन की अद्यतन वैज्ञानिक पद्धति की ओर इंगित मात्र करना अभीप्सित था।

वैज्ञानिक संपादन में हस्तलेखों और विशेषतः प्राचीनतम हस्तलेखों का महत्व निश्चय ही सर्वाधिक होता है। पर वही सब कुछ नहीं होता। लिपि-कर्ता अथवा लिखक आदि के अज्ञान या प्रमाद आदि—उसकी महत्ता के प्रतिबंधक अनेक कारण हो सकते हैं। उसकी वर्णलेखन की रीति भी भ्रामक हो सकती है। अन्य भी अनेक कारण या परिस्थितियाँ अथवा लिपिकरणरूढ़ियाँ हो सकती हैं जिनके कारण पाठांतर हो जाते हैं, अशुद्ध पाठ भी अंकुरित होते हैं। इतना ही नहीं, मूल लेखक के विद्वान् और भाषा मर्मज्ञ होने पर भी कभी कभी उसके मूल हस्तलेख से ही भ्रांतियाँ प्रचलित होती हैं। लेखक समकालीन लेखनरूढ़ियों के कारण अथवा लेखक की अक्षरविन्यासरीति के कारण ऐसे भ्रामक प्रसंग उपस्थित हो जा सकते हैं। उदाहरण के लिये—'चले मत्त गज घटा बिराजी' उपस्थित किया जा सकता है। इस उदाहरण में 'घटा' लिखने में 'टा' का 'य' हो गया और फिर 'घय' पाठ भी कहीं कहीं चल पड़ा। पर आगे चलकर 'घय' की अबोध्यता ने 'घय' को पुनः 'घटा' बना दिया।

यह सब कहने का यहाँ तात्पर्य इतना ही है कि वैज्ञानिक संपादन में प्राचीनतम हस्तलेखों का महत्व होने पर भी पाठालोचन (अभिधेयार्थ में) अत्यंत आवश्यक है। प्राचीनतम उपलब्ध पाठ को आँख मूँदकर मान्यता नहीं दी जा सकती। जड़ विज्ञान की वैज्ञानिकता कुछ भिन्न होती है और

चेतन विज्ञान की भिन्न। अतः 'मक्षिकास्थाने मक्षिका' वाली लिपिकरण रीति जड़ विज्ञान की प्रणाली है। मानव के चेतन मानस से प्रादुर्भावित वाङ्-मय रचना की प्रणाली चेतन विज्ञान की परिधि में आती है। अतः वैज्ञानिक संपादन में 'पाठालोचन' भी विशिष्ट महत्व रखता है। जिन प्राचीनतम पाठों को संपादक अशुद्ध, भ्रमजनित अथवा प्रमादजन्य समझता है—उन्हें भी पाठांतर में स्थान अवश्य दे दिया जाता है, सर्वथा त्याज्य मानकर उनका बहिष्कार नहीं होता।

इस परिस्थिति में पाठानुसंधान और पाठालोचन के सिद्धांतसूत्रों का आश्रय लेकर वैज्ञानिक संपादन का कार्य सरल नहीं होता। संपादक के लिये ग्रंथविषय, ग्रंथभाषा, ग्रंथपरंपरा आदि की ज्ञानसरिता में नदीष्ण होना अत्यावश्यक है। तभी वह संपाद्य रचना का समुचित संपादन कर पाता है।

रामचरितमानस के संपादन में कठिनाई बढ़ जाने के अनेक कारण हैं। अत्यधिक लोकप्रिय और लोकप्रचलित हो जाने के कारण इसकी प्रतिलिपियों की संख्या बहुत बढ़ गई। कहा जाता है कि गोस्वामी जी के जीवनकाल में ही बड़ी तीव्र गति से इनकी प्रतिलिपियाँ की जाने लगी थीं। तुलसीदास के जीवन में ही 'रामचरितमानस' के आधार पर—सुना जाता है—रामलीला प्रारंभ हो गई थी। जनबोध्य भाषा में लिखित होने के कारण इसका पाठ भी उसी समय से होने लगा था। धार्मिक और आध्यात्मिक स्वाध्याय के रूप में आस्थाशील जन इस सुबोध ग्रंथ का बोधपूर्वक पाठ करने लगे थे। निगमागम और श्रुतिस्मृतिपुराण के साहित्यस्वरूप इस ग्रंथ ने अपने क्षेत्र के आस्थावान् जनमानस में अनुपम श्रद्धा विश्वास जगाया। रचना के थोड़े ही दिनों बाद इस ग्रंथ का सांस्कृतिक, धार्मिक आध्यात्मिक, दार्शनिक और साहित्यिक मूल्य प्रतिष्ठित हो गया। लोकप्रियता और सांस्कृतिक महत्ता के साथ साथ इसका प्रचार भी बढ़ता और विशाल होता गया। धड़ल्ले से इसकी प्रतिलिपियाँ होने लगीं। अब हमें जितनी प्रतिलिपियाँ उपलब्ध या ज्ञात हैं, उनकी अपेक्षा 'मानस' के जाने कितने अधिक प्रतिलेख लिखे गए, कितने हस्तलेख या अनुलेख नष्ट या लुप्त हो गए—उनका हमें पता तक भी नहीं है। पर जितनी प्रतिलिपियाँ आज ज्ञात या उपलब्ध हैं उनकी संख्या भी हजारों से ऊपर है। उसके मुद्रित संस्करणों एवं प्रतियों की संख्या भी निश्चय ही हिंदी में सर्वाधिक है। उसके अनुवाद भी बहुत से हुए, अनुकरण भी

बहुत किया गया। 'मानस' की रचना के कुछ ही दिनों बाद संस्कृत संस्करण भी हुआ और उसके अनुकरण पर संस्कृत में रामकाव्य लिखे गए। सारांश यह कि गोस्वामी जी के भक्तिमय 'मानस' से समुद्भावित 'रामचरितमानस' को जो प्रतिष्ठा, संमान, प्रेम और लोकप्रियता अत्यंत अल्प काल में मिली वह हिंदी वाङ्मय के क्षेत्र में अश्रुतपूर्व रही।

इसी संदर्भ में उस कृति के हस्तलेखों का भी विस्तार हुआ। उसके प्रामाणिक, शुद्ध, और मूलपाठ की ढूँढ़ खोज की ओर लोगों का ध्यान गया। मानस भक्तों, मानस प्रेमियों और शोधकों ने 'मानस' के शुद्ध पाठवाले संस्करण के निर्धारण में तन मन से प्रयास किया। अपने अपने साधनों की शक्ति और सीमा के अनुसार अनेक संस्करण प्रकाशित हुए।

संस्था के रूप में नागरीप्रचारिणी सभा, काशी, गीता प्रेस, गोरखपुर आदि ने 'मानस' के शुद्ध और प्रामाणिक संपादन के प्रयास में विशिष्ट योगदान किया।

इस संदर्भ में नागरीप्रचारिणी सभा, काशी का योग अप्रतिम है। 'सभा' से प्रकाशित 'मानस' के पूर्वसंस्करण भी[1] यद्यपि कम महत्व के नहीं थे, तथापि पाठानुसंधान और वैज्ञानिक संपादन की दृष्टि से उतने महत्व के नहीं हो सके जितने महत्व का पं० शंभुनारायण चौबे द्वारा संपादित संस्करण हुआ। संवत् १९९५ वि० में प्रकाशित गीता प्रेस का संत्करण भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त डा० माताप्रसाद गुप्त का संस्करण भी पाठांतर के साथ प्रकाशित हुआ।

कहने का सारांश इतना ही है कि 'मानस' के अनेक संस्करण—पाठभेद के साथ अथवा यथासंभव शुद्ध पाठवाले—अब तक प्रकाशित हो चुके हैं।

प्रस्तुत संदर्भ में कथ्य इतना ही है कि 'मानस' के इतने बहुसंख्यक हस्तलेख मिल चुके हैं, सामान्य, गवेषणापूर्ण एवं शोधात्मक—इतने विविध प्रकार के संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं कि 'मानस' के प्रामाणिक और शुद्ध पाठ का निर्धारण और प्रकाशन अत्यंत जटिल प्रश्न है। अपनी अपनी दृष्टि, अपने अपने शाखाभेद और संपादन के अपने अपने दृष्टिबिंदुओं के विचार से अनेक संस्करणों का प्रकाशन स्तर, निर्विवाद रूप में अपना महत्व रखता है।

---

१ इनका विवरण देखिए—मानस अनुशीलन, पृ० १८।

इस संदर्भ में यह भी ध्यान रखना चाहिए कि 'मानस' के उत्तरोत्तर प्रकाशित होनेवाले गवेषणात्मक संस्करणों में कुछ न कुछ अपनी विशेषता उभरती रही है।

इस परिप्रेक्षा के साथ विचार करने पर सभा से प्रकाशित पं० शंभुनारायण चौबे द्वारा प्रकाशित 'मानस' और उनके अनुशीलनात्मक लेखों का महत्व—आज भी अक्षुण्ण बना है। सीमित साधन, एकाकी श्रम और साधनात्मक तपोनिष्ठा से 'मानससाधक' श्री चौबे जी ने जो कार्य किया था—उसका मूल्य आज भी बना हुआ है। अकेले एक साधक ने, जिस निःस्वार्थ निष्ठा के साथ अपने जीवन को अपने लक्ष्य के लिये समर्पित किया तथा अपने जीवनयज्ञ के अनुष्ठान में जो आत्माहुति दी और जो सिद्धि प्राप्त की उसका व्यवस्थित प्रकाशन 'सभा' का कर्तव्य था। दुःख केवल इतना ही बना रह गया कि श्री चौबे जी 'मानस' की अपनी विस्तृत भूमिका न लिख पाए: बीच ही में कालकवलित हो गए। यदि उनकी बड़ी भूमिका सामने आती और अपनी पूरी बात वे लिख सके होते तो बहुत सी नई बातें भी प्रकाश में आतीं। उनके संपादन की दृष्टि और योजना की पूरी जानकारी मिल जाती।

उनके अनुशीलनात्मक लेखों में उद्भासित सामग्री बहुमूल्य और 'मानस' के शोधकर्ताओं के लिये सेतु होने पर भी बिखरी पड़ी थी। श्री सुधाकर पांडेय ने उसका संकलन और संपादन करते हुए उन्हें व्यवस्थित रूप देकर महत्वपूर्ण कार्य किया है। ४६ पृष्ठों की अपनी प्रस्तावना में बड़ी स्पष्टता के साथ उन्होंने अपनी बातें भी उपन्यस्त की हैं और साथ ही सभा से संपृक्त एवं तुलसी तथा 'मानस' से संदर्भित अनेक पक्षों की गवेषणात्मक सूचना दी है। 'मानस' प्रेमियों और 'रामचरितमानस' के अनुशीलनकर्ताओं को इसके द्वारा महत्व के अनेक पक्षों और 'सभा' के व्यवस्थित प्रयासों का परिचय मिलेगा।

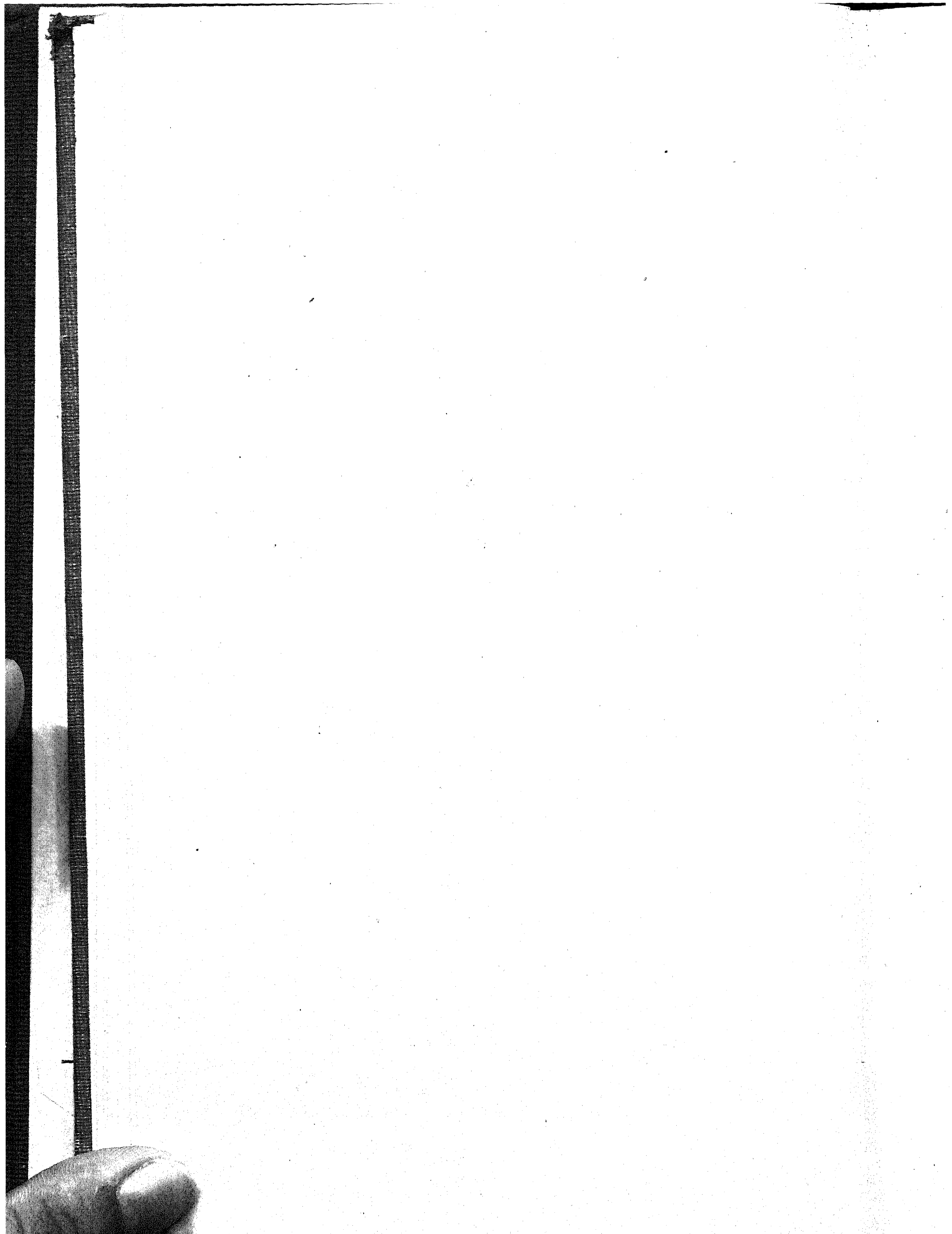
'मानस अनुशीलन' के संपादन और प्रकाशन द्वारा श्री सुधाकर पांडेय ने चौबे जी के प्रति अपनी सारस्वत श्रद्धा अर्पित की है। पांडेय जी के इस कार्य द्वारा हिंदी जगत् जान सकेगा कि चौबे जी अपनी धुन के कैसे पक्के आदमी थे, निःस्वार्थ लगन, साधना, निष्ठा, तपोमय समर्पण और प्रतिभा द्वारा उन्होंने हिंदी जगत् की, 'मानस' की और 'सभा' की कैसी सेवा की

है। इसके साथ साथ लगभग तीन सौ पृष्ठों के अपने परिशिष्टों में 'मानस' पर शोध करनेवालों के लिये अत्यंत उपयोगी, सहायक और विशिष्ट सामग्री भी पांडेय जी ने उपस्थित की है। परिशिष्ट में ही चौबे जी द्वारा संपादित 'सभा' का संस्करण और डा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र द्वारा संपादित 'काशिराज संस्करण' के वर्तनीगत विभिन्नताओं और पाठभेदों का तुलनात्मक अनुसंधान उपस्थित किया गया है। यह कार्य भी बड़े श्रम और लगन से संपन्न हुआ है। तृतीय परिशिष्ट की सामग्री भी सर्वथा नवीन है और उसका आकलनात्मक संकलन 'मानस' शोधकों के लिये अत्यंत महत्व का है।

आशा है, श्री सुधाकर पांडेय द्वारा संपादित और शोधात्मक परिप्रेक्ष्य से संकलित यह 'मानस अनुशीलन' श्री शंभुनारायण चौबे के 'मानस' अनुष्ठान की महिमा को प्रतिष्ठित करने में समर्थ होगा। साथ ही इसमें संकलित सूचनाओं, तथ्यों, विवेचनों और आकलनों द्वारा 'मानस' के शोधकों का पथ प्रशस्त होगा।

रामनवमी, संवत् २०२४ वि०
वाराणसी

करुणापति त्रिपाठी
(साहित्य मंत्री)



भूमिका

(१)

आज श्रीरामनवमी का मंगलमय दिवस है। आज से ठीक सात बरस बाद, २०३१ वि० की श्रीरामनवमी को रामचरितमानस के रचनारंभ के चार सौ बरस पूरे हो जायँगे और उसकी पाँचवीं शती प्रक्रुष्ट हो जायगी। इस पुनीत एवं दुर्लभ अवसर को समुचित रूप से मनाना हमारा राष्ट्रीय दायित्व है। उस महोत्सव का बाह्य रूप जो भी हो, वास्तविक रूप वही होगा जिसका श्रीगणेश अभी से—होना भी चाहिए अभी से, तभी यह महान् आयोजन समय से पूरा हो सकेगा—काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने कर दिया है। **मानस अनुशीलन** के प्रकाशन द्वारा इसका शुभारंभ करने के लिये श्री सुधाकर पांडेय साधुवाद के पात्र हैं।

इस शुभारंभ का उत्क्रम—

(१) मानस की सभी प्रामाणिक टीका और भाष्यों का एक आकार प्रकार में प्रकाशन;

(२) उसी अवली में तुलसी की शेष ग्यारह रचनाओं के प्रामाणिक संस्करण का प्रकाशन;

(३) तुलसी-शब्दार्थ-कोश का प्रकाशन;

(४) संसार भर की भाषाओं में तुलसी पर जो कुछ भी कार्य हुआ है, उसकी समग्र वाङ्मय सूची और उपादेय सारांश का प्रकाशन;

(५) तुलसी की जीवनी पर निष्पक्ष ऐतिहासिक गवेषणा का प्रकाश;

(६) मानस चित्राधार (प्राचीन कलमी चित्रों को संकलित करके) का प्रकाशन एवं सर्वोपरि—

(७) रामचरितमानस के प्रामाणिकतम संस्करण का प्रकाशन।

प्रामाणिकतम संस्करण का नाम लेते ही हमारे सामने यह तथ्य उपस्थित होता है कि सर्वप्रथम नागरीप्रचारिणी सभा ने ही आज से चौंसठ बरस पहले मानस का आधुनिक ढंग से सुसंपादित संस्करण समुचित साजसज्जा के साथ प्रकाशित कराया। इसके संपादकमंडल में स्व० म० म० सुधाकर द्विवेदी, बा० राधाकृष्णदास और श्री अमीर-सिंह सरीखे प्राचीन हिंदी कविता के मर्मज्ञ और मानस के ज्ञाता थे। अपने समय में इस संस्करण ने एक मानक प्रस्तुत किया।

मानस के दूसरे सुसंपादित संस्करण निकालने का श्रेय भी सभा को ही प्राप्त है। तुलसी-पुण्य-तिथि-त्रिशती के समय, १९८० वि० में सभा ने यह संस्करण प्रकाशित किया। इसके संपादन में आचार्य रामचंद्र शुक्ल और आचार्य भगवानदीन सरीखे दिग्गजों का हाथ था, फिर भी समय की अल्पता के कारण जल्दी जल्दी में यह काम अपर्याप्त ही रहा।

इसके बाद अन्य मनीषियों का ध्यान ऐसे वैज्ञानिक रीतिवाले संपादन की ओर गया और आचार्य रामदास गौड़ एवं मानसराजहंस विजयानंद तिवारी ने इस दिशा में उत्कृष्ट कार्य किया। गीता प्रेस का आदर्श संस्करण भी इसी कालांतर में निकला।

किंतु यह स्व० मानसमराल शंभुनारायण चौबे का ही हिस्सा था कि मानस का एक ऐसा सुसंपादित संस्करण तैयार करें जो वस्तुतः इस महान् कार्य की अद्यावधि पराकाष्ठा हो। चिरपरिशोच्य चौबे जी इस कार्य में जैसे रमे थे, पगे थे और गर्क थे उसका अनुमान वे ही लोग कर सकते हैं जिन्होंने उनकी लगन और तपस्या आँखों देखी है।

विजयानंद जी के शब्दों में—

मुझे यह लिखते हर्ष होता है कि श्रीयुत शंभुनारायण चतुर्वेदी जी द्वारा संशोधित श्रीरामचरितमानस की प्रति मैंने देखी। यदि यह ठीक इसी रूप में छप सकी, तो मेरी संमति में जितनी प्रतियाँ आज तक श्रीरामचरितमानस की छपी हैं, उनमें सबसे शुद्ध और उपयोगी यही प्रति होगी। इसके लिये रामायणप्रेमी संसार श्री चतुर्वेदी जी का चिर कृतज्ञ रहेगा। जिस साहस और परिश्रम से चतुर्वेदी जी ने प्राचीन पाठों

को सामने रखा है, उसके लिये मेरा हृदय उन्हें आशीर्वाद दिए बिना नहीं रहता। शुभम्

विजयानंद त्रिपाठी[1]

यह कहना अत्युक्ति नहीं कि मानसमराल के परिश्रम एवं अध्यवसाय के उपरांत इस दिशा में, जो कुछ करना बाकी रहा है वह नाम मात्र है। ऐसा हम इस बूते पर कहते हैं कि यद्यपि काशिराज संस्करण का संपादन एक विभिन्न प्रस्थान से हुआ है, फिर भी उसकी पाठोपलब्धि एक प्रकार से वही की वही है जो मानसमराल स्थिर कर गए हैं।

इस 'अनुशीलन' के परिशिष्ट १–घ एवं २ में जो उपादेय सामग्री सुधाकर जी ने दी है उससे सुस्पष्ट है कि दो तीन दर्जन पाठभेदों को छोड़कर मानस की पाठशुद्धि करने के लिये केवल वर्तनी को एकरूपता देने का कार्य बच रहा है। मानस की वर्तनी का गुर उसकी दोहा चौपाई में ही निहित है। यही गुर वास्तविक मार्गदर्शक है। अब सभा को ही यह कार्य मानसविशेषज्ञों की एक विचारगोष्ठी आयोजित करके पूरा कराना है कि मानस की चारसौवीं जयंती के अवसर पर राष्ट्र को मानस का ऐसा संस्करण प्राप्त हो सके जो वैदिक संहिताओं की भाँति अक्षर प्रत्यक्षर में, विंदु विसर्ग तक में निर्भ्रांत और निर्विवाद हो। बिना अत्युक्ति के, मानस हिंदी का वेद है; उसका ऐसा संस्करण निकालकर ही हमें चैन लेना चाहिए।

वेदों का नाम लेते हुए, काशिराज संस्करण की एक विशेष वर्तनी की ओर ध्यान जाता है। उसमें 'रिछ' सरीखे शब्दों पर वैदिक उदात्त स्वर का चिह्न लगाकर 'रिछ॑' इस रूप में छापा गया है, कि वह 'रिछऽ' पढ़ा जाकर (जो हिंदी के लिये सर्वथा विजातीय उच्चारण है) छंदों की अपेक्षित मात्राओं की पूर्ति करे। किंतु वस्तुस्थिति यह है कि गोस्वामी जी के समय की देवनागरी लिपि में च्छ को छ के रूप में लिखा

---

१. मूल प्रति कलाभवन में सुरक्षित।

जाता था, अर्थात् छ एक छल्ले का रहता था और उसके ऊपर का छल्ला च का होता था। उस काल की सभी हस्तलिखित पोथियों में प्राप्त च्छ के वैसे रूप से यह बात निर्विवाद है। इसका अर्थ यह हुआ कि वस्तुतः वैसे शब्द रिच्छ आदि ही हैं, न कि वैदिक स्वर से युक्त रिछ्ऽ आदि। देवनागरी लिपि की जैन शैली में च्छ का यह रूप अभी भी चल रहा है।

सुधाकर जी ने अपनी प्रस्तावना में उपपत्ति की है कि १७२१ वि० की कलाभवनवाली मानस की प्रति के "उपयोग करने का अवसर अगर मिश्र जी (आचार्य विश्वनाथप्रसाद जी मिश्र) को मिलता तो संभवतः उनका यत्न (चौबे जी से) एकरूप होता।" (पृष्ठ ४०) इस संबंध में निवेदन है कि उनकी ओर से श्री रामादास शास्त्री ने कलाभवन में बैठकर इस १७२१ वि० वाली प्रति से मानस की एक प्रति का संशोधन किया था, किंतु उसका उपयोग संपादन में नहीं किया गया। यदि कलाभवन के नियमानुसार वहाँ की कोई हस्तलिखित पुस्तक बाहर नहीं जा सकती तो उसका फोटोस्टैट तो ट्रस्ट करा ही सकता था।

सुधाकर जी ने अपने व्यापक सर्वेक्षण में गोसाईं जी के प्रामाणिक चित्र का विषय भी उठाया है और नागरीप्रचारिणी सभावाले चित्र को मान्यता देते हुए कहा है—

> "जो कुछ भी हो, तुलसी का जो चित्र बहुप्रचारित हुआ और जिसे सभा ने प्रकाशित किया, उसमें भले ही कुछ काल्पनिक परिवर्तन हुए हों, आकृति उस चित्र की उपलब्ध अधिकांश चित्रों से मिलती है, उसे देखते हुए यदि इसे तुलसी का चित्र माना जाय तो अनुचित न होगा।"

इस संबंध में यह कहना आवश्यक है कि तुलसी के इस चित्र की प्रामाणिकता अब असंदिग्ध है। पिछले पच्चीस तीस बरस की खोज में मुझे लगभग एक दर्जन पुराने कलमी चित्र एवं रेखाचित्र देखने में आए हैं (जिनमें से कई एक कलाभवन को प्राप्त भी हो चुके हैं) जो

इसी चित्र का अनुसरण करते हैं। इन चित्रों का व्याप्तिक्षेत्र विस्तृत है—हिमाचल प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश। इनके तुलनात्मक अध्ययन से यही स्थिर होता है कि ये गोसाईं जी के वास्तविक एक मूल चित्र की सीधी परंपरा में हैं। ऐसे चित्रों में से एक किशनगढ़ के राजकीय संग्रह में है। नागरीप्रचारिणी पत्रिका के चंद्रबली-स्मृति अंक में जो चित्र किशनगढ़ दरबारवाला कहकर, प्रकाशित हुआ है, न तो वहाँ उसका नाम निशान है, न उसकी कलम ही पुरानी है।

हमारे प्रामाणिक चित्र की एक प्रतिकृति रामनगरवाली मानस की महार्ह चित्रित प्रति में है, जो महाराज उदितनारायण सिंह ने १९वीं शती के आरंभ में तैयार कराई थी। उसमें रामदरबार की जो छवि है उसमें गोस्वामी जी भी इसी स्वरूप में आसीन किए गए हैं।

फलतः उक्त प्रतिकृतियों के प्रकाश में सभावाला चित्र किसी प्रकार शंकनीय नहीं रह जाता।

प्रस्तावना के १६वें पृष्ठ पर मैंने ना० प्र० प० का एक अवतरण साश्चर्य पढ़ा जिसके अनुसार मैं महंत रामवल्लभाशरण जी से उनका गोस्वामी जी वाला चित्र मँगनी ले आया और उस्ताद राम-प्रसाद जी से उसकी परिवर्तित प्रतिकृति बनवाकर प्रकाशित करा दिया।

उस चित्र को मँगनी लेना और परिवर्तित प्रतिकृति बनवाना तो दूर, मैंने उसे कभी देखा तक न था, उसके पहले पहल दर्शन तो मुझे ब्लाक द्वारा ही प्राप्त हुए।

इधर गोस्वामी जी की जन्मभूमि की भी एक समस्या खड़ी कर दी गई है। सुधाकर जी का ध्यान इसकी ओर भी गया है (प्रस्तावना पृ० ४)। जो लोग सोरों को यह गौरव प्रदान करते हैं, क्या वे उत्तरप्रदेश के ब्रज-भाषा-भाषी क्षेत्र के निवासी एक भी कवि का नाम ले सकते हैं जिसने अवधी में कविता की हो। १५वीं शती से १९वीं शती तक जो भी अवधी भाषा के कवि हुए हैं उन सबकी जन्मभूमि अवध ही है। इत्थं तुलसी भी राजापुर के थे जो जमुना पार होते हुए भी, अवधी बोली के परिमंडल में है।

इलाहाबाद में राय अमरनाथ अग्रवाल एक वरिष्ठ नागरिक हैं। सैकड़ों बरस पहले से उनके कारबार की एक कोठी राजापुर में भी थी और वहाँ आरंभ से ही नियमपूर्वक गोसाईं जी के नाम पर धर्मादाय निकाला जाता था, क्योंकि गोस्वामी जी वहीं के माने जाते थे।

'अनुशीलन' के पृष्ठ ५ पर मानसमराल जी के लेख में, १८९६ वि० (१८३९ई०) की मुद्रित मानस की भूमिका में स्पष्ट उल्लेख मिलता है—

"राजापुर परगने में जायको गोस्वामी जी के वंशज को...साध्या..."

इससे बढ़कर क्या प्रमाण हो सकता है कि गोस्वामी जी का वंश राजापुर का बाशिंदा था, न कि वे तन-तनहा वहाँ आकर रम गए थे, जैसा सोरोंवालों का नारा है।

सोरों-पंथियों ने कई वर्ष पूर्व दिल्ली विश्वविद्यालय में, इस संबंध में, एक भारी भरकम विचारगोष्ठी आयोजित की थी। उसमें मानस की कई हस्तलिखित प्रतियाँ भी प्रदर्शित की गई थीं जिनमें संवत् वाले आँकड़े का १८, १६ में परिवर्तित किया हुआ था।

महापंडित राहुल भी उन पोथियों पर सम्मति देने के लिये आमंत्रित हुए थे। उन्होंने देखते ही कह दिया कि यह लिपि वि० १७वीं शती की हो ही नहीं सकती, यह तो वि० १९वीं शती की लिपि है। तब मैंने उनका ध्यान संवत् की जालसाजी पर दिलाया; उनकी पैनी दृष्टि ने उसे तुरंत लख लिया और, इसी कारण मुझे आयोजकों के भीषण कोप का भाजन बनना पड़ा!

इस जन्मभूमिवाली भ्रांति के मूल में गोस्वामी जी का नाम—तुलसिदास—है जो एक बहुत लोकप्रचलित नाम है, विशेषतः संतों में। हो सकता है कि सोरों में कोई दूसरे तुलसिदास हुए जो विश्ववंद्य तुलसीदास से एकित कर दिए गए।

निदान हम पाते हैं कि प्रस्तावनागत सर्वेक्षण में गोसाईं जी तथा मानस संबंधी प्रायः सभी पहलुओं पर ध्यान दिया गया है और उनका

विचारोत्तेजक विवेचन भी हुआ है, जो आनेवाले कार्य के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

सभा के परम हितेच्छु प्रधान मंत्री श्री शिवप्रसाद जी मिश्र 'रुद्र', जो अन्वर्थ 'काशिकेय' हैं एवं सहृदय साहित्यिक हैं, इस कार्य के लिये विशेष रूप से तत्पर हैं; उनका साधुवाद करते हुए मैं आंतरिक विश्वास रखता हूँ कि आगामी मानस जयंती चतुर्थ शती उनके द्वारा अभीष्ट रूप से सुसंपन्न होगी।

(२)

विस्तीर्ण व्योम-वितान में जिस प्रकार कभी कोई अविदित कक्षा-वाला दिव्य दीप्तिमान तारक सहसा समुदित होता है और फिर उसी प्रकार एकाएक अस्त हो जाता है, ठीक उसी प्रकार मानसमराल जो मेरे जीवन नभोमंडल में अकस्मात् समुदित हुए और अपनी स्थायी दिव्य ज्योति से उसे आलोकित करते हुए सहसा अथै भी गए।

वह आलोक मेरे लिये वैसा ही था जैसा किसी दिग्भ्रांत समुद्रपोत के भाग्यनक्षत्र का, जो अचानक उगकर तमिस्र गगन को उद्भासित करता हुआ उस अनुकंपनीय पोत को मार्गस्थ कर देता है और उबार लेता है। जिस समय, एक दिन अतर्कित, वे मुझसे मिले, उस दिन कौन कह सकता था कि मेरा त्राता आ गया—उन्होंने बरसों के सतत निःस्वार्थ श्रम और सहयोग द्वारा एक डूबते घर को बचा लिया।

इसी बीच हम दोनों एक-जान-दो-कालिब हो गए और मुझे उनकी रामचरितमानस की अगाध लगन का परिचय मिला। उन्हें मानस के शुद्धतम पाठ की खोज थी और एतदर्थ उन्होंने बहुत सी सामग्री बटोर भी ली थी, किंतु उनका किस प्रकार वैज्ञानिक उपयोग करें इसका मार्ग वे नहीं पा रहे थे।

संयोगवश उन्हीं दिनों स्व० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल का मेरे यहाँ आगमन होने लगा और चौबे जी ने अपना मसाला उन्हें दिखाया जिसे देखकर वे उछल पड़े और उन्होंने चौबे जी को तुलनात्मक पँजीकरण की पद्धति समझा दी; बस सारा गोरखधंधा सुलझ गया। फिर तो चौबे जी ने दिन रात एक करके—कभी कभी वे रात-की-रात

काम में डूबे रहते—तुलनात्मक पाठांतर तैयार कर डाले जिससे दूध-का-दूध, पानी-का-पानी हो गया।

किंतु चौबे जी इतने से ही संतुष्ट होनेवाले प्राणी न थे। उन्होंने मूल प्रतियों से मिलान करने का निश्चय किया, जिनमें से केवल १७६२वि० की प्रति उन्हें उपलब्ध हो चुकी थी। अब भगीरथ प्रयत्न करके उन्होंने १७२१वि० वाली प्रति भी प्राप्त कर ली और रामनगर की १७०४ वि० वाली प्रति से मिलान करने की अनुज्ञा भी पा ली। इस प्रति से मिलान करते हुए उन्होंने पाया कि किसी समय वह बुरी तरह खंडित हो गई थी। इन खंडित स्थानों पर अपेक्षाकृत नए पत्रे और पत्रांश लगाए गए हैं जो पाठ की दृष्टि से कोई महत्व नहीं रखते।

वे राजापुर के अयोध्या कांड और श्रावणकुंज, अयोध्या के बाल-कांड से भी अक्षरशः मिलान कर लाए और उक्त तीनों प्रतियों से संशोधन करके अलग अलग प्रतियाँ भी लेते आए जिसमें विंदु विसर्ग तक का निर्भ्रांत मिलान हुआ है।

इन सब प्रतियों से उन्होंने अपने पंजीकरण का पुनः परिशोधन किया और तब प्रेस के लिये पहली कापी तैयार की। फिर भी उन्हें संतोष न हुआ। अब तक उन्होंने जो कार्य किया था वह इतना लंबा और थकानेवाला था कि दूसरा कोई होता तो उसी प्रेस कापी को मुद्रणार्थ दे देता, किंतु वे ऐसे न थे।

वे एक बार पुनः अपने पंजीकरण को अथ से इति तक दुहरा गए। और, उनका यह परिश्रम व्यर्थ न गया, क्योंकि उन्हें कितनी ही ऐसी भूलें मिलीं जो इतनी बारीकी से काम किए बिना नहीं मिल सकती थीं। तब कहीं उन्होंने अंतिम प्रेस कापी तैयार करके साँस ली।

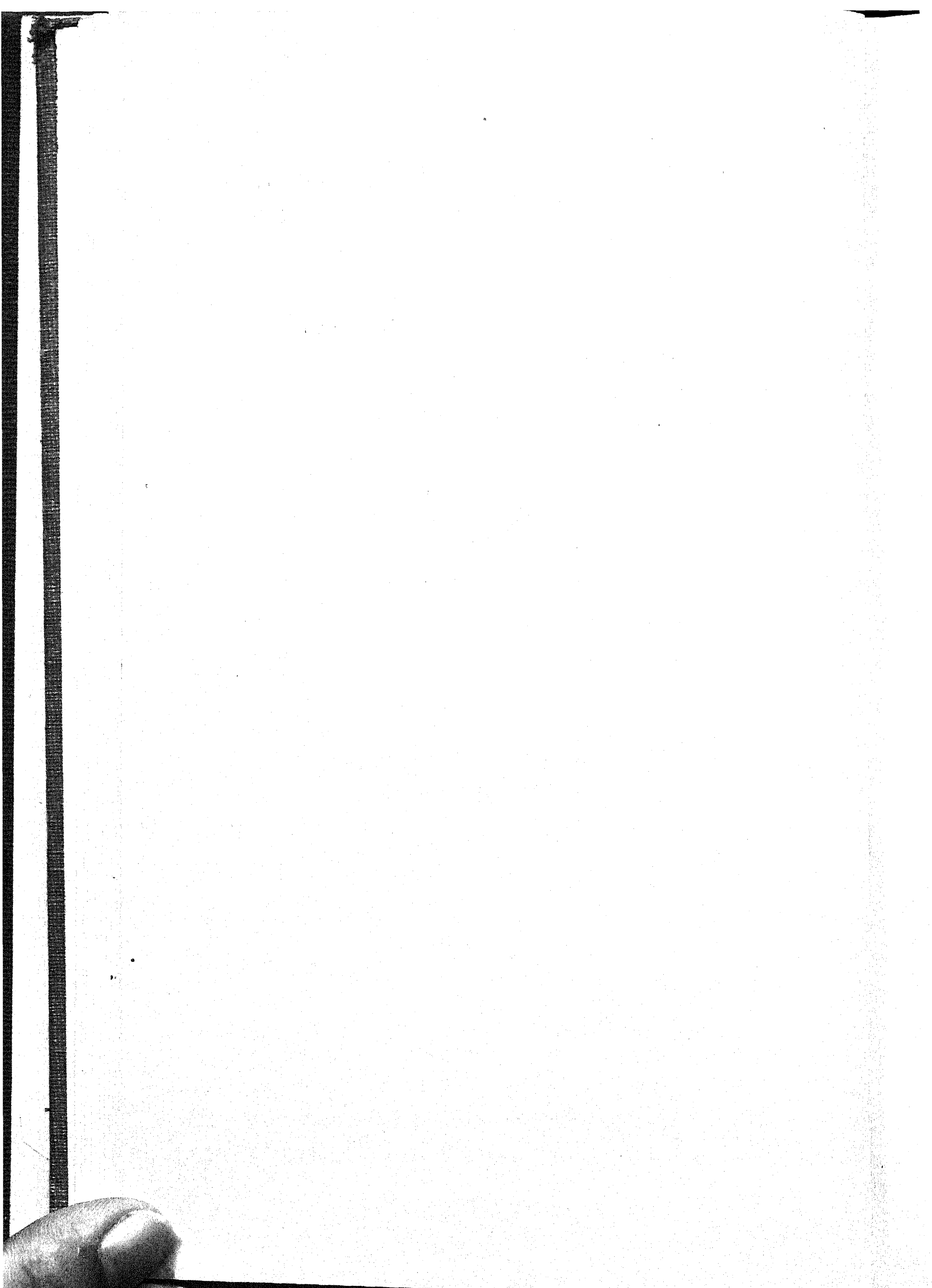
उसी प्रगाढ़ परिश्रम का फल उनका सभावाला संस्करण है, जिसे वे केवल आरंभिक फर्मों के रूप में ही देख पाए—हा हंत !!!

उस कठिन तपस्यावाले कार्य में उन्हें अपने अधिकारियों से जैसी भर्त्सना मिलती थी उसे देखकर यही मानना पड़ता था कि यह वही अग्निपरीक्षा है जिस पर विजय पाने को बौद्ध साहित्य ने 'मार-विजय' कहा है।

कितने प्रहर्ष का विषय है कि नागरीप्रचारिणी सभा का ध्यान उनके छोड़े हुए महत् कार्य की परिपूर्ति की ओर गया है। मुझे विश्वास है कि रामकृपा से यह सभारंभ अवश्य सफल होगा।

(राय) कृष्णदास

श्रीरामनवमी, २०२४ वि०
भारत-कला-भवन,
वाराणसी।



विषयानुक्रम

चित्र सूची

प्रस्तावना

भारत में इस्लामी सत्ता एवं सभ्यता के विकास के प्रथम वेग में जिन भावनाओं की अभिव्यक्ति की गई उनपर इस्लाम का प्रगाढ़ प्रभाव था। पर ज्यों ज्यों समय व्यतीत होने लगा, त्यों त्यों भारतीय जनमन को इस्लाम की एकांगिता, अपूर्णता एवं शुष्कता का बोध होने लगा। भारत में उत्पन्न हुई, पली, पनपी भावश्री की ओर समाज के कर्णधारों का ध्यान उन्मुख हुआ। तत्कालीन अनेक मुसलिम शासकों की उदार नीति के कारण महात्माओं को नवीन मार्गप्रवर्तन के लिये गति मिली। ये मार्ग सर्वथा भारतीय संस्कार के रक्त में तो थे ही, आवश्यकता थी केवल तत्कालीन समाज के अनुरूप उसे गढ़ने की।

इस क्षेत्र में सारे देश के लोकग्राही सुधी, संत, महात्मा लगे और उत्तरी भारत में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य महात्मा रामानंद ने किया। उन्होंने समय के अनुकूल प्राचीन धर्मधारा में नवीन तत्वों की प्रतिष्ठा कर मृतप्राय भारतीय भावधारा को अमृतपान कराया और समाज को जीवन की नई दिशा दी। यों भारत के चेतनादीप्त नवीन आलोकपूर्ण युग का श्रीगणेश हुआ।

रामानंद जैसे महान् गुरु इस युग में उत्पन्न हुए। उन्होंने उत्तरी भारत के जनजीवन में राम की प्रतिष्ठा करके तिमिराहत भारतीय समाज की अपूर्व सेवा की। महात्मा रामानंद ने अपने संप्रदाय का प्रवर्तन विक्रम की १५वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में किया था। इनके पूर्व ही नामदेव, त्रिलोचन आदि रामभक्ति के प्रचारक लोकसेवक महात्मा हो चुके थे। पर स्वामी रामानंद ने रामभक्ति परंपरा को नया आलोक दिया।

स्वामी रामानुजाचार्य ने सं० १०७३ में भक्ति के प्रसार के लिये वैष्णव श्री संप्रदाय की स्थापना की। श्री शंकराचार्य द्वारा पूर्वप्रतिष्ठित अद्वैतवाद में रसात्मक भक्ति के लिये कोई स्थान नहीं था। वे भक्ति को भी माया के अंतर्गत ही मानते थे। ऐसी परिस्थिति में जनजीवन में उस भाव की प्रतिष्ठा, जिसका प्रवर्त्तन रामानुजाचार्य ने किया, अत्यंत लोकग्राही हुई। इनका मत विशिष्टाद्वैत के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस मत के अनुसार जीव ब्रह्म का अंश है। उसकी उत्पत्ति भी उसी से होती है और वह उसी में लय

भी होता है। मनुष्य प्रेम भक्ति द्वारा उससे तादात्म्य स्थापित कर सकता है। भारत में चतुर्दिक् इस संप्रदाय का विकास अत्यंत वेग के साथ हुआ। उनकी १३वीं पीढ़ी के बाद इस संप्रदाय के प्रधान आचार्य स्वामी श्री राघवानंद हुए, जो काशी में रहते थे। रामानंद जी उन्हीं के परम समर्थ शिष्य थे।

यद्यपि रामानंद जी रामानुजाचार्य के मतावलंबी थे, तो भी इन्होंने युग के अनुरूप उसका संसारप्रिय रूप ग्रहण किया। इसके संस्कर्ता भी वे स्वयं बने। इन्होंने विष्णु के स्थान पर लोक-लीला-विस्तारक राम को अपना इष्ट बनाया और 'राम' नाम इनकी साधना का मूल मंत्र हुआ। यद्यपि राम का रूप इसके पूर्व ही साधना के क्षेत्र में पूर्ववर्ती साधक स्मरण कर चुके थे, तथापि लोक में परम ब्रह्म को राम के सगुण रूप में रामानंद ने ही प्रतिष्ठित किया। राम के इस लोकरूप की प्रतिष्ठा के लिये उन्होंने प्रबल आंदोलन किया तथा एक विशाल संगठन भी। लोगों को ऐसे भगवान् का रूप बताया जिसे प्रत्येक जाति, प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक देश के लोग लोक में साक्षात् पा सकते हैं। जहाँ कोई अभाव नहीं, जहाँ सांप्रदायिकता का बंधन नहीं, जहाँ किसी जीव के लिये किसी प्रकार की कोई भी बाधा नहीं, वह रसात्मक तथा प्रिय मार्ग है विशुद्ध भक्ति का, राम के प्रति हृदय के आत्मसमर्पण का—ऐसे राम के प्रति जिनका रूप है, रंग है, आकार और प्रकार है और जिन्होंने अवतार लिया था दशरथसुत के रूप में, और भक्तों के लिये जो निरंतर अवतार लेते रहते हैं। उनकी यह भावधारा विशुद्ध पौराणिक थी। इसका उद्गम स्थान महाभारत और पुराण था तथा यह वर्णाश्रम व्यवस्था की पूर्ण समर्थिका थी। यह सुधारवादी प्रवृत्ति का ऐसा निदान था जो रोग की दवा में विश्वास करता है, न कि अंग के गलित होने पर उसे काटकर अपंग करने में। यह भारतीय सर्जनात्मक वृत्ति का धारक था। यह वर्णाश्रम के खंडहर पर युग की आवश्यकता के आधार पर लोककल्याणकारी प्रासाद बनाने का सफल प्रयत्न था, जिसमें समय के अभाव की पूर्ति की अदम्य क्षमता थी। नवनिर्माण की भावना से अनुप्राणित रामानंद जी का युग के अनुरूप यह नवीन क्रांतदर्शी जीवनदर्शन था।

सभी प्रकार का भेदभाव तोड़कर उन्होंने हिंदू-मुसलमान, ऊँच नीच यहाँतक कि महिलाओं को भी अपना शिष्य बनाया, जिनमें से अनेक ने अपने अपने क्षेत्र में युगविधायक कार्य संपन्न किए।

महाकवि तुलसीदास

यद्यपि रामानंदी संप्रदाय में दीक्षित भक्तगण लोक में पुरुषोत्तम राम की प्रतिष्ठा में दत्तचित्त प्राणपण से लगे थे, तो भी तुलसीदास के पूर्व तक इतनी बड़ी किसी प्रतिभा का दर्शन इस संप्रदाय में नहीं हुआ, जो रामानंद द्वारा प्रशस्त मार्ग को गोस्वामी तुलसीदास की भाँति जनमन के हृदय पर युग युग के लिये अंकित कर सके। यह महत्तम कार्य तुलसीदास ने किया और इस भाँति किया कि इनकी सामर्थ्य का दूसरा व्यक्ति हुआ ही नहीं। तुलसी ने दशरथ के राम को अमर बनाया। जबतक हिंदी साहित्य रहेगा, तबतक 'तुलसी' के 'राम' रहेंगे। इनकी गरिमा का परिचय इसी बात से जाना जा सकता है कि विश्व में तुलसीदास के नाम से जितने लोग परिचित हैं, संभवतः अन्य किसी साहित्यकार के नाम से नहीं। अपढ़ लोग जहाँ रामायण की चौपाइयों को ब्रह्मवाक्य समझते हैं, वहीं महान् साहित्यमर्मज्ञ उनके कौशल की प्रशस्ति में शब्द नहीं पाते। विश्व की अन्य भाषाओं में यहाँतक कि नास्तिकता में आस्थावान् रूस तक में तुलसीदास की रामायण का अनुवाद जिस स्तर पर संमानित हुआ, हिंदी की किसी भी अन्य कृति का नहीं। विदेशी विद्वान् भी इन्हें अप्रतिम मानते हैं। ग्रियर्सन इन्हें भारत में बुद्ध के पश्चात् सबसे बड़ा लोकनायक तथा स्मिथ ने मुगल-काल का महानतम व्यक्ति बताया है।

तुलसीदास अत्यंत विनयसंपन्न स्वाभिमानी एवं सदाचारी भक्त थे। उन्होंने अपने विषय में स्वयं जो कुछ कहीं-कहीं कहा है, उससे उनके जीवनवृत्त की स्पष्ट रूपरेखा ज्ञात करना संभव नहीं। सांप्रदायिकता, झूठी यशोलिप्सा तथा नवीन अनुसंधानों द्वारा स्वयं को आभूषित कर कुछ नवीन बातें ढूँढ निकालने की प्रवृत्ति ने तुलसीदास के जीवनवृत्त को इस भाँति आच्छन्न कर लिया है, जिस भाँति किसी गुप्त स्थान में छिपी हुई श्रीसंपदा को अनेक प्रचलित जनश्रुतियाँ। थोड़े थोड़े समय के बाद नवीन नवीन ग्रंथों का पता चलता रहता है, नई नई बातें कही जा रही हैं, पर जिन आधारों को लेकर ऐसा किया जा रहा है उन आधारों की प्रामाणिकता परीक्षण पर स्वतः अप्रामाणिक सिद्ध होती जा रही है।

विगत कुछ वर्षों में तुलसीदास के जीवनवृत्त पर जो नई खोज हुई है, वह पुरानी खोजों के सर्वथा विपरीत है, पर सर्वमान्य कोई भी नहीं। सभी ओर से अपनी बातों के लिये अकाट्य प्रमाण उपस्थित किए गए हैं। ऐसी परिस्थिति

में सत्य का पता लगाना अत्यंत कठिन है, क्योंकि दुराग्रह और हठवादिता के भी स्पष्ट दर्शन इन विचारों में हैं।

शिवसिंह सेंगर अपने 'सरोज' में तुलसीदास का जन्मसंवत् १५८३ मानते हैं। उन्होंने वेणीमाधवकृत मूल गोसाईंचरित देखने की बात भी लिखी है। किंतु प्रकाशित मूल गोसाईंचरित में, जिसकी प्रामाणिकता अत्यंत संदिग्ध है, जन्मसंवत् सं० १५५४ है। महात्मा रघुबरदास रचित 'तुलसीचरित' में, जिसकी सूचना हिंदीजगत् को इंद्रदेवनारायण ने 'मर्यादा' द्वारा दी थी; उनका जन्म सं० १५५४ माना गया है। डा० ग्रियर्सन तुलसीदास का जन्मसंवत् १५८९ मानते हैं। डा० माताप्रसाद गुप्त भी ग्रियर्सन के मत के समर्थक हैं। पं० रामगुलाम दूबे भी यही संवत् प्रामाणिक मानते हैं। बहुत समय तक यह बात प्रायः मान्य थी कि ये पराशर गोत्र के सरयूपारीण ब्राह्मण थे, तथा बाँदा जिलांतर्गत राजापुर के पं० आत्माराम दूबे के पुत्र थे। इनकी माता का नाम हुलसी था।

राजापुर के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। कुछ लोग इन्हें सोरों का मानते हैं और उन्होंने इसके लिये पर्याप्त प्रमाण भी एकत्र किए हैं, यथा रत्नावली-रचित दोहावली, नंददास का भाई होना, नंददास का गुरुभाई होना, नंददास के पुत्र कृष्णदास की रचनाएँ तथा चौरासी वैष्णवों की वार्ता आदि का उल्लेख इस प्रसंग में किया जाता है।

कहा जाता है मूल नक्षत्र में उत्पन्न होने के कारण माता पिता ने इन्हें त्याग दिया था और बचपन में इन्हें दर दर की ठोकरें खानी पड़ीं। इनकी बाल्यावस्था ऐसी भयंकर परिस्थिति से गुजरी कि इन्हें पेट भरने के लिये लोगों से भिक्षा तक माँगनी पड़ी। ये बातें तो निर्विवाद रूप से सत्य हैं क्योंकि स्वयं तुलसीदास ने इन तथ्यों का उल्लेख किया है।

'मातु पिता जग जाय तज्यो बिधिहूँ न लिखी कछु भाल भलाई।'

[कवितावली, उ० ५७]

यहाँतक कि पेट भरने के लिये इन्हें जाति कुजाति, सभी लोगों के संमुख हाथ फैलाना पड़ा—

'जाति के, सुजाति के, कुजाति के, पेटागि बस,
खाए टूक सबके, बिदित बात दुनी सो।'

[कवितावली, उ० ७२]

अन्न के दाने दाने के लिये इन्हें तरसना पड़ा, उसे धर्म, अर्थ, काम सभी कुछ मानना पड़ा। इसके पश्चात् इन्हें बाबा नरहरिदास का संरक्षण प्राप्त हुआ। लोगों का कहना है, 'कृपासिंधु नररूप हरि' बात इन्हीं के संबंध में लिखी गई है। नरहरि नरहर्यानंद ही थे, ऐसा लोग मानते हैं। नरहर्यानंद रामानंद की शिष्य-परंपरा में माने जाते हैं और अयोध्या के संप्रदायों की परंपरा में तुलसीदास आते हैं। श्री प्रेमलता जी का बृहत् जीवनचरित्र इस प्रकार की गुरुपरंपरा का उल्लेख करता है: रामानंद, सुरसुरानंद, माधवानंद, गरीबानंद, लक्ष्मीदास, गोपालदास, नरहरिदास, तुलसीदास। यह भी अनुमान लगाया जाता है कि इन्हीं नरहरिदास से शूकरक्षेत्र में तुलसीदास ने रामकथा सुनी थी और उनके द्वारा ही इनमें रामभक्ति के प्रति आस्था का भाव जगा। 'विनयपत्रिका' के एक पद के आधार पर ऐसा आभास होता है कि यौवनोचित रूपलिप्सा की भावना इनके भीतर जगी थी और इन्होंने उसमें रस भी लिया था—

लरिकाई बीती अचेत चित, चंचलता चौगुनी चाय।
जोबन जर जुबती कुपथ्य करि, भयो त्रिदोष भरि मदन बाय॥

[विनयपत्रिका, ८३]

स्थान स्थान पर इन्होंने जो वर्णन किए हैं, उनसे ऐसा विदित होता है कि स्त्रीसंसर्ग में ये रहे हैं और शादी आदि के संबंध में इनका सूक्ष्म निरीक्षण इनके साहित्य में व्याप्त है। जनश्रुति के अनुसार इनकी शादी रत्नावली से हुई थी। उसके प्रेमपाश में ये इस तरह आबद्ध थे कि क्षण भर के लिये भी अपनी आँखों से उसे ओझल होने देना नहीं चाहते थे। कहा जाता है कि एक बार वह नैहर चली गई। भयंकर कष्टों का सामना करते हुए तत्काल ये वहाँ पहुँचे। इनकी पत्नी ने इनकी इस कामुकता की तीव्र भर्त्सना की।

यह भर्त्सना तुलसीदास के जीवन के लिये नई चेतना का संदेशवाहक बन बैठी। प्रिया द्वारा मिली फटकार विराग में परिवर्तित हो गई। माया-जन्य चंचलता की नश्वरता इन्हें ज्ञात हुई और उसके बाद अविलंब काशी चले आए। इस लोकवार्ता की पुष्टि भक्तमाल, तुलसीचरित और गोसाईं-चरित से भी होती है। इधर 'रत्नावली-दोहा-संग्रह' नाम की एक पुस्तिका मिली है, जिसके आधार पर तुलसीदास के जीवन पर प्रकाश पड़ता है, यद्यपि इस ग्रंथ की प्रामाणिकता अभी वास्तविक कसौटी पर नहीं कसी गई है। अभी तक यह पं० गोविंदवल्लभ पंत के पास सुरक्षित है। इसका लिपिकाल सं० १८७५ है। इसके द्वारा यह ज्ञात होता है कि रत्नावली का विवाह १२ वर्ष

की अवस्था में हुआ था। १६ वर्ष में गौना और संवत् १६२७ में रत्नावली-त्याग की घटना घटती है। रत्नावली के दोहे इस प्रकार हैं—

जासु दलहि लहि हरषि हरि, हरत भगत भव रोग।
तासु दास पद दासि है, 'रतन' लहत कत सोग॥
बसे बारही कर गह्यो, सोरहि गौन कराय।
साताइस लागत करी, नाथ 'रतन' असहाय॥
सागर कर रस ससि 'रतन', संबत भो दुखदाय।
प्रिय बियोग जननो मरन, करन न भूल्यो जाय॥
मोइ दीनों संदेस पिय अनुज नंद के हाथ।
'रतन' समझि जनि पृथक मोइ, सुमिरत श्री रघुनाथ॥

यह सामग्री सोरों के प्रसंग को लेकर हिंदी जगत् के सामने आई। इसका ध्येय तुलसीदास को नंददास का अग्रज प्रमाणित करना भी था। यह पहले ही निवेदन किया जा चुका है कि तथोक्त सामग्री की प्रामाणिकता संदिग्ध है।

नारी द्वारा लगी ठेस ने जिस भक्ति का प्लावन तुलसी के मानस में किया वह भावना दिनोत्तर विकास के असीम पथ पर बढ़ती गई। इसके पश्चात् इन्होंने नाना तीर्थों का परिभ्रमण किया। काशी, चित्रकूट और अयोध्या से इनकी ममता हो गई। ये स्थान इन्हें अत्यंत प्रिय थे। इनके जीवन का अधिकांश काशी में व्यतीत हुआ। काशी की प्रशस्ति में इन्होंने लिखा है—

मुक्ति जनम महि जानि, ज्ञान खानि अघहानि कर।
जहँ बस संभु भवानि, सो कासी सेइय कस न॥
[मानस, किष्किंधाकांड]

और चित्रकूट तो उनकी दृष्टि में राम का सच्चा स्नेहप्रदाता ही है—

तुलसी जो राम सौं सनेह साँचो चाहिए।
तौ सेइए सनेह सौं बिचित्र चित्रकूट सो॥

[कवितावली, उ० १४१]

अयोध्या में तो इन्होंने हिंदी साहित्य के अमर रत्न 'रामचरितमानस' की रचना का आरंभ ही किया।

जिसका बचपन लललाते, बिललाते, दर दर भिक्षा माँगकर बीता, प्रणय के अतृप्तिबोध ने जिसके यौवन पर वैराग्य की विभूति लेपित कर दी, उस

तुलसीदास का अंतिम समय भी सुखकर न व्यतीत हुआ। संभवतः विधाता का यह उन्हें सबसे बड़ा वरदान था। ऐसा आभास होता है, आरंभ में, काशी में इनका पर्याप्त विरोध हुआ। कहा जाता है कि पहले ये प्रह्लादघाट पर रहते थे। विनयपत्रिका की रचना इन्होंने गोपालमंदिर के पिछवाड़े एक छोटे से कमरे में की। वहाँ एक पट लगा हुआ है। लेकिन बाद में उन्हें इन स्थानों को छोड़ना पड़ा और अस्सी (तुलसीघाट) पर जमना पड़ा।

जिस व्यक्ति ने जीवन भर अभाव से संघर्ष कर अपनी भक्ति के सहारे विश्व की फूटी आँखों में ज्योतिदान करने का सफल प्रयत्न किया, उसपर अंत में रोग ने आक्रमण किया। उन्होंने किसी वैद्य की नहीं, राम, शंकर और हनुमान की आराधना की, उसकी निवृत्ति के लिये। उदरशूल, बाहु-शूल आदि से तो वे जर्जर हो ही गए थे, लगता है प्लेग का भी उन्हें शिकार होना पड़ा। इस जर्जर परिस्थिति में अधिक दिनों जीवित रहना संभव न था और सं० १६८० में इनका देहावसान काशी में हो गया। इस संबंध में यह दोहा प्रसिद्ध है—

संबत सोरह सौ असी, असी गंग के तीर।
सावन कृष्ना तीज सनि, तुलसी तज्यो सरीर॥

तुलसी के मित्र टोडर के परिवारवाले इसी तिथि को उनके नाम पर सिद्धा दान करते हैं।

'विशाल भारत' में छपा यह अंश तुलसी के जीवन पर प्रकाश डालता है—

'कवि अविनाशराय कृत इस तुलसीप्रकाश में लिखित जन्मतिथियों के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास का जन्म संवत् १५६८ वि० की श्रावण शुक्ला सप्तमी, शुक्रवार को हुआ। दस मास की अवस्था होने के पश्चात् उनकी माता हुलसी का और हुलसी से लगभग एक मास पश्चात् उनके पिता का परलोक-वास हुआ। ७ वर्ष ११ मास २२ दिन की आयु में श्री तुलसीदास अपने गुरु श्री नृसिंह (नरहरि) की पाठशाला में प्रविष्ट हुए। २१ वर्ष ३ मास ४ दिन की आयु होने पर उनका विवाह एवं २६ वर्ष १० दिन की आयु में वैराग्य हुआ। ५२ वर्ष की आयु पर्यंत तीर्थाटन करने के पश्चात् काशी में निवास करने लगे। ६३ वें वर्ष में श्रीरामचरितमानस का लेखन प्रारंभ किया। ७६ वर्ष की आयु से लेकर ८६ वर्ष की आयु पर्यंत यमुना और संवत् १६५७ वि० के कार्तिक मास में काशीनिवास करने चले। पयस्विनी नदी के संगम के समीप

राजा नामक साधु की कुटी पर गए। निवास करते हुए उस कुटी को राजापुर-रूप में परिणत किया। आशा है, इतिहास एवं साहित्यप्रेमी विद्वान् पाठक इन तिथियों पर ध्यान देंगे।'

'विशाल भारत', मई, १९५४ के अंक में यह निष्कर्ष श्री भद्रदत्त शर्मा ने 'तुलसीप्रकाश' के आधार पर निकाला है। जबतक मूल न देखा जाय इसे भी प्रामाणिक मानना ठीक न होगा।

तुलसी साहित्य

यद्यपि नागरीप्रचारिणी सभा के खोज विभाग की रिपोर्ट के द्वारा उनकी ३७ रचनाएँ प्राप्त हुई हैं तथापि नागरीप्रचारिणी सभा ने केवल १२ ग्रंथ ही उनमें से प्रामाणिक माने। शेष, दूसरे तुलसी नामधारियों के हैं। हिंदी के प्रायः सभी समर्थ आलोचक इन्हें ही प्रामाणिक मानते हैं। उनके प्रामाणिक ग्रंथों के नाम निम्नलिखित हैं—

१. रामचरितमानस, २. वैराग्यसंदीपनी, ३. रामललानहछू, ४. बरवै रामायण, ५. पार्वतीमंगल, ६. जानकीमंगल, ७. रामाज्ञाप्रश्न, ८. दोहावली, ९. कवितावली १०. गीतावली, ११. कृष्णगीतावली और १२. विनयपत्रिका।

रामचरितमानस—हिंदी में सभी दृष्टियों से सर्वोत्तम इस प्रबंधकाव्य का प्रणयन सं० १६३१ में अयोध्या में आरंभ हुआ। कवि ने स्वयं लिखा है—

'संबत सोरह सै एकतीसा, करौं कथा हरि पद धरि सीसा।'

इस ग्रंथ में कवि ने सात सोपानों में रामकथा विस्तारपूर्वक लिखी है। इसमें वर्णिक और मात्रिक दोनों छंदों का प्रयोग किया गया है। वर्णिक छंदों में अनुष्टुप, रथोद्धता, स्रग्धरा, मालिनी, ग्रंथ तोटक, वंशस्थ, भुजंगप्रयात, नगस्वरूपिणी, वसंततिलका; इंद्रवज्रा, और शार्दूलविक्रीडित तथा मात्रिक छंदों में दोहा, सोरठा, तोमर, हरिगीतिका, चौपाई, त्रिभंगी आदि १८ छंदों का प्रयोग हुआ है।

वैराग्य संदीपनी—दोहा, चौपाई तथा सोरठा छंदों में रचित ६२ छंदों का यह संग्रह है। इसके विषय हैं ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, शांति तथा संतों के लक्षण आदि।

रामललानहछू—विवाह और यज्ञोपवीत संस्कार के अवसर पर औरतों के गाए जाने के हेतु लिखे गए सोहर छंदों में २० पदों का संग्रह है।

बरवै रामायण—अलंकार-योजना-प्रधान सात कांडों तथा ६६ बरवै छंदों में लिखे गए इस ग्रंथ में स्फुट रूप में राम की कथा वर्णित है।

जानकीमंगल—२१६ छंदों में लिखित इस पुस्तक का विषय राम और सीता का विवाहवर्णन है।

पार्वतीमंगल--१६४ छंदों में शिव-पार्वती-विवाह का वर्णन इसमें हुआ है।

रामाज्ञाप्रश्न—शकुनविचार के लिये लिखित सात अध्यायों में यह पुस्तक है, प्रत्येक अध्याय में ४६ दोहे हैं तथा इन दोहों में भी रामकथा वर्णित है।

दोहावली—भक्ति और नीति के ५७३ दोहों का यह संग्रह है, जिनमें से अनेक दोहे तुलसीदास की अन्य रचनाओं से संग्रहीत किए गए हैं।

कवितावली—६३७ कवित्त, सवैया, घनाक्षरी और षट्पदी छंदों में इस ग्रंथ में रामकथा वर्णित है। इस ग्रंथ में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक एवं कवि के जीवन की हल्की झलक इतस्ततः मिलती है। राम का शौर्य-वर्णन इस ग्रंथ में अद्वितीय है। भाषा ब्रज है।

गीतावली—राग रागिनियों से समाविष्ट सात खंडों में तथा ३३० छंदों में सूरसागर की शैली पर इस ग्रंथ का प्रणयन हुआ है। राम की सौंदर्य-सुषमा का वर्णन तुलसीदास ने इस ग्रंथ में किया है।

कृष्णगीतावली—यह रचना ब्रजभाषा में रचित कृष्ण संबंधी ६१ स्फुट पदों का श्रृंगार-रस-प्रधान संकलन है।

विनयपत्रिका—यह राग रागिनियों से युक्त विनय के अप्रतिम २७६ पदों का संग्रह है। देवी, देवता, राम और शंकर की सेवक भाव से की गई वंदनाएँ इसमें संकलित हैं। ज्ञान, वैराग्य, संसार की नश्वरता आदि के संबंध में रससिक्त कविहृदय का आत्मनिवेदन इस ग्रंथ में संकलित है।

युग और तुलसी का व्यक्तित्व

तुलसीदास के प्रादुर्भाव के समय का समाज सभी दृष्टियों से संक्रमणकालीन था। सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से सामान्य लोगों का जीवन विपन्न था। ऐसे लोग तत्कालीन समाज में सामाजिक दृष्टि से उन्नत

समझे जाते थे, जो विलासिता के गर्त में गोते लगा रहे थे। उन्हें अवकाश नहीं था कि आँख खोलकर उस समाज के प्रति कोई सर्जनात्मक कार्य करें जो महामारी, दारिद्रय और रोग से तो आक्रांत था ही और जिसके जर्जर कंधों पर तथाकथित बड़ों की लोकशोषिका वैभवशालिनी विलासिता नृत्य कर रही थी। उन्हें तो अपनी रंगीनी चाहिए थी, संसार उनके विलास एवं उपभोग की सामग्री मात्र था।

मध्यकालीन मानव अत्यंत धर्मभीरु था। उसे धर्म पर इतनी प्रगाढ़ आस्था थी कि वह उसे जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति समझता था। यह लोक तो उसका भ्रष्ट था ही, वह परलोक की चिंता में निराशा में आशा को ढाढ़स बँधाता था। जिन लोगों के हाथों में इस क्षेत्र की बागडोर थी, उनमें या तो अनेक गद्दीधारी रटंत पंडित थे, जिनका धर्म इतना कमजोर था कि स्पर्श मात्र से टूट जाता था। वे उसकी उसी प्रकार रक्षा कर रहे थे जिस प्रकार घूँघट के भीतर कोई रमणी अपने रूप की। उन्हें जनजीवन से कुछ नहीं लेना था। उनके यहाँ अहं की भावना इतनी प्रबल थी, जितनी मद के अधिक सेवन से हो जाती है। घर उजड़ा जा रहा था पर वे खर्राटे ले रहे थे दूसरों को कोसकर, म्लेच्छ एवं अस्पृश्य कहकर, पर अपने को समेटकर आँख बंद कर। कुछ विद्यार्थियों पर अपनी शास्त्रीय विद्वत्ता की धाक जमाने में ही वे तल्लीन थे। ऐसे लोग जाति पाँति, छुआछूत के बंधन को कठोर बना रहे थे। दूसरे ऐसे लोग समाज के ठेकेदार थे, जो कहीं ठिकाना न लगने पर सर मुड़ा मुड़ाकर संन्यासी हो जाते थे। भारतीय परंपरा रही है कि वह ब्राह्मण को जगद्गुरु और संन्यासी को ब्राह्मणगुरु मानता आया है। विश्व का यह सर्वोत्तम पद संन्यास के द्वारा उन्हें प्राप्त हो जाता है। भेष की माया में फँस, लोग उनका संमान तो करते ही थे, नीच समझी जानेवाली जातियाँ उन्हें महात्मा मान बैठी थीं। टोटका, टोना और छूमंतर, सबका जादू जमकर चलने लगा। कबीर का सारा प्रयत्न उनके जीवन के बाद समाप्त हो गया, यद्यपि उनकी परंपरा में बाद में अनेक अच्छे संत हुए। दूसरे, कबीर के मत में पुनर्निर्माण की भावना नहीं थी। अवशिष्ट को ध्वस्त कर वह नया निर्माण करना चाहते थे। भारत में केवल व्यापक समन्वयवादी दृष्टिकोण ही सफल हो सकता है। सम्राट् अकबर ने कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा जोड़कर दीनइलाही धर्म चलाया। पर उसमें जीवन नहीं, चेतना नहीं और न थी मृतप्राय जीवन को अमृत देकर जीवित करने की शक्ति। उधर ब्रज की ओर कृष्ण के अत्यंत सुंदर मनोमुग्धकारी

रूप पर वैष्णव भक्त संगीत की स्वरलहरी में खो रहे थे। कमनीय कृष्ण की चारुता में समाज को वे डुबाना चाहते थे। उसी से उन्हें संतोपलाभ देना चाहते थे। पर उनका यह सामाजिक उपचार उसी प्रकार का था जिस प्रकार पीड़ा से आकुल होने पर कोई चिकित्सक ऐसी वस्तु का सेवन कराए जिसमें पीड़ित चेतना ही खो बैठे। वहाँ भी प्रायः गद्दी का झगड़ा था। राग रंग तभी भाता है, जब व्यक्ति का तन और मन तृप्त हो। भूखे रहनेवाले भजन नहीं करते।

यद्यपि रामानंद स्वयं बहुत बड़े क्रांतदर्शी और भविष्यद्रष्टा थे, तथापि उनके मत को कोई ऐसा समर्थ प्रसारक नहीं मिला, जैसे अन्य मतों को, इसलिये वह संकुचित रूप से जी रहा था क्योंकि उसमें जीवनी शक्ति थी। ऐसी ही परिस्थिति में तुलसीदास का आविर्भाव हुआ। तुलसी ने जगत् देखा था, जीवन देखा था, उनके पैरों में बिवाई फटी थी। लोक में व्याप्त पीड़ा का उन्हें अनुभव था, उसके प्रति उनमें सहानुभूति थी, उसका उन्हें कष्ट था। वे जहाँ एक ओर समस्त जग को सियाराममय जानकर पूजा करनेवाले व्यक्ति थे वहीं राम के प्रेम में चातक की भाँति उनमें निष्ठा भी थी। उन्होंने समाज को देखा और समझा था, बाहर से नहीं, उसके भीतर रहकर। उनके भीतर निर्माण की मेधावी प्रतिभा थी। नाना शास्त्रों और पुराणों का तथा भाषा के प्राकृत ग्रंथों का उन्होंने अध्ययन, मनन एवं चिंतन तो किया था ही, भुक्तभोगी होने के कारण वे समाज के लिये सत्य एवं सुंदर का तत्व भी समझते थे। वे रूप की माया से भी परिचित थे। इन सबका प्रभाव, उनके मेधावी प्रतिभासंपन्न जीवन में एक नई चेतना लेकर आया। ऐसी चेतना की लहर जागी जिससे इतना समन्वयग्राही बड़ा तत्व प्रस्फुटित हुआ जैसा विश्व के इतिहास में ढूँढ़े भी नहीं मिलेगा। निर्गुण और सगुण में भेद न मानकर भी उन्होंने लोक की आवश्यकता का अनुभव कर ऐसे राम की प्रतिष्ठा जनजीवन में की जो युग के राक्षसों को ही नहीं, दशानन रावण को भी पदलुंठित कर सकने की सामर्थ्य रखता है, जो सुंदरता में अपना सानी न रखने पर भी आपदा आने पर उपकार के लिये अपना कुसुम सा हृदय वज्र बना सकता है। वे कबीर और सूर के एकांगी मार्ग की पूर्णता बनकर आए। समाज को राक्षसों से बचाने के लिये उन्होंने वानरी वृत्ति तक के लोगों के भीतर उनकी सोई शक्ति का उद्बोध कराया।

समझे जाते थे, जो विलासिता के गर्त में गोते लगा रहे थे। उन्हें अवकाश नहीं था कि आँख खोलकर उस समाज के प्रति कोई सर्जनात्मक कार्य करें जो महामारी, दारिद्रय और रोग से तो आक्रांत था ही और जिसके जर्जर कंधों पर तथाकथित बड़ों की लोकशोषिका वैभवशालिनी विलासिता नृत्य कर रही थी। उन्हें तो अपनी रंगीनी चाहिए थी, संसार उनके विलास एवं उपभोग की सामग्री मात्र था।

मध्यकालीन मानव अत्यंत धर्मभीरु था। उसे धर्म पर इतनी प्रगाढ़ आस्था थी कि वह उसे जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति समझता था। यह लोक तो उसका भ्रष्ट था ही, वह परलोक की चिंता में निराशा में आशा को ढाढ़स बँधाता था। जिन लोगों के हाथों में इस क्षेत्र की बागडोर थी, उनमें या तो अनेक गद्दीधारी रटंत पंडित थे, जिनका धर्म इतना कमजोर था कि स्पर्श मात्र से टूट जाता था। वे उसकी उसी प्रकार रक्षा कर रहे थे जिस प्रकार घूँघट के भीतर कोई रमणी अपने रूप की। उन्हें जनजीवन से कुछ नहीं लेना था। उनके यहाँ अहं की भावना इतनी प्रबल थी, जितनी मद के अधिक सेवन से हो जाती है। घर उजड़ा जा रहा था पर वे खर्राटे ले रहे थे दूसरों को कोसकर, म्लेच्छ एवं अस्पृश्य कहकर, पर अपने को समेटकर आँख बंद कर। कुछ विद्यार्थियों पर अपनी शास्त्रीय विद्वत्ता की धाक जमाने में ही वे तल्लीन थे। ऐसे लोग जाति पाँति, छुआछूत के बंधन को कठोर बना रहे थे। दूसरे ऐसे लोग समाज के ठेकेदार थे, जो कहीं ठिकाना न लगने पर सर मुड़ा मुड़ाकर संन्यासी हो जाते थे। भारतीय परंपरा रही है कि वह ब्राह्मण को जगद्गुरु और संन्यासी को ब्राह्मणगुरु मानता आया है। विश्व का यह सर्वोत्तम पद संन्यास के द्वारा उन्हें प्राप्त हो जाता है। भेष की माया में फँस, लोग उनका संमान तो करते ही थे, नीच समझी जानेवाली जातियाँ उन्हें महात्मा मान बैठी थीं। टोटका, टोना और छूमंतर, सबका जादू जमकर चलने लगा। कबीर का सारा प्रयत्न उनके जीवन के बाद समाप्त हो गया, यद्यपि उनकी परंपरा में बाद में अनेक अच्छे संत हुए। दूसरे, कबीर के मत में पुनर्निर्माण की भावना नहीं थी। अवशिष्ट को ध्वस्त कर वह नया निर्माण करना चाहते थे। भारत में केवल व्यापक समन्वयवादी दृष्टिकोण ही सफल हो सकता है। सम्राट् अकबर ने कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा जोड़कर दीनइलाही धर्म चलाया। पर उसमें जीवन नहीं, चेतना नहीं और न थी मृतप्राय जीवन को अमृत देकर जीवित करने की शक्ति। उधर ब्रज की ओर कृष्ण के अत्यंत सुंदर मनोमुग्धकारी

रूप पर वैष्णव भक्त संगीत की स्वरलहरी में खो रहे थे। कमनीय कृष्ण की चारुता में समाज को वे डुबाना चाहते थे। उसी से उन्हें संतोषलाभ देना चाहते थे। पर उनका यह सामाजिक उपचार उसी प्रकार का था जिस प्रकार पीड़ा से आकुल होने पर कोई चिकित्सक ऐसी वस्तु का सेवन कराए जिसमें पीड़ित चेतना ही खो बैठे। वहाँ भी प्रायः गद्दी का झगड़ा था। राग रंग तभी भाता है, जब व्यक्ति का तन और मन तृप्त हो। भूखे रहनेवाले भजन नहीं करते।

यद्यपि रामानंद स्वयं बहुत बड़े क्रांतदर्शी और भविष्यद्रष्टा थे, तथापि उनके मत को कोई ऐसा समर्थ प्रसारक नहीं मिला, जैसे अन्य मतों को, इसलिये वह संकुचित रूप से जी रहा था क्योंकि उसमें जीवनी शक्ति थी। ऐसी ही परिस्थिति में तुलसीदास का आविर्भाव हुआ। तुलसी ने जगत् देखा था, जीवन देखा था, उनके पैरों में बिवाई फटी थी। लोक में व्याप्त पीड़ा का उन्हें अनुभव था, उसके प्रति उनमें सहानुभूति थी, उसका उन्हें कष्ट था। वे जहाँ एक ओर समस्त जग को सियाराममय जानकर पूजा करनेवाले व्यक्ति थे वहीं राम के प्रेम में चातक की भाँति उनमें निष्ठा भी थी। उन्होंने समाज को देखा और समझा था, बाहर से नहीं, उसके भीतर रहकर। उनके भीतर निर्माण की मेधावी प्रतिभा थी। नाना शास्त्रों और पुराणों का तथा भाषा के प्राकृत ग्रंथों का उन्होंने अध्ययन, मनन एवं चिंतन तो किया था ही, भुक्तभोगी होने के कारण वे समाज के लिये सत्य एवं सुंदर का तत्व भी समझते थे। वे रूप की माया से भी परिचित थे। इन सबका प्रभाव, उनके मेधावी प्रतिभासंपन्न जीवन में एक नई चेतना लेकर आया। ऐसी चेतना की लहर जागी जिससे इतना समन्वयग्राही बड़ा तत्व प्रस्फुटित हुआ जैसा विश्व के इतिहास में ढूँढ़े भी नहीं मिलेगा। निर्गुण और सगुण में भेद न मानकर भी उन्होंने लोक की आवश्यकता का अनुभव कर ऐसे राम की प्रतिष्ठा जनजीवन में की जो युग के राक्षसों को ही नहीं, दशानन रावण को भी पदलुंठित कर सकने की सामर्थ्य रखता है, जो सुंदरता में अपना सानी न रखने पर भी आपदा आने पर उपकार के लिये अपना कुसुम सा हृदय वज्र बना सकता है। वे कबीर और सूर के एकांगी मार्ग की पूर्णता बनकर आए। समाज को राक्षसों से बचाने के लिये उन्होंने वानरी वृत्ति तक के लोगों के भीतर उनकी सोई शक्ति का उद्बोध कराया।

वे पंडित और विद्वान् थे, इसलिये तथाकथित पंडितों को भी उन्होंने अपनी अप्रतिम समन्वयवादी प्रतिभा से चकित कर दिया। तुलसीदास में निर्माण की अभूतपूर्व क्षमता थी। तत्कालीन सामाजिक ढाँचे को, जो जर्जरावस्था में था, उन्होंने संजीवनी बूटी पिलाई। वे निर्माण में विश्वास रखनेवाले अत्यंत मर्यादावादी जीव थे। उन्होंने वर्णाश्रम धर्म का उज्ज्वल रूप पुनः सामने रखा। जीवन को विनष्ट करनेवाली वृत्तियों से उन्होंने संघर्ष किया था। वे इंद्रियजित् भी थे। उन्होंने लोक में व्याप्त माया, काम, क्रोध के विनाशकारी प्रभाव की भर्त्सना की। उनकी रामराज्य की कल्पना आज के युग में भी सामाजिक चेतना का आदर्श है। उन्होंने लोक में आदर्श नारी की प्रतिष्ठा भी की। उन्होंने रामानंदी संप्रदाय का अनुगमन नहीं किया, उसको एक नया रूप दिया। उन्होंने नवीन जीवनदर्शन दिया, नई दृष्टि दी, नई चेतना जगाई। पर सभी कुछ साहित्यकार की भाँति, परंपरा के जीवंत अलख तत्वों को जगाकर, प्रचारक की तरह नहीं।

लोककल्याण करके भी व्यक्ति आत्मकल्याण की महत्तम साधना कर सकता है, तुलसी इस बात के प्रतीक हैं। उन्होंने आत्मकल्याण की साधना भी केवल अपने तक ही सीमित नहीं रखी। संसार को उन्होंने उस सहज पथ का पता भी बताया, उसपर चलने की प्रेरणा भी दी। वे असज्जनों की वंदना करके भी उनके सामने कभी झुके नहीं। इतने विशाल व्यक्तित्ववाले जनकल्याणकारी, आत्मद्रष्टा, क्रांतदर्शी तथा समवन्यवादी कवि का उस युग में प्रादुर्भाव न केवल भारत के लिये गौरव की बात है, अपितु समस्त मानवसमाज के लिये आदर्श प्रेरणादायिनी संपत्ति भी है।

तुलसीदास वर्णाश्रम व्यवस्था की प्रतिष्ठा में विश्वास रखनेवाले व्यक्ति थे। भारतीय जीवन की सर्वाधिक दृढ़ भित्ति पारिवारिक जीवन है। पारिवारिक जीवन की ऐसी आदर्श प्रतिष्ठा तुलसीदास ने की कि जैसी भारत का अन्य कोई साहित्यकार नहीं कर सका। पारिवारिक जीवन की आदर्श प्रतिष्ठा ही रामराज्य के मूल में है। उन्होंने लोगों को दिखाया कि पारिवारिक मर्यादा में जरा भी विकृति आने पर सारा का सारा घर कलह, दुःख और अशांति का अखाड़ा बन सकता है। लोक में व्याप्त सारी मर्यादाएँ विनष्ट हो सकती हैं। कैकेयी का कोप, विभीषण का रावण के प्रति विद्रोह और बालि तथा सुग्रीव इसके उदाहरण हैं। इस कार्य में उन्हें पूर्ण सफलता भी मिली। उन्होंने जिन चरित्रों

का निर्माण किया है, वे अजर अमर तो हैं ही, साथ ही लोकमंगलकारी आदर्श की प्रतिष्ठा करते हैं, जो लोकजीवन को श्रीसमृद्धिमय बनाने में सहायक होता है।

इतने विविध किंतु पूर्ण अन्योन्याश्रित चरित्रों का चित्रण उन्होंने रामायण में किया है जितने चरित्र एक साथ हिंदी के किसी अन्य काव्यग्रंथ में दिखाई नहीं पड़ते। अन्यत्र भी यदि कहीं दिखाई पड़ेंगे तो इस अन्योन्याश्रित प्रतिष्ठा के साथ नहीं।

उनकी रचनाओं में राजनीति से लेकर वेदांत दर्शन तक की अभिव्यक्ति है और सभी क्षेत्रों में उनकी नई सूझबूझ अपना एक मौलिक एवं मंगलमय छाप लगाती है। उनके सभी पात्र भारतीय मर्यादा से अनुप्राणित होकर चलते हैं।

यद्यपि वे मूलतः भक्ति के ही उपासक थे, तथापि वीर, शृंगार, हास्य, सभी कुछ उनकी रचनाओं में अत्यंत उच्च कोटि का मिलता है। उनके विनय के पद तो इतने सुंदर बन पड़े हैं कि ऐसा आभास होता है कि पाठक के हृदय की बात उन रचनाओं में फूट पड़ी है। उनमें गंभीर हृदय की व्यापक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है। तब तक प्रचलित प्रायः सभी काव्यपद्धतियों एवं रचना विधाओं में उन्होंने अपनी रचनाएँ की हैं और इतना व्यापक समन्वय इस क्षेत्र में भी किया है कि इतनी मधुरता एवं व्यापकता किसी भी अन्य रचनाकार के साहित्य में दिखाई नहीं पड़ती।

नीति उपदेश की सूक्ति पद्धति, सूफियों की दोहा चौपाईवाली पद्धति, वीरशृंगार की छप्पय पद्धति, विद्यापति और सूरदास की गीतपद्धति, गंग आदि चारण कवियों की कवित्त सवैया पद्धति, सभी विधानों का निखार उनकी रचनाओं में मिलता है। वे विद्वान् और पंडित तो थे ही, संस्कृत के भी कवि थे। उन्होंने संस्कृत में भी इतस्ततः रचना की है। उन्होंने अवधी और ब्रज दोनों में रचनाएँ की हैं और उनका साहित्यिक संस्कृत रूप ही इनकी रचनाओं में मिलता है। भाषा की दृष्टि से भी उनकी देन हिंदी के लिये अत्यंत मूल्यवान् है। कहीं कहीं लोकव्यवहृत फारसी के शब्द भी इनकी रचनाओं में आए हैं।

यद्यपि ये सभी विचारों के सारग्राही समन्वयवादी भक्त कवि हैं, तथापि इन्हें सियाराममय भक्ति का रूप ही ग्राह्य था और उसके द्वारा लोकमंगल की सिद्धि उनके काव्य का प्रतिपाद्य विषय है।

तुलसी के चित्र

तुलसीदास के अनेक चित्र हिंदीजगत् के संमुख हैं। उनमें खड्गविलास प्रेस का चित्र सन् १८८९ में प्रकाशित हुआ जो ग्रियर्सन की कृपा का परिणाम है।[1] दूसरा चित्र रणछोड़लाल व्यास ने सन् १९१५ में प्रकाशित कराया, इस दावे के साथ कि यह जयपुर के किसी कारीगर से बादशाह जहाँगीर द्वारा बनवाया गया था।[2] तीसरा चित्र राघववल्लभाशरण जी

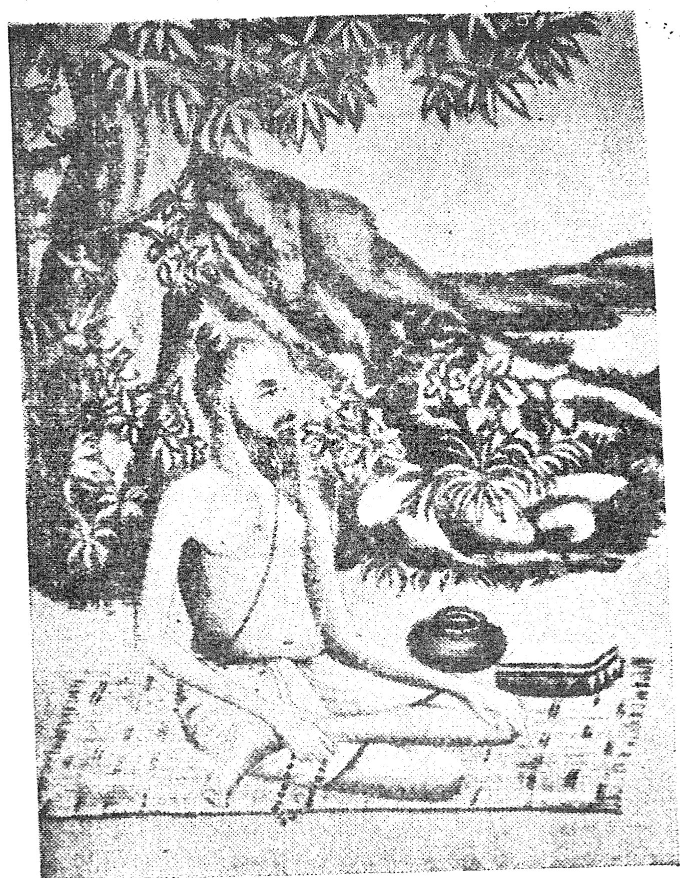
---

१. रामचरितमानस—रामदीन सिंह द्वारा (खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर) सर स्टुअर्ट कालिवन बेली, लेफ्टेनेंट गवर्नर, बंगाल की आज्ञा से सन् १८८९ ई० में प्रकाशित।

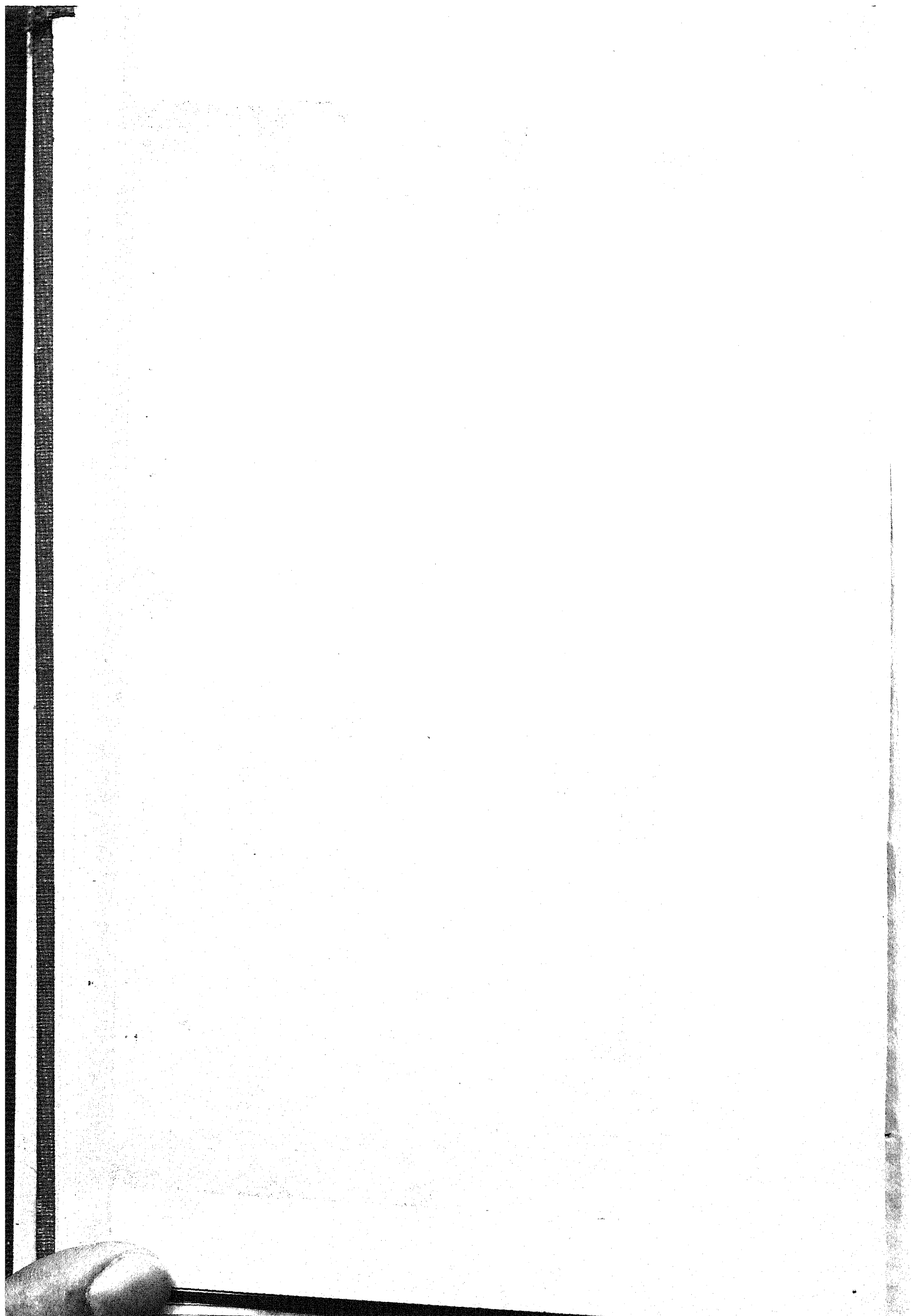
२. दूसरा चित्र बादशाह जहाँगीर के चित्रकारों ने संवत् १६६५ विक्रमाब्द के लगभग निर्माण किया होगा; क्योंकि जहाँगीर संबत १६६२ से १६८४ बिक्रमाब्द पर्यंत दिल्ली के राज्यासन पर विराजमान था। उस समय गोस्वामी जी की अवस्था ७६ वर्ष की रही होगी। गोस्वामी जी के जीवनचरित् में लिखा है कि बादशाह जहाँगीर उनसे मिलने काशी आया था। बादशाह उनपर बड़ा प्रेम रखता और पूज्य दृष्टि से देखता था। गोस्वामी जी एक बार भयंकर व्याधि से अत्यंत पीड़ित हुए थे। संभव है, उनकी बीमारी का हाल सुनकर स्नेहवश काशी आया हो और उसी समय अपने चित्रकारों को चित्र लेने की आज्ञा दी हो। इसी से यह चित्र सद्यः रोगमुक्त अवस्था का मालूम होता है। उन दिनों प्रह्लादघाट पर पं० गंगाराम जोशी के यहाँ गोस्वामी जी निवास करते थे। पं० गंगाराम गोस्वामी जी के मित्रों में कहे जाते हैं। किसी प्रकार चित्रकारों से मिलकर उन्होंने इस चित्र की प्रतिलिपि प्राप्त कर ली हो तो आश्चर्य नहीं। सुना जाता है वह चित्र उनके वंशजों के पास अबतक सुरक्षित है। वर्तमान काल के पं० रणछोड़लाल व्यास अपने को पं० गंगाराम ज्योतिषी के उत्तराधिकारी बतलाते हैं। उन्होंने सन् १९१५ ई० में गोस्वामी जी की जीवनी लिखवा, कर एक छोटी सी पुस्तिका प्रकाशित की है और उसमें एक रंग का वही चित्र भी प्रकाशित किया है। व्यास जी का कथन है कि यह चित्र बादशाह जहाँगीर ने संवत् १६५५ विक्रमाब्द में जयपुर के



खड्गविलास प्रेस द्वारा मुद्रित चित्र



सर्वप्रथम लंदन में प्रकाशित चित्र



संकठाघाट, बाराणसी के यहाँ सं० १६८७ से प्रकट है जिसके संबंध में कहा जाता

कारीगर से बनवाया था। परंतु उस समय अकबर गद्दी पर था और जहाँगीर राजकुमार था, वह तो संवत् १६६१ में गद्दी पर बैठा था। यदि यह कहा जाय कि राजकुमार की अवस्था में ही जहाँगीर ने चित्र बनवाया तो सच नहीं; क्योंकि गद्दी पर बैठने के बाद उसने एक बार गोस्वामी जी को बुलवाकर जेल में बंद करवा दिया था। यदि वह राजकुमार की अवस्था में गोस्वामी जी का प्रेमी होता तो राज्यासन पर बैठकर उन्हें बंदी न बनाता। जेल में बंद करने पर वह उनके महत्त्व से परिचित हो प्रेमी हुआ और तभी चित्र बनवाने की आज्ञा दी होगी, इसलिये पं० रणछोड़लाल का वक्तव्य इतिहास से विपरीत होने के कारण विश्वासयोग्य नहीं है।

[—विनयपत्रिका, टीकाकार महादेवप्रसाद मालवीय, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग, संवत् १९८० वि०, पृष्ठ १–२]।

—श्रीयुक्त रणछोड़लाल व्यास के पास जो चित्र है, वह सं० १६५५ का नहीं हो सकता, क्योंकि उसमें जो इमारत बनी है, उसकी शैली बाद की है। यह उस शैली का है, जिसका प्रचलन मुहम्मदशाह के बाद हुआ है। किंतु वह चित्र संभवतः तुलसीदास के किसी मूल चित्र पर अवलंबित है, क्योंकि उसी से मिलते जुलते कई चित्र भिन्न भिन्न संग्रहों में मिलते हैं। उनमें एक तो प्रसिद्ध पुस्तक संग्रहीता श्री मयाशंकर याज्ञिक के पास है, और एक भारत-कला-भवन, काशी में है। ये दोनों चित्र निश्चित रूप से प्राचीन हैं। अतएव तुलसीदास जी के उस चित्र को वास्तविक मानना चाहिए। खड्गविलास प्रेस वाला चित्र अधेड़ अवस्था का होगा। उक्त चित्रों को देखने से यह जान पड़ता है कि ये उसी व्यक्ति की वृद्धावस्था के वे, जिसका यह अधेड़ अवस्था का है।

काशी के अस्सीघाटवाले तुलसीदास के स्थान में उनका जो दाढ़ीवाला चित्र है, वह आधुनिक चित्रकार की कृति है और सर्वथा कृत्रिम है।

—राय कृष्णदास

[रामचरितमानस, रामनरेश त्रिपाठी, प्रथम संस्करण, पौष, १९९२ वि०, पृष्ठ ७]।

है कि शाहजहाँ (संवत् १६५५ वि०) के समय से यह चित्र उनके वंश में है।[१] चौथा चित्र राय कृष्णदास की कृपा से सभा को प्राप्त हुआ था और जो तुलसी ग्रंथावली खंड एक में प्रकाशित हुआ था।[२] कुछ विद्वान् इसे संकटाघाट स्थित तुलसी के चित्र के आधार पर निर्मित नवीन चित्र मानते हैं। पाँचवाँ चित्र याज्ञिकसंग्रह का है। छठा किशनगढ़वाला चित्र रहीम

---

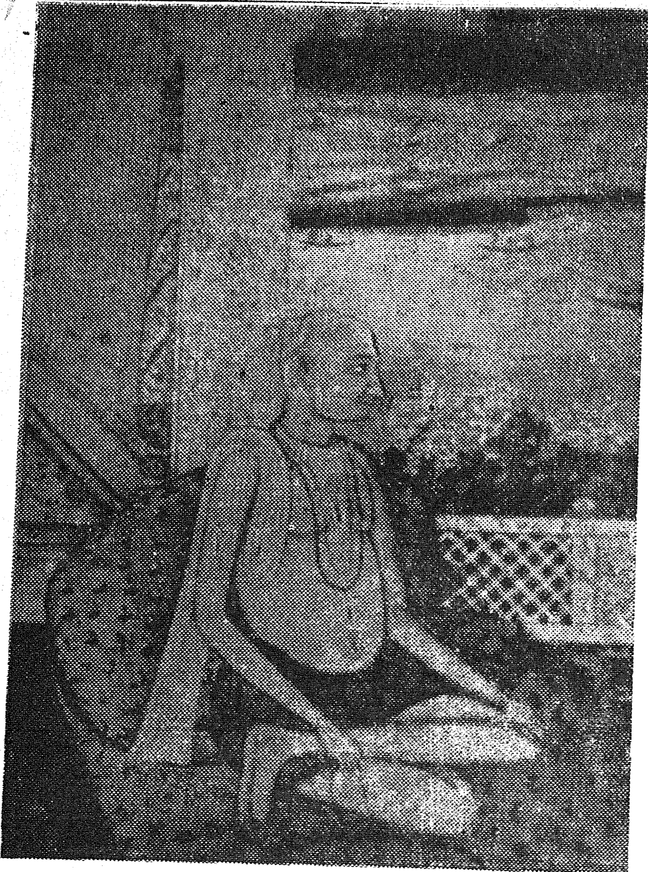
१. महंत जी के सुपुत्र श्री रामप्रसाद जी मेरे शिष्य हैं। उन्होंने सं० १९८७ में मुझे अपने स्थान पर ले जाकर चित्र दिखाया था और उसका फोटो ले लेने की अनुमति महंत जी से दिलाई थी। उस समय महंत जी ने मुझसे यह कहा था कि 'मेरे यहाँ यह चित्र वंशपरंपरा से चला आ रहा है। शाहजहाँ के समय में यह हमारे वंश में आया। मुझसे यह चित्र देखने के लिये राय कृष्णदास जी ले गए और अपने यहाँ के प्रसिद्ध मुगल परंपरा के चित्रकार उस्ताद रामप्रसाद से यथोचित परिवर्तन कराकर डाढ़ी हटवाकर इसे प्रकाशित करा दिया है।'

—विश्वनाथप्रसाद मिश्र

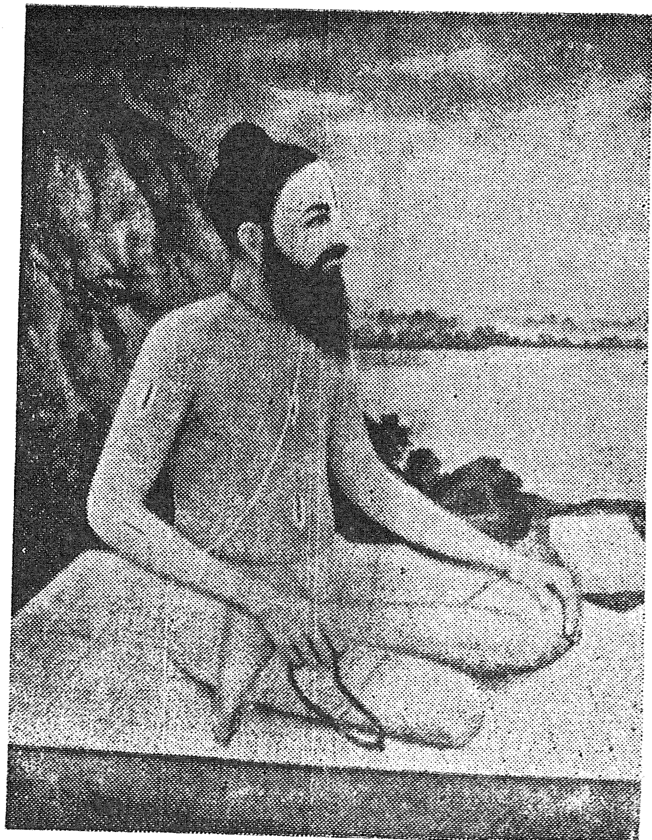
[नागरीप्रचारिणी पत्रिका, चंद्रबली पांडेय स्मृति अंक, २०१५ वि०, वर्ष ६३, अंक ३-४, पृ० ४२२।]

२—इस ग्रंथावली में गोस्वामी जी के जिस पुनीत चित्र का दर्शन आप कर रहे हैं, वह काशी के उत्साही रईस श्रीयुत राय कृष्णदास जी की कृपा से प्राप्त हुआ है। उनकी इस कृपा के लिये सभा अत्यंत अनुगृहीत है। तुलसीदास के दो तीन चित्र अबतक मिले हैं। उनमें यह सबसे अधिक प्रामाणिक ठहरता है। यह कल्पित नहीं है, इसका आभास तो उनकी आकृति आदि पर ध्यान देने ही से मिलता है। कल्पित चित्र में शरीर और आकृति जहाँतक भव्य हो सकती है, बनाने की चेष्टा लक्षित होती है। पर यह चित्र देखने में स्वाभाविक प्रतीत होता है। दूसरी बात यह है कि प्रह्लादघाट पर जहाँगीर बादशाह का बनवाया जो चित्र रखा हुआ है, उसके साथ यह बिलकुल मिलता है। भिन्न भिन्न स्थानों पर के दो चित्रों का इस प्रकार मिलना भी ठीक होने के प्रमाणों में गिना जा सकता है।

—[तुलसी ग्रंथावली, खंड ३, संवत् १९८० विक्रमाब्द]



प्रह्लादघाट (वाराणसी) वाला चित्र



किशनगढ़ नरेश के संग्रह में सुरक्षित चित्र

खानखाना के उद्योग से अकबर के चित्रकारों द्वारा निर्मित होने की संभावना (संवत् १६२५ वि०) प्रकट की जाती है।[१] कहा जाता है कि यह लंदन में प्रकाशित किसी चित्र के आधार पर है। सातवाँ चित्र तुलसी मंदिर, भदैनी काशी) का है जिसे तुलसी के उस मूल चित्र के आधार पर निर्मित बताया जाता है जो 'रामहल्ला[२]' में लापता हो गया था।

ये सभी के सभी चित्र तूलिकानिर्मित हैं, केमरा से उतारे हूबहू फोटो नहीं। चित्रकार कल्पना के धन का धनी होता है और अपनी रेखांकन की मौलिकता का आग्रही। इसलिये कल्पना ही नहीं, उसकी रुचि भी चित्रांकन में अंकित होती है, जो वेशभूषा, वातावरण के सर्जन में प्रेरक होती है। साथ ही चित्र बनवानेवालों का आग्रह भी चित्रकार के लिये प्रायः उपेक्षणीय नहीं। यह आग्रह सांप्रदायिक, श्रद्धास्पद और धनानुगामी भी हो सकता है। देश काल एवं शैली की सीमा भी ऐसे चित्रों के निर्माण की पृष्ठभूमि में रहती है। तुलसीदास के इन चित्रों में भी ये तत्व तो हैं ही, साथ ही उनके खोजियों का तर्कमय घोर आग्रह भी। इसलिये किसी एक चित्र को तुलसी का प्रतिचित्र मानना ठीक न होगा।

१. प्रथम एक रंग के चित्र को बादशाह अकबर के चित्रकारों ने संवत् १६२५ विक्रमाब्द के लगभग बनाया, उस समय गोस्वामी जी की अवस्था ३६ वर्ष की थी और वे तपश्चर्या में अनुरक्त थे। इतिहास से पता चलता है कि सम्राट् अकबर अपनी राजसभा में प्रत्येक मत के विद्वानों को रखने का अनुरागी और प्रसिद्ध पुरुषों तथा महात्माओं के चित्रों का संग्रह कर अपनी चित्रशाला सजवाने का बड़ा शौकीन था। अकबर का प्रसिद्ध वजीर नवाब खानखाना गोस्वामी जी से परम स्नेह रखता था। बहुत संभव है कि यह चित्र उसी के उद्योग से बनकर शाही चित्रालय में रखा गया हो। पहले इस चित्र को लंदन के किसी समाचारपत्र ने प्रकाशित किया और उसी के द्वारा इसका भारत में प्रचार हुआ है।

—विनयपत्रिका—बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग, पृ० २; ३।

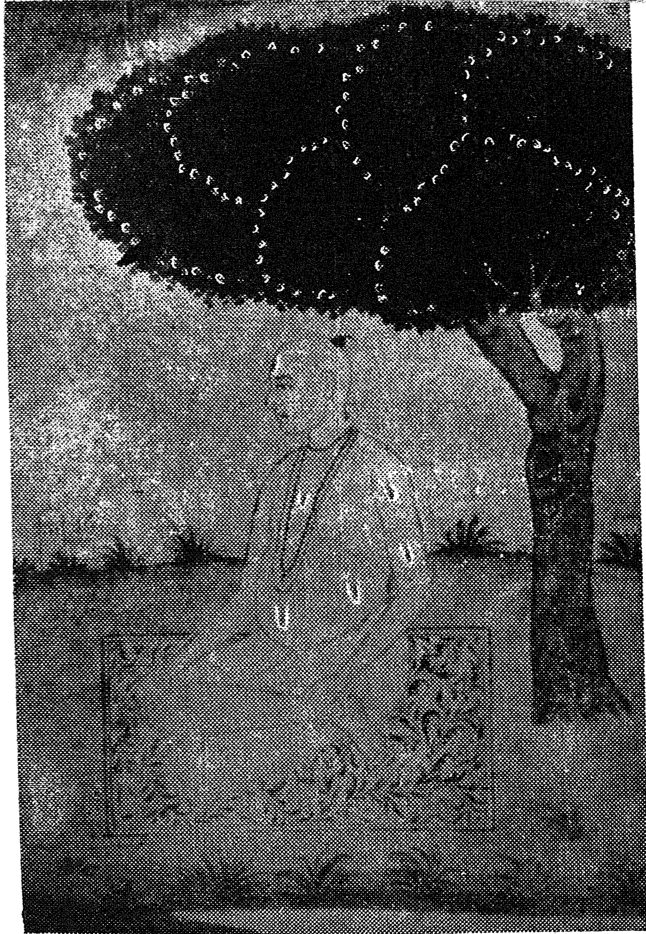
२. संवत् १९४७ (सन् १८९०) में भदैनी (काशी) स्थित पंपिंग स्टेशन के निर्माण में पहले वहाँ के राममंदिर की कुछ भूमि ली जाने की योजना थी। इसके विरोध में बड़ा उग्र आंदोलन, तोड़ फोड़, लूट पाट हुई थी। हाईकोर्ट तक मुकद्दमा भी चला था और अंततः राममंदिर की भूमि छोड़ देनी पड़ी। यह आंदोलन 'रामहल्ला' नाम से प्रसिद्ध है।

प्रह्लादघाट, संकठाघाट, सभा, याज्ञिकसंग्रह के चित्रों की आकृतियाँ सर्वथा मिलती हैं। खड्गविलास प्रेस का चित्र सबसे अलग है। किशनगढ़ और लंदन के चित्र में भी साम्य है। ये दोनों चित्र भी बहुत कुछ सभा के चित्र से मिलते हैं। तुलसी मंदिरवाला चित्र भी सर्वथा विलग है। इसलिये खड्गविलास प्रेस और तुलसी मंदिर के चित्रों को छोड़कर शेष प्रायः एक ही चित्र की अनुकृति हैं। दाढी और वय तथा टीका और आसन का अंतर है। लगता है, चित्रकार, संप्रदाय और उसके निर्माण के प्रेरकों का ज्ञान अज्ञान उसमें प्रस्फुटित हो उठा है। पतला आदमी मोटा हो सकता है। दाढ़ी रखी जा सकती है और साफ भी की जा सकती है और आज भी यह सब देखने को मिलता है। चित्रकार एवं मूर्तिकार बड़े सौभाग्य से विद्यावारिधि होते हैं। ऐसी स्थिति में उनसे ऐसी आशा करना कि टीका और आसन सबके सब शास्त्रीय रीति से नाप जोखकर ही बनाए गए होंगे, भले ही किसी की ज्ञानमहिमा की स्थापना करे, व्यावहारिक ज्ञान का अभाव ऐसे विवेचनों की गंभीरता को गरिमाच्युत ही करता है।

खड्गविलास प्रेस के चित्र को कोई भी प्रामाणिक नहीं मानता। तुलसी मंदिर के चित्र को आनंदबहादुर सिंह ने आकृति, वेशभूषा, वस्त्रादि के आधार पर ही प्रमाणित ठहराया है। बात तबतक नहीं बैठती जबतक उसके अस्तित्व का आधार ज्ञात न हो। जो कुछ भी हो, तुलसी का जो चित्र बहुप्रचारित हुआ और जिसे सभा ने प्रकाशित किया, उसमें भले ही कुछ काल्पनिक परिवर्तन हुए हों, आकृति उस चित्र की उपलब्ध अधिकांश चित्रों से मिलती है और इसे आजतक प्रकाशित चित्रों में जो मान्यता प्राप्त है, उसे देखते हुए यदि इसे तुलसी का चित्र माना जाय तो बहुत अनुचित नहीं होगा। माला, तिलक और परिधान अपने श्रद्धेय को जो चाहे जैसा पहना ले, क्योंकि तुलसी किसी एक व्यक्ति या संप्रदाय के नहीं, उन सबके हैं जो मानवीय मर्यादा में विश्वास रखते हैं। यदि कोई ऐसा चित्र मिल जाय जिसकी प्रामाणिकता असंदिग्ध हो तो उसे मान्यता दी जा सकती है। तबतक इससे ही संतोष करना चाहिए।

मानस अनुशीलन

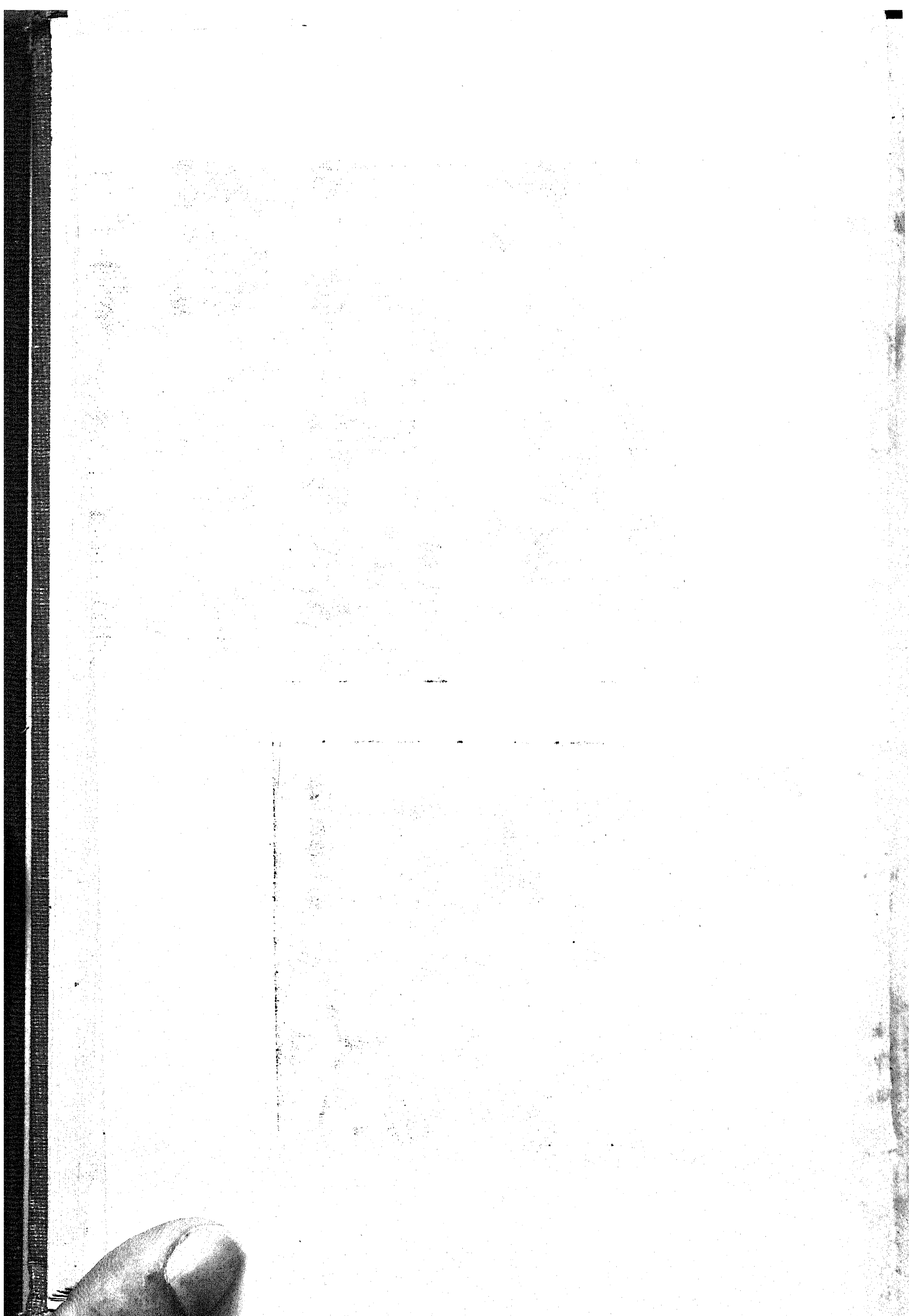
गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस हिंदी का ऐसा ग्रंथ है जिसने धर्म और साहित्य दोनों क्षेत्रों में विश्व में अनन्य संमान अर्जित किया है। अपनी प्रभा से न केवल अभिव्यक्ति की सत्यता का चिरंतन आलोक उसने लोक को दिया है अपितु कल्याण की अनंत रश्मियों से दिनोत्तर युगमानस



याज्ञिक संग्रह में संरक्षित चित्र



तुलसी मंदिर, भदैनी (काशी) का चित्र



को सौंदर्य से भी सुंदर रूप में गंगा की अजस्र धारा की भाँति अमृत का पान कराते हुए भविष्य को मंगलमंडित भी किया है। मानस की प्रभा के इस अंतर रहस्य का उद्घाटन करने में गंभीर चिंतक, विचारक और समीक्षक उसके रचना-काल से लेकर आजतक प्राणपण से लगे हुए हैं किंतु इसके मूल तत्व तक पहुँचने का दावा करनेवालों के अनुसंधान उनकी आत्मतुष्टि के साधन भले ही बन गए हों, ज्ञानतृप्ति के सहज अंतिम माध्यम नहीं। साहित्यिक दृष्टि से नागरीप्रचारिणी सभा, काशी द्वारा किए गए कार्य इस क्षेत्र में अबतक अद्वितीय हैं।[1] तुलसी साहित्य के मूल्यांकन का जो यत्न आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने किया वह इस क्षेत्र में अब भी शीर्ष है और उसका मान अप्रतिम है।[2]

लोक आश्रय ने तुलसीदास को जहाँ रामचरितमानस जैसा ग्रंथ रचने की शक्ति दी, वहीं मानस की मूल प्रति को राज एवं अर्थसंकोच के कारण किसी दरबार के सरस्वती भंडार के जरी के बेठन में शरण न लेने दी, प्रत्युत जनमन पर उसकी अलौकिक प्रतिष्ठा हुई। इसलिये रामचरित-मानस के मूलपाठ की खोज सुधी विद्वानों के ज्ञान का निकष बना। उसके १६६१ वि०[3] संवत् से उपलब्ध हस्तलेख हैं और मुद्रित रूप में मानस

---

१. तुलसी ग्रंथावली खंड १—संपादक—पं० रामचंद्र शुक्ल लाला भवानदीन ब्रजरत्नदास सं० १९८० वि०
तुलसी ग्रंथावली खंड २—सं० ,, ,, सं० १९८० वि०
तुलसी ग्रंथावली खंड ३—सं० ,, ,, सं० १९८० वि०
गोस्वामी तुलसीदास—ले० पं० रामचंद्र शुक्ल, सं० १९८० वि०
तुलसीदास —ले० पं० चंद्रबली पांडेय, वि० सं० २०१४
तुलसी की जीवनभूमि—ले० ,, सं० २०११ वि०
विश्वसाहित्य में रामचरितमानस—ले० राजबहादुर लमगोड़ा सं० २००० वि०
गोस्वामी तुलसीदास की समन्वयसाधना, भाग १ ले० व्योहार
,, ,, ,, ,, २— राजेंद्र सिंह
रामचरितमानस—संपा० पं० शंभुनारायण चौबे, सं० २००५ वि०

२. गोस्वामी तुलसीदास—आचार्य रामचंद्र शुक्ल।

३. श्रावण कुंज, अयोध्यावाली प्रति।

का प्रकाशन संवत् १८१६ वि० से ही आरंभ हो गया था।[1] सहस्रों हस्तलेख और मानस के सैकड़ों मुद्रित संस्करण भी मानस के मूल पाठ का पता अब-तक हिंदी को एकमत हो नहीं बता सके और न निकट भविष्य में बता सकने की संभावना ही है। इस क्षेत्र में भी सभा ने अभूतपूर्व कार्य किया है। रामचरितमानस के काशिराज संस्करण के प्रकाशित हो जाने के उपरांत भी श्री शंभुनारायण चौबे द्वारा संपादित तथा सभा द्वारा प्रकाशित संस्करण की गरिमा अतुल्य है, भले ही उसकी महिमा का आख्यान 'मक्षिका स्थाने मक्षिका' वाले रूप में किया गया हो।[2] रामचरितमानस की रचना के मूल में अहंकार नहीं अनंत श्रद्धा और अगाध विश्वास है। इसलिये उसके संपादन के लिये भी जीवन अर्पण करनेवाली एकनिष्ठ तपस्या अपेक्षित है। सौभाग्य से ऐसा व्यक्ति सभा को श्री शंभुनारायण चौबे के रूप में मिला और उनके जीवन का तप रामचरितमानस के संपादन से कृतकृत्य हुआ।

यद्यपि मानसमराल चौबे जी द्वारा संपादित रामचरितमानस संवत् २००५ में उनके रामधाम सिधारने पर प्रकाशित हुआ और उसके आरंभ के दो ही तीन फार्म उनके जीवनकाल में छप सके थे, तो भी युगों से ही वे दत्तचित एवं एकनिष्ठ हो इस कार्य में लगे रहे। रामचरितमानस के संपादन के लिये जिस साधन की आवश्यकता थी और जैसी उत्सर्गमयी निष्ठा अपेक्षित थी, वह उन्हें प्राप्त थी। हिंदी के अनन्य पुस्तकालय आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी के वे पुस्तकाध्यक्ष थे। सरस्वती की यह कृपा उनपर उसी प्रकार की थी जैसी मानसप्रणेता तुलसी पर हनुमान की बताई जाती है। सारा जीवन इस कार्य के लिये उत्सर्ग करने की उनकी निष्ठा भक्त की चेतना की भाँति उनमें थी। रामचरितमानस का संपादन उन्होंने पलक मारते ही पूरा नहीं कर दिया, अपितु उसपर अपना सारा जीवन तपपूर्वक खपा दिया था। जिन गंभीर आधारों पर रामचरितमानस का उन्होंने संपादन किया उनकी भूमिका संवत् १९९५ वि० से ही प्रकाश में आने लगी थी और संवत् २००३ वि० तक

---

१. **रामायण तुलसीकृत (सातो कांड सचित्र), लेखक— दुर्गा मिश्र, केदार प्रभाकर छापाखाना, काशी।**

२. **रामचरितमानस (काशिराज संस्करण), आत्मनिवेदन, पृ० २५।**

वह शनैः शनैः प्रकाशित होती रही। यद्यपि इन निबंधों में रामचरितमानस के संपादन के सूत्र मात्र थे और अंततः मानस की बृहत्भूमिका वे प्रस्तुत करना चाहते थे, तो भी उसकी अनुपलब्धि में ये निबंध स्वयं में पूर्ण, सुसंगठित एवं वैज्ञानिक दृष्टि से इतने गुणधर्मसमन्वित हैं कि सदा मानससंपादन के वे मूलाधार रहेंगे। इनकी स्थायी तत्वगरिमा के कारण इनका संपादन एवं संकलन करने का निश्चय हुआ।

इस संकलन में कुल पाँच शोधपूर्ण गंभीर निबंध हैं—(१) मानस अनुशीलन, (२) मानस पाठभेद, (३) रामचरितमानस के प्राचीन क्षेपक, (४) मूल रामचरितमानस की छंदसंख्या और (५) विषयानुक्रमणी तथा रामचरितमानस के संवाद। ये सबके सब 'नागरीप्रचारिणी पत्रिका' के उन अंकों में प्रकाशित हैं जिनके संपादकमंडल में आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डा० मंगलदेव शास्त्री, पं० केशवप्रसाद मिश्र, श्री जयचंद्र विद्यालंकार, लल्लीप्रसाद पांडेय, डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, पद्मनारायण आचार्य, कृष्णानंद जी जैसे तत्वान्वेषी और रामचरितमानस के काशिराज संस्करण के संपादक श्री पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र भी थे।

प्रथम निबंध—'**मानस अनुशीलन**' शीर्षक प्रथम निबंध पत्रिका के कार्तिक, संवत् १९९५ वि० (नवीन संस्करण, भाग १९, वर्ष ४३,) अंक ३ में प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत निबंध में मानस और उससे संबद्ध प्रकाशित सामग्री का अध्ययन निम्नांकित उपवर्गों में किया गया है :

१—प्रामाणिक मूल पाठ।

२—संपूर्ण रामचरितमानस की टीका।

३—रामचरितमानस के स्फुट कांडों की टीका।

४—मानस के कुछ दोहों, चौपाइयों की विशद व्याख्या।

५—शंकासमाधान तथा विविध ग्रंथ।

६—रामचरित संबंधी अन्य कवियों के स्वतंत्र ग्रंथ।

इन विभिन्न उपवर्गों के अंतर्गत संवत् १८१९ से संवत् १९९३ तक प्रकाशित सामग्री का तात्विक विवेचन कालक्रम से किया गया है और उनके गुणधर्म का विवेचन स्पष्ट रूप से हुआ है। इस विवेचनक्रम में तत्वग्राही नीरक्षीर विवेक तो है ही, तर्कपूर्ण सहज बोधगम्यता और सादगी भी है। इसलिये रामचरितमानस के प्रकाशन, उसके संपादन एवं उसकी टीका के मर्म का उद्घाटन करने में वह सफल है।

इसमें रामचरितमानस संबंधी पूर्व उपलब्धियों का लेखा जोखा है जो मानस के सही स्वरूप को उपस्थित करने के लिये आधारभूत उपलब्ध सामाग्रियों में से सत् और असत् का बोध कराता है। इस प्रकार यह निबंध स्वयं में अपने गुणधर्म के कारण अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

रामचरितमानस तुलसीदास के हाथ का लिखा उपलब्ध नहीं, उनका हस्तलेख पंचायतनामा मात्र माना जाता है।[१] मानस का मान तुलसी के जीवनकाल में ही प्रतिष्ठित हो चुका था, ऐसी स्थिति में उस समय से ही अन्य लोगों द्वारा उसकी प्रतिलिपि आरंभ हो चुकी थी। रामचरितमानस जैसे ग्रंथ का लेखन भी समयसापेक्ष है, इसलिये कवि तुलसीदास को भी यह अवकाश प्राप्त था कि वे अपनी रचना में संशोधन परिवर्धन करते हुए आगे लिखते रहें, महाकाय ग्रंथ के लेखन में यह भी आवश्यक नहीं कि कवि क्रम से एक एक पंक्ति लिखें। साथ ही मानसरचना के उपरांत भी तुलसीदास जी बहुत समय तक वर्तमान रहे, अतः यह भी असंभाव्य नहीं कि अपनी इस परम प्रिय कृति में सुधार परिष्कार वे बराबर न करते रहे हों। इसलिये यह मानने में विशेष आपत्ति नहीं होनी चाहिए कि उनके जीवनकाल में ही प्रचारित मानस समय के अंतराल और सुधार के कारण भिन्न पाठों में प्रसार पाने लगा हो।

इस ग्रंथ को लोग कंठाग्र भी करते आ रहे हैं, और लोक में इसका पाठ होने की जीवंत परंपरा भी है, इसलिये ऐसी प्रणाली से मानस के लेखन में पाठभेद की सहज उपस्थिति अनिवार्य है।

उस समय मुद्रण की व्यवस्था न होने के कारण बड़े ग्रंथों की शुद्ध प्रतिलिपि सामान्य बात न थी। साधनसंपन्न या साधनसंपन्न लोगों के आश्रित कवि तो उनकी अनेक प्रतिलिपियाँ करा, ग्रंथ का प्रसार करा सकते थे पर तुलसीदास को वैसा सौभाग्य विधि की कृपा से प्राप्त नहीं था। साथ ही प्रतिलिपि करना यांत्रिक क्रिया न होने के कारण प्रतिलिपिकर्ता के संस्कार, अध्ययन, रुचि और मनस्थिति का प्रभाव प्रतिलिपि पर पड़ता है जो छूट, बढ़ोत्तरी, वर्तनीभेद, या सामान्य संपादन का कारण होता है। ये सब मानस में बराबर उपस्थित होते गए।

---

१. देखिए परिशिष्ट ५, और पंचायतनामा का प्रतिचित्र।

पंचायतनामा
जिसमें तुलसीदास
जो का हस्तलेख है।

काशिराज की प्रति के
चार पृष्ठ

[रघु तिवारी द्वारा
१७०४ वि० में लिखित]

रामचरितमानस की मर्यादा बराबर बढ़ती गई। इसलिये विभिन्न उपलब्ध प्रतियों से प्रतिलिपि की जाने लगी और उसमें विविध प्रतिलिपिकर्ताओं का गुण, दोष और आग्रह स्थान बनाता गया। जो ग्रंथ प्राचीन काल में प्रतिष्ठित हो जाते थे उसी शैली में लोग स्वरचित छंद भरकर उनकी संख्या बढ़ाने तथा धार्मिक और सांप्रदायिक जन उसमें अपने मत के अनुसार क्षेपक जोड़ने का कार्य करने में भी संकोच का अनुभव नहीं करते थे। रामचरितमानस में ऐसा योग भी उसके गुण के कारण साहित्य, धर्म और संप्रदाय सभी वर्गों द्वारा हुआ।

कई शताब्दी तक ये कार्य होते रहे। मुद्रण आरंभ होने पर उपलब्ध हस्तलेखों के आधार पर उनका प्रकाशन आरंभ हुआ और अनेक मानस सविस्तर सबका अधिकांश लेकर, अनेक संपादित होकर, अनेक संशोधित होकर साहित्यिक, धार्मिक, सांप्रदायिक एवं सबके मेल के आधार पर प्रकाशित हुए।

सुधी विद्वान् एवं अनुसंधानकर्ता रामचरितमानस के मूल रूप को उपस्थित करने के लिये निरंतर दत्तचित्त लगे रहे, क्योंकि अनेक महत्वपूर्ण यत्नों के उपरांत भी इस संबंध में तृप्ति या परितोष का अनुभव हिंदी जगत् नहीं कर सका। इस क्षेत्र में जीवन अर्पण करनेवाली तपस्या पं० शंभुनारायण चौबे की है क्योंकि उनके यत्न सर्वाधिक सुफलदायी हैं। यद्यपि उनके रामचरितमानस का प्रकाशन बहुत पहले हो चुका है तो भी उसके संपादन के आधारभूत तत्वों का परिचय विशेष प्रचारित नहीं। वास्तव में ये निबंध उनके रामचरितमानस-संपादन के मूल सिद्धांतों का आधार उपस्थित करते हैं।

दूसरा निबंध--मानस पाठभेद है, जो नागरीप्रचारिणी पत्रिका के वैशाख १९९९ वि० (वर्ष ४७, अंक १) में प्रकाशित हुआ था। इसमें दस प्रतियों से पाठभेद दिया गया है। रामचरितमानस के पाठभेद का मूल उद्गम चौबे जी ने इन्हीं दस पोथियों के आधार पर होने का संकेत किया है किंतु इसे ही उन्होंने अंतिम निर्देश न स्वीकार करते हुए यह भी घोषित किया है कि जिन स्थलों में आधारभूत पोथियों का पाठैक्य है वे इस सूची में नहीं आ सके हैं। वे पाठ महत्व के हो सकते हैं इसलिये इन सबके आधार पर हिंदी पढ़ी लिखी जनता के नैतिक भोजन रामचरितमानस की शुद्ध संशोधित प्रति के प्रकाशन की आवश्यकता का मर्मज्ञ विद्वानों को बोध कराया है। जिन दस प्रतियों को वे आधारभूत मानते हैं, वे क्रमशः निम्नलिखित हैं :

१—सं० १७२१ वि० की प्रति
२—सं० १७६२ वि० की प्रति
३—छुक्कनलाल की प्रति
४—रघुनाथदास की प्रति
५—वंदन पाठक की प्रति
६—सं० १७०४ वि० की काशिराजवाली प्रति
७—कोदवराम की प्रति
८—बालकांड में काशिराज की प्रति
९—अयोध्याकांड में राजापुर की प्रति
१०— भगवद्दास की प्रति।

इतना ही नहीं, उन्होंने पाठभेद के क्या कारण हैं, यह भी इस निबंध में प्रकट किया है और शुद्ध पाठसंपादन के लिये ऐसी दिशा का निर्देश किया है कि विंदु विसर्ग तक यत्न करने पर रामचरितमानस का शुद्ध संपादन किया जा सकता है। एक सौ बत्तीस पृष्ठ का यह निबंध है जिसमें रामचरितमानस के उक्त आधार पर उपर्युक्त प्रतियों से तथा अन्य प्रतियों से पाठभेद प्रस्तुत किए गए हैं। रामचरितमानस के संपादन के लिये तथा उसके सही रूप का अनुमान लगाने के लिये चौबे जी का यह अक्षय यत्न रामचरित के गंभीर अनुशीलन का तथा उसके संपादन का मूल मंत्र है।

तीसरा निबंध--रामचरितमानस के प्राचीन क्षेपकों के संबंध में है। इस निबंध में वैज्ञानिक ढंग से उन्होंने क्षेपकों की खोज की है तथा पुरानी प्रतियों के आधार पर उनका परस्पर मिलान कर रामचरितमानस में आए क्षेपकों का पता लगाया है। उन्होंने काशिराज की प्रति में आए क्षेपकों को, जो अति प्राचीन प्रति है, सोपान के क्रमानुसार प्रस्तुत किया है। काशिराज की यह प्रति सं० १७०४ वि० की है जिसे पंडित रघु तिवारी ने लोलार्क कुंड के समीप लिखा था। क्षेपकों का बोध हो जाने से रामचरितमानस का मूल इस निबंध के कारण स्पष्ट होता है। अत्यंत श्रमपूर्वक लिखा यह निबंध अपनी तत्वपूर्ण गरिमा के कारण रामचरितमानस में घुल मिल गए क्षेपकों को अलग कर उसके सत्य और मूल रूप का पता बताता है; इसलिये यह स्वयं में शोधार्थियों के लिये परम उपयोगी है और उनके लिये अनिवार्य है जो रामचरितमानस का संपादन या उसके मूल रूप से परिचय के आकांक्षी हैं।

श्रीगणेशायनमः श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

अथ रामायण बाल कांडं लिख्यते ।

श्लोक ।

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि ॥
मंगलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥
भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ॥
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तस्थमीश्वरं ॥ २ ॥
वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणं ॥
यमाश्रितोहि वक्रोपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥ ३ ॥
सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ॥
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥ ४ ॥
उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीं ॥
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोहं रामवल्लभां ॥ ५ ॥
यन्मायावशवर्त्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ॥
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां
वन्देहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिं ॥ ६ ॥
नानापुराणनिगमागमसम्मतं य-
द्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोपि ॥
स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा-
भाषानिबंधमतिमंजुलमातनोति ॥ ७ ॥

सोरठा ।

जो सुमिरत सिधि होइ, गननायक करिवरबदन ।
करौ अनुग्रह सोइ, बुद्धिरासि सुभगुनसदन ॥

खड्गविलास प्रेस की प्रति में सभा के लिये डा० श्यामसुंदरदास द्वारा अमीरसिंह से कराया गया मिलान और डा० साहब के हस्तलेख में उसका प्रमाण ।

This has been compared with the manuscript in the keeping of the Maharaja of Benares

सभा में संरक्षित ना० प्र० पत्रिका का एक पृष्ठ जिसपर निबंध प्रकाशन के बाद चौबेजी ने नवीन शोधपूर्ण परिवर्द्धन किया ।

※ इस प्रति के तैयार करने में (१) भोलाराम भट्ट (राजमंदिर) ; (२) विश्वेश्वर भट्ट बड़े (शान्तिकेश्वर महादेव) ; (३) विश्वेश्वर भट्ट (छोटे) बांस फाटक.
(४) मियाँ .. (बजरडीहा) ; (५) भिखारीलाल (रेवड़ी तालाब) ;
(६) महेश्वप्रसाद मोची (रेवड़ी तालाब) ; (७) माधो प्रसाद बढ़ई (रामनगर)

होता है। यह आश्चर्य अपनी चरम सीमा पर पहुँचता है जब संयोग-वश रामनगर में काशिराज की प्रति देखने का अवसर प्राप्त होता है जो उस जमाने में १,६०,०००) व्यय करके तैयार कराई गई थी। ऐसा था वह स्वर्ण-युग।

इस युग में मूल रामचरितमानस के शुद्ध पाठ के अनुसंधान तथा निर्णय पर बहुत जोर दिया गया था। पाठ शुद्ध करनेवालों में काशी—महल्ला छोटी पियरी—के बाबू भागवतदास जी छत्री का नाम अग्रगण्य है। इन्होंने बहुत बड़ा काम किया है और आज भी लोग इनकी प्रति का प्रमाण मानते हैं। जिस समय बाबू भागवतदास जी प्राचीन पोथियों का मिलान कर पाठ-शुद्धि का काम कर रहे थे उसी समय काशी में एक बाबा रघुनाथदास जी रहते थे। उनके पास एक हस्तलिखित प्रति थी। पता नहीं वह किसकी और किस काल की लिखी हुई थी पर यह बाबा रघुनाथदास जी की प्रति कहलाती थी। संभव है, उसका लेखक कोई दूसरा रहा हो और बाबाजी ने उसे शोधकर अपने पाठ की पोथी बनाई हो।

इस पोथी का पाठ लेकर सर्वप्रथम संवत् १९२६ में बाबू दुर्गा-प्रसाद कटारे के गणेश यंत्रालय में एक साँचो पत्रों में[१] और एक पुस्तक के आकार[२] में मानस की प्रति निकली थी। दोनों देसी कागज पर लीथो में

१—मुखपृष्ठ—"श्री काशीजी मे महल्ला घुघुराना सामा की गली श्रीयुत बाबू हरश्चंदजी के बाड़े में दुर्गाप्रसाद कटारे के गणेश यंत्रालय में श्री तुलसीकृत रामायन श्री बावा रघुनाथदास की संवत् (सम्मति) से साँचों में अति परिश्रम ते सोधि के छापा गया। लिखा देवीप्रसाद तिवारी और सीताराम मिश्र छापनेवाला गोपाल जिसको लेना होय उसे कु जगली के पश्चिम फाटक पर दुर्गाप्रसाद के दुकान में मिलैगा।"
संवत् १९२६ मि० पौष शुक्ल ५ शुक्रवार।

२—दे० ऊपर की टिप्पणी नं० १। यह प्रति सचित्र है।
संवत् १९२६ मि० चैत्र कृष्ण १२ चंद्रवार।
साइज ११½"×६"। साइज १"×६"। पृष्ठ संख्या—बालकांड १४५; अयोध्याकांड ११२; आरण्यकांड २६, किष्किंधाकांड १५; सुन्दरकांड २५; लंकाकांड ६०; उत्तरकांड ५२।

(८) महादेव [illegible] (रामनगर) ; (९) [illegible] कोहार (हड़हा) — इन लोगों ने २) से ३) रोजाना मजूरी, तथा खाना कपड़ा निवास देकर ५ वर्ष में तैयार कराया गया था। यह सूचना [illegible] कोहार [८५ वर्ष] महल्ला नवापुरा, काशी से श्री [illegible] जी द्वारा १९.७.४५ को मिली ॥ शंभु ना० चौबे.

—खड्ग विलास प्रेस की प्रति पर चौबेजी की टिप्पणी।

फिर [illegible] ने रामायण की [illegible] देखी तो [illegible] पर [illegible] हुए।.. जितनी रामायणें [illegible] से लिखी हुई हैं। यदि उन सब को [illegible] महाराज ने जिस प्रकार से हो सकीं [illegible] देखा।
... राजापुर की प्रति के लिये बहुत प्रयत्न किया और बड़ी कठिनता से उसका फोटोग्राफ लिया और उसी प्रकार के कागज और लिपि में उसको लिखवाने में बहुत सा द्रव्य व्यय करके उसको लिखवा लिया ... महाराज काशी नरेश से सं. १९०४ वि की लिखी (प्रति) मांग भेजा महाराज काशिराज ने एक छपे हुए पुस्तक को अपने पुस्तक से शोध कर और ४ पन्ना का फोटोग्राफ भेज दिया।

चौथा निबंध—मूल रामचरित मानस की छंदसंख्या और विषयानुक्रमणी है। भागवतदास जी की प्रति तथा लीडर प्रेस से प्रकाशित पंडित विजयानंद जी त्रिपाठी द्वारा संपादित रामचरितमानस के आधार पर यह कार्य उन्होंने संपन्न किया। भागवतदास जी की प्रति से ग्रंथसंख्या (छंदसंख्या) तथा पाठ उन्होंने लिए हैं तथा लीडर प्रेस से प्रकाशित पंडित विजयानंद त्रिपाठी की प्रति से पृष्ठसंख्या। इसके उपरांत प्रत्येक कांड की कथा का बंधान मूल रामचरित से उन्होंने भुसुंडि द्वारा कही गई कथा के आधार पर किया है। और इस संधान में भी उन्होंने दोहों और चौपाइयों का क्रम बैठाया है। उन्होंने अयोध्याकांड की न्यूनाधिक चौपाइयों की संख्या भी दस प्रतियों के आधार पर दो तालिकाओं में दी है। ऐसा इसलिये किया गया कि रामचरितमानस के भावी संपादक इस आधार पर यदि मानस को समझने का यत्न तथा उसके संपादन का प्रयत्न करेंगे तो क्षेपकों का स्वतः बहिष्कार हो जाएगा। इस दृष्टि से यह निबंध स्वयं में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अंतिम निबंध—रामचरितमानस के संवादों के संबंध में है। इस शोधपूर्ण निबंध में संवादों में बिखरी हुई सामग्री को एकत्र कर रामचरितमानस के अध्ययन और मनन तथा कथा के मूल रूप के परिज्ञान के लिये महत्व की सामग्री प्रस्तुत की गई है।

ये पाँचों निबंध रामचरितमानस के संपादन के लिये पंच तत्व की भाँति हैं। इन निबंधों की उपलब्धि से वे सभी मानस जीवंत हैं, जिनका संपादन इन निबंधों के संपादन के उपरांत हुआ है।

इन निबंधों की अपनी गरिमा तो है ही, किंतु सोच समझ और जान बूझकर इसमें कुछ परिशिष्ट और जोड़ दिए गए हैं। ऐसा करने का कारण यह है कि उन प्रयत्नों का आकलन भी हो सके जो चौबे जी के दिवंगत होने के उपरांत हुए। इससे उनके उस कृतित्व का महत्व भी प्रकट होता है जो रामचरितमानस के क्षेत्र में है और अपनी अनन्य गरिमा का आख्यान भी वह स्वतः कर लेता है। साथ ही शोधार्थियों के लिये इनके माध्यम से चिंतन एवं तत्वचयन के लिये महत्वपूर्ण सामग्री भी उपलब्ध होती है।

परिशिष्ट १ में मानसमराल चौबे जी द्वारा संपादित रामचरितमानस का परिचय, उसका प्रामाणिक वक्तव्य, प्रस्तुत कर दिया गया है। वह परिचय स्वयं में अपने संकेतों में पूर्ण है, यद्यपि वह उनके गत होने के उपरांत लिखा गया था।

परिशिष्ट १–ख में संवत् २०१५ वि० में प्रकाशित मानसराजहंस पं० विजयानंद त्रिपाठी की महत्वपूर्ण टीका का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। टीका के साथ त्रिपाठी जी का पाठ भी महत्वपूर्ण है।

परिशिष्ट १–ग में मानसांक (गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत् १९९५ वि० में प्रकाशित) का परिचय दिया गया है। रामचरितमानस के क्षेत्र में यह अतिमहत्व-पूर्ण कार्य भी इस संकलन में आए प्रथम निबंध के प्रकाशन के उपरांत हुआ है।

परिशिष्ट १–घ में रामचरितमानस काशिराज संस्करण सन् १९६२ ई० का परिचय है। मानस के संपादन का यह अद्यतन बहुचर्चित महत्वपूर्ण प्रयत्न है। इसके संपादक सुख्यात विद्वान् श्री पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र हैं।

काशी राजदरबार का मानसप्रेम लोकविख्यात है और इस राजवंश के नरेशों ने सदैव उसका संवर्धन, संरक्षण किया है। वर्तमान काशिनरेश तत्र-भवान् श्री विभूतिनारायण सिंह का मानस के शुद्ध संपादन एवं प्रकाशन का यह उद्योग उनके राजवंश की इस विमल परंपरा की अनन्य कड़ी है। इसका संपादन मानसमराल चौबे जी के विवेकपूर्ण अनुगमन पर किया गया है। इसलिये परिशिष्ट २ में सभा और काशिराज संस्करण में छंद, वर्तनी एवं पाठ-भेद भी उपस्थित कर दिया गया है जो अनुशीलन करनेवाले सुधी लोगों के लिये उपयोगी एवं नियामक होगा। वैसे तो चौबे जी ने स्वयं अपने निबंध में काशिराज की प्रति के क्षेपकों आदि का परिचय दे दिया है। काशिराज के पुस्तकालय में रक्षित हस्तलिखित प्राचीनतम प्रति से चौबे जी पूर्ण रूप से परिचित थे।[१] वही प्रति काशिराज संस्करण का आधार है।

परिशिष्ट ३ में सभा तथा तुलसी पुस्तकालय भदैनी में स्थित १३१ पांडु-लिपियों का खोजविवरण प्रस्तुत कर दिया गया है जो पहली बार हिंदी जगत् के संमुख आ रहा है और इस उद्देश्य से इसमें दिया गया है कि विभिन्न प्रणालियों की प्रतियों का स्वयं अनुसंधानार्थी दर्शन करें और चौबे जी के कृतित्व का स्वयं आकलन करें।

---

१. देखिए, रामचरितमानस (खड्गविलास प्रेस) के एक पृष्ठ का चित्र जो काशिराज की प्रति से मिलाकर रखा गया है और उसकी प्रामाणिकता के संबंध में चौबे जी ने लिखा है कि डा० श्यामसुंदरदास जी से ज्ञात हुआ कि यह कार्य सभा के लिये अमीर सिंह जी ने किया। इसका चार पृष्ठों का चित्र भी दे दिया गया है।

परिशिष्ट ४ में रामचरितमानस के कथाभाग का परिचय उसकी उपयोगिता के साथ तुलसी ग्रंथावली, खंड १ से दिया गया है, जो स्वर्गीय आचार्य रामचंद्र शुक्ल, लाला भगवानदीन और ब्रजरत्नदास कृत है।

परिशिष्ट ५ में पंचायतनामा देवनागरी लिपि में दे दिया गया है और अंत में मूल लेखों की शब्दानुक्रमणी भी।

रामचरितमानस के सर्वसंमत मूलरूप को प्रस्तुत करना संभव नहीं। उसे उपस्थित करने के लिये व्यापक संकलन, अध्ययन, चिंतन और मंथन की आवश्यकता है। इनके माध्यम से सिद्धांत स्थिर कर उसका अनुगमन वांछित फल की निष्पत्ति कर सकता है।

श्री शंभुनारायण चौबे ने सर्वप्रथम संकल्पात्मक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से रामचरितमानस की उपलब्ध सामग्री का संकलन और उसका गंभीर अध्ययन मानस अनुशीलनवाले निबंध में प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन में मानस का मूल पाठ, टीका, स्फुट कांड, स्फुट दोहों और चौपाइयों की विशद व्याख्याएँ, मानस शंकासमाधान तथा मानस संबंधी अन्य स्वतंत्र ग्रंथों का तात्विक आलोचन कर उसके मूल तक पहुँचने का तपस्यामूलक श्रम किया गया है। संकलन अपने में महत्वपूर्ण कार्य है किंतु तत्वचयन शरीर में आत्मतत्व की प्रतिष्ठा है। संकलन की चेतना का मूल उसका तत्वचयन है। इस तत्वचयन की क्रिया में जो जितना ही श्रम सजग हो सावधानी से करेगा उसकी उपलब्धि उतनी ही व्यापक होगी। इस श्रम का अंदाज काशिराज प्रति के संबंध में उनकी निम्नांकित खोज से ही किया जा सकता है :

'इस प्रति को (१) भोलाराम अहीर (राजमंदिर); (२) विश्वेश्वर अहीर (बड़े) (शांतिकेश्वर महादेव), (३) विश्वेश्वर अहीर (छोटे) बाँसफाटक, (४) मियाँ (बजरडीहा), (५) मिश्रीलाल (रेवड़ीतालाब), (६) महेश्वरप्रसाद मोची (रेवड़ीतालाब), (७) माधोप्रसाद बढ़ई (रामनगर), (८) महादेव रंगसाज (रामनगर), (९) चुन्नी कहार (हड़हा), इन लोगों से, २) से ३) रोजाना मजूरी, तथा खाना कपड़ा, निवास देकर ५ वर्ष में तैयार कराया गया था। यह सूचना छागुड़ कोहार (८५ वर्ष) महल्ला नवापुरा, काशी से श्री हरीदास जी द्वारा १६-७-४५ को मिली।' यह अंश मूल निबंध प्रकाशित हो जाने के उपरांत का है, उसे ही अंतिम उपलब्धि न मान

चौबे जी खोज करते रहे और आर्यभाषा पुस्तकालय में स्थित नागरीप्रचारिणी सभा पत्रिका में अपने हाथ से इसे बढ़ाया है।

इतना ही नहीं, पृष्ठ २३८ पर दिया गया इस प्रति के संबंध में उनके द्वारा ज्ञात विवरण इस बात का साक्षी है कि वे एक बार जो सूचना प्राप्त कर लेते थे, उसको निरंतर अद्यतन करते रहते थे। सहज अध्ययनशील तत्वचिंतक का प्रमुख लक्षण है–उपलब्धि से अतृप्ति और सत्य की खोज के लिये नित नूतन यत्न। यह बात चौबे जी में थी और खूब थी। प्राप्त सामग्री का चयन कर उसका वर्गीकरण उन्होंने प्रस्तुत किया और साफ साफ तर्कपूर्ण ढंग से अपनी मान्यता उपस्थित कर पूर्ववर्ती कार्यों का नीरक्षीर विवेकात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया क्योंकि वे पाठ की गरिमा, वास्तविक अर्थ और भावबोध के लिये अनिवार्य माननेवाले अनुसंधानकर्ता थे। उन्हीं के शब्दों में यह देखा जा सकता है कि मानस का पाठशोध किस प्रकार करना चहिए :

'रामचरितमानस का पाठसंशोधन केवल कुछ शब्दों के बदल देने से अथवा उलटफेर कर देने से ही नहीं होता; क्योंकि रामचरितमानस जितना ही साधारण और सुलभ ग्रंथ है, उतना ही असाधारण और अथाह भी है। इसकी अर्धाली के प्रत्येक खंड, अपितु प्रत्येक शब्द को ग्रहण करने के पूर्व रुकना चाहिए और खूब आद्यंत विचार करना चाहिए। किसी भक्त की वाणी को बिना जाने बिगाड़ना उचित नहीं। कहीं कहीं के पाठ, भारतवर्ष के इतिहास के वर्तमान रूप की नाईं इतने भ्रमपूर्ण हैं और उनका कुसंस्कार ऐसा दृढ़ है कि शुद्ध स्वरूप के ग्रहण करने में विज्ञ लोग भी आनाकानी करते हैं। ऐसी दशा में प्रामाणिक प्रतियों के पाठ निर्देश करने की दृष्टि से यह लेख लिखा जा रहा है।"[1]

शुद्ध पाठ के लिये यह आवश्यक है कि उपलब्ध प्रामाणिक प्रतियों से पाठभेद का भी संकलन किया जाय और उन कारणों का पता लगाया जाय जिनके कारण पाठभेद रामचरितमानस में हुए। पाठभेदों का विवेचन विश्लेषण भी चौबे जी ने जिन वैज्ञानिक पद्धति पर उपस्थित किया, वे कारण उन्हें निम्नांकित लगे :

(१) लेखक की असावधानता तथा लेखप्रमाद। यथा—१।१७; १।२१।१२; २।१०५।८; ७।१३; ७।२१।५; ७।२५।१; ७।७०।७।

---

१. दे० पृष्ठ ४३।

(२) सावधान लेखक भी कहीं कहीं अशुद्ध लिखने के बाद अपने लेख में काटकूट न करने के निमित्त यह जानते हुए कि गलत लिख गया है उसका सुधार नहीं करता; और यदि लेखक का अक्षर सुंदर हुआ, जैसा प्राचीन काल में प्रायः होता ही था, तो यह प्रलोभन और भी जोर पकड़ता था। कहीं पर इस भूल का सुधार, अर्थ में कोई विपयर्य न होने की भावना से भी नहीं होता था।

(३) गोस्वामी जी के शब्दों का अर्थ न समझकर पाठपरिवर्तन। यथा—२।१२५।५, ७।८०। ६,७।८६।७।

(४) गोस्वामी जी की वाणी का भाव न समझकर अपनी बुद्धि से पाठपरिवर्तन। यथा—१।१०। (ग्राम्य), ३।१०।१०। (कुमारी), ३।१०।११ (कुमार), ३।३२।५ (सत्य), ५।५४ (विकटास्य), ४।२०।३, ६।७।६, ७।४५। ४ (बस्य), ७।५२।६ (निजात्मक), ७।४७।६ (उपरोहित्य), ७।६६ (गोप्यमपि)

इसी प्रकार तद्भव तथा प्रांतीय शब्दों के स्थान पर पंडित लोगों ने संस्कृत रूप कर दिए हैं।

(६) प्राचीन लिपि की अनभिज्ञता। यथा—१।१७, १।३१।१२।३। ४ क। २४।

(७) चौपाइयों में जान लाने के लिये तथा अर्थ में चमत्कार दिखलाने के लिये कथक्कड़ों की अपनी युक्ति। यथा १।११८।२, १।२७४।६, १।२८०। ५, ७।६७।१।

(८) शब्दालंकार गढ़ना एवं प्रयुक्त अलंकारों को न समझना। यथा—१।२६।७; १।१७८।; १।२७३।२; ३।६ क ।८, ३।२१।११।६।७३।५; ६।७१।७; ७।५६।५; ७।६८।

(९) चौपाइयों की यति गति ठीक करने की बुद्धि। यथा—१।७७।८; ३।१।८, ३।८, ६।११८, ७।२८।७, ७।११६।१।

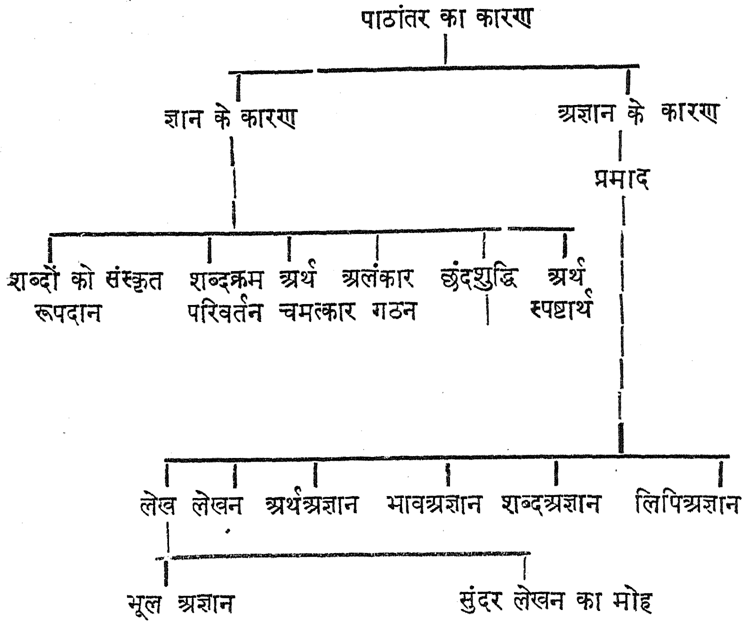
(१०) अर्थ को स्पष्ट करने की इच्छा।

(११) शब्दों के उलटफेर मात्र। यथा—१।१६।८-१।३८।६ : १।४८।७ : १।५१।८। १।६२।६ : १।६७।५ : १।७६।३ : १।७७।८ : १।२१२।२ : १।२३७।७ : १।२६०।६ : १।२६४।७ : ३।२१।१० : ६।७।८ : ६:४१:६।६३। : ६।६६।३ : ७।१।५:७।२२ : ७।२८।५ : ७।७२।४ : ७।७६।६: ७।८१ : ७।११२।३ : ७।११७।१० :[1]

---

१. दे० पृष्ठ ४४–४५।

इन कारणों को इस रूप में भी उपस्थित किया जा सकता है :



मानस पाठभेद के कारण पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने चेष्टित और अचेष्टित दो रूपों में व्यक्त किए हैं। चेष्टित के अंतर्गत शोधजन्य (अज्ञान, सुधार, संप्रदाय, देशभेद) और अचेष्टित के अंतर्गत प्रमादजन्य लेख्य लेखन, लिखक, श्रवणजन्य आदि।[1] चौबे जी द्वारा बताए गए तथ्यों के अतिरिक्त इस वर्गीकरण में कोई नया तत्व नहीं, कारणों की वर्गीकृत संज्ञा मात्र दे दी गई है।

इसी से यह जाना परखा जा सकता है कि उनकी खोज कितनी विश्लेषणात्मक और उनकी उपलब्धि कितनी प्रामाणिक एवं दूरदर्शी है।

रामचरितमानस के संपादन में केवल पाठभेद की ही समस्या नहीं है, उसमें क्षेपक का भी व्यापक समावेश है। नए क्षेपकों का तो पता लगाना अति साधारण कार्य है किंतु प्राचीन क्षेपकों की खोज सहज नहीं। चौबे जी ने प्राचीन क्षेपकों का भी पता बताया। उन्होंने इसका प्राचीन प्रतियों के आधार

१. रामचरितमानस, काशिराज संस्करण, पृष्ठ २०।

पर तर्कसंमत विश्लेषण किया और काशिराज की प्राचीन प्रति में आए दोहों का तर्कसंमत मान्य निर्देश किया। ये निर्देश श्री पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने भी सर्वथा अपने द्वारा संपादित मानस में स्वीकार कर लिए हैं। यह उनकी उपलब्धि की शक्ति का परिचायक है।

इसके उपरांत उन्होंने मानस की छंदसंख्या एवं उसकी विषयानुक्रमणी का बाह्य एवं अंतःसाक्ष्यों के आधार पर अध्ययन उपस्थित किया है। यह अध्ययन उन्होंने वैज्ञानिक एवं साहित्यिक अध्ययन दोनों के यथावश्यक योग से किया है। उपलब्धि के संबंध में उनका स्वयं का निवेदन है कि 'इस लेख में मूल रामचरितमानस के समझने का प्रयत्न किया गया है। रामचरित-मानस के भावी संपादक यदि इसपर ध्यान देंगे तो क्षेपकबहिष्कार स्वतः हो जायगा और मानस के मनन में, जिसका युग आ रहा है, सुविधा होगी।'[1]

मानस के चारों प्रमुख संवादों का अध्ययन चौबे जी ने इस हेतु प्रस्तुत किया है कि उसके माध्यम से मानस में वर्णित रामकथा की एक ही अविच्छिन्न धारा का अत्यंत सूक्ष्म एवं तात्विक अध्ययन प्रस्तुत किया जा सके। इस अध्ययन से न केवल तुलसी की प्रबंधपटुता स्पष्ट होती है, कथा के विविध अंशों के उपक्रम, संधि और उपसंहार का प्रामाणिक निर्देशन भी होता है। इस निबंध में व्यक्त मूल तत्वों के माध्यम से मानस की कथा के संपादन के लिये सूक्ष्म वैज्ञानिक सूत्र प्रस्तुत होते हैं। इसलिये स्वयं में ये निबंध अनुशीलन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

इन्हीं तत्वों के आधार पर श्री शंभुनारायण चौबे ने रामचरितमानस का मूल पाठ प्रस्तुत किया। चौबे जी एकांत मानससाधक थे। आर्यभाषा पुस्तकालय के वे पुस्तकाध्यक्ष तो अवश्य थे पर वह भी तपस्या ही थी क्योंकि उन्हें उतना भी प्राप्त न था जितना कि आज के चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी को प्राप्त होता है। अपनी विद्वत्ता का प्रचार प्रसार न कर अपनी वृत्ति पर ही सब कुछ अर्पित करनेवाले वे मनस्तोषी ब्राह्मण थे। इसलिये उनके कृतित्व का उचित मूल्यांकन नहीं किया गया; पर विद्वानों के मन में उनका मान सदा रहा, भले ही उसे उन्होंने व्यक्त न किया हो। जो कुछ भी हो, व्यक्ति नहीं, इस देश में कृतित्व की गरिमा है। प्रस्तुत निबंधों के आधार पर संपादित उनका रामचरित-मानस उनकी उपलब्धि है। इस क्षेत्र में बाद में हुए कार्यों में सर्वाधिक साधन-सुलभ एवं प्रचारित पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र संपादित रामचरित का काशिराज

---

१. देखिए, पृष्ठ २१७।

संस्करण है। उसके आत्मनिवेदन में की गई उन समस्त उपलब्धियों के प्रकाश में यदि श्री चौबे जी की उपलब्धियों को परखा जाय तो उनके कृतित्व का मूल्यांकन सहज ही हो जाएगा। ऐसा करने का ध्येय किसी से किसी की तुलना नहीं।

काशिराज संस्करण की कुछ उपलब्धियों के प्रकाश में श्री शंभुनारायण चौबे की उपलब्धि का निरीक्षण उनके कृतित्व की गरिमा का मान स्वयं अभिव्यक्त कर देता है। उसमें उदाहरण रूप में प्रस्तुत उपलब्धियों में से प्रथम है:

पायस पलिअहिं अति अनुरागा।
होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा॥

पंडित विश्वनाथप्रसाद जी मिश्र के ही शब्दों में:

'बायस पलिअहिं अति अनुरागा।
होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा॥'

अर्धाली के बायस के बदले प्राचीन हस्तलेखों में संशोधन के पूर्व का पाठ पायस है। यद्यपि इस अर्धाली में बायस और कागा से होनेवाली द्विरुक्ति का परिहार करने के लिये पर्यायवाची शब्दों का व्यवहार है तथापि यहाँ दो बार उल्लेख की कोई आवश्यकता है ही नहीं, अनुराग से पालने में निरामिषत्व का ग्रहण दूरारूढ़ है। पायस (खीर) के द्वारा निरामिष की प्रतिद्वंद्विता ठीक ठीक होती है। पायस और पलिअहिं में प का अनुप्रास भी है जिसकी दाद अलंकारप्रेमी देंगे, सो अलग ही। उक्त चारों संस्करणों में बायस ही पाठ गृहीत है जिन प्राचीनतम हस्तलेखों को उन्होंने आधार बनाया उन्हीं में संशोधन के पूर्व उक्त पाठ है, जिसपर ध्यान नहीं गया।[1]

इसलिये बायस के स्थान पर पायस उनकी उपलब्धि बताई गई है। मानसमराल चौबे जी द्वारा संपादित रामचरितमानस में यह पाठ न होकर पाठ है:

'बायस पलिअहि अति अनुरागा।
होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा॥'[2]

---

१. रामचरितमानस, काशिराज संस्करण, आत्मनिवेदन, पृष्ठ २६।
२. रामचरितमानस, शंभुनारायण चौबे, बाल० ५।२।

इस संबंध में कुछ निवेदन करने के पूर्व हम यहाँ इसी चौपाई का पाठ सटीक तुलसीकृत रामायण (टीकाकार पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र, द्वितीयावृत्ति आषाढ़ २, संवत् १९५०) से उद्धृत करना चाहेंगे :

पायस पालिय अति अनुरागा।
होंहि निरामिष कबहुँ कि कागा ॥[१]

काशिराज संस्करण के लगभग ७० वर्ष पूर्व यह पाठ प्रकाश पा चुका था, भले ही पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने यह पाठ न देखा हो, पर पं० शंभुनारायण चौबे ने इसका अवलोकन किया था और जान बूझकर इसको स्वीकार नहीं किया। इस संबंध में यह ज्ञातव्य है कि भावाभिव्यक्ति की तीव्रता एक ही शब्द या उसके पर्याय के बार बार उच्चारण का कारण बनती है। यह गुण है क्योंकि अर्थ के साथ भाव की तीव्रता का बोध काव्य की श्रीसंपदा का आभासक होता है। वैसे अनुराग कभी भी प्रिय पात्र के प्रति हिंसक नहीं होता और पुनरुक्तिवदाभास अनुप्रास से कम सुंदर अलंकार भी नहीं होता।

ध्वन्यालोककार आचार्य श्री आनंदवर्धन का इस संबंध में उदाहरण है :

ताला जाअन्ति गुणा जाला दे सहिअएहिं घेप्पन्ति।
रइकिरणानुग्गहिआइँ होन्ति कमलाइँ कमलाइँ ॥

इत्यत्र द्वितीयः कमल शब्दः।

जिसका स्पष्टीकरण अर्थांतरसंक्रमित वाच्य ध्वनि द्वारा होता है। उनका कहना है :

अनेन हि व्यंग्यधर्मान्तररूपपरिणत संज्ञी प्रत्याय्यते।'[२]

यदि यह दोष ही है तो ऐसा दोष अन्यत्र भी तुलसीदास जी ने प्रकट किया है पर वहाँ पाठशोधन नहीं किया गया :

तब नारद गवने सिव पाहीं।
जिता काम अहिमिति मन माहीं ॥
मारचरित संकरहि सुनाए।
अति प्रिय जानि महेस सिखाए ॥[३]

---

१. दो० ६—अ० ३; पृष्ठ ७५।

२. ध्वन्यालोक; बदरीनाथ शर्मा एवं डा० शोभित मिश्र, पृष्ठ ८९-९०।

३. काशिराज संस्करण, पृष्ठ ५४।

एक ही चौपाई में सिव, संकरहि और महेस की फिर क्या आवश्यकता थी ? यदि यह भावना सत्य है कि महान् कवि की अभिव्यक्ति मौलिक ढंग से होती है तो यह मानने में भी आपत्ति न होनी चाहिए कि सभी कुछ उसका व्याकरण और शास्त्र के ढाँचे में ही ढला हो–यंत्रवत्–उचित नहीं। जैसे यहाँ संकरहि कर्म कारक में और महेस कर्ता कारक में है, ठीक वैसी ही स्थिति वहाँ है—बायस कर्म कारक और कागा कर्ता कारक में है। यह उनकी शैली का अपनापन है, भले ही अनुप्रासहीनता और पुनरुक्ति दोष इन चौपाइयों पर मढ़ा जाय।

दूसरी उपलब्धि काशिराज संस्करण की है :

तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी।
धीग धरमध्वज धंध्रक धोरी ॥[1]

इस संबंध में चौबे जी का पाठ इस प्रकार है :

तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी।
धींग धरमध्वज धंधक धोरी।[2]

विश्वनाथ जी का कथन है :

'कैथी लिपि के कारण मानस की निम्नलिखित अर्धाली के दो पाठ हो गए—

तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी।
धिग धर्मध्वज धंधक धोरी ॥

प्राचीन पाठ 'धीग धरमध्वज धंध्रक धोरी' है। 'धीग' को कैसे 'धिग' पढ़ लिया गया, यह कैथी लिपि बता देगी। वहाँ 'धीग' को 'धीग' और 'धिग' दोनों पढ़ सकते हैं। जिसने 'धीग' को 'धिग' पढ़ा उसने मानस के नियम के विरुद्ध 'धर्मध्वज' को भी पढ़ा। मानस में संस्कृत के दो शब्दों के समस्त होने पर 'संयुक्ताद्य दीर्घम्' का नियम हिंदी पाठ में नहीं है। 'धंध्रक' शब्द के 'र' को अनावश्यक समझकर 'धंधक' कर दिया। इसके अर्थ में आज भी मतभेद है। यह 'धंधरक' का खिचा रूप है, जिसका दूसरा रूप पूर्वी भाषाओं में 'ढँगरच' चलता है। 'ढंग' या 'ढोंग रचनेवाला' इसका अर्थ होता है। केवल श्री विजयानंद

---

१. **काशिराज संस्करण**, पृ० ७।

२. **रामचरितमानस-श० ना० चौ०**, पृ० १०।

त्रिपाठी ने अर्थानुसारी पाठ 'धंधरच' रखा है। शेष में 'धंध्रक' का 'र' भी हट गया है। इसका कारण यह है कि बालकांड की सबसे प्राचीन उपलब्ध प्रति 'कुंज' में परवर्ती संशोधित पाठ 'धंधक' है। उसी में संशोधन के पूर्व का पाठ 'धंध्रक' ही है। 'धंधक' का अर्थ झगड़ा, बखेड़ा, द्वंद्व करनेवाला लगाया गया है।'[1]

धंधक का पाठभेद धंध्रक भी चौबे जी ने प्रस्तुत किया है पर धंधक ही उन्होंने ग्रहण किया है। धंध्रक शब्द किसी कोश में है नहीं, धंधक अवश्य है। उसका अर्थ संक्षिप्त शब्दसागर में इस प्रकार है :

(१) कामधंधे का आडंबर। जंजाल। बखेड़ा। (२) सांसारिक बंधन। मायाजाल। ढँढरच। ढोंग।[2]

'धंधरक' के लिये वहीं दिया हुआ है, 'दे० 'धंधक'।[3]

'धंधक' का अर्थ कहीं भी झगड़ा, बखेड़ा, द्वंद करनेवाला—शब्दसागर में नहीं दिया गया है। इसी लिये अन्य किसी की यह बात हो सकती है, सभा से संपादित मानस की नहीं।

अवधी में 'र्' कार की बहुलता नहीं होती। धंधक और धंध्रक का अर्थ भी एक ही होता है। संस्कृत के किसी कोश में कम से कम धंध्रक शब्द भी नहीं है। इसलिये इसे उपलब्धि मानना बड़ी बात नहीं है। धंधरच धोरी के लिये तुलसी ग्रंथावली देखें, जहाँ साफ साफ इसका पाठ 'धँधरक धोरी' दे दिया गया है।[4]

काशिराज संस्करण की एक अन्य उपलब्धि निम्नांकित रूप में प्रकट की गई है :

'मानस-रूपक में मानसर के चारों ओर की अमराई का उल्लेख करते हुए उसमें होनेवाले 'फूल फल' तथा 'आस्वाद' का रूपक इस प्रकार बाँधा गया है :

सम जम नियम फूल फल ज्ञाना।
हरि पद रति रस बेद बखाना॥

इस अर्धाली के 'रति रस' के स्थान पर 'कुंज' में केवल 'रस' है। इस प्रकार

१. काशिराज संस्करण, आत्मनिवेदन, पृष्ठ २६।

२. संक्षिप्त शब्दसागर, पृष्ठ ४६५।

३. वही, पृ० ४६५।

४. तुलसी ग्रंथावली, खंड १, पृ० ६।

उसमें दो मात्राएँ कम हो गई हैं। 'रघु' में 'रस बर' है। 'रस' मात्र से पूर्ति न होते देख ऐसा किया गया। यह विचार किया ही नहीं गया कि इससे रूपक खंडित हो रहा है। 'कुंज' में पहले संशोधन में यही परवर्ती पाठ (रस बर) लिया गया। सं० १७१४ के आसपास इस पाठ पर फिर विचार हुआ तो उसका संशोधन 'रति रस' किया गया। संशोधन ने रूपक का विचार कर रति शब्द बढ़ाया। 'कुंज' में 'रस' के पहले 'रति' शब्द भी बढ़ा दिया गया। इस प्रकार उसका दूसरा संशोधित पाठ हुआ 'हरिपद रति रस बर बेद बखाना।' इस प्रकार दो मात्राएँ बढ़ गईं। सं० १७४३ के लगभग इस पर ध्यान जाने पर फिर संशोधन किया गया और रूपक का ध्यान नहीं रखा गया। संशोधक ने दो 'र' कम कर दिए। वहाँ पाठ हो गया 'हरिपद रति सब बेद बखाना'। इसमें संदेह नहीं कि इन सबमें सर्वोत्तम पाठ 'हरिपद रति रस' ही है। पर मूल लेखक का यह पाठ नहीं है। ऐसी धारणा लेखनसरणि पर विचार करने से प्रतीत होती है। 'कुंज' में संशोधन के पूर्व जो पाठ है उसमें लिखक ने सामान्यतया होनेवाली एक भूल कर दी है। यदि कहीं एक ही आकार प्रकार के दो शब्द होते हैं तो लिखक भूलकर उनमें से एक ही का ग्रहण करता है। एक ही आकार प्रकार के शब्द दो बार लिखना लोगों को अभी तक कम पसंद है, लाघव की प्रक्रिया के लिये अब भी 'धीरे धीरे' के बदले 'धीरे २' लिखा जाता है। हस्तलेखों में भी कहीं कहीं दूसरी विधि से यही सरणि अपनाई जाती है। जिस शब्द को दो बार पढ़ना होता है उसपर कोई द्विरुक्तिबोधक चिह्न लगा देते हैं। यहाँ मूल पाठ 'हरिपद रस रस बेद बखाना' जान पड़ता है। दो बार 'रस' शब्द आ जाने से एक 'रस' छूट गया अथवा द्विरुक्तिबोधक चिह्न लगाना लिखक भूल गया। 'रस' का अर्थ प्रेम होता ही है। दो बार रस शब्द से यमकालंकार की जो छटा आती है उसकी प्रशंसा किए बिना साहित्यशास्त्राभ्यासी नहीं रह सकते। इस पाठ के पक्ष में यह भी कहा जा सकता है कि दो बार 'रस' कहने में कथ्य पर जितना बल पड़ता है उतना 'रति रस' कहने से नहीं। वैज्ञानिक पद्धति 'रस रस' ग्रहण के पक्ष में नहीं हो सकती, क्योंकि यह पाठ किसी हस्तलेख में नहीं है। बहुत पहले ही किसी प्रकार यह पाठ छूट गया। प्रस्तुत संस्करण में उक्त संभाव्य पाठ नहीं लिखा गया। उसका यहाँ केवल सुझाव ही दिया जा रहा है।'[1]

---

१. काशिराज संस्करण, आत्मनिवेदन, पृष्ठ २७।

इस व्याख्या के उपरांत काशिराज संस्करण का पाठ है :

सम जम नियम फूल फल ज्ञाना।
हरिपद रति रस बेद बखाना॥

और यही पाठ चौबे जी ने भी पृष्ठ २४ पर ग्रहण किया है। इसलिये इसे कोई उपलब्धि नहीं माना जा सकता। संभावना और कल्पना से तो ऐसे मर्यादा ग्रंथ में अनेक स्थानों पर सतर्क परिवर्तन और परिवर्द्धन किए जा सकते हैं। पर वह प्रामाणिक, शास्त्रीय तथा वैज्ञानिक संपादन पद्धति न होगी।

काशिराज संस्करण की उपलब्धि के दृष्टांत में दी गई एक अर्द्धाली है—

'राम के विवाह में जानेवाली बरात में हाथियों के प्रस्थान पर यह अर्धाली है :

चले मत्त गज घंट बिराजी।
मनहु सुभग सावन घनराजी॥

इस अर्धाली में 'घंट बिराजी' व्याकरणविरुद्ध है। 'बिराजी' क्रिया 'घंटि बिराजी' पाठ चाहती है। पर हाथी के गले में घंटी! किसी किसी ने मात्राधिक्य का विचार न कर 'घंटा' पाठ भी धर दिया है। संशोधन के पूर्व दो प्राचीनतम प्रतियों में 'घय' पाठ है। इसी 'घय' को न समझने के कारण 'घंट' संशोधन किया गया। उपरिलिखित पाठ उक्त सभी अधुनातन संस्करणों में गृहीत है। यहाँ वास्तविकता क्या है, उसपर दृष्टि जाते ही प्रकृत पाठ सामने आ जाता है। संशोधन के पूर्व 'कुंज' एवं 'रघु' में 'घय' है। संशोधन के पूर्व का 'घय' पाठ तत्वतः लिखावट की त्रुटि है। मूल पाठ 'घंटा' है। 'टा' लिखने में 'ट' की टाँग आकार की पाई से जा मिली और 'घंटा' के साथ दुर्घटना घटित हो गई। 'घय' को अनर्थक समझकर 'घंट' बनाया गया। व्याकरण के घटाटोप पर भी किसी ने ध्यान नहीं दिया। संस्कृत में गजघटा-घनघटा का युगपत् वर्णन अनेकत्र है। तुलसीदास ने उसी का अनुग्रहण किया है। यह पाठ तीन ही हस्तलेखों में मिलता है। ये तीनों वाराणसी क्या, उत्तरप्रदेश के बाहर के हैं।'[1]

इस प्रकार पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र द्वारा गृहीत पाठ है :

चले मत्त गज घंटा बिराजी।
मनहु सुभग सावन घनराजी॥[2]

---

१. वही, पृ० २७-२८।

२. काशिराज संस्करण, पृ० ११८।

और यह उपलब्धि चौबे जी की ही वस्तुतः है।

उनका भी पाठ है :

चले मत्त गज घटा बिराजी।
मनहु सुभग सावन घनराजी ॥[१]

अब एक उपलब्धि और देख ली जाय। काशिराज संस्करण में बताया गया है कि :

'तुलसीदास द्वारा प्रयुक्त संस्कृत शब्दों को ठीक से न समझने से भी परिवर्तन किया गया है। पार्वती सप्तर्षियों से कहती हैं :

देखहु मुनि अबिबेकु हमारा।
चाहिय सदासिवहि भरतारा ॥

'शिव' का एक नाम 'सदाशिव' भी है। इस शब्द का प्रयोग मानस में अन्यत्र भी है :

बिनती सुनहुँ सदासिव मोरी।

'सदा' शिव से पृथक् होकर भरतारा से संबद्ध हो गया। अतः अर्थ को सुस्पष्ट करने के लिये पाठभेद करके व्यत्यय कर दिया गया और नया पाठ हो गया—'चाहिअ सिवहि सदा भरतारा।' पूर्ण वैज्ञानिक संपादन ने यही पाठ ठीक माना है।'[२]

और चौबे जी का पाठ है :

देखहु मुनि अबिबेक हमारा।
चाहिअ सदासिवहि भरतारा ॥[3]

फिर उपलब्धि कैसी ?

छंदशुद्धि के प्रसंग में काशिराज संस्करण की उपलब्धि का दृष्टांत निम्नांकित है :

'कुछ विचार छंदःशुद्धि पर भी। अन्यत्र कलियुगवर्णन में एक चरण अर्थ न बैठने के कारण छंदोविरुद्ध रखा गया है—

बहु दाम सँवारहि धाम जती।
बिषया हरि लीन्हि रही बिरती ॥

---

१. रामचरितमानस, शं० ना० चौबे, पृ० ४७।

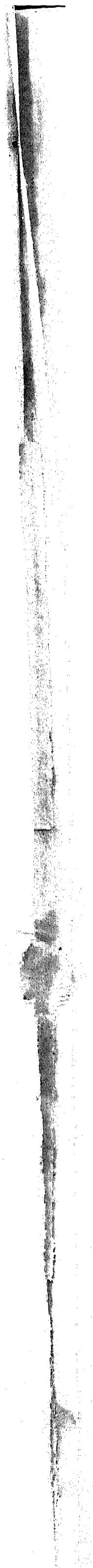
२. काशिराज संस्करण, आत्मनिवेदन, पृष्ठ २८।

३. रामचरितमानस, शं० ना० चौबे, पृ० ४४।

रामचरितमानस की संवत् १७६२ वि० की प्रति की पुष्पिका

(भारत-कला-भवन के सौजन्य से)

[संवत् १७६२ एवं १७२१ वि० की पुष्पिकाएँ भारत-कला-भवन (काशी हिंदू विश्वविद्यालय) के मानस-मराल-संग्रह (स्व० श्री शंभुनारायण जी चौबे संग्रह) के सौजन्य से प्राप्त एवं प्रकाशित । कापीराइट भारत-कला-भवन]

गीता प्रेस और मानसपीयूष ने 'रही' के बदले 'न रहि' पाठ लिया है। इससे छंदभंग होता है। छंद तोटक है जिसमें चार सगण होते हैं। 'रही' का अर्थ ठीक नहीं लगाया गया। यहाँ 'रही' का अर्थ 'रह गई' नहीं है, 'थी' है। जो विरति थी उसे विषय ने हर लिया। रही सही विरति भी जाती रही।"[1]

इस प्रकार उनका पाठ है :

बहु दाम सँवारहिं धाम जती।
बिषया हरि लीन्हि रही बिरती॥[2]

श्री चौबे जी का पाठ है :

बहु दाम सवारहिं धाम जती।
बिषया हरि लीन्हि रही बिरती॥[3]

यह भी कोई उपलब्धि नहीं रही।

उदाहरणरूप में प्रस्तुत काशिराज संस्करण की अंतिम उपलब्धि निम्नांकित है :

"इसी प्रकार संस्कृत रूपों को बनाए रखने से भी छंदोबाधा उपस्थित हुई है। सामान्यतया निम्नलिखित में कोई बाधा नहीं जान पड़ती :

राम मार्गन गन चले लहलहात जनु ब्याल। (६।९१।१४)

'मार्गन' (भगण) रूप के पढ़ने से काम बन जाता है। पर मार्गन के बदले रेफरहित 'मागन' जैसा रूप रखा जाए तो प्रवाह खंडित होने लगता है। इसलिये यहाँ 'राम मारगन गन' पढ़ने से ही काम चलेगा। यही 'कार्मुक' (६।९३।५) की भी स्थिति है। पूरी मात्रा 'कारमुक' पढ़ने से ही बैठेगी। 'न यावद् उमानाथपादारबिंदं' को 'न यावदुमानाथपादारबिंदं' लिखने से वर्णन्यूनता होती है।"[4]

चौबे जी का पाठ इस प्रकार है :

राम मार्गन गन चले ..

और

तब प्रभु कोपि कार्मुक लीन्हा[5]।

---

१. काशिराज संस्करण, आत्मनिवेदन, पृ० २८।

२. काशिराज संस्करण, पृ० ४३६।

३. रामचरितमानस, शं० ना० चौबे, पृ० ५४५।

४. काशिराज संस्करण, पृ० २८।

५. रामचरितमानस, शं० ना० चौबे, पृ० ४१८।

किंतु यह पाठ तुलसी ग्रंथावली (रामचरितमानस) में दे दिया गया है। यथा :

राम मारगन गन चले, लहलहात जनु व्याल ।'[1]

और 'कारमुक' और 'कार्मुक' इन दोनों के विषय में उलझना व्यर्थ है क्योंकि इससे मात्रा भले घट जाय मतिभंग नहीं होता।

चौबे जी के संस्करण से काशिराज संस्करण की तुलना करना मेरा ध्येय न था पर सर्वाधिक प्रचारित प्रसारित दावेवाली अधुनातन कृति होने के कारण ऐसा करना स्वाभाविक था कि दृष्टांत रूप में वहाँ प्रस्तुत सभी उपलब्धियों की छान-बीन कर ली जाय।

यद्यपि दोनों के संस्करणों में छंदसंख्या समान है, तो भी वर्तनी और पाठभेद यहाँ इसलिये दे दिया गया है (परिशिष्ट ३) कि दोनों में अंतर बहुत कम क्या नाम मात्र के लिये है और यदि चौबे जी के जीवनकाल में ही उनका मानस प्रकाशित हो गया होता तो संभवतः वर्तनीभेद भी सामने न आ पाता। इन्होंने अपने मानस के लिये जिन प्रतियों का प्रयोग किया उनमें कलाभवन-वाली प्रतियाँ भी हैं जिनका उपयोग करने का अवसर अगर मिश्र जी को मिलता तो संभवतः उनका यत्न एक रूप में होता, क्योंकि श्री रामचंद्र वर्मा ने मुझे बताया कि जिस दिन चौबे जी को वह प्रति मिली थी उसी दिन संकटमोचन में उन्होंने लड्डू चढ़ाया था और प्रसन्नवदन सभा में उसे बाँटा था, मानो मनौती पूरी हुई हो।

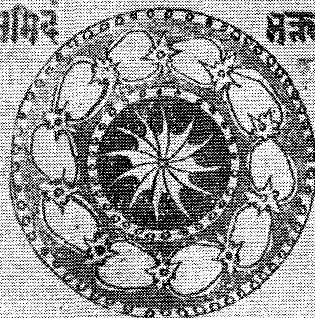
जो कुछ भी हो, चौबे जी का प्रयत्न आज तक सभी दृष्टियों से चूड़ांत है। वे साधनहीन थे इसलिये साधना की। और सिद्धि तो तपस्या की मुखापेक्षी है। जो जितना तपता है वह उतना ही खरा होता है और उसका कृतित्व उतना ही मंगलविधायक। चौबे जी की यह तपस्या उन सबको सदा प्रेरणा देती रहेगी जो धर्मबुद्धि से साहित्यसंपादन के लिये जीवनत्याग करेंगे। इसमें रंचमात्र संदेह नहीं।

इसीलिये इन लेखों का संग्रह किया गया ताकि मानस पर काम करनेवाले तथा तलार्थी इस अक्षय 'निधि' का लाभ उठा सकें। कुछ परिशिष्ट इसमें दे दिए गए हैं जो काम के हैं।

इन परिशिष्टों में सभा में तथा तुलसी पुस्तकालय में उपलब्ध १३१

---

१. देखिए, पृ० ४१५।



रामचरितमानस की संवत् १७२१ वि० वाली प्रति की पुष्पिका

(भारत-कला-भवन के सौजन्य से)

किंतु यह पाठ तुलसी ग्रंथावली (रामचरितमानस) में दे दिया गया है। यथा :

राम मारगन गन चले, लहलहात जनु व्याल।"[1]

और 'कारमुक' और 'कार्मुक' इन दोनों के विषय में उलझना व्यर्थ है क्योंकि इससे मात्रा भले घट जाय मतिभंग नहीं होता।

चौबे जी के संस्करण से काशिराज संस्करण की तुलना करना मेरा ध्येय न था पर सर्वाधिक प्रचारित प्रसारित दावेवाली अधुनातन कृति होने के कारण ऐसा करना स्वाभाविक था कि दृष्टांत रूप में वहाँ प्रस्तुत सभी उपलब्धियों की छान-बीन कर ली जाय।

यद्यपि दोनों के संस्करणों में छंदसंख्या समान है, तो भी वर्तनी और पाठभेद यहाँ इसलिये दे दिया गया है (परिशिष्ट ३) कि दोनों में अंतर बहुत कम क्या नाम मात्र के लिये है और यदि चौबे जी के जीवनकाल में ही उनका मानस प्रकाशित हो गया होता तो संभवतः वर्तनीभेद भी सामने न आ पाता। इन्होंने अपने मानस के लिये जिन प्रतियों का प्रयोग किया उनमें कलाभवन-वाली प्रतियाँ भी हैं जिनका उपयोग करने का अवसर अगर मिश्र जी को मिलता तो संभवतः उनका यत्न एक रूप में होता, क्योंकि श्री रामचंद्र बर्मा ने मुझे बताया कि जिस दिन चौबे जी को वह प्रति मिली थी उसी दिन संकटमोचन में उन्होंने लड्डू चढ़ाया था और प्रसन्नवदन सभा में उसे बाँटा था, मानो मनौती पूरी हुई हो।

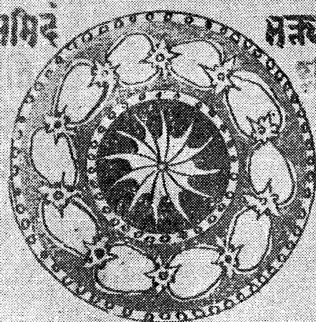
जो कुछ भी हो, चौबे जी का प्रयत्न आज तक सभी दृष्टियों से चूड़ांत है। वे साधनहीन थे इसलिये साधना की। और सिद्धि तो तपस्या की मुखापेक्षी है। जो जितना तपता है वह उतना ही खरा होता है और उसका कृतित्व उतना ही मंगलविधायक। चौबे जी की यह तपस्या उन सबको सदा प्रेरणा देती रहेगी जो धर्मबुद्धि से साहित्यसंपादन के लिये जीवनत्याग करेंगे। इसमें रंचमात्र संदेह नहीं।

इसीलिये इन लेखों का संग्रह किया गया ताकि मानस पर काम करनेवाले तथा तलार्थी इस अक्षय 'निधि' का लाभ उठा सकें। कुछ परिशिष्ट इसमें दे दिए गए हैं जो काम के हैं।

इन परिशिष्टों में सभा में तथा तुलसी पुस्तकालय में उपलब्ध १३१

---

१. देखिए, पृ० ४१५।



रामचरितमानस की संवत् १७२१ वि० वाली प्रति की पुष्पिका

(भारत-कला-भवन के सौजन्य से)

हस्तलिपियों का परिचय उनकी विशेषताओं के साथ है जिसकी तालिका इस प्रकार है :

क्रमांक	पृ० सं०	नाम	पूर्ण या अपूर्ण	लिपिकाल
१	२९९	रामचरितमानस	पूर्ण	संवत् १९२१ वि०
२	३००	,,	,,	,, १८९५ वि०
३	३०२	,,	,,	,, १८९२ वि०
४	३०४	,,	,,	,, १९०२ वि०
५	३०६	,,	खंडित	,, १८६३ वि०
६	३०८	,,	,,	अज्ञात
७	३०९	बालकांड	अपूर्ण	सं० १८२४ वि०
८	३११	,,	पूर्ण	,, १८३६ वि०
९	३१३	,,	,,	,, १८६५ ,,
१०	३१५	,,	खंडित	,, १८७८ ,,
११	३१६	,,	पूर्ण	,, १८८३ ,,
१२	३१८	,,	खंडित	,, १८८७ ,,
१३	३१९	,,	पूर्ण	,, १८९४ ,,
१४	३२१	,,	,,	,, १८९८ ,,
१५	३२४	,,	,,	,, १९१४ ,,
१६	३२६	,,	खंडित	,, १९२३ ,,
१७	३२६	,,	पूर्ण	,, १९६३ ,,
१८	३२८	,,	खंडित	अज्ञात
१९	३३०	,,	अपूर्ण	,, १८६० वि०
२०	३३१	,,	खंडित	अज्ञात
२१	३३३	,,	अपूर्ण	अज्ञात
२२	३३४	,,	,,	,,
२३	३३५	,,	पूर्ण	,,
२४	३३७	,,	,,	,,
२५	३३९	,,	अपूर्ण	,,
२६	३४०	,,	,,	,,
२७	३४१	,,	,,	,,

२८	३४३	अयोध्याकांड	अपूर्ण	संवत् १७७७ वि०
२९	३४४	,,	,,	,, १८३६ ,,
३०	३४६	,,	,,	,, १८३७ ,,
३१	३४७	,,	पूर्ण	,, १८६४ ,,
३२	३४८	,,	अपूर्ण	,, १८८३ ,,
३३	३५०	,,	पूर्ण	,, १८८३ ,,
३४	३५१	,,	,,	,, १८९४ ,,
३५	३५३	,,	,,	,, १९१२ ,,
३६	३५४	,,	,,	,, १९१४ ,,
३७	३५७	,,	,,	अज्ञात
३८	३५८	,,	खंडित	,,
३९	३६०	,,	,,	,,
४०	३६१	,,	,,	,,
४१	३६२	,,	अपूर्ण	,,
४२	३६३	,,	खंडित	,,
४३	३६५	,,	पूर्ण	,,
४४	३६६	,,	खंडित	,,
४५	३६७	,,	पूर्ण	,,
४६	३६९	अरण्यकांड	अपूर्ण	संवत् १८१० वि०
४७	३७१	,,	पूर्ण	,, १८२३ ,,
४८	३७२	,,	,,	,, १८३७ ,,
४९	३७४	,,	अपूर्ण	,, १८७३ ,,
५०	३७५	,,	खंडित	,, १८६१,१२११ फ०
५१	३७७	,,	पूर्ण	,, १८६४ वि०
५२	३७८	अयोध्याकांड	,,	,, १८७६ ,,
५३	३८०	अरण्यकांड	खंडित	,, १८९४ ,,
५४	३८१	,,	पूर्ण	,, १९१४ ,,
५५	३८३	,,	अपूर्ण	अज्ञात
५६	३८४	,,	पूर्ण	,,
५७	३८५	,,	खंडित	,,
५८	३८६	किष्किंधाकांड	पूर्ण—सं० १८३७ वि०, शा. १७०२	

५९	३८८	किष्किंधाकांड	पूर्ण	सं० १८४२ वि०
६०	३९०	,,	,,	,,१८६० वि०,१२१० फ.
६१	३९१	,,	,,	१८६४ ,,
६२	३९३	,,	,,	१८७३ वि०
६३	३९४	,,	,,	सं. १८८०, शाके १७४५
६४	३९५	,,	अपूर्ण	१८८३ वि०
६५	३९६	,,	खंडित	१८८९ ,,
६६	३९८	,,	,,	१८९४ ,,
६७	४००	,,	पूर्ण	१९१४ ,,
६८	४०१	,,	खंडित	अज्ञात
६९	४०३	,,	अपूर्ण	१८६८ वि०
७०	४०४	,,	खंडित	अज्ञात
७१	४०५	,,	पूर्ण	,,
७२	४०६	,,	अपूर्ण	,,
७३	४०८	सुंदरकांड	पूर्ण	सं.१८२७वि० शा.१७०२
७४	४०९	,,	अपूर्ण	१८७३वि०
७५	४१०	,,	पूर्ण	१८७९ ,,
७६	४११	,,	अपूर्ण	१८८३ ,,
७७	४१२	,,	खंडित	१८९४ ,,
७८	४१४	,,	पूर्ण	१९१४ ,,
७९	४१५	,,	,,	१९३८ ,,
८०	४१७	,,	,,	अज्ञात
८१	४१८	,,	अपूर्ण	,,
८२	४२०	,,	पूर्ण	,,
८३	४२१	,,	,,	,,
८४	४२२	,,	अपूर्ण	,,
८५	४२३	,,	,,	,,
८६	४२५	,,	पूर्ण	,,
८७	४२६	,,	अपूर्ण	,,
८८ ७७	४२७	,,	खंडित	,,
८९ ७८	४२९	,,	अपूर्ण	,,

९०	७९	४३१	”	पूर्ण	”
९१	८०	४३२	”	खंडित	”
९२	८१	४३३	लंकाकांड	”	संवत् १६५० ?
९३	८२	४३६	”	अपूर्ण	१७५९ वि०
९४	८३	४३८	”	खंडित	सं.१८३५शा०१७००
९५	८४	४३९	”	पूर्ण	” १८३७ ” १७०२
९६	८५	४४१	”	”	१८६० वि०
९७	८६	४४३	”	”	” १८६२वि०१२१३फ०
९८	८७	४४५	”	अपूर्ण	” १८८३ वि०
९९	८८	४४७	”	पूर्ण	” १९१४ ”
१००	८९	४४९	”	”	” १९२२ ”
१०१	९०	४५१	”	”	अज्ञात
१०२	९१	४५३	”	खंडित	”
१०३	९२	४५४	”	पूर्ण	”
१०४	९३	४५५	”	”	”
१०५	९४	४५७	”	”	”
१०६	९५	४५८	”	अपूर्ण	”
१०७	९६	४६०	”	खंडित	”
१०८	९७	४६१	”	”	”
१०९	९८	४६३	उत्तरकांड	पूर्ण	१८१० वि०
११०	९९	४६४	”	अपूर्ण	१८३० ”
१११	१००	४६६	”	पूर्ण	१८३४ ”
११२	१०१	४६८	”	अपूर्ण	१८४९ ”
११३	१०२	४६९	”	खंडित	सं. १८७०वि०,१२२०फ०
११४	१०३	४७१	”	पूर्ण	सं० १८७६ वि०
११५	१०४	४७२	”	खंडित	” १८७७,१२२८ फ०
११६	१०५	४७३	”	पूर्ण	१८७७ वि०
११७	१०६	४७५	”	”	१८८३ ”
११८	१०७	४७६	”	खंडित	१८९१ ”
११९	१०८	४७७	”	पूर्ण	१९१४ ”
१२०	१०९	४७९	”	”	१९२२ ”

१२१	११०	४८१	„	पूर्ण	१६३१ वि०
१२२	१११	४८२	„	प्रायः पूर्ण	१६३६ „
१२३	११२	४८५	„	खंडित	अज्ञात
१२४	११३	४८६	„	„	„
१२५	११४	४८८	„	„	„
१२६	११५	४८६	„	„	„
१२७	११६	४६०	„	„	„
१२८	११७	४६२	„	„	„
१२६	११८	४६३	„	पूर्ण	१६३३ वि०
१३०	११६	४६५	„	„	अज्ञात
१३१	१२०	४६६	„	अपूर्ण	„

रामचरितमानस की इन प्रतियों का संक्षिप्त परिचय भी दे दिया गया है जो पहली बार प्रकाश पा रहा है। प्रतिलिपि उसी रूप में भरसक देने का यत्न किया है जिस रूप में हस्तलेखों में उपलब्ध थी ताकि विवेचक विविध लिपियों के प्रकाश में अपना निष्कर्ष निकाल सकें।

इन उपलब्ध हस्तलेखों में रामचरितमानस के छह पूर्ण हस्तलेख हैं जिनमें दो खंडित हैं। सोपानों की स्थिति इस प्रकार है :

सोपान	हस्तलेख संख्या	पूर्ण	खंडित
बालकांड	२७	६	१२
अयोध्याकांड	१६	६	१०
किष्किंधाकांड	११	५	६
अरण्यकांड	१५	८	७
सुंदरकांड	१६	६	८
लंकाकांड	१७	६	८
उत्तरकांड	२३	११	१२

इनमें से ७७ का लिपिकाल ज्ञात है और ५४ का अज्ञात है। सत्रहवीं शताब्दी के हस्तलेख की संख्या एक है। पर उक्त १६५० वि० वाला हस्तलेख प्रामाणिक नहीं लगता और अठारहवीं, उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के हस्तलेखों की संख्या क्रमशः ४, ५६, और १६ है। इसमें संवत् १७७१ से

उपलब्ध हस्तलेखों का विवरण है। पूर्व के हस्तलेखों का परिचय मानस अनुशीलन में है।

अवधी के उच्चारण की अपनी विशेषता है। एतदर्थ विशेष प्रतीकों का विधान टाइप में चौबे जी ने किया, जिसका उपयोग उनके द्वारा संपादित रामचरितमानस में किया गया है। यह उनकी भाषावैज्ञानिक दृष्टि का परिचायक है।

श्री राय कृष्णदास जी ने चौबेजी को अत्यंत निकट से देखा और समझा था। उन्होंने उन्हें इस कार्य के लिये उत्साह और प्रेरणा भी दी थी। राय साहब ने इस पुस्तक की भूमिका लिखने की कृपा की है। साथ ही श्री शंभुनारायण संग्रह कला भवन, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, की संवत् १७२१ और १७६२ की पुष्पिकाओं का प्रतिचित्र इस पुस्तक में प्रकाशनार्थ दिया है, जो चौबे जी के रामचरितमानस का मूलाधार है। इस उपकार के लिये उनका तथा कला भवन का आभारी हूँ।

काम श्रमसाध्य था पर बेढब बनारसी, श्री लालधर त्रिपाठी 'प्रवासी', पं० विश्वनाथ त्रिपाठी, श्री श्रीनाथसिंह, डा० रत्नाकर पांडेय, पं० शिवशंकर मिश्र, श्री बलिराम सिंह, श्री रामनगीना शर्मा आदि के सहयोग से सरल हो गया। यद्यपि प्रूफ संशोधन का कार्य मैंने नहीं किया है, तो भी उसके उत्तरदायित्व से मैं अपने को मुक्त नहीं करता। इसलिये मैं क्षमाप्रार्थी हूँ और विश्वास रखें, आगे के संस्करणों को इस प्रकार की त्रुटियों से मुक्त रखे जाने का यत्न करूँगा।

यह कृति, मुझे विश्वास है, मानस साहित्य की निधि में एक महत्वपूर्ण अनन्य संपदा के रूप में मर्यादित होगी।

रामनवमी, २०२४ वि०
गोलादीनानाथ,
वाराणसी

—सुधाकर पांडेय

———

मानस अनुशीलन

मानस अनुशीलन ↓

[मानसमराल स्व० चौबे जी का यह निबंध नागरीप्रचारिणी पत्रिका के नवीन संस्करण भाग १६, वर्ष ४३, अंक ३ (कार्तिक संवत् १९९५ वि०) में प्रकाशित हुआ था। इस पत्रिका के इस अंश के संपादकमंडल के सदस्य थे—आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डा० मंगलदेव शास्त्री, पं० केशवप्रसाद मिश्र, श्री जयचंद्र नारंग (विद्यालंकार), पं० लल्लीप्रसाद पांडेय, कृष्णानंद (संयोजक)

↑ देखिए परिशिष्ट १।

विश्वसाहित्य में थोड़े ही ऐसे ग्रंथ होंगे जिनका साधारण जनता में रामचरितमानस के इतना आदर हुआ हो और जिनके इतने अधिक संस्करण हुए हों। जिस समय गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में "सब जानत प्रभु प्रभुता सोई। तदपि कहे बिनु रहा न कोई॥" लिखा होगा उस समय कदाचित् उनको इस बात का अनुमान न रहा होगा कि एक समय आवेगा जब यही बात उनके ग्रंथ के विषय में अक्षरशः लागू होगी।

रामचरितमानस में क्षेपक का समावेश उसके संमान का द्योतक है। किंतु उसमें क्षेपकों की वृद्धि क्रमशः इतनी हो गई कि किसी किसी हस्तलिखित प्रति[1] का केवल बालकांड इतना बड़ा है जितना महाभारत। क्षेपकों की इस बहुलता से हस्तलिखित प्रतियों का अनुसंधान अधिक दुरूह है। एक तो ये प्रतियाँ इतनी बिखरी हुई हैं कि साधारणतः उन सब का दर्शन तक दुर्लभ है और फिर जो हस्तलिखित प्रतियाँ प्रामाणिक मानी जाती हैं उनके द्वारा इस प्रकार का व्यापार चल रहा है जो उनकी प्रामाणिकता में शंका उत्पन्न करता है। कुछ पोथीपूजक तो ऐसे स्वार्थी तथा अनुदार हैं कि वे किसी भी प्रार्थना से पिघलनेवाले नहीं होते। उनसे किसी का लाभ नहीं हो सकता। अतः प्रस्तुत लेख में रामचरितमानस के महत्त्व-पूर्ण और उपादेय छपे संस्करणों का उल्लेख किया गया है। यहाँ सभी छपे संस्करणों का उल्लेख अभीष्ट नहीं है।

रामचरितमानस तथा तत्संबंधी साहित्य का अग्रलिखित वर्गीकरण हो सकता है—

१. प्रामाणिक मूल पाठ।

२. टीका–संपूर्ण रामचरितमानस की।

३. टीका स्फुट कांडों की।

४. रामचरितमानस के कुछ दोहों और चौपाइयों की विशद व्याख्या।

---

१. एक ऐसी प्रति रामनगर के चौधरी छुन्नीसिंह के मित्र के पास है।

५. शंकासमाधान तथा विविध ग्रंथ।
६. रामचरित संबंधी अन्य कवियों के स्वतंत्र ग्रंथ।

१. प्रामाणिक मूलपाठ

मूल छपी हुई प्रतियों में सबसे प्राचीन, जो अब तक देखने में आई है, सं० १८१६ की प्रति है। यह पुराने किस्म के देशी कागज पर लीथो द्वारा काशी के केदार प्रभाकर छापेखाने में छपी थी[1]। इसमें आजकल की तरह चौपाइयाँ अलग अलग पंक्तियों में नहीं छपी हैं बल्कि लगातार छपती चली गई हैं। इसमें तसवीरें भी बहुत हैं। पाठ अधिकतर शुद्ध हैं। बालकांड में 'जेहि प्रकार सुरसरि महि आई' की कथा दी गई है। इसी प्रकार लंकाकांड में कई जगह क्षेपक हैं।

इसके बाद की प्रति टाइपों के प्रारंभिक काल में, हिंदीगद्य के जन्मदाता श्री लल्लूलालजी के संस्कृत यंत्रालय में, संवत् १८६७ में, छपी थी[2]। यह प्रति देशी कागज पर छपी और इसमें चौपाइयों को यथा-

---

१—सुविधा के लिये प्रतियों का मुखपृष्ठ अविकल दे दिया जाता है—

"श्रीकाशी विश्वनाथपुरी में केदार प्रभाकर छापाखाना में रामायण तुलसीकृत सातों कांड मय तसवीर छापी गई सो मुहल्ला सोनारपुरा में गोपाल चौबे के छापाखाना में छापी। लिखा दुर्गा मिश्र वो छापनेवाले का नाम बेचू काडीगर। पोथी जिसको लेना होय सो चाननी चौक में बिहारी चौबे के दुकान पर मिलैगी। संवत् १८१६, मिती पूस सुदी ११ चंद्रवार।"

साइज १०″×८½″ पृष्ठसंख्या—बालकांड १८३; अयोध्याकांड १४२; आरण्यकांड ३३; किष्किंधाकांड १६; सुंदरकांड २६; लंकाकांड ७५।

२—शाके नेत्राग्निशैलद्विजपतिमिलिते मासि मार्गे दशम्यां
पारावारर्तुनागक्षितिभिरुपयुते वैक्रमेऽब्दे सितायाम्।
बस्तीरामं प्रवीणं प्रबलमतियुतं दर्शयित्वाङ्कयत् श्री-
बाबूरामो विपश्चिन्निखिलगुणमिदं पुस्तकं साधुप्रीत्यै॥

श्रीमत्सदलमिश्रेण ज्ञात्वा वाचस्सुपर्वणाम्।
शुद्धीकृतमिदं सर्वं यथोचितमतन्द्रिणा॥

शक्ति अलग अलग पंक्तियों में छापने का प्रयत्न किया गया है। पाठ अधिकतर भ्रष्ट है। शब्दों का शुद्ध संस्कृत रूप दिया गया है।

आगे चलकर कलकत्ते में श्री मुकुंदीलाल जानी के छापेखाने[1] से सं० १८९६ में एक रामायण का संस्करण टाइपों में देशी कागज पर छपा था। इसमें दोहा और छंद को छोड़कर चौपाइयाँ एक साथ ही छपती चली गई हैं। इसी टाइप में महाराज उदितनारायण सिंह का महाभारत छपा था। इसका मूल पाठ लल्लूलाल की प्रति से अधिक शुद्ध है, क्योंकि इसके एक पृष्ठ की भूमिका में लिखा है—

"......सो यह पोथी बहुत तल्लास करने से भरतपुर के राज्य में कायस्थ-कमल-कुल-प्रकाशक लाला सूरजमल माथुर कायस्थ ने अपने पाठ करने के निमित्त राजापुर परगने में जाय कों श्री गोस्वामीजी के वंशज...... को अनेक रुपैये के साध्या और शरीर की सेवा कर कों श्री गोस्वामीजी के हाथ की लिखी पोथी सों प्रति अक्षर शोध कों पुस्तक अपना तैयार किया......"।

इसमें भी क्षेपक हैं जो जान बूझकर रखे गए हैं। भूमिका में लिखा है—"......अधिक पाठ प्रसंग को रहने दिया इस निमित्त कि......कथा निकाल देने से हमको लोग दोषी करते।"

इस पुस्तक में संख्या पर अधिक जोर है। प्रत्येक चौपाई (चार चरणों) के बाद कांड के आरंभ से संख्या मिलाई गई है जो इस प्रकार है :—

१—मुखपृष्ठ—"श्री सीतारामाभ्यान्नमः श्री तुलसीदास गोस्वामीकृत सप्तकांड रामायण ग्रंथः पंचानन तला में श्री मुकुंदीलाल जानि के छापेखाने में छापा गया। कलकत्ते बड़े बाजार में रामदयाल भगत के कटड़े में श्री तिलकराम नाथराम भगत ने छपवाया संवत् १८९६ मिती श्रावण कृष्ण ४ बुधवार सन् १२४६ साल श्रावण"

पृष्ठसंख्या—बालकांड १४७; अयोध्याकांड ११२; आरण्यकांड ३१; किष्किंधाकांड १३; सुंदरकांड २३; लंकाकांड ७७; उत्तरकांड ६०।

कांड	श्लोक	चौपाई	दोहा	छंद
बाल	७	१६१२	४२२	१२६
अयोध्या	३	१२६३	३२७	२६
आरण्य	२	३१०	८७	४७
किष्किंधा	२	१५०½	३४	६
सुंदर	३	२६३½	६३	१२
लंका	३	८००	२१४	१०३
उत्तर	३	५९७	२२३	

दूसरी प्रति बनारस के दिवाकर छापेखाने से सं० १९१२ में[1] देशी कागज पर मोटे लीथो अक्षरों में छपी थी। इसका पाठ अधिकतर भ्रष्ट है, पर चित्र अच्छे हैं।

इसके बाद तीन लीथो की प्रतियाँ मटमैले कागज पर तीन स्थानों से प्रकाशित हुईं। तीनों का पाठ करीब करीब मिलता जुलता है और तीनों के अंत में यह श्लोक मिलता है—

"यः पृथ्वीभरवारणाय दिविजैः संप्रार्थितश्चिन्मयः
संजातः पृथिवीतले रविकुले मायामनुष्योऽव्ययः।

१—मुखपृष्ठ—शहर बनारस दिवाकर छापाखाना में तुलसीकृत रामायण मै तसवीर समेत सातो कांड शिवचरन के इहाँ छपा साकिन महल्ला भदैनी काली महाल के पास छपी बकल पाडोजी महाराष्ट्र ब्राह्मण छापनेवाले रामफल मुसौवर गुदरदास जिसको लेना हो सो चाननी चौक में गोपाल चौबे के दुकान में मिलैगी।"

संवत् १९१२ मिती कार्तिक बदी ४ वार मंगल।

साइज ११″×९″। पृष्ठ-संख्या— बालकांड १७१; अयोध्याकांड ११९; आरण्यकांड ४३; किष्किंधाकांड १८; सुंदरकांड ३१; लंकाकांड ७७; उत्तरकांड ७२।

निश्चक्रं हतराक्षसः पुनरगाद् ब्रह्मत्वमाद्यं स्थिरां
कीर्तिम्पापहरां विधाय जगतां तं जानकीशं भजे ॥"

जान पड़ता है कि तीनों का आधार एक ही छपी या लिखित प्रति थी। इन तीनों में चित्र भी बहुत से दिए गए हैं, पर सभी में, क्षेपक तथा भ्रष्टपाठ की कमी नहीं है।

इनमें पहली संवत् १९२३ तदनुसार २८ अप्रैल सन् १८६६ की छपी है। इसका मुखपृष्ठ तो न मिल सका पर आकारप्रकार से मालूम होता है कि नवलकिशोर प्रेस लखनऊ की छपी है। पुस्तक के अंत में आरती और उपरिलिखित श्लोक के बाद "लि०नागर ब्राह्मण मुरलीधर" मिलता है।

दूसरी सं० १९३० तदनुसार तारीख ४ मई सन् १८७४ में बंबई के सखाराम भिकशेठ खातू के छापेखाने में छपी थी। इसके अंत में श्लोक आदि के बाद कुछ कवित्त[1] भी मिलते हैं।

तीसरी प्रति 'मतबै मुंशी रामसरूप वाकै कंप फतेहगढ़ महल्ला तलैया-लेन' में सं० १९३१ भाद्र शुक्ल ५ तदनुसार सन् १८७३ में छपी थी[2]।

१—"राम को गुलाम नाम देश सिंह वयस बंस,
छत्रि जाति बसोवास अंत्रबेदि जानिए।
ग्राम नाम नगवा है पंचकोस कानपुर,
तीन सोस जाजमऊ सिद्धिनाथ मानिए ॥
नव कोस ब्रह्मावर्त बसे बालमीक जहाँ,
राम सुत सिया जुत लोक सब खानिए।
सव कोस बृंदावन साठि कोस प्रागराज,
असी कोस औधपुर राम सुख दानिए ॥
बंबा माई मारकीट के मधि में महजित जान।
सखाराम अरु भीख शेठि की तेहि के पास दुकान ॥"

पृष्ठसंख्या—बालकांड १८१; अयोध्याकांड १४१; आरण्यकांड ३९; किष्किंधाकांड २९; सुंदरकांड २९; लंकाकांड १०१; उत्तरकांड ७२।

२—इदं पुस्तकं लिखितं भोलानाथ संवत् १९३१ भाद्र शुक्ल ५।

पृष्ठसंख्या—बालकांड १८८; अयोध्याकांड १६४; आरण्यकांड ४२; किष्किंधाकांड १७; सुंदरकांड ३०; लंकाकांड १४७; उत्तरकांड ७६।

लीथो की छपी पुस्तकों के पढ़ने में असुविधा होती थी और साधारण पढ़े लिखे लोग यदि रामायण बाँचना चाहते थे तो शब्दों के अलग न होने के कारण उन्हें रामायण का पढ़ना दुरूह मालूम पड़ता था। उधर आई० सी० एस० कोर्स में गवर्नमेंट ने हिंदी वर्नाक्यूलर की परीक्षा में मानस का कुछ अंश रख दिया। इन सबकी सुविधा के लिये बनारस संस्कृत कालेज के पंडित रामजसन मिश्र ने 'बाँचने की सुगमता के लिये पदों को अलग अलग करके भाषा की चाल पर कई पुस्तकों से शोधकर तुलसीदासकृत रामायण' की प्रति तैयार की जो पहली बार संवत् १९२५ तदनुसार सन् १८६८ में लाजरस साहेब के मेडिकल हाल प्रेस काशी में छपी और दूसरी बार चंद्रप्रभा छापाखाना बनारस में संवत् १९४० तदनुसार सन् १८८३ में छपी थी। इसके अंत में कठिन शब्दों के अर्थ तथा इतिहास आदि भी दिए गए हैं। इसका पाठ यथेष्ट शुद्ध है पर शब्दों का शुद्ध संस्कृतरूप मिलता है[1]। इसमें दो स्थलों (रावण जन्म बालकांड में और कुछ आरण्यकांड में) के अतिरिक्त अन्यत्र क्षेपक भी नहीं है। समयानुसार यह टाइप में सुंदर छपी थी और तब के जमाने में इसका मूल्य चार रुपये रखा गया था।

रामचरितमानस का यथेष्ट भाग काशी में रचा गया था और इसका प्रचार तथा पठनपाठन यों तो सभी जगह है, पर अयोध्या और काशी में विशेष रूप से है। रामायण के यही दोनों मुख्य केंद्र हैं। इनमें "को बड़ छोट कहत अपराधू" है, पर इतना तो अवश्य है कि संवत् १९२५ से लेकर सं० १९५० तक रामचरितमानस के प्रचार का स्वर्णयुग था जिसमें सिद्धपीठ काशी उसकी जगमगाती हुई राजधानी थी। तत्कालीन काशिराज महाराज ईश्वरीप्रसाद नारायण सिंहजी उसके प्रधान संरक्षक थे और उनके नवरत्नों में एक से एक बढ़कर रामचरितमानस के प्रेमी तथा जानकार लोग थे। जनता भी अपने श्रेष्ठ पुरुषों के अनुरूप आचरण करती थी। छोटे से लेकर बड़े तक सभी मानस के प्रेमी थे। लोग कथा सुनने में प्रेम रखते थे। कोसों चलकर लोग कथा सुनने जाते थे। जीवन भर के परिश्रम को

१—'सबसे भारी साहस मिश्रजी का यह है कि इन्होंने ग्रंथकार की भाषा ही बदल दी अर्थात् उस समय की प्रचलित भाषा के शब्दों के स्थान पर संस्कृत व्याकरण की रीति से शोधकर संस्कृत शब्द रख दिया है।...इसी प्रकार इन्होंने पद्मावत को भी शोधा है।'

(ग्रियर्सन साहब की प्रति के उपक्रम से उद्धृत पृ० २)

सफल करने के लिये लोग कथा कहते तथा जीवन सफल करने के लिये लोग सुनते थे। पाँच पाँच सौ रुपये देकर[1] रामायण की कथा की टिप्पणी ली जाती थी। एक एक गिनी चढ़ाकर 'श्रीरामायणजी' भक्तों के घरों में पधराए (खरीदे नहीं) जाते थे। सैकड़ों रुपये देकर रामायण लिखवाया जाता था। और जिस प्रकार बौद्धकालीन सुंदर सुंदर मूर्तियों के मूर्तिकार केवल मजदूरी के लिये नहीं वरन् स्वयं बौद्ध होकर और बुद्ध बनकर टाँकी चलाते थे, उसी प्रकार रामायण के लेखक भी तुलसीदासजी की आत्मा में रमकर अपनी कलम उठाते थे। अक्षरों का आदि से अंत तक समान तथा एक रूप से निर्वाह होता था। देखने से मालूम होता है कि लेखक को कलम के खत के न बिगड़ने का कोई वरदान था।

और बीच बीच की लिखी हुई तस्वीरें! उनका तो कहना ही क्या। किसी किसी प्रति में तो ऐसी रंगसाजी की गई है कि देखकर आश्चर्य होता है। यह आश्चर्य अपनी चरम सीमा पर पहुँचता है जब संयोगवश रामनगर में काशिराज की प्रति देखने का अवसर प्राप्त होता है जो उस जमाने में १,६०,०००) व्यय करके तैयार कराई गई थी।[2] ऐसा था, वह स्वर्णयुग।

इस युग में मूल रामचरितमानस के शुद्ध पाठ के अनुसंधान तथा निर्णय पर बहुत जोर दिया गया था। पाठ शुद्ध करनेवालों में काशी—महल्ला छोटी पियरी—के बाबू भागवतदास जी छत्री का नाम अग्रगण्य है। इन्होंने बहुत बड़ा काम किया है और आज भी लोग इनकी प्रति को प्रमाण मानते

१—चोरघाट, काशी के परमहंसजी ने ५००) देकर पं० रामगुलाम द्विवेदी की कथा की टिप्पणी, जो एक कायस्थ ने कइथी अक्षरों में लिखी थी, मोल ली थी।

२—इस प्रति के तैयार करने में (१) भोला राम अहीर; (राजमंदिर); (२) विश्वेश्वर अहीर (बड़े) (शांतिकेश्वर महादेव); (३) विश्वेश्वर अहीर (छोटे) बासफाटक; (४) मियाँ ······(बजरडीहा); (५) मिश्री लाल (रेवड़ी तालाब); (६) महेश्वर प्रसाद मोची (रेवड़ी तालाब); (७) माधो प्रसाद बढ़ई (रामनगर) (८) महादेव रंगसाज (रामनगर), (९) चुन्नी कहार (हड़हा) - इन लोगों से २) से ३) रोजाना मजूरी, तथा खाना, कपड़ा, निवास देकर ५ वर्ष में तैयार कराया गया था। यह सूचना छागुड़ कोहार [८५ वर्ष] महल्ला नवापुरा, काशी से श्री हरीदास जी द्वारा १६. ७. ४५ को मिली।

हैं। जिस समय बाबू भागवतदास जी प्राचीन पोथियों का मिलान कर पाठ-शुद्धि का काम कर रहे थे उसी समय काशी में एक बाबा रघुनाथदास जी रहते थे। उनके पास एक हस्तलिखित प्रति थी। पता नहीं वह किसकी और किस काल की लिखी हुई थी पर यह बाबा रघुनाथदास जी की प्रति कहलाती थी। संभव है, उसका लेखक कोई दूसरा रहा हो और बाबाजी ने उसे शोधकर अपने पाठ की पोथी बनाई हो।

इस पोथी का पाठ लेकर सर्वप्रथम संवत् १६२६ में बाबू दुर्गाप्रसाद कटारे के गणेश यंत्रालय में एक साँची पत्रों में[1] और एक पुस्तक के आकार[2] में मानस की प्रति निकली थी। दोनों देशी कागज पर लीथो में सुंदर बड़े बड़े अक्षरों में छपी थीं। भेद इतना था कि साँचीवाली प्रति में चित्र नहीं थे और पुस्तकाकार प्रति में बहुत से सुंदर चित्र थे। इस पुस्तकाकार प्रति का द्वितीय संस्करण संवत् १८३३ मिति पौष शुक्ल १२ में हुआ था[3]।

इसके बाद संवत् १६३६ में यह बाबा रघुनाथदासवाली प्रति फिर साँची पत्रा में शिवचरन के दिवाकर छापेखाने महल्ला भदैनी, काशी में छपी[4]।

१—मुखपृष्ठ—"श्री काशीजी में महल्ला घुघुराना सामा की गली श्रीयुत बाबू हरषचंदजी के बाड़े में दुर्गाप्रसाद कटारे के गणेश यंत्रालय में श्री तुलसी-कृत रामायन श्री बाबा रघुनाथदास की सवत् (सम्मति) से साँची में अति परिश्रम ते सोधि के छापा गया। लिखा देवीप्रसाद तिवारी और सीताराम मिश्र छापनेवाला गोपाल जिसको लेना होय उसे कुंजगली के पश्चिम फाटक पर दुर्गाप्रसाद के दूकान में मिलैगा।"

संवत् १६२६ मि० पौष शुक्ल ५ शुक्रवार।

२—दे० ऊपर की टिप्पणी नं० १। यह प्रति सचित्र है।

संवत् १६२६ मि० चैत्र कृष्ण १२ चंद्रवार।

साइज ११३/४"×६"। साइज ९"×९"। पृष्ठ-संख्या—बालकांड १४५; अयोध्याकांड ११२; आरण्यकांड २६, किष्किंधाकांड १५; सुंदरकांड २५; लंकाकांड ६०; उत्तरकांड ५२।

३—कालिका गली काशी के पं० रत्नचंद्रजी मिश्र से पता लगा है कि यह द्वितीय संस्करण मान मंदिर के पंडित तुलारामजी आचार्य ने धर्मार्थ वितरण के लिए छपवाया था।

४—मुखपृष्ठ—"श्री काशी विश्वनाथ पुरी में दिवाकर छापेखाने में तुलसी-कृत रामायण श्री रघुनाथदास बाबाजी की संबत् से साँची में अति परिश्रम तें

शिवचरन ने एक पुस्तकाकार प्रति[1] अपने दिवाकर छापेखाने से संवत् १६४० में छपवाई थी। और, उसी संवत् में, गणेश यंत्रालयवाली साँची प्रति की द्वितीय आवृत्ति[2] भी हुई थी।

ये छः प्रतियाँ—तीन पुस्तकाकार और तीन साँची पत्रा में—बाबा रघुनाथदास की प्रति से मिलाकर छपी थीं। इनका पाठ बहुत अच्छा है और अक्षर भी मोती से चुन चुनकर पं० देवीप्रसाद तिवारी और पं० महीपनारायण पांडे के लिखे हैं। ये सब मजबूत देशी कागज पर लीथो में छपी थीं। इनमें क्षेपक नहीं है।

अब तक बाबू भागवतदास जी ने अपना पाठ मिला लिया था और उनकी प्रति[3] सर्वप्रथम संवत् १६४२ में बाबू विश्वेश्वरप्रसाद के सरस्वती

सोध के छापा गया शिवचरन के यहाँ साकिन महल्ला भदैनी कालीमहल के पास। बा० महीप नारायन पांडे, छापनेवाले बदलजी जिस को लेना होय सो चाननी चौक में कुंजगली के पास शिवचरन के दुकान पर मिलैगा। सोधने-वाले बटुक जी पंडित।"

संवत् १६२६ मि० भाद्रपद शुक्ल १५.

पृष्ठसंख्या—बालकांड ११४; अयोध्याकांड ६२; आरण्यकांड २०; किष्किंधाकांड ११; सुंदरकांड १८; लंकाकांड ४५; उत्तरकांड ४६।

१—प्रायः टिप्पणी नं०२के सदृश। सं०१६४० मि०जेष्ठ शुक्ल ६ गुरुवार।

साइज़ १०"×६½"। पृष्ठसंख्या—बालकांड १८६, अयोध्याकांड १४४, आरण्यकांड ३५, किष्किंधाकांड १६, सुंदरकांड २२, लंकाकांड ७६, उत्तर-कांड ७७।

२—दे० पृष्ठ २८४ की पहली टिप्पणी। इसमें लिखनेवाला तो सीताराम मिश्र है और छापनेवाला बुरविन।

संवत् १६४० मि० चैत्र कृष्ण ३ चंद्रवार।

३—मुखपृष्ठ—"श्री काशीजी में महल्ला दीनानाथ के गोला के दक्षिण फाटक के पास जालपा देवी के सामने गनेस महेस साहु के बाड़े में सरस्वती यंत्रालय में बाबू बिसेसरप्रसाद के यहाँ श्री रामकृपा तें गोस्वामी तुलसीदास-कृत मानस रामायण को श्री पंडित रामगुलाम मिरजापुर निवासी ने १७१४ के संवत् की लिखी पुस्तक से लिखा उस पर से लाला छकनलाल मिरजापुरवासी-ने लिखा और श्री काशीजी में छोटी पियरी पर भागवतदास छत्री के पास १७२१ के संवत् की लिखी पुस्तक और दो पोथी १७६२ के संवत् की लिखी मिली। इन सबों से सोधकर यह पुस्तक छापी गई। जिसको कहीं पाठ में भ्रम होय सो बिना जाने बिगारै नहीं। जिसको लेना होय चाननी चौक में

यंत्रालय में देशी कागज पर लीथो में छपी थी। यहीं सं० १६४३ में भागवत दास जी ने अन्य ग्यारह ग्रंथ भी छपवाए थे। यह प्रति गोलावाली प्रति के नाम से प्रसिद्ध है। इसकी शुद्धता के विषय में कुछ कहना ही नहीं। बस, यह मालूम हो जाने पर कि यह बाबू भागवतदास की प्रति है, रामचरितमानस के जानकार लोग लहालोट हो जाते हैं। बाबू भागवतदास जी को भी पाठ की शुद्धता पर इतना जबरदस्त दावा था कि उन्होंने मुखपृष्ठ पर लिखा है—"जिसको कहीं पाठ में भ्रम होय सो बिना जाने बिगारै नहीं...।"

इसका पाठ बहुत ही प्रामाणिक और सुंदर है। सभी लोग इस बात को मानते हैं। इसमें कई जगह चित्र भी दिए गए हैं और पुस्तक के अंत में शुद्धिपत्र तथा 'रामायन जी की आरती' दी हुई है।

इस प्रति का पाठ लेकर कितने ही लेखकों ने हाथ से पूरा मानस लिखा था,[1] और इसी का पाठ लेकर विक्टोरिया प्रेस बनारस से एक सं० १६४४ में पुस्तकाकार, और दूसरा संवत् १६४५ में गुटका[2] आकार में, मानस के दो बहुत ही शुद्ध संस्करण निकले थे।

आगे चलकर सं० १६५१ में सोनारपुरा के पं० रामप्रसाद तिवारी ने केदार प्रभाकर छापेखाने में कुछ मटमैले बादामी कागज पर सं० १६४२ की

कुंज गली के पश्चिम फाटक के पास बाबू बिसेसर प्रसाद के दुकान पर मिलैगी। संवत् १६४२ मि० कार्तिक बदी ३०।"

साइज १०"×६½"। पृष्ठसंख्या—बालकांड १७०; अयोध्याकांड १३४; आरण्यकांड ५३; किष्किंधाकांड १६; सुंदरकांड ३२; लंकाकांड ७६; उत्तरकांड ७६।

१—अकेले बाबू देवीप्रसाद खत्री, पथरगलिया, काशी, ने ४ प्रति रामायण जी की लिखी हैं, जिनमें तीन को लेखक ने भी देखा है।

२—मुखपृष्ठ—रामायण श्री गोस्वामी तुलसीदास जी कृत जिसको अत्यंत परिश्रम के साथ प्राचीन पुस्तकों से मिलाकर ठाकुर विष्णुदत्त गुजराती सहस्रौदीच्य ब्राह्मण ने भलीभाँति शुद्ध करके मुंबई अक्षरों में विक्टोरिया प्रेस में छापा। संवत् १६४५ सावन कृ० १०।

साइज १०½"×६½"। पृष्ठसंख्या—बालकांड १६२; अयोध्याकांड ११६; आरण्यकांड ३९; किष्किंधाकांड १६; सुंदरकांड ३३; लंकाकांड ८०; उत्तरकांड ८४।

प्रति का द्वितीय संस्करण छपवाया। कागज खराब होने से यह प्रति बहुत जल्दी जीर्ण शीर्ण हो गई। बहुत कम लोगों के पास यह सं० १६५१ की प्रति[1] ठीक दशा में है।

भागवतदास जी की प्रति अब तो अप्राप्य है। इस प्रति की मोटी पहचान नीचे दी जाती है—

(१) और कांडों की तरह अयोध्या कांड में "इति" नहीं है।

(२) आरण्य कांड में ६ठे दोहे के बादवाले दोहे का अंक ७ न होकर फिर एक से शुरू होता है।

(३) लंका कांड में 'लव निमेष परिमान युग...' वाला दोहा श्लोक के पहले दिया गया है। ऐसा क्रम भागवतदास के पहले अन्य किसी प्रति में नहीं मिलता।[2]

भागवतदास जी का रामचरितमानस छपने के बाद जितने लोगों ने शुद्ध पाठवाली प्रति निकालने का प्रयत्न किया उन्होंने पाठ में तथा आकार-प्रकार में इसी संस्करण की नकल की है। काशी से ऐसी ५ प्रतियाँ 'लीथो'

१—मुखपृष्ठ—"रामचरितमानस श्री रामकृपा तें गोस्वामी तुलसीदासकृत मानसरामायण को श्री पंडित रामगुलाम मिरजापुर निवासी ने १७१४ संवत् की लिखी पुस्तक से लिखा उस पर से लाला छक्कनलाल मिरजापुरवासी ने लिखा और श्री काशीजी में छोटी पियरी पर भागवतदास छत्री के पास १७२१ के संवत् की लिखी पुस्तक औ दो पोथी १७६२ के संवत् की लिखी मिली। इन सबों को सोधकर महल्ला दीनानाथ के गोला में बाबू विश्वेश्वरप्रसाद के यहाँ छपा रहा सो कहीं कहीं पाठ में भ्रम हो गया था सो उसको फिर से भागवतदास छत्री ने सोधकर दुरुस्त किया सो श्री काशी जी महल्ला सोनारपुरा में रामप्रसाद तिवारी के केदार प्रभाकर छापेखाने में शुद्धतापूर्वक छापा गया। जिसको लेना होय सो चाननी चौक में रामप्रसाद तेवारी के दुकान पर मिलैगा अथवा मुन्नीलाल बुकसेलर के पास मिलैगा।"

मि० पूस सुदी ८ संवत् १९५१।

पृष्ठसंख्या—उतनी ही जितनी कि सं० १९४२ वाली प्रति में है।

२—लेखक ने सिर्फ दो प्रतियों में एक सं० १७६२ और एक १८१७ संवत् की हस्तलिखित प्रति में यह क्रम देखा है।

में छपी थीं जो सर्वथा शुद्ध और देखने में बिलकुल भागवतदास जी की प्रति ऐसी मालूम पड़ती हैं।

१—एक सं० १६४६ में[1] बाबू कालूराम के संस्कृत मुद्रायंत्र में छपी।

२—दूसरी प्रति स० १६४८ में बाबू मुन्नीलालजी के प्रयत्न से गौरीशंकर यंत्रालय, महल्ला बाग हाड़ा काशी में छपी[2]।

१—मुखपृष्ठ—'अथ रामायण— श्रीमत्स्वामी तुलसीदासकृत हरिजन वो हरिभक्त सर्वज्ञ लोगों पर विदित हो कि यह मानस रामायण तुलसीदासकृत कई जगह कई मरतबे छपि चुकी परंतु जथार्थ शुद्धता न हुई सो यह रामायण सप्त कांड श्री बाबा रघुनाथदास वो बाबा रामचरणदास, वो परम भक्त भागवतदास वो श्रीमन्महाराजाधिराज काशिराज बहादुर की प्राचीन लिखी हुई प्रतियाँ से वो कई जगह की छपी हुई पुस्तकें अर्थात् बंबई वो आगरा काशी आदि की हुई पुस्तकें से बहुत प्रेम के साथ हरिभक्तों के कल्याण हेतु शुद्ध कर छापि गई। कासी संस्कृत मुद्रायंत्र में बाबू कालूराम के छापाखाना में छापा। श्रावण शुक्ल ५ रविवार सं० १६४६।

साइज १०"×६½" । पृष्ठसंख्या—बालकांड १७०; अयोध्याकांड १३९; आरण्यकांड ३९; किष्किंधाकांड १६; सुंदरकांड ३२; लंकाकांड ७२; उत्तर-कांड ७७।

२—मुखपृष्ठ—अथ रामायण तुलसीकृत प्रारंभ—श्रीगणेशाय नमः।

श्रीरामाभ्यां नमः। इस भारत खंड में मनुष्य शरीर लेने के फल केवल एक सीतारामजी की प्राप्ति है, तिसका साधन इस महाघोर कलिकाल में कोई नहीं है इस वास्ते बड़भागी लोगन को जनाई जाती है कि अपने आत्मा और अपने कुल के पवित्र करने की इच्छा होय तो श्री गोस्वामी तुलसीदास कृत रामायण के अवलोकन करो। इसी में आप लोगों के लोक वो परलोक का सुख प्राप्त होगा सो इस समय में तुलसीकृत रामायण का पाठ बहुत तरह का संसार में फैल गया है परंतु श्री पंडित बंदन पाठकजी के पुस्तक का पाठ शुद्ध शुद्ध अभी तक कोई छापेखाने में नहीं छपा है। जैसा पाठकजी रामयण के पाठ महाराज रामवल्लभशरणजी के पढ़ाया था और अपना पाठ लिखा दिया था सो अबहीं श्री काशीजी में रामकुंड पर प्रगट है सोई पाठ श्री बाबा जानकी-वल्लभसरनजी की आज्ञानुसार मुन्नीलाल ने बहुत शुद्धता से छपाया है जिसके अत्तर के संख्या भी गिनी गई है ३११६८० अत्तर भया है तिसके श्लोक

३—तीसरी सं० १९४६ मि० ज्येष्ठ सुदी ६ को छपी। यह सं० १९४६ वाली प्रति का द्वितीय संस्करण है।

४—चौथी प्रति सं० १९४९ में पं० कन्हैयालाल मिश्र के सुधानिवास यंत्रालय, बुलानाला काशी में छपी[1]। इसका नाम "रामायण पदार्थ टीका सहित" है। टीका नाम मात्र की है। छोटेलालजी व्यास ने इसमें पं० वंदन पाठक जी का तथा कुछ अपना टिप्पन दिया था। इस प्रति में तथा सं० १९४८ की प्रति में, दोनों में वंदन पाठक जी का पाठ स्वीकार किया गया है।

९९९० गिनती में हैं तत्र प्रमाण 'नव हजार नव सै नवे तुलसीकृत विस्तार। अष्टादश षट चारि को सब ग्रंथन को सार॥' अगर जो किसी को प्रतीति न हो कि पाठकजी की पुस्तक का पाठ यह छपा है तो पाठकजी के हस्तकमल के लिखी पुस्तक श्री अजोध्याजी में कनकभवन में प्रगट है जिसको मिलान करना होय सो कर लेवैं श्री काशी विश्वनाथपुरी महल्ला कचौरी गल्ली में मुन्नीलाल के दुकान पर मिलैगा। गौरीशंकर यंत्रालय में छापा गया महल्ला बाग हाडा बिसेसर कारीगर ने छापा विसेश्वर लेखक ने लिखा श्री संवत १९४८ मि० माघ शुक्र २ रविवार।

साइज १०″×६½″। पृष्ठसंख्या—बालकांड १७०; अयोध्याकांड १३४; आरण्यकांड ३४; किष्किंधाकांड १८; सुंदरकांड ३०; लंकाकांड ७२; उत्तर-कांड ७२।

१—मुखपृष्ठ—अथ रामायण पदार्थ टीका सहित।

रिद्ध श्री गणेश जी सिद्ध

यह पुस्तक श्री रामायण पदार्थटीका श्री मानसी वंदन पाठकजी की हस्त-कमल की लिखी प्रतियों से सोधकर गद्दी पर वर्तमान श्रीयुत छोटेलाल जी की आज्ञानुसार औ श्री बाबा जानकीवल्लभशरन भागवतदास औ बाबा रघुनाथदास औ बाबा वल्लभशरण जी की संमति से अति शुद्धता से छापा गया। काशी विश्वनाथ सुधानिवास यत्रालय छापाखाना रामकुमार मिश्र के पुत्र कन्हैयालाल मिश्र के यहाँ मुद्रित भया। बाबू विशेशरदयाल छापनेवाला काडीगर गनेश। संवत १९४९ फाल्गुन सु० १९ गुरुवार।

पृष्ठसंख्या—बालकांड १९४; अजोध्याकांड १२०; आरण्यकांड ४०; किष्किंधाकांड २२; सुंदरकांड ३०; लंकाकांड ७८; उत्तरकांड ८४।

५—पाँचवीं प्रति साँची पत्रा में सत्यनारायण यंत्रालय, मानमंदिर बनारस में, लीथो में, छपी थी।

इन पाँचों प्रतियों का पाठ बहुत दिव्य और शुद्ध है। इन सबमें भागवतदास की प्रति की छाया पाई जाती है।

ये सब काशी के उस स्वर्णयुग के कीर्तिस्तंभ हैं जो काल के प्रभाव से अब प्रायः लुप्त से हो रहे हैं। दूसरी जगहों में रामायण के प्रकाशन का जो कार्य हुआ उनमें खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर का "मानस रामायण" अद्वितीय है। उस पुस्तक को देखकर श्रीमान् ग्रियर्सन साहब के प्रेम और परिश्रम की जितनी प्रशंसा की जाय, तथा अपने को जितना लज्जित किया जाय, थोड़ा है। बड़े बड़े सुंदर अक्षरों में छपी ऐसी प्रशस्त प्रति देखकर तबीयत प्रसन्न हो जाती है। यह[1] संवत् १९४६ तदनुसार १८८९ में छपी थी। बरसों परिश्रम करके, रामचरितमानस की जितनी भी छपी[2] या लिखी प्रतियाँ मिल सकीं उन सबों को मँगाकर देखने और आपस में मिलान करने के बाद, इसे ग्रियर्सन साहब ने छपवाया था। अंगद के प्रण—

तेहि समाज कियो कठिन पन जेहि तौल्यो कैलास।
तुलसी प्रभु महिमा कहौं, सेवक को बिस्वास॥

की तरह समझ में नहीं आता कि गोस्वामी जी के मानस की प्रशंसा की जाय या ग्रियर्सन साहब के मन की। मैं तो ग्रियर्सन साहब को ही बधाई

१—मुखपृष्ठ—श्रीयुत गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस जिसको परम परिश्रम से श्री तुलसीदास जी की हस्तलिपि से मिला तथा शोध करके मान्यवर सर स्टुअर्ट काल्विन वेली साहेब बहादुर के० सी० आई० ई० लेफ्टिनेंट गवर्नर बंगाल की आज्ञा से रामदीन सिंह ने प्रकाशित किया।

पटना खड्गविलास प्रेस, सन् १८८९ (= सं० १९४६)।

साइज १३½″×१०½″। पृष्ठसंख्या—बालकांड ११५, अयोध्याकांड १२८; आरण्यकांड ३६; किष्किंधाकांड १६; सुंदरकांड २७; लंकाकांड ६४, उत्तरकांड ६९।

२—सन् १८८९ तक बाबू रामदीन सिंह का कहना है कि······रामायण की १२६ प्रति अनेक सुजनों द्वारा मुद्रित हुई थीं।

दूँगा जिन्होंने हम लोगों को जवाहिर में काँच न मिलाने का उपदेश दिया है। 'इस रामचरितमानस में ग्रंथकार के लेखानुसार मक्षिका स्थाने मक्षिका रखी गई है। कल्पना से काम नहीं लिया गया है।' वास्तव में भूमिका के ये शब्द इसकी अच्छाई के प्रमाणपत्र हैं।

संवत् १९५२ में कोदोरामजी की रामायण वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई में छपी। इसका पाठ भी सर्वथा शुद्ध और प्रामाणिक माना जाता है। कोदोरामजी ने ग्रंथकार के समय से जो परंपरागत शिष्य हुए उनका इस प्रकार वर्णन मानसमयंक से उद्धृत किया है—

> **ब्रह्म किशोरीदत्त** को ग्रंथकार ही दीन्ह।
> **अलपदत्त** पढ़ि ताहि सों चित्रकूट मो लीन्ह॥
> **रामप्रसादहिं** सो दई लहि तातें **शिवलाल**।
> **दत्तफणीशहि** जानि निज सो दीन्ही सुखमाल॥

इसी परिपाटी के अनुकूल रामचरितमानस की ४ प्रतियाँ लिखी गईं। प्रथम श्रीमद्गोस्वामी जू के करकमल की लिखी प्रति से श्री किशोरीदत्तजी ने पढ़ा। अलपदत्तजी ने दूसरी प्रति अपने शिष्य रामप्रसादजी को दी। शिवलाल पाठक ने तीसरी प्रति कराई। पं० शेषदत्तजी ने सं० १९०१ में चौथी प्रति जीवलाल नामक लेखक से लिखाई। इसी चौथी प्रति का पाठ लेकर केशरिया ग्राम जिला चम्पारन निवासी कोदोरामजी ने अपनी पोथी छपवाई थी।

कोदोरामजी की प्रति बड़े बड़े अक्षरों में नवाह्निक पाठविधि तथा अनेक प्रयोगों समेत छपी थी। इसके अयोध्याकांड का नाम 'अवधकांड', आरण्यकांड का नाम 'वनकांड', सुंदरकांड का नाम 'सुमेरकांड' तथा लंकाकांड का नाम 'युद्धकांड' रखा गया था। कोदोरामजी को 'मानस-मयंक' के रचयिता के ये वाक्य प्रिय थे और उन्होंने अपनी पुस्तक में क्षेपक नहीं मिलाया है—

> लली पूर्वसंकल्प को रस मुनि बीचे जान।
> अधिक मिलाये हैं अधम करिहैं नरक पयान॥
> अनल काम अहि क्रोध है लोभहि बिच्छू जान।
> पाठ फेर जे करतु हैं ते शठ नरक समान॥

इतना होने पर भी अयोध्याकांड में 'चार चौपाई के बाद दोहा' वाले नियमपालन में कोदोरामजी ने अयोध्या कांड के दोहा नंबर ७,६२,१७२,१८४,२७८ के बाद दो दो अर्धाली बढ़ाकर सात सात पंक्तियों को आठ आठ किया है। इसी तरह दोहा नंबर २८ और २०१ के बाद दो दो अर्धालियाँ घटाकर नव नव पंक्तियों को आठ आठ किया है।

यह सब होते हुए भी पोथी अच्छी और प्रामाणिक है। इनका गुटका भी छपा था जिसकी नकल इलाहाबाद और काशी ने की।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा के पाँच सभासदों ने सं० १९६० (सन् १९०३ ई०) में 'रामचरितमानस' का बड़ा सुंदर संस्करण छपवाया था। यह इंडियन प्रेस, प्रयाग में छपा था। सुंदर बड़े बड़े अक्षर, बड़ा आकार, बीच बीच में प्रायः अस्सी चित्र[1] देखकर चित्त प्रसन्न हो जाता है। वास्तव में रामायण छपे तो ऐसी। कोशिश तो शुद्ध पाठ देने की की गई थी पर जैसा कुछ चाहिए, हो न सका। फिर भी पुस्तक की सुंदरता को देखकर यह पाठदोष छिप सा जाता है।

आगे चलकर इसी पाठ को लेकर इंडियन प्रेस, प्रयाग ने, साधारण अक्षरों में एक छोटा 'रामचरितमानस' छापा था।

संवत् १९८० में गोस्वामीजी की त्रिशत जयंती के अवसर पर काशी-नागरीप्रचारिणी सभा से 'तुलसी ग्रंथावली' प्रकाशित हुई थी। इसके प्रथम भाग में 'रामचरितमानस' है। पुस्तक के अंत में कथाभाग है जिसमें रामायण में आए हुए पौराणिक पुरुषों की कथा है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह प्रति अवसर के अनुरूप नहीं हुई।

अयोध्या के महंत लोगों की दो सुंदर प्रतियाँ छपीं। एक तो बाबा माधवदास की प्रति का पाठ लेकर देशोपकारक प्रेस लखनऊ से सन् १९१२ में छपी थी। दूसरी बाबा सरयूदासजी ने बनारस में बैजनाथप्रसाद बुकसेलर राजा दरवाजा के यहाँ सं० १९८२ में छपवाई थी। बाबा सरयूदासजी की प्रति छोटे अक्षरों में, गुटका रूप में भी, छपी थी। इन दोनों का पाठ अच्छा है।

'रामचरितमानस' का स्वर्गीय श्री रामदासजी गौड़वाला संस्करण हिंदी पुस्तक एजेंसी कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था। इसका पाठ प्रायः अच्छा है

१—ये चित्र काशिराज की प्रति के कुछ चित्रों के फोटो थे।

और सस्ते संस्करणों में यह सबसे अच्छी पुस्तक है। गौड़जी रामायण के अनन्य प्रेमी थे, उन्होंने काफी समय देकर रामचरितमानस का अध्ययन किया था। उनके पास एक प्रति थी जिसे वे भागवतदासवाली प्रति कहते थे और उसी का पाठ उन्होंने अपनी पुस्तक में रखा है।

श्री बजरंगबली विशारद ने एक रामचरितमानस सं० १९९३ में अपने सीताराम प्रेस से निकाला है। यह सर्वथा शुद्ध तो नहीं है, फिर भी अच्छा है। इसमें बालकांड का पाठ श्रावण कुंज की प्रति, अयोध्याकांड का पाठ राजापुर की प्रति एवं शेष पाँच कांडों का पाठ सद्गुरुसदन गोलाघाट की प्रति के अनुसार दिया गया है। इसका टाइप गौड़जी की प्रति से मोटा है।

पंडित विजयानंदजी त्रिपाठी का 'रामचरितमानस,' जो सं० १९९३ में लीडर प्रेस से निकला है, उत्तम है।[1] त्रिपाठीजी ने अपने जीवन भर का परिश्रम, यह प्रति निकालकर, सफल कर दिया। इस प्रति की विशेषता यह है कि यह सुंदर आकारप्रकार में अच्छे कागज पर, काफी मोटे अक्षरों में, प्रायः शुद्ध छपी है। इसमें पाठभेद खूब दिए गए हैं और उन पाठभेदों की संकेत प्रति का नाम भी दे दिया गया है। अन्य संस्करणों[2] में भी पाठ-भेद का संकेत दिया गया है पर इतना विशद नहीं। चाहे कुछ त्रुटि भले ही हो पर ऐसे खोज के काम के लिये त्रिपाठीजी धन्यवाद के पात्र हैं। भागवत-दासजी के संस्करण की नाईं आपने भी रामायणयुग में एक साका कर दिया है।

(२) संपूर्ण रामचरितमानस की टीका

रामचरितमानस की प्रतिष्ठित टीकाओं का जिक्र बाबा औसानदास ने अपने गुरु श्रीमहाराज स्वर्गीय बाबा हरीदासजी कृत 'शीलावृत्ति टीका' के द्वितीय संस्करण में इस प्रकार किया है—

१—इसका नवीन संस्करण टीका सहित मोतीलाल बनारसीदास के यहाँ से हुआ है।

२—इंडियन प्रेस, प्रयाग से सन् १९०३ में प्रकाशित रामचरितमानस तथा गौड़ जी का संस्करण।

'महाराज स्वामी श्रीरामचरण औध माहिं,
कीन्हे रामायण को तिलक सो अनूप है।
दूसर श्रीरामबकस तीसर पंजाबी कही,
चौथे हरिहरप्रसाद कीन्हेउ सो खूब है।'

ये चारों टीकाएँ देखने में आती हैं पर कोदोरामजी के रामचरितमानस की भूमिका में जिन तीन सांप्रदायिक टीकाओं का उल्लेख है वे नहीं दिखलाई पड़तीं। वे क्रमशः नीचे लिखी हैं—

(१) ब्रह्मकिशोरीदत्तजी कृत 'मानससुबोधिनी'।
(२) अल्पदत्तजी योगींद्र कृत 'मानसकल्लोलिनी'।
(३) श्रीरामप्रसादजी कृत 'मानस-रस-बिहारिणी'।

रामचरणदास कृत टीका एक बृहत्, शास्त्रीय प्रमाणों से युक्त, विद्वत्ता-पूर्ण टीका है। इसकी भाषा पुरानी हिंदी है। बालकांड तथा उत्तरकांड विशद रूप से लिखे गए हैं। अन्य कांडों में उतनी बातें नहीं कही गई हैं। कहीं कहीं पर, जहाँ साधारण वार्ता है, टीकाकार ने कुछ भी नहीं लिखा है। यह टीका अयोध्या के सांप्रदायिक मत के अनुकूल है; साधारण जनता के काम की चीज नहीं है। सन् १९२४ ई० तक इसकी तीन आवृत्तियाँ नवल-किशोर प्रेस, लखनऊ से हो चुकी थीं। पहले सन् १८८२ ई० में यह साची पत्रे में निकली थी। इसका मूलपाठ ठीक नहीं है और क्षेपक भी यथा-स्थान खूब है। शब्दों का शुद्ध संस्कृत रूप मिलता है।

पंडित रामबकस पांडे की 'भावप्रकाशिका टीका', मुंशी सदासुखलाल के अहतमाम से निर्मित होकर, प्रयाग के बुद्धिसागर छापेखाने (नूरलबसार प्रेस) से तीन बार निकली थी। पहली बार सन् १८६९ ई० में, दूसरी बार सन् १८७५ ई० में, तीसरी बार सन् १८८५ ई० में। इसका निर्माण-काल पुस्तक के अंत में इस प्रकार दिया गया है—

'उनइस सौ पचीस संवत माघ एकादशी।
पूर कियो प्रभु ईश रामायण टीका सहित॥'

पांडेजी के भाव बड़े अनूठे हैं। टीका तो कहीं कहीं पर है, पर जहाँ है वहाँ खूब है। इसमें समस्त चौपाइयों का अर्थ नहीं दिया गया है। साधारण

पढ़ेलिखे लोग भी इससे आनंद उठा सकते हैं। पर खेद है कि ऐसी अनूठी पुस्तकें लुप्त हुई चली जा रही हैं और उनका नवीन संस्करण तक नहीं होता। टीकाएँ निकलती हैं तो आज फलाने की, कल ढेमाके की; जिन्होंने ठीक ठीक जाना भी नहीं कि रामायण क्या वस्तु है।

संतसिंह जी पंजाबी का 'मानस भाव प्रकाश' एक अच्छा ग्रंथ है। यह खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर से सन् १६०१ में छपा था। इसमें संपूर्ण चौपाइयों की टीका दी गई है। लोगों का कहना है, और ठीक है, कि तुलसीदासजी के शब्दों को जितना पंजाबीजी ने पकड़ा उतना और किसी टीकाकार ने नहीं।

'रामायण-परिचर्या-परशिष्ट-प्रकाश' रामचरितमानस संबंधी साहित्य का एक अनुपम ग्रंथ है। यह संपूर्ण ग्रंथ खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर में सन् १८६८ ई० में छपा था। इसमें तीन टीकाकारों के तीन भिन्न भिन्न अर्थ दिए गये हैं—

'मानसपरिचर्या' (मा० प०) श्री १०८ देवतीर्थ स्वामी (काष्ठजिह्वा स्वामी)[1] का।

'मानसपरिचर्यापरिशिष्ट' (मा० प० प०) श्रीमन्महाराज द्विजराज काशिराज ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह बहादुर कृत।

---

१ काष्ठजिह्वा स्वामी—काशिराज श्रीमन्महाराज ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह के समकालीन एक पहुँचे हुए महात्मा थे। ये संस्कृत के बड़े विद्वान थे और रामचरितमानस के अच्छे ज्ञाता थे। ये काशिराज के नवरत्नों में एक थे। एक बार एक पंडित देशदेशांतर में शास्त्रार्थ करता हुआ काशीजी आया। उसका प्रण था कि यदि मैं शास्त्रार्थ में हार जाऊँगा तो प्राण विसर्जन कर दूँगा। संयोगवश देवतीर्थ स्वामी से उसकी भेंट हो गई और शास्त्रार्थ में हारकर उसने प्राण दे दिया। इस बात से स्वामीजी के हृदय में बड़ी चोट लगी। उन्होंने विचार किया कि यह जिह्वा ही का दोष है। इसी की वजह से ब्रह्महत्या हुई। तभी से वे अपने मुँह में काठ की जिह्वा की खोली रखे रहते थे। इसी कारण उनका नाम काष्ठ-जिह्वा स्वामी पड़ा। इन्होंने कई एक ग्रंथ लिखे थे जिनमें भक्तिरस छलकता हुआ मिलता है। कबीरदास की वाणी की तरह इनके पद भी हृदय में चुभ कर घर कर जाते हैं। पर काल की करालता से इनके ग्रंथ लुप्त हो रहे हैं।

'मानस-परिचर्या-परिशिष्ट-प्रकाश' (मा० प० प० प्र०) परमहंस-मान-हंसावतंस श्रीजानकीरमण-चरण-सरोरुह-राजहंस श्रीसीतारामीय हरिहर प्रसादजी कृत।

यह ग्रंथ विशेषकर श्रीसीतारामीय हरिहरप्रसादजी (जो कि काशिराज महाराज ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह के फुफेरे भाई थे) की प्रेरणा से तैयार हुआ था। उनके जीवनकाल में केवल दो कांड[1] (बालकांड और अयोध्याकांड) प्रकाशित हो सके थे। अंत समय में जब श्रीहरिहरप्रसादजी पछताने लगे कि रामायण जी की टीका भी पूरी न हो सकी तो काशिराज ने आश्वासन दिया कि 'मैं आपकी पद्धति के अनुसार संपूर्ण ग्रंथ की टीका करवाऊँगा' और उन्होंने वैसा ही किया।

बा० बैजनाथप्रसादजी कुर्मी, मौजा डेहवा मानपुर, नवाबगंज जिला बाराबंकी के रहनेवाले थे। ये परम भक्त और गोस्वामीजी के ग्रंथों के विचित्र मधुकर थे; आपने प्रायः सभी ग्रंथों को टीका लिखी है। रामायण की टीका एक बृहत् ग्रंथ है। इसमें रामायण का अर्थ खूब स्पष्ट करके समझाया गया है। भाव भी अच्छे अच्छे दिए गए हैं। पहले पहल यह टीका (बैजनाथीय टीका) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से सन् १८९० में प्रकाशित हुई थी।

बाबा हरीदासजी कृत शीलावृत्ति टीका लखनऊ में छपी थी। इसमें सब जगह अर्थ नहीं दिया है, कहीं कहीं पर भाव अच्छे हैं।

विनायकी टीका के लेखक श्री विनायकरावजी (उपनाम कवि नायक) थे। इनकी टीका पहले पहल जबलपुर, यूनियन प्रेस से सन् १९१५ में छपी थी। इसमें दोहे चौपाइयों का साधारण अर्थ दिया गया है; और जगह जगह, तुलसीदास जी के भाव से मिलते हुए अन्य कवियों के पद्य दिए गए हैं। प्रत्येक कांड के अंत में पुरौनी, काव्यलक्षण, गणविचार, पिंगल-विचार, भावभेद, रसभेद, कथा भाग तथा सुंदर सुंदर चौपाइयाँ दी गई हैं।

१—ये दो कांड सटीक पहले सन १८३५ ई० में बाबू अविनाशीलाल वो पं० गोपीनाथ पाठक के प्रबंध से 'आर्य यंत्रालय' काशी में छपे फिर उक्त सज्जनों के प्रबंध से, 'लाइट छापेखाने' में, जो दशाश्वमेध घाट पर था, छपे।

सं० १९३३ में बालकांड, सं० १९३५ में अयोध्याकांड, सं० १९३७ में आरण्यकांड, सं० १९४० में किष्किधाकांड छपा था।

मैनपुरनिवासी मुंशी सुखदेवलाल कृत 'मानहंसभूषण' संवत् १९२४ में लिखा गया था और सिवाय प्राचीनता के इसमें कोई उल्लेखनीय बात नहीं है। न तो पाठ ठीक और पूरा है[1] और न अर्थ ही साफ और संपूर्ण है। यह नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ में छपा था और सन् १८८६ तक इसका चतुर्थ संस्करण हो गया था। इसकी नवीनता यह है कि संपूर्ण रामायण में दोहों के बीच में ८ पंक्तियों का क्रम निबाहा गया है।

श्रीयुत शीतलासहायजी सावंत बी० ए०, एल्-एल० बी० का 'मानसपीयूष' रामायण पर एक बृहत् भाष्य है जिसमें प्रत्येक चौपाई और दोहे का जो कुछ भी अर्थ जिस किसी टीकाकार ने किया है वह संकलित किया गया है। मानस के भावों की यह एक सुंदर और विस्तृत सूची है। शीतलासहायजी का प्रयत्न यह रहा है कि रामायण के बारे में यह कहा जा सके कि 'यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्'। एक कायस्थ कुल में जन्म लेकर, उर्दूलिपि को छोड़ हिंदी का विशेष अभ्यास न होने पर भी, संत महात्माओं के पास जाकर उर्दू में रामचरितमानस के भाव को लिखना और सब प्रकार की रुकावट होते हुए संपूर्ण रामायण पर एक स्मारक ग्रंथ तैयार कर देना जनकसुताशरण ही का काम था। इन्होंने पाठ गौड़जी के संस्करण का रखा है और दोहे के अंक भी उसी के अनुकूल हैं।

अन्य भाषाओं में रामचरितमानस की जो टीकाएँ हुई हैं उनमें ग्राउस साहेब का अनुवाद एक प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है। सन् १८९१ तक इसका पंचम संस्करण छप चुका था। इसकी प्रामाणिकता का अंदाज इसी से किया जा सकता है कि लोग मूलपाठ का निर्णय तथा क्षेपकविचार यह देखकर करते हैं कि अमुक अंश ग्राउस साहेब के अनुवाद में आया है या नहीं।

उर्दूभाषांतर तथा अनुवाद नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से छपा है। गुजराती भाषांतर तथा अनुवाद शास्त्री छोटेलाल चंद्रशंकरजी ने सस्तुं साहित्य-वर्धक कार्यालय, अहमदाबाद से छपवाया था। सं० १९९० तक इसका पंचम संस्करण प्रकाशित हो चुका था।

१—'(मुंशीजी) ने चतुर्थांश के लगभग मूल चौपाइयों को निकाल दिया है। जहाँ जी में आया, नवीन चौपाइयाँ जोड़ दी हैं।'—रामदीनसिंह का उपक्रम, जो ग्रियर्सन साहबवाले संस्करण में दिया गया है।

'मानस-परिचर्या-परिशिष्ट-प्रकाश' (मा० प० प० प्र०) परमहंस-मान-हंसावतंस श्रीजानकीरमण-चरण-सरोरुह-राजहंस श्रीसीतारामीय हरिहर प्रसादजी कृत ।

यह ग्रंथ विशेषकर श्रीसीतारामीय हरिहरप्रसादजी (जो कि काशिराज महाराज ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह के फुफेरे भाई थे) की प्रेरणा से तैयार हुआ था । उनके जीवनकाल में केवल दो कांड[1] (बालकांड और अयोध्या-कांड) प्रकाशित हो सके थे । अंत समय में जब श्रीहरिहरप्रसादजी पछताने लगे कि रामायण जी की टीका भी पूरी न हो सकी तो काशिराज ने आश्वासन दिया कि 'मैं आपकी पद्धति के अनुसार संपूर्ण ग्रंथ की टीका करवाऊँगा' और उन्होंने वैसा ही किया ।

बा० बैजनाथप्रसादजी कुर्मी, मौजा डेहवा मानपुर, नवाबगंज जिला बाराबंकी के रहनेवाले थे । ये परम भक्त और गोस्वामीजी के ग्रंथों के विचित्र मधुकर थे; आपने प्रायः सभी ग्रंथों की टीका लिखी है । रामायण की टीका एक बृहत् ग्रंथ है । इसमें रामायण का अर्थ खूब स्पष्ट करके समझाया गया है । भाव भी अच्छे अच्छे दिए गए हैं । पहले पहल यह टीका (बैज-नाथीय टीका) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से सन् १८६० में प्रकाशित हुई थी ।

बाबा हरीदासजी कृत शीलावृत्ति टीका लखनऊ में छपी थी । इसमें सब जगह अर्थ नहीं दिया है, कहीं कहीं पर भाव अच्छे हैं ।

विनायकी टीका के लेखक श्री विनायकरावजी (उपनाम कवि नायक) थे । इनकी टीका पहले पहल जबलपुर, यूनियन प्रेस से सन् १६१५ में छपी थी । इसमें दोहे चौपाइयों का साधारण अर्थ दिया गया है; और जगह जगह, तुलसीदास जी के भाव से मिलते हुए अन्य कवियों के पद्य दिए गए हैं । प्रत्येक कांड के अंत में पुरौनी, काव्यलक्षण, गणविचार, पिंगल-विचार, भावभेद, रसभेद, कथा भाग तथा सुंदर सुंदर चौपाइयाँ दी गई हैं ।

१—ये दो कांड सटीक पहले सन् १८२९ ई० में बाबू अविनाशीलाल वो पं० गोपीनाथ पाठक के प्रबंध से 'आर्य यंत्रालय' काशी में छपे फिर उक्त सज्जनों के प्रबंध से, 'लाइट छापेखाने' में, जो दशाश्वमेध घाट पर था, छपे ।

सं० १६२२ में बालकांड, सं० १६२९ में अयोध्याकांड, सं० १६३७ में आरण्यकांड, सं० १९४० में किष्किधाकांड छपा था ।

मैनपुरनिवासी मुंशी सुखदेवलाल कृत 'मानहंसभूषण' संवत् १६२४ में लिखा गया था और सिवाय प्राचीनता के इसमें कोई उल्लेखनीय बात नहीं है। न तो पाठ ठीक और पूरा है[1] और न अर्थ ही साफ और संपूर्ण है। यह नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ में छपा था और सन् १८८६ तक इसका चतुर्थ संस्करण हो गया था। इसकी नवीनता यह है कि संपूर्ण रामायण में दोहों के बीच में ८ पंक्तियों का क्रम निबाहा गया है।

श्रीयुत शीतलासहायजी सावंत बी० ए०, एल् - एल० बी० का 'मानसपीयूष' रामायण पर एक बृहत् भाष्य है जिसमें प्रत्येक चौपाई और दोहे का जो कुछ भी अर्थ जिस किसी टीकाकार ने किया है वह संकलित किया गया है। मानस के भावों की यह एक सुंदर और विस्तृत सूची है। शीतलासहायजी का प्रयत्न यह रहा है कि रामायण के बारे में यह कहा जा सके कि 'यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्'। एक कायस्थ कुल में जन्म लेकर, उर्दूलिपि को छोड़ हिंदी का विशेष अभ्यास न होने पर भी, संत महात्माओं के पास जाकर उर्दू में रामचरितमानस के भाव को लिखना और सब प्रकार की रुकावट होते हुए संपूर्ण रामायण पर एक स्मारक ग्रंथ तैयार कर देना जनकसुताशरण ही का काम था। इन्होंने पाठ गौड़जी के संस्करण का रखा है और दोहे के अंक भी उसी के अनुकूल हैं।

अन्य भाषाओं में रामचरितमानस की जो टीकाएँ हुई हैं उनमें ग्राउस साहेब का अनुवाद एक प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है। सन् १८६१ तक इसका पंचम संस्करण छप चुका था। इसकी प्रामाणिकता का अंदाज इसी से किया जा सकता है कि लोग मूलपाठ का निर्णय तथा क्षेपकविचार यह देखकर करते हैं कि अमुक अंश ग्राउस साहेब के अनुवाद में आया है या नहीं।

उर्दूभाषांतर तथा अनुवाद नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से छपा है। गुजराती भाषांतर तथा अनुवाद शास्त्री छोटेलाल चंद्रशंकरजी ने सस्तुं साहित्य-वर्धक कार्यालय, अहमदाबाद से छपवाया था। सं० १६६० तक इसका पंचम संस्करण प्रकाशित हो चुका था।

१—'(मुंशीजी) ने चतुर्थांश के लगभग मूल चौपाइयों को निकाल दिया है। जहाँ जी में आया, नवीन चौपाइयाँ जोड़ दी हैं।'—रामदीनसिंह का उपक्रम, जो ग्रियर्सन साहबवाले संस्करण में दिया गया है।

मराठी टीका जबलपुर के मुंसिफ श्रीयुत यादवशंकर जामदार ने सन् १९१३ में की थी जो चित्रशाला प्रेस, पूना में छपी थी ।

(३) टीका—स्फुट कांडों की

रामचरितमानस की प्राप्त सामग्री देखने से पता लगता है कि कुछ लोगों ने अपने अपने ढंग पर संपूर्ण रामचरितमानस की टीका निकालने का संकल्प किया था। पर जान पड़ता है कि संकल्प की दृढ़ता न होने के कारण या किसी अन्य कारण से वे भग्नप्रयास हुए। ऐसे लोगों में बाबू बुलाकीदास कृत 'रामचरितमानस की भावप्रवाह टीका' तथा पं० सुधाकर द्विवेदी कृत 'मानसपत्रिका' उल्लेखनीय है।

बाबू बुलाकीदास ने संवत् १९६२ में बालकांड से प्रारंभ कर प्रायः ६३ दोहे तक का अर्थ तथा तत्कालीन व्यास लोगों के (मुख्यतः पं० रामकुमारजी मिश्र के) भाव का समावेश करके पुस्तक छपवाना शुरू किया था। यह तारा यंत्रालय काशी से प्रकाशित होती थी।

पंडित सुधाकरजी द्विवेदी की 'मानस पत्रिका' चंद्रप्रभा प्रेस से, चौड़े चिकने कागज पर मोटे अक्षरों में, संवत् १९६४ से छपती थी। इसके सहकारी कार्यकर्ता पं० सूर्यप्रसाद मिश्र थे। यह भी बालकांड से प्रारंभ हुई थी और प्रत्येक दोहे चौपाई का वाक्यार्थ, अन्वय तथा टीका देने के बाद द्विवेदीजी का संस्कृत श्लोक में उलथा भी छपता था। कहा जाता है कि जितने ग्राहक इसके भारत में नहीं थे उससे अधिक विलायत में थे। कुछ ही अंश प्रकाशित होने के बाद ये दोनों बंद हो गईं।

हाल में (सं० १९९१ में) लखनऊ के बाबू दुलारेलाल भार्गव से गोस्वामीजी की छीछालेदर देखी न गई। इन्होंने बहुत कुछ पश्चात्ताप करके अपने गंगा फाइन आर्ट प्रेस से एक 'धर्मग्रंथावली' जारी की जिसमें 'तुलसीकृत रामायण सचित्र' २० खंडों में (प्रत्येक खंड में ८० पृष्ठ मूल्य १।)) कुल रामायण सिर्फ २५) में देने का वादा किया था। 'सुधा' के आकार में शायद पुस्तक के दो खंड छपे भी थे। पर जान पड़ता है, जिस उद्देश को लेकर भार्गवजी चले थे वह पूरा होना दुष्कर समझ काम रोक दिया गया।

स्फुट कांडों की टीका का भी यही हाल समझिए। टीकाकारों ने संकल्प तो संपूर्ण रामचरितमानस की टीका करने का किया होगा और सुविधानुसार

किसी एक कांड को चुन लिया पर आगे चलकर अड़चन पड़ने के कारण पूरी टीका प्रकाशित न हो सकी।

बालकांड पर मुंशी गुरुसहायलाल की 'संत-मन-उन्मनी टीका' एक विलक्षण वस्तु है। 'मानसतत्वविवरण' के नाम से यह प्रसिद्ध है पर जितना सुंदर नाम है वैसा तत्व नहीं। इसके देखने से मुंशीजी का प्रकांड पांडित्य प्रदर्शित होता है पर तत्व से भेंट नहीं होती। एक एक शब्द के लिये न जाने कहाँ कहाँ के प्रमाण देकर पन्ने के पन्ने रँगे पड़े हैं जिनको देखते देखते जी ऊब जाता है। अच्छा हुआ मुंशीजी ने सब चौपाइयों का अर्थ नहीं लिखा, अन्यथा पुस्तक दूनी तो अवश्य हो जाती। यह पुस्तक खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर में सन् १८८६ में छपी थी।

बाल और अयोध्याकांड पर बाबा हरिहरप्रसादजी की टीका (मानस-परिचर्यापरिशिष्टप्रकाश) मुंशी अविनाशीलाल तथा पंडित गोपीनाथ पाठक के प्रयत्न से लाइट छापाखाना, बनारस (दशाश्वमेध घाट) में संवत् १९२३ और संवत् १९२५ में छपी थी। यह भावी रामायण-परिचर्या-परिशिष्ट-प्रकाश का सूत्र रूप था।

पं० सूर्यप्रसाद मिश्र ने अयोध्याकांड पर एक टीका 'भावार्थादर्श' (विशेषकर इंट्रेंस कोर्सवालों के काम की चीज) सन् १९०६ ई० में चंद्रप्रभा छापेखाने से निकाली थी। इसमें साधारण अर्थ बड़े विस्तार से दिया गया है। प्रत्येक शब्द का अर्थ, फिर अन्वय, फिर अर्थ।

आरण्यकांड, किष्किंधाकांड तथा सुंदरकांड की बड़ी सुंदर टीका श्री १०८ बाबा रामप्रसादशरणजी 'दीन' ने लिखी है जो क्रमशः 'धर्मप्रेस, मेरठ', 'हिंदी प्रेस, प्रयाग' (संवत् १९७७) तथा 'भारतभूषण प्रेस, लखनऊ' (सं० १९७५) से प्रकाशित हुई है। इन्होंने रामायण को खूब समझा और समझाया है। अर्थ हृदय में बैठ जाता है पर खेद है कि बाबाजी ने अन्य कांडों पर कलम नहीं उठाई।

किष्किंधाकांड पर खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर से सन् १८८६ में बाबू शिवरामसिंह ने 'मानस-तत्व-प्रबोधिनी' नामक एक बड़ी विस्तृत टीका छपवाई थी। इसमें रामायण का अर्थ गोस्वामीजी के अन्य ग्रंथों से समझाने का प्रयत्न किया गया है पर चीज अच्छी नहीं है, जी ऊब जाता है, तिस पर पुरानी हिंदी है। शायद ही किसी ने प्रेमपूर्वक पूरी टीका पढ़ी हो।

किष्किंधाकांड पर पं० राजकुमारजी मिश्र[1] का 'मानसतत्वभास्कर' एक अनुपम प्रकाश है। यह श्रीरमेश्वर यंत्रालय, दरभंगा में सं० १६६४ में छपा था। केवल इसी टीका को पढ़कर संपूर्ण रामचरितमानस का ज्ञान हो सकता है, कारण कि पंडितजी ने इस छोटे से कांड को लेकर रामायण के पढ़ने का तरीका बतलाया है। एक क्रम सामने रखा है जिसके अनुसार चलने से रामायण का अर्थ रामायण से करने की आदत पड़ती है। पंडितजी अपने समय के बड़े भारी रामायण के वक्ता थे। इन्होंने अपनी संपूर्ण कथनकला इस कांड में भर दी है।

सुंदरकांड की दो बहुत अच्छी टीकाएँ निकल चुकी हैं। एक तो पंडित छोटेलालजी व्यास का 'मानसभाष्य' जो संवत् १६७३ में गौरीशंकर के चंद्रप्रभा प्रेस, काशी में छपा था। व्यासजी पंडित बंदन पाठक के शिष्यों में थे और उन्हीं के अधिकांश भाव लेकर यह ग्रंथ लिखा गया है।

दूसरी टीका सं० १६७५ में एक्सप्रेस प्रेस, बाँकीपुर से चौधरी कृष्ण-प्रसादसिंह के प्रबंध से छपी थी। यह ४३२ पृष्ठों की एक बृहत् टीका है जिसमें किष्किंधाकांड के टीकाकार पं० रामकुमारजी मिश्र का 'मानसतत्व-भास्कर' तथा पं० जनार्दन व्यास और रामसेवकदास की 'मानसतत्त्व-सुधार्णवीया व्याख्या' संमिलित है। यह पुस्तक बड़ी उत्तम है।

केवल लंकाकांड, या केवल उत्तरकांड पर शायद किसी ने टीका नहीं लिखी है।

(४) रामचरितमानस के कुछ दोहों, चौपाइयों की विशद व्याख्या

रामचरितमानस के फुटकर दोहों और चौपाइयों की व्याख्या में अच्छे अच्छे ग्रंथ तैयार हुए हैं। इनमें सर्वोपरि बाबा रघुनाथदास कृत 'मानस-

१—पंडितजी काशी के, रामायण के बड़े अनन्य भक्त तथा निःस्पृह वक्ता थे। नित्य, क्या दिनरात 'तच्चिन्तनम्, तत्कथनम् अन्योन्यं तत्प्रबोधनं' ही में समय व्यतीत होता था। इनकी कथा में बड़ी भीड़ होती थी और आरती में काफी रकम उतरती थी। मगर जो कुछ कथा पर चढ़ता उसको परोपकार में लगा देते थे या भंडारा कर देते थे। इनका कहना था कि कथा के चढ़ौआ का धन लड़की का धन है, कारण कि रामकथा 'संत समाज पयोधि रमा सी' है। इसका भक्षण करना पाप है। धन्य हैं ऐसे महात्मा।

दीपिका' है। रामचरितमानस पर यह एक मिसलेनियस आमनिबस लिटरेचर है। यह भी महाराज श्री ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंहजी के जीवनकाल का ग्रंथ है। इसमें प्रत्येक कांड के कुछ चुने हुए स्थलों को लेकर रामचरितमानस की खूबी दिखलाई गई है—पुराण और शास्त्र के ढंग से रामचरितमानस के शब्दों की व्याख्या की गई है। अंत में काव्य के लक्षण तथा अनेक प्रकार के काव्यबंध सचित्र दिए गए हैं जिनमें रामायण का प्रमाण दिया गया है; रामायण के कठिन शब्दों का अर्थ भी दिया गया है। यह पुस्तक अपने समय में बड़ी प्रसिद्ध हो चली थी और कई छापेखानों में छपी थी। सबसे पुराना संस्करण संवत् १६०६ तदनुसार सन् १८५३ में काशी के नई टकसालघर के रेकार्ड समाचारपत्र के छापेखाने में छपी प्रति का है। इसके बाद सं० १६२१ में दिवाकर छापेखाने, काशी में छपी थी। इनके अलावा एक प्रति देशी कागज पर लिथो में छपी थी। मानसदीपिका का एक संक्षिप्त संस्करण नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से निकला था।

पं० शिवलाल पाठक का 'मानसमयंक' अपने ढंग की अपूर्व पुस्तक है। पाठकजी ने सब कांडों के चुने हुए दोहा चौपाइयों का भावार्थ दोहों में लिखा है और इसकी व्याख्या उनके शिष्य बा० इंद्रदेव नारायण ने की है। यह पुस्तक खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर से सन् १६२० में छपी थी।

पाठकजी का उसी ढंग का रचा हुआ एक ग्रंथ 'मानस-अभिप्राय-दीपक' है। यह श्री वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई में सं० १६५७ में छपा था। इसमें केवल बालकांड और अयोध्याकांड के चुने हुए स्थलों की व्याख्या है।

पंडित शेषधरजी ने उत्तरकांड के 'ज्ञानदीपक' का प्रकाश बड़े सुंदर ढंग से दिखलाया है। यह पुस्तिका खड्गविलास प्रेस से छपी थी।

पं० विजयानंदजी त्रिपाठी की 'शतपंच-चौपाई' गीता प्रेस, गोरखपुर से सं० १६६३ में छपी है। इसको त्रिपाठीजी ने ५ प्रकरणों में विभक्त किया है। (१) रामरहस्य, (२) ज्ञानदीपक, (३) भक्ति चिंतामणि, (४) सप्त प्रश्न, (५) परिशिष्ट। इन पाँचों प्रकरणों में उत्तरकांड के दो० नं० ११४—'भक्तिपच्छ हठ करि रहेउँ दीन्हि महारिषि साप'—से लेकर रामायण के अंत 'दारुन अविद्या पंच जनित विकार श्रीरघुवर हरैं' तक की अपने ढंग की अनोखी व्याख्या की गई है।

(५) शंकासमाधान तथा विविध ग्रंथ

शंकासमाधान तो प्रायः सभी टीकाकारों ने अपने अपने ढंग से किया है पर बाबा सरूपदास तथा पं० बंदन पाठकजी की 'मानसशंकावली' में सातों कांडों की मुख्य शंकाओं का बड़ा सुंदर समाधान किया गया है। बाबा सरूपदास की शंकावली विक्टोरिया यंत्रालय काशी में छपी थी और पाठकजी की शंकावली केशव यंत्रालय काशी में सं० १९६७ में छपी थी।

पंडित गणपति उपाध्याय ने बिहार प्रिंटिंग व पब्लिशिंग सिंडीकेट प्रेस से सं० १९७२ में 'मानस-शंका-समाधान' छपवाया था। पर यह उतना अच्छा नहीं है।

'मानसकोष' नामक ग्रंथ बा० अमीरसिंह ने बाबू कार्तिकप्रसादजी की सहायता से हरिप्रकाश यंत्रालय, काशी में सन् १८९० में छपवाया था। फिर सन् १९०९ में इंडियन प्रेस, प्रयाग से एक 'मानसकोष' छपा था जिसमें रामचरितमानस के कठिन शब्दों का अर्थ दिया गया है। यों तो रामचरितमानस के शब्दों का अर्थ पं० रामजसन मिश्र के छपवाए हुए रामायण में तथा बाबा रघुनाथदास कृत 'मानस दीपिका' में दिया गया है पर इस पुस्तक में विस्तार से शब्दार्थ दिए गए हैं।

'नानापुराणनिगमागम'वाले श्लोक ने रामचरितमानस के पठन-पाठन में एक खासा झगड़ा पैदा कर दिया है। कितने व्यास लोग तो केवल वही अर्थ करते और मानते हैं जो 'पुराण-निगमागम-सम्मत' है। इन्हीं नाना पुराणों को खोजने का परिणाम रायबरेली जिले के ठाकुर रणबहादुर सिंह की छपवाई हुई 'रामायण' है जिसमें प्रायः सभी चौपाई दोहों का मूल कोई संस्कृत श्लोक किसी न किसी ग्रंथ से निकाला गया है। नाना पुराणों के पीछे इस कदर हाथ धोकर पड़ना अच्छा नहीं। कारण कि ऐसा करने से न केवल गोस्वामीजी का अपमान होता है बल्कि अपने में एक कुरुचि पैदा हो जाती है जिससे रामचरितमानस का सुखद अवगाहन नहीं होता। जब गोस्वामीजी की सुभग कवितासरिता प्रवाहित हुई तब इसकी अपेक्षा न थी कि वह अमुक पुराणसम्मत मार्ग का अनुगमन करे। वह तो अपनी ही प्रेरणा से निकली और अपने ही रास्ते चली।

मुंशी गुरुसहायलाल (संतमन-उन्मनी-टीकाकार) के चिटपुरजों को देखकर 'मानसअभिराम' नामक एक छोटा सा ग्रंथ तैयार किया गया

है जिसमें नवाहविधि, संपुटविधि तथा मंत्ररूप से माने जानेवाले ६१ अनुभवसिद्ध दोहा चौपाई आदि का भिन्न भिन्न फलभेद दिखलाया गया है। यह पुस्तिका आदर्श प्रेस काशी से सं० १९६१ में छपी थी।

रामचरितमानस पर कितने ग्रंथ तो प्रयाग के माघ मेले के बाजार के लिये प्रयागवालों ने छपवाये हैं, उनमें कुछ का विवरण नीचे दिया जाता है।

(१) 'रामायणरहस्य' रामजीलाल शर्मा ने हिंदी प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित किया है।

(२) 'रामचरितमानसमीमांसा', लेखक रघुवंशभूषण। यह पुस्तक 'श्रीरामायण सभा' दारागंज, प्रयाग की ओर से भारतवासी प्रेस, प्रयाग में छपी थी।

(३) श्रीरामचरितमानस सातों कांड के उपमा समता आदि अलंकारों की टीका। इसके लेखक, त्रिवेणी बाँध गुफा (दारागंज) के श्रीस्वामी अवधबिहारीदास परमहंस हैं।

पं० विश्वेश्वरदत्त शर्मा का 'मानसप्रबोध' प्रयाग ही में छपा था।

उक्त पुस्तकों के लेखकों के प्रति हार्दिक सहानुभूति रखते हुए बड़ी विनम्रता से कहना पड़ता है कि इन लेखक महाशयों ने ऐसे सुंदर सुंदर नाम केवल जनता का ध्यान आकर्षित करने के लिये रखे थे। गोस्वामी तुलसीदासजी ऐसे महात्मा से इस प्रकार का व्यापार करना बुरा है।

रामचरितमानस पर आलोचनात्मक ग्रंथों में 'तुलसी ग्रंथावली' का तृतीय खंड सिरमौर है और भी पं० रामचंद्र शुक्ल का लेख अद्वितीय है। यह लेख स्वतंत्र पुस्तकाकार भी छप गया है।

हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयाग से रायबहादुर बाबू श्यामसुंदरदास तथा श्रीपीतांबरदत्तजी बड़थ्वाल का 'गोस्वामी तुलसीदास' नामक ग्रंथ सं० १९३१ में छपा है।

स्व० अध्यापक रामदास गौड़ की 'रामचरितमानस की भूमिका' नामक पुस्तक सं० १९८२ में हिंदी पुस्तक एजेंसी कलकत्ता से निकली थी। यह पांच खंडों में विभक्त है—(१) रामचरितमानस की शिक्षा और व्याकरण, (२) मानसशंकावली (३) मानस - कथा - कौमुदी, (४) मानस - शब्द - सरोवर, (५) तुलसी - चरित - चंद्रिका।

बाबू माताप्रसाद गुप्त का 'तुलसीसंदर्भ' एक छोटी सी पुस्तक है जिसमें उनके लेखों का संग्रह है।

सन् १९३० में एडिनबर्ग से डा० जे० एम० मेक्फि एम० ए०, पी० एच० डी० ने 'रामायण आफ तुलसीदास आर दी बाइबिल आफ नार्दर्न इंडिया' नामक पुस्तक प्रकाशित कराई है।

जी० ए० ग्रियर्सन, सी० आई० ई०, पी० एच० डी०, डी० लिट् का 'तुलसीदास पोयट एण्ड रेलिजस रिफार्म' नामक लेख रायल एशियाटिक सोसाइटी की मिटिंग में १० मार्च १९०३ को पढ़ा गया है। यह लेख आर० ए० एस० की पत्रिका के पृष्ठ ४४७ से लेकर ४६६ में छपा है।

प्रो० सद्‌गुरुशरण अवस्थी ने 'तुलसी के चार दल' नामक पुस्तक के पहले खंड में कुछ आलोचनात्मक बातें लिखी हैं। यह पुस्तक इंडियन प्रेस, प्रयाग में सन् १९३५ में छपी है।

श्रीयुत बलदेवप्रसाद मिश्र एम० ए०, एल्-एल० बी० ने 'तुलसी-दर्शन' द्वारा गोसाईंजी का दर्शन कराने का प्रयत्न किया है। यह पुस्तक सं० १९९५ में हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग से छपी है।

कविवर पं० रामनरेश त्रिपाठी ने तुलसीदासजी की कविता का मर्म समझाने के लिये अपनी छपवाई हुई टीका में ३०६ पृष्ठों में भूमिका तो लिखी ही थी किंतु सन् १९३७ में 'तुलसीदास और उनकी कविता' नामक पुस्तक भी लिख डाली है।

(६) रामचरित संबंधी अन्य कवियों के स्वतंत्र ग्रंथ

जब हम रामचरित पर अन्य कवियों के ग्रंथों की ओर दृष्टि डालते हैं तो सबसे बड़ा ग्रंथ जो दिखाई पड़ता है वह मांडव्य नराधिपति महाराज रुद्रप्रतापसिंह विरचित 'रामायण' है। जान पड़ता है कि महाराजा साहेब ने, रीवाँ नरेश के जोड़ पर चलने के लिये[1] और गोस्वामीजी के रामचरित मानस से विलक्षणता दिखलाने के लिये,[2] यह ग्रंथ लिखा था। किंतु खेद

१—रीवाँ तथा मांडा ये दोनों सरहदी राज्य हैं। रीवाँ के राजा लोग पुश्तैनी कवि होते आए हैं। महाराज विश्वनाथसिंह, महाराज रघुराजसिंह, महाराज जयसिंह इत्यादि बड़े अच्छे भक्त कवि हो गए हैं।

२—महाराज रुद्रप्रतापसिंह ने कांड न लिखकर 'पथ' लिखा है और कांडों का नाम भी विलक्षणता दिखलाने के लिये बदल दिया है। अतः बालकांड 'वंशपथ' कहलाया। यह ४५९ पृष्ठों का है। अयोध्याकांड 'कोशलपथ'

का विषय यह हुआ कि महाराजा साहब ने अपने काव्य को दोहाचौपाई में लिखना शुरू किया। और चाहे जो कुछ हो, गोस्वामी तुलसीदासजी पर एक दोष तो लगाया ही जा सकता है कि उन्होंने 'दोहाचौपाई को इतना ऊँचे उठा दिया, ऐसा चमका दिया कि एक तो कोई इन छंदों में ग्रंथ लिखने का साहस ही नहीं करता और जो कोई करता हैं वह विफलप्रयास हो जाता हैं।' वही हाल महाराजा रुद्रप्रतापसिंह के 'रामायण' का हुआ।

यह ग्रंथ ग्रियर्सन साहेबवाले संस्करण के आकार का ३७५२ पृष्ठों में, मोटे अक्षरों में चंद्रप्रभा प्रेस, बनारस में छपा था। यह सन् १६०१ में छपने लगा और सन् १६११ में तैयार हुआ था। इसका संशोधन महामहोपाध्याय पंडित सुधाकर द्विवेदी ने किया था।

दूसरा ग्रंथ दोहाचौपाई का स्वामी रामप्यारे नंद ब्रह्मचारी का 'बजरंगरामायण' है। इसके सातों कांड ६४३ पृष्ठों में राघवेंद्र प्रेस, इलाहाबाद से सन् १६१२ में निकले थे।

महाराज रघुराजसिंहजी का 'रामस्वयंवर' तथा रसिकविहारी का 'रामरसायन', हृदयराम का 'हनुमन्नाटक', केशवदासजी की 'रामचंद्रिका', पद्माकर कृत 'रामरसायन', लछिराम कृत 'रामचंद्रभूषण'—ये ग्रंथ विविध छंदों में श्रीरामचरित का सुंदर निरूपण करते हैं।

पंडित रामगुलाम द्विवेदीजी ने रामचरित पर बड़े सुंदर कवित्त तथा ललित पद लिखे हैं। इनकी कवितावली, विनय - नव - पंचक तथा हनुमान्-अष्टक काशी के व्रजचंद्र यंत्रालय में छपे थे।

बंगाल के श्रीकृत्तिवासजी कृत रामायण का भाव लेकर पं० मथुराप्रसाद मिश्र (पश्चिम ग्राम, अमेठी के रहनेवाले) ने बाबू कालीप्रसन्नसिंह (सब जज, फैजाबाद) की प्रेरणा से केवल लंकाकांड का पद्यानुवाद दोहाचौपाई में किया था। यह ५१० पृष्ठों की पुस्तक सन् १८६४ में लखनऊ प्रिंटिंग वर्क्स में छपी थी।

पंडित चतुर्भुज मिश्र, (हेड पंडित मिडिल स्कूल जोरी जिला हजारीबाग) ने 'आल्हा रामायण' लिखी थी जो सन् १८६५ में खड्ग-विलास प्रेस, बाँकीपुर से प्रकाशित हुई थी।

पृष्ठ ३६३, आरण्यकांड 'अटनीपथ' पृष्ठ २१२, किष्किंधाकांड 'किष्किंधापथ' पृष्ठ ११३४, सुंदरकांड 'दूतपथ' पृष्ठ ३०८, लंकाकांड 'युद्धपथ' पृष्ठ ९४ ; उत्तरकांड 'राजपथ' पृष्ठ ४६३।

श्री मदनगोपालसिंह (पंजाबी) की 'खालसारामायण' विविध छंदों में कलकत्ता के सुधावर्षण यंत्रालय से सं० १६३३ में धर्मार्थ वितरण के लिये छपी थी। मदनगोपालजी किसी कारणवश अज्ञातवास कर रहे थे। और उस छिपी अवस्था में समय का सदुपयोग करने के लिये—

'मदत से गुरू के कलम धर शिताब। बड़े काम का
दगेबाज ने यह लिखा है किताब। सियाराम का

इसके सातों कांड २३६ पृष्ठों में समाप्त हुए हैं।

इनके अलावा नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से निम्नलिखित रामायण प्रकाशित हुए थे—

बानादास कृत 'उभयप्रबोधक रामायण'	पृष्ठ-संख्या	५६४
श्रीरामांगज चतुरदास कृत 'पदबंद रामायण'	,,	६१
महावीरदास कृत 'गीत रामायण'	,,	४६
लालमणि कृत 'अद्भुत रामायण'	,,	५६
इंद्रजीत कृत 'अवधविलास रामायण'	,,	७२
ईश्वरप्रसाद कृत 'रामविलास रामायण'		...
बंदीदीन दीक्षित कृत 'विजय राघवखंड रामायण'		११४१
बैजनाथ कुर्मी कृत 'सीताराम-संयोग-पदावली'		...

बंगाल के श्री माइकेल मधुसूदनदत्त कृत 'मेघनादवध' का हिंदी भाषांतर बाबू मैथिलीशरण गुप्तजी ने बड़ी योग्यता से सफलतापूर्वक किया है। यह प्रायः ३०० पृष्ठों का काव्य साहित्य-सदन, चिरगाँव झाँसी से सं० १६८४ में प्रकाशित हुआ है।

पं० रामचरित उपाध्यायजी का 'रामचरितचिंतामणि' नामक एक बड़ा सुंदर ग्रंथ खड़ी बोली में, भिन्न-भिन्न छंदों में है। उसमें रामचरित का और रामायण के विशिष्ट पात्रों का वर्णन है।

गुप्तजी का 'साकेत' अपने ढंग का अनूठा ग्रंथ है और आधुनिक रामचरितलेखकों में जितना ही प्रशंसनीय है उतना ही राधेश्यामजी का रामायण दूसरी श्रेणी का है। आजकल के नौछिटुओं में कुरुचि पैदा करने में जितना राधेश्यामजी के रामायण ने काम किया उतना शायद ही किसी

नौटंकी, गजल या कौवाली की किताब ने किया हो। लेकिन संतोष का विषय है कि अब उसका प्रचार कम हो रहा है।

रामचरितसंबंधी अन्य कवियों के ग्रंथों का एक बृहत् साहित्य है। जितना ही हम इस साहित्य का अवलोकन करते हैं उतना ही गोस्वामीजी का रामचरितमानस और भी निखर उठता है, उस पर आभा चढ़ती है और यह धारणा दृढ़ होने लगती है कि तुलसी से 'अधिक कहा तेहि सम कोउ नाहीं।'

तुलसीदासजी की सबसे बड़ी विशेषता, जो हर एक व्यक्ति अनुभव कर सकता है, यह है कि कोई इतना ऊँचा नहीं उठ सकता जहाँ से गोस्वामी जी छोटे प्रतीत होने लगें। आप सारे विश्व का साहित्य उलट डालिए, उन पुस्तकों के अध्ययन से आपको जो विवेक होगा, जिस सूक्ष्म मनोभाव का सुंदर विश्लेषण आप देखेंगे वह कहीं न कहीं रामचरितमानस में अवश्य मिलेगा और जो जितनी पूँजी लेकर यहाँ आता है उसे उतना ही आनंद मिलता है। अन्य ग्रंथों के अवलोकन का श्रम तभी सफल होता है (मेरी समझ में) जब उनके प्रकाश में रामचरितमानस का अवलोकन किया जाय।

मानस पाठभेद ↓

[मानसमराल श्री शंभुनारायण चौबे का यह निबंध नागरीप्रचारिणी पत्रिका के वर्ष ४७ अंक १ (वैशाख १९९९ वि०) में प्रकाशित हुआ था। इस अंक के संपादक मंडल में—सर्वश्री केशव प्रसाद मिश्र, वासुदेव शरण अग्रवाल, पद्म नारायण आचार्य, कृष्णानंद थे। पत्रिका के इस अंक में केवल यही निबंध १४३ पृष्ठों में प्रकाशित हुआ है।]

↑ देखिए, परिशिष्ट २।

रामचरितमानस का मूल पाठ, जिस रूप में गोस्वामीजी के करकमलों से संपन्न हुआ था, निर्धारित करना बड़े महत्व का कार्य है। कितने ही प्रकाशित संस्करणों तथा हस्तलिखित ग्रंथों से इस कार्य में सहायता ली जा सकती है। परंतु सभी हस्तलिखित ग्रंथों का पर्यवेक्षण करना एक असंभव सी बात है और जिस किसी हस्तलिखित ग्रंथ के पीछे पड़ना श्रेयस्कर भी नहीं।

रामचरितमानस की प्रतिलिपि तो गोस्वामीजी के जीवनकाल ही में प्रारंभ हो गई थी और जैसे जैसे इस 'चारु चिंतामनि' का जौहर खुलता गया, लोग इसे अपनाते गए। धन्य थी वह शुभ घड़ी जब कि गोस्वामीजी ने अपनी चिर पुण्य लेखनी को हाथ में लेकर जन्मजन्मांतर के पुण्य प्रताप की कमाई जगत् कल्याण के निमित्त शब्दब्रह्म को समर्पित की थी।

रामचरितमानस के शुद्ध स्वरूप की झाँकी जैसी पंडित रामगुलाम द्विवेदी[1]

१—पं० रामगुलाम द्विवेदी, मुहल्ला गनेशगंज, शहर मिर्जापुर के रहनेवाले, रीवाँ नरेश महाराज रघुराजसिंह के समकालीन, मानस के अनन्य प्रेमी तथा हनुमानजी के सच्चे भक्त हो गए हैं। ये दिन भर फेरीदारी करते थे और रात्रि में नित्य नियमपूर्वक लोहदी नदी पार करके श्री हनुमानजी के दर्शनों को जाया करते थे। कहते हैं कि एक दिन भरे भादों की घनी अँधेरी रात में जब कि लोहदी की पहाड़ी नदी खूब बाढ़ पर थी—अब तो पुल भी बन गया है—ज्योंही पंडित जी ने पार करने के लिये कछनी काछी कि स्वयं हनुमान जी ने दर्शन देकर पंडितजी से कहा कि 'अब इतना कष्ट न किया करना, कोई प्रतिमा रखकर उसी में मुझे देखा करना'। तभी से पंडितजी एक छोटे से अनगढ़ पाषाण की प्रतिमा के सामने बैठकर पढ़ते, रोते हँसते थे। रामायण की वे बड़ी सुंदर कथा कहते थे, पर कथा कहने का अभिमान उन्हें छू तक न गया था। वे कहते थे कि गोस्वामीजी ने, न मालूम क्या समझकर, किस भाव से प्रेरित होकर, इन चौपाइयों को लिखा था और इनका अर्थ करने में मेरे मुँह से क्या निकल गया उसका ध्यान न करके गोस्वामीजी के हृदय तक पहुँचना चाहिए।

यह एक दुःख और लज्जा की बात है कि स्मृति स्वरूप छोड़ी गई हनुमान जी की प्रतिमा तथा पंडितजी की खड़ाऊँ दर दर मारे फिरने के बाद उनके

ने की, जैसी उनके चेला चोपईराम ने की, बंदन पाठक ने की, लाला छक्कनलाल[१] ने की और पिछले काँटे पं० रामकुमार मिश्र ने की वैसी और किसके भाग्य में लिखी है। उन दिनों छापे की सुविधा न थी, प्रेस प्रकाशक इतने सुलभ न थे, कागज स्याही कम थी, अन्यथा ये महात्मागण गोस्वामीजी का पाठ बाँधकर रख गए होते और आज दिन इतनी धाँधली न दीख पड़ती।

गोस्वामीजी की वाणी का तथ्य जितना उन्हीं के ग्रंथों द्वारा समझा जा सकता है उतना और किसी प्रकार से नहीं। किसी भी शब्द, वाक्य, या भाव का गोस्वामीजी ने ऐकांतिक प्रयोग नहीं किया है। किसी न किसी दूसरे स्थान से उनकी पुष्टि, उनका समर्थन और स्पष्टीकरण अवश्य होता है। यदि ध्यानपूर्वक मिलान किया जाय तो गोस्वामी तुलसीदासजी ने

मकान के एक कोने में रख दी गई। पंडितजी के बाद जिन जिन लोगों ने उनके मकान को नीलाम लिया या खरीदा उनका कारबार नष्ट हो गया अथवा उन पर कोई अन्य आपत्ति आई और आज दिन रामचरितमानस के नाते जो स्थान पूजागृह होना चाहिए था वह 'भुतहा' कहा जाता है।

इनका निधन संवत् १८८८ वि० (१८३१ ई०) में हुआ।

इंडियन एंटीक्वेरी, भा० २२—पृ० १२३ तथा १२८ के फुटनोट।

१—लाला छक्कनलाल, पंडित रामगुलाम द्विवेदी के शिष्य थे। इन्होंने पंडितजी की पोथी पर से एक प्रति लिखी थी। ये काशिराज महाराज ईश्वरी-नारायण सिंह के नवरत्नों में थे और रामनगर में बृद्धावस्था बिताते थे। पंडित रामकुमार मिश्र गुरु मानकर इनकी बड़ी सेवा करते थे। बुढ़ौती और अफीम के कारण पिनकते हुए गुरु के सामने हुक्का चिलम भरकर पंडितजी जोहते रहते थे। वृद्ध गुरु भी शिष्य पर विशेष कृपा रखते थे, और कहते थे 'क्या करूँ रामकुमार, तुम देर में मिले, सब तो बतलाने की सामर्थ्य नहीं है, हाँ राम-चरितमानस की कुछ झलक दिखलाए जाता हूँ।' गुरु के आशीर्वाद से पंडित रामकुमार जी मिश्र अपने समय के कथावाचकों के सिरमौर हुए। उस एक झलक ने पंडितजी के हृदय को ऐसा प्रकाशमान बना दिया जिससे आज तक कथावाचकों का समुदाय प्रभासित है। आजकल रामायण की कथा में जहाँ कहीं वास्तविक चमत्कार का निदर्शन हो उसे पंडित रामकुमार जी की देन समझनी चाहिए।

सभी प्रकरणों का उपक्रम और उपसंहार इतनी सुंदरता से किया है, एक प्रकार के वस्तुवर्णन में भिन्न भिन्न स्थलों पर शब्दों की कुछ ऐसी समानता रख दी है कि जिन पर दृष्टि न रखने से लोग भटक जाते हैं। कहीं कहीं तो एक ग्रंथ का भाव दूसरे ग्रंथ की सहायता से अधिक स्पष्ट होता है। उदाहरण के लिये नीचे रामचरितमानस के कुछ स्थल दिए जाते हैं जहाँ मिलान न करने के कारण लोगों को धोखा हुआ है और पाठ में गड़बड़ी की गई है।

(१) सकइ उठाइ **सरासुर** मेरू। सोउ तेहिं सभा गयउ करि फेरू॥
१।२६१।७

सर+असुर = बाणासुर—इस अर्थ को न समझकर बहुत लोगों ने 'सुरासुर' पाठ कर दिया है। यदि निम्नलिखित अवतरणों पर ध्यान दिया गया होता तो 'सरासुर' ऐसा सुंदर आलंकारिक शब्द न बदला जाता।

रावन **बान** महा भट भारे। देखि **सरासन** गवहिं सिधारे॥
जिनके कछु विचार मन माहीं। चाप समीप महीप न जाहीं॥
१।२४६।२

रावन **बान** छुआ नहिं चापा। हारे सकल भूप करि दापा॥
१।२५५।३

(२) **ओर निबाहेहु** भायप भाई। करि पितु मातु सुजन सेवकाई॥
१।१५१।५

'ओर निबाहेहु' का अर्थ होता है अंत तक निबाहना। इसका पाठ लोगों ने 'और निबाहेहु' वा 'अउर निबाहेहु' बदल दिया है। निम्नलिखित अवतरणों पर ध्यान न देने से यह भूल हुई है।

सेवक हम स्वामी सिय नाहू। होउ नात यह **ओर निबाहू**॥
२।२३।६

प्रनतपाल पालहिं सब काहू। देव दुहूँ दिसि ओर निबाहू॥
२।३१३।४

पद-पद्म गरीब निबाज के।
देखिहौं जाइ पाइ लोचन फल हित सुर साधु समाज के।
गई बहोरि **ओर निरबाहक** साजक बिगरे साज के॥
गीतावली (सुंदर कांड) पद सं० २९

ने की, जैसी उनके चेला चोपईराम ने की, बंदन पाठक ने की, लाला छक्कनलाल[1] ने की और पिछले काँटे पं० रामकुमार मिश्र ने की वैसी और किसके भाग्य में लिखी है। उन दिनों छापे की सुविधा न थी, प्रेस प्रकाशक इतने सुलभ न थे, कागज स्याही कम थी, अन्यथा ये महात्मागण गोस्वामीजी का पाठ बाँधकर रख गए होते और आज दिन इतनी धाँधली न दीख पड़ती।

गोस्वामीजी की वाणी का तथ्य जितना उन्हीं के ग्रंथों द्वारा समझा जा सकता है उतना और किसी प्रकार से नहीं। किसी भी शब्द, वाक्य, या भाव का गोस्वामीजी ने ऐकांतिक प्रयोग नहीं किया है। किसी न किसी दूसरे स्थान से उनकी पुष्टि, उनका समर्थन और स्पष्टीकरण अवश्य होता है। यदि ध्यानपूर्वक मिलान किया जाय तो गोस्वामी तुलसीदासजी ने

मकान के एक कोने में रख दी गई। पंडितजी के बाद जिन जिन लोगों ने उनके मकान को नीलाम लिया या खरीदा उनका कारबार नष्ट हो गया अथवा उन पर कोई अन्य आपत्ति आई और आज दिन रामचरितमानस के नाते जो स्थान पूजागृह होना चाहिए था वह 'भुतहा' कहा जाता है।

इनका निधन संवत् १८८८ वि० (१८३१ ई०) में हुआ।

इंडियन एंटीक्वेरी, भा० २२—पृ० १२३ तथा १२८ के फुटनोट।

१—लाला छक्कनलाल, पंडित रामगुलाम द्विवेदी के शिष्य थे। इन्होंने पंडितजी की पोथी पर से एक प्रति लिखी थी। ये काशिराज महाराज ईश्वरी-नारायण सिंह के नवरत्नों में थे और रामनगर में वृद्धावस्था बिताते थे। पंडित रामकुमार मिश्र गुरु मानकर इनकी बड़ी सेवा करते थे। बुढ़ौती और अफीम के कारण पिनकते हुए गुरु के सामने हुक्का चिलम भरकर पंडितजी जोहते रहते थे। वृद्ध गुरु भी शिष्य पर विशेष कृपा रखते थे, और कहते थे 'क्या करूँ रामकुमार, तुम देर में मिले, सब तो बतलाने की सामर्थ्य नहीं है, हाँ राम-चरितमानस की कुछ झलक दिखलाए जाता हूँ।' गुरु के आशीर्वाद से पंडित रामकुमार जी मिश्र अपने समय के कथावाचकों के सिरमौर हुए। उस एक झलक ने पंडितजी के हृदय को ऐसा प्रकाशमान बना दिया जिससे आज तक कथावाचकों का समुदाय प्रभासित है। आजकल रामायण की कथा में जहाँ कहीं वास्तविक चमत्कार का निदर्शन हो उसे पंडित रामकुमार जी की देन समझनी चाहिए।

सभी प्रकरणों का उपक्रम और उपसंहार इतनी सुंदरता से किया है, एक प्रकार के वस्तुवर्णन में भिन्न भिन्न स्थलों पर शब्दों की कुछ ऐसी समानता रख दी है कि जिन पर दृष्टि न रखने से लोग भटक जाते हैं। कहीं कहीं तो एक ग्रंथ का भाव दूसरे ग्रंथ की सहायता से अधिक स्पष्ट होता है। उदाहरण के लिये नीचे रामचरितमानस के कुछ स्थल दिए जाते हैं जहाँ मिलान न करने के कारण लोगों को धोखा हुआ है और पाठ में गड़बड़ी की गई है।

(१) सकइ उठाइ सरासुर मेरू। सोउ तेहिं सभा गयउ करि फेरू॥
१।२६१।७

सर+असुर = बाणासुर—इस अर्थ को न समझकर बहुत लोगों ने 'सुरासुर' पाठ कर दिया है। यदि निम्नलिखित अवतरणों पर ध्यान दिया गया होता तो 'सरासुर' ऐसा सुंदर आलंकारिक शब्द न बदला जाता।

रावन बान महा भट भारे। देखि सरासन गवहिं सिधारे॥
जिनके कछु विचार मन माहीं। चाप समीप महीप न जाहीं॥
१।२४६।२

रावन बान छुआ नहिं चापा। हारे सकल भूप करि दापा॥
१।२५५।३

(२) ओर निबाहेहु भायप भाई। करि पितु मातु सुजन सेवकाई॥
१।१५१।५

'ओर निबाहेहु' का अर्थ होता है अंत तक निबाहना। इसका पाठ लोगों ने 'और निबाहेहु' वा 'अउर निबाहेहु' बदल दिया है। निम्नलिखित अवतरणों पर ध्यान न देने से यह भूल हुई है।

सेवक हम स्वामी सिय नाहू। होउ नात यह ओर निबाहू॥
२।२३।६

प्रनतपाल पालहिं सब काहू। देव दुहूँ दिसि ओर निबाहू॥
२।३१३।४

पद-पद्म गरीब निबाज के।
देखिहौं जाइ पाइ लोचन फल हित सुर साधु समाज के।
गई बहोरि ओर निरबाहक साजक बिगरे साज के॥
गीतावली (सुंदर कांड) पद सं० २६

मों पै तो न कछू ह्वै आई ।

ओर निबाहि भली बिधि भायप चल्यौ लषन सो भाई ॥

गीतावली (लंका कांड) पद सं० ६

सुमिरत श्री रघुबीर की बाहैं ।

होत सुगम भव उदधि अगम अति, कोउ लाँघत, कोउ उतरत थाहैं ॥

... ...

सरनागत आरत प्रनतनि को दै दै अभय पद ओर निबाहैं ।

करि आईं, करिहैं करती हैं तुलसिदास दासनि पर छाहैं ॥

गी० (उत्तर कांड) पद सं० १३

दुखित देखि संतन कह्यो सोचै जनि मन माहूँ ।

तोसे पसु पाँवर पातकी परिहरे न सरन गए रघुबर ओर निबाहू ।

विनयपत्रिका पद सं० २७५

(३) एहि बधि बेगि सुभट सब धावहु । खाहु भालु कपि जहँ तहँ पावहु ।

६।२३२।१

सभी बाजारू प्रतियों में 'एहि बिधि' पाठ मिलता है जिसका कोई युक्तिसंगत अर्थ ही नही बैठता जो पूर्वापर के अनुरूप हो ।

'धरहु कपिहिं धरि मारहु सुनि अंगद मुसकाइ' के ठीक आगे की चौपाई में रावण कहता है कि इसे तो अभी ही बध डालो फिर चारों तरफ जाकर जहाँ जहाँ बंदर भालु पाओ खाते जाओ । अतः 'बधि' पाठ ही शुद्ध तथा प्राचीन है ।

(४) 'एक बार अति सैसव चरित किए रघुबीर ।'

७।७५

सैसव चरित = बाललीला—इस अर्थ को न समझकर प्रतियों में 'अतिसय सब' या 'अतिसय सुखद' पाठ बिगाड़ा गया है । जब पाठ ही भ्रष्ट है तो अर्थ कहाँ से ठीक होगा ।

यहाँ पर भुसुंडि-गरुड़-संवाद में लोग अपनी अपनी बीती सुना रहे हैं । गरुड़ ने कहा कि भाई जब श्री रामचंद्र जी नागपाश में बँध गए तब उन्हें मुक्त करने के लिये नारदजी ने मुझे भेजा था । मैंने जाकर जो देखा उसके कारण मुझे मोह हो गया । नागपाश में बँधने तक तो कोई बात न थी ।

पर उस बंधन में पड़कर महाराज रामचंद्रजी को विकल देखकर मुझे मोह हुआ जिसकी वृद्धि इस बात से और हुई कि मैंने उन्हें मुक्त किया—

मोहि भएउ अति मोह प्रभुबंधन रन महँ निरखि।
चिदानंद संदोह राम बिकल कारन कवन॥

देखि चरित अति नर अनुसारी। भएउ हृदय मम संसय भारी॥७।६८

कागभुसुंडी जी बाललीला के उपासक हैं।

जब जब राम मनुज तन धरहीं। भगत हेतु लीला बहु करहीं।
तब तब अवधपुरी मैं जाऊँ। बालचरित बिलोकि हरषाऊँ।
जन्म महोत्सव देखौं जाई। बरष पाँच तहँ रहउँ लोभाई।
इष्टदेव मम बालक रामा। सोभा बपुष कोटि सत कामा।
निज प्रभु बदन निहारि निहारी। लोचन सुफल करौं उरगारी।
लघु बायस बपु धरि हरि संगा। देखौं बालचरित बहु रंगा।

... ...

रूपरासि नृप-अजिर-बिहारी। नाचहिं निज प्रतिबिंब निहारी।
मोहि सन करहिं बिबिध क्रीड़ा। बरनत चरित होति अति ब्रीड़ा।
किलकत मोहि धरन जब धावहिं। चलौं भागि तब पूप देखावहिं।

आवत निकट हँसहिं प्रभु भाजत रुदन कराहिं।
जाउँ समीप गहन पद फिरि फिरि चितै पराहिं।
प्राकृत सिसु इव लीला देखि भएउ मोहिं मोह।
कवन चरित्र करत प्रभु चिदानंद संदोह॥७७॥

इसी 'सिसु लीला' का संकेत करके कहा गया है कि 'एक बार अति सैसव चरित किए रघुबीर'। अर्थात् हे गरुड़ जी, जिस प्रकार आपको अति नर अनुसारी चरित्र देखकर मोह हुआ उसी प्रकार मुझे अति सैसव चरित्र देखकर मोह हुआ। इन प्रकरणों में 'अति' और 'चरित' शब्द मारके के हैं।

(५) सोइ सिसुपन सोइ सोभा सोइ कृपाल रघुबीर।
भुवन भुवन देखत फिरौं प्रेरित मोह समीर॥७।८१

'समीर' पाठ लोगों ने बदलकर 'सरीर' कर दिया है। प्रेरणा करने का गुण समीर का है, यथा—

पुनि बहु बिधि गलानि जिय मानी । अब जग जाइ भजौं चक्रपानी ।
ऐसेहि कर विचार चुप साधी । प्रसव पवन प्रेरेउ अपराधी ।

प्रेरेउ जो परम प्रचंड मारुत कष्ट नाना तैं सह्यो ।
सो ज्ञान ध्यान बिराग अनुभव जातना पातक दह्यो ।
विनयपत्रिका पद १३६ (५)

इन उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि वास्तविक अर्थ तथा भावबोध के लिये शुद्ध पाठ कितना आवश्यक है रामचरिमानस के पाठसुधार का बुनियादी काम पं० रामगुलाम द्विवेदी ने प्रारंभ किया था। इनके पास मानस के इतर ग्रंथ भी शुद्ध रूप में वर्तमान थे। गोस्वामी जी के ग्रंथों के संबंध में इनका एक प्रसिद्ध कवित्त है।

रामलला[1] नहछू बिराग[2] संदीपनो हूँ
[3]
बरवै बनाय बिरमाई मति साँई की।
पारबती[4] जानकी[5] के मंगल ललित गाय
रम्य राम[6] अज्ञा रची कामधेनु नाई की ॥
दोहा[7] औ कबित्त[8] गीत[9] बंध कृष्ण[10] कथा कही
रामायन[11] बिनय[12] माँह बात सब ठाई की।
जग में सोहानी जगदीसहू के मनमानो
संत सुखदानी बानी तुलसी गोसाईं की ॥

द्विवेदीजी के दो मुख्य शिष्य हुए—चोपईराम कसेरा और लाला छक्कनलाल कायस्थ। लालाजी ने रामचरितमानस की एक प्रति लिखी थी और बहुत से लोगों ने उसी पोथी की नकल की थी।

आगे चलकर काशी के बाबा रघुनाथदास जी ने मानस के पाठ को शुद्ध रखने का काम किया था। इनकी प्रति का पाठ लेकर काशी से छः

प्रतियाँ भिन्न भिन्न स्थानों से विक्रमी सं० १६१४, १६२२, १६२६, १६३३, १६३४, १६४० में प्रकाशित हुई थीं। इस अंतिम छपी पोथी ने जो आकार ग्रहण किया उसी के परिष्कृत रूप में श्री भागवतदास छत्री ने सं० १६४२ में अपना संस्करण छपवाया था। गोस्वामीजी के ग्रंथों के उद्धार में भागवतदासजी का प्रयास सर्वोपरि है। इन्होंने सं० १६४३ में अन्य ग्यारह ग्रंथ भी सरस्वती प्रेस काशी से छपवाए थे। इन पोथियों का पाठ बहुत शुद्ध है। इनका उपयोग ग्रियर्सन साहब ने इंडियन एंटीक्वेरी में अपनी लेखमाला लिखते समय तथा बाँकीपुर से रामचरितमानस निकालते समय किया था।

रामचरितमानस का पाठसंशोधन केवल कुछ शब्दों के बदल देने से अथवा उलटफेर कर देने से ही नहीं होता; क्योंकि रामचरितमानस जितना ही साधारण और सुलभ ग्रंथ है उतना ही असाधारण और अथाह भी है। इसकी अर्धाली के प्रत्येक खंड अपितु प्रत्येक शब्द को ग्रहण करने के पूर्व रुकना चाहिए और खूब आद्यंत विचार करना चाहिए। किसी भक्त की वाणी को 'बिना जाने बिगाड़ना' उचित नहीं। कहीं कहीं के पाठ, भारतवर्ष के इतिहास के वर्तमान रूप की नाईं इतने भ्रमपूर्ण हैं और उनका कुसंस्कार ऐसा दृढ़ है कि शुद्ध स्वरूप के ग्रहण करने में विज्ञ लोग भी आनाकानी करते हैं। ऐसी दशा में प्रामाणिक प्रतियों के पाठ निर्देश करने की दृष्टि से यह लेख लिखा जा रहा है।

प्रस्तुत लेख में मुख्य पाठभेद का निर्देश भागवतदास, वि० सं० १७२१,[1] सं० १७६२, छक्कनलाल, रघुनाथदास, बंदन पाठक, काशिराज, कोदोराम की प्रतियों से किया गया है। बालकांड में श्रावणकुंज की प्रति (सं० १६६१) तथा अयोध्याकांड में राजापुर की प्रति का पाठ दिया गया है। रामचरितमानस के पाठशोध के लिये इन दस प्रतियों का पाठ आवश्यक और पर्याप्त है। लेख में पहले पाठभेद वाली पंक्ति अपने संकेतस्थल के सहित—अर्थात् किस कांड के, कौन से दोहे के आगे की कौन सी पंक्ति—दी गई है, जिसमें

१—१७२१ की प्रति का अयोध्याकांड कहीं अन्यत्र चला गया है इसलिये अयोध्याकांड के पाठभेद में इस प्रति का पाठभेद नहीं दिया गया है। पर अन्य कांडों में भागवतदास की प्रति से सं० १७२१ की प्रति इतनी मिलती-जुलती है कि भागवतदास का पाठ १७२१ की प्रति का पाठ ही समझा जा सकता है।

पाठभेद के शब्द मोटे टाइप में हैं और उनके सामने प्रमाणभूत मानी गई उपर्युक्त प्रतियों के पाठभेद दिए गए हैं। संकेत सुविधा के विचार से प्रतियों के लिये संख्या निर्धारित कर दी गई है। पाठपंक्ति अक्षरशः भागवतदास के प्रथम संस्करण (सं० १६४२) से ली गई है।

पाठभेद के मुख्य कारण जो समझ में आते हैं वे इस प्रकार हैं—

(१) लेखक की असावधानता तथा लेख प्रमाद। यथा—१।१७; १।३१।१२; २।१०५।८; ७।१३; ७।२१।५; ७।२५।१; ७।७०।७।

(२) सावधान लेखक भी कहीं कहीं अशुद्ध लिखने के बाद अपने लेख में काटकूट न करने के निमित्त—यह जानते हुए कि गलत लिख गया है—उसका सुधार नहीं करता; और यदि लेखक का अक्षर सुंदर हुआ—जैसा प्राचीन काल में प्रायः होता ही था—तो यह प्रलोभन और भी जोर पकड़ता था। कहीं पर इस भूल का सुधार, अर्थ में कोई विपर्यय न होने की भावना से भी नहीं होता था।

(३) गोस्वामीजी के शब्दों का अर्थ न समझकर पाठपरिवर्तन। यथा—२।१२५।५; ७।८०।६; ७।८६।७।

(४) गोस्वामी जी की वाणी का भाव न समझकर अपनी बुद्धि से पाठपरिवर्तन। यथा—१।२६५।३; १।३४४।३; ३।२१।५; ७।७१।

(५) गोस्वामी जी के प्रयुक्त संस्कृत शब्दों का तद्भव तथा प्रांतीय रूप देकर पाठपरिवर्तन। यथा—१।१० (ग्राम्य); ३।१०।१० (कुमारी); ३।१०।११ (कुमार); ३।३२।५ (सत्य); ५।५४ (विकटास्य); ४।२०।३; ६।७।६, ७।४५।४ (बस्य); ७।५२।६ (निजात्मक); ७।४७।६ (उपरोहित्य); ७।६६ (गोप्यमपि)।

इसी प्रकार तद्भव तथा प्रांतीय शब्दों के स्थान पर पंडित लोगों ने संस्कृत रूप कर दिए हैं।

(६) प्राचीन लिपि की अनभिज्ञता। यथा—१।१७; १।३१।१२; ३।४क। २४।

(७) चौपाइयों में जान लाने के लिये तथा अर्थ में चमत्कार दिखलाने के लिये कथक्कड़ों की अपनी युक्ति। यथा—१।११८।२; १।२७४।६; १।२८०।५; ७।६७।१।

(८) शब्दालंकार गढ़ना एवं प्रयुक्त अलंकारों को न समझना। यथा—१।२६।७; १।१७८।८; १।२७३।२; ३।६का८; ३।२१।११; ६।७३।५; ६।७३।७; ७।५६।५; ७।६८।

(९) चौपाइयों की यतिगति ठीक करने की बुद्धि। यथा—१।७७।८; ३।१।८; ३।८;६।११८; ७।२८; ७।११६।१।

(१०) अर्थ को स्पष्ट करने की इच्छा।

(११) शब्दों के उलटफेर मात्र। यथा—१।१६।८; १।३८।६; १।४८।७; १।५१।८; १।६२।६; १।६७।५; १।७६।३; १।७७।८; १।२१२।२; १।२३७।७; १।२६०।६; १।२६४।७; ३।२१।१०; ६।७।८; ६।४१; ६।६३; ६।६६।३; ७।१।५; ७।२२; ७।२८।५; ७।७२।४; ७।७६।६; ७।८१; ७।११२।३; ७।११७।१०।

—०—

प्रतियों का संकेत

१ = सं० १७२१ वि० की प्रति
२ = सं० १७६२ वि० की प्रति
३ = छक्कनलाल की प्रति
४ = रघुनाथदास की प्रति
५ = बंदन पाठक की प्रति
६ = सं० १७०४ वि० की काशिराज वाली प्रति
७ = कोदवराम की प्रति
८ = { बालकांड में—श्रावण कुंज की प्रति; अयोध्याकांड में—राजापुर की प्रति }
भा = भगवतदास की प्रति

———

जो पाठ ( ) के भीतर हैं वे किन्हीं फुटकर प्रतियों के हैं जो प्रामाणिक नहीं हैं।

जो अंक ○ के भीतर हैं वे उस अंकवाली प्रति के विलक्षण पाठ का निर्देश करते हैं जो अन्य प्रामाणिक प्रतियों में नहीं हैं।

बालकांड

१।० जो सुमिरत सिधि होइ, गन नायक करिवर बदन। ···	१,२,३,४,५,६,७—जो, सिधि; ८ जेहि;(सिध)
१।० बंदौं गुर पद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि। ···	१,२,३,४,५,६,७,८-हरि;(हर)
१।१।१ गुरु पद मृदु मंजुल रज अंजन। ···	१,२—पद मृदु मंजुल रज; ३,४,५,६,७,८—पद रज मृदु मंजुल
१।१।५ साधु चरित सुभ चरित कपासू। ···	१,२,३,४,५,८—चरित; ६,७—सरिस
१।१।८ सरसै ब्रह्म बिचार प्रचारा। ···	१,२,५,—सरसै; ३,४,६,७,८—सरसइ; (सरस्वति)
१।१।११ तीरज साज समाज सुकर्मा। ···	१,२,३,६—साज; ४,५,७,८—राज
१।२।६ पारस परस कुधातु सुहाई। ···	१,२,४,५,६,८—परस; ३,७—परसि
१।२।१२ साक बनिक मनि गन गुन जैसे। ···	१,२,३,४,५,६,७—गन गुन; ८—गुन गन
१।३।१ जे बिनु काज दाहिनेहु बाँए। ···	१,२,३,४,५,७—दाहिनेहु; ६ दाहिनहु; ८—दाहिने
१।३।८ सहस बदन बरनै पर दोसा। ···	१,२,३,४,५—बरनै; ६,७—बरनइ; ८—बरनहिं
१।४ जानि पनि जुग जोरि जन, बिनती करइ सप्रीति॥ ···	१,२,३,४,५,६,७—जानि ८—जानु
१।४।२ होहिं निरामिष कबहिं कि कागा।	१,२,३—कबहिं; ४,५,६,८—कबहुँ
१।४।३ बंदौं संत असज्जन चरना। ···	१,२,३,४,५,८— असजन; ६,७—असंतन

१।४।५ उपजहिँ एक संग **जग** माहीँ ।	...	१, २, ३, ४, ५,६,७,८–जग; (जल)
१।५।८ कासी मग सुरसरि **कबिनासा,** मरु **मालव** महिदेव गवासा ।	...	१,३,४,५,६–कविनासा; २–कर्मनासा; ७,८–क्रमनासा; १,२,३,४,५,७,–मालव; ६,८–मारव
१।६ संत हंस गुन **ग्रहहिँ** पय, परिहरि बारि बिकार	...	१,२,३,६–ग्रहहिं: ४,५,७,८–गहहिं
१।६।३ सो सुधारि हरि**जन** जिमि लेहीँ ।	...	१,२,३,४,५,६,७,८ – जन; तन तन
१।७ ससि **पोषक सोषक** समुझि,	...	१,२ ३,५,६,७–पोषक सोषक; ४ ६,८–सोषक पोषक
१।७।१२ जे पर **भनिति** सुनत हरषाहीं ।	...	१,२,३,४,५,६,७ – भनितिं; ८–भनित
१।७।१३ जग बहु नर **सरिसर** सम भाई ।	...	१,२;४,५–सरि सर; ३,६,७,८–सरसरि; (सुरसरि)
१।७।१४ सज्जन **सकृत** सिंधु सम कोई ।	...	१,३,४,५,६–सकृत; ७–सुकृत; २–सकृति
१।८ पैहहिँ सुख सुनि सुजन **जन,**	...	१,२,३,४,५–जन; ६,७,८–सब
१।८।२ हंसहि बक **गादुर** चातकही ।	...	१,२,३,४,६,८–गादुर; ५,७–दादुर
१।८।८ कबि न होउँ नहिँ **चतुर** प्रबीनू ।	...	१,२,३,४,५,७–चतुर; ६,८–बचन
१।८।११ सत्य कहौँ लिखि **कागद** कोरे ।	...	४,५,७–कागद; १,२,३,६,८–कागर
१।१० गिरा **ग्राम्य** सिय राम जस,	...	१,२,३,६,७,८–ग्राम्य; ४,५-ग्राम
१।१०।७ सिर धुनि गिरा **लगति** पछिताना ।	...	१,२,३,४,५,७–लगति; ६,८–लगत

१।१०।८ स्वाती सारद कहहिं सुजाना। …	१,२,३,४,५,६,७ – स्वाती सारद; ८–स्वाति सारदा
१।११।४ धिग धरमध्वज धंधक धोरी। …	१,२,३,४,५,७–में भा० का पाठ है; ८–धीग; ६–धीग धरमध्वज धंधरच
१।११।६ थोरेहि महँ जानिहहिं सयाने। …	१,२,३,–थोरेहि; ४,५,६,७, ८–थोरे महुँ
१।११।७ समुझि बिबिधि बिनती अब मोरी।	१,२,३–बिनती अब; ४,५,६, ७, ८–बिधि बिनती
१।११।८ एतेहु पर करिहहिं जे असंका। …	१,२,३–जे असंका; ४,५,७–जे संका; ६,८–ते असंका
१।११।८ मोहि ते अधिक ते जड़ मति रंका। …	१,२,३,४,५,७,८–ते; ६–जे
१।१२।६ जेहि करुना करि कीन्ह न कोहू। …	१,३,४,५,६,८–जेहिं; २–जेहि; ७–तेहि
१।१२।१० तेहि मग चलत सुलभ मोहि भाई। …	१,२,३–सुलभ; ४,५,६,७, ८–सुगम
१।१३।६ प्रनवौं सबनि कपट छल त्यागे। …	१,२,३,४,५–छल; ६,७,८–सब
१।१४ करहु कृपा हरि जस कहौं, पुनि पुनि कहौं निहोरि। …	१,२,३–कहौं निहोरि; ४,५–कहहुँ निहोर; ६,७,८–करउ; निहोर
१।१४।७ होउ महेस मोहि पर अनुकूला। …	१,२–होउ महेस; ४,५,८–सोउ महेस; ६,७–सो उमेस; ३–सो महेस
१।१४।७ करहु कथा मुद मंगल मूला। …	१,२–करहु; ३,४,५,७-करउँ ६,८–करिहि
१।१६।७ जो अवतेरउ भूमि भय टारन। …	१,२,३,४,५,६,७–जो; ८–सो
१।१७ प्रनवौं पवन कुमार, खल बन पावक ज्ञान घर। …	१,२,३–ग्यानघर; ४,५,६, ७, ८– ज्ञानघन

१।१८ गिरा अरथ जल बीचि सम, देखिअत भिन्न न भिन्न ।	...	१,२,३,४,५,७ – देखिअत; ६, ८–कहिअत
१।१८।१ बंदौं नाम राम रघुबर को ।	...	१,२,३,४,५,६,७,८– नाम राम; (राम नाम)
१।१८।५ जान आदि कबि नाम प्रभाऊ ।	...	१,२ प्रभाऊ; ३,४,५,६,७, ८–प्रतापू
१।१८।५ भयेउ सुद्ध कहि उलटा नाँऊ ।	...	१,२–कहि उलटा नाँऊ; ३,४, ५,६,७,८–करि उलटा जापू
१।१८।६ जपि जेइँ पिय संग भवानी ।	...	१,२,३,४,५,६,७,८–जपि जेइँ (जपी जाइ)
१।१९।३ कहत सुनत समुझत सुठि नीके	...	१,२,३,४,५,७–समुझत; ६, ८– सुमिरत
१।१९।४ ब्रह्म जीव इव सहज सँघाती ।	...	१,२,३,४,५–इव; ६,७,८–सम
१।१९।८ जन मन कंज मंजु मधुकर से ।	...	१,२,३,५-कंज मंजु; ४,६,७,८– मंजु कंज
१।२० तुलसी रघुबर नाम के, बरन बिराजित दोउ ।	...	१,२,३-बिराजित; ४,५,६,७,८– बिराजत
१।२१ तुलसी भीतर बाहरौ जौ,	...	१,२,३,४–बाहरौ; ५–बाहेरौ ; ६,८—बाहरहु; ७—बाहिरउ; (बाहिरौ)
१।२१।२ जानी चहहिँ गूढ़ गति जेऊ ।	...	१,२,३,४,६–जानी; ५,७,८– जान
१।२१।३ नाम जीह जपि जानहिँ तेऊ ।	...	१, २, ३, ४, ७–जानहिं; ५– जानहि; ६, ८–जानहु
१।२१।४ साधक नाम जपहिँ लौ लाए ।	...	१,२,३,–लौ; ४,५,६,८–लय; ७–लउ
१।२२ नाम पेम पीयूष ह्रद तिन्हहु किए,	...	१,२,३,६–पेम; ४,५,७,८-प्रेम
१।२२।२ हमरे मत बड़ नाम दुहूँ ते ।	...	१,२,३–हमरे; ४,५,६,७,८– मोरे

१।२२।३ प्रौढ़ि सुजन जनि जानहिँ जन की ।	१,२,६,८–प्रौढ़ि; ३,४,५,७–प्रौढ़
१।२४।५ राम सकल कुल रावन मारा …	१,२,३,–सकल कुल; ४,५,६,७,८–सकुल रन
१।२५।२ सुक सनकादि साधु मुनि जोगी ।…	१,२,३,५,४,७–साधु; ६,८–सिद्ध
१।२५।३ जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू ।…	१,२,३,४,५,६,७-हरि;८–हर
१।२५।५ थापेउ अचल अनूपम ठाऊँ । …	१,२–थापेउ;३,४,५,६,७,८–पायेउ
१।२५।७ अपत अजामिल गज गनिकाऊ ।…	१,२,३, ४, ५, ८–अपत;६–अपरु ७–जपत
१।२६ जो सुमिरत भयो भाँग ते, … तुलसी तुलसीदास । …	१,२,३,४,५, ६, ८–भयो… तुलसी; ७–भए…तुलसी
१।२६।३ द्वापर परितोषन प्रभु पूजे । …	१,२,३,४,५–परितोषन;६,७,८–परितोषत
१।२६।५ सुमिरत सकल समन जंजाला । …	१,२,३–जंजाला;४,५,६, ८–समन सकल जग जाला; ७–सुखद सुलभ सब काला
१।२६।७ नहिँ कलि करम न भगति बिबेकू ।…	१,२,३,४,५,६, ७,८–भगति; (धरम)
१।२७ जापक जन प्रहलाद जिमि……। …	१,२,३,४,५,६,७, ८–जिमि; (इव)
१।२७।११ को जग मंद मलिन मन मो ते ।…	१,२,३,४,५,७–मन; ६, ८–मति
१।२८।३ भगति भोरि मति स्वामि सराही ।…	१,२,३,५,७–भोरि; ४,६,८–मोरि
१।२८।४ कहत नसाइ होइ हिय नीकी । …	१, २, ३, ६, ८–होइ हिअ; ४,५,७–होइ हिय; (होइहि अति)
१।२८।८ राज सभा रघुबीर बखाने । …	१,३,४,५,७–राज सभा;२,६,८–राम सभा

१।२६ तुलसी कहीँ न राम से साहिब सील निधान।	···	१,२,३,४,५–कहीं; ६,७,८–कहूँ
१।२६।६ सबदरसी जानहि हरिलीला।	···	१,२,३,५,६,८-सबदरसी;४,७–समदरसी; (सभदरसी)
१।३० स्रोता······कथा राम कै गूढ़, किमि समुझौं मैँ।	···	१,२,३,४,५,६,७, ८–कै ··· समुझौं; मैं;(की···समुझै यह)
१।३०।२ भाषा बंध करबि मैँ सोई।	···	१, २, ३, ४, ५, ७–भाषा बंध; ६, ८–भाषा वद्ध
१।३१।१२ राम भगत जन जीवन धन से।	···	१,२,३,४,५,७,८-धन; ६-धर
१।३३।२ पुनि सबही प्रनवौँ कर जोरी।	···	१,२,३,४,५,७–प्रनवौँ; २–प्रनवों; ६, ८–बिनवौं
१।३४।३ लोक समस्त बिदित अति पावनि	···	१,२,३,४,५,६,७,८– अति; (जग)
१।३४।१० कलि कुचालि कुलि कलुष नसावन।		१,२,३,४,५,६,७,८– कुलि; (कलि)
१।३६।३ उपमा बिमल बिलास मनोरम।	···	१,२–बिमल; ३, ४,५,७,८–बीचि; ६–बीच
१।३६।१३ छमा दया द्रुम लता बिताना।	···	१,२,३,४,५,६–दम; ७,८–द्रुम
१।३६।१४ सम जम नियम फूल फल ज्ञाना।	···	१,२,३,६,–सम जम नियम; ४,५–सम जम नेम; ७–संयम
१।३६।१४ हरि पद रति रस बेद बखाना।	···	१,२,३,४,५,७–रति रस; ६–८–रस बर
१।३८।६ सोइ सादर मज्जन सर करई।	···	१, २, ३, ४, ५–मजन सर; ६,७,८–सर मजन
१।३८।७ जिन्ह के राम चरन भल चाऊ।	···	१,२,३,४–चाऊ; ५,६,७, ८–भाऊ
१।३८।११ चली सुभग कबिता सरिता सो।	···	१,२,३,४,५,६,८-सो; ७–सी
१।४०।४ घाट सुबंध राम बर बानी।	···	१,२,३,७–सुबंध;४,५–सुबंधु; ६, ८–सुबद्ध

१।४०।७ परब जोग जनु जुरेउ समाजा ... १,२,३,४,५,७–जुरेउ; ६,८–जुरे

१।४१ कलि खल अघ अवगुन कथन। ... १, २,३, ४, ५,७–खल अघ; ६,८–अघ खल

१।४२।१ लघुता ललित सुबारि न खोरी। ... १,२,३,४,५,६–खोरी; ७,८–थोरी

१।४२।२ अदभुत सलिल सुनत गुन कारी। ... १,२,३,४,५,७,८– गुनकारी; ६ सुखकारी

१।४३ मति अनुहारि सुबारि गुन,
गन गनि मन अन्हवाइ। ... १,२,३,४,५,७,८–गनि; ६–गनत

१।४३ अब रघुपति पद पंकरुह,
हिय धरि पाइ प्रसाद। ...
कहौं जुगल मुनिवर्ज कर,
मिलन सुभग संवाद। ... १,२,३,४,५,७,८ में भा० का पाठ है; ६–भरद्वाज जिमि प्रश्न किय, जागबलिक मुनि पाय। प्रथम मुख्य संवाद सोइ, कहिहौं हेतु बुझाय।

१।४३।७ जाहिँ जे मज्जन तीरथ राजा। ... १,२,३,४,५,७,८ – मज्जन ६–मज्जहिँ

१।४४।८ कहत सो मोहि लागति भय लाजा। ... १,२,३–लागति; ४,५,६,७,८–लागति; (लाग)

१।४५।८ भए रोष रन रावन मारा। ... १,२–भए; ३,४,५,६,७,८–भएउ

१।४६।१ जैसे मिटै मोह भ्रम भारी। ... १,२,३,४,५–मोह; ६,७,८–मोर

१।४८ गुपुत रूप अवतरेउ प्रभु,
गएँ जान सबु कोइ। ... १,२,३,७–गुपुत ... गये; ४,५–गुप्त ... गए; ३,७–गए; ६,८–गुप्त ... गएँ

१।४८।६ मृग बधि बंधु सहित प्रभु आए। ... १,२,३,४,५,७–प्रभु; ६,८–हरि

१।४८।७ बिरह बिकल इव नर रघुराई। ... १,२–इव नर; ३,४,५,६,७ ८–नर इव

१।४८।८ देखा प्रगट दुसह दुख ताके।	···	१,२,३,४,५,७–दुसह; ६,८–बिरह
१।४९।१ उपजा हिय तेहि हरष बिसेखा।	···	१,२,–तेहि; ३,४,५,६,७,८–अति
१।४९।६ सुर नर मुनि सब नावहिँ सीसा।	···	१,२,३,४,५,७–नावहिँ; ६,८–नावत
१।५०।६ संसय अस न धरिअ तन काऊ।	···	१,२,३,५–तन; ७–मन; ४,६,८– उर
१।५१।४ करइ बिचार करौँ का भाई।	···	१,२,३,४,५,७–करइ; ६,८–करहिं
१।५१।५ इहाँ संभु अस मनु अनुमाना।	···	१,२,३,४,५,६,८–इहाँ; ७–उहाँ
१।५१।८ अस कहि जपन लगे हरि नामा।	···	१,२,३,४,५,७–जपन लगे; ६,८–लगे जपन
१।५२।३ सब दरसी सब अंतरजामी।	···	१,२,३,४,५,६,८–सबदरसी; ७–समदरसी
१।५२।७ पिता समेत लीन्ह हरि नामू।	···	१,२,३,५–हरि; ४,६,७,८–निज
१।५५।१ भय बस प्रभु सन कीन्ह दुराऊ।	···	१,२,३,४,५–प्रभु; ६,७,८–सिव
१।५५।३ मोरे मन प्रतीति अति सोई।	···	१,२,३,४,५,६,८–अति; ७–असि
१।५६ परम प्रेम तजि जाइ नहिं, किए प्रेम बड़ पाप।	···	१,२,३,४,५–प्रेम तजि जाइ नहिं; ६,८–पुनीत न जाइ तजि; ७–प्रेम नहिं जाइ तजि
१।५६।१ सुमिरत राम हृदय अस गावा।	···	१,२,३,४ ५,६,७,८–आवा
१।५७ बिलग होत रस जाइ, कपट खटाई परत हीँ।	···	१,२,३–होत...ही;४,५,६,७ होइ...ही; ८–होइ...पुनि
१।६१ तौ मैं जाउँ कृपा अयन, सादर देखन सोइ।	···	१,२,३–अयन; ४,५,६,७,८–यतन

१।६१।८ नहिँ भलि बात हमारेहि भाए।	···	१, २, ३, ४, ५,७–हमारेहि; ६,८– हमारें भाएं
१।६२।६ पाछिल दुख अस हृदय न व्यापा।		१,२,३,४,५,७ अस हृदय न; ६,८–न हृदय अस
१।६३।४ काढ़िअ तासु जीभ जो बसाई।	···	१,३,४,५–काढ़िअ;२,६,७,८ –काटिअ
१।६५।२ सहज बैर सब जीवन त्यागा।	···	१,२,७,–जीवन्ह;६,८–जीवइ; ३,४,५–जीवन
१।६५।६ पद पखारि तब आसन दीन्हा।	···	१,२,३–तब; ४,५,६,७,८ –बग
१।६५।७ चरन सलिल तव भवन सिचावा।	···	१–तव; २,३,४,५,६,७,८– सब
१।६५।८ निज सौभाग्य बहुत बिधि बरना।	···	१,२,३,४,५,७–बिधि; ६,८ –गिरि
१।६६।६ त्रिय चढ़िइहिँ पतिब्रत असि धारा।	···	१२,३,६,८–त्रिय; ४,५,७– तिय
१।६७।५ मिलन कठिन भा मन संदेहू।	···	१,२,३,४,५,७–भा मन; ६,८–मन भा
१।६७।७ झूठि न होइ देवरिषि बानी।	···	१, २, ३,४,५,६,७,८–झूठि; (झूठ)
१।६८।५ बुध कछु तिन्ह कर दोष न धरहीँ।	···	१,२,६,८–कर; ३,४,५,७– कहँ
१।६८।८ समरथ को नहिँ दोष गुसाईँ।	···	१,२,३,४,५ को; ६,८–कहु; ७–कहँ
१।६९ जौँ ऐसहि इसिखा करहिँ नर, बिबेक अभिमान।	···	१,२–अैसहिं इसिखा करहिं नर; ३,४,५,६,७,८ – अस हि सिखा करहिं नर जड़
१।७० होइहि अब कल्यान सब,	···	१,२,३,४,५–अब कल्यान सब; ६,७,८–यह कल्यान अब

१।७०।२ नाथ न मैं बूझे मुनि बैना। ...	१,२,३-बूझे; ४,५,६,८-समुझे; ७-समुझउँ
१।७१ प्रिया सोच परिहरहु अब, पारबती निरमयेउ। ...	१, २, ३-अब...पारबती; ४,५,६,७,८-सब...पारबतिहि
१।७१।४ अस विचारि सब तजहु असंका। ...	१,२,३-सब; ४,५,६,७,८-तुम्ह
१।७२।८ भएउ विकल मुख आव न बाता। ...	१,२-भएउ;५,६,७, ८-भए; ३,४-भये
१।७३।६ बेलपाति महि परै सुखाई। ...	१,२,३,४,५-बेलपाति; ७-बेलपात; ६,८-बेलवाती
१।७४।४ मिलिहि जबहिँ अब सप्त रिषीसा। ...	१,२,३-जबहिँ अब; ४,५,-६,७,८-मिलहि तुम्हहि जब
१।७५ चिदानंद सुखधाम सिव, बिगत मोह मद काम। ...	१,३,४,५,७,८-काम; २,६-मान
१।७६।३ मातु पिता प्रभु गुर कै बानी। ...	१,२,३-प्रभु गुरु; ४,५,६,७,८-गुरु प्रभु
१।७७ गिरिहि जाइ पठएहु भवन। ...	१,२,३-जाइ पठएहु;४,५,७-प्रेरि पठवहु; ६, ८-प्रेरि पठएहु
१।७७।३ हम सन सत्य मरम सब कहहू। ...	१,२, ३, ७-सब; ४, ५, ८-किन; ६-की न
१।७७।५ कहत मरम मन अति सकुचाई। ...	१,२,३,४,५,७-मरम; ६,८-बचन
१।७७।७ नारद कहा सत्य हम जाना। ...	१,२,३,४,५-सत्य हम; ७-सत्त सोइ; ६,८-सत्य सोइ
१।७७।८ चहिअ सिवहि सदा भरतारा। ...	१,२,३,७-सिवहि सदा; ४,५,६,-सदा सिवहि
१।७८।४ सुनत बचन कह बिहँसि भवानी।	१, १, ३, ४, ५-बचन कह बिहसि; ६,७, ८-बिहसि कह बचन

१।८०।२ अब मैं जनम संभु सँ हारा। ···	१,२,३,४–सँ; ५–से; ६, ७, ८–हित
१।८०।५ जनम कोटि लगि रगरि हमारी।···	१,२,३, ४, ५, ७, ८–रगरि; ६–रगर
१।८१।३ तेहिँ सब लोक लोकपति जीते। ···	१,२,३, ४, ५, ८–तेहिं; ६–तेइ; ७–ते
१।८१।६ भए देव सुख संपति रीते। ···	१,२, ३, ४, ५, ७, ८–सुख; ६–सब
१।८१।८ तब बिरंचि पहिँ जाइ पुकारे। ···	१,२,३,४,५–पहिँ; ६,७,८–सन
१।८२।७ एहि बिधि भलेहि देव हित होई।···	१,२,३,४, ५, ७, ८–भलेहि; ६–भले
१।८२।८ अस्तुति सुरन्ह कीन्हि अस हेतू। ···	१,२,३,४,५, ७–अस; ६,८–अति
१।८२।८ प्रगटेउ विषम बान झष केतू। ···	१,२,३,४ ५,७,८–बान झष; ६–बारिचर
१।८३।२ परहित लागि तजै जे देही। ···	१,२,४, ५, ६–जे; ७, ८–जो
१।८३।३ सुमन धनुष कर लेत सहाई। ···	१,२,३,४,५–लेत; ६,७, ८–सहित
१।८४।८ सिद्ध बिरक्त महामुनि जोगी। ···	१,२,३, ४, ५, ७, ८-सिद्ध; ६–सदा
१।८५ अबला बिलोकहिँ पुरुषमय जग, पुरुष सब अबलामय।	१,२, ३, ४, ५, ७, ८–सब; ६–मय
१।८५।६ कुसुमित नव तरु सखा बिराजा।···	१,३,४,५–सखा; ६,८–राज; २,७–जाति
१।८५।७ परम सुभग सब दिसा बिभागा।···	१,२,३,४,५,७,८–सब;६-दस
१।८६।१ देखि रसाल बिटप बर साखा। ···	१,२,३, ४, ५, ७, ८–रसाल ६–बिसाल
१।८६।३ छाड़े बिषम बिसिष उर लागे। ···	१, २, ३, ४, ५, ७–बिसिष; ६,८–बान

१।८७।४ देवन्ह समाचार सब पाए।	...	१,२,३,४,५,७, ८-सब; ६-यह
१।८८।५ सुनि बिधि बिनय समुझि प्रभु बानी।		१,२,३,४, ५, ७, ८-बिनय; ६-बचन
१।८८।७ तुरतहिँ बिधि गिरि भवन पठाए।	...	१,२,३,४,५,७,८-बिधि; ६-हिमि
१।८९ कहा हमार न सुनेहु तब, नारद के उपदेस।	...	१,२,३,४, ५, ७-के; ६-कर; ८-सुनहु...के
१।९०।६ जाइ बिधिहिं तिन्ह दीन्हि सो पाती।		१,२, ३, ४, ५, ७, ८-तिन्ह दीन्ही; ६-दीन्ही सो
१।९०।७ लगन बाचि बिधि सबहि सुनाई।	...	१,३,४,५-बिधि; २-अस; ७,८-अज; ६-तेहि
१।९०।७ हरषे मुनि सब सुर समुदाई।	...	१,२,३,४,५,८-मुनि सब;७-मुनिवर; ६-सुनि सब
१।९१ होहिँ सगुन मंगल सुभद, करहिं अपछरा गान।	...	१,२,८-सुभद; ३,४,५-सुभग; ६,७-सुखद
१।९१।५ कर त्रिसूल अरु डमरु बिराजा।	...	१,२,३,४,५,७,८-डमरु; ६-डवरु
१।९३ तन षीन कोउ अति पीन पावन, कोउ अपावन गति धरें।	...	१,२,३,४,५,६,७,८ – गति; (तनु)
१।९३।१ कौतुक बिबिध होहिँ मग जाता	...	१,२,३,४,५,७,८-होहिं; ६-होत
१।९३।५ सहित समाज सहित बर नारी।	...	१,२,३,४,५,८-सहित समाज सहित; ६-सहित समाज सोह; ७-सकल समाज सहित
१।९३।६ गए सकल तुहिनाचल गेहा।	...	१,२,३,४,७-तुहिनाचल; ६, ५,८-तु हिमाचल; (आए सकल हिमांचल)

१।६३।८ पुर सोभा अवलोकि सुहाई।	...	१,२,३,४,५,७,८–सुहाई; ६–न जाई
१।६४ जगदंबा जहँ...बरनि कि जाइ।	...	१,२,३,४,५,७,८–कि जाइ; ६–न जाइ
१।६४ रिधि सिधि संपति सकल, सुख नित नूतन।	...	१,३,५में भा० का पाठ है; २,६,८–रिद्धि सिद्धि संपत्ति सुख; ४, ७–रिद्धि सिद्धि संपत्ति सकल सुख
१।६४।१ नगर निकट बरात सुनि आई।	...	१,२,३,४,५,७,८–सुनि; ६–जब
१।६४।२ करि बनाव सजि बाहन नाना।	...	१,२,३,४,५,७–सजि; ६,८–सब
१।६४।७ कहिअ काह कहि जाइ न बाता।	...	१,२,३,४,५,७,८– काह... जाइ; ६–जात
१।६४।८ बरु बौराह बरद असवारा।	...	१,२,३,४,५,६,७–बरद; ८–बसह
१।६५।४ अबलन्ह उर भय भएउ बिसेषा।	...	१,२ अबलन्ह; ६,७ अब-लन्हि; ३,४,५–अबलन
१।६६।१ नारद कर मैं काह बिगारा।	...	१,२,४,५,६,७–काह; ३,८–कहा
१।६६।१ भवन मोर जिन्ह बसत उजारा।	...	१,२,३,४,५,७,८–जिन्ह; ६–जेहि
१।६६।६ सो न टरै जो रचै बिधाता।	...	१,२,३,४,५,७,८–टरै; ६–मिटै
१।६६।८ तुम्हसन मिटहिँ कि बिधि के अंका।	...	१,२,३,४,५,८–के; ६–कर; ७–कै
१।६६।३ जाइ न बरनि बिरंचि बनावा।	...	१,२,३,४,५,७,८–बिरंचि; ६–बिचित्र
१।६६।७ जगदंबिका जानि भव भामा।	...	१,२,३,४,५,७,८–भव भामा; ६– भव बामा

१।९९।८ जाइ न कोटिहु बदन बखानी। ···	१,३,४,५,७,८–कोटिहु; २–कोटि बहु; ७–कोटिन
१।१००।४ जय जय जय संकर सुर करहीं। ···	१,२,३,४,५,७,८-सुर; ६–जै जै संकर सुर सब करहीं।
१।१०१ नाथ उमा मम प्रान प्रिय, गृह किंकरी करेहु। ···	१,२,३,४,५,७,८–प्रिय; ६–सम
१।१०१।४ बचन कहत भरे लोचन बारी।···	१,२,३,८–भरे; ५,६,७–भरि; ४–भर
१।१०१।७ परम प्रेम कछु जाइ न बरना। ···	१,२,३,४,५,७,८ प्रेम; ६–सो सप्रेम मोहि जात न बरना
१।१०२ जननिहि बहुरि मिली चलीँ, ···	१, २,३,४,५,७,८–जननिहि; ६–जननी
फिरि फिरि बिलोकति मातु तन, जब सखी लै सिव पहिं गईं ···	१,२,३,४,५,७–जब; ६,८–तब
जाचक सकल संतोषि संकर, उमा सहित भवनहि चले। ···	१,२,४,७–भवनहिं; ३,५,६–भवन; ८–भवने
१।१०२।७ जब जनमेउ षटबदन कुमारा। ···	१, २–जब; ४, ५, ७–तब जनमे; ३,६,८–तब जनमेउ
१।१०३ यह उमा संभु बिवाह जे नर, नारि कहहिँ जे गावहीं। ···	१,२,३,४,६,८–कहहिं ५,७–सुनहिं
१।१०३।२ नयनन्हि नीरोमावलि ठाढ़ी। ···	१,२,३,८–नयनन्हि; ४,५,६,७–नयन
१।१०३।८ पुनि करि रघुपति भगति देखाई।···	१,२,३,४,५,६,७,८–देखाई; (दृढ़ाई)
१।१०६।५ पति हिय हेतु अधिक मनमानी।···	१,२–मनमानी; ३,५–मन-माहीं; ४,६,७,८–अनुमानी
बिहँसि उमा बोली मृदु बानी। ···	१,२,७–मृदु बानी; ३,५,–हर पाहीं; ४,६,८–प्रिय बानी

१।१०६।१ जदपि जोषिता अन अधिकारी। ...	१,२,३,४,५,७–अन; ६,८–नहिं
१।११०।६ प्रश्न उमा कै सहज सुहाई। ...	१–कै; २,६,८–के; ४,३,५,७–कर
१।१११।६ तुम्ह समान नहिँ कोउ उपकारी। ...	१, २, ६, ७, ८–उपकारी; ३,४,५–अधिकारी
१।११२ राम कृपा ते हिमसुता, सपनेहु तव मनमाहिँ। ...	१,३ ४,५–हिमसुता;२,६,७,८–पारबति
१।११४।२ जिन्हहिं न सूझ लाभु नहिं हानी।	१,२३,४,५,७ जिन्हहि न; ६,८–जिन्ह के
१।११८।२ रघुबर सब उर अंतर जामी। ...	१,३,४,५,७,८-सब; २,६–बस
१।११६।३ सुखी भइउँ प्रभु चरन प्रसादा। ...	१,२,४,५,७–भइउँ; ३–भइउँ अब; ६,८–भएउँ
१।१२०।१ सुनु गिरिजा हरि चरित सुहाए। ...	१,२,६,७,८–सुहाए; ३,४,५–सुहावा
१।१२२।१ तीनि जनम द्विज बचन प्रमाना। ...	१,३,४,५,७–प्रमाना; २,६,८–प्रवाना
१।१२३।१ तासु साप हरि कीन्ह प्रवाना। ...	१,३,४;५,७– कीन्ह २,६,८–दीन्ह
१।१२३।६ नारद विष्नु भगत पुनि ज्ञानी। ...	१,२,३,४,५,८–पुनि; ६–मुनि; ७–पुनि जानी
१।१२५।३ काम कृसानु जगावनि हारी। ...	१,१–जगावनि; ३'४,२,५,६,७,८–बढ़ावनि
१।१२६ गहेसि जाइ मुनि चरन, कहि सुठि आरत मृदु बैन।	१,२,३,४,५,६,७–कहि सुठि आरत मृदु बैन; ८–चरन तब कहि सुठि आरत बयन
१।१२६।८ तिमि जनि हरिहि सुनायहु कबहूँ। ...	१,७–सुनायहु; ३,४,५–सुनाएहु; १,६,८–सुनावहु
१।१२७।५ हरषि मिले उठि रमा निकेता। ...	१,२,७–मिले; ६,८–मिलेउ; ३,४,५–उठे प्रभु कृपा

१।१२८।८	सुनहु कठिन करनी ते केरी। ...	१,२,३,४,५,६,७,८–तेहि
१।१२६।४	श्री बिमोह जिसु रूपु निहारी। ...	१,२,३,६,८–जिसु; ४,५,७–जेहि
१।१२६।७	पुरबासिन्ह सब पूछत भयऊ। ...	१,२,३,४,५,६,८-सब;७–सन
१।१३०।८	जप तप फलु न होइ तेहि काला। ...	१,२,४,५,६,७,८–तेहि; ३–येहि
१।१३०।८	है बिधि मिलै कवन बिधि बाला। ...	१,२,६,८–है; ३,४,५,७–हे
१।१३३।३	करहिँ कूटि नारदहि सुनाई। ...	१,२,३,४,६,८–कूटि; ५,७–कूट
१।१३४।२	पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीँ ...	१,२,३,४,५,६,७,८–उकसहिं (उसकहिँ)
१।१३४।४	दुलहिनि लै गये लछि निवासा। ...	१,४ लै गये; ३,५–लै गै; ७,८–लै गे; ६–ले गे; २–ले गये
१।१३६।३	तब तब कथा मुनीसन्ह गाई। ...	१,२,३,४,५,६,८–तब तब कथा मुनीसन्ह गाई; ७ - तब तब कथा बिचित्र सुहाई। परम पुनीत मुनीसन्ह गाई
१।१३६।३	परम पुनीत प्रबंध बनाई। ...	१,२,६,८–परम पुनीत प्रबंध बनाई;३,४,५–परम बिचित्र प्रबंध बनाई।
१।१४०।२	जेहि कारन अज अगुन अरूपा। ...	१,२,३,४,५,६, ७, ८–जेहि; (केहि)
१।१४१।३	धुव हरि भगत भएउ सुत जासू। ...	१,३,४–धुव; २, ६, ८–ध्रुव; ५,७–ध्रुव हरि भक्त
१।१४१।८	प्रभु आयसु बहु बिधि प्रतिपाला। ...	१,३,४,५–बहु; २,६, ८–सब
१।१४२।१	बरबस राज सुतहि नृप दीन्हा। ...	१,७-नृप;३,४,५–पुनि; २,६ ८–तब
१।१४२।८	संत समाज नित सुनहिँ पुराना। ...	१,३,५,५,७,८–सत,२,४ संत
१।१४३।५	निजानंद निरुपाधि अनूपा। ...	१,२, ३, ६, ७, ८–निजानंद; ४, ६–चिदानंद

१।१४४।१ ठाढ़े रहे एक **पद** दोऊ। ··· १,२,३,४,५, ६, ७, ८–पद; (पग)

१।१४४।६ मागु मागु धुनि भै नभ बानी।··· १,२,३,४,५–माँगु माँगु धुनि; ७–बर भइ; ६,८–बरु भै

१।१४८।१ धरि धीरजु **बोले** मृदुबानी। ··· १,३,४,५,६,७–बोले; २, ८–बोलीं

१।१४६।५ जदपि **भगत** हित तुम्हहि सुहाई।···१, ३, ४, ५, ७–भगत; २–भगति; ६,८–भगति···सोहाई

१।१४६।७ कहा जो प्रभु **प्रवान** पुनि सोई।··· १, २, ३, ४, ६, ८–प्रवान; ५–प्रमान

१।१५०।१ सुनि मृदु गूढ़ रुचिर **बच** रचना।···१,२,६–बच; ३,४,५, ८, ७–बर

१।१५०।६ मम जीवन **मिति** तुम्हहि अधीना··· १,२,३,६,८–मिति; ४,५,७–तिमि

१।१५६ **आपुनु** आवै ताहि पहि,
ताहि ताहाँ लै जाइ। ··· १,२,६–आपुनु;७,८–आपु न; ३,४,५–ताहि ले

१।१६१।६ तब बोला तापस **बग ध्यानी**। ··· १, २, ३, ६, ८–बग ध्यानी; ४,५,७–बक ध्यानी।

१।१६३ मोहि तोहि पर अति प्रीति,
सोइ चतुरता **बिचारि** तव। ··· १,२,३,४,५,६,८–बिचारि,७–देखि

१।१६४।४ **चलै** न ब्रह्मकुल **सन** बरिआई।··· १,२–चलै न...सन;३,४,५,६,७,८–चल न

१।१६७।३ मन **क्रम** बचन भगत तैं मोरा।··· १,२, ३, ४, ५–क्रम; ६, ८–तन

१।१६७।४ जोग जुगुति **जप** मंत्र प्रभाऊ।··· १,२,३,४,५–जप; ६, ७, ८–तप

१।१७४।२ **बिरचत** हंस काग किअ जेही।··· १,२,३,४,५,७–बिरचत;६,८–बिरंचरत

१।१७५।८ बरनि न **जाहिं** बिस्व परितापी।··· १,३,४,५–जाहिं; २,६,७,८–जाइ

१।१७८।८ एक बार कुबेर **पर** धावा।	१,२,३,७,८–पर; ६–कहु; ४, ५–बेर...पर
१।१८१।५ गर्जत गर्भ **स्रवत** सुर रवनी। ...	१,२,३,४,५–स्रवत; ६,७,८–श्रवहिं
१।१८१।८ देइ देवतन्ह गारि **पचारी**। ...	१,२,८–पचारी; ३,४, ५, ६, ७, ८–प्रचारी
१।१८२ **मंडलीकमनि** रावन राज, ...	१,२,३,४,५,६, ७–मंडलीक-मनि; (मंडलीकपति)
१।१८२।१ सो सब जनु **पहिलेहि** करि रहेऊ। ...	१,२,४, ५, ७, ८–पहिलेहि; ३,६–पहिले
१।१८२।७ **देव** गुरु मान न कोई। ...	१,२,३,४,५, ६, ७, ८–देव; (वेद)
१।१८२।८ नहि हरि भगति **जज्ञ तप ग्याना**।	१, २, ८–जज्ञ तप ग्याना; ३, ४, ५, ६–जज्ञ जप ज्ञाना; ७- जोग जप दाना; (जज्ञ जप दाना)
१।१८३।३ ते जानेहु निसिचर **सम** प्रानी। ...	१, ३, ४, ५, ७–सम; २, ६, ८–सब
१।१८३।४ अतिसय देखि धर्म कै **हानी**। ...	१,२,४,५,७–हानी; ३,६,८–ग्लानी
१।१८४ सुर मुनि गंधर्वा...**लोका...सोका**।	१,३,४,५,७,८–लोका, सोका; २,६–लोक...सोक
१।१८४।२ कोउ कह पयनिधि **बस प्रभु** सोई। ...	१,२,३,४,५,७, ८–बस प्रभु; ६- मन बस
१।१८४।७ प्रेम ते प्रभु **प्रगटै** जिमि आगी। ...	१,२,३, ४, ५, ६, ८–प्रगटै; ७–प्रगटे
१।१८६ जय जय; भगवंता; प्रियकंता; मकुंदा; मुनिवृंदा; सच्चिदानंदा; बरूथा; जूथा।	१,३,४,५,६,८–में भा० का पाठ है; २, ६–भगवंत; प्रिय कंत; मुकुंद; मुनिवृंद; सच्चिदानंद, बरूथ; जूथ;

जो भव भयभंजन मुनि मन रंजन, गंजन बिपति बरूथा । …	१,२,३,४,५–गंजन;७–खंजन; ६,८–खंडन ।
१।१८६।८ तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना । …	१,६–फिरेउ; २,३, ४, ५, ७, ८ फिरे
१।१८७ बानर तनु धरि धरि महि हरि पद,	१,२,३–धरि महि; ५, ६, ७–धरि धरनि; ४, ८–धरनि महँ
१।१८७।५ गिरि कानन जहँ तहँ महि पूरी ।…	१,३,४,५–महि; २ ६, ७,८–भरि
१।१८७।५ रहे निज निज अनीक रुचि रूरी ।…	२,६,५–रुचि रूरी; ३, ४,७, ८–रचि
१।१८८।३ निज दुख सुख सब गुरहि सुनाएउ ।	१,२,३, ४, ७–सब गुरहि; ५,६,८–सब गुरुहिं
१।१९३।२ ब्रह्मानंद मगन सब लोई । …	१,२,६, ८–लोई; ४, ५, ७–कोई; ३–नर लोई
१।१९४ गृह गृह बाज बधाव सुभ, प्रगटेउ प्रभु सुखकंद । …	१,१,७–प्रभु सुखकंद; ३,४,५–प्रभु प्रगटे सुखकंद; ६, ८–प्रगटेउ सुखमाकंद
१।१९५।५ बीथिन्ह फिरहिं मगन मन भूले ।…	१,२,५,८–मगनमन;३,४,६, ७–सफल रस
१।१९५।६ यह सुभ चरित जान पै सोई । …	१,२,३,४,५,६,५,८–सुभ
१।२००।४ भोजन करत देखि सुत जाई । …	१,२, ३, ४, ५, ६, ८–देखि; ७–देखि; (दीख)
१।२०२।३ चूड़ा करन कीन्ह गुर जाई । …	१,२,३,४,५ ६, ७–करन; ७–करम
१।२०३ भाजि चले किलकत मुख, दधि ओदन लपटाइ । …	१,२,६,८–भाजि …किलकत; ५, ७—भागि…किलकात; ३,४–भागि चले किलकत
२।२०५।७ एहू मिस देखौं पद जाई । …	१,२,३,६,८–एहू मिस देखौं; ४,५–एहि मिस मैं देखौं;७–यहि मिस देखौं प्रभु पद

१।२०६ करि मज्जन सरजू जल, गए भूप दरबार।	...१,३,४,५, ६–सरजू, २, ८–सरऊ; ७–सरयू
१।२०७ धर्म सुजस प्रभु तुम्ह कौं इन्ह कहँ; अति कल्यान।	...१,३,६–तुम्हकौं इन्ह कहँ४,५, ७–तुम्ह कहँ इन्ह; कहँ; २ ८–तुम्ह कौं इन्ह कहँ
१।२०७।५ सब २त प्रिय मोहि प्रान कि नाईं।	१,३,४, ५–प्रिय मोहिं; २,६, ८–प्रिय प्रान की; ७–मोहिं प्रिय प्रान
१।२०८।१ नील जलज तनु स्याम तमाला।	...१,२,३,४,५,६, ७, ८–जलज; (जलद)
१।२०८।४ मोहि निति पिता तजेउ भगवाना।	...१,२,३,५,६,८–निति; ४,७–हित; (लगि)
१।२०६।५ पावक सर सुबाहु पुनि जारा। ...	१,२,३,४,५,७–जारा; ६, ८–मारा
१।२०६।१० धनुष यज्ञ सुनि रघुकुल नाथा। ...	१,३,४,५,७,८–सुनि; २–कह; ६–करि
१।२११ तुलसिदास सठ तेहि भजु, छाड़ि कपट जंजाल। ...	१,२,३,६,८–तेहि; ४,५,५,७–ताहि
१।२१२।२ मनिमय जनु बिधि स्वकर सँवारी।	१,२,७–जनु बिधि; ३,४,४,५, ६,८–बिधि जनु
१।२१६ मख राखेउ सबु साखि जगु, जिते असुर संग्राम। ...	१,२,३,४,५,६,८–जिते; ७–जीति
१।२२०।१ जो न मोह यहु रूपु निहारी। ...	१,२,७–यहु; ३,४,४–यह; ६,८–येह
१।२२५।५ गुरु पद पदुम पलोटत प्रीते। ...	१,३,४,५,७–पदुम; २,६,८–कमल
१।२२८।१ देखन बाग कुँवर दुइ आये। ...	१,२,६,८ दुइ; ३,४,५,७–दोउ

१।२२८।४ एक कहइ नृपसुत तेइ आली।	…	१२,३,४,५,६,८-तेइ; ७-सोइ
१।२३०।४ फरकहिं सुभद अंग सुनु भ्राता।	…	१,२,८-सुभद;३,४,५,६,७-सुभग
१।२३०।५ मन कुपंथ पगु धरैं न काऊ।	…	१,२,६,७,८ में भा०का पाठ है; ३,४,५-भूलि न देहिं कुमारग पाऊ
१।२३०।७ नहिँ पावहिं परतिय मनु डीठी।	…	१,२,३,५,६,८-पावहिँ; ४,७-लावहिं
१।२३१।१ कहँ गये नृप किसोर मन चिंता।	…	१, २, ३, ४,५,६,८-चिंता; ७-चीता
१।२३२।१ नील पीत जलजात सरीरा।	…	१,२,३,४,५-जलजात; ६,८,७-जलजाभ
१।२३२।२ मोरपंख सिर सोहत नीके।	…	१,२.३,५,६.८-मोर पंख; ४,७-काकपच्छ
१।२३३।२ गुछ बीच बिच कुसुमकली के।	…	१;२,६,८-गुछ; ६,४.५,७-गुच्छे; (गुच्छ)
१।२३३ देषि भानुकुल भूषनहि, बिसरा सखिन्ह अपान।	…	१, २, ३,४,५.७,८-सखिन्ह; ६ सबै
१।२३३।१ धरि धीरजु एक आलि सयानी।	…	१, २,३, ४, ५.७,८-आलि, ६-अली
१।२३३।५ भयेउ गहरु सब कहहिं सभीता।	…	१,३,४,५-भयेउ; २,६,८-भये; ७-भयउ
१।२३३।६ पुनि आउब एहि बेरिआँ काली।	…	१,२,३-८-एहि बेरिआँ; ४,५-बिरिआ; ६, ७-यहि बरिया; (यहि बिरिया)
१।१३३।८ फिरी अपनपउ पितुबस जाने।	…	१,३,८-फिरी अपनपउ;४,५ ७-फिरी अपनपो; ६-फिरि आपनपौ
१।२३४।२ सुख सनेह सोभा गुन खानी।	…	१,२,७,८-गुन;३,४,५,६-कै

१।२३४।३ चारु चित्र भीतर लिखि लीन्हीं। ··· १,२,८-चित्त भीती; ६-बिचित्र भीति; ३,४,५,७-चित्र भीतर

१।२३४।७ नहिं तव आदि अंत अवसारा ··· १,२,२,६८-अंत; ४,५,७-मध्य

१।२३५ पति देवता सुतीय महुँ, मातु प्रथम तव रेख। १,२,३,४,५,७,८ सुतीय; ६-सो तीय

१।१३५।१ बरदायनी पुरारि पियारी। ··· १,२-बरदायनी पुरारि; ३ बरदाइनी पुरारि; ६-वरदाइनि त्रिपुरारि ४,५,७-बरदायिन पुरारि; ८-बरदायनी पुरारि

१।२३५।४ अस कहि चरन गहे बैदेही। ··· १,२,३,४,५, ८-गहे; ६, ७-गही

१।२३५।६ सादर सिय प्रसादु सिर धरेऊ। ··· १,२,३,४,५,७, ८-सिर, ६-उर

१।२३५।६ बोली गौरि हरषु हिय भरेऊ। ··· १,२,३,४,५,६,७-भरेउ; ८-भयेऊ

१।२३६ मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो बरु, ··· सहज सुंदरु साँवरो, रावरो। १,२,३,४,५, ६, ७-साँवरो, रावरो; ८-साँवरे, रावरे

१।२३६।७ सियमुख सरिस देखि सुखु पावा। ··· १,२, ३, ४, ५, ७, ८-सुखु पावा; ६-मन भावा

१।२३७।७ पंकज कोक लोक सुख दाता। १,२,३,४,५,७,८-कोक लोक ६-लोक कोक

१।२३८ जिमि तुम्हार आगमनु सुनि, ··· भए नृपति बलहीन। १,२,३,४,५,७, ८-जिमि··· आगवन; ६-तिमि

१।२३६।६ बाल जुवान जरठ नरनारी। ··· १,२, ३, ४, ५, ७, ८-बाल जुवान; (बालक जुवा) [यह काशिराज में नहीं है]

१।२४० उत्तम मध्यम नीच लघु, निज निज थल अनुहारि। ··· १,२,३, ४, ५, ७, ८-थल; ६-सब

१।२४०।५ देखिहिं भूप महारन धीरा। ··· १, २, ३, ४, ५, ६, ७–भूप; ८–रूप

१।२४१।३ सिसु सम प्रीति न जाति बखानी।···१,२, ८–जाति; ३,४,५, ६, ७–जाइ

१।२४१।६ रामहि चितव भाय जेहि सीया।···१,२,३,५,८–भाय; ४,६,७–भाव

१।२४१।६ सो सनेहु सुखु नहिं कथनीया। ··· १,२,३, ४, ५, ७, ८–सुखु; ६–मुख

१।२४१।८ एहि बिधि रहा जाहि जस भाऊ।···१,२८–येहि; ७–यहि; ३,४, ५, ६–जेहि

१।२४२।३ चितवनि चारु मार मनु हरनी।···१,२, ३, ४, ५, ७, ८–मनु। ६–मद

१।२४३।३ एकटक लोचन चलत न तारे।···१, २, ३, ८–चलत न तारे; ६, ७–टरत न टारे; ४–चलत न टारे; ५–टरै न टारे

१।२४४ मुनि समेत दोउ बंधु तहँ बैठारे महिपाल। ··· १,२,३,४,५, ७, ८–तहँ, ६–बर

१।२४४।३ बिनु भंजेहु भव धनुष बिसाला।···१,२,३,४,५,७,८–भव धनुष ६–शिव धनुक

१।२४४।३ मेलिहि सीय राम उरमाला। ··· १,२,३,४,५,७,८–उरमाला; ६–जयमाला

१।२४४।८ यह सुनि अवर महिप मुसुकाने।···१,२,८–अवर महिप; ६, ७–अपर भूप; ३, ४, ५–अपर महिप

१।२४५।१ व्यर्थ मरहु जनि गालु बजाई। ··· १,२,३,४, ५, ७, ८–व्यर्थ; ६–वृथा

१।२४५।१ मन मोदकन्हि कि भूप बताई।··· १,२,३,५,६,८–बताई;४,७–बुताई

१।२४६।३ सिय बरनिय तेइ उपमा देई।··· १,२, ३, ४, ५, ७, ८–सिय बरनिय तेइ; ६–सीय बरनि तेहि

१।२४६।४ जौं पटतरिअ तीय सम सीयां । ···	१,२,३,४,५,७, ८–सम; ६–महँ
१।२४७।३ भूषन सकल सुदेस सुहाए । ···	१,२,३, ४, ५, ७, ८–सुदेस; ६–अनूप
१।२४८ लागि बिलोकन सखिन्ह तन, रघुबीरहि उर आनि । ···	१,२,३,४,५,८–लागि;६,७–लगी
१।२४८।१ राम रूप अरु सिय छवि देखैँ···। ···निमेखैँ ।	१ २,३,४,५, ७, ८–देखैं... निमेखे; ६–देखी...निमेखी
१।२४६।७ तमकि ताकि तकि सिव धनु धरहीं	१,२,३,४, ५, ८–ताकि; ६, तमकि
१।२५० तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप, उठै न चलहि लजाई ।	१,२, ५, ६–उठै; ३, ४, ७–उठइ; ८–उठे
१।२५०। श्री हत भए हारि हिय राजा । ···	१,३,४,५,७,८–हिय; २–हियँ; ६-सब
१।२५१।२ तिल भरि भूमि न सके छड़ाई । ···	१,२,८–सके छड़ाई;३,४,५–सकेउ छुड़ाई; ६–उठाई; ७–सकै छुड़ाई
१।२५२।५ सकौं मेरु मूलक जिमि तोरी ···	१,२,७,८–जिमि; २, ४, ५, ६–इव
१।२५२।६ तौ प्रताप महिमा भगवाना, को बापुरो । ···	१–तौ···भगवाना, को; २, ४,५,७, ८- तव···भगवाना, का; २–को; ६–तव···बल-वाना, का
१।२५३ जौ न करौं प्रभु पद सपथ, कर न धरौं धनु भाथ । ···	१,२,३,४,५,६, ७, ८–भाथ; (पुनि न धरौ धनु हाथ)
१।२५३।१ लषन सकोप बचन जब बोले ।···	१,२,३,४,५,६,७-जब; ८–जे
१।२५३।८ ठाढ़ भए उठि सहज सुभाएँ ।···	१,२,३,४,५, ८–सुभाएँ; ६, ७–सुहाए
१।२५४।७ बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे। ···	१,२,३,४,५,७,८–सुर;६–सब
१।२५५।२ कोउ न बुझाइ कहै नृप पाही।···	१,२, ३, ४, ५, ६, ७–नृप; ८ गुरु

१।२५५।५ सखि बिधि गति कछु जाति न जानी।	···	१,२,७,८–कछु जाति न; ३, ४,५–कछु जाइ न; ६–कहि
१।१५६।३ मिटा बिषादु बढ़ी अति प्रीति।	···	१,२,७, ८–बढ़ी अति; ६–भइ अति; ३,४,५–भई मन
१।२५६।७ आजु लगँ कीन्हेउ तुअ सेवा।	···	१,२–लगँ कीन्हेउ तुअ;३,५, ७, ८–कीन्हिउँ तुव; ६–कीन्हेउ तव; ४–कीन्हिउ तव
१।२५७।३ सचिव सभय सिख देइ न कोई।	···	१,२,३,४,५,७,८–सभय; ६–सबय
१।२५७।६ सकल सभा कै मति भै भोरी।	···	१,२,३,४,५,६, ७–कै; ८–के
१।२५७।८ लव निमेष जुग सय सम जाहीं।	···	१,२, ६, ८–सय; ३, ४, ५, ८–सत
१।२५८ प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि, राजत लोचन लोल।	···	१,२,७-चितइ पुनि चितव; ३,४,५–चितव पुनि चितव; ६–चितै पुनि चितै
१।२५८ खेलत मनसिज मीन जुग, जनु बिधु मंडल डोल।	···	१,२,३,४,५,६,७,८–बिधु··· डोल; (बिध)
१।२५८।४ तन मन बचन मोर पनु साचा।	···	१,२.३,५,७,८–पनु; ४–पन; ६–मन
१।२५८।४ रघुपति पद सरोज चितु राचा।	···	१,२,३,८–चितु; ४,५,६,७–मन
१।२५८।७ प्रभु तन चितै प्रेम पनु ठाना।	···	१,२,७–पनु; २,४,५,६–पन; ८ तन
१।२५८।८ चितव गरुरु लघु व्यालहि जैसें।	···	१,२,३,८–गरुरु; ४,५,६,७–गरुड
१।२५६।६ राम बाहु बल सिंधु अपारू।	···	१,२,३,५,७,८–सिंधु;६–राम सिंधु घन बांह अपारू
१।२६०।१ देखी बिपुल बिकल बैदेही।	···	१,२,६,७,८–बिपुल बिकल; ३,३,५–बिकल अतिहि
१।२६०।३ का बरषा सब कृषी सुखाने।	···	१,२, ३, ४, ८–सब; ५, ६, ७–जब

१।२६०।६ पुनि **नभ धनु** मंडल सम भयऊ।···१,२,३,८—नभ धनु; ४,५ ६, ७—धनु नभ

१।२६०।८ तेहि छनु राम **मध्य धनु** तोरा।···१,२,४,५,६,७,८—मध्य धनु; (छन मध्य)

१।२६१ कोदंड **खंडेउ** राम तुलसी जयति बचन उचारहीं। ··· १,२,३,४,५,६, ७, ८-खंडेउ; (भंजेउ)

१।२६१ **बूड़** सो सकल समाज, **चढ़ा** जो प्रथमहि मोह बस। १,२, ८-बूड़···चढ़ा; ५,७—बूड़े चढ़े; ६—बूड़···चढ़े; ३, ४—बूड़ा···चढ़ा

१।२६१।८ मुदित कहहिं जहँ तहँ **नर** नारी।···१,२,३,४,४, ५, ७, ८—नर; ६—सब

१।२६२।१ भेरि ढोल **दुंदुभी सुहाई**। ··· १, २, ३, ४, ५, ८—दुंदुभी सुहाई; (दुंदुभी सोहाई); ७-दुंदुभी बजाई; ६-डिंडिभी

१।२६२।३ सखिन्ह सहित हरषीं **अति** रानी।··· १,२,३, ४, ५—अति; ६, ७, ८—सब

१।२६२।८ सीता **गमनु** राम पहिं **कीन्ही**।··· १,२,३—गमनु, कीन्ही; ४,५, ६,७,८—गमनु कीन्हा

१।२६३।२ विस्व बिजय सोभा **जेहिं** छाई।··· १,२, ३, ४, ५, ७, ८—जेहिं; ६—जनु

१।२६४।१ खल भए मलिन साधु सब **राजे**।···१,२,३,४,५,६, ७, ८—राजे; (गाजे)

१।२६४।३ नाचहिं गावहिं **बिबुध** बधूटी।··· १,२,३,३,५,६,७, ८—बिबुध; (बिबिध)

१।२६४।३ बार बार **कुसुमांजलि** छूटी। ··· १,२,८—कुसुमजांलि; ३,४,५, ६, ७—कुसुमावलि

१।३६४।५ महि पाताल **ब्यौम** जस व्यापा।···२,३,४,५—व्योम; २,६,७,८—नाक

१।२६४।७ सोहति **सीय राम** कै जोरी। ··· १,२,३,४,५, ७—सीय राम; ८—सोहत सीयराम; ६—राम सीअ

१।२६५।३ धरि बाँधहु नृप बालक दोऊ।···	१,२,३,४, ५, ७, ८–बाँधहु; ६–मारहु
१।२६६ देखहु रामहिं नयन भरि, तजि इरिषा मदु कोहु। ···	१,२, ३, ८–कोह; ४, ५, ६, ७–मोह
१।२६६।१ बैनतेय बलि जिमि चह कागू।···भागू ···	१,२,३, ४, ५, ७, ८–कागू, भागू; ६–कागा···भागा
१।२६६।३ लोभु लोलुप कल कीरति चहई।···	१,२,३–लोभ लोलुप; ४, ५, ६,७,८–लोभी लोलुप
१।२६६।४ हरि पद बिमुख सुगति जिमि चाहा। ···	१, ३, ४, ५–सुगति जिमि; २,६–परा गति; ७, ८–परम गति
१।२६७ मनहुँ मत्त गज गन निरखि, सिंह किसोरहि चोप। ···	१,२,३,४,५,६,७-किसोरहि; ८–किसोरहु
१।२६७।१ खरभरु देखि बिकल पुर नारीं।···	१,२,७,८- पुर; ३,४, ५, ६–नर
१।२६७।७ चारु जनेउ माल मृग छाला। ···	१,२,६, ८–माल; ३,४,५–कटि
१।२६८ सांत वेष करनी कठिन, बरनि न जाइ सरूप। ···	१,२,३,४,५,८–सांत; ७–संत; ६–साधु
१।२६८।२ पितु समेत कहि कहि निज नामा। ···	१,२,३,४,५,७,८–कहि; ६–निज निज कहि
१।२६८।३ जेहि सुभाय चितवहिं हितु जानी। ···	१,२,३,४,५,८–सुभाय; ६–सुभाव
१।२६८।३ सो जानै जनु आइ खुटानी। ···	१,२,३,५,६,८–आइ; ४,७–आयु
१।२६८।६ बिस्वामित्र मिले पुनि आई। ···	१,२,३,४,५,७,८–पुनि; ६–तब
१।२६८।७ दीन्हि असीस देखि भल जोटा।···	१, २, ३, ४, ५, ८–दीन्ह असीस···; ६, ७–देखि असीस दीन्ह···

१।२६८।८ रामहि चितइ रहे थकि लोचन । ··· १,२,३,४,५, ७, ८—थकि; ३ भरि; (थक)

१।२६९ बहुरि बिलोकि बिदेह सन, कहहु काह अति भीर । ··· १, २, २, ४,५,८—काह; ६—कहा

१।२६९।२ सुनत बचन फिरि अनत तिहारे ··· १,२,३,४,५,८—फिरि; ६,७—तब

१।२६९।३ कहु जड़ जनक धनुष केइँ तोरा । ··· १,३,४,५,७—केइँ; २,८—कैं; ६—केहि

१।२६९।७ बिधि अब सबरी बात बिगारी। ··· १,२,६—अब सवँरी; ३,४,५—सवँरि सब; ७,८—अब सबरी

१।२७० सभय बिलोके लोग सब, जानि जानकी भीरु । ··· १,२,३—जानकी भीरु; ४,५,७ जानकी भीर; ६—जानि सीय अति भीर

१।२७०।५ सो बिलगाउ बिहाइ समाजा । ··· १,२,३,४,५,७,८—बिहाइ ६—बिहाउ

१।२७१।२ देखा राम नए कें भोरे । ··· १,२—नए कें भोरें; ३,४,५—नये के; ६,७,८—नयन के

१।२७१।५ केवल मुनि जड़ जानहि मोही। ··· १ २,३,४,७,८—जड़ जानहि; ५—जानेहि; ६—जाने

१।२७२ मातु पितहि जनि सोच बस, करसि महीस किसोर । ··· १,२,८—करसि महीस,३,४,५-करहिं महीप; ६, ७—करसि महीप

१।२७२।४ मैं कछु कहा सहित अभिमाना । ··· १,१,३,४,५,८—कहा; ६,७—कहेउँ; (कहउँ)

१।२७२।५ भृगुकुल समुझि जनेउ बिलोकी । ··· १,२,३,४,५,६, ७-भृगुकुल; ८—भृगुसुत

१।२७३।६ निपट निरंकुस अबुधु असंकू । ··· १, २, ३, ४, ५,७,७—अबुध असंकू ···६-निठुर निसंकू

१।२७३।६ बार अनेक भाँति बहु बरनी । ··· १,२,३,४,५,७,८—बहु, ६—तुम्ह

१।२७४ विद्यमान रन पाइ रिपु, कायर करहि प्रलापु।	...	१, २, ३, ४, ५,६,७–करहिँ प्रलापु; ८–कथहिं प्रताप
१।२७४।६ कर कुठार मैं अकरन कोही।	...	१,३,४,५, ६, ७–अकरन;२–अकारुन; ८ खर…अकरुन
१।२७५ गाधिसूनु कह हृदय हसि, मुनिहि हरिअरेइ सूझ।	...	१,२ गाधि सूनु…हरिअरेइ; ६–गाधि सुवन…हरिअरै;३, ४, ५,७–गाधि सूनु…हरि-अरइ; ८–गाधि सूनु हरियने
१।२७५ अयमय खांड न ऊखमय,	...	१, २, ३, ५,६,७-८–अयमय खाँड ४–अयमय खंड; (अजगव खंडेउ ऊख जिम)
१।२७७ जेहि बस जन अनुचित करहिँ-होहिँ बिस्व प्रतिकूल।	...	२,३,४,५, होहि; ७-परहि; २,८–चरहि
१।२७८ सुनि लछिमन बिहँसे बहुरि, नयन तरेरे राम।	...	१, २, ३, ४, ५,७,८–बिहँसे बहुरि; ३–बोले बिहँसि
१।२७८ गुरु समीप गवने सकुचि, परिहरि बानी बाम।	...	१,२,७,८–सकुचि; २,४,५–बहुरि; ६–तुरत
१।२७८।६ मुनि नायक सोइ करउँ उपाई।	...	१,२,८–करौं; ३,४,५,९–करउँ; ६–करहु
१।२७९।३ आजु दया दुख दुसह सहावा।	...	२,४-५,८–दया; १,२–दयां ६,७–दैव
सुनि सौमित्र बिहसि सिरु नावा।	...	१,२,३,४,५,८-बिहसि; ६,७ बहुरि
१।२७९।५ जौंपै कृपाँ जरहिँ मुनि गाता।	...	१, २, ३, ४,५, ७,८–जरहिं; (जरिहि)
१।२७९।८ बिहँसे लषन कहा मन माहीँ।	...	१,२,३,४,५,८-मन माहीं; ६,७–मुनि पाहीं
१।२८०।५ गुनहु लषन कर हम पर रोषू।	...	१, २, ३-४, ५, ६,७-गुनहु; ८ गुनह
१।२८०।६ टेढ़ जानि संका सब काहू।	...	१,२,४,५,६–संका; ७–बंदइ; ८-सब बंदे काहू

१।२८०।७ राम कहेउ रिस **तजिअ** मुनीसा।	...	१,२,३–तजिअ; ४,५–तजिय; ६,७–तजहु; [८] तजअ
१।२८१ बेष बिलोकें कहेसि कछु, **बालकहूँ** नहि दोसु।	...	१, २,३,४,५,६,७–बालकहूँ; ८–बालक
१।२८२ बोले भृगुपति सरुष हँसि, तहूँ बंधु सम बाम।	...	४,२,२;४. ५,८–हँसि, ६,६–होइ
१।२८२।४ **दीन्हें** समर जग्य जग कोटिन्ह **कीन्हे**	...	१,२, ३,४,५,७–दीन्हे-कीन्हे; ६–दीन्हा-कीन्हा; ८–दीन्हे; समर जग्य जप कोटिन्ह कीन्है
१।२८४ जाना राम **प्रभाउ** तब, पुलक प्रफुल्लित गात।	...	१,२,३, ४,५,३,७,८–प्रभाउ; ३–प्रताप
१।२८४ जोरि पानि बोले बचन, हृदय न प्रेम अमात।	...	१,२.८–अमात; ३,४,५,३,७–समात
६।२८४।५ करौं **काह** मुख एक प्रसंसा।	...	१,३,६,७,८–काह; २,४,५–कहा
१।२८४।६ अनुचित **बहुत** कहेउँ अज्ञाता।	...	१,२,३,४,५,८–बहुत; ६,७–बचन
१।३८४।७ भृगुपति गये **बनहि** तप हेतू।	...	१,२,३,४,५,७,८–बनहि; ६–गएउ तपहि बन
१।२८४।८ अपभयँ **कुटिल** महीप डेराने।	...	१,२,३,४,५,८–कुटिल;६,७–सकल
१।२८५ हरषे पुर नर नारि सब, **मिटी** मोह मय सूल।	...	१,२,३-४,५ ८ मिटी; ६,७–मिटा
१।२८५।६ अब जो उचित सो **कहिअ** गोसाँई।	...	१,२,३,८–कहिअ; ४,५,७–कहिय; ६–करहु
१।२८६।१ **आनहिँ** नृप दसरथहिं बोलाई।	...	१, २, ३, ४,५,७,८–आनहि; ६–आनौ
१।२८६।४ हाट हाट मंदिर **सुरबासा**।	...	१, २,३,४,५,७,८–सुरबासा; ६–चहुँपासा
१।२८६।५ पुनि परिचारक **बोलि पठाए**।	...	१, २, ३, ४, ५, ७,८–बोलि पठाए; ६–निकर बोलाये

१।२८७।१ सरल सपरव परहिँ नहिँ चीन्हे। ··· १,२,३,५,८–सपरव; ३–सपर्व; ४,७–सपरन

१।२८८।७ तेहि लघु लाग भुवन दसचारी। ··· १,२,३,४,५,६,७ लाग; ८–लगति

१।२८९ बसै नगर जेहि लच्छि करि, कपट नारि वर वेषु। ··· १,२,३,७,८–वेषु; ४,५–वेष; ६–भेष

१।२८९।७ आए भरतु सहित हित भाई। ··· १,३,८–हित;२,४,५-६–दोउ; ७–लघु

१।२९१ राम लषन जाके तनय, बिस्व बिभूषन दोऊ। ··· १,२,३,४,५,६–जाके; ७,८–जिन्ह के

१।२९१।३ तिन्हकह कहिय नाथ किमि चीन्हे। ··· १, २, ३, ४,५,७, ८–किमि; ६-बिनु

१।२९१।७ सकइ उठाइ सरासुर मेरू। ··· १,३,५–सरासुर; २,४,६,७,८ सुरासुर

१।२९३।१ सुनि बोले गुर अति सुख पाई। ··· १,२,३,५–गुर; ४,७,८–गुरु; ६–मुनि बोले

१।२९५।३ भुअन चारिदस भरा उछाहू। ··· १, २, ६, ८–भरा; ७–भरेउ; ३;४, ५–भएउ

१।२९५।६ तदपि प्रीति कै रीति सुहाई। ··· १,२,३,४,५,६,७,८–रीति

१।२९६।२ बिधुबदनीं मृग सावक लोचनि। ··· १,३,४,५,७,८–सावक; २,६ –बालक

१।२९७।४ रुचि रुचि जीन तुरग तिन्ह साजे। १,२,३,५,६,८–रुचि; ४,७–रचि

१।२९७।५ अय इव जरत धरत पग धरनी। ··· १,२,४, ५, ७, ८–अय; ६–हय; (हुअ)

१।२९७।७ भरत सरिस बय राजकुमारा। ··· १,२, ३, ६, ७, ८–बय; ५–बए; ४–सब

१।२९८।५ सावकरन अगनित हय होते। ··· १,२,३,४,५ ६,८-साबकरन; ७–स्यामकरन

१।३००।१ रथ रव बाजि हिँसँहिँ चहुँ ओरा। ··· १, २–हिसँहिँ; ६–हिंसहिं; ३,४,५,७,८–हिंस

१।३००।३ महा भीर भूपति कें द्वारें। ...	१,२,३,४,५,६, ७-भीर; ८-भीरु
१।३००।४ चढी अटारिन्ह देखहिं नारी। ...	१,२.३,४, ५, ७, ८-देखहिं; ६-निरखहिं
१।३०१।७ घंट घंटि धुनि बरनि न जाहीं। ...	१,२.३, ४, ५, ७, ८-जाहीं; ६-जाई
सरव करहिं पाइक फहराहीं। ...	१,२,६-सरौं;३,४,७,८-सरव १,२, ३, ८--पाइक; ४,५,६, ७-पायक; (पाउक)
१।३०२।५ सुरभी सनमुख सिसुहि बियावा। ...	१,२,३,४,५,६,७,८-पिआवा
१।३०४।१ कनक कलस कल कोपर पारा। ...	१,२,३,४,५-कल कोपर; ६-कोपर भरि; ७,८-भरि कोपर
१।३०४।२ भाँति भाँति नहिं जाहिं बखाने। ...	१,२, ३, ४, ५, ६, ७-भाँति भाँति नहिं; ८-नाना भाँति नहि
१।३०४।८ मुदित बराती हने निसाना। ...	१,२,३,४,५-बराती; ६, ७, ८-बरातिन्ह
१।३०७ उठे हरषि सुख सिंधु महुँ,	१,२,३,४,५-उठे; ६,७, ८-उठेउ
१।३०७।६ मनभावती असीसैं पाई। ...	१, २, ३, ४, ५, ७, ८-मन भावती; ६-मन भावते
१।३११।३ निज निज गेह गए महिपाला। ...	१,२,३,४,५-गेह; ६,७, ८-भवन
१।३११।८ कहहिं जोतिषी अपर विधाता। ...	१,२,३,४, ५-अपर; ६, ८-आहि; ७-बिप्र
१।३१४।५ जनु तनु धरे करहि सुर सेवा। ...	१,२,३,४,५-सुर; ६,७, ८-सुख
१।३१४।७ मरकत कनक बरन तनु जोरी। ...	१,३,४; ५-तन; २,६,७,८-बर
१।३१५।२ मंगलमय सब भाँति सुहाए। ...	१,२,३, ४, ५-मयः ८-सब

१।३१६ जगमगत जीन जराब जोति, सुमेति मनि मानिक लगे। ···	१,२,३,४, ५, ८–जराव; ६, ७–जड़ाव
१।३१६ प्रभु मनसहि लयलीन मन, चलत चाल छवि पाव। ···	१,२,३,४,६–चाल; ५,७,८–बाजि
१।३१८ जो सुख भा सिय मातु मन देखि राम बर बेषु। ···	१,२,३,४,५, ६, ७, ८–मन; (पन)
१।३१८।२ वेद बिहित अरु कुल आचारू ।··· ···ब्यवहारू	१,२,३,४,५, ६–आचारू··· व्यवहारू; ७–व्यहारु··· आचारू; ८–व्यवहारू··· व्यवहारू
१।३१८।३ पंच सबद धुनि मंगल गाना ।···	१,२,३,४,७,८–धुनि; ५, ६–सुनि
१।३२१।६ बिनु पहिचानि प्रान ते प्यारी ।···	१,२,३, ५, ७–प्रान; ६, ८–प्रानहु; ३,४–पहिचान प्रान
१।३२२ नव सप्त साजें सुंदरी सब, मत्त कुंजर गामिनी। ···	१,३,४,५,७,८–सप्त; २, ६–सत्त
१।३२३ भरे कनक कोपर कलस सो, नव लिए परिचारक रहैं। ···	१,२,३,४,५,७,८–तब लिए; ६–तब लिएहि
१।३२४ करि मधुप मन मन जोगि जन, जे सेइ अभिमत गति लहैं। ···	१,२,३,४,५, ६, ७, ८–सेइ; (पाइ)
१।३२४ बर कुँअरि करतल जोरि, साखोचारु दोउ कुलगुर करैं। ···	१,२,३,४,६, ८–साखोचारू; ५–साखोचार; ७–साखोचार
१।३२४।३ जगमगाति मनि खंभन्ह माहीं ।···	१,२,३, ४, ५, ७, ८–जगमगाति; (जगमगात) [यह अर्धाली काशीराज में नहीं है]
१।३२५ सो जनक दीन्ही ब्याहि लषनहिं सकल बिधि सनमानि कै। ···	१,२,३,४,५,७–जनक; ६,८–तनय
१।३२६ ए दारिका परिचारिका करि, पालिबी करुना मई। ···	१,२,४,४,५,७–मई; २,६,८–नई
१।३२६ अपराधु छमिबो बोलि पठए, बहुत हौं ढीठ्यो दई। ···	१,२,३,४,५–दई; ६,७,८–कई

१।३२७ निज पानि मनि महँ देखि **प्रतिमूरति** सरूप निधान की।	१,२,३,४,५,७—देखि प्रति मूरति; ८—देखि यति मूरति;६-देखि पति मूरति
१।३२७।१ पठए **जनक** बोलाइ बराती। …	१,२,३,३,४,५,६.७,८—जनक
१।३२७।७ बोलि **सूपकारक** सब लीन्हे। …	१,३,४—सूपकारक;२,६,६,७,८—सूपकारी
१।३२८।५ छरस रुचिर बिंजन बहु **जाती**। … **भाँति**	१,२,३,३,५,६,७,८—जाती… भाँती; ७—भाँती…जाती
१।३३१।१ नृप सब **राति सराहत बीती**। …	६,८—भाँति सराह बिभूती; १,२,७—राति सराहत बिभूती; ३,४,५—राति सराहत बीती
१।३३२।१ **बूझत** बिकल परसपर बाता। …	१, २, ३,४,५,६,७,८—बूझत; (पूछत)
१।३३२।५ पठए जनक अनेक **सुआरा**। …	१,३,४,५,६,७—सुआरा; २, ६,८—पठई सुसारा
१।३३५ रूप सिंधु सब बंधु लखि, हरषि **उठेउ** रनिवास। …	१,२,३,४,५,७—उठेउ; ६,८—उठी
१।३३५।५ बिदा होन **हम इहाँ** पठाए। …	२,२,७—हम इहाँ; ३,४,५,६,—हित हमहि
१।३३६ **तुलसी सुसील** सनेहु लखि, निज किंकरी करि मानिबी …	१,२,३,४,५,६,७, ८—तुलसी सुसील; (तुलसीसु सील)
१।३३६।३ राम बिदा **मागा** कर जोरी। …	१,२,३,४,५,६.७—मागा; ८—मागत
१।३३६।५ फिरिअ **महीस** दूरि बड़ि आए। …	१,२,३,४,५,६,७, ८—महीस; (महीप)
१।३४१ **सबुइ सुलभ** जगजीव कहँ, भएँ ईसु अनुकूल। …	१,२—सबुइ सुलभ; ३,४,५—सबइ सुलभ;६,८—सबइ लाभ; ७—सबहिं सुलभ
१।३४१।२ **करहिं** कलप कोटिकभरि लेखा। …	१,२,३,४,५,७,८—करहिँ; ६—करिहि

१।३४१।८ बिनती बहुत भरत सन कीन्हीं। ···दीन्ही	···	१,३,४,५–बहुत···कीन्ही; ७–बहुत कीन्हा; २–बहु···कीन्ही; ६,८–बहुरि कीन्ही
१।३४२।५ सब सिधि तब दरसन अनुगामी।	···	१, २, ३, ६,८–सिधि; ५–सिद्धि; ४,७–बिधि
१।३४३।२ झाँझि बीरि डिंडिभी सुहाई।	···	१–बीरि; ८–बिरव; ३,४,५–बीन; २,६,७–मोरि
१।३४४।३ तनु धरि धरि दसरथ गृह छाए	···	१,२–छाए; ३,४, ५, ६,७, ८–आए
१।३४५।१ मोद प्रमोद बिबस सब माता।	···	१,२,३,६,८–मोद; ४,५,७–प्रेम
१।३४५।५ मंजुल मंजरि तुलिस बिराजा।	···	१,२,७–मंजुल मंजरि; ६,८–मंजुर मंजरि; ३,४,५–मंजुल मंगल
१।३४५।६ मदन सकुन जनु नीड बनाए।	···	१,३,४,५,७–सकुन; २,६,८ सकुच
१।३४६।८ मूक बदन जनु सारद छाई।	···	१,२,३,६,८–जनु;४,५–जिमि; ७–जस
१।३५१।४ देत असीस सकल मन तोषे।	···	१,२,३,५,८–सकल; ६,७–चले; ४–सकल परितोषे
१।३५२।४ चैल चारु भूषन पहिराई।	···	१,२,६,८–चैल; ३,४,५,७–चीर
१।३५५।१ जटित कनक मनि पलँग डसाए।	···	१,२,३-जटित; ४,५,७–जड़ित; ६,८–जरित
१।३५७।४ सुंदर बधू सासु लै सोई।	···	१,२,३,४,५,६–सुंदर बधू;७–सुंदरि बधुन्ह ;८–सुंदरि बधुन
१।३५७।६ बंदि मागधन्हि गुन गन गाए।	···	१, २, ६, ८–बंदि मागधन्हि; ३,४,५,७-बंदी मागध
१।३५८।८ रामलषन उर अतिहि उछाहू।	···	१,२,३,४,५, ६–अतिहि; ७, ८–अधिक

१।३५६।१ सुदिन साधि कल कंकन छोरे।··· १,२,३,४,५–साधि; ६,७,८–सोधि

१।३।६।३ राम सप्रेम बिनय बस रहहीं।··· १,२,३,४,५,७,८–सप्रेम; ६–सनेह

———

अयोध्या कांड

२।श्लो०।१ वामांके च विभाति भूधरसुता। २,३,४,५,६, ७–वामांके; ८–यस्यांके

२।०।७ फलित बिलोकि मनोरथ बेली।··· २,३,४,५,६,८–फलित; ७–फुलित

२।१०।२ आवहु बेगि नयनु फल पावहिँ।··· २,३,४,५, ६, ७, ८-आवहु; आवहिँ

२।१०।६ बिधन मनावहिँ देव कुचाली।··· ३,४,५, ७, ८–मनावहि; २, ६–बनावहिँ

२।११।५ चली बिचारि बिबुध मति पोची।···३,४,५,७, ८–बिबुध; २, ६, ८–बिबिध

२।१६।७ बिनु जर जारि करइ सोइ छारा।··· ३,६,७,८–जर; २,४,५–जल

२।१६।७ दिन प्रति देखउँ राति कुसपने।··· २,४,५,६–देखउँ; ७–देखौं; ३, ८–देखहुँ

२।२०।२ मरन नीक तेहि जीवन चाही।··· २,३,४,५,६,७–जीवन चाही; ५,८-जीव न चाही; (जिवन न चाही)

२।२१।१ कुबरीँ करी कबुली कैकेई।··· २, ३, ४, ५, ६, ७, ८–करि कबुली (करी कुबली)

२।२१।८ बचन मोर फुर मानहु जीते।··· ३–फुर; २,४,५,६,७,८–प्रिय

२।२४ गवनु निठुरता निकट किय, जनु धरिदेह सनेह ।	...	३,४,५,७–किय;२, ६, [८]-किये
२।२६।५ ऐसिउ पीर बिहँसि तेहिँ गोई ।	...	२,३,६,८–तेहिं;४,५–तेइ;३–ऐसिहु; २–ऐसिउ; ७–तब
२।२६।६ कोटि कुटिल मनि गुरु पढ़ाई ।	...	३,४,५,६,८-मनि; २, ७-मति
२।२७।३ दुइ चारि माँगि मकु लेहू ।	...	३,६,७,८–मकु; ४,५–किन; २–बरु
२।२७।६ बेद पुरान बिदित मनु गाए ।	...	३,७,८–मनु; २,४,५,६–मुनि
२।२७।७ सुकृत सनेह अवधि रघुराई ।	...	२,३,४,५,६,७–अवधि; [८] अवध
२।२७।८ बात दिढ़ाइ कुमति हँसि बोली।	...	३,४,५,७–दिढ़ाइ; २,६,८–दृढ़ाइ
२।२७।८ कुमति कुबिहग कुलह जनु खोली ।	...	२,३,४,५,६–कुबिहग; ७,८–कुबिहंग
२।२८।१ सुनहु प्रान प्रिय भावत जी का ।	...	१,३,४,५,७–सुनहु;६ [८]-सुनहुँ
२।३०।५ भीर प्रतीत प्रीति करि हाती ।	...	२,६,७,८–भीर; ३,४,५-भीरु
२।३१।५ अजहूँ हृदय जरत तेहि आँचा ।	...	२,३,४,५,६,७,८–तेहि; (ते)
२।३२।६ मोहि न बहुत परपंच सुहाही ।	...	२,३,४, ५, ६, ७, ८–प्रपंच
२।३३।५ लखो नरेस बात सब साची ।	...	२, ३,४,५,६,७,८–फुरि;(फुर)
२।३५।१ चहत न भरत भूपतहि भोरे ।	...	२,३,६,८–भूपतहिं; ४,५,७–भूप पद
२।३५।८ मारसि गाइ नहारू लागी ।	...	२,३,६,८–नहारू; ७–नाहरू; ४,५– नहारुहि
२।३६।६ पढ़हिँ भाट गुन गावहिं गायक।	...	२, ३, ४, ५, ६, ८–पढ़हिँ; (पटहि)
२।३७ जागेउ अजहुँ न अवधपति, कारनु कवन बिसेषि		२,३,६,८–जागेउ; ४,५,७–जागे

२।४१।४ तेउ न पाय अस समउ चुकाहीँ ।	···	२,४,५,७–पाइ अस; ६, ८ पाइअ समय, ३–पाय न समउ
२।४१।८ जाते मोहि न कहत कछु राऊ ।	···	३–जाते; २,६,८–जातें; ४,५, ७–ताते
२।४२ चलइ जोँक जल बक्र गति, जद्यपि सलिलु समान ।	···	२,३,४,६,७,८–जल;५–जिमि
२।४६।७ सब बिधि अगहु अगाध दुराऊ।	···	८–अगाहु; ३,४,५,७–अगम २,६–अगमु
२।४७।८ राम भरत कहुँ परम पिआरे ।	···	२,६–परम; ३,४,५,७,८–प्रान
२।४८ चंदु चवइ बरु अनल कन, सुधा होइ विष तूल ।	···	२,३,५,६,८–चवइ; ४,७–चुवइ
२।४९।१ सोक कलंक कोटि जनि होहू ।	···	६,८–कोठि; ३,४,५,७–कोटि २–कोपि
२।५०।८ मिटा सोचु जनि राखै राऊ ।	···	२,३,६,८ मिटा; ४,५,७–इहै;
२।५१ नव गयंदु रघुबीर मनु, राजु अलान समान ।	···	२-३,४,६,८–रघुवीर मनु; ५,७–रघुबंसमनि
२।५२।८ जनि सनेह बस डरपसि मोरें ।	···	३,५–मोरें ; २,४,७,८–मोरे
२।५६।६ अभागिनि आपुहहि जानी	···	२,३,४,५,८–जानी; ७-मानी (यह अर्धाली काशिराज में नहीं है)
२।५६।५ सुरसर सुभग बनज बन चारी ।	···	२,३, ४, ५,६,७,८–सुरसर; (सुरसरि)
२।६०।८ कहौँ सुभाव सपथ सत मोही ।	···	२, ३, ४, ५,६,७,८–सुभाय; (सुभाव)
२।६१।१ मैं पुनि करि प्रवान पितु बानी।	···	२,६,८–प्रवान; ३,४,५,७–प्रमान
२।६४।३ प्रिय बिनु तिअहि तरनिहु ते ताते	···	२,३,४,५,६–तिअहि; ७–तिय
२।६६ राखिअ अवध जो अवधि लागि, रहत जानिअहि प्रान ।	···	२,३,४,५,६,७,८–जानिअहि; (न जानिअ)

२।६८।४ सेवा समय दइअ बनु दीन्हा। ... ३,४,५–दइअ; २,६,८–दैअ; ७–दैव

२।६८।४ मोर मनोरथु सफल न कीन्हा। ... २,६,८–सफल; ३,४,५,७ सुफल

२।७२।५ पूँछे मातु मलिन मनु देखी। ... २,३,४,६,८–पूछे; ५–पूछेउ; ७–पूछा

२।७४।२ राम बिमुख सुत ते हित जानी। ... ३ ४,५,८–जानी; २,४, ७–हानी

२।७४।४ सकल सुकृत कर बड़ फलु येहू। ... ३,७,८–बड़ फल; २, ४, ५, ६–फल सुत

२।७५ उपदेस यहु जेहि जात तुम्हरे,
रामु सिय सुखु पावहीँ ... ४,७–जात; २,३,५,६,८–तात

२।७५ तुलसी प्रभुहि सिख देइ,
आयसु दीन्ह पुनि आसिष दई। ... २,३.४,६,७, ८–प्रभुहि; ५–सुतहि

२।७७।२ लखी राम रुख रहत न जाने। ... २,३,४,६, ७, ८–लखी; ५–लखा

२।७८।८ चले जनक जननी सिरु नाई। ... २,३,६.७,८–जननी; ४, ५–जननिहि

२।७७।४ मीत पुनीत प्रेम परितोषे। ... २,३,६,८–परितोषे; ४,५,७–परिपोषे

२।८३।२ नगरु सफलु बन गहबर भारी। ... २,५,६,७,८–सफलु; ३,४–सकल

२।८८।८ दोना भरि भरि राखेसि पानी। ... ३,८–पानी; २,४,५,६,७–आनी

२।८६।४ कटि भाथी सर चाप चढ़ाई। ... २,६,८–भाथी; ३,४,४,५,७–भाथा

२।८६।७ सुरपति सदनु न पटतर पावा। ... २,३,४,५,६,७–पावा; ८–आवा

२।९०।७ सोवति महि बिधि बाम न केही। ... २,३,६.४,५,७–सोवति; ८–सोवत

२।९३।२ जागे जग मंगल सुखदातारा। ... ६,७,८–सुखदारा; २,२,४,५–दाता रा

२।६४।२ तात धरमु मगु तुम्ह सब सोधा।··· २,३,४,५,६,७-मगु; ८-मतु

२।६७।१ नृप मनिमुकुट मिलित पद पीठा।··· ३,८-मिलित; २,४,५,६,७-मिलत

२।६७।२ सुख निधान अस पितुगृह मोरे।··· ३,४,५,८-पितुगृह; २,६,७-माइक

२।६७।६ मोहि केउ सपनेहु सुखद न लागा। ··· ७-केउ; ३,४,५-सब; २,६,८-कोउ;

२।६८ मोरि सोचु जनि करिअ कछु, मैं बन सुखी सुभायँ। ··· ४,५,८-मोरि २,३,६,७-मोर

२।६६।१ प्रजा मातु पितु जीहहिँ कैसे। ··· ४,५,६-जीहहिं; २,७-जीवहिं; ३,८-जिइहहिं

२।१००।२ होत बिलंबु उतारहि पारू। ··· ३,४,५,६,७-उतारहिं; ८-उतारिहि

२।१००।४ जेहिँ जग किए तिहुँ पगहु ते थोरा। २,३,४,५,६,७-किय;८-किये

२।१०३।८ करि परितोषु बिदा सब कीन्हे।··· २,३,४,५,६-सब; ७,८-तब

२।१०५।८ मुनिमन मोद न कछु कहि जाई।··· २,३,४,५,६,७-मोद; ८ मोह

२।१०६।३ अति लालसा सबहिँ मनमाहीं।··· १,३,४,५,७-सबहिं; ६,८-बसहिं

२।११०।८ सोच सनेह बिकल नरनारी।··· २,३,४,५,६,७-सोच;८-होंहि

२।१११।५ जोतिष झूँठ हमारेँ भाएँ। ··· २,३,४,५,६-हमारेँ; ७,८-हमारेहिं

२।११५।८ इन्ह ते लहि दुति मरकत सोने।··· २,३,४,५,८-एन्ह ते लहिं; एन्ह ते लही; ७-इन्ह ते लहि

२।११७।७ बिधि निधि दीन्हि लेत जनु छीने। ··· २,३,६-दीन्हि; ४,५,७,८-दीन्ह

२।१२०।२ गहबरि हृदय कहहिँ मृदु बानी।··· २,४,५,६-कहहिँ; ८-कहइ बर; ३,७-कहहि बर

२।१२१।३ दीन्ह हमहि जेहिँ लोचन लाहू।··· ३,५-जेहिँ २,४;७-जेहि; ८-जेइ

२।१२३।१ बसहिँ लषनु सिय रामु बटाऊ।··· १,३,४,५,६,७-बसहिं; ८-बसहुँ

२।१२६।५ चितानंद मय देह तुम्हारी। ··· ३–चितानंद; २,४,५,६,७,८–चिदानंद

२।१२८ मुकुताहल गुनगन चुनइ, राम बसहु मन तासु। ··· २,३,४,५,६ मन; ७,८–हिय

२।१२६।१ काम कोह मद मान न मोहा। ··· २,३,६–कोह; [८] मोह; ४,५ ७–क्रोध

२।१३०।६ सब तजि तुम्हहि रहइ लउ लाई। ··· २,३,६–लउ; ४ लौ; ५–लै; ६–लय; [८] उर

२।१३२।६ चले सहित सुरथपति प्रधाना। ··· २,६,७,८–सुरथपति; ३,४,५–सुरपति परधाना

२।१३५।५ हम सब भाँति करब सेवकाई। ··· २,४,५,६,७,८–करब; ३–करबि

२।१३५।७ जहँ तह तुम्हहि अहेर खेलाउब। ··· २,३,४,६–जहँ तहँ ५,६,८–तहँ तहँ

२।१३६।७ मनहु बिबुध बन परिहरि आए। ··· २,२,४,५६,७–बिबुध; ८–बिबिध बन

२।१३८।६ कहि न सकहिं सुख भा जसि कानन। २,४,७–सुख भा; ३,५,६, ८–सुखमा; (सुषमा)

२।१३६।६ असनु अमिअ सम कंद मूल फर। २,३,४,५६,७,८–फर; ५–फल

२।१४१।८ जनु बिनु पंखबिहग अकुलाहीं। ··· २,३,४,५,६,७,८–जनु; जिमि

२।१४२।६ अढुकि परहि फिरि हेरहिं पीछे। ··· २,३,६,८–अढुकि; ४,५–अटकि; ७–उढुकि

२।१४३।४ रहो न अंतहु अधम सरीरू। ··· ३–रही न; २,४,५,६,७,८–रहिहि न

२।१४७।२ कहहु कहाँ नृप जेहि तेहि बूझा। ··· ३,४,५,७–जेहिं तेहि; २,६,८–तेहि तेहि

२।१४७।३ कौसल्या गृह गईं लवाई। ··· २, ३, ४, ५, ६,७,८–लवाई; (लेवाई)

२।१४८।७। राज सुनाइ दीन बनवासू। ··· २,३,४,५,६,७–राज; ८–राउ

२।१५० प्रथम बासु तमसा भएउ, दूसर सुरसरि तीर । …	२,३,४,५,६–दूसर; ७,८–दूसरि
२।१५१।१ तात सुनाएउ बिनती मोरी । …	६–सुनाएउ; २,४,५,७,८–सुनायेहु; ६-सुनायेउ
२।१५१।५ ओर निबाहेहु भायप भाई । …	२,३,४,५,६,८–ओर; ७–और; (अउर)
२।१५२।३ जिअत फिरेउँ लेइ राम सँदेसू ।…	२,३,६,७–फिरेउँ; ८–फिरउँ; ४,५–फिरेउ
२।१५४ तलफत मीन मलीन जनु, सीँचेउ सीतल बारि । …	२,४,५–सीँचेउ. ३,६,७–सींचेउ; ८–सिंचत
२।१५४।६ सो तनु राखि करबि मैं काहा ।…	२, ३, ४, ५, ६,७,८–करबि; (करब)
२।२५५।२ राम बिरह भरि मरनु सँवारा ।…	३,४,५–भरि; २,६,६,७,८–करि
२।१५७।४ रटहिं कुभाँति कुखेत करारा । …	२,३,४,५,७,८–करारा ६–कराला
२।१६०।२ तात राउ नहिं सोचइ जोगू । …	२,३,६,८–सोचइ; ४,५,७–सोचन
२।१६१।७ मे अति अहित राम तेउ तोही ।…	२,३,५,६,८–तेउ; (तेइ) ७–ते; ४-प्रिय तेहीं
२।१६५।१ मुख प्रसन्न मनु राग न रोषू ।…	३,७–राग न रोषू; २,३,८–रंग न रोषू; ४,५ हरष न रोषू
२।१६७ जे परिहरि हरिहर चरन, भजहिं भूत घनघोर । …	३–भूत घनघोर; २,४,५,६,७, ८–भूत गन घोर
२।१६८।१ राम प्रानहु ते प्रान तुम्हारे । …	२,३,६,८–प्रानहु तें; ४,५,७–प्रान तेँ
२।१६८।२ बिधु बिष चवइ स्रवइ हिमु आगी । …	३,४,५,८–चवइ; ७–चुवइ; २,६–बमइ ।
२।१६९ उठे भरत गुर बचन सुनि, करन कहेउ सब साजु । …	१,३,६,८–साजु, ४,५,७–काजु

२।१७१।६ सोचय सूद्रु बिप्र **अवमानी** । ···	२,३,६,८–अवमानी;४,५,७–अपमानी
२।१७३।५ करहु तात पितु बचन **प्रवाना** ।···	२,३,६,६,८–प्रवाना; ४,५,७ प्रमाना
२।१७४।३ वेद **बिहित** संमत सब ही का ।···	२,४,५ ६,७–बिहित; ३,८–बिदित
२।१७४।७ **मरम** तुम्हार राम कर जानिहिं···	२,५,७–मरम; ३,४–प्रेम; ६, [८] परम
२।१७५।३ बन रघुपति **सुरपुर** नरनाहू । ···	३,४,५,७–सुरपुर; २,६,[८] सुरपति
२।१७६।२ मातु उचित **धरि** आयसु दीन्हा।···	२,३।४,५,६,८–धरि; ७ पुनि
२।१७७।२ मैं अनुमानि **दीखि** मनमाहीं।···	२,३,६,८–दीखि;४,५,७–दीख
२।१७८।२ **रसा** रसातल जाइहि तबहीं। ···	२,३,४,५,६,७–रसा; ८–राजु
२।१७८।५ **बैठ** बात सब सुनउँ सचेतू। ···	२,३,४,६,७–बैठ; (बैठि)
२।१७६।१ कैकेई भव तनु अनुरागे, **पाँवर** प्रान···। ···	२,३,४,५–तनु···पाँवर; ५,८–तनु, पावन; २–पावन; ७–तनु ते पाँवर
२।१८० तेहि पिआइअ बारुनी, कहहु **कवन** उपचार ···	२,३,६–तेहि; ४,५,७–ताहि; [८] तोहि; ३,४,५,७–कवन; २, ६– कौन; ८ काह
२।१८०।३ राय **राजु सबही** कह नीका। ···	२,३,४,५,७–राजु सब ही कहँ; ६–रजायसु सबही; ८–रजायसु सब कहँ
२।१८१।३ कोउ न **कहिहि** मोर मत नाहीं। ···	२,३,४,५,६,८–कहिहि; ७–कहहि
२।१८१।५ डरु न मोहि जगु **कहिहि** कि पोचू। ···	२,३,५,६,७–कहहि; ८–कहिहि
२।१८३।७ **बसहिं** कलप सत नरक निकेता।···	२,३,४,५,६,७–बसहिं; (बसिहि)
२।१८५ सनमुख होत जो रामपद, करइ न **सहस** सहाइ। ···	३,६,८–सहस; २,४,५,७–सहज

२।१८५।१ हरषु हृदय **परभात** पयाना।	...	२, ३, ४, ५, ६, ७–परभात; (प्रभात)
२।१८५।७ जो जेहि लायक सो **तहँ** राखा।	...	२, ४, ५, ७–तहँ; ३,६,८–तेहि
२।१८६।१ **चहत** प्रात उर आरत भारी।	...	२,३,४,५,६,७–चहत;६ [८] चलत
२।१८६।५ अरुंधती अरु अगिनि **समाऊ**।...**राऊ**	...	२,३,६,८–समाऊ; (सुभाऊ... राऊ) ४,५,७–समाजू...राजू
२।१८७ सौंपि नगरु सुचि सेवकनि, सादर **सबहि** चलाइ।	...	२,३,४,५,६,७–सबहिं; ८–सकल
२।१८६।५ स्वामि काज **करिहहुँ** रन रारी।	...	३–करिहहुँ; ८–करिहहु; २,४ ५,६–करिहउँ; ७–करिहौं
२।१८६।५ जस **धवलिहहुँ** भुअन दसचारी	...	३–धवलिहहुँ; २,४,५,६,८–धवलिहउँ; ७–धवलिहौं।
२।१६०।४ **भाथी** बाँधि चढ़ाइन्हि **धनुही**	...	२,३,५,६,८–भाथी; ४,७–भाथा २,३,४,५,७–धनुही; ६,८–धनही
२।१६३।५ राम राम कहि जे **जबुहाहीं**।	...	२,३,६–जबुहाहीं; ४,५,७,८–जमुहाहीं
२।१६४ रामु कहत **पावन** परम, होत भुअन बिख्यात।	...	२,३,४,५,६,७–पावन; ८–पाँवर
२।१६५।७ मँटेउ राम **भद्र** भरि बाहू।	...	२,३,४,५,८–भद्र; ७–चंद्र, ६–भाइ
२।१६६।१ मे सनेह **सब** अंग सिथिल तब।	...	४,५,७–बस; २,३,६,८–सब
२।१६६।२ जनु **तनु** धरे बिनय अनुरागू।	...	२,३,४,५,७–तनु; ६,८–धनु, २–विषय अनुरागू
२।१६६।३ **दीख** जाइ जग पावनि गंगा।	...	२,३,४,५,६,७–दीख,[८]दीखु
२।१६७।२ **गुर** सेवा करि आयसु पाई।	...	२, ३, ४, ५, ६–गुर, ७ गुरु, ८–सुर
२।१६८।५ जथा अवध नर नारि **मलीना**।	...	२,३,४,५,७–मलीना,६,[८]–बिलीना

२।१९९ बिहरत हृदउ न हहरि हर, पवि ते कठिन बिसेषि। ··· २,३,४,५,६,७–पबि, [८] पति

२।१९९।३ मे न भाइ अस अहहिं न होने। ··· ३,४ ५,७–अस; २, [८] अैसे

२।१९९।८ सादर कोटि कोटि सत सेषा। ··· ३,८–सादर ; २,४,५,६,७–सारद

२।२००।६ साँइ दोह मोहि कीन्ह कुमाता। ··· २,३,६,८ सांइ दोह; ५–साँई द्रोहि ; ४, ७–साँई द्रोह

२।२००।८ यह निरजोसु दोसु विधि बामहि। ··· २,३,४,६, ८–निरजोसु; ५–निरजोस; ७–निरदोस

२।२०४।१ जानहुँ राम कुटिल करि मोही। ··· २,३,४,६,८–जानहु; ५,७–जानहिं

२।२०५।४ मूरतिवंत भाग्य निज लेखे। ··· २,४,५.७–मूरतिवंत । ३;६, ८–मूरति मंत

२।२०६।४ राउ सत्यव्रत तुम्हहि बोलाई। ··· २,४,५,६,७,८–बोलाई; ३–बलाई

२।२०७।३ प्रेम पात्रु तुम्ह सम काउ नाहीं। ··· ४,५,७–प्रेमपात्र; २,३,६, ८–प्रेमपात्रु

२।२०८ राम भगति रस सिद्धि हित, भा यह समउ गनेस ··· २,३,४,५,६,७–सिद्धि ; ८–सिद्ध

२।२०८।५ गुर अवमान दोष नहिँ दूषा। ··· २,३,६–अवमान; ४,५,७,८—अपमान

२।२०८।६ कीन्हिहु सुलभ सुधा बसुधाहू। ··· २,३,६,७–कीन्हिहु; ४,५,८–कीन्हेहु; (कीन्हेउ)

२।२०९।१ कीरति बिधु तुन्ह कीन्हि अनूपा। ··· २,३,६–कीन्हि ; ४,५,७,८–कीन्ह

२।२०९।६ भरतु धन्य तुम्ह जगु जसु जयऊ। ··· २,४,५,७,८–जगु जसु; ३,६–जसु जगु

२।२१०।५ पितहु मरन कर नाहिन सोकू। ··· २,७–नाहिन; ३,४,५,६,८–मोहि न

२।२११।६ मिटइ कुजोगु रामु फिरि आए। ··· २,५,६,८–कुजोगु; ३,४,७–कुरोग।

२।२१३।४ अस कहि रचेउ रुचिर गुह नाना। ··· २,३,४,५,६,८-रचेउ; ७-रचे

२।२१७ रामु सकोची प्रेम बस, भरतु सुपेम पयोधि। ··· ३,६-सुपेम; २,४,५,७-सुप्रेम; ८-सपेम

२।११७ बनी बात बेगरन चहत······ ··· २,३,६-वेगरन; ४,५,७,८-बिगरन

२।२१८।३ गहहिँ न पाप पुंनु गुनु कोषू। ··· ३,८-पुनु; ४,५,७-पुन्य; २,६-पूनु

२।२२१।५ कहहिं सकल तोहि सम न सयानी। ··· २,३,४,५,६,७-तोहि; ८-तेहि

२।२२४।६ सीय समेत बसहि दोउ बीरा। ··· २,३,४, ५, ६, ७, ८-समेत; (समीप)

२।२२६ तुलसी उठे अवलोकि कारनु, काह चित सचकित रहे। ··· २,३,६,८-चित सचकित; ४, चित चक्रित; ७-चित चकित।

२।२२६।८ आपनि समुझि कहइ अनुगामीं। ··· २,३,४,५,६-कहइ; ७-कहौं; ८-कहउँ

२।२२८।७ भरत हमहि उपचराँ न थोरा। ··· २,६-उपचरा; ३,४,५,७,८-उपचार

२।२२६ छत्र जाति रघुकुल जनमु, राम अनुज जगु जाम। ··· २,३,४,६-छत्र; ५,७,८-छत्रि; २,३,४,५,७-अनुज; ६,८-अनुग

२।२३०।७ जो अँचवत नृप मातहि तेई। ··· २,३,६,७-नृप मातहि; ४,५,८-मातहिं नृप

२।२३०।७ नाहिन साधु सभा जेहिँ सेई। ··· २,३,६,७,८-जेहिं; ४,५-जेइ

२।२३१।३ मसक फूक मकु मेरु उड़ाई। ··· २,३,४,५,६,८-मकु; ७-बरु

२।२३३ मातु मते महुँ मानि मोहि, ··· २,३,४,५,६,७,८-मानि; (जानि)

जो कछु करहिँ सो थोर। ··· २,३,४,५,६,७-करहिँ; ८-कहहिं

२।२३३।२ मोरे सरन राम की पनहीं। ··· २,४,५-राम; ३,६,७,८-रामहिँ

२।२३३।५ फेरत **मनहिँ** मातु कृत खोरी ।	···	२,३,४,५,६,७–मनहिं; ८–मनहु
२।२३६।३ **तिन्ह** तरु बरन्ह मध्य बटु सोहा ।	···	२,३,४,५,६,७–तिन्ह; ८–जिन्ह
२।२३६।४ **अबिरल** छाँह सुखद सब काला ।	···	३,६,८–अबिरल; २,४,५,७–अबिचल
२।२३८।८ जिअ की जरनि **हरत** हँसि हेरत ।	···	३,५,७,८–हरत, २,६–मनहु; ४–हिय की जरनि हरत
२।२३६।४ बंधु सनेह **सरस इहि** ओरा, उत साहिब सेवा **बर** जोरा ।	···	२,३,४,५,६,८–सरस एहि; ७–सरिस यहि ३,४,५,७–बर; २,६,८–बस
२।२४० भरत राम की मिलन लखि, **बिसरा** सबहि अपान ।	···	३,७–बिसरा; २,४,५,६,८–बिसरे
२।२४१ भूरि **भायँ** मेंटे भरत, लछिमन करत प्रनाम ।		२,३,६, ८–भायँ, ४,५–भाय; ७–भाग
२।२४६।७ सहित समाज **सुसरित** नहाए ।	···	२,३,४,५.६,७,८–सुसरित; (सुरसरित)
२।२४७।४ बोले गुर सन **राम** पिरीते ।	···	३,४,५,७,८–राम; २,६,–मातु; (भरत)
२।२५१ तुलसी कृपा रघुवंश बनि, की लोह लै **लौका** तिरा ।		३,६,८–लौका; २,४,५,७–नौका
२।२५१।१ **पुर नर नारि** मगन अति प्रीती ।	···	२,३,४,५,७–पुर नर नारि; ६,८–पुरजन नारि
२।२५२ निसि न नींद नहिँ भूष दिन, भरतु बिकल **सुठि** सोच ।		२,३,४,५,६,७–सुठि; ८–सुचि
२।२५२।६ **हर** गिरि ते गुरु सेवक धरमू ।	···	३,४,५,६,७,८–हर; २–है ।
२।२५६।३ गा चह पार जतनु **हिय** हेरा ।	···	३,४,५,६,७,८–हिय; २–हिये; (बहु)
२।२५६।४ **सरसी सोपि** कि सिंधु समाई ।	···	२,६,८–सरसी सीपि; ३,४,५,७–सर सीपी

२।२५७।१ सूझ जुआरिहि आपन दाऊ।	...	२,३,४,५,६,७–आपन; ८–आपुन
२।२६०।४ मुकुता प्रसव कि संबुक कालो।	...	२,३,६,८–काली; ४,५,७–ताली
२।२६०।५ सपनेहु दोष कलेसु न काहू।	...	२,४,५,७,८–कलेस; ३,६–कलेसु (क लेसु)
२।२६१।८ तजहिँ बिषम बिष तापस तीछी	...	२,६, तापस; ३,४,५,६,८–तामस
२।२६३ मिटिहइँ पाप प्रपंच सब,	...	२,३,४,५,६–मिटिहइ; ७,८–मिटिहहिं
२।२६४।२ करत उपाउ बनत कछु नाहीँ।	...	६,७–करत उपाय बनत; ३,४,५, ८–बनत उपाय करत
२।२६४ २।२६६।२ २।२६८।२ } प्रसन्न	...	३,४,५,७–प्रसन्न, २,६,८–प्रसंन
२।२६८।३ देव दीन्ह सबु मोहि अ भारू।	...	२,३,६,८–मोहिअ भारू, ४,५, ७–मोहि सिर भारू
२।२७१।५ किए बिस्राम न मगु महि पाला।	...	४,५,८–किए, २,३,६–किये, ७–किय
२।२७२।४ गनप गौरि तिपुरारि तमारी।	...	२,३,६,८–गनप गौरि तिपुरारि, ४,५,७–गनपति गौरि पुरारि
२।२७६ अवगाहि सोक समुद्र सोचहिँ	...	२,३,४,५,६–सोक, ७–शोक, ८–सोच
२।२७६ पूजि पितर सुर अतिथि, गुर लगे करन फलहार।	...	२,३,४,५,६,७,८ – फलहार; (फरहार)
२।२८०।६ सीलु सनेहु सकल दुहुँ ओरा।	...	२,३,४,६,८–सकल, ५,७–सरस
२।२८१।४ जो सुभ असुभ सकल फल दाता।	...	२,३,४,५,६,८–जो, ७–सो

२।२८२।१ सुत सुत बधू बिबुध सरि बारी।	२,३,६–बिबुध, ४,५,७,८–देवसरि
२।२८४ हमरें तौ अब ईस गति कै मिथिलेसु सहाय।	३,४,५,७–तौ, २,६,८–तव भूप
२।२८५।६ सिय सनेह बहु बाढ़त जोहा।	२,३,४,५,६,७–सनेह; ८ समेत
२।२८५।८ मोह मगन मति नहिं बिदेह की।	२,३,४,५,६,७–मति; ८ अति
२।२८६।५ सीय सकुच महुँ मनहुँ समानी।	२,६,७,–सकुच महुँ; (सकुचि महि); ३,४,५–सकुच महि; ८–सकुचि महु
२। २८८।४ बहुरहिं लषन भरतु बन जाहीं।	२,३,४,५,६,७–बहुरहिं; ८ बर नहिं
२।२८८।६ जद्यपि रामु सीम समता की।	३–सीम; २,४, ५, ७–सींव, ६, ८ सीय
३।२९१।४ प्रमुदित फिरब बिबेक बढ़ाई।	४,५,७–बढ़ाई; २,३,६, ८ बड़ाई
२।२९२ संकट सहत सँकोच बस, कहिअ जो आयसु देहु।	२,३,४,५,६,७–संकट; ८ संकत
२।२९३।४ भूप भरतु मुनि साधु समाजू।	२,३,४,५,६,७,८– साधु; (सहित)
२।२९४।६ चंदिनि कर कि चंड करजोरी।	२,६,८–चंड करचोरी; ३,८–चंद कर चोरी; ४,५–चंद्र कर चोरी
२।२९८।५ आपु समान साज सब साजी।	४,५,७–समान; २,३,६,८–समाज
२।३०० आयसु देइअ देव अब, सबइ सुधारिअ मोरि।	३–सुधारिअ; ७–सुधारिय; २,४,५,६,८–सुधारी
२।३०२ भरत जनकु मुनिगन सचिव, साधु सचेत बिहाय।	२,३,४,५,६,७–मुनिगन, ८–मुनिजन

२।३०४।३ तुम्हहि बिदित सबही कर मरमू।	··· ३–मरमू; २,४,५,६,७,८–करमू
२।३०४।६ नतरु प्रजा पुरजन परिवारू।	··· २,३,४,५,६–पुरजन; ७,८ परिजन
२।३०५।४ साधन एक सकल सिधि देनी, कीरति सुगति भूमिमय बेनी।	३,४,५,७–साधन; २,६, [८] साधक, (भूमिमय); २,३,४, ५,६,७,८–भूतिमय
२।३०६।८ सो अवलंब देउ मोहि देई।	··· २,३,६,८–देउ; ४,५,७–देव
२।३११।५ कटुक कठोर कुबस्तु दुराई।	··· ३,४,५,७–कटुक; २,६,८,–कटु
२।३१३।७ मोहि लगि सहेउ सबहिं संतापू।	··· ३,८–सहेउ सबहिं; २,४,५,६–सबहि सहेउ; ७–सहेउ सकल
२।३१३।१ सब सुचि सरस सनेह सगाई।	··· २,६,८–सुचि; ३,४,५,७–रुचि सरस
२।३१४।५ चलेहु कुमग पग परै न खालैं।	··· २,३,४,५, ७, ८–चलेहु ··· परहिं, (चलत)
२।३१५।५ जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के।	··· २,३,४,५,७,८–जामिक; ६–जामिनि
२।३२२।३ करि प्रनाम बर बिनय निहोरे।	··· २,३,४,५,६,७–बर, ८–बय
२।३२४।१ घट न तेजु बलु मुख छबि सोइ।	··· ४,५,७ में भा० का पाठ है; ८–घटइ तेजु बल मुख छबि सोई, ६–घटइ तेजु बल सुखछबि सोई, २–घटत न तेजु बल सुखछबि सोई
२।३२५ माँगि माँगि आयसु करत, राज काज चहुँ भाँति।	··· २,५,६–चहुँ, ३,४,७,८–बहु

———

आरण्य कांड

३।श्लो०।१ मोहाँमोधर पूग पाटन ··· १,२,३,४,५,६–पूग; ७–पुङ्ग
३।०।१ पुर नर भरत प्रीति मैं गाई। ··· १,२,३,४,५,६–पुर नर; (पूरन); ७–पुरजन
३।१।१ चला भाजि बायस भय पावा। ··· १,२,३,४,५,६–भाजि; ५–भागि
३।१।८ सब जगु ताहि अनलहु ते ताता।··· १,२,३,४,६,७–ताहि; ५–तेहि; १,२,३,६–अनलहु; ७–अनल; ४,५–अनलहुँ
३।२।१ चरित किए श्रुति सुधा समाना। ··· १,२,३,४,५,७–श्रुति; ६–श्रति
३।३ त्वदंघ्रि मूल ये नराः।···मत्सराः। ··· १,४,५–नराः···मत्सराः; २,३,६,७–नरा मत्सरा
३।३ त्वदीय भक्ति संजुताः। ··· १,३,४–संयुताः; २ संयुता; ५,६–संयुतां; ७–संयुतं
३।४।२ आसिष देइ निकट बैठाई। ··· १,२,३,४,५,६–देइ; ७–दीन्ह
३।४।४ कह रिषि बधू सरस मृदु बानी। ··· १,२,४,५, ६–सरस; ३,७–सरल
३।४।५ मित प्रद सब सुनु राजकुमारी। ··· १,२,३,४,५,६–मित प्रद सब; ७–मित सुख प्रद
३।४।७ आपद काल परिखिअहि चारी।··· १,२,३,४,५,६– परिखिअहि; ७–परिखियहि; (परखिअहि)·
३।४।८ वृद्ध रोग बस जड़ धनहीना। ··· १,२,३,४,५,६,७–जड़
३।४।१४ सो निकिष्ट त्रिय श्रुति अस कहई।··· १,२,३,४,५,६–सो; ७–ते
३।४।१६ पति प्रतिकूल जन्म जहँ जाई। ··· १,३,४,५–जन्म; २,६–जन्मि; ७–जनम
३।५।२ आयसु होइ जाउँ बन आना। ··· १,२,३,४,५,६–होइ; ७–होउ
३।५।७ भजी तुम्हहि सब देव बिहाई। ··· १,२,३,६,७–भजी; ४,५–भजिय

३।१।९ केहि बिधि कहौं जाहु अब स्वामी।	···	१,२,३,६–कहौं जाहु अब; ४, ५, ७–कहौं जाहु बन
३।६।२ आगे राम अनुज पुनि पाछे।	···	१,२,३,४,५,६– अनुज; ७–लषन; १,२,३,४,६– काछे; ५,७–आछे
३।६।३ उभय बीच श्री सोहइ कैसी।	···	१,२,३,४,५,६–श्री सोहइ; ७–श्री सोहति; (सिय सोहति;)
३।६।४ पति पहिचानि देहिं बर बाटा।	···	१,२,३,४,५,६–बर; ७–सब
३।२क।७ सबदरसो तुम्ह अंतरजामी।	···	१,२,३,४,७–सबदरसी; ५,६–समदरसी; १,२,३,४,५,६–तुम्ह; ७–डर
३।३क सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि, जाइ जाइ सुख दीन्ह।	···	१,२–आश्रमहि; ३, ४, ५–आश्रमन्हि; ६,७–आश्रम
३।३क।१ मुनि अगस्ति कर सिष्य सुजाना।	···	१,३,४,५,६,७–अगस्ति; १–अगस्त्य
३।३क।१ नाम सुतीछन रति भगवाना।	···	१,३,४,५–सुतीछन; ७–सुतीच्छन, २,६–सुतीक्षण
३।३क।४ है बिधि दीनबंधु रघुराया।	···	१,२,५,६–है बिधि; ३,४,७–हे विधि
३।३क।१२ कबहुँक फिरि पाछे पुनि जाई।	···	१,२,३,६–पुनि; ४,५,७–चलि
३।३क।१७ जाग न ध्यान जनित सुख पावा।	···	१,२,३,४,५,७–जाग; ६–जान
३।४क।८ हर हृद मानस बाल मराल।	···	१,२,३,४,५,७–बाल; ६–राज
३।४क।१८ बसतु मनसि मम काननचारी।	···	१,२,३,६–बसतु; ४,५,७–बसहु
३।४क।२० जो कोसलपति राजिव नयना।	···	१,२,३,४,५,६,७–जो; (सो) १,२,६,७–नयना; ३,४,५–नैना
३।४क।२४ समुझि न परै झूठ का साँचा।	···	१,२,३,४,५,७–झूठ का साचा; ६–रूढ का साचा

३।५क।१ एवमस्तु करि रमानिवासा। … १,२–करि; ३,४,५,६,७–कहि

३।५क।६ सुनत अगस्ति तुरत उठि धाए ।… १,२,३,४,५,७-धाए; ६-धाय

३।६क मुनि समूह महँ बैठे,
सन्मुख सबकी ओर। … १,२,४,५,७–महँ; ३-मह; ६–मो

३।६क।३ जेहिं प्रकार मारौँ मुनिद्रोही। … १,२,३,४,५,६–मुनि द्रोही; ७–सुर द्रोही

३।६क।६ ऊमरि तरु बिसाल तव माया। … १,२,३,४,५,६–ऊमरि; ७–डूमरि

३।६क।८ तव भय डरत सदा सोउ काला।… १,२,३,४,५,६–भय; ७–डर

३।६क।१० बसहु हृदय श्री अनुज समेता। … १,३,४,५,६–श्री; २–स्री; ७-सिय

३।७ गीध राज सें भैंट भइ,
बहु विधि प्रीति बढ़ाइ। … १,२,३,४‘५,७–बढ़ाइ; ६–दृढ़ाइ

३।८ ईश्वर जीव भेद प्रभु,
सकल कहौं समुझाइ। … १,२,३–जीव; ४,५,६,७–जीवहिं; १,२,३,४,५,६,७–कहहु (कहौं)

३।८।३ सो सब माया जानेहु भाई। … १,२,३,४,५,७–सब; ५–सभ

३।८।४ विद्या अपर अविद्या दोऊ। … १,२,३,४,५,७–अपर; ६–अपार

३।९।६ निज निज कर्म निरत श्रुति रीती। … १,२,३,४,५–कर्म‘ ६–धर्म; ७–धरम; २–स्रुति;

३।९।७ यह कर फल मन विषय बिरागा। … १,२ मन;३,४,५,६,७–पुनि

३।९।७ तब मम धर्म उपज अनुरागा। … १,२,३,४,५,६–धर्म; ७–चरन

३।१० बचन कर्म मन मोरि गति,
भजनु करहिं निःकाम। … १,३,४,५,७– निःकाम; २,६–निष्काम; (निहकाम)

३।१०।६ होइ बिकल सक मन नहिं रोकी। १,२,३,६,७–सक; ४,५–सकि १,२–मन नहि; ४,४,५,६,७–मनहि न

३।१०।८ यह संजोग बिधि रचा बिचारी। … ३,४,५–यह; १,२,६–येह; ७–अस

३।१०।१० तातँ अब लगि रहिउँ कुमारी।··· १,२,३,४,५,६; ७-रहिउँ; (रहेउँ) १,२,३,४,५,६-कुमारी; ७-कुँआरी

३।१०।११ अहै कुमार मोर लघु भ्राता। ··· १,५,६,७-कुमार २,३,४-कुँआर।

३।१०।१४ प्रभु समथ कोसलपुर राजा। ··· १,२६-समथ; ३,४,४,५-समर्थ; ७-समरथ

३।१०।१६ लोभी जसु चह चार गुमानी।··· १,२,३,४,५,७-गुयानी; ६-गुनानी

३।११ ताके कर रावन कहँ, ··· १,२,४,५ मनौ; ३,६,७-मनहु
मनो चुनवती दीन्हि। १,२,७-चुनवती; ३, ४,५,६-चुनौती

३।११।२ खरदूषन पहिं गइ बिलपाता। ··· १,३,५,६-बिलपाता; २,४,७-बिलषाता

३।११।४ धाए निसिचर निकर बरूथा। ··· १,२,३,४,६,७-निकर; ६-बरन

३।१२ मरकब सयल पर लरतदामिनि, ··· १,२३,४,५,६,७-सैल;४-सयल
कोटि सो युग भुजग ज्यौं। १,२,३,५,६-लरत; ४,७-लसत

३।१२ आइ गए बगमेल, ··· १,२,३,४,५,६--धावत; ७-
धरहु धरहु धावत सुभट। धावहु

३।१२।३ देखे जिके हते हम केते। ··· १,२,३,४,५,७--हते; ६-हने

३।१२।१२ जौं न होइ बल घर शिरि जाहू।··· १,३,४,५,६,७-घर; २-खर (गृह)

३।१३ उर दहेथ कहेउ कि धरहु धाए, ··· १,२,४,५,६-धाए; २-धाये;
बिकट भट रजनीचरा ७-धावहु

३।१३ प्रभु कीन्हि धनुष टकोर, ··· १,२,३,४,५,६-भयावहा; ७-
प्रथम कठोर घोर भयावहा। भयामहा

३।१३।१ फुंकरत जनु बहु ब्याल। ··· १,२,३,४,५,७-बहु; ६-निज

३।१३।६ आयुध अनेक प्रकार। ··· १,३,४,५,७-प्रकार; २, ६-अपार

३।१३।१३ खग कंक काक सृकाल ।	···	१,२–सृगाल; ३,४,५–सृकाल; ६,७ शृगाल
३।१४ कटकटहिँ जंबुक भूत प्रेत, पिसाच खर्प्पर संचहीँ ।	···	१,२–खर्प्पर; ६–खर्पर; ३,४, ५,७–खप्पर
३।१४।५ धुआँ देखि खरदूषन केरा ।	···	१,३,४,५–धुआँ; २,६–धुआं; ७–धुआ
३।१५।६ रूप रासि बिधि नारि सँवारी ।	···	१,२,३,४,५,६–नारि; ७–रची
३।१५।१० सुनि तब भगिनि करहिँ परिहासा ।		१,२,३,४,५–करहिँ; ६–करहि। ७–करी
३।१६ सुपनषहि समुझाइ करि, बल बोलेसि बहु भाँति ।	···	१,२,३,४,५, ६,७–सूपनषहि; (सूपनखइ)
३।१७ लछिमन गए बनहि जब, लेन मूल फल कंद ।	···	१,२,३,४,५,६–मूल; ७–फूल
३।१७।५ जो कछु चरित रचा भगवाना ।	···	१,२,३,४,५,७–रचा; ६–रचेउ
३।१८।७ भइ मम कीट भृंग की नाई ।	···	१,२,३,४,६,७–मम; ५–मति; १,२,३,४,५,६,७–की नाई; (कै नाई)
३।१६।४ बैद बंदि कबि मानस गुनी ।	···	१,२,३,४,५–मानस; ६,७–भानस
३।२० मम पाछे धर धावत, धरे सरासन बान ।	···	१,२, ३, ४, ५, ६,७–धावत; (धाइहैं)
३।२०।११ माया मृग पाछे सोइ धावा ।	···	१,२–सोइ; ३,४,५,६,७–सो
३।२०।१४ धरनि परेउ करि घोर पुकारा ।	···	१,२,३,४,५,६–परेउ; ७–परा
३।२१।३ जाहु बेगि संकठ अति भ्राता ।	···	१,२,३,४,५,७–संकठ; ६–कष्ट
३।२१।५ मरम बचन जब सीता बोला । ···मन डोला ।	···	१,२,३,६,७–बोला ।...मन डोला; ४,५–बोली । मति··· डोली
३।२१।६ इत उत चितइ चला भड़िहाईँ	···	१,२,३,४,५,६–भड़िहाईँ; ७–भड़िआई ।
३।२१।१० रह न तेज तन बुधि बल लेसा।	···	१,२,३,४,५,६–बल लेसा; ७–लवलेसा

३।२१।११ नाना बिधि कहि कथा सुहाई। ···	१,२,३,६-सुहाई;४,५-सोहाई; ७-सुनाई।
३।२१।१२ बोलेहु बचन दुष्ट की नाईं। ···	१, २, ३, ४, ५-बोलेहु; ७-बोलहु; ६-बोले
३।२१।१६ सुनत बचन दससीस रिसाना। ···	१,२,६,७-रिसाना; ३,४,५-लजाना
३।२२।१ हा जगदेक बीर रघुराया। ···	२,३-जगदेक; २-जग एक; ६-जगदैक; ७-जगदेव; ४,५-जगदीस
३।२२।११ निर्भय चलेसि न जानेही मोही। ···	१,२,३,६,७-जानेहि; ४,५-जानेसि
३।२३ तब असोक पादप तर, राखिसि जतनु कराइ। ···	१, २, ३, ६-राखिसि; ४,५-राखेसि; ७-राखे
३।२३।३ मन मन सीता आश्रम नाहीँ। ···	३,४,५,६-में भा०का पाठ है;१; २-मम सीता आश्रम महुँ नाहीं, ७-मम मन आश्रम सीता नाहीँ
३।२३।५ अनुज समेत गए प्रभु तहवाँ। जहवाँ। ···	१,२, ३, ४, ५, ७-तहवाँ··· जहवाँ; ६-तहाँ जहाँ
३।२३।१८ सुमिरत राम चरन जिन्ह रेखा। ···	१,२, ३, ४, ५, ६,७-जिन्ह; (चिन्ह)
३।२४।२ तेहिँ खल जनक सुता हरि लीन्ही। ···	१,२,४,५,६-तेहि; ३-तेहिँ; (तेइ)
३।२६ जे राम मंत्र जपंत··· ···	१,२,३,४,५, जे; ६,७-जो
३।२६ जेहि श्रुति निरंजन ब्रह्म ब्यापक ···	१,२,३,४,५,६-निरंजन; ७-निरंतर
३।२६ पस्यंति जंभ्र जोगी जतनु करि, करत मन गो बस सदा। ···	१,२,३,४,५-सदा; ६,७-बदा
३।२७ मन क्रम बचन कपट तजि, जो कर भूसुर सेव। ···	१,२,३,४,५,६,७-कर (गुर)
३।२७ मोहि समेत बिरंचि सिव, बस ताके सब देव। ···	१,२,५,६-ताकेँ; ३,४,७-ताके; (तेहि कइ)

३।२८।३ तिन्ह महँ मैं अति मंद अघारी।	···	१,२,३,६–अति; ४,५,७–मति
३।२८।६ भगतिहीन नर सोहै कैसा···जैसा	···	१, २, ३, ४, ५, ६–कैसा···जैसा, ७–कैसे···जैसे
३।३१ सहित बिपिन मधुकर खग, मदन कीन्हि बगमेल।	···	१,२,३,४,५,६–खग; ७–खगन
३।३१ डेरा कीन्हेउ मनहु तब, कटकु हटकि मन जात।	···	१,२,३,४,५,६–कीन्हेउ; ७–दीन्हेउ
३।३१।१० चतुरंगिनी सेन संग लीन्हे।	···	१,२,३,४,५,८–सेन; ३-सेना
३।३२।२ कामिन्ह कै दीनता दिखाई।	···	१,२,३,४,५,५–कै; ७–कहँ
३।३२।५ सत हरि भजनु जगत सब सपना।	···	५,७ सत, ४–सन्न; १,२,३,६–सत्य
३।३३ मायाछन्न न देखिऐ जैसे निर्गुन ब्रह्म।	···	१,२, ३–देखिऐ ६–देखिअ; ४,५,देखियै; ७–देखिए
३।३३।६ पाटल पनस पनास रसाला।	···	१,२४–पनास ; ४,५,३,७–परास
३।३४ फल भारन नम्रि बिटप सब, रहे भूमि निअराइ	···	१,२, भारन नम्रि; ३,४५, ६, ७–भर नम्र
३।३५।१ सुनहु उदार परम रघुनायक।	···	१ ३,४,६–उदार परम; २–उदार; सहज; ७–परम उदार
३।३७ काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोह कै धारि।	···	१,२,३,४,५'५,७–कै; ६–कइ
३।३७।५ होइ हिम तिन्हहि देति सुख मंदा।	...	१,२–देति सुख; ३,४,५–तिन्हे दहै सुख; ६,७–देति दुख मंदा
३।३८।६ जिन्ह ते मैं उनके बस रहऊँ।	···	२'३ ४,५–जिन्ह ते; ६–जाते; ७–जेहि ते
३।३८।६ धीर धर्म्म गति परम प्रवीना।	···	१,२,२ ३,४ ५–धर्म्मगति; ७–धरम गति; ६–भगति पथ
३।३६ गुनागार संसार दुख, रहित विगत संदेह।	···	१,२,३,४,५,६–दुख, ७–सुख
३।४० दीप सिखा सम जुबति तन, मन जनि होसि पतंग।	···	१,२–जुवति तनु; (जुवति जन) ३,४,५,६–जुवती; [कोदवराम में यह दोहा नहीं है]

किष्किंधा कांड

४।०।१ आगे चले बहुरि रघुराया ।	... १,२,३,४,५,६,७-रघुराया
४।०।५ पठए बालि होहिं मन मैला ।	... १,२,४,५,६-पठए; ३-पठये; ७-पठवा
४।१ जग कारन तारन भव, भंजन धरनी भार ।	... १,२,३,४,५,६,७-भव;(भवहिं)
४।२ एकु मैं मंद मोह बस, कुटिल हृदय अज्ञान ।	... १,२,३,४,५,६-कुटिल; ७-कीस
४।४ तब हनुमंत उभय दिसि, की सब कथा सुनाई ।	... १,२,३,५,७-की; ६-कह; ४-कहि
४।४।४ परबस परी बहुत बिलपाता ।	... १,२,३,४,५,७-बिलपाता; ६-बिलखाता
४५।१४ फरकि उठी द्वौ भुजा बिसाला ।	... १,२-द्वै; ३,४,५-उठीं दोउ; ६-उठी दौ; ७-उठे दोउ;
४।६ सुनु सुग्रीव मारिहौं बालिहि एकहि बान ।	... १,२,३,४,५,६-मारिहौं; ७-मैं
४।६।१२ बिनु प्रयास रघुनाथ उठाए ।	... ३-उठाए; ७-रघुबीर ढहाए; १,२-ढ़हाए; ४,५,६-रघुनाथ ढहाए
४।६।१३ बालि बधब इन्ह भइ परतोती ।	... १,२,७-भइ; ४,५-भै; ३-भय; ६-बाली बध की भै
४।६।२१ अब प्रभु कृपा करहु एहि भाँती ।	... ४,५-एहि; १,२-येहि; ३,७-यहि; ६-वेहि
४।७ कह बाली सुनु भीरु प्रिय,	... १,२,३,४,५,६-कह बाली;७-कहा बालि
४।७ जौं कदाचि मोहि मारहिं, तौ पुनि होउँ सनाथ ।	... १,३,५-मारहिं; ४-मारिहिं;६-मारहि;७-मारिहै;२-मारिहहि
४।१० सुमन माल जिमि कंठ ते, गिरत न जानै नाग ।	... १,२,३,४,५-जानै; ७-जाने; ६-जानइ
४।११।२ स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती ।	... १,२,३,४,५,७-करहिं; ६-करति

४।११।४ सोइ सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ। ··· १,२,३,४,५,६—सोइ; ७—सो
४।१२।४ करहिं सिद्ध मुनि प्रभु की सेवा। ··· ३—की; १,२,४,५,६,७—कै
४।१३।२ दामिनि दमक रह न घन माहीं ··· १,२,३,४,५,६—रह न; ७—न रह; (रही)
४।१३।५ छुद्र नदी भरि चली तोराइ। ··· १,२,४,५,६,७—तोराई; ३—तुराई
जस थोरेहू धन (?तिराई); १,२,४,५,६,७—थोरेहु; ३—थोरेहुँ
४।१४ जिमि पाखंड बाद तें, ··· १,२,३,५,६—पाखंड; ४,७—
गुप्त होहि सदग्रंथ। पाखंडी; १,२,३,४,५,६,७—गुप्त (लुप्त)
४।१४।४ खोजत कतहुँ मिलइ नहि धूरी। ··· १,२,३,४,५,७—कतहुँ मिलइ नहिं; ६—कतहूँ मिलइहि
४।१४।१० जिमि हरिजन हिय उपज न कामा। १,२,३,४,५,७—हिय; ६—पिय
४।१५ कबहुँ प्रबल बह मारुत, ··· १,३,४,५,७—बह; २,६—चल
जहँ तहँ मेघ उड़ाहिं।
४।१५।२ जनु बरखा कृत प्रगट बुढ़ाई। ··· १,२,३,४,५,७—कृत; ६—ऋतु
४।१५।१० कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी। १,२,३,४,५,७—जिमि; ६—जसि
४।१६।२ फूले कमल सोह सर कैसा।···जैसा ···१,२,३,४,६—कैसा—जैसा; ५,७—कैसे···जैसे
४।१७।८ लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना। ··· १,२,३,४,५,७—लछिमन; ६—लच्छिमन
४।१६।३ करि बिनती समुझाउ कुमारा। ··· १,२,३,४,५,६,७—समुझाउ; (समुझाइ)
४।१६।७ मुनि मन मोह करै छन माहीं। ··· १,२,३,४,५,६—मोह; ७—छोभ
४।२१।१ सो मूरुष जो करन चह लेखा।··· १,२,३,५,६—करन चह; ७—करि चहै; ४—किय चह
४।२२।३ मन क्रम बचन ··· १,३,४,५—सो जतन; २,६—
सो जतन बिचारेहु। सो जतनु; ७—सुजतन
४।२२।७ सोइ गुनज्ञ सोई बड़भागी। ··· ३,४,५,६,७—गुनज्ञ; १,२—गुन ज्ञा।

४।२३।३ मिलै न जल घन गहन भुलाने। ···	१,२,३,४,५,६–घन; ७–बन
४।२४ दीख जाइ उपबम ··· बर सर बिगसित बहु कंज।	१,२,४,५–बर सर बिकसित बहु; ३,६–सर बिकसित बहुतक; ७– सुभग सर बिगसित
४।२६ निज इच्छा प्रभु अवतरइ, ··· सुर महि गो द्विज लागि।	१,२,३,४,७ प्रभु अवतरइ; ५–अवतरहिँ; ६–अवतरइ प्रभु
४।२६ सगुन उपासक संग तहँ ··· रहहि मोच्छ सब त्यागि।	१,२–मोच्छ सब; ६–मोक्ष सुख; ३,४,५,७–मोक्ष सब
४।२६।१ गिरि कंदरा सुनी संपाती। ···	१,२,३,४,५–सुनी; ६,७–सुना
४।२६ बाहेर होइ देखि बहु कीसा। ···	१,२,३,४,५–देखि; ६,७–देखे; १,२,६–बाहेर; ३,४,५,७–बाहिर (बाहेरि)
४।२७।५ लागी दया देखि करि मोही। ···	१,२,३,४,५,६–करि; ७–अति
४।२७।६ जमिहहिँ पंख करसि जनि चिंता।	१,२,३,४,५,६–चिंता; ७–चीता; (चिन्ता)
४।२८ मैं देखउँ तुम्ह नाहीँ, ··· गीधहि दृष्टि अपार	१,२,३,५,६–नाहीँ; ४–नाहिं; ७–नाहिंन
४।२८।५ अस कहि गरुड गीध जब गएउ ···	१,२,३,४,५,७–गरुड; ६–उमा
४।२८।६ पार जाइ कै संसय राखा। ···	१,२,३,४,५–कै; ६,७–कर
४।२९ उभय घरी महँ दीन्ही, ··· सात प्रदच्छिन धाइ।	१,२,३, ४, ५, ६- दीन्ही; ७–दीन्हि मैं
४।२९।३ कहइ रीछ पति सुनु हनुमाना। ··· का चुप साधि रहेहु बलवाना। ···	१,२,४,७–कहइ रीछपति सुनु हनुमाना; ३–रिच्छपति; १,२–का चुप साधि रहेहु बलबाना; ३,४,५,७–का चुप साधि रहेउ बलवाना; ६-का चुप साधि रहेउ बलवाना। कहइ रिछेसु सुनहु हनुमाना।
४।२९।५ जो नहिँ होइ तात तुम्ह पाही। ···	१,२,३,४ ५–होइ तात; ६,७ –तात होइ

४।२६।८ लीलहि नाघउँ जलनिधि खारा।···	१,२,३,४, ५, ६,७–जलनिधि खारा; (जलनिधि अपारा)
४।३० तिन्ह कर सकल मनोरथ, सिद्ध करहिं त्रिसिरारि। ···	१,२,३,५,६–त्रिसिरारि; ४,७ त्रिपुरारि

सुंदर कांड

५। श्लो०।१ शांतं शाश्वतमप्रमेयमनघं, गीर्वाणशांतिप्रदं। ···	१,२ ३–शांतं साश्वत;४,५,६, ७–शांतं शाश्वत; १,२,३,४,५, ७–गीर्वाण; ६–निर्वाण
५।श्लो०।३ वानराणामधीशं··· ···	१,४,५;७-णाम; २,३,६–नाम
५।०।३ होइहि काजु मोहि हरष बिसेखी।···	१,२,३,६–होइहि;४,५,७–होइ
५।०७ जेहिं गिरि चरन देइ हनुमंता। चलेउ··· ···	१,२,३,४.५,६–जेहि···चलेउ; ७-जे···दीन्ह; (चलि सो गा)
५।०।८ एही भाँति चला हनुमाना। ···	२,२,३,४-एही भाँति चला; ५,७-तेही, ६–योही।
५।१।६ तासु दून कपि रूप देखावा। ···	१ २,३,४,६,७–दून;५–दुगुन
५।२।४ सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा। ···	१,२,३,४,५–सोइ···कहँ;७–सोइ ते; ६–सो··कहँ
५।३ कनक कोट बिचित्र मनि कृत, सुंदरायतना घना। ···	१,२,३,४,५,६–सुंदरायतना; ७–सुंदरायत अति
५।३ कहुँ माल देह बिसाल···	१,२,३,४,६ -माल;७–मल्ल
५।३ नगर चहु दिसि रछहीं।···भछहीं।	१,२.३,४,५–रछहीं - भछहीं; ६,७–रच्छहीं-भच्छहीं
५।३।२ सो कह चलेसि मोहि निंदरी। ···	१,२,३,४,५,६–निंदरी; ७–निन्दरी
५।३।४ रुधिर बमत धरनी ढनमनी। ···	१;२,३,४,५,७–बमत; ६–बमन

५।३।७ बिकल होसि तैँ कपि कैँ मारैँ। …	१,२;३,४,५,६-तैँ; ७-जब
५।४ तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिअ तुला एक अंग। …	१,२,३,४,५,६-तात; ७-सात
५।४।३ गरुड सुमेरु रेनु सम ताही। राम कृपा करि चितवा जाही। …	१,२,३,४,५ ६-गरुड़; ७-गरुअ; १, २, ३, ४, ५,६-चितवा; ७- चिततहिं
५।५ नव तुलसिका वृंद तहँ, देखि हरष कपिराइ …	१, २, ३, ४,५,६-तुलसिका; तुलसी के
५।७।३ सुनि सब कथा बिभीषन कही। …	१,२-सुनि; ३,४,५,६,७-पुनि
५।७।४ देखी चहौं जानकी माता। …	१,२,३-देखी;४,५,६,७-देखा
५।८ जिज मन नयन दिएँ मन, राम चरन महुँ लीन …	१,२,४,७-चरन महु; ३,५-चरन महँ; ६-कमल पद
५।८।३ साम दान भय भेद देखावा। …	१,२,३,४,५,६-दान; ७-दाम
५।८।८ अस मन समुझु कहति जानकी। …	१,२,३,४,६-समुझु; ४,७० समुझि
५।९।४ सुनु सठ अस प्रवान मन मोरा। …	१,२०-मन;३,४,५,६,७-पन
५।९।६ सीतल निसि तव असि बर धारा। …	१,२,३,४ ५,६-निसि तव असि; ७-निसित बहसि
५।१०।६ तब प्रभु सीता बोलि पठाई। …	१,२,३,४,५,६७-सीता; ७-सीतहि
५।११।११ देहि अगिन तन करहि निदाना।…	१,२,५,७-तन; ३,४,६-जनिः (जन)
५।१२।७ श्रवनामृत जेहि कथा सुहाई। कही सो प्रगट… …	१, २, ३, ४,५ ६,७-सुहाई; (सुनाई)१,२,५,६-कही; ३, ४,७-कहि
५।१३।७ बचनु न आव नयन भरि बारी।…	१,२,६-भरे; ३,४,५,७-भरि
५।१४।४ जे हित रहे करत तेइ पीरा। …	१,२,६-जे हित रहे;३,४,५,७-जेहि तरु रहें
५।१६ सुनु माता साखामृग नहिँ बल बुद्धि बिसाल। …	१,३,४,५,६-साखामृग नहिँ; २-साखामृगन; ७-साखा-मृगहि

५।१६।४ निर्भर प्रेम मगन हनुमाना। ···	१,२,३,४,५,६—मगन; ७—हरख
५।१६।८ परम सुभट रजनीचर भारी। ···	१,२ ३,४।५,७—भारी; ६—धारी
५।२०।२ की धौं श्रवन सुनेहि नहि मोही। ···	१,२,४,५,६,७—स्रवन सुने; ३—सुनेहि
५।२०।३ मारे निसिचर केहि अपराधा। ···	१,२,३,४,५—मारे; ६,७-मारेहि
५।२०।५ पालत सृजत हरत दससीसा। ···	१,२,३,४,५,६—पालत सृजत हरत; ७—सिरजत पालत हर
५।२१।६ जो सुर असुर चराचर खाई। ···	१,२,३,४,५,६,७—असुर
५।२२ गए सरन प्रभु राखिहैं, तव अपराध बिसारि। ···	१,३,४,५—राखिहैं; २—राखिहें; ७;—राखिहै; ६—राखिहि; (राखिहहि)
५।२२।६ सरित मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं। ···	१,२,३,४,सरित; ५,६,७-सजल
५।२३।४ मति भ्रम तोहि प्रगट मैं जाना। ···	१,२,३,५,६—तोहि; ४—तोरि; ७—तोर
५।२४ कपि के ममता पूँछि पर, सबहिं कह्यौ समुझाइ। ···	१,२—कह्यो; ३,४,५—कह्यौ;७—कहा; ६—कहैं
५।२४।१ पूँछहीन बानर तहँ जाइहि। ···	१,२,३,४,५,६—तहँ: ७—जब
५।२५।२ झपट लपट बहु कोट कराला। ···	१,२,३,४,५,६—झपट; ७—दपट
५।२६।४ दीनदयाल बिरिदु संभारी। ···	१,२,३—बिरिदु; ४,५,७—बिरद ६—बिरुद
५।२६।६ मास दिवस महुँ नाथ न आवा। ···पावा। ···	१,३, ४, ५, ६—आवा—पावा; २,७—आवै···पावै
५।२७।१ गर्भ श्रवहिं सुनि निसिचर नारी।	१,२,३,४, ५, ६-स्रवहि सुनि निसिचर; ७-रजनीचर
५।२७।५ तलफत मीन पाव जिमि बारी। ···	१,२,३,४, ५—जिमि;६,७-जनु
५।२८ जाइ पुकारे ते सब, बन उजार जुबराज। ···	१,२,३,४,५,६,७—सब; (सबनि)
५।२८।२ मिलेउ सबन्हि अति प्रीति कपीसा।	१,२,३,४,५—प्रीति; ६,७—प्रेम

५।३० नाम पाहरू राति दिनु, ध्यान तुम्हार कपाट।	···	१,२,३,४,७-राति दिनु; ५,६-दिवस निसि
५।३०।६ निसरत प्रान करहि हठि बाधा।	···	१,२,३,४,५,६,७-हठि
५।३१ निमिख निमिख करुनानिधि, जाहिँ कलप सम बीति।	···	१,२,३,४,५,६-करुनानिधि, ७-करुनायतन
५।३२।६ नाथ न कछू मोरि प्रभुताई।	···	१,२,३,४,५,६-कछू; ७-कछुक
५।३३ तव प्रभाव बडवानलहि, जारि सकै खल तूल।	···	१,२,३,६-प्रभाव; ४,५,७-प्रताप
५।३३ १ नाथ भगति अति सुख दायनी।	···	१,२,३,४,५,६,७-अति सुख-दायनी;(तव अति सुखदायिनि)
५।३३।१ देहु कृपा करि अनपायनी।	···	१,२,३,४,५,६,७-अनपायनी; (सो अनपायिनि)
५।३३।५ सुनि प्रभु बचन कहहिँ कपि बृंदा।		१,२,३,४,५,६-प्रभु; ७-कपि
५।३४।५ जासु सकल मंगलमय कीती।	···	१,२,३,४,५,६-कीती; ७-रीती
५।३५ सहि सक न भार उदार अहिपति, बार बारहिं मोहई।	···	१,२,३,४,५,६-उदार; ७-अपार १,२,३,४,६,७-बारहि मोहई; ५-बार बिमोहई
५।३६।६ मंदोदरी हृदय कर चिंता।	···	१,२,३,४,५,६-चिंता; ७-चींता
५।४० सीता देहु राम कहुँ, अहित न होइ तुम्हार।	···	१,२,३,४,५,६-देहु; ७-देव
५।४०।३ जियसि सदा सठ मोर जिआवा।	···	१,२,३,४,५,७-सठ; ६-सब
५।४३।२ जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं	···	१,२,३,४,५,६-नासहिं; ७-नासौं।
५।४३।७ लछिमन हनइ निमिष महु तेते।	···	१,२,३,४,५,६-हनइ; ७-हतहिं।
५।४४।५ आनन अमित मदन मन मोहा।	···	१,२,३,४,५,७-मन; ६-छबि
५।४६।१ लोभ मोह मच्छर मदमाना।	···	१,२-मछर; ६-मच्छर; ४,३,५,७-मत्सर।
५।४८ सगुन उपासक परहित, निरत नीति दृढ़ नेम।	···	१,२,३,४,५,६-परहित; ७-परम हित
५।४६ जरत बिभीषन राखेउ, दीन्हेउ राजु अखंड।	···	१,२-राखेउ; ३,४,५,६-राख; ७-राखे; (राखेऊ)

५।४६।६ अति अगाध दुस्तर सब भाँती।··· १,२,३,४,५,६–सब; ७–बहु

५।५१।२ सकल बाँधि कपीस पहि आने।··· १,२,३,४, ५, ६–सकल; ७–ताहि···कपिपति

५।५१।३ कह सुग्रीव सुनहु सब बानर। ···१,२,३,४,५,६–बानर; ७–बनचर

५।५१।७ सुनि लछिमन सब निकट बोलाए। १,२,३,४,५,६–सब; ७–तब

५।५२।३ कहसि न कस आपन, कुसलाता।··· १,२–कस; ३,४,५,६,७–सुक

५।५२।४ पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी। जाहि मृत्यु···। ··· १,२,३,४, ५, ६–खबरि-जाहि; ७-कुसल-जासु

५।५२।५ करतु राजु लंका सठ त्यागी। ··· १,२,३ ४, ५, ६–त्यागी; ७–त्यागा

५।५३।२ कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना।··· १, २, ३, ४, ५–दीन्हे; ६,७–दीन्हेउ

५।५३ ८ अमित नाम भट कठिन कराला··· १,२,४,५,६–कठिन; ३-कठिन्ह; ७–बिकट

५।५४ द्विबिद मयंद नील नल, अंगद गद बिकटासि। ··· १,५,६–अंगद गद बिकटास्य; ४–अंगदादि बिकटास्य; २,३;–अंगद गद बिकटासि; ७–अंगदादि बिकटासि

५।५४ दधिमुख केहरि निसठ सठ, जामवंत बल रासि। ··· १,२,३,४,५–निसठ सठ; ६,७–कुमुद गव

५।५५ रावन काल कोटि कहुँ, जीत सकहिँ संग्राम। ··· १,२, ३, ४, ५,६–काल; ७–कालौ

५।५५।७ बिजय बिभूति कहाँ जग ताके। ··· १,२,३,४,५–जग ताके; ६ ७–लगि ताके

५।५५।८ सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ी··· १,३,४,५,७–दूत; २,६–दूतहि

५।५६ होइ कि राम सरानल, खल कुल सहित पतंग। १,२,३,४,५,६–होहि; ७–होसि राम सर अनल खल जनि

५।५६।६ मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिही। ··· १,२,४,५, ६–करिही; ३–करिहौं; ७–करिहहि-धरिहहिं

५।५७।४ ऊसर बीज बोए फल जथा। ··· १,२, ३–बोए; ७–बोये; ६–बए; ४;५–बये

५।५७।८ बिप्र रुप आएउ तजि माना। ... १,२,४—आए; ३,५,७—आएउ; ६—आए

५।५८ बिनय न मान खगेस सुनु डाटेहि पइ नवै नीच। ... १,२,४,५,५,६,७—नव; ३-नवै

५।५८।४ प्रभु आयसु जेहि कहँ जसि अहई। १,२,५,६,७—जस; ३ ४—जसि

५।५६ सुनत बिनीत बचन अति,... ... १,२,३,४,५, ६—सुनत; ७—सु नतहि

५।६० सुख भवन संसय समन दवन, बिषाद रघुपति गुन गना। ... १,२,३,६—दवन; ४,५,७—दमन

५।६० तजि सकल आस भरोस गवहि, सुनहि संतत सठ मना। ... १,२,३,४,५,६—सठ; ७—सुठि

———

लंका कांड

६।श्लो०। नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं,... श्री शंकरं मन्मथारिं। १,२,३,४,७—श्रीशंकरं मन्मथारिं ५,६—कन्दर्पहं शंकरं; (श्रीशंकर कामदम)

६।श्लो०। खलानां दंडकृद्यौसौ...... ... १,४,५—दंड कृद्यौसौ; ६—कृत यो सौ; ७—कृद्योसि; २,३—कृद्योऽसौ

६।०।७ सकल सुनहु बिनती कछु मोरी। ... १,२,३,४,५—कछु; ६,७—एक

६।१ अति उतंग गिरि पादप नीलहि ... १,२,३,४,५—गिरि पादप; ६,७ तरु शैल गन; १,२,३,४,५,६—नीलहि; ७-नील कहँ

६।१।४ करिहौं इहाँ संभु थापना। ... १,२,३,४,५,६—थापना; ७—अस्थापना

३।१।७ सिव द्रोही मम भगत कहावा। ... १,२,३,४,५,६—भगत;७—दास

६।२।१ जे रामेस्वर दरसनु करिहहि। ... १,२,३,४,५,६,७—जे;...मम; ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिँ। ६—हरि; (जो)

६।२।४ मम कृत सेतु जो दरसनु करिहो।··· ···तरिहो।	१,२,३,४,५,६–करिही-तरिही; ७–करिहहिं···तरिहहि
६।२।५ राम वचन सबके जिय भाए। ···	१,२,३,४,५,६–जिय; ७–मन
६।२।७ बाँधा सेतु नील नल नागर। ···	१,२,३,४,५-बाँधा; ६,७-बाँधेउ
६।३।५ मकर नक्र नाना झख ब्याला।···	१,२,३,४,५,७–मकर नक्र नाना झख; ६–नाना मकर नक्र झख
६।३।६ चला कटकु प्रभु आयसु पाई। ···	१,२,३,४,५,७–प्रभु आयसु पाई ६--कछु बरनि न जाई।
६।४।५ रितु अरु कुरितु काल गति त्यागी।	१,२,३,४,५–रितु अरु कुरितु; ६–ऋतु अनऋतु; ७–ऋतु अनऋतुहि
६।५ बांध्यो बन निधि नीर निधि। ···	१,४,५-बांध्यो; ३–बाँध्यो; २, ६–बाध्यो; ७-बाँधे
६।५।१ निज बिकलता बिचारि बहोरी।···	१,२,३,४,५–निज बिकलता बिचारि; ६,७-ब्याकुलता निज समुझि
६।५।६ खलु खद्योत दिनकरहि जैसा। ···	१,२,३,४,५,६–दिनकरहि; ७–दिवाकर
६।७ अस कहि नयन नीर भरि, गहि पद कंपित गात। ···	१,२,३,४,५–नयन नीर भरि; ६,७–लोचन बारि भरि
६।७ नाथ भजहु रघुनाथहि, अचल होइ अहिवात। ···	१,२,३,४,५–रघुनाथहि अचल होइ अहिवात; ६,७–रघुबीर पद मम अहिवात न जात
६।७।६ काल बस्य उपजा अभिमाना। ···	१,२, ३, ४, ५–बस्य; ६,७–बिबस
६।७।७ सभा आइ मंत्रिन्ह तेहिं बूझा। ···	१,३,४,५–तेहिं; २,६–तेहि; ७–सन
६।७।८ बार बार प्रभु पूछहु काहा। ···	१,२,३,६–प्रभु पूछहु; ४,५–पूछहु प्रभु; ७–प्रभु बूझहु
६।८ सब के बचन श्रवन सुनि··· ···	१,२,३,४,५,७–सब के बचन; ६–बचन सबहि के

६।८।१ कहहिँ सचिव सठ ठकुर सोहाती ।		१,२,३–सठः ४,५,६,७–सब
६।८।८ अइसे नर निकाइ जग अहहीँ।	…	१,२,३–अइसे; ४,५,६–अैसे; ७–ऐसे
६।८।१० सीता देइ करहु पुनि प्रीती ।	…	१,२,३, ४, ५, ७–सीता; ६–सीतहि
६।६।८ लागे किन्नर गुन गन गावन ।	…	१,२,३,४,५–किन्नर; ६–किन्नर गंधर्व; ७–गंध्रब
६।१० परम प्रबल रिपु सीस पर, तद्यपि सोच न त्रास ।	…	१,२,३–तद्यपि सोच न त्रास; ४,५–तदपि सोच नहिं त्रास; ६–तदपि न कछु मन त्रास; ७–तदपि न तेहि कछु त्रास
६।१०।२ सिखर एक उतंग अति देखी । परम रम्य सम सुभ्र बिसेखी ।	…	१,२,३,४,५–सिखर एक उतंग अति देखी; ६,७–सैल सृंग एक सुंदर देखी; १,२,३, ४,५–परम रम्य; ६,७–अति उतंग
६।१०।४ तापर रुचिर मृदुल मृगछाला ।	…	१,२,३,४,५–तापर; ६, ७–तेहि पर
६।११ एहि बिधि कृपा रूप गुन, धाम रामु आसीन।	…	१,२,३,४,५,७–कृपा रूप गुन; ६–करुना सील गुन
६।११ धन्य ते नर एहि ध्यान जे, रहत सदा लयलीन ।	…	१,२,३,४,५,७–धन्य ते नर एहि ध्यान, ६–ते नर धन्य जे ध्यान एहि
६।१२ कह हनुमंत सुनहु प्रभु, ससि तुम्हार प्रिय दास ।	…	१,२,३,४,५–हनुमंत, ६, ७–मारुत सुत; १,२,३,४,५,७–प्रिय; ६–निज
६।१२ दछिन दिसि अवलोकि प्रभु बोले कृपानिधान ।	…	१,२,३,४,५,७–दछिन दिसि अवलोकि प्रभु; ६–दच्छिन दिसा बिलोकि पुनि

६।१२।४ लंका शिखर उपर आगारा। ···	१,२,३,४,५,७-उपर; ६-रुचिर
६।१२।७ सोइ रव मधुर सुनहु सुर भूपा ···	१,२,३,४,५-मधुर; ६,७-सरस
६।१३।४ मुकुट परे कस असगुन ताही। ···	१,२,३,४,५-परे; ६,७-खसे
६।१३।८ जानि मनुज जनि हठ उर धरहू। ···	१,२,७-हठ उर; ६-मन हठ; ३,४,५-हठ मन
६।१५ मनुज बास सचराचर, ···	१,२,३,४,५,७-सचराचर; ६-चर अचर मय
६।१५।२ नारि सुभाउ सत्य सब कहहीं। ···	१,२,३-सब; ४,५,६,७-कबि
६।१५।६ एहि बिधि कहेउ मोरि प्रभुताई। ···	१,२-बिधि कहहु; ७-बिधि कहेउ; ३,४,५-बिधि कहेहु; ६-मिसि कहिहि
६।१५।७ समुझत सुखद सुनत भय मोचनि। ···	१,३,४,५,७-मोचनि; २,६-सोचनि
६।१६ एहि बिधि करत बिनोद बहु, प्रात प्रकट दस कंध। ···	१,२,३,४,५-एहि बिधि करत बिनोद बहु प्रात प्रगट; ६,७-बहु बिधि जल्पेसि सकल निसि प्रात भए
६।१६ सहज असंक लंकपति, सभा गएउ मद अंध। ···	१,२,३,४,५,७-लंकापति; ६-सुलंकपति
६।१६ मूरख हृदय न चेत, जौं गुर मिलहिं बिरंचि सिव। ···	१,३,४,५-सिव; २-सम; ६,७-सत
६।१६।३ सुनु सरवज्ञ सकल उर बासी। बुधि बल तेज धर्म गुन रासी।	१,२,३,४,५-उर बासी; ६,७-गुन रासी; १,२,३,४,५-बुधि बल तेज धर्म गुन रासी; ६,७-सत्य संध प्रभु सब उर बासी
६।१६।८ रिपु सन करेहु बतकही सोई। ···	१,२,३,४,५,७-सन; ६-सैं
६।१७।३ खेलत रहा होइ गै भेंटा ···	१,२,३,५-होइ गै; ७-तासु भइ; ४,६-सो होइ गइ

६।१८।४ अंगद दीख दसानन बैसे।···जैसे।	१,२,३,४–बैसे···जैसे; ५,६, ७-बैसा···जैसा
६।१९।४ जीतेहु लोक पाल सब राजा। ···	१,२,३,४,५–सब; ६,७–सुर
६।२० आरत गिरा सुनत प्रभु, अभय करैगो तोहि। ···	१,२,३,४,५,७–आरत गिरा सुनत प्रभु; ६–सुनतहि आरत बचन प्रभु; १,२,३,६–करै गो; ४,५,७–करहिँ गे;
६।२०।१ रे कपि पोत बोलु सँभारी। ···	१,२,३,५,६, ७-बोलु; ४न–बोल
६।२०।३ तासों कबहुँ भई ही भेंटा। ···	१,२,३,४,६–ही;७–हुइ; ५–रही
६।२०।४ रहा बालि बानर मैं जाना। ···	१,२,३,४,५–रहा; ६,७हाँ–बाली
६।२०।६ गर्भ न गएहु व्यर्थ तुम्ह जाएहु। ···	१,२,३,४,५,६–गएहु व्यर्थ; ७–गयहु बृथा; २–गएउ
६।२१ अंधौ बधिर न अस कहहि, नयन कान तव बीस। ···	१,२,३, ४, ५, ७–बधिर;··· कहहि; ६–बहिर;···कहइ
६।२१।६ देखी नयन दूत रखवारी। ···	१,२,३, ४, ५–देखी; ६, ७–देखिउँ
६।२१।८ पावा दरसु हमहुँ बड़भागी। ···	१,३,४,५,७–हमहुँ;२,६–महुँ;
६।२२।४ जामवंत मंत्री अति बूढ़ा। ···	१,२.३,४,५,७–बूढ़ा; ६–मूढ़ा
६।२२।६ सुनत बचन कह बालि कुमारा।···	१,२,३,४,५–सुनत बचन कह; ६,७–सुनि हँसि बोलेउ
६।२२।८ सुनि अस बचन सत्य को कहई।	१,२,३, ४, ५, ७–सुनि अस बचन; ६–को अस झूठ सुनै
६।२३ सत्य नगरु कपि जारेउ, बिन प्रभु आएसु पाइ। ···	१,२,३,४,५–सत्य नगर कपि जारेउ; ६–अब जानेउ पुर दहेउ कपि; ७–अब जाना पुर दहेउ कपि

६।२३ फिरि न गएउ सुग्रीव पहिं, तेहि भय रहा लुकाइ।	···	१, २, ५–फिरि न गएउ सुग्रीव; ३, ४-फिरि न गयो सुग्रीव;६–गएउ न फिरि निज नाथ;७-फिरि न गयउ निजनाथ
६।२३ तदपि कठिन दसकंठ सुनु, छत्र जाति कर रोष।	···	१,२,३,४,६–छत्र;५,७–छत्रि
६।२३ जो प्रति पालै तासु हित, करै उपाय अनेक।	···	१,२,३,४,५,७–जो; ६–जौ
६।२३। पति हित करै धर्म निपुनाई।	···	१,२,३,४,५, ६–करै; ७–धरै
६।२३।१२ कहु रावन रावन जग केते ···जेते।	···	१,२,३,४,५,७–कहु; ६–सुनु; १,२,३,४,५,६–जेते; ७–तेते
६।२४ इन्ह महुँ रावन तैं कवन, सत्य वदहि तजि माँष।	···	१,२,३,४,५,८–इन्ह;६–तिन्ह
६।२४।६ जिन्ह के दसन कराल न फूटे।	···	१,२,३,४, ५, ६–जिन्ह; ७–तिन्ह
६।२५ रे कपि बर्बर खब खल, अव जाना तव ज्ञान।	···	१,३, ४, ५–अब जाना तव ज्ञान; २, ६–अब जाना तव जान;७–तब न जान अब जान
६।२५।४ सो नर क्यौं दससोस अभागा।	···	१,२,३,४,५,६–दससीस; ७–दसकंठ
६।२६।३ मूढ़ वृथा जानि मारसि गाला।	···	१,२,३,४,५,७–बृथा;६–मुधा
६।२६।५ ते तव सिर कंदुक सम नाना।	···	१,२,३,४,५–सम; ६,७–इव
६।२७ कुंभकरन अस बंधु मम, सुत प्रसिद्ध सक्रारि।	···	१,२,३,४,५,६–अस; ७–सम
६।२७।२ सूर न होहिं ते सुनु सब कीसा।	···	१,२,३–सब; ४, ५, ७–सठ; ६–जड़
६।२७।८ हरि गिरि मथन निरखि मम बाहू।	···	१,७–निरखि; २,३,४,५,६–निरखु

६।२८। हुने अनल अति हरष बहु, बार साखि गौरीस।	...	१,२,३;४,५–अति हरष बहु-बार साखि गौरीस; ६,७–महुँ बार बहु हरषि साखि गिरीस।
६।२८।१० इंद्रजालि कहुँ कहिअ न बीरा।	...	१,२,३,४,५–इंद्रजालि; ६, ७ बाजीगर
६।२९ जरहि पतंग मोह बस, भार बहहिं खर बृंद।...कहावहि	...	१,२,३,४,५-मोह;...कहावहि; ६,७-विमोह,...सराहिअहि
६।२९।३ बार बार अस कहइ कृपाला।	...	१,२,३,४,५–अस कहइ; ६,७–इमि कहइ; (अस कहै)
६।२९।६ सूने हरि आनिहि परनारी।	...	१,२,६–हरि आनिहि; ३,४,५ हरि आनेहि; ७–हरि आनहि।
६।३० तब जुवतिन्ह समेत सठ, जनक सुतहि लै जाउँ।	...	१,२,३, ४–तब जुवतिन्ह; ५–तब जुवतीन्ह; ६,७–मंदोदरी
६।३०।७ रे कपि अधम मरन अब चहसी।	...	१,२,३,४,५,७-अधम; ६-पोत
६।३१ अगुन अमान जानि तेहि, दीन्ह पिता बनवास।... पुनि निसि दिन मम त्रास।	...	१,२,३, ४, ५, ७–जानि;... निसिदिन; ६–बिचारि... अनुदिन
६।३१।६ गिरत सँभारि उठा दसकंधर।	...	१,२,३,४,५–सँभारि उठा दस-कंधर; ६,७–दसानन उठेउ संभारी
६।३२ तरकि पवन सुत कर गहेउ, आनि धरे प्रभु पास।	...	१,२,३,४,५–तरकि पवन सुत कर गहेउ; ७–कूदि पवन सुत कर गहेउ; ६–कूदि गहे कर पवन सुत
६।३२ { उहाँ सकोप दसानन, सब सन कहत रिसाइ। धरहु कपिहि धरि मारहु, सुनि अंगद मुसुकाइ।	...	१,२,३,४,५-भा० का पाठ है; ६,७–उहाँ कहत दसकंध रिसाई। धरि मारहु कपि भागि न जाई ॥
६।३२।१ एहि बधि बेगि सुभट सब धावहु।	...	१,२,३,४,६–बधि; ५,७-बिधि
६।३२।४ बल बिलोकि बिहरति नहिं छाती।	...	१,२,३,७–बिहरति; ४,५–बिहरत; ६–बिहरी

६।३२।५ खल मल रासि मंद मति कामी।	···	१,२,३,४,५, ६,७–मलरासि; (मलराजि)
६।३२।६ भयेसि काल बस सल मनुजादा।	···	१,२,३, ४, ५–खल; ७–सठ; ६–निसि
६।३३।३ गूलरि फल समान तव लंका।	···	१,२,३,४,५ ७–तव; ६–यह
६।३३।८ समुझि राम प्रताप कपि कोपा।	···	१,२,३,४,५–समुझि राम प्रताप; ६,७ राम प्रताप सुमिरि
६।३४।१ उठा आपु कपि के परचारे।	···	१,२,३,४,५–कपि के परचारे; ६,७–जुवराज प्रचारे
६।३५ रिपु बल धर्राष हरषि कपि, बालि तनय बल पुंज।	···	१,२,३,४,५, ७–धरषि; ६–धरषित
६।३५ पुलक सरीर नयन जल, गहे राम पद कञ्ज।	···	१,२,३,५–पुलक सरीर नयन जल; ४,६,७–सजल सुलोचन पुलकतनु
६।३५ मंदोदरी रावनहि, बहुरि कहा समुझाइ।	···	१,२,३,४,५–रावनहि; ७–तब रावनहिं; ६–निसाचरहिं
६।३५।३ जाके दूत केर यह कामा।	···	१,३,४, ५, ७–यह; २–येह; ६–अस
६।३५।६ जारि सकल पुर कीन्हेसि छारा।	···	१,२,३,४,५,७–सकल पुर; ६–नगर सब
६।३५।८ पति रघुपतिहि नृपति जनि मानहु	···	१,२,३,४,५,७–जनि; ६–मति
६।३५।१० जनक सभा अगनित भुअपाला रहे तुम्हौ बल अतुल बिसाला।	···	१,२,४,५,७–भूपाला; ३–भुअपाला; ६–महिपाला; १,२,३,४ ५–अतुल; ६,७–बिपुल
६।३७ दुइ सुत मरे दहेउ पुर···	···	१–मरेउ; २–मरे; ३,४,५,७–मारेउ; ६–मारे
६।३७ कृपासिंधु रघुनाथ भजि···	···	१,२,३,४,५,७–रघुनाथ; ६–रघुपतिहि
६।३७।६ साम दान अरु दंड बिभेदा।	···	१,२,३,४,६–दान; ५,७–दाम

६।३८ तेहि परिहरि गुन आए, सुनहु कोसलाधीस ।	···	१,२,३, ४, ५–तेहि परिहरि गुन आए; ६,७–आए गुन तजि रावनहिं
६।३६ जयति राम जय लछिमन, जय कपीस सुग्रीव ।	···	१,२,३,४,५–जयति राम जय लछिमन; ६,७–जयति राम भ्राता सहित
६।३६ गर्ज्जहिं सिंहनाद कपि, भालु महाबल सीव ।	···	१,२,३,४,५–सिंहनाद; ६,७–केहरिनाद
६।३६।३ छुधावंत सब निसिचर मेरे ।	···	१,२,३,४,५–सब निसिचर; ६,७–रजनीचर
६।४१ एकु एक निसिचर गहि, पुनि कपि चले पराइ ।	···	१,२–निसिचर गहि; ३,४,५–गहि निसिचर; ६,७–गहि रजनिचर
६।४१।१ मर्दहिं निसिचर सुभट बरूथा ।	···	१,२,३,४,५,७–सुभट; ६–निकर
६।४१।३ चले निसाचर निकर पराई ।	···	१, २, ३, ४,५,७–निसाचर; ६–तमीचर
६।४१।४ रोवहिं बालक आतुर नारी ।	···	१,२,३,४,५–बालक आतुर; ६,७–आरत बालक
६।४१।६ निज दल बिचल सुनों तेहि काना फेरि सुभट लंकेस रिसाना ।	···	१,२,३,४,५–सुनी तेहि;५,७–सुना जब; (सुना तेहि);१,२, ३, ४,५,६,७–फेरि; (फिरे)
६।४१।७ जो रन बिमुख फिरा मैं जाना । सो मैं हतब कराल कृपाना ।	···	१,२,६,७–फिरा मैं जाना; ३,४,५–सुना मैं काना; १,२, ३,४,५,७–सो मैं हतब; ६–तेहि मारिहौं
६।४१।८ समरभूमि भए बल्लभ प्राना ।	···	१,२,३,४,५–बल्लभ; ७–दुर्लभ; ६–दुल्लभ
६।४१।६ चले क्रोध करि सुभट लजाने ।	···	१,२,३,४,५,७चले क्रोध करि सुभट; ६-फिरे क्रोध करि वीर

६।४२ ब्याकुल किए भालु कपि, परिघ त्रिसूलन्हि मारि।	··· १,२,३—ब्याकुल किए;४,५,७—ब्याकुल कीन्हे; ६—कीन्हे; ब्याकुल···प्रचंडन्हि मारि
६।४२।४ निल दल बिकल सुना हनुमाना।	१,२,३, बिकल सुना;६—बिचल सुनी; ४,५,७— बिकल सुना
६।४२।६ दुसरे सूत बिकल तेहि जाना।	··· १,२,३,४,५,६—दुसरे;७—दूसर
६।४३।१ जुद्ध विरुद्ध क्रुद्ध द्वौ बंदर।	··· १—बंनर; २,५,७—बंदर; ३,४, बानर
६।४३।२ रावन भवन चढ़े द्वौ धाई।	··· १,२,३,४,५-द्वौ; ६,७ तब
६।४३।७ गर्जि परे रिपु कटक मझारी।	··· १,२,३,४,५-गर्जि परे; ६—कूदि परे; ७—कूदि परेउ
६।३४ एक एक सो मर्दहिँ, तोरि चलावहिँ मुराड।	··· १,२,३,४५—सो मर्दहिँ ७—सन मर्दहिँ; ६—रान मर्दि करि
६।४५ कूदे जुगल बिगत स्रम, आए जहँ भगवन्त।	··· १,२,३,४,५—बिगत स्रम; ६,७—प्रयास बिनु
६।४५।७ महाबीर निसिचर सब कारे।	··· १,२,३,४,५—महाबीर निसिचर सब कारे; ६,७—बीर तमीचर सब अतिकारे।
६।४६ एकहि एकु न देखई, जहँ तहँ करहिं पुकार।	··· १,२—देखई; ६,७—देख तब; ३,४,५—देखइँ
६।४६।१ सकल मरमु रघुनायक जाना।	··· १,२,३,४,५—सकल मरमु रघुनायक जाना; ६,७—यह सब मरम राम बिभु जाना
६।४६।४ ज्ञान उदय जिमि संसय जाहीं	··· १,२,३,४,५,७—संसय, ३—दुख सब
६।४६।५ धाए हरषि बिगत स्रम त्रासा।	··· १,२,३,४,५—हरषि; ६—कोपि
६।४७ कछु मारे कछु घायल, कछु गढ़ चले पराइ।	··· १,२,३,४,५—कछु मारे कछु घायल···६,७—कछु घायल कछु रन परे
६।४७ गर्जहिँ भालु बली मुख, रिपु दल बल बिचलाइ।	··· १,२, ३, ४, ५—गर्जहि भालु बलीमुख; ६,७—गर्जहिँ मर्कट भालु भट

६।४७।३ उहाँ दसानन सचिव हँकारे। ···	१,२,३,४,५,७–सचिव; ६–सुभट
६।४७।८ वेद पुरान जासु जस गायो। पायो। ···	१,२,३,४, ५–गायो···पायो ···; ६,७–गावा···पावा
६।४८ सिव बिरंचि जेहि सेवहिं, तासो कवन बिरोध। ···	१,२,३, ४, ५–सिव बिरंचि जेहि सेवहिं; ६,७–जेहि सेवहिं सिव कमल भव।
६।४८।२ करिआ मुँह करि जाहि अभागे। ···	१,२,७–मुँह; ३,४,५,६–मुख
६।४८।४ बध्यो चहत एहि कृपानिधाना। ···	१,२,३,४,५, ७–कृपानिधाना; ६–श्री भगवाना।
६।४६ गहि सैल तेहि गढ़ पर चलावहि ···	१,२,३,४,५,७–तेहि; ६–तेह
६।४६ उतर्यौ बीरु दुर्ग ते, सन्मुख चल्यौ बजाइ।	१,२,३, ४, ५–उतर्यौ बीर; ६–उतरि दुर्ग ते बीर बर; ७–उतरि बीर बर दुर्ग ते
६।४६।३ आजु सबहि हठि मारौं ओही। ···	१,२,३,४,५–सबहिं; ६,७–सठहिं
६।४६।४ अतिसय क्रोध स्रवन लगि ताने। ···	१,२,३,४,५,७–क्रोध;६–कोप
६।४६।७ जहँ तहँ भागि चले कपि रीछा। ···	१,२,३,४, ५–जहँ तहँ भागि चले; ६,७–मागे भय व्याकुल
६।५० दस दस सर सब मारेसि, परे भूमि कपि बीर। ···	१,२,३,४,५–दस दस सर सब मारेसि; ६,७–मारेसि दस दस बिसिख सब
६।५० सिंहनाद करि गर्जा, मेघनाद बलबीर।	१,२,३,४, ५–सिंहनाद करि गरजा···; ६;७–सिंहनाद गर्जत भएउ मेघनाद रनधीर।
६।५०।२ महासैल एक तुरत उपारा। ···	१,२,३,४,५–सैल एक तुरत; ६,७–महीधर तमकि
६।५०।५ रघुपति निकट गएउ घननादा ···	१,२,३,४,५–रघुपति निकट; ६,७–राम समीप

६।५०।७ देखि प्रताप मूढ़ खिसिआना। ··· १,२,३,४, ५, ७–प्रताप; ६–प्रभाउ

६।५२ आएसु माँगि राम पहिं,
अंगदादि कपि साथ। ··· १,२,३,४,५–माँगि; ७–माँगी; ६–माँगेउ

६।५२ लछिमन चले क्रुद्ध होइ,
बान सरासन हाथ। ··· १,२,३–क्रुद्ध होइ; ६,७–सकोप अति; ४,५–क्रुद्ध ह्वै

६।५४ जगदाधार सेष किमि,
उठइ चले खिसिआइ। ··· १,२, ३, ४, ५–सेष; ६,७–अनंत

६।५५ राम पदारविंद सिर,
नाएउ आइ सुखेन। ··· १,२,३,४, ५–रामपदारविंद; ६,७–रघुपति चरन सरोज

६।५५।४ तासु पंथ को रोकन पारा। ··· १,२,३–पारा; ४,५–रोकनहारा; ६,७–रोकनिहारा

६।५५।५ छांडहु नाथ मृषा जलपना। ··· १,२,३,४,५–मृषा; ६,७–बृथा

६।५५।७ मैं तैं मोर मूढ़ता त्यागू।
महा मोहनिसि सूतत जागू। ··· १,२, ३, ४, ५–मैं तैं मोर मूढ़ता; ६,७–अहंकार ममदा मद; ७–सोवत;

६।५७।२ मानहु सत्य बचन कपि मोरा। ··· १, २, ३, ४, ५, ७–कपि; ६–प्रभु

६।५७।३ निसिचर निकट गएउ कपि तबहीं। १,३,४,५–कपि; ६,७–सो

६।५८ बिनु फर सायक मारेउ,
चाप स्रवन लगि तानि। ··· १,२,३,४,५,७–सायक; ६–सर तकि

६।५८।२ सुनि प्रिय बचन भरतु तब धाए।··· १,२,३,४,५,७–तब; ६–उठि

६।५६।२ कपि सब चरित समास बखाने।··· १,२,३,४,५,७–समास; ६–संछेप

६।६० तव प्रताप उर राखि प्रभु,
जैहौं नाथ तुरंत।
अस कहि आयेसु पाइ,
पद बंदि चलेउ हनुमंत। ··· १,२,३,४,५–भा० का पाठ है; ६,७–तब प्रताप उर राखि गोसाईं। जैहौं राम बान की नाईं॥ भरत हरषि तब आयसु दएऊ। पद सिर नाइ चलत कपि भएऊ॥

६।६० मन महुँ जात सराहत, पुनि पुनि पवन कुमार ...	१,२,३,४,५,७–मन महुँ जात सराहत, ६–जात सराहत मनहि मन
६।६०।११ जैहौं अवध कौन मुहुँ लाई। ...	१,३,७–मुहुँ; २,४,५–मुह; ६–मुख
६।६१ प्रभु प्रलाप सुनि कान, ... बिकल भए बानर निकर ...	१,२,३,४.५–प्रलाप; ६,७–बिलाप
६।६१।६ ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा ... बिबिध जतन करि ताहि जगावा।	१,२,३,४,५–आवा, जगावा; ६,७–गयऊ। करि बहु जतन जगावत भएऊ
६।६१।८ कुंभकरन बूझा कहु भाई।	१,२,३,४,५,७–कहु; ६–सुनु
६।६२।६ नारद मुनि मोहि ग्यान जो कहा, ... कहतेउँ तोहि समय निर्बहा।	१,२,३,४,५–कहा ... निर्बहा; ६,७–कहेऊ ... निर्बहेऊ
६।६२।७ लोचन सुफल करौं मैं जाई। ...	१,२,३,४,५,७–मैं; ६–निज
६।६३ राम रूप गुन सुमिरत, ... मगन भएऊ छन एक।	१,२,३,४,५–सुमिरत; ६,७–सुमिरि मन
६।६३।३ देखि बिभीषनु आगे आएउ। ... परेउ चरन निज नाम सुनाएउ।	१,२,३,४,५,७–में भा० का पाठ है; ६–गएऊ। पद गहि नाम कहत निज भएऊ
६।६४।१ बंधु बचन सुनि चला बिभीषन।	१,२,३,४,५,७–चला;६–फिरा
६।६४।४ लिए उठाइ बिटप अरु भूधर। ...	१,२,३–उठाइ; ४,५–उठाय; ६,७–उपारि
६।६४।५ करहिं भालु कपि एक एक ... बारा।	१,२,३,६–एक एक; ४,५,७–एकहि
६।६४।६ मुरचौ न मनु तनुट र्यौ न टार्यौ। जिमि गज अर्क फलनि को मार्यौ।	१,२,३,४,५–में भा० का पाठ है; ६,७–मुरै न मन तन टरै न टारा। जिमि गज अर्क फलन्हि कर मारा॥
६।६५ अंगदादि कपि मुरुछित, ... करि समेत सुग्रीव।	१,२,४,५–मुरुछित;३–मुर्छित; ६,७–घाय बस

६।६५।५ सुग्रीवहुँ कै मुरुछा बीती।	१,२,३,४,५–सुग्रीवहुँ; ६,७–कपिराजहँ
६।६५।७ गहेउ चरन गहि भूमि पछारा।···	१,२,३,४,५–गहेउ चरन गहि ६,७–गहेसि चरन धरि धरनि
६।६५।८ जयति जयति जय कृपा निधाना।···	१,२,३,४,५-में भा० का पाठ है; ६,७–जय जय कारुनीक भगवाना
६।६५।६ नाक नाक काटे जिय जानी। ···	१,२,३,४,५,७–जिय; ६–सोइ
६।६६ एकहिं बार तासु पर, छाडेन्हि गिरि तरु जूह। ···	१,२,३,४,५- तासु; ६,७–जो तासु; १,२,६–छाडेन्हि, ३,४,५,७–डारेन्हि
६।६६।६ मुरे सुभट सब फिरहिं न फेरे। ···	१,२,३,४,५,७–सब; ६–रन
६।६६।७ कुंभकरन कपि फौज बिड़ारी। ···	१,२,३,४,५,७–बिड़ारी; ६–बितारी
६। ७ सुनु सुग्रीव बिभीषन अनुज सभारेहु सेन। ···	१,२,३,४,५–सुग्रीव विभीषन अनुज; ६, ७–सौमित्र कपीस तुम्ह सकल
६।६७।१ कर सारंग साजि कटि भाथा। अरि दल दलन चले रघुनाथा। ···	१, २, ३, ४, ५–साजि···अरि दल दलन; ६, ७–बिसिख मृगपति ठवनि
६।६७।४ जहँ तहँ चले बिपुल नाराचा।···	१,२,३,४,५–जहँ तहँ चले बिपुल; ६,७–अति तब चले निसित
६।६७।७ लागत बान जलद जिमि गाजहिं।···	१,२,३,४,५,–जलद; ६–बनद
६।६८ पुनि रघुबीर निषंग महुँ, प्रबिसे सब नाराच। ···	१,२,३,४,५–रघुबीर निषंग; ६,७–रघुपति के त्रोन महुँ
६।६८।१ हति छन माँझ निसाचर धारी।···	१,२,३,४,५–हति छन माँझ निसाचर; ६,७–हती निमिष महँ निसिचर

६।६८।२ भा अति क्रुद्ध महाबल बीरा। ···	१,२,३,४,५,७–भा अति क्रुद्ध महा; ६ भएउ क्रुद्ध दारुन
६।६८।८ बिहँसा जबहि निकट कपि आए। ···	१,२,३,४,५–कपि; ६–भट; ७–चलि
६।६९ महानाद करि गर्जा, कोटि कोटि गहि कीस। ···	१,२,३,४,५–महानाद करि ६,७–गर्जत धाएउ बेग अति
६।७० करि चिक्कार घोर अति, धावा बदनु पसारि ······हेति पुकारि। ···	१,२,३,४,५–करि चिक्कारघोर अति·····हेति; ६,७–करि चिकार अति घोर तर···होत
६।७०।३ सरन्हि भरा मुख सन्मुख धावा। ···	१,२,३,४,५,७–मुख सन्मुख; ६–सनमुख सो।
६।७०।६ सुर दुंदुभी बजावहिं हरषहिं। ··· अस्तुति करहिं सुमन बहु बरषहिं	१,२,३,४,५,७–सुर; ६–नभ १,२,३,४,५–अस्तुति करहि सुमन बहु; ६–जय जय करि प्रसून सुर; ७–जय जय करहि सुमन सुर
६।७१ स्रम बिंदु मुख राजीव लोचन, अरुन तन सोनित कनी। ···	१,२,३,४,५–अरु तन: ६,७–रुचिर तन
६।७१ निसिचर अधम मलाकर, ताहि दीन्ह निज धाम। ···	१,२,३,४,५–मलाकर; ६,७ मलायतन
६ ७१।२ निज मुख कहे सुकृत जेहि भाँती। ···	१,२,३,४,५–सुकृत, ६,७–धर्म
६।७२ मेघनाद मायामय, रथ चढ़ि गएउ अकास। ···	१, २, ३, ४,५,५–मायामय; ६–माया रचित
६।७२ गर्जेउ अट्टहास करि, भइ कपि कटकहि त्रास। ···	१,२,३४,५–अट्टहास करि; ६,७–प्रलय पयोद जिमि
६।७२।३ दस दिसि रहे बान नभ छाई। ···	१,२,३,४,५–दस दिसि रहे बान नभ; ६,७–रहे दसहुँ दिसि सायक
६।७२।४ धरु धरु मारु सुनिअ धुनि काना ···	१,२,३,४,५–सुनिअ धुनि; ६,७–सुनहि कपि

६।७२।१३ रन सोभा लगि **प्रभुहिं** बधायो। **नाग पास** देवन्ह भयपायो। ...	१,२,३,४,५–प्रभुहि बँधायो; ७–आपु बधावा; १, २–नाग पास देवन्ह भय पायो; ३,४, ५–नाग पास देवन्ह दुख पायो; ६,७–देखि दसा देवन्हि भय पावा
६।७३ **गिरिजा** जासु नाम जपि, सुनि काटहिं भव पास। **सोकि बंध तर आवै,** व्यापक विस्व निवास। ...	१,२,३,४,५,७–गिरिजा; ६–खगपति; १,२,३,४,५–सो कि बंध तर आवै; ६,७–सो प्रभु आव कि बंध तर
६।७३।५ लागेसि **अधम** पचारै मोहीं। ...	१,२,३,४,५–अधम; ६,७–पतित
६ ७३।६ अस कहि **तरल** त्रिसूल चलायो। ...	१, २, ३, ४, ५, ७–तरल; ६–तीव्र
६।७३।७ परा **भूमि** घुर्मित सुरघाती। ...	१,२,३,४,५,७–भूमि; ६–धरनि
६।७४ खगपति सब धरि खाए, माया नाग बरूथ। माया बिगत भए सब, हरषे बानर जूथ। ...	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७–पन्नगारि खाए सकल छन महँ ब्याल बरूथ। भए बिगत माया तुरत हरषे बानर जूथ।
६।७४।३ इहाँ बिभीषन मंत्र बिचारा। **सुनहु** नाथ बल अतुल उदारा। ...	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७–सो सुधि पाइ बिभीषन कहई। सुनु प्रभु समाचार अस अहई
६।७४।५ नाथ बेगि **पुनि** जीति न जाइहि। ...	१,२,३, ४, ५–पुनि; ६,७–रिपु
६।७४।६ जामवंत **सुग्रीव** बिभीषन। ...	१,२,३,४,५,७–सुग्रीव; ६–कपिराज

६।७५ रघुपति चरन नाइ सिरु, चलेउ तुरंत अनंत। ······सुभट हनुमंत।	···	१,२,३,४,५,७–रघुपति चरन नाइ सिर...सुभट; ६–बंदि राम पद कमल जुग...रिषभ
६।७५।२ कीन्ह कपिन्ह सब जज्ञ बिधंसा।	···	१,२,३,४,५,७–कीन्ह कपिन्ह सब; ६–तब कीसन्ह कृत
६।७५।१४ लछिमन मन अस मंत्र दृढ़ावा। एहि पापिहि मैं बहुत खेलावा।	···	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६, ७–एहि पापिहि मैं बहुत खेलावा। अब बध उचित कपिन्ह भय पावा
६।७६ धन्य धन्य तव जननी, कह अंगद हनुमान।	···	१,२,३,४,५–धन्य तव जननी; ६,७–सक्रजित मातु तव
६।७६।३ श्री रघुनाथ बिमल जसु गावहिं। ७	···	१,२,३,४,५–रघुनाथ; ६,७–रघुबीर
६।७७ तब दसकंठ बिबिध बिधि, समुझाई सब नारि। नस्वर रूप जगत सब, देखहु हृदय बिचारि।	···	१,२,३,४, ५–दसकंठ बिबिध बिधि...जगत सब; ६,७–लंकेस अनेक बिधि...प्रपंच
६।७७।१ आपुन मंद कथा सुभ पावन।	···	१,२,३,४,५, ७–पावन; ६–भाव न
६।७८ गोमाय गीध करार खर रव, स्वान बोलहिं अति घने।	···	१,२,३; ४–बोलहिं; ५,६,७–रोवहिं
६।७८।३ प्राबिट जलद मरुत जनु प्रेरे।	···	१,२, ३, ४, ५, ६, ७–मरुत; (पवन)
६।७८।८ प्रलय समय के घन जनु गाजहिं।	···	१,२,३,४, ५–प्रलय समय; ६,७-महाप्रलय
६।७९ भिरे बीर इत रामहित; उत रावनहि बखानि।	···	१,२,३,४–राम हित; ५–राम कहि; ६,७- रघुपतिहि
६।८० सुनि प्रभु बचन बिभीषन, हरषि गहे पद कंज।	···	१,२,३,४,५–सुनि प्रभु बचन बिभीषन; ६,७–सुनत बिभीषन प्रभु बचन

६।८० एहि मिस मोहि उपदेसेहु, राम कृपा सुख पुंज ।	···	१,२,३,४,५–एहि मिस मोहि उपदेसेहु; ७–एहि बिधि मोहि उपदेसे; ६–एहि बिधि मोहि उपदेस दिअ
६।८० उत पचार दसकंधर, इत अंगद हनुमान ।	···	१,२,३–पचार दसकंधर; ४,५ ७–प्रचार दसकंधर; ६–प्रचार दसकंठ भट
६।८०।६ उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं । गहि पद अवनि पटकि डारहिं ।	···	१,२,३, ४, ५, ७–उपारहि··· डारहिं; ६–उपाटहि···डाटहि
६।८०।७ ऊपर ढारि देहिं बहु बालू ।	···	१–ढारि; ३,४,५,६,७–डारि; २–टारि
६।८१ निज दल बिचलत देखेसि, बीस भुजा दस चाप । रथ चढ़ि चलेउ दसानन, फिरहु फिरहु करि दाप ।	···	१,२,३,४,५–बिचलत देखेसि ···रथ चढ़ि चलेउ दसानन; ६,७– बिचल बिलोकि तेहि ···चलेउ दसानन कोपि तब
६।८१।४ चला न अचल रहा रथ रोपी ।	···	१,२,३,४,५,७–रहा रथ; ६–महारथ
६।८२ निज दल बिकल देखि कटि कसि निषंग धनु हाथ । लछिमन चले सक्रुद्ध होइ, नाइ राम पद माथ ॥	···	१,२,३,४,५–निज दल बिकल देखि कटि कसि···सक्रुद्ध होइ; ६–बिचलत देखि अनीक निज कटि···सरोष तब; ७–निज दल बिकल बिलोकि तेहि··· कोपि तब
६।८२।४ कोटिन्ह आयुध रावन डारे ।	···	१,२,३,४,५,६–डारे; ७–मारे
६।८२।७ परेउ धरनि-तल सुधि कछु नाहीं ।	···	१,२,३,४,५–धरनि; ६,७–अवनि
६।८३ ब्रह्मांड भवन बिराज जाके, एक सिर जिमि रज कनी ।	···	१,२,५,६–भवन; ३,४,७–भुवन

६।८३ देखि पवन सुत धाएउ, बोलत बचन कठोर। आवत कपिहि हन्यो तेहिँ, मुष्टि प्रहार प्रघोर ॥	...	१,२,३,४,५–देखि पवन सुत धाएउ···आवत कपिहि हन्यो तेहि; ६;७–देखत धाएउ पवन-सुत···आवत तेहि उर महँ हतेउ
६।८३।१ जानु टेकि कपि भूमि न गिरा।	...	१,२,३, ४, ५, ६, ७-गिरा; (परा)
६।८३।८ पुनि कोदंड बान गहि धाए। रिपु सन्मुख अति आतुर आए।	...	१,२,३,४,५,७–में भा० का पाठ है; ६–धरि सर चाप चलत पुनि भए। रिपु समीप अति आतुर गए।
६।८४ राम बिरोध बिजय चह, सठ हठ बस अति अग्य।	...	१,२,३,४,५-राम बिरोध बिजय चह; ६–जय चाहत रघुपति बिमुख; ७–बिजय चहत रघु पति बिमुख
६।८४।३ पठवहु नाथ बेगि भट बन्दर।	...	१,२,३,४,५–नाथ; ६,७–देव
६।८४।८ अस कहि अंगद मारा लाता।	...	१,२,३,४,५–मारा;६,७-मारेउ
६।८५ नहिं चितव जब करि कोप कपि गहि दसन्ह लातन्ह मारहीं।	...	१,२,३,४,५–करि कोप कपि; ६,७–कपि कोपि तब
६।८५ जज्ञ बिधंसि कुसल कपि, आए रघुपति पास। चलेउ निसाचर क्रुद्ध होइ, त्यागि जिवन कै आस ॥	...	१,२,३,४,५–जज्ञ बिधंसि कुसल कपि···निसाचर; ६,७–मख बिधंसि करि कुसल सब······लंकपति
६।८५।५ इहाँ देवतन्ह अस्तुति कीन्ही।	...	१,२,३,४,५,७–अस्तुति; ६–बिनती
६।८६ सोभा देखि हरषि सुर, बरषहिं सुमन अपार।	...	१,२,३,४,५–सोभा देखि हरषि सुर; ६, ७–हरषे देव बिलोकि छबि
६।८६ जय जय जय करुना निधि, छबि बल गुन आगार।	...	१,२,३,४,५–में भा० का पाठ है; ६,७–जय जय प्रभु गुन ग्यान बल धाम हरन महिभार

६।८६।२ देखि चले सन्मुख कपि भट्टा। ···घट्टा।	···	१,२,३,४,५,७–भाट्ट···वट्टा; ६–भटा···घटा
६।८६।३ जनु दुहु दिसि दामिनी दमंकहिँ।	···	१,२,३,४,५,६–दहु; ७–दस
६।८६।४ गर्जहिँ मनहुँ बलाहक घोरा।	···	१,२,३-गर्जहिं; ४,५–गर-जहिं; ६, ७–गर्जत
६।८६।१० स्रवहिँ सैल जनु निर्भर भारी	···	१,२,३,५–भारी; ४,६,७–बारी
६।८७ कादर भयंकर रुधिर सरिता, चली परम अपावनी।	···	१,२,३,४,५–चली; ६,७–बढ़ी
६।८७ कादर देखि डरहिँ तहँ, सुभटन्ह के मन चेन।	···	१;२,३,४,५–देखि डरहिँ तहँ; ६,७–देखत डरहिँ तेहि
६।८७।१० कोटिन्ह रुंड मुंड बिनु डोल्लहिँ	···	१, २, ६–चल्लहिं; ३, ५–डोल्लहिं; ४,७ डोलहि
६।८८ खप्परिन्ह खग्ग अलुभ्भि जुभ्भहिँ, सुभट भटन्ह ढहावहीं।	···	१,२,३,४,५–भटन्ह ढहावहीं; ६,७–सुरपुर पावहीँ
६।८८ बानर निसाचर निकर मर्दहिँ राम बल दर्पित भए।	···	१, २, ३, ४, ५ में भा० का पाठ है; ६,७–निसिचर बरूथ बिमर्दि गर्जहि भालु कपि दर्पित भए
६।८८ रावन हृदय विचारा, भा निसिचर संघार।		१,२,३,४,५–रावन हृदय बिचारा; ३,७–हृदय बिचारेउ दसबदन
६।८८।४ हरषि चढ़े कोसलपुर भूपा।	···	१,२,३,४, ५–हरषि चढ़े; ६–बिहँसि चढ़े; (हरषि चले)
६।८८।६ लछिमन कपिन्ह सो मानी साँची।		१,२,३,४,५–लछिमन कपिन्ह सो मानी; ६,७–सब काहू मानी करि
६।८६ बहु राम लछिमन देखि मर्कट भालु मन अति अपडरे।	···	१, २, ३, ४,५ में भा० का पाठ है; ६,७–बहु बालि सुत लछिमन कपीस बिलोकि मरकट अपडरे

६।८६ माया हरी हरि निमिख महुँ, हरषी सकल मर्कट अनी … १,२,३,४,५–मर्कट; ६,७–बानर

६।८६।२ गर्जत तर्जत सन्मुख धावा। … १,२,३,४–धावा; ५,६,७–आवा

६।८६।५ खरदूषन बिराध तुम्ह मारा। … १,२,३,४,५,७–बिराध; ६–कबंध

६।८६।६ बिहँसि बचन कह कृपा निधाना। १,२,३,४,५–बिहँसि बचन कह; ६–कहेउ बिहँसि तब; ७–बिहँसि कहे तब

६।६० राम बचन सुनि बिहँसा, मोहि सिखावत ज्ञान। बयरु करत नहिं तब डरे, अब लागे प्रिय प्रान। … १,२,३,४,५–बिहँसा; ७–बिहँसेउ; ६–बिहँसि कह; १,२,३,४,५,७–डरे; ६–डरेहु

६।६०।३ पावक सर छाँड़ेउ रघुबीरा। … १,२,३,४,५–पावक सर; ६,७–अनल बान

६।६०।४ बान संग प्रभु फेरि चलाई। … १,२,३,४,५–चलाई; ६,७–पठाई

६।६१ कोदंड धुनि अति चंड सुनि, मनुजाद सब मारुत ग्रसे। … १, २, ३, ४, ५, ६, ७–सब; (भय)

६।६१ तानेउ चाप स्रवन लगि, छाँड़े बिसिख कराल। … १,२,३,४,५–तानेउ चाप; ६,७–तानि सरासन

६।६१।१३ पुनि पुनि प्रभुकाटत भुज बीसा … १,२–बीसा; ३,४,५,६,७–सीसा

६।६२।४ दंड एक रथ देखि न परेऊ। जनु निहार महुँ दिनकर दुरेऊ। … १,२,३,४,५,७–परेऊ … दिनकर दुरेऊ; ६–परा … दिनमनि दुरा

६।६२।८ कहँ लछिमन सुग्रीव कपीसा। … १,२,३,४,५–सुग्रीव; ६,७–हनुमान

६।६३ सिर मालिका कर कालिका गहि वृंद वृंदन्हि बहु मिलीं। ··· १,२,३,४,५,७—कर कालिका गहि; ६—गहि कालिका कर

६।६३ पुनि दसकंठ क्रुद्ध होइ, छाड़ी सक्ति प्रचंड। ··· १,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७—पुनि रावन अति कोप करि छाड़िसि; (पुनि दसकंठ क्रुद्ध करि छाड़ी)

६।६३।१ आवत देखि सक्ति अति घोरा प्रनतारत भंजन पन मोरा। ··· १,२, ३, ४, ५ में भा० का पाठ है; ६,७-खर धारा। प्रनतारति हर बिरद सँभारा

६।६४ रघुबीर बल दर्पित बिभीषनु, घालि नहिँ ता कहुँ गनै। ··· १, २, ३, ४, ५—दर्पित; ६,७—गर्वित

६।६४ सो अब भिरत काल ज्यौं, श्री रघुबीर प्रभाउ। ··· १,२,३,४,५,७—सो अब भिरत; ६—भिरत सो काल समान अब

६।६४।४ पुनि रावन कपि हतेउ पचारी। चलेउ गगन कपि पूँछ पसारी। ··· १,२,३, ४, ५—कपि···चलेउ गगन; ६, ७—तेहि···चलेउ

६।६५ तब रघुबीर पचारे, धाए कीस प्रचंड। कपि बल प्रबल देखि तेहि, कीन्ह प्रगट पाखंड। ··· १, २, ३, ४, ५—तब रघुबीर पचारे······देखि; ६,७—राम प्रचारे बीर तब···बिलोकि

६।६५।३ जहँ तहँ भजे भालु अरु कीसा। ··· १,२ ३ ४,५—जहँ तहँ भजे···; ६,७-भागे भालु बिकल भट कीसा

६।६५।४ भागे बानर धरहिँ न धीरा। ··· १,२,३,४,५—भागे बानर; ६, ७—चले बली मुख

६।६६ सजि सारंग सर एक सर, हते सकल दससीस। ··· १,२,३,४, ५—सारंग; ६,७, बिसिखासन

६।६६।५ अस्तुति करत देवतन्हि देखे। ··· १,२—अस्तुति करत···; ३,४,५—अस्तुति करत देव तेहि; ६—करत प्रसंसा सुर तेहि देखे; ७—करत प्रसंसा सब सुर देखे

६।६६।६ अस कहि कोप गगन पर धाएउ। ···	१,२,७–पर; ३, ४, ५,६–पथ
६।६७ तब रघुपति रावन के, सीस भुजा सरचाप। काटे बहुत बढ़े पुनि, जिमि तीरथ कर पाप। ···	१,२,३,४,५–रावन के···काटे बहुत बढ़े पुनि·····; ६, ७–लंकेस के···काटे भए बहोरि जिमि कर्म मूढ़ कर पाप
६।६७।३ बानर राज दुबिद बल सीला। ···	१, २, ३, ४,५, ७–बानरराज दुबिद; ६–दुबिद कपीस पनस
६।६७।७ रुधिर देखि विषाद उर भारी। ···	१,२,३,४,५–रुधिर देखि बिषाद उर भारी; ६,७–रुधिर बिलोकि सकोप सुरारी।
६।६८ गहे भालु बीसहु कर मनहुँ, कमलन्हि बसे निसि मधुकरा। ···	१,२,६–गहे; ३,४,५, ७-गहि;
६।६८ मुरछा बिगत भालु कपि, सब आए प्रभु पास। ···	१,२,३,४, ५–मुरुछा बिगत; ६,७–गै मुरुछा तब
६।६८।११ बहु बिधि कर बिलाप जानकी। ···	१,२, ३–कर; ५,६,७–करति; ४–करत
६।६६ तब रावनहि हृदय महुँ, मरिहहिं रामु सुजान। ···	१,२,३,४,५, ७–रावनहि; ६–रावन के
६।६६।३ जुग सम भई सिराति न राती। ···	१,२,७–सिराति; ६–बिहाति; ३,४,५–न राति सिराती
६।१०१ ताके गुन गन कछु कहे, जड़मति तुलसीदास। जिमि निज बल अनुरूप ते, माछी उड़ै अकास। ···	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है ६,७–कहें तासु गुन गन कछुक···निज पौरुष अनुसार जिमि मसक उड़ाहिं अकास
६।१०१।५ नाभि कुंड पियूष बस याके। ···	१,२; ३, ४, ५–पियूष; ६,७–सुधा
६।१०।७ असुभ होन लागे तब नाना। रोवहिं खर सृकाल बहु स्वाना। ···	१,२,३,४,५,७–असुभ होन लागे···रोवहिं खर···; ६–असगुन होन लगे...रोवहि बहु सृकाल खर स्वाना

६।१०२ प्रतिमा रुदहिँ पविपात नभ, अति बात वह डोलति मही ।	... १,२,३,४,५–रुदहिँ; ६,७–स्रवहिँ
६।१०२ उतपात अमित बिलोकि नभ सुर, विकल बोलहिँ जय जए ।	... १,२,३,४,५–नभ सुर; ७–सुर मुनि; ७–मुनि सुर
६।१०२ खैँचि सरासन स्रवन लगि, छाँडे सर एकतीस ।	... १,२,३,४,५–खैँचि सरासन स्रवन लगि; ६,७–आकरषेउ धनु कान लगि
६।१०२।३ तब सर हति प्रभु कृत दुइ खंडा	...१,२,३–दुइ; ४,५,६,७–जुग
६।१०२।६ धरनि परेउ द्वौ खंड बढ़ाई ।	... १,२,३,४,५–धरनि परेउ; ६,७–परेउ बीर
६।१०२।८ प्रबिसे सब निषंग महुँ जाई ।	... १,२,३,४-जाई; ५,६,७–आई
६।१०३ सुर सुमन बरषहिँ हरष संकुल, बाज दुंदुभि गहगही ।	... १,२,३,४,५–सुर सुमन बरषहिँ हरष संकुल; ६,७–सिद्ध मुनि गंधर्व हरषे
६।१०३ भालु कीस सब हरषे, जय सुख धाम मुकुंद ।	... १,२,३,४,५–भालु कीस सब हरषे; ६,७–हरषे बानर भालु सब
६।१०३।३ छूटे कच नहिँ बपुष सँभारा ।	... १,२,३,४,५–छूटे कच नहिँ बपुष सँभारा; ६–छूटे चिकुर न सरीर सँभारा; ७–छूटे चिकुर न चीर सँभारा
६।१०४ अहह नाथ रघुनाथ सम, कृपा सिंधु नहि आन । जोगि बृंद दुर्लभ गति, तोहि दीन्हि भगवान ।	... १,२,३,४,५–नहि ६,७–को; १,२,३,४,५,७–जोगि बृंद दुर्लभ ६–मुनि दुर्लभ जो परम गति
६।१०४।४ रुदन करत देखी सब नारी ।	... १,२,३,४,५–देखी; ६,७–बिलोकि
६।१०४।५ बंधु दसा बिलोकि दुख कीन्हा । तब प्रभु अनुजहि आयेसु दीन्हा ।	... १,२,३,४,५,७– बिलोकि... तब प्रभु अनुजहिं; ६,७-देखत ६–राम अनुज कह

६।१०४।६ लछिमन तेहि बहु बिधि समुझायो। ···	१,२,३,४,५,७–तेहि बहु बिधि समुझायो; ६–जाइ ताहि समुझाएउ
६।१०५ मंदोदरी आदि सब, देइ तिलांजलि ताहि। भवन गईं रघुपति गुन, गन बरनत मन माहिं। ···	१,२,३,४,५–मंदोदरी आदि सब···रघुपति; ६, ७–मयतनआदिक नारि सब···रघुबीर
६।१०५।६ तिलक सारि अस्तुति अनुसारी···	१,२,३,४,५,७–सारि; ६–कीन्ह
६।१०६ प्रभु के बचन श्रवन सुनि, नहिं अघाहिं कपि पुंज। बार बार सिर नावहिं, गहहिं सकल पद कंज। ···	१,२,३,४,५–प्रभु के बचन··· बार बार सिर नावहिं···;६,७–सुनत राम के बचन मृदु··· बारहिं बार बिलोकि मुख
६।१०६।४ जनक सुता देखाइ पुनि दीन्ही।	१,२,३,४;५,७–पुनि; ६–तिन्ह
६।१०७ सानुकूल कोसलपति, रहहु समेत अनंत। ···	१,२,३,४,५–कोसलपति; ६, ७–रघुबंस मनि
६।१०७।३ सुनि संदेसु भानुकुल भूषन। ···	१,२,३,४,५–संदेसु भानुकुल; ६,७–बानी पतंगकुल
६।१०७।६ बेगि बिभीषन्ह तिन्हहि सिखायो। तिन्ह बहु बिधि मज्जन करवायो।···	१,२,३,४,५–सिखायो। तिन्ह बहु बिधि···;६,७–सिखावा। सादर तिन्ह सीतहि अन्हवावा
६।१०७।७ बहु प्रकार भूषन पहिराए। ···	१,२,३,४,५,७–बहु प्रकार; ६–दिव्य बसन
६।१०७।१२ देखहु कपि जननी की नाईं।···	१,२,३,४,५–देखहु; ६,७–देखहिं
६।१०८ तेहि कारन करुनानिधि, कहे कछुक दुर्बाद। ···	१,२,३,४,५–करुनानिधि,६,७ करुनायतन
सुनत जातुधानी सब, लागीं करै बिषाद। ···	१,२,३,४,५–सब;६,७–सकल

६।१०८।३ बिरह बिबेक धरम निति सानी।···	१,२–नीति;४–जुति;४,५,६–नुति; ७–नय
६।१०८।५ पावक प्रगटि काठ बहु लाए।···	१,२,३,४,५;७–पावक प्रगटि; ६–प्रगटि कृसानु
६।१०८।६ पावक प्रबल देखि बैदेही। ···	१,२,३,४,५–पावक प्रबल; ६,७–प्रबल अनल बिलोकि बैदेही
६।१०६ धरि रूप पावक पानि गहि, श्री सत्य श्रुति जग बिदित जो। ···	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है ६,७–तब अनल भूसुर रूप कर गहि सत्य श्री
६।१०६ बरषहिँ सुमन हरषि सुर, बाजहिं गगन निसान। गावहिं किन्नर सुर बधू, नाचहि चढ़ी बिमान। ···	१,२,३,४,५–बरहिँ सुमन हरषि सुर···सुरबधू;६,७–हरषि सुमन बरषहिं···बिबुध अपछरा
६।१०६ जनक सुता समेत प्रभु, सोभा अमित अपार। देखि भालु कपि हरषे, जय रघुपति सुख सार। ···	१,२,३,४,५–जनक सुता समेत; ६,७–श्री जानकी समेत; १,२,३,४,५–देखि भालु कपि हरषे; ६-देखत हरषे भालु कपि; ७–हरषे देखत भालु कपि
६।१०६।६ यह खल मलिन सदा सुर द्रोही।	१,२,३,४,५,७–यह खल मलिन सदा; ६–रावन पापमूल
६।१०६।१० अधम सिरोमनि तव पद पावा।···	१,२,३,४,५,७–में भा० का पाठ है; ६–सोउ कृपाल तव धाम सिधावा
६।१०६।११ स्वारथ रत प्रभु भगति बिसारी।···	१,२,३,४,५,७–प्रभु; ६-तव
६।११० अति सप्रेम तन पुलकि बिधि अस्तुति करत बहोरि। ···	१,२,३,४,५–अति सप्रेम तनु पुलकित; ६,७–अतिसय प्रेम सरोज भव
६।११०।१४ मद मार मुधा ममता समनं। ···	१,२,३,४,५–मुधा; ६,७–महा
६।११०।१५ सब रूप सदा सब होइ न गो।···	१,२,३–गो; ४,५,६,७–सो

६।११०।१७ निरखंति तवानन सादर ए।	...	१,२,३,४,५,७–ए; ६–जे
६।१११ बिनय कीन्हि चतुरानन, प्रेम पुलक अति गात। सोभा सिंधु बिलोकत, लोचन नहीं अघात।	...	१,२,३,४,५–चतुरानन; ६,७–बिधि भाँति बहु; १,२,३,४,५–सोभा सिंधु बिलोकत; ६,७–बदन बिलोकत राम कर
६।१११।२ अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा।	...	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७–सहित अनुज प्रनाम प्रभु कीन्हा
६।११२ सोभा देखि हरषि मन अस्तुति कर सुरईस।	...	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७–छबि बिलोकि मन हरषित
६।११३।२ सुनु खगेस प्रभु कै यह बानी।	...	१,२,३,४,५–खगेस; ६,७–खगपति
६।११३।७ मुक्त भए छूटे भव बंधन।	...	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६–गए ब्रह्म पद तजि सरीर रन; ७–गए परम पद तजि सरीर रन
६।११४ देखि सुअवँसरु प्रभु पहिं, आएउ संभु सुजान।	...	१,२,३,४,५;७—प्रभु; ६–राम
६।११५ कृपा सिंधु मैं आउब, देखन चरित उदार।	...	१,२,३,४,५,७–कृपा सिंधु मैं आउब; ६–तब मैं आउब सुनहु प्रभु
६।११५।७ पुनि मोहि सहित अवध पुर जाइअ।	...	१,२,३,४,५,७–पुर; ६–प्रभु
६।११६ भरत दसा सुमिरत मोहि, निमिष कलप सम जात।	...	१,२,३,४,५–भरत दसा सुमिरत मोहि; ६,७–दसा भरत कै सुमिरि मोहि
६।११६ तापस वेस गात कृस, जपत निरंतर मोहिं।	...	१,२,३,४,५–गात; ६,७–सरीर

६।१०८।३ बिरह बिवेक धरम निति सानी।···	१,२–नीति;४–जुति;४,५,६–नुति; ७–नय
६।१०८।५ पावक प्रगटि काठ बहु लाए।···	१,२,३,४,५;७–पावक प्रगटि; ६–प्रगटि कृसानु
६।१०८।६ पावक प्रबल देखि बैदेही।···	१,२,३,४,५–पावक प्रबल; ६,७–प्रबल अनल बिलोकि बैदेही
६।१०९ धरि रूप पावक पानि गहि, श्री सत्य श्रुति जग बिदित जो। ···	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है ६,७–तब अनल भूसुर रूप कर गहि सत्य श्री
६।१०९ बरषहिँ सुमन हरषि सुर, बाजहिँ गगन निसान। गावहिँ किन्नर सुर बधू, नाचहि चढ़ी बिमान। ···	१,२,३,४,५–बरहिँ सुमन हरषि सुर···सुरबधू;६,७–हरषि सुमन बरषहिं···बिबुध अपछरा
६।१०९ जनक सुता समेत प्रभु, सोभा अमित अपार। देखि भालु कपि हरषे, जय रघुपति सुख सार। ···	१,२,३,४,५–जनक सुता समेत; ६,७–श्री जानकी समेत; १,२,३,४,५–देखि भालु कपि हरषे; ६-देखत हरषे भालु कपि; ७–हरषे देखत भालु कपि
६।१०९।९ यह खल मलिन सदा सुर द्रोही।	१,२,३,४,५,७–यह खल मलिन सदा; ६–रावन पापमूल
६।१०९।१० अधम सिरोमनि तव पद पावा।···	१,२,३,४,५,७–में भा० का पाठ है; ६–सोउ कृपाल तव धाम सिधावा
६।१०९।११ स्वारथ रत प्रभु भगति बिसारी।···	१,२,३,४,५,७–प्रभु; ६–तव
६।११० अति सप्रेम तन पुलकि बिधि अस्तुति करत बहोरि। ···	१,२,३,४,५–अति सप्रेम तनु पुलकित; ६,७–अतिसय प्रेम सरोज भव
६।११०।१४ मद मार मुधा ममता समनं।···	१,२,३,४,५–मुधा; ६,७–महा
६।११०।१५ सब रूप सदा सब होइ न गो।···	१,२,३–गो; ४,५,६,७–सो

६।११०।१७ निरखंति तवानन सादर ए। ···	१,२,३,४,५,७–ए; ६–जे
६।१११ बिनय कीन्हि चतुरानन, प्रेम पुलक अति गात। सोभा सिंधु बिलोकत, लोचन नहीं अघात। ···	१,२,३,४,५–चतुरानन; ६,७–बिधि भाँति बहु; १,२,३,४,५–सोभा सिंधु बिलोकत; ६,७–बदन बिलोकत राम कर
६।१११।२ अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा। ···	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७–सहित अनुज प्रनाम प्रभु कीन्हा
६।१२२ सोभा देखि हरषि मन अस्तुति कर सुरईस। ···	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७–छबि बिलोकि मन हरषित
६।११३।२ सुनु खगेस प्रभु कै यह बानी। ···	१,२,३,४,५–खगेस; ६,७–खगपति
६।११३।७ मुक्त भए छूटे भव बंधन। ···	१,२,३,४,५ मे भा० का पाठ है; ६–गए ब्रह्म पद तजि सरीर रन; ७–गए परम पद तजि सरीर रन
६।११४ देखि सुअवँसरु प्रभु पहिं, आएउ संभु सुजान। ···	१,२,३,४,५;७—प्रभु; ६–राम
६।११५ कृपा सिंधु मैं आउब, देखन चरित उदार। ···	१,२,३,४,५,७–कृपा सिंधु मैं आउब; ६–तब मैं आउब सुनहु प्रभु
६।११५।७ पुनि मोहि सहित अवध पुर जाइअ। ···	१,२,३,४,५,७–पुर; ६–प्रभु
६।११६ भरत दसा सुमिरत मोहि, निमिष कल्प सम जात। ···	१,२,३,४,५–भरत दसा सुमिरत मोहि; ६,७–दसा भरत कै सुमिरि मोहि
६।११६ तापस वेस गात कृस, जपत निरंतर मोहिं। ···	१,२,३,४,५–गात; ६,७–सरीर

६।११६ बीते अवधि जाउँ जौं, जिअत न पावौं बीर। सुमिरत अनुज प्रीति प्रभु, पुनि पुनि पुलक सरीर। …	१,२,३,४,५,७-बीते अवधि जाउँ जौं…सुमिरत अनुज प्रीति; ६-जौं जैहौं बीते अवधि; ६,७-प्रीति भरत कै समुझि
६।११६ पुनि मम धाम पाइहहु, जहाँ संत सब जाहिं। …	१,२,३,४,५-पाइहहु; ६,७-सिधाइहहु
६।११७ मुनि जेहि ध्यान न पावहिं नेति नेति कह बेद। …	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७-ध्यान न पावहि जाहि मुनि
६।११७।२ नाना जिनिस देखि सब कीसा। …	१,२,३,४,५-सब; ६,७-प्रभु
६।११७।५ सुमिरेहु मोहि डरपहु जनि काहू …	१,५ डरपेहु; २,३-डरपहु; ४ डरेहु; ६,७-डरहु
६।११७।६ मसक कहूँ खगपति हित करहीं। …	१,२,३,४,५,७-कहूँ, ६-कतहुँ
६।११८ हरष बिषाद सहित चले, बिनय बिबिध बिधि भाखि। …	१,२,३,४,५-सहित चले बिनय……; ६,७-समेत तब चले बिनय बहु भाखि
६।११८ कपिपति नील रीछपति, अंगद नल हनुमान। …	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६,७-जामवंत कपिराज नल अंगदादि हनुमान
६।११८।७ परम सुखद चलि त्रिबिध बयारी। …	१,२,३,४,५,६-चलि; ७-बह
६।११९ इहाँ सेतु बाँध्यो अरु, थापेउँ सिव सुख धाम। सीता सहित कृपानिधि, संभुहि कीन्ह प्रनाम। …	१,२,३,४,५,७-इहाँ सेतु बाध्यौं अरु…कृपानिधि; ६-यह देखि सुंदर सेतु जहँ…; ६,७-कृपायतन
६।११९ जहँ जहँ कृपासिंधु बन, कीन्ह बास बिस्राम। …	१,२,३,४,५-कृपासिंधु; ६-करुना सिंधु

६।११६।१ तुरत बिमान तहाँ चलि आवा। ···	१,२,३,४,५–तुरत; ६,७–सपदि
६।११६।७ निरषत जन्म कोटि अघ भागा।···	१,२,३,४,५–निरखत जन्म; ६,७–देखत जन्म
६।११६।६ पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि। ···	१,२,३,४,५,६–देखु; ७–देखेउ
६।१२० सीता सहित अवध कहुँ, कीन्ह कृपाल प्रनाम। सजल नयन तन पुलकित, पुनि पुनि हरषित राम। ···	१,२,३,४,५ में भा० का पाठ है; ६, ७–तब रघुनायक श्री सहित अवधहि कीन्ह प्रनाम। सजल बिलोचन पुलक तन पुनि पुनि हरषत राम
६।१२० कपिन्ह सहित बिप्रन्ह कहुँ, दान बिबिध बिधि दीन्ह। ···	१,२,३,४,५-सहित बिप्रन्ह कहुँ; ६–समेत महिसुरन्ह कहँ; ७–सहित महिसुरन्ह कहँ
६।१२०।६ इहाँ निषाद सुना प्रभु आएउ। ···	१,२,३–सुना प्रभु; ४,५–सुन्यौ प्रभु आए; ६–सुना हरि आए; २,७–सुना प्रभु आए
६।१२०।७ सुरसरि नाघि जान तब आयो। ···	१,२,४,५,७–तब; ३,६–जब आवा
६।१२१ समर बिजय रघुबीर के, चरित जे सुनहिँ सुजान। ···	१,२,३,४,५–रघुबीर के चरित···; ६,७–रघुपति चरित सुनहिं जे सदा···
६।१२१ श्री रघुनाथ नाम तजि नाहिन आन अधार। ···	१,२,३,४,५–रघुनाथ नाम तजि नाहिन···; ६, ७–रघुनायक नाम तजि नहिं कछु···

उत्तर कांड

७। श्लो० १ **सुरवर** विलसद्विप्र पादाब्ज चिन्हं	... १,२,३,४,५,७– सुरवर; ६–उरवर
७।श्लो० २ **कोमलावज** महेश वंदितौ	... १,२,३,५,६– कोमलावज; ४,७–कोमलाम्बुज
७।श्लो० ३ अंबिकापतिमभीष्ट **सिद्धिदं**	... १,२,३,४,५,७–सिद्धिदम; ६–मंदिरं
७।० जानि सगुन मन हरष अति, लागे **करन** बिचार।	... १,२,३,४,५,७–करन, ६–करै
७।०।१ **रहेउ** एक दिन अवधि अधारा।	... १,३,४,५,६–रहेउ; २,७–रहा
७।१।४ रघुकुल तिलक **सुजन** सुखदाता।	... १,२,३,४,५,७–सुजन; ६–सो जन
७।१।५ सीता **सहित अनुज प्रभु** आवत।	... १,२,३,४-सहित अनुज; ५,७–अनुज सहित प्रभु; ६–अनुज सहित पुर
७।१।६ तृषावंत जिमि **पाइ** पियूषा।	... १,२,३,४,५–पाइ; ६,७–पाव
७।१।१३ **यह** संदेस सरिस जग माहीं।	... १,३र४,५,७–यह; २–एह ६–एहि
७।२ काहे न होइ बिनीत परम, पुनीत सदगुन **सिंधु** सो।	... १,२,३,४,५,७–सिंधु; ६–पाथ
७।२ कही कुसल सब जाइ हरषि, **चलेउ** प्रभु जान चढ़ि।	... १,२,६–चलेउ; ३,४,५,७–चले
७।२।६ गावत **चली** सिंधुर गामिनी।	... २,५,६–चलिँ; १,३,४–चली; ७–चलि सब
७।२।१० भइ **सरजू** अति निर्मल नीरा।	... ३,४,५-सरजू; १,२,६–सरऊ; ७–सरयू
७।३ चले भरत **मन प्रेम अति**, सन्मुख कृपा निकेत।	... १,२,३,४,५,७–मन प्रेम अति; ६–अति प्रेम मन

७।३।१ कपिन्ह देखावत नगर **मनोहर** ।	···	३,४,५,६,७–मनोहर;१,२–सुधाकर
७।३।४ अवधपुरी सम प्रिय नहिँ सोऊ ।	···	१, २; ३, ४,५–अवधपुरी सम...६'७–अवध सरिस प्रिय मोहि न सोऊ
७।४।३ धाइ **धरे** गुरु चरनु सरोरुह ।	···	१,२,३,४,५,७–धरे; ६–गहे
७।४।७ **बर** करि कृपासिंधु उर लाए ।	···	१, २, ३, ४,५ ,६,७–बर; (बल)
७।५ जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि, मिले बर **सुषमा** लही ।	···	१, २, ४, ५–सुषमा; ३,६, ७–परमा
७।५ **लछिमन भरत मिले तब,** परम प्रेम दोउ भाइ ।	···	१, २, ३,४,५,६–लछिमन भरत मिले तब; ७–लछिमन भेंटे भरत पुनि
७।५।७ छन **महिं** सबहिं मिले भगवाना ।	···	१,२,३,७–महि; ३,५–महँ; ६–महु
७।६ **कैकइ कहँ पुनि पुनि मिले,** मन कर छोभ न जाइ ।	···	१,२,५,७–कैकइ कहँ पुनि पुनि; ३,४,६–कैकई कहुँ पुनि मिले;(कैकेई कहँ पुनि मिले)
७।६।२ **होइ** अचल तुम्हार अहिवाता ।	···	१,२–होइ; ३–होहु; ४,५, ६,७–होउ
७।७ लछिम अरु सीता सहित, प्रभुहि बिलोकति **मातु** । ···**गातु** ।	···	१, २, ३,४,५,७–मातु··· गातु; ६ मात···गात
७।७।५ मुनि पद **लागहु सकल** सिखाए ।	···	१,२,३,४,५–लागहु सकल; ६, ७–लागन कुसल
७।८ चढ़ी अटारिन्ह देखहिं, नगर नारि **बर** बृंद	···	१,२,३,६-बर;४,५,७–नर
७।८।६ तेउ **यह** चरित देखि ठगि रहहीं ।	···	१,२,३,४,५,७–यह; ६–येह
७६ होहिँ सगुन सुभ बिबिध, बिधि बाजहिँ **गगन** निसान ।	···	१,२,३,४,५–गगन; ६,७–नाक

७।६।३ कृपासिंधु तब मंदिर गए।	···	१,२,४,५–तब; ३,६,७–जब···गयऊ
७।६।४ आजु सुघरी सुदिन समुदाई।	···	१,२,३–समुदाई; ४,५,६,७–सुभदाई
७।१० तब मुनि कहेउ सुमंत्र सन, सुनत चलेउ हरषाइ।	···	१,२,३,४,५–हरषाइ;६,७–सिरनाइ
७।१०।१ देवन्ह सुमन वृष्टि झर लाई।	···	१,२–झर; ३,४,५,६,७–झरि
७।१०।८ अंग अनंग देखि सत लाजे।	···	१,२,३–देखि सत लाजे; ४,५,७–कोटि छबि लाजे; २–कोटि छबि छाजे
७।१२ नव अंबुधर बर गात, अंबर पीत सुर मन मोहई।	···	१,२,३,४,५–सुर; ६, ७–मुनि
७।१२ भिन्न भिन्न अस्तुति करि, गए सुर निज निज धाम।	···	१,२,३,६–गए; ७–गे; ४,५–गये
७।१३ भव पंथ भ्रमत अमित दिवस, निसि काल कर्म गुननि भरे।	···	१,२,३,५–अमित; ४,६,७–श्रमित
७।१३ पल्लवत फूलत नवल नित, संसार बिटप नमामहे।		१,२,३;५,७–नवल नित; ४,६–नव ललित
७।१३।७ मनजात किरात निपात किए।	···	१,२,३,५,६–मनजात; ४,७–मनुजात
७।१३।१८ भव रोग महा गद मान अरी।	···	१,२,३,६–गद; ४,५-७–मद
७।१४।१ त्रिबिध ताप भव भय दावनी।	···	१,२,३,४ ५,६–भय; ७–दाप
७।१४।५ लहहिं भगति गति संपति नई।	···	१, २, २४,५,६–नई; ७–नितई
७।१५ जात न जाने देवस तिन्ह, गए मास षट बीति।	···	१,२–देवस तिन्ह; ३,४,५,६–दिवस तिन्ह, ७–दिवस निसि

७।१५।१ जिमि पर द्रोह संत मन **नाहीँ**।	... १,२,३–नाहीँ ४,५,७–माहीँ; २–माहिं
७।१७।६ राखहु सरन **नाथ** जन दीना।	... १,२,३,६–नाथ;४,५,७-जानि
७।१६ कहेउ दंडवत प्रभु **सैँ** तुम्हहिँ कहौँ कर जोरि।	... १,२,३,४,५,६–सैँ; ७–सन
७।१६ **चित्त खगेस** राम कर, समुझि परै कहु काहि।	... १,२,३,४,५,६–चित्त खगेस; ७–चित खगेस अस
७।२० चलहिँ सदा पावहिँ **सुखहि**, नहिँ भय सोक न रोग।	... १,२,७–सुखहि;३,४,५,७–सुख
६।२०।२ चलहि स्वधर्म निरत श्रुति **नीतो**।	... १, २, ३, ४,५,७–नीती; ६–रीती
७।२०।७ सब निर्दंभ धर्म रत **पुनी**।	... २,६–घृनी, १,३,४,५,७–पुनि।
६।२१।५ कहहिँ महा मुनिवर **दमुसीला**।	... १,३,५,६–बर दमसीला; २,४,७–बरद सुशीला
७।२२ जीतहु मनहि **सुनिअ अस**, रामचंद्र के राज।	... १, २, ३,४, ५,७–सुनिअ अस; ६–अस सुनिअ जग
७।२२।५ लता विटप मागे मधु **चवहीँ**।	... १,२,३,४,५,६,७–चवहीँ; २–बहहीँ
७।२३।९ उमा रमा **ब्रह्मादि** बंदिता।	... १,३,४,५,६-ब्रह्मादि; २,७–ब्रह्मानि
७।२५ ज्ञान गिरा गोतीत अज; माया **मनगुन** पार।	... १, २, ३, ४, ५,६,७–मन; (गुनगो)
७।२५।१ प्रातकाल सरजू करि मज्जन।	... १,२,६–सरऊ; ३,४,५–सरजू; ७–सरयू
७।२५।७ सबके गृह **गृह होहिँ** पुराना।	... १,२,३,४,५,७–गृह होहिँ; ६–होहिँ बेद
५।२७ प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट, बनाइ बहु बज्रन्हि **खचे**	... १,२,३,४,५,६खचे; ७–पचे
७।२७ रामचरित जे **निरख** मुनि, ते मन लेहिँ चोराइ।	... १,२,३,५–निरख;४,६,७–निरखत

७।२७।६ जहँ तहँ देखहिँ निज परछाहीँ।	··· १, २, ३, ४,५,७–देखहिँ; ६–निरषहिं
७।२८ बाजार रुचिर न बनै बरनत, बस्तु बिनु गथ पाइए।	··· १,२,३,५,७–रुचिर;४,६–चारु
७।२८।४ चहुँ दिसि तिन्हके उपवन सुंदर।	··· १,२,३,४,५– तिन्ह के; २–तिन्ह की; ६–जिन्ह की
७।२८।५ बसहि ज्ञान रत मुनि सन्यासी ।।	··· १,२,३,४,५,७– बसहिं; ६–सबहिं;
७।३० सानुकूल सब पर रहहिँ, संतत कृपानिधान।	··· १,२,३,४,५,–रहहिं;६–रह
७।३०।२ बहुतेन्ह सुख बहुतन मन सोका।	१,२,३–बहुतेन्ह सुख बहुतन; ६–बहुतेन्ह सुख बहुतेन्ह; ५,७–बहुतन्ह सुख बहुतन्ह; ४–बहुतेहु सुख बहुतन्ह
७।३१।८ राम कथा मुनिबर बहु बरनी।	··· १,२,३,४,५,७–मुनि बर बहु; ६–मुनि बहु बिधि
७।३२।८ बड़े भाग पाइब सतसंगा।	··· १;२,३–पाइब; ४,५,७–पाइय; ६–पाइअ
७ ३३ संत संग अपवर्ग कर, कामी भव कर पंथ। ······सद ग्रंथ।	··· १,२,३;४,५–संग ६,७–पंथ; १,२,३,४,५,७–सद ग्रंथ ; ६–सब ग्रंथ
७।३३।३ जय निर्गुन जय जय गुन सागर।	··· १,२,३,४,५,७–जय जय गुनसागर; ६–जयगुन निधि सागर
७।३३।४ अनुपम अज अनादि सोभाकर	··· ३,४,६,७–अनुपम अज;५–अज अनुपम; १,२,३–अति अनुपम
७।३४ परमानंद कृपायतन, मन परिपूरन काम।	··· १,२, ३,४,५,७–परिपूरन; ६–पर पूरन

७।३४।२ प्रनत काय सुरधेनु कल्प तरु।		१,२,३,४,५,७–सुर; ६–धुक
७।३४।३ **सेवत** सुलभ सकल सुखदायक।	...	१, २, ३,४,५,६,७–सेवत; (सेवक)
७।३५।४ अंतरजामी प्रभु **सभ** जाना।	...	१,२ सभ; ३,४,५,६,,७–सब
७।३६।२ बहु बिधि वेद **पुरानन्ह** गाई।	...	१,२,३,४,५,७– पुरानन्ह; ६–पुरानन्हि
७।३७ अनल दाहिं पीटत **घनहि,** परसु बदनु यह दंड।	...	१,२,३,४,५,७– घनहि; ६–घनन्हि
७।३७।४ भरत प्रान सम मम **ते** प्रानी।	...	१, २, ३, ४, ५, ६, ७–ते; (तेइ)
७।३७।६ द्विज पद प्रीति धर्म **जनयत्री**।	...	१,२,६–जनयित्री; ३, ४, ५–जनयत्री; ७–जनजंत्री
७।३८।४ **हरषहिँ** मनहुँ परी निधि पाई।	...	१,२,३,४,५,७ – हरषहिं; ६–हरखैं
७।३८।५ **निर्दय** कपटी कुटिल मलायन।	...	१,२,३,४,५,६,७– निर्दय; (निंदय)
७।३९।८ विप्र द्रोह **परद्रोह** बिसेखा।	...	१,२,३,४,५–पर द्रोह; ६, ७–सुर द्रोह
७।४०।८ संत **असंतन्ह** के गुन भाखे। ते न **परहिँ** भव जिन्ह लखि राखे।	... ...	१,२,३,४,५,६,७-असंतन्ह (असंतेन्ह); १,२,३,४,५, ७–परहिं; ६–परिहि
४।४१।६ सुनि बिरंचि **अतिसय** सुख मानहिँ।	...	१,२,३,४,४,७– अतिसय; ६–सुर अति
७।४२।२ बैठे **गुरु मुनि अरु द्विज** सजन। बोले बचन **भगत भव** भंजन।	...	१,२,३,४,५–गुरु मुनि अरु द्विज; ६;७–सदसि अनुज मुनि; १,२,३,५–भगत भव; ४,७–भक्त भय; ६–भगता भय

७।४३।३ गुंजा ग्रहै परस मनि खोई।	···	१,३,६–ग्रहै; २–ग्रहें ४,५,७–गहै
७।४४ सो कृत निंदक मंद मति, आत्माहन गति जाइ।	···	१, २, ३–आत्माहन; ७–आतमहन; ४, ५, ६–आत्महन
७।४४।४ भक्ति हीन मोहि प्रिय नहिँ सोऊ।	···	१,२,३,४,५,७–मोहि प्रिय नहिँ; ६–प्रिय मोहि न
७।४४।५ भक्ति सुतंत्र सकल सुख खानी।	···	१,२,३,४,५,७–सुतंत्र; ६–स्वतंत्र
७।४६।८ निज निज गृह गए आइसु पाई।	···	१,२,३,४,५,७–निज गृह गए आयसु; ६–गृह गए सुआयसु
७।४७।२ पद पखारि पादोदक लीन्हा।	···	१,२,३,४,५,७– पादोदक; ६–चरनोदक
७।४७।६ उपरोहित्य कर्म अति मंदा।	···	१,३,५–उपरोहित्य; २–उपरोहित; ४,६,७– उपरोहिती
७।४८।५ घृत कि पाव कोइ बारि बिलोए।	···	१,३,–कोइ; २–कोई; ४,५,६,७–कोउ
७।४६।४ दिए उचित जिन्ह जिन्ह तेइँ चाहे।	···	१,२-तेइ; ३, ४,५,६, ७–जेइ; (जोइ)
७।४६।८ हनूमान सम नहिँ बड़भागी।	···	१,२,३,४,५,७-सम नहि; ६–समान
७।५०।१ कृपा बिलोकनि सोच बिमोचन।	···	१,२,३,४,५,७–सोच; ६–सोक
७।५०।८ कारुनीक ब्यलीक मद खंडन।	···	१,२,३,४,५–ब्यलीक; ६–बालीक; ७ बालि क
७।५२ तुम्हरी क्रिपा कृपायतन, अब कृतकृत्य न मोह।	···	१,२,४,५–क्रिपा कृपायतन ३,७–कृपा कृपायतन; ६–कृपाल मइ

७।५२।६ ते जड़ जीव निजातम घाती । ··· १,२,३–निजात्मक; ४, ५, ७–निजातम; ६–निजात्म

७।५२।७ हरि चरित्र मानस तुम्ह गावा । ··· १,२,३,३,४,५,६– हरि चरित्र; ७–राम चरित

७।५३ बिरति ज्ञान विज्ञान दृढ़,
राम चरन अति नेह । ··· १,२,३,४,५,७–राम चरन; ६–राम चरित

७।५५ सो सब सादर कहिहौं,
सुनहु उमा मन लाइ । ··· १,२,३,४,५,६– कहिहौं; ७–कहउँ मैं

७।५५।६ कौतुक देखत फिरौं बेरागा । ··· १,२,३-बेरागा;४,५-बिरागा; ७-बिभागा; ६–फिरै बिरागा

७।५६।६ आँव छाँह कर मानस पूजा । ··· १,२,३,४,६–आँव; ५,७–आम

७।५६।८ आवहिँ सुनहिँ अनेक बिहंगा । १,२,३,४,५,७– सुनहि; ६–सुनै

७।५८।८ सोइ करेहु जेहि होइ निदेसा । ··· १,२,३,४,५–जेहि होइ; ६, ७–जो देहिं

७।५९।२ समुझि प्रताप प्रेम अति छावा । ··· १,२,३,४,५–अति; ६,७,उर

७।५९।५ अग जग मय जग मम उपराजा । ··· १,२,३,४,५–जग; ६,७-सब

७।६०।२ सुनि ता करि बिनती मृदुबानी । ··· ६-बिनीत; १,३,४,५,७–बिनती; २–ताकरी बिनती

७।६१।१ किए जोग तप ज्ञान बिरागा । ··· १,२,३–तप; ४,५,६,७–जप

७।६२ सिव बिरंचि कहु मोहै,
कोहै बपुरा आन । ··· १,२,३,४,५,६–मोहै; ७–मोह है; (मोहइ)

७।६२।१ गएउ गरुड़ जहँ बसै भुसुंडा । ··· १,२,३,४–भुसुंडा; ५,७–भुसुंडी

७।६२।५ कथा अरंभ करइ सोइ चाहा । ··· १,२,३–करइ; ४,५,६,७–करै

७।६३ जेहि कै अस्तुति सादर,
निज मुख कीन्हि महेस । ··· १,२,३,६–जेहि कै; ७–जेहि की; ४,५–जिन्ह कै

७।६३।१ सुनहु तात जेहि कारन आएउँ । ··· १,२,३,४,५– कारन; ६–कारज

७।६३।३ सदा सुखद दुख पुंज नसावनि ।	···	१,३,४,५,७–पुंज; २, ६–पूंग
७।६५ कहि बिराध वध जेहि बिधि, देह तजी सरभंग। बरनि सुतीछन प्रीति पुनि, प्रभु अगस्ति सत्त संग।	···	१,२,३,४,५,६–जेहि···सत संग; ७–जाहि······सतसंग
७।६६ पुनि सुग्रीव मिताई, बालि प्रान कर भंग।	···	१,२,३,४,५,६–मिताई; ७–मिताइ कहि
७।६६ कपिहि तिलक करि प्रभु कृत, सैल प्रवरषन बास। बरनत बरषा सरद रितु, राम रोष कपि त्रास।	···	१,२–क्रित; ३,४,५,६–कृत; ७–जुकृत । २,३,४,५–बरनन; १,६–बरनत; ७–बरने । १,७–ऋतु, ३,४,५–अरु; ६–कर;
७।६७ निसिचर कीस लराई, बरनिसि बिबिधि प्रकार।	···	१,२।३,४,५,६–लराई; ७–लराइ पुनि
७।६७।६ पुर बरनन नृप नीति अनेका।	···	१,२,३,४,५,७–बरनन; ६–बरनत
७।६८ चिदानंद संदोह राम बिकल कारन कवन।	···	१,२,३,४,५,७–संदोह; ६–सो मोह
७।६८।२ सोइ भ्रम अब हित करि मैं माना।	···	१,२,३,४.५,६–सोइ; ७–सो भ्रम अब हित करि मैं जाना
७।६८।८ तव प्रसाद सब संसय गएउ।	···	१,२,३,४,५–सब; ६,७-मम
७।६६ सुनि बिहंगपति बानी, सहित बिनय अनुराग।	···	१,२,३,४,५,६–बानी; ७–बानि बर
७।६६ पाइ उमा अति गोप्यमपि, सज्जन करहि प्रकाश।	···	१,२,३,४,५,६–मपि; ७–मत
७।६६।८ त्रिष्ना केहि न कीन्ह बौराहा। केहि कर हृदय क्रोध नहिं दाहा।	···	१,३,४,५,७-बौराहा···दाहा; २,६-बौरहा...दहा

७।७० मृग लोचनी के नैन सर, को अस लागि न जाहिं।	… १,२–मृगलोचनी के नैन; ३, ४, ५, ६– मृगलोचनि लोचन; ७–मृगनयनी के नयन
७।७०।४ चिंता सापिनि को नहिँ खाया।	… १,२,३,४,५–को नहिँ; ७–केहि नहिं; ६–काहि न; (केहि नहिँ)
७।७०।६ सुत बित लोक ईषना तीनी।	… १,२,३,६-लोक;४,७–नारि; ५–सोक…ईर्षना
७।७०।७ यह सब माया कर परिवारा।	… १,२,३,४,५,७– परिवारा; ६–परिचारा
७।७१।३ अज विज्ञान रूप रूप बल धामा।	… १,२,३,४,५–बल; ६,७–गुन
७।७१।५ अगुन अदभ्र गिरा गोतीता। सबदरसी अनवद्य अजीता।	… १,३,४,५–अदभ्र;२,६,७–अदर्भ; (अदंभ); १,२,३,४,५,६–सबदरसी; ७–समदरसी
७।७१।६ निर्मम निराकार निरमोहा।	… १,२,३,४,५–निर्मम; ६–निर्मल; ७–निरमम
७।७२ जथा अनेक वेष धरि, नृत्य करै नट कोइ। सोइ सोइ भाव देखावै, आपुन होइ न सोइ॥	… १,२,३,४,५,६–अनेक… सोइ सोइ; ७–अनेकन… जो जो
७।७२।४ जब जेहि दिसिभ्रम होइ खगेसा।	… १,२,३,४,५,६–दिसिभ्रम ; ७–भ्रम दिसि
७।७३ निर्गुन रूप सुलभ अति, सगुन जान नहिँ कोइ	…१;२,७-जान नहिँ; ३,४,५,६–न जानहि
७।७४ व्याधि नास हित जननी, गनत न सो सिसु पीर	… ३,४,५,६–गनत; १,२,७–गनइ

७।७४ तुलसिदास अैसे प्रभुहि, कस न भजहु भ्रम त्यागि ।	… १,२,३,४,५,७–भजहु; ६–भजसि
७।७५ लरिकाइ जहँ जहँ फिरहिँ, तहँ तहँ संग उड़ाउँ ।	… [१],२–लरिकाइँ ;३,४,५,६,७–लरिकाई
७।७५ एक वार अति सैसव, चरित किंए रघुबीर ।	… [१],२,३–अति सैसव; ६–अतिसै सब; ४,५–अतिसय सब; ७–अतिशय सुखद
७।७५।१ रामचरित सेवक सुखदायक ।	… १,२,३,४,५,७–सेवक; ६–सेवत
७।७६ उर आयत भ्राजत विविध, बाल विभूषन चीर ।	… १, २, ३,४,५,६–चीर,६–वीर
७।७६।४ बरनत मोहि होति अति व्रीड़ा ।	… १,२,३,४,५–मोहि होति; ६,७–चरित होत मोहिं
७।७८ राकापति षोड़स उअहिँ, तारागन समुदाइ ।	… १, २, ३,४,५,६–उअहिं; ७–उगहि
७।७८।१ अैसेहि हरि बिनु भजन खगेसा ।	… [१],२,३,४–हरि बिनु; ५,६;७– बिनु हरि
७।७८।८ तहँ भुज हरि देखौँ निज पासा ।	… १,२३,४,५–भुज हरि; ६,७–हरि भुज
७।७९ ब्रह्मलोक लगि गएउँ मैं, चितएउँ पाछ उड़ात ।	… १,२,३,४,५,६–चितएउँ; ७–चितवत
७।७९ सप्तावरन भेद करि, जहाँ लगे गति मोरि ।	… १,३,४,५,६–जहाँ लगे गति; २–जहाँ लागि; ७–जहँ लगि गति रहि
७।८० एक एक ब्रह्मांड महुँ, रहौँ बरष सत एक ।	… ३,५,६–रहौँ;४–रह्यों;१,२–रहों ; ७–रहे
७।८०।४ सब प्रपंच तहँ आनै आना ।	… १,२,३–आनै; ४,५,७–आनइँ; ६–आनहि
७।८०।५ देखेउँ जिनस अनेक अनूपा ।	… १,२,३,४;५,६–जिनस;७–जिनिस

७।८०।६ अवधपुरी प्रति भुवन निनारी । सरजू भिन्न भिन्न नर नारी ।	···	१,२,३,६–निनारी···सरऊ; ४, ५, ७–निहारी···सरजू
७।८०।७ दसरथ कौसल्या सुनु ताता ।	···	१,२,३,४,५,६–सुनु ताता; ७–कौसल्यादिक माता; (सुनु माता)
७।८०।८ देखौँ बाल विनोद अपारा ।	···	१, २, ३,४,५,७–अपारा; ६–उदारा
७।८१ भिन्न भिन्नु मैं दीख सबु, अति विचित्र हरि जान ।	···	१,२,३,४,५,७–मैं दीख सब; ६–सब दीख मैं
७।८१ सोइ सिसुपन सोइ सोभा, सोइ क्रिपाल रघुबीर । भुवन भुवन देखत फिरौँ, प्रेरित मोह समीर ॥	···	१,२,३,४,५,६–सोइ; ७– सो: १,२,३,४,५,७-समीर; ६–सरीर
७।८१।४ देखौँ जन्म महोत्सव जाई ।	···	१,२,३ ५–देखौँ; ४,७– देखउँ; ६–देखेउँ
७।८३ सुनि सप्रेम मम बानी, देखि दीन निज दास ।	···	१,२,३,४,५,६–मम बानी; ७-मम बैन बर
७।८३।६ आजु देउँ सब संसय नाहीँ ।	···	१ २,३,४,५,७–सब; ६–तव
७।८३।६ भगति हीन गुन सब सुख अैसे ।	···	१,२,३–सब सुख अैसे; ७– सुख सब कैसे; ४,५,६–सब सुख कैसे
७।८४ जेहि खोजत जोगीस मुनि, प्रभु प्रसाद कोउ पाव ।	···	१,२,३ ४,५,६–जेहि; ७–जो
७।८५।३ मम माया संभव संसारा ।	···	१,२,३,४,५,७–संसारा; ६– परिवारा
७।८५।६ तिन्ह महँ प्रिय विरक्त पुनि ज्ञानी ।		१,२,३,४,५,६–पुनि; ७– अरु
७।८५।७ जेहि गति मोरि न दूसरि आसा ।		१, ३, ४, ५, ७–जेहि गति मोरि न; २,६–भगति मोरि नहिं

७।८५।६ सभ जीवहु सम प्रिय मोहि सोई।	१,२–सभ जीवहु; ३,६,७–सब जीवहु; ४,५–सब जीवन
७।८६।५ जद्यपि सो सब भाँति अयाना	१, २, ३, ५–अयाना; ७–अजाना; ६–सयाना
७।८६।७ अखिल बिस्व यह मोर उपाया। ···	१,२,३,४,५,७–उपाया; ६–मम उपजाया
७।८६।८ भजहि मोहि मन बच अरु काया।	१,७–भजहि; २, ३, ४,५–भजइ; ६–भजे
७।८७ पुरुष नपुंसक नारि वा, जीव चराचर कोइ। सर्व भाव ···	१,२,३ ४,५,७– वा···सर्व; ६–नर···भक्ति
७।८७।१ सुमिरेसु भजेसु निरंतर मोहीँ। ···	१,२–सुमिरेसु भजेसु; ३,४,५–सुमिरेहु भजेहु; ७–सुमिरसु भजसु; ६–सुमिरि स्वरूप
७।८८ जेहि सुख लागि पुरारि, असुभ वेष कृत सिव सुखद। ···	१,२.३,४,५,६–जेहि; ७-जो
७।८८ सोई सुख लवलेस, जिन्ह वारक सपनेहु लहेउ। ते नहिं गनहिं खगेस, ब्रह्म सुखहि सज्जन सुमति। ···	१,२.३,४,५,६–सोई सुख; ७–सो सुख कर; १,२,३,४ ५-ते नहिं गनहिं; ६–ते नहिं गनैं; ७–सो नहिं गनै
७।८८।५ बिनु हरि भजन न जाहिँ कलेसा।	१,२,३,४,५–जाहिँ;७-जाहि; ६–जाइ
७।८९ बिनु गुरु होइ कि ज्ञान, ज्ञान कि होइ बिराग बिनु। गावहिँ बेद पुरान, सुख कि लहिअ हरि भगति बिनु। ···	१,२, ३, ४, ५, ७–कि··· लहिअ; ६–न···लहहि
७।८९ चलै कि जल बिनु नाव, कोटि जतन पचि पचि मरिअ। ···	१,२,३ मरिअ; ४,५,७–मरिय; ६–मरै
७।८९।१ बिनु संतोष काम न नसाहीं। ···	१,२,३–काम न, ४,५,६,७–न काम

७।९० बिनु बिस्वास भगति नहिँ, तेहि बिनु द्रवहिँ न **रामु** । राम कृपा बिनु सपनेहु, **जीव न लह** बिश्रामु ।	···	१,२,३,४,५,७—न रामु; ६—कि राम; १,२,३,४,५—जीव न लह; ७—जिव कि लहै; ६—मन न लहहि
७।९० भजहु राम **रघुबीर**, करुनाकर सुंदर सुखद ।	···	१,२,३,४,५,७—रघुबीर; ६—रणधीर
७।९०।१ निज मति सरिस नाथ मैं गाई । ... **खगराई** ।	···	१,२,३,,४,५,७— गाई··· खगराई; ६—गाया···खग-राया
७।९०।२ कहेउँ न कछु करि जुगुति **बिसेखी** । ······**देखी** ।	···	१,२,३,४,५,७—बिसेखी··· देखी; ६—बिसेखा···देखा
७।९१ ससि सत कोटि **सुसीतल**, समन सकल भव त्रास ।	···	१,२,३,५,७—सुसीतल; ६—सो सीतल
७।९१।२ तीरथ अमित कोटि **सम** पावन । नाम अखिल अघ **पूग** नसावन ।	···	१,२,३,४,५,६—सम; ७—सत; १,२—पूग; ३,४,५,६,७—पुंज
७।९१।६ बिस्नु कोटि **सम** पालन कर्ता ।	···	१,२,३,४,५,५—सम;७—सत
७।९१।८ **भार** धरन सत कोटि अहीसा ।	···	२,४,५,६—७—मार १,२—धरा
७।९२ निरुपम न उपमा आन, राम समान **रामु निगम** कहे ।	···	१,२,३,४,५,७—राम निगम; ६—निगमागम
७।९२ प्रभु भाव गाहक अति कृपाल, सप्रेम **सुनि** सुख मानहीँ ।	···	१,२,३,४,५,७—सुनि; ६—तें;
७।९२ संतन्ह सन जस कछु सुनेउँ, तुम्हहि **सुनाएउँ** सोइ ।	···	१, २, ३,४,५,७—सुनाएउँ, सुनायो
७।९२ तजि ममता मदमान भजिअ; सदा **सीता रवन** ।	···	१,२,३—सीता रवन; ४,५; ७—सीता रमन; ६—सीता पतिहि

७।६२।२ श्री रघुपति प्रतापु उर आना । … १,२,३,७–रघुपति प्रताप;५–रघुबर प्रताप; ३,५–रघुपति प्रभाव

७।६२।३ ब्रह्म अनादि मनुज करि माना । … १,२,३,४,५,६–माना; ७–जाना

७।६३ ताहि प्रसंसि बिबिधि बिधि,
सीस नाइ कर जोरि । … १,२,३,४,५–प्रसंसि; ७–प्रसंसे; ६–प्रसंसेउ

७।६३ प्रभु अपने अबिबेक ते,
बूझौं स्वामी तोहि । … १,२,३,४,५,७–बूझौं; ६–पूछौं

७।६३।६ मुधा बचन नहिँ ईस्वर कहई ।
सोउ मोरे मन संसय अहई । … १, २,३,४,५–मुधा…सोउ; ६,७–मृषा…सो

७।६४ प्रभु तव आस्रम आए,
मोर मोह भ्रम भाग । … १,२,३–आए; ५–आएँ; ४,६–आएउँ; ७–आयउँ

७।६४।१ बोलेउ उमा परम अनुरागा । … १ २ ३–परम; ४,५,६,७–सहित

७।६४।४ सब निज कथा कहौँ मैँ गाई । … १, २, ३,४,५,६,७–सब… कहौं मैं; (अब…सुनावौं)

७।६४।५ जप तप मख सम दमब्रत दाना । … १,२,३,४,५,७–मख सम दम ब्रत; ६–ब्रत मख सम दम ।

७।६५ पाट कीट तैं होइ,
तेहि तैं पाटंबर रुचिर । … १,२,३,४,५ तेहि तें; ६,७–ता ते

७।६५।२ जो तनु पाइ भजै रघुबीरा । … १,२,७–भजै; ३–भजिअ;४,५,६–भजिय

७।६७ कलि मल ग्रसे धर्म सब,
लुप्त भए सदग्रंथ । … १,२,३,४,५,६–ग्रसे;७–ग्रासे
१,२,३,४–लुप्त; ७–लुपुत;५–गुप्त

७।७६।१ श्रुति बिरोध रत सब नरनारी । … १,२,३,४,४,५–सब; ६ ७–ब्रत ।

७।६७।२ द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन । … १,२,३,५,६–बेचक; ४,७–बंचक

७।६७।६ जो कह झूठ मसखरी जाना । … १,२,३,४,५,७- कह; ६–करि

७।६७।७ कलिजुग सोइ ज्ञानी सो बिरागी … १,३,४,५–ज्ञानी सो बिरागी; २–ज्ञान बैरागी; ६,७–ज्ञानी बैरागी

७।९८ तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर, पूजिति कलिजुग माहिँ। ...	१,२,३,४,५,७–जोगी; ६–तापस;१,२–पूजिति; ३–पुज्य ते; ४,५,६पूज्य ते;७–पूजित;
७।९८ जे अपकारी चार, तिन्ह कर गौरव मान्य तेइ। ...	१,२,३,४,५–मान्य तेइ; ६–मान्य बहु; ७–मान्यता
७।९८।३ देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी। ...	१,२,३,४,५–देव बिप्र श्रुति; ७–देव बिप्र अरु; ६–बेद बिप्र गुरु
७।९८।६ गुरु सिष बधिर अंध का लेखा। ...	१,३,४,५,७–का; २–क; ६–कर
७।९८।८ उदर भरै सोई धर्म सिखावहिं। ...	१,२,३,४,५–धर्म; ७–धरम; ६–ज्ञान
७।९९ कौड़ी लागि मोह बस, करहिं बिप्र गुर घात। ...	१–मोह; २,३,४,५,७–लोभ; ६–कारन लोभ
७।९९।३ आपु गए अरु तिन्हहूँ घालहिं, जे कहुँ सत मारग प्रतिपालहिं। ...	१,२,३,४,५,७– तिन्हहूँ; औरनि। १,२,३,४,५–जे कहुँ; ६–जो कहुँ; ७–जे कछु। १,२–सन्मारग; ३,४,५,६,७–सत मारग
७।९९।६ नारि मुई गृह संपति नासी। ...	१,२,३,४,५,७-गृह; ६–घर
७।९९।९ सूद्र करहिँ जप तप ब्रत नाना। ...	१,२,३,५–नाना; ४,६,७–दाना
७।१०० भए बरन संकर कलि भिन्न सेतु सब लोग।	१,२,३,४,५–कलि; ७–कली; ६–सकल; (कलिहि)
७।१००।१ बिषया हरि लीन्हि रही बिरती। ...	१,३,४,७–हरि लीन्हि रही; ६-हरि लीन रही; २–हरि लीन्हि न रही
७।१००।३ कुलवंति निकारहिँ नारि सती। ...	१,२,७–कुलवंति; ३,४,५,६–कुलवंत

७।१००।४ सुत मागहिं मातु पिता तब लौं । अबलानन दीख नहीँ जब लौं ।	···	१-मागहिँ; २,३,४,५,६, ७-मानहिँ; १.२,३,४,५, ७-अबलानन दीख नहीँ; ६-अबला नहिं डीठ परी
७।१००।७ नहिं मान पुरान न बेदहि जो ।	···	१,२,३ ४,५,७-पुरान न; ६-पुराननि
७।१००।६ गुन दूषक ब्रात न कोपि गुनी ।	···	१,२,३,५,७-दूषक; ४,६- दूषन
७।१०१ देव न बरषहिं धरनि पर, बए न जामहिँ धान ।	···	१,७-बरषहिं; २,३,४,५- बरखै धरनी । १,२,४ ५, ७-बए; ३-बये; ६-बोए
७।१०२ सुनु ब्यालारि कालकलि, मल अवगुन आगार । गुनौ बहुत कलिजुगकर, बिनु प्रयास निस्तार ॥	···	१,२,३,४,५-काल कलि; ६,७- कराल कलि; १,२, ३,४,५,७-बहुत कलिजुग कर;६-बड़ तौ कलिकाल के
७।१०२ कृत जुग त्रेता द्वापर, पूजा मष अरु जोग । जो गति होइ सो कलि हरि, नाम तेँ पावहि लोग ।	···	१,३,४,५,६-द्वापर; २, ७-द्वापरहु; द्वापर समै) । १,२,३,४,५,७-हरि; ६- बिषे
७।१०२।८ कलि कर एक पुनीत प्रतापा ।	···	१,२,३,४,५ ७-कर; ६- जुग
७।१०३।१ नित जुग धर्म होहिं सब केरे ।	···	१,२,४,५-नित; ३,६,७- कृत
७।१०३।५ कलि प्रभाव बिरोध चहुँ ओरा ।	···	१,२,३,४,५,७- प्रभाव; ६-सुभाउ
७।१०३।७ काल धर्म नहिँ ब्यापहि ताही । रघुपति चरन प्रीति अति जाही ।	···	१,२,३,४,५,७ - धर्म··· ताही···अति जाही; ६- कर्म···तेही···रति जेही
७।१०५ गुर नित मोहि प्रबोध, दुखित देखि आचरन मम ।	···	१, २, ३, ४, ५, ७-नित मोहि प्रबोध; ६-मोहि नित्य प्रबोध

७।१०५।५ हर कहुँ हरि सेवक गुर कहेऊ। ··· १,३,५, ७–कहँ; २, ४–कहुँ; ६–को

७।१०५।११ सब कर पद प्रहार नित सहई। ··· १,२,३,४,५,७–पद; ६–पग

७।१०५।१२ मारुत उड़ाव प्रथम तेहि भरई। ··· १,२,३, ४,५, ७– उड़ाव ···पुनि नृप नयन किरीटन्हि; ६–उड़ाइ···नृप किरीट पुनि नयनन्हि
पुनि नृप नयन किरीटन्हि परई।

७।१०५।१४ खल सन कलह न भल नहिँ प्रीति। ··· १,२,३,४,५, ७–न भल नहि; ६–संग···नहीं भल प्रीती।

७।१०६ एक बार हर मंदिर, जपत रहेउँ सिव नाम। ··· १,२,३,४,५,६–मंदिर; ७–मंदिरहु; (मंदिरहि)

७।१०६ सो दयाल नहिं कहेउ कछु, उर न रोष लवलेस। ··· १,२,३,४,५,७–सो; ६–गुरु

७।१०६।२ अति कृपाल चित सम्यक बोधा। ··· १,२,३,४,५,७–चित; ६–उर; (गुरु)

७।१०६।७ सर्प होहिं खल मल मति ब्यापी। ··· १,२,३,४,५–होहि;७–होहिं; ६–होहु

७।१०७ बिनय करत गदगद स्वर, समुझि घोर गति मोरि। ··· १,२,३,४–स्वर; ५,६,७–गिरा

७।१०७।७ चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं। ··· १,२,३,४,५–भ्रू सुनेत्रं; ७–भ्रू त्रिनेत्रं; ६–शुभ्र नेत्रं

७।१०८ जौं प्रसन्न प्रभु मो पर, नाथ दीन पर नेहु।
निज पद भगति देइ प्रभु, पुनि दूसर बर देहु॥ ··· १,२,३,४,५,६–प्रभु मो पर; ७–अति मोहि पर;१,२,३,४; ५–भगति देइ प्रभु; ६–पद्म भक्ति दृढ़; ७–भगती देइ प्रभु

७।१०८ तिहि पर क्रोध न करिअ प्रभु, कृपा सिंधु भगवान। ··· १,२,३,४,५,६–तेहि; ७–ता; १,२,३,४,५,७–करिय; ६–कीजिए

७।१०८ साप अनुग्रह होइ जेहि, नाथ थोरेही काल।	··· १,२,३,४,५,५,७–जेहि; ६–ज्यौं
७।१०८।५ ते द्विज मोहि प्रिय जथा खरारी।	··· १, २, ३, ४, ५, ६–मोहि; ७–मम
७।१०८।६ मोर साप द्विज व्यर्थ न जाइहि, जन्म सहस अवस्य यह पाइहि।	··· १,२,३,४,५,७–जाइहि; ६–जाई; १,२–अवस्य; ३,४,५,६,७–अवसि
७।१०८।८ सुनहि सूद्र मम वचन प्रवाना।	··· १,२,३–प्रवाना; ४,५,६, प्रमाना
७।१०८।११ सुनु मम बचन सत्य अब भाई हरि तोषन व्रत द्विज सेवकाई।	··· १, २, ३, ४,५, ७–अव··· तोषन; ६–अति···तोषण
७।१०६ सुनि सिव बचन हरषि गुर, एवमस्तु इति भाषि।	··· १,२,३,४,५,७–इति;६–तव
७।१०६ प्रेरित काल बिंधि गिरि, जाइ भएउ मैं ब्याल। पुनि प्रयास बिनु सो तनु, तजेउँ गए कछु काल।	··· १,२,३,४,५,७–बिधि; ७ सुबिंधि;६–सुबिंध्य; १,२,३, ४,५,६ सो; ७–सोउ
७।१०६ सिव राखी श्रुति नीति, अरु मैं नहिं पावा क्लेस।	··· १,२,३,४,५,७–सिव राखी; ६–सिव असीस
७।१०६।३ चर्म देह द्विज कै मैं पाई।	··· १,२,३,४,५–चर्म;७–चरम; ४,६–धर्म
७।१०६।४ खेलौं तहूँ बालकन्ह लीला।	··· १,३,४,५–तहूँ; २–तह;६, ७–तहाँ
७।१०६।११ कहहिं सुनौ हरषित खगनाहा।	··· १,२,३,३,५,७–हरषित; ६–हरषों
७।१०६।१३ छूटी त्रिबिधि ईषना गाढ़ी।	··· १,२,३,७–ईषना; ४,५–ईर्षना; ६––इर्षना
७।११० गुर के बचन सुरति करि, राम चरन मन लाग।	··· १,२,३,४,५,७–चरन मन लाग; ६–चरित अनुराग

७।११० तब मैं कहा कृपानिधि, तुम्ह सर्वज्ञ सुजान। सगुन ब्रह्म अवराधन, मोहि कहहु भगवान। ···	१,२,३,४,५,६–कृपानिधि; ७–कृपायतन; १,२,३,४,५–अवराधन; ७–अवराधना;६–आराधना·
७।११०।१ कहे कछुक सादर खगनाथा। ···	१,२,३,४,५,७–कहे, ६–कह्यौ
७।११०।६ सो तैं तोहि ताहि नहिं भेदा। ···	१,२,३,४,५,७–तैं; ६–तई
७।११०।७ निर्गुन मत मम हृदय न आवा। ···	१,२,३,४,५,६–मम;७–मोहि
७।११०।१० सोइ उपदेस कहहु करि दाया। ···	१,२,३,४,५,७–कहहु; ६–करहु
७।११०।१२ खंडि सगुन मत अगुन निरूपा। ···	१, २; ३, ४, ५,७–अगुन निरूपा; ६–निर्गुन रूपा
७।११०।१५ सुनु प्रभु बहुत अवज्ञा किए। उपज क्रोध ज्ञानिन्ह के हिए। ···	१,६–किए; ५–किये; २,३, कीये···हीये ७–कियहू··· हियहू; १,२,३,४,५,६–उपज; ६–उपजै; १,२,३–ज्ञानिन्ह; ४,५,६,७–ज्ञानिहुँ
७।१११।१६ अति संघरषन जौं कर कोई। अनल प्रगट चंदन ते होई। ···	१,२,३,४,५–जौं कर; ७–जो कर; ६–जो करै; १,२,३,४,५,७–चंदन; ६–चंदनहु
७।१११ क्रोध कि द्वैत बुद्धि बिनु, द्वैत कि बिनु अज्ञान। ···	१,२,३,४,५,७–क्रोध कि द्वैत बुद्धि बिनु; ६–द्वैत बुद्धि बिनु क्रोध किमि
७।१११।२ परद्रोही की होहिं निसंका। ···	१,२,३–की होहिं, ४,५–की होई; ६,७–कि होइ
७।१११।५ भव कि परहि परमात्मा बिंदक सुखी की होहिं कबहुँ हरिनिंदक। ···	१ २,३,४,५–परमात्मा; ६,७–परमातम; १,२–की··· हरि; ३,४,५,७–कि···हरि; ६–कि···पर
७।१११।१० अघ कि पिसुतनता सम कछु आना। ···	१,३,४,५–पिसुनता सम; २,६,७–बिना तामस

७।११२ निज प्रभु मय देखहिं जगत, केहि सन करहिं बिरोध। ···	१,२,३,४,५,६–केहि सन; ७–का सन
७।११२।३ मन बच क्रम मोहिं निज निज जाना।	१,२,३,४,५,७–बच क्रम; क्रम बचन
७।११।४ रिषि मम महत सीलता देखी। ···	१,३,४,५–महत; २,६,७–सहन
७।६१२।६ हरषित राम मंत्र तब दीन्हा। ···	१,२,३,४,५,७–तब;६–मोहि
७।११२।१६ बसिहि सदा प्रसाद अब मोरे। ···	१,२,३,४,५,७–बसिहिं ६–बसहु
७।११३ जेहि आश्रम तुम्ह बसब पुनि, सुमिरत श्री भगवंत। ···	१,२,३,४,५,६–जेहि; ७–जे; (जो); १,२,३,४,५–बसब पुनि; ६–बसहु गे; ७–बसहु पुनि
७।११३।४ हरि प्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं। ···	१,२,३,४,५,६–हरि; ७–प्रभु
७।११५ न तु कामी बिषया बस, बिमुखु जो पद रघुबीर। ···	१,२,३,४,५–बिषया बस; ७–विषया बिबस; ६–जो विषय वस
७।११५ सोउ मुनि ज्ञान निधान, मृगनयनी बिधु मुख निरषि। बिबस होइ हरि जान, नारि बिस्व माया प्रगट। ···	१,२,३,४,५,७-सोउ···बिबस ५–सो···बिकल
७।११५।२ पन्नगारि यह रीति अनूपा। ···	१,२,३,४,५,६–रीति; ७–नीति
७।११६ जो जानै रघुपति क्रिपा, सपनेहु मोह न होइ। ····	१,२,३,४,५–जो जानै; ६,७–जाने ते
७।११६ औरो ज्ञान भगति कर, भेद सुनहु सुप्रबीन। जो सुनि होइ राम पद, प्रीति सदा अबिछीन। ···	१,२,३,४,५–सुप्रबीन; ६–सो प्रबीन;७–परबीन; १,२,३,४,५–अबिछीन; ६,७– अवछीन
७।११६।१ सुनहु तात यह अकथ कहानी। समुझत बनै न जाइ बखानी। ···	१, २, ३, ४, ५,६,७–तात; (नाथ);१,२,३,४,५,६- जाइ ७–जात

७।११६।९ सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई । ··· १,२,३,४,५,७–सुहाई; ६–लवाई

६।११६।११ भाव बछ सिसु पाइ पेन्हाई । ··· १,२,३,४,५ ७-पाइ; ६-धेनु

७।११६।१५ दम अधार रजु सत्य सुबानी ।··· १,२,३,४,५,७–अधार; ६–सुधार

७।११६।१६ बिमल बिराग सुभग सुपुनीता ।··· १,२,३,४,५ ७–सुभग; ६–सुपरम

७।११७ तब बिज्ञान रूपिनी,
बुद्धि बिसद घृत पाइ । ··· १,२,३,४,५–रुपिनी; ६–स्वरुपिणी; ७–निरुपनी

७।११७ जातहि जासु समीप
जरहिँ मदादिक सलभ सब । ··· १,३,४,५,६–जासु; २,७–तासु

७।११७।२ तब भव मूल भेद भ्रम नासा । ··· १,२,३,४,५,७–भेद भ्रम; ६–देह भ्रम

७।११७।४ तब सोइ बुद्धि पाइ उँजियारा ।
उर गृह बैठि ग्रंथि निरुआरा । ··· १,२,३, ४, ५, ६–उँजियारा···निरुआरा; ७–उजियारी···निरुआरी

७।११७।५ छोरन ग्रंथि पाव जौं सोई । ··· १,२,३,४,५,७–सोई; ६–कोई

७।११७।८ कल बल छल करि जाहिँ समीपा । १,२,३–जाहिँ: ४,५,६,७–जाइ

७।११७।९ होइ बुद्धि जौं परम सयानी ।
···जानी । ··· १,२,३,४, ५, ७–सयानी···जानी;७–सयाने···जाने

७।११७।१० जौं तेहि बिघ्न बुद्धि नहिँ बाधी ।··· १,२, ३, ४, ५, ७–बिघ्न बुद्धि; ६–बुद्धि बिघ्न

७।११७।१२ ते हठि देहिँ कपाट उघारी । ··· १,२,३,४,५,७–ते; ६–तेहि

७।११७।१६ तेहि बिधि दीप को बार बहोरी ।··· १,२,३,४,५,७-बार; ६–करै

७।११८ तब फिरि जीव बिबिधि बिधि,
पावै संसृति क्लेस । ··· १,२,३, ४, ५, ७–बिबिधि बिधि; ६–सुबिबिध बिधि

७।११८ कहत कठिन समुझत कठिन, साधत कठिन अनेक। होइ घुनाच्छर न्याय जौं, पुनि प्रत्यूह अनेक।	...	१,२,५–साधत; ३,४,६, ७–साधन; १,२,३,४,५, ७–जौं, ६–ज्यौं
७।११८।१ ज्ञान पंथ कृपान कै धारा।	...	१,२,३,४,५,६–पंथ; ७–क पंथ
७।११८।४ राम भजत सोइ मुकुति गोसाईं।	...	१,२,४,४, ६–भजत; ३–भजन; ७–भगति
७।११६।५ प्रबल अविद्या तम मिटि जाई।	...	१,२,३,४, ५, ७–प्रबल; ६–अचल
७।११६।१२ सुगम उपाय पाइबे केरे।...भट भेरे।		१,२,३,४,५,७– केरे... भेरे; ६–केरो...भेरो
७।११६।१६ अस बिचारि जोइ कर सतसंगा।	...	१,२,३,४,५,६–जोइ; ७–जेइ; (जो)
७।१२० कथा सुधा मथि काढ़हिं, भगति मधुरता जाहि।	...	१,२,३, ४,५, ७–काढ़हिं ६–काढ़िये
७।१२०।६ कहहु कवन अघ परम कराला।	...	१,२,३,४,५, ७–कराला; ६–कृपाला
७।१२०।१० ज्ञान बिराग भगति सुभ देनी।	...	१,२,५–सुभ; ३,४,६,७–सुख
७।१२०।११ होहिँ बिषय रत मंद मंदतर।	...	१,२,३, ४, ५, ७–होहिँ; ६–होइ
७।१२०।१२ काचु किरिच बदले ते लेही।	...	१,३,४,५,७–ते; २–जे; ६–जिमि
७।१२०।१३ संत मिलन सम सुख जग नाहीं।	...	१,२,३,४,५,६–जग; ७–कछु
७।१२०।१६ भूर्ज तरू सम संत कृपाला। परहित निति सह बिपति बिसाला।	...	१,२,३,४,५–भूर्ज तरू... निति; ६,७–भूरज तरू; ३,६–नित; ७–निज
७।१२०।२० दुष्ट उदय जग अनरथ हेतू।	...	१,२,३,५,६–उदय; ४,६–हृदय; १, २, ७–अनरथ, ६–आरत; ३,४,५–आरति
७।१२०।२६ मोह निसा प्रिय ज्ञान भानु गत।	...	१,२,३,४,५,७–गत; ६–मत

७।१२०।२८ जिन्ह ते दुख पावहिं सब लोगा।···	१,२,३,४,५,७–जिन्ह ते ६–जेहि ते; (जिहि ते)
७।१२०।२६ तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला।···	१,२,३,४,५–तिन्ह ते; ६–तेहि ते; ७–जेहि ते
७।१२०।३५ अहंकार अति दुखद डमरुआ।··· दंभ कपट मद मान नेहरुआ।	१,२, ३, ४, ५–डमरुआ; ७–डहरुआ; ६–हकरुआ; १,२,३–नेहरुआ; ४,५,६, ७–नहरुआ
७।१२१ नेम धर्म आचार तप, ··· ज्ञान जज्ञ जप दान। भेषज पुनि कोटिन्ह नहि, रोग जाहिँ हरिजान।	१,२,३,४,५,६–ज्ञान ७–७–जोग; १,२,३,४,५–कोटिन्ह; ६–कोटिक; ७–कोटिहु
७।१२१।१ एहिबिधि सकल जीव जग रोगी।···	१,२,३,४,५,७–जग; ६-जड़
७।१२१।२ मानस रोग कछुक मैं गाए।··· इहिँ सब के लखि बिरलेन्ह पाए।	१,२,३,४,५,६–गाए; ७–गाई···पाई; १,२,३,४,५–हहिं; ६–होहिं; ७–है; (होहिँ)
७।१२१।६ सद् गुर बैद बचन बिस्वासा ···	१,२,३,४,५;६–बैद; ७–वेद
७।१२१।७ अनूपान श्रद्धा मतिपूरी। ···	१,२,३,४,५,७–मतिपूरी; ६–··· अति रूरी
७।१२१।८ एहि बिधि भलेहि सो रोग नसाहीँ।	१,३–भलेहि सो रोग; ४, ५,६–भलेहीँ रोग; ७–भलेहि कुरोग; २–भलेहि रोग
७।१२१।१८ अंधकारु बरु रबिहि नसावै।···	१,२,३,४,५,७–रबिहि; ६–ससिहि
७।१२२ बिनु हरि भजन न भव तरिअ, ··· येह सिद्धांत अपेल।	१,२,३–तरिअ; ४,५,७–तरिय; ६–तरहिं
७।१२२।३ मोहि से सठ पर ममता जाही।···	१,२,३,४,५,६–मोहि से;७–मोहिते (मोते)
७।१२३ चरित सिंधु रघुनायक, ··· थाह कि पावै कोई।	१,२,३,४,५–रघुनायक; ७–रघुनाथ कर; ६–रघुबीर के

७।१२३।१ सुमिरि राम के गुन गन नाना। ··· १,२,३,४,५,६–के; ७–कर

७।१२४ जासु नाम भव भेषज, हरन घोर त्रय सूल। सो कृपाल मोहि तो पर, सदा रहौ अनुकूल॥ ··· १,२,३,४,५,७–घोर;६–ताप १,२-मोहि पर सदा रहौ राम; ३,४,५,६-मोहि तोहि पर सदा रहहु; ७–मम तुम्ह पर सदा रहहु

७।१२४।३ मोह जलधि बोहित तुम्ह भए। ···दए। ··· १, २, ३, ४, ५–भए···दए; ६, ७–भयेऊ···दयेऊ

७।१२४।४ मो पहिँ होइ न प्रति उपकारा। ··· १, २, ३, ४, ५, ६,७-पहिं; (पर)

७।१२४।७ कहा कविन्ह परि कहै न जाना। ··· १,२,३–परि; ४, ५, ७–पै; ६–पइ

७।१२४।८ पर दुख द्रवहिँ संत सुपुनीता। ··· १, २, ७–संत सुपुनीता; ३,४,५, ६–सुसंत पुनीता

७।१२६।४ सोइ कवि कोविद सोइ रनधीरा। ···१, २, ६–सोइ; ···सोइ ३, ४,५,७–सो···सो

७।१२६।५ धन्य देस सो जहँ सुरसरी। ··· १,२,३,४५–देस सो जहँ;६, ७-सो देस जहाँ;(सुदेस जहाँ)

७।१२६।७ धन्य पुन्य रत मति सोइ पाकी। ··· १,२,३, ४, ५, ७–सोई; २–जाकी; ६–सो

७।१२७।४ यह न कहिय सठही हठ सीलहि। ··· १, २, ३, ४, ५, ७–कहिय सठही; ६–कहीजे सठ

७।१२७।६ राम कथा के तेइ अधिकारी। ··· १,२–तेइ; ३,४,५,६,७–ते

७।१२८ राम चरन रति जो चह, अथवाँ पद निर्बान। भाव सहित सो येहि कथा, करौ श्रवन पुट पान। ··· १,२,३,४–चह; ६, ७–चहै; ५–चहँ; १,२,३,५–करौ;४, ७–करै; ६–करहि

७।१२८।१ कलिमल समनि मनोमल हरनी। ··· १,२,३,४,५,७–समनि; ६–हरनि

७।१२८।३ रघुपति भगति केर पंथाना। ··· १,२,३,४,५,६–पंथाना; ७–पथ नाना

७।१२८।४ अति हरिकृपा जाहि पर होई । ··· १,२,३,४,५,७–जाहि; ६–जासु

६।१२८।५ मन कामना सिद्धि नर पावा । ···गावा । ··· १, २, ३,४,५,६–पावा··· गावा ७--पावै···गावै

७।१२८।७ सुनि सब कथा हृदय अति भाई । ··· १,२,३,४,५,७-सब;६-सुभ

७।१२६।८ ताहि भजिअ मन तजि कुटिलाई ।··· १, २,–भजिअ; ३, ६–भजहि; ४,५,७–भजिय

७।१३० दारुन अबिद्या पंच जनित, बिकार श्री रघुबर हरे । ··· १,२,३,४,५–श्री रघुबर; ६,७–श्री रघुपति

७।१३० तिमि रघुनाथ निरंतर, प्रिय लागहु मोहि राम । ··· १,२,३,५,७–रघुनाथ निरंतर, ६–रघुवंश निरंतरहिं

———

रामचरितमानस की कुछ अर्धालियाँ जो किन्हीं प्रामाणिक प्रतियों में नहीं मिलती उनका संकेत इस प्रकार है—

बाल कांड

१।७७।४ सुनत रिषिन के बचन भवानी । बोली गूढ़ मनोहर बानी ।
भा० १,२,३,४,५,७,८–में है; ६–में नहीं है

१।२३६।६ चले सकल गृह काज बिसारी । बाल जुवान जरठ नर नारी ।
भा० १,२,३,४,५,७,८–में है; ६–में नहीं है

१।२६१।७ रही भुअन भरि जय जय बानी । धनुष भंग धुनि जात न जानी ।
भा० १,२,३,४,५,७,८–में है; ६–में नहीं है

१।२६३।६ सुनत जुगल कर माल उठाई । प्रेम बिवस पहिराय न जाई ।
भा० १,२,३,४,५,७,८–में है; ६–में नहीं है

१।२८१।७ देव एक गुन धनुष हमारे । नव गुन परम पुनीत तुम्हारे ।
भा० १,२,३,४,५,७,८–में है; ६–में नहीं है

१।३२४।२ जाइ न बरनि मनोहर जोरी । जो उपमा कछु कहौं सो थोरी ।
राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं । जगमगाति मनि खंभन्ह माहीं ।
भा० १,२,३,४,५,७,८–में है; ६–में नहीं है

———

अयोध्या कांड

२।१।२ सकल सुकृत मूरति नरनाहू। राम सुजस सुनि अतिहि उछाहू।
भा० २,३,४,५,६,७–में है; ८–में नहीं है

२।४।३ प्रमुदित मोहि कहेउ गुर आजू। रामहि राय देहु जुवराजू।
भा० २,३,४,५,६,७–में है; ८–में नहीं है

२।७।६ बार बार गनपतिहि निहोरा। कीजै सफल मनोरथ मोरा।
के आगे ७–में है; भा० २,३,४,५,६,८–में नहीं है

२।१६।४ कीन्हिसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू। फिरि न नवइ जिमि उकठि कुकाठू।
भा० २,३,६–में है; ७–में नहीं है

२।२८।५ गयेउ सहमि नहिं कछु कहि आवा। जनु सचान बन झपटेउ लावा।
भा० २,३,४,५,८–में है; ६,७– ने नहीं है

२।५६।६ बहु बिधि विलपि चरन लपटानीं। परम अभागिनी आपुहि जानी।
भा० २,३,४,५,७,८–में है; ६–में नहीं है

२।६३।७ अस कहि सिय रघुपति पद लागी। बोली बचन प्रेम रस पागी।
के आगे ७–में है; भा० २,३,४,५,६,८–में नहीं है

२।८७।४ सहज सनेह बिबस रघुराई। पूँछी कुसल निकट बैठाई।
भा० २,३,४,५,६,७–में है; ८–में नहीं है

२।१७२।७ तीनि काल तिभुवन जगमाहीं। भूरि भाग दसरथ सम नाहीं।
के आगे ७–में है; २,३,४,५,६,८–में नहीं है

२।१८३।१ ... ... । राम सनेह सुधा जनु पागे।
लोग बियोग बिषम बिष दागे। ... ...
भा० २,३,४,५,६,७–में है; ८–में नहीं है

२।१८४।७ केहि न भाव सिय लछिमन रामू। सब कहँ प्रिय हिय सदा सकामू
के आगे ७–में है; भा० २,३,४,५,६,८–में नहीं है

२।२०१।६ निंदहिं आपु सराहि निषादहिं। को कहि सकइ बिमोह बिषादहिं।
भा० २,३,४,५,६,८–में है; ७–में नहीं है

२।२१७।२ कह गुर बादि छोभु छलु छाँड़ू। इहाँ कपट करि होइअ भाँड़ू।
भा० २,३,४,५,६,७–में है; ८–में नहीं है

२।२२४।२ भरतहि सहित समाज उछाहू। मिलिहहिं राम मिटिहि दुख दाहू।
भा० ३,४,५,७,८–में है; २,६–में नहीं है

२।२५५।२ ··· ··· ··· । अरध तजहिं बुध सरबसु जाता ।
तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई । फेरिय लषन सीय 'रघुराई ।
सुनि सुबचन हरषे दोउ भ्राता । ··· ··· ··· ।
भा० २,३,४,५,६,७–में है; ८–में नहीं है

२।२७८।५ ··· ··· ··· । जनु महि करति जनक पहुनाई ।
तब सब लोग नहाइ नहाई । ··· ··· ··· ।
भा० २,३,४,५,६,७–में है; ८–में नहीं है

२।२९०।६ ··· ··· ··· । रिषि धरि धीर जनक पहिं आए ।
राम बचन गुर नृपहिं सुनाए । ··· ··· ···
भा० २,३,४,५,६,७–में है; ८–में नहीं है

२।२९५।२ गए जनकु रघुनाथ समीपा । सनमाने सब रविकुल दीपा ।
भा० ३,४,५,७,८–में है; २,६–में नहीं है

२।३२४।७ भरत रहनि समुझनि करतूती । भगति बिरति गुन बिमल विभूती ।
भा० ३,४,५,७,८–में है; २,६–में नहीं है

आरण्य कांड

[इस कांड में काशिराज की प्रति में बहुत से ऐसे अंश हैं जो अन्य किसी प्रामाणिक प्रति में नहीं मिलते । उनके लिये देखिए 'रामचरित मानस के क्षेपक' शीर्षक लेख, पत्रिका, सं० १९९८ अंक ३ पृ० २३३—२४०]

३।४० दीप सिखा सम जुवति तन मन जनि होसि पतंग ।
भजहि राम तजि काम मद करहि सदा सतसंग ।।
भा० १, २, ३, ४,५,६–में है; ७–में नहीं है

किष्किंधा कांड

४।२५।२ सब मिलि कहहिं परसपर बाता । बिनु सुधि लए करब का भ्राता ।
भा० १,२,३,४,५,६–में है; ७–में नहीं है

४।२५।६ पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं । मरन भएउ कछु संसय नाहीं ।
अंगद बचन सुनत कपि बीरा । बोलि न सकहिं नयन बह नीरा ।
छन एक सोच मगन होइ रहे । पुनि अस बचन कहत सब भए ।
हम सीता कै सुधि लीन्हे बिना । नहिं जैहैं जुवराज प्रबीना ।
भा० १,२,३,४,५,६–में है; ७–में नहीं है

४।२४।३ आजु सबहि कहुँ भच्छन करऊँ। दिन बहु चलेउ अहार बिनु मरऊँ।
कबहुँ न मिलै भर उदर अहारा। आजु दीन्ह बिधि एकहिं बारा।
भा० १,२,३,४,५,६–में है, ७–में नहीं है

४।२६।६ कपि सब उठे गीध कहँ देखी। जामवंत मन सोज बिसेखी।
भा० १,२,३,४,५,६–में है; ७–में नहीं है

———

लंका कांड

लव निमेष परवानु जुग बरष कलप सर चंड।
भजसि न मन तेहि रामकहुँ कालु जासु कोदंड।
भा० १,२,५,६–में यह दोहा श्लोक के पहले है; ३,४,७–में श्लोक के बाद है

६।१५ अस बिचारि सुनु प्रानपति प्रभु सन बयरु बिहाइ।
प्रीति करहु रघुबीर पद मम अहिवात न जाइ।
भा० १,२,३,४,५, ७–में है; ६–में नहीं है

६।३४ कोटिन्ह मेघनाद सम सुभट उठे हरषाइ।
झपटहिं टरै न कपि चरन पुनि बैठहिं सिर नाइ।
भा० १,२,३,४,५,७–में है; ६–में नहीं है

६।३८।७ हरषित राम चरन सिर नावहिं। गहि गिरि सिखर बीर सब धावहिं।
भा० १,२,३,४,५–में है; ६,७–में नहीं है

६।७०।७ परे भूमि जिमि नभ ते भूधर। हेठ दाबि कपि भालु निसाचर।
भा० १,२,३,४,५–में है; ६,७–में नहीं है

६।७४।६ मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई। जेहि छीजै निसिचर सुनु भाई।
भा० १,२,३,४,५–में है, ६७–में नहीं है

६।७५।१ जाइ कपिन्ह सो देखा बैसा। आहुति देत रुधिर अरु भैंसा।
भा० १,२,३,४,५–में है; ६,७–में नहीं है

६।८८।४ चंचल तुरग मनोहर चारी। अजर अमर मन सम गति कारी।
भा० १,२,३,४,५–में है; ६,७–में नहीं है

६।११६ जहँ जहँ कृपासिंधु बन कीन्ह बास विश्राम।
सकल देखाए जानकिहि कहे सबन्हि के नाम।
भा० १,२,३,४,५,६–में है; ७–में नहीं है

———

उत्तर कांड

७।२६।५ काल कराल ब्याल खग राजहि। नमत राम अकाम ममता जहि।
लोभ मोह मृग जूथ किरातहि। मनसिज करि हरिजन सुखदातहि।
भा० १,२,३,४,५,७—में है; ६—में नहीं है

७।१२५ गिरिजा संत समागम सम न लाभ कछु आन।
बिनु हरि कृपा न होई सो गावहिं वेद पुरान।
भा० १,२,३,४, ५—में हैं; ६,७—में नहीं है

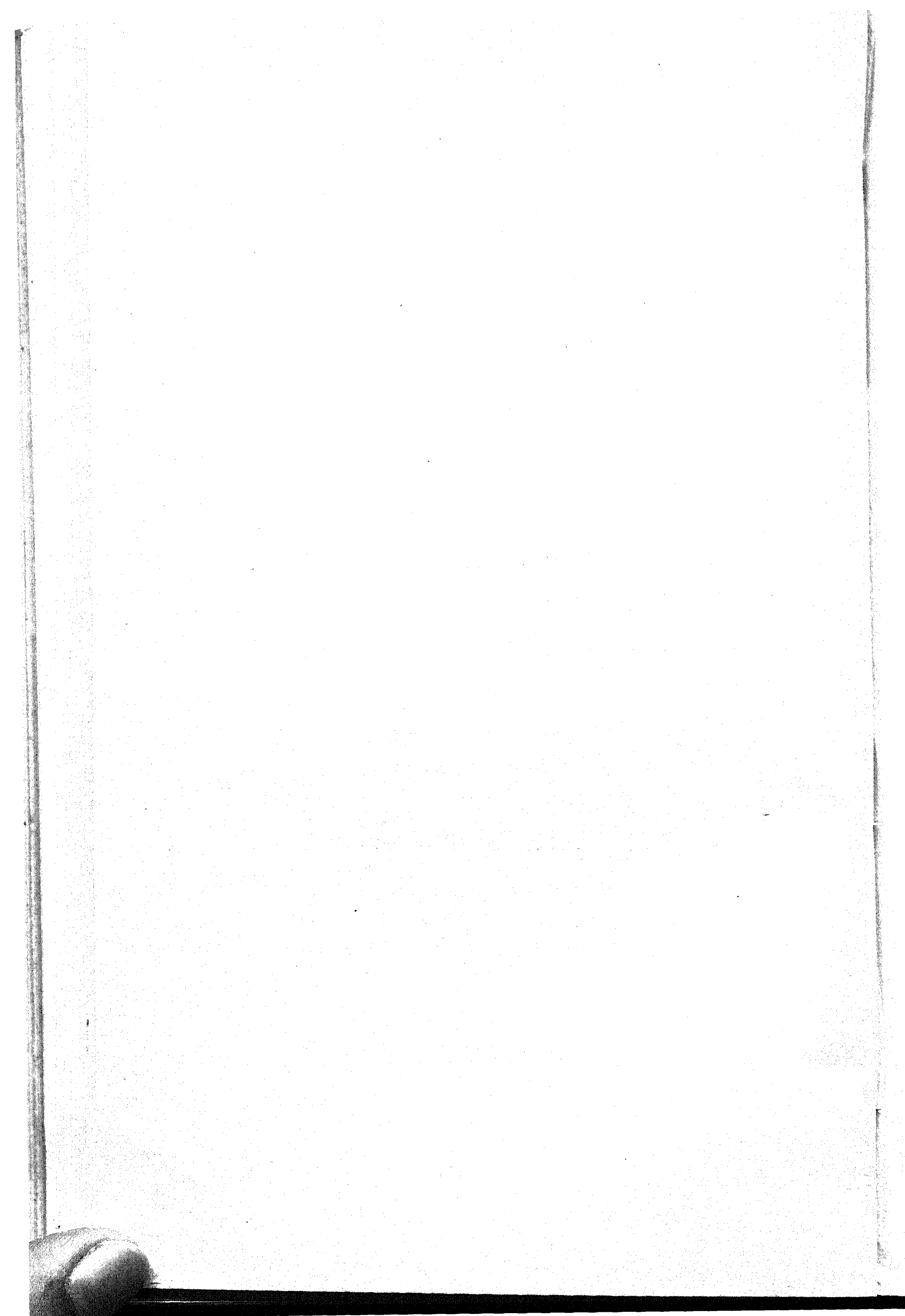
रामचरितमानस के पाठभेद का मूल उद्गम वा अंतिम स्वरूप, आधारभूत मानी गई इन्हीं दस पोथियों[1] को लेकर चला है। सातों कांडों के पाठभेद के संकेत इस प्रकार समाप्त होते हैं। पर इन कुछ निर्देश किए गए स्थलों से पाठभेद का अध्ययन समाप्त नहीं हो जाता, कारण कि जिन स्थलों में सभी (आधारभूत) पोथियों का पाठैक्य है वे इस सूची में नहीं आ सके हैं और वे मारके के पाठ हो सकते हैं। ये तो रामचरितमानस के परखने के कुछ चावल मात्र हैं। शुद्ध रामचरितमानस का नमूना तो एक यत्नपूर्वक—बिंदु विसर्ग तक—संशोधित प्रति ही हो सकती है। ऐसी संशोधित प्रतियों का निकलना अब अत्यंत आवश्यक है और इसके लिये संगठित प्रयत्न होना चाहिए। रामचरितमानस हिंदी पढ़ीलिखी जनता का नैतिक भोजन बन गया है। प्रति वर्ष—नई फसल की नाईं—इसके नवीन शुद्ध, उत्तम पर सुलभ संस्करणों का निकलना बढ़ती हुई जनता की माँग की पूर्ति के लिये नितांत आवश्यक है। जब तक यह नहीं होता हिंदी के हिमायतियों के लिये कलंक की, हिंदी प्रकाशकों के लिये निंदा की और हिंदी जनता के लिये दुर्भाग्य की बात समझनी चाहिए। तब तक श्रावण 'शुक्ला सप्तमी' वा 'श्यामा तीज' के दिन चित्र पर माला फूल सजाकर कोई जलसा कर लेना, कुछ रो गा लेना अपनी हृदयहीनता तथा विचारशून्यता के विज्ञापन के अतिरिक्त और कोई अर्थ नहीं रखता।

---

[1]—देखिए, पृ० ४३

रामचरितमानस के प्राचीन क्षेपक

[प्रस्तुत निबंध नागरीप्रचारिणी पत्रिका के वर्ष ४६, अंक ३ संवत् १९९८ में प्रकाशित हुआ है। पत्रिका के संपादक मंडल के सदस्य थे—सर्व श्री केशवप्रसाद मिश्र, वासुदेव शरण अग्रवाल, पद्मनारायण आचार्य, कृष्णानंद (संपादक) ।]



रामचरितमानस में क्षेपक कब से जोड़े जाने लगे, इसका कोई सफल अनुमान नहीं किया जा सका है; पर इतना अवश्य है कि क्षेपकरचना की मूल मनोवृत्ति गोसाईं जी के प्रति श्रद्धांजलि थी। जिस प्रकार हम आज अपने नैत्यिक पाठ की स्तोत्र-कुसुमांजलि तैयार करने के लिये भिन्न भिन्न स्थानों के सुंदर, सुललित श्लोक एकत्र करते हैं, उसी प्रकार भक्तों ने रामकथा से संबंध रखनेवाले सभी वर्णनीय विषयों को रामचरितमानस में स्थान देना चाहा। इसी से क्षेपकों की रचना प्रारंभ हुई होगी।

रामचरितमानस के संपूर्ण क्षेपक एक साथ नहीं बने। ये समय समय पर भिन्न भिन्न जनों द्वारा रचे गए हैं। संपूर्ण रामचरितमानस की सबसे प्राचीन पोथी, जो देखने में आई है वह, सं० १७०४ वि० की काशिराज की प्रति है। इसे पं० रघू तिवारी ने काशी में (लोलार्क कुंड के समीप) लिखा था। इसमें पर्याप्त मात्रा में क्षेपकों का समावेश है—विशेषतः आरण्य कांड में। रघू तिवारी केवल प्रतिलिपिकार थे, क्षेपक इनके रचे हुए नहीं हैं। जिस प्रति से आपने लिखा था, वह सं० १६५० वि० के बाद की लिखी हुई होगी और बहुत संभव है, उस पोथी के लेखक ने ही क्षेपकों की रचना की हो। पर इन्हींने सब क्षेपक नहीं रचे; क्योंकि काशिराज की प्रति में 'सुरसरि महि आवन की कथा,' 'सुलोचना सती प्रकरण,' 'लव-कुश कांड' इत्यादि नहीं हैं।

दूसरी और तीसरी प्राचीन पोथियाँ, जो देखने को मिलती हैं, क्रमशः सं० १७२१ वि० तथा सं० १७६२ वि० की लिखी हैं। पर इन दोनों में अयोध्याकांड के 'तापस प्रकरण' को छोड़, जिसके संबंध में इस लेख में आगे विचार किया गया है, एक भी क्षेपक नहीं है और इनके पाठ आपस में मिलते हैं। ये दोनों पोथियाँ भागवतदासजी के संग्रह में थीं और अपनी गोलावाली प्रति[1] छपवाते समय उन्होंने इनका उपयोग किया था। सं० १७२१ वि० की प्रतिलिपि जिस पोथी से की गई थी वह भी सं० १६५० वि० के बाद गोसाईं जी के जीवनकाल के लिखे ग्रंथ की ही प्रतिलिपि रही होगी।

१—दे० पृ० ४३।

प्राचीन हस्तलिखित रामचरितमानस के स्फुट कांडों में श्रावणकुंज का बालकांड और राजापुर का अयोध्याकांड विशेष उल्लेखनीय है। इन पोथियों में भी क्षेपक नहीं हैं। इन पोथियों के पाठ प्रामाणिक माने जाते हैं। इनके पाठों में जो कुछ विभिन्नता है, वह पोथी के मूल स्वरूप के कारण नहीं, वरन् लेखक की लेखन शैली या उसके दोष के कारण है।

राजापुर के अयोध्याकांड में 'तापस प्रकरण'—२।१०६।७ से २।११०।६ ('तेहि अवसर एक तापस आवा' से 'मुदित सुअसन पाइ जिमि भूखा' तक) एक खटकनेवाली बात है। सभी प्राचीन प्रतियों में यह मिलता है। यही कारण है कि बिलकुल अप्रासंगिक और उखड़ा हुआ होने पर भी लोगों ने इसे ग्रहण किया है। राजापुर की प्रति को कुछ भक्तगण गोसाईं जी के हाथ की लिखी पोथी का अवशेष मानते हैं। उसमें तापस प्रकरण की अवस्थिति होने के कारण भी अधिकांश पोथियों में इसे स्थान मिला है।

यह तापस कौन था, इसके बारे में बड़ा मतभेद है।

(१) कोई इसे 'तापसी रूप से रावन बध का सदेह संकल्प' कहते हैं।

(२) कुछ लोग 'अग्नि' कहते हैं। 'तेजपुंज' और 'छुधित' दोनों अग्नि के धर्म हैं। ये अग्नि देवता अलक्षित वेष से सदा साथ रहे और समय समय पर तत्परता दिखलाते रहे; जैसे—

'प्रभुपद धरि हिय अनल समानी।'
'पावक साखी देह करि जोरी प्रीति दृढ़ाई।'

वनगमन के समय अयोध्या से शृंगवेरपुर तक सुमंत साथ रहे। उनके लौटने पर, शृंगवेरपुर से यमुना पार होने तक निषादराज साथ रहे। अब इनके भी लौटने पर अग्निदेव आए और सदा साथ रहे। इनकी बिदाई नहीं कही गई है। पंथ चलने में तीन व्यक्तियों का चलना निषिद्ध बतलाया गया है।

(३) कुछ लोग इन्हें 'चित्रकूट में निवास करनेवाला अगस्त्य ऋषि का शिष्य' मानते हैं।

(४) कुछ लोगों का कहना है कि स्वयं कामदनाथ चित्रकूट वन ही भगवान् से मिलने आया है—

'चित्रकूट अस श्रवन सुनि जमुन तीर भगवान।
बालि बिराजा वेष धरि गयो लेन अवगान॥'

(५) कुछ लोग इस तापस को स्वयं गोसाईं तुलसीदास मानते हैं। यमुना के दक्षिण कूल में राजापुर बसा है। जब भगवान् रामचंद्रजी वहाँ पहुँचे और—

सुनत तीर वासी नरनारी।
धाए निज निज काज बिसारी।

तो अपने निवासस्थान के इन लोगों के दौड़कर मिलते समय गोस्वामीजी ध्यानावस्थित हो गए और स्वयं भी मन से, अपनी जन्मभूमि में, यमुना तट पर पहुँच गए। ऐसी अवस्था में जिस प्रकरण को छोड़कर गोसाईं जी प्रभु से (ध्यान में) मिलने गए थे, उसका यथातथ्य वर्णन हनुमान्जी ने लिख दिया, 'ताको गोसाईं जी ने नहीं मिटाया ताते ग्रंथ में रहि गया है।'[1]

इस तापस प्रकरण के अप्रासंगिक होने में तो कोई संदेह ही नहीं तथा उपर्युक्त पाँचवें अनुमान के अनुसार यह गोस्वामीजी के हाथ का लेख भी नहीं। अतः इस अंश को निःसंकोच निकाल सकते हैं।

चाहे राजापुर की प्रति में गृहीत होने के कारण अथवा उस बीच की प्रति में गृहीत होने के कारण जिससे स्वयं राजापुर की प्रति उतारी गई है, यद्यपि जहाँतक समझ में आता है राजापुर की प्रति गोस्वामी के हाथ की लिखी नहीं है[2],

---

१—देखिए, तुलसीकृत रामायण-अयोध्याकांड सटीक, टीकाकार हरिहर प्रसाद, प्रकाशक अविनाशीलाल, आर्य यंत्रालय, काशी, सं० १८२९,पृ० १०३।

२—इस संबंध में डाक्टर माताप्रसाद गुप्त का लेख देखिए, जिसमें इस विषय का विवेचन है—'हिंदुस्तानी', अक्तूबर, १९३८; पृ० ३९७।

'तापस प्रकरण' के ग्रहण करने से भी राजापुर की प्रति का गोस्वामीजी के हाथ का लिखा न होना सिद्ध होता है।

राजापुर की प्रति गोसाईंजी के हाथ की लिखी नहीं है, इसका एक प्रमाण यह भी है कि इसमें निम्नलिखित चौपाइयाँ कम हैं, जिनके अभाव में कथा-प्रसंग का तारतम्य नहीं बनता। सभी अन्य प्राचीन प्रामाणिक पोथियों में ये अर्धालियाँ हैं, राजापुर की प्रति में नहीं हैं—

१–सकल सुकृत मूरति नरनाहू। राम सुजस सुनि अतिहि उछाहू ॥२।१।२

२–प्रमुदित मोहिं कहेउ गुरु आजू। रामहि राय देहु जुवराजू ॥२।४।३

३–कीन्हेसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू। फिरि न नवै जिमि उकठि कुकाठू ॥२।१९

४–सहज सनेह बरनि नहिं जाई। पूँछी कुसल निकट बैठाई ॥२।८७।४

तथापि यह 'तापस प्रकरण' सभी प्रामाणिक प्रतियों में अपना लिया गया है। भाषा भी गोसाईं जी की भाषा से मिलती-जुलती है। और, इतने दिनों से प्रायः सभी प्रामाणिक कही जानेवाली प्रतियों में भी गृहीत होने कारण अब तो यह प्रकरण केवल प्राचीनता के बल पर चल रहा है।

पर यह बात नहीं कि कोई ऐसी पोथी ही नहीं जिसमें यह प्रकरण न हो। हस्तलिखित कोई प्राचीन पोथी तो अभी नहीं मिली पर ऐसी प्राचीन छपी पोथियाँ, जो हस्तलिखित की प्रामाणिकता रखती हैं, अवश्य देखने में आती हैं जिनमें यह प्रकरण नहीं है। जिन प्राचीन छपी पोथियों में यह प्रकरण नहीं है वे अवश्य ही प्रामाणिक हस्तलिखित पोथियों पर अवलंबित हैं।

निम्नलिखित पोथियों में तापस प्रकरण' नहीं है—

१. सं० १६०५ वि० छपी पोथी जिसे आगरे के पं० बद्रीलाल ने रामघाट, काशी के काश्मीरी यंत्रालय में छपवाया था। (अयोध्याकांड पृ० ६१)

२. सं० १६२० वि० की छपी पोथी जिसे श्री श्यामसुंदरदास सेन ने बड़ी बाजार, कलकत्ता के सुधावर्षण यंत्रालय में छपवाया था। (अ० १६)

३. सं० १६२६ वि० (१८६६ ई०) की छपी पोथी जिसे पं० रामजसन मिश्र ने लाजरस मेडिकल हाल प्रेस, काशी में छपवाया था। (अ० १५६)

४. सं० १६३० वि० (अक्तूबर १८७३ ई०) की छपी पोथी जिसे मुंशी नवलकिशोर ने लखनऊ यंत्रालय में छपवाया था। (अ० २०१)

५. सं० १६४० वि० की छपी पोथी जिसे शिवचरन ने भदैनी काशी के दिवाकर छापेखाने में छपवाया था। (अ० ५०)

५–राम सनेह सुधा जनु पागे। लोग बियोग विषम विष दागे ॥२।१८३।१

६–कह गुरु बादि छोभ छल छाँड़ू। इहाँ कपट कर होइहि भाँड़ू ॥२।२१७।

७–……………………। अरध तजहिं बुध सरबस जाता।
तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई। फेरिय लषन सहित रघुराई ॥
सुनि सुबचन हरषे दोउ भ्राता। …………………… ॥

८–…………………… । जनु महि करत जनक पहुनाई ॥
तब सब लोग नहाइ नहाई। ……………………२।२७८।५

९–……………………। रिषि धरि धीर धीर जनक पहिं आए।
राम बचन गुरु नृपहिं सुनाए। …………………… २।२९०।५।

६. सं० १६४१ वि० (अप्रैल १८८४ ई०) की छपी पोथी जिसे मुंशी नवलकिशोर ने अपने कानपुर यंत्रालय में छपवाया था। (अ० ६७)

७. सं० १६४५ वि० की छपी पोथी जिसे बापू हरसेठ देवलकर ने बंबई में अपने छापेखाने में छपवाया था। (अ० ५७)

८. सं० १६४८ वि० (१८६१ ई०) का छपा ग्राउस का अँगरेजी अनुवाद जिसे उन्होंने सेमुअल के यूनियन प्रेस, कानपुर में छपवाया था। (अ० ६३)

६. सं० १६५० वि० (१८६३ ई०) की छपी पोथी जिसे पं० गंगाराम मिश्र संगर ब्राह्मण कपूरथला ने मुंशी नवलकिशोर प्रेस,लखनऊ में छपवाया। (अ० २०२)

१०. सं० १६७० वि० (१६१३ ई०) की छपी पोथी जिसे श्रीमंत यादव शंकर जामदार ने मराठी अनुवाद सहित पूना के वैद्यक पत्रिका छापेखाने में छपवाया। (अ० ३८३)

११. सं० १६८७ वि० की छपी पोथी जिसे श्री रामदास गौड़ ने हिंदी पुस्तक एजेंसी कलकत्ता से छपवाया था। (अ० २१२)

१२. सं० १६६२ वि० (१६३५ ई०) की छपी पोथी (द्वितीय संस्करण) जिसे बाबा हरीदास ने लाला गौरीशंकर साह द्वारा शुक्ला प्रिंटिंग वर्क्स लखनऊ में छपवाया था। (अ०२८८)

१३. एक छपी पोथी जिसे पं० हरिप्रकाश भागीरथ ने निर्णयसागर प्रेस, बंबई से छपवाया था। (अ० ६१)

इन भिन्न भिन्न स्थानों से प्रकाशित पोथियों को देखकर यह निश्चय-पूर्वक कहा जा सकता है कि प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की एक शाखा तो अवश्य ही ऐसी रही है जिसमें तापस प्रकरण को स्थान नहीं था। इस अंश के प्रक्षिप्त मानने के पक्ष में निम्नलिखित तर्क भी उल्लेखनीय हैं—

क—यह प्रकरण सर्वथा अप्रासंगिक और असंगत है।

ख—किसी पौराणिक कथा से इसकी पुष्टि नहीं होती।

ग—संपूर्ण रामचरित मानस की ग्रंथसंख्या मिलाते समय इसको ग्रहण करने से प्रामाणिक प्रतियों की ग्रंथसंख्या में अंतर पड़ता है।

ग्राउस साहब का मत है कि या तो इसे स्वयं गोस्वामी जी ने बाद को जोड़ा हो या पहले लिखा हो और बाद को काट दिया हो, अथवा गोस्वामी

तथापि यह 'तापस प्रकरण' सभी प्रामाणिक प्रतियों में अपना लिया गया है। भाषा भी गोसाईं जी की भाषा से मिलती-जुलती है। और, इतने दिनों से प्रायः सभी प्रामाणिक कही जानेवाली प्रतियों में भी गृहीत होने कारण अब तो यह प्रकरण केवल प्राचीनता के बल पर चल रहा है।

पर यह बात नहीं कि कोई ऐसी पोथी ही नहीं जिसमें यह प्रकरण न हो। हस्तलिखित कोई प्राचीन पोथी तो अभी नहीं मिली पर ऐसी प्राचीन छपी पोथियाँ, जो हस्तलिखित की प्रामाणिकता रखती हैं, अवश्य देखने में आती हैं जिनमें यह प्रकरण नहीं है। जिन प्राचीन छपी पोथियों में यह प्रकरण नहीं है वे अवश्य ही प्रामाणिक हस्तलिखित पोथियों पर अवलंबित हैं।

निम्नलिखित पोथियों में तापस प्रकरण' नहीं है—

१. सं० १९०५ वि० छपी पोथी जिसे आगरे के पं० बद्रीलाल ने रामघाट, काशी के काश्मीरी यंत्रालय में छपवाया था। (अयोध्याकांड पृ० ६१)

२. सं० १९२० वि० की छपी पोथी जिसे श्री श्यामसुंदरदास सेन ने बड़ी बाजार, कलकत्ता के सुधावर्षण यंत्रालय में छपवाया था। (अ० १९)

३. सं० १९२६ वि० (१८६९ ई०) की छपी पोथी जिसे पं० रामजसन मिश्र ने लाजरस मेडिकल हाल प्रेस, काशी में छपवाया था। (अ० १५६)

४. सं० १९३० वि० (अक्तूबर १८७३ ई०) की छपी पोथी जिसे मुंशी नवलकिशोर ने लखनऊ यंत्रालय में छपवाया था। (अ० २०१)

५. सं० १९४० वि० की छपी पोथी जिसे शिवचरन ने भदैनी काशी के दिवाकर छापेखाने में छपवाया था। (अ० ५०)

५—राम सनेह सुधा जनु पागे। लोग बियोग बिषम बिष दागे ॥२।१८३।१

६—कह गुरु बादि छोभ छल छाँडू। इहाँ कपट कर होइहि भाँडू ॥२।२१७।

७—…………………। अरध तजहिं बुध सरबस जाता।
तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई। फेरिय लखन सहित रघुराई ॥
सुनि सुबचन हरषे दोउ भ्राता।………………… ॥

८—………………… । जनु महि करत जनक पहुनाई ॥
तब सब लोग नहाइ नहाई।…………………२।२७८।५

९—……………। रिषि धरि धीर धीर जनक पहिं आए।
राम बचन गुरुनृपहिं सुनाए।……………… २।२९०।५।

६. सं० १६४१ वि० (अप्रैल १८८४ ई०) की छपी पोथी जिसे मुंशी नवलकिशोर ने अपने कानपुर यंत्रालय में छपवाया था। (अ० ६७)

७. सं० १६४५ वि० की छपी पोथी जिसे बापू हरसेठ देवलकर ने बंबई में अपने छापेखाने में छपवाया था। (अ० ५७)

८. सं० १६४८ वि० (१८६१ ई०) का छपा ग्राउस का अँगरेजी अनुवाद जिसे उन्होंने सेमुअल के यूनियन प्रेस, कानपुर में छपवाया था। (अ० ६३)

६. सं० १६५० वि० (१८६३ ई०) की छपी पोथी जिसे पं० गंगाराम मिश्र संगर ब्राह्मण कपूरथला ने मुंशी नवलकिशोर प्रेस,लखनऊ में छपवाया। (अ० २०२)

१०. सं० १६७० वि० (१६१३ ई०) की छपी पोथी जिसे श्रीमंत यादव शंकर जामदार ने मराठी अनुवाद सहित पूना के वैद्यक पत्रिका छापेखाने में छपवाया। (अ० ३८३)

११. सं० १६८७ वि० की छपी पोथी जिसे श्री रामदास गौड़ ने हिंदी पुस्तक एजेंसी कलकत्ता से छपवाया था। (अ० २१२)

१२. सं० १६६२ वि० (१६३५ ई०) की छपी पोथी (द्वितीय संस्करण) जिसे बाबा हरीदास ने लाला गौरीशंकर साह द्वारा शुक्ला प्रिंटिंग वर्क्स लखनऊ में छपवाया था। (अ०२८८)

१३. एक छपी पोथी जिसे पं० हरिप्रकाश भागीरथ ने निर्णयसागर प्रेस, बंबई से छपवाया था। (अ० ६१)

इन भिन्न भिन्न स्थानों से प्रकाशित पोथियों को देखकर यह निश्चय-पूर्वक कहा जा सकता है कि प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की एक शाखा तो अवश्य ही ऐसी रही है जिसमें तापस प्रकरण को स्थान नहीं था। इस अंश के प्रक्षिप्त मानने के पक्ष में निम्नलिखित तर्क भी उल्लेखनीय हैं—

क–यह प्रकरण सर्वथा अप्रासंगिक और असंगत है।

ख–किसी पौराणिक कथा से इसकी पुष्टि नहीं होती।

ग–संपूर्ण रामचरित मानस की ग्रंथसंख्या मिलाते समय इसको ग्रहण करने से प्रामाणिक प्रतियों की ग्रंथसंख्या में अंतर पड़ता है।

ग्राउस साहब का मत है कि या तो इसे स्वयं गोस्वामी जी ने बाद को जोड़ा हो या पहले लिखा हो और बाद को काट दिया हो, अथवा गोस्वामी

जी के बाद किसी भक्त ने क्षेपक रूप से इसकी रचना की हो। इस अंतवाली उपपत्ति के पक्ष में निम्नलिखित बातें ध्यान देने योग्य हैं—

१—तापस प्रकरण पूरे एक दोहे का है। इसमें एक दोहा और आठ अर्धालियाँ हैं। यह २।१०६।६ के बाद और २।११०।७ के पहले घुसा है। सभी प्रामाणिक प्रतियों के अनुसार ग्रंथसंख्या मिलान करने पर विदित होगा कि अयोध्याकांड में 'तापस प्रकरण' को लेकर ३२६ दोहे है। पर जितनी भी प्रामाणिक प्रतियाँ हैं—सं० १७०४ की, सं० १७२१ की, सं० १७६२ की, छक्कनलाल की तथा भागवतदास की—सभी में अंतिम दोहे की संख्या ३२५ ही मिलती है और इन सब प्रतियों में दोहा संख्या १६६ के आगे दोहे की संख्या नहीं लगाई गई है। यह कार्यवाही 'तापस प्रकरण' के आगे की गई है, पहले नहीं। यह देखते हुए कि 'तापस प्रकरण' का एक दोहा पहले बढ़ा है। लोगों ने दोहा संख्या १६६ के आगे दोहा संख्या नहीं लगाई, जिसमें अंत में दोहासंख्या ३२५ ही उतरे।

२—अयोध्या कांड में आठ अर्धालियों के बाद एक दोहा और हर पचीसवें दोहे के स्थान पर एक छंद और एक सोरठा है। ऐसा क्रम संपूर्ण अयोध्याकांड में दीख पड़ता है। पर 'तापस प्रकरण' के आ जाने से इस क्रम में व्यतिक्रम हो जाता है। 'तापस प्रकरण' के पहले तो उपर्युक्त नियम ठीक चला पर उसके आगे आनेवाला छंद, जो सं० १२५ पर पड़ना चाहिए था, सं० १२६ पर आता है।

३—अयोध्याकांड का विषय विभाजन[१] किया जाय तो प्रकट होगा कि अंत के १४६ दोहों में 'भरतचरित', मध्य के १४ दोहों में 'दशरथमरण' तथा प्रथम १४५ दोहों में 'श्रीरामचरित' कहा गया है। यह देखकर कि अयोध्याकांड में 'भरतचरित' १४६ दोहों में है और 'श्रीरामचरित' केवल १४५ दोहों में, भावुक भक्तों ने एक दोहा और जोड़कर इसे पूरा कर दिया, जिससे 'भरतचरित' से कम न रह जाय। एक दोहा जोड़ तो दिया, पर उन्होंने गोसाईंजी का आशय यह न समझा कि अयोध्याकांड में 'भरतचरित' की विशेता है[२]। अयोध्याकांडवाली फलश्रुति में भी भरत ही की विशेषता है।

१—देखिए रामचरितमानस (विजयानंद त्रिपाठी), ३७५।

२—भरत की महिमा ऐसी ही है—

भरत अमित महिमा सुनु रानी। जानहि राम न सकहिं बखानी॥

रा० २।२८८।२

सिय राम प्रेम पियूष पूरन होत जनमु न भरत को।
मुनि मन अगम जम नियम सम दम विषम व्रत आचरत को।
दुख दाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिस अपहरत को।
कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि राम सनमुख करत को।

भरत-चरित करि नेम तुलसी जो सादर सुनहिं।
सीय राम पद प्रेम अवसि होइ भव-रस-बिरति ॥[1]

४—इस तापस का गोस्वामी तुलसीदास होना सबसे अधिक संभावित है, क्योंकि अन्य कोई—अग्नि, चित्रकूट, अगस्त्य-शिष्य—मानने में उसकी पुष्टि अन्य किसी पौराणिक कथा से नहीं होती। पर तापस को गोसाईं जी मानने में खटकनेवाली बात यह है कि (तापस-वेष में) गोसाईं जी सबसे—राम से, सीता से, लक्ष्मण से—तो स्वयं मिले और निषादराज से, जो इन लोगों के साथ थे, इस प्रकार मिले कि पहले निषाद ने दंडवत् किया, तब राम-सनेही जानकर गोसाईं जी उनसे मिले—

'कीन्ह निषाद दंडवत तेही। मिलेउ मुदित लखि राम सनेही।'

इस अर्धाली से यह लक्षित होता है कि यदि निषाद रामसनेही न होता तो केवल रामचंद्रजी के साथ होने से गोस्वामीजी का ब्राह्मण तनु नीच निषाद को स्पर्श करने में सकुचता। प्रचलित सामाजिक भावना भी यही हो सकती है। पर ऐसा करना तुलसी के स्वभाव के सर्वथा प्रतिकूल है—

निखिल विश्व को 'बदर' तथा 'आमलक' वत् देखनेवाले कुलपूज्य गुरु वशिष्ठजी की मति भी भरतमहिमा का अवगाहन न कर सकी थी—

भरत महा महिमा जलरासी। मुनिमति तीर ठाढ़ि अबला सी॥
गा चह पार जतन बहु हेरा। पावति नाव न बोहित बेरा॥२।२५५।२

इसके अतिरिक्त भरतचरित का प्रसंग आरण्यकांड के ६ दोहे तक चला गया है; अतएव अयोध्याकांड की प्राचीन प्रामाणिक पोथियों में इति नहीं लगाई गई है।

१—दे० रामचरितमानस, पृ० ३२१।

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।
बंदौ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि॥
देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्व।
बंदौ किन्नर रजनिचर कृपा करहु अब सर्व॥

आकर चारि लाख चौरासी। जाति जीव जल नभ थल बासी।
सीयराममय सब जग जानी। करौ प्रनाम जोरि जुग पानी॥[1]

तुलसी जाके बदन नें धोखेहु निकसत राम।
ताके पग की पगतरी मेरे तनु को चाम॥[2]
आपु आपुने ते अधिक जेहि प्रिय सीता राम।
ताके पग की पानही तुलसी के तनु चाम॥[3]

अब तनिक सोचने की बात है कि जिसका स्वाभिमान यह कहकर बिलकुल गल गया था—वह निषाद से मिलने के समय पहले उससे दंडवत् कराने के लिये कब जीवित रहा होगा। इसके अतिरिक्त 'तेजपुंज', 'मिलेउ मुदित' प्रभृति अहंमन्यतासूचक शब्द गोसाईंजी अपने लिये न लिखते।

(५) इस प्रकरण के काव्यांग पर विचार करने से प्रकट होगा कि

राम सप्रेम पुलकि उर लावा।
परम रंक जनु पारस पावा।

में प्रक्रमभंग दोष है। 'रंक' और 'पारस' क्रमशः राम और तापस दोनों पक्ष में लग सकता है। इस अर्धाली का सहज स्वाभाविक अर्थ करने पर 'रंक' राम पक्ष में शब्दसंगति के अनुकूल पड़ता है, पर भगवान् को कभी दरिद्र की उपमा नहीं दी जा सकती। यदि कहें कि भगवान् भक्त के प्रेमवश उससे मिलने के लिये ऐसे लालायित हो रहे थे जैसे दरिद्र दाम के लिये होता है तो इसमें बड़ा भारी दोष है। भक्त 'पारस' कदापि नहीं हो सकता; यह गुण तो परमात्मा का ही है, जो 'गुन अवगुन नहिं चितवत कंचन करत खरो।' गुसाईं जी ने अन्यत्र भी सर्वत्र भक्त को वा भगवान् के इच्छुक को ही दरिद्र और रंक की उपमा दी है और यही उचित है—

१—दे० रामचरितमानस, पृ० ७

२—तुलसी ग्रंथावली भाग २, पृ० १३।

३—तुलसी ग्रन्थावली भाग २, पृ० १०८

सुख बिदेहकर बरनि न जाई। जनम दरिद्र मनहुँ निधि पाई ॥१।३०७।४

दिए दान बिप्रन्ह बिपुल पूजि गनेस पुरारि।
प्रमुदित परम दरिद्र जनु पाइ पदारथ चारि॥ १।३४५

प्रेम प्रमोद न कछु कहि जाई। रंक धनद पदबी जनु पाई ॥२।५१।५
बरनि न जाइ दसा तिन्हकेरी। लहि जनु रंकन्हि सुरमनि ढेरी ॥२।११३।५

भईं मुदित सब ग्रामबधूटी। रंकन्हि राय रासि जनु लूटी ॥२।११६।८
कंद मूल फल भरि भरि दोना। चले रंक जनु लूटन सोना ॥२।१३४।२
हरषहिं निरषि राम पद अंका। मानहु पारस पाएउ रंका ॥२।२३७।३
गहि पद लगे सुमित्रा अंका। जनु संपति भेंटो अति रंका ॥२।२४४।३

कामिहिं नारि पियारि जिमि लोभिहिं जिमि प्रिय दाम।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहिं राम ॥७।१३०

भगवान् दरिद्र क्यों होने लगे? यह तो 'काम, कामी' का ही धर्म है; चाहे वह 'काम' भगवान् के लिए हो चाहे किसी सांसारिक भोग के लिए।

आगे एक परिशिष्ट में काशिराज की प्रति से रामचरितमानस के प्राचीन क्षेपकों को क्रमानुसार एकत्र उपस्थित किया जाता है। उन अंशों के क्षेपक मानने का मुख्य कारण यह है कि बाद की प्रतियों—सं० १७२१ तथा सं० १७६२ की प्रतियों—में उनका अभाव है। भागवतदासजी ने भी उन्हें ग्रहण नहीं किया है और जिन भक्त परंपराओं में रामचरितमानस की प्रामाणिक वाचना चली आती है, उनमें भी उनका अभाव है। उन अंशों में से केवल 'तापस प्रकरण' ही ऐसा है जो कतिपय प्रामाणिक प्रतियों में गृहीत है।

परिशिष्ट

(काशिराज की प्रति के क्षेपक)

बालकांड

१।३६१।४ के आगे—

सुनु गाइ कहौं गिरीस कन्या धन्य अधिकारी सही।
नित प्रीति नूतन सुनत हरिगुन भक्ति अनुपम तै लही॥

रघुवीर पद अनुराग जल लोभागि बेगि बुझावई ।
येह जानि तुलसीदास मन क्रम बचन हरि गुन गावई ।।
कठिन काल मल ग्रसित मन साधन कछू न होइ !
यह विचारि बिस्वास करि हरि सुमिरै बुधि सोइ ।।
मन हरिपद अनुरागु, करहि त्यागु नाना कपट ।
महा मोह निसि जागु, सोवत बीते काल बहु ।।

अयोध्याकांड

२।१०९।६ के आगे—

तेहि अवसर एकु तापसु आवा । तेज पुंज लघुबयस सुहावा ।।
कवि अलखित गति बेषु बिरागी । मन क्रम बचन राम अनुरागी ।।
सजल नयन तन पुलकि निज, इष्ट देउ पहिचानि ।
परेउ दंड जिमि धरनितल दसा न जाइ बषानि ।।
राम सप्रेम पुलकि उर लावा । परम रंक जनु पारसु पावा ।।
मनहु प्रेम परमारथु दोऊ । मिलत धरें तनु कह सबु कोऊ ।।
बहुरि लषन पायन्ह सोइ लागा । लीन्ह उठाइ उमगि अनुरागा ।।
पुनि सिय चरन धूरि धरि सीसा । जननि जानि सिसु दीन्हि असीसा ।।
कीन्ह निषाद दंडवत तेही । मिलेउ मुदित लषि राम सनेही ।।
पिअत नयन पुट रूपु पियूषा । मुदित सु असनु पाइ जिमि भूषा ।।

आरण्यकांड

३।०।८ के आगे—

बिनु पराध प्रभु हतइ न काहू । अवसर परे ग्रसइ ससि राहू ।।
जब प्रभु लीन्ह सीक धनु बाना । क्रोध जानि भा अनल समाना ।।

३।१।८ के आगे—

जिमि जिमि भाजत सक्रसुत व्याकुल अति दुख दीन ।।
तिमि तिमि धावत राम सर पाछे परम प्रवीन ।।
बचहिं उरग बरु ग्रसे खगेसा । रघुपति सर छुटि बचब अँदेसा ।।

३।१।६ के आगे—

दूरहि ते कहि प्रभु प्रभुताई । भजे जात बहु बिधि समुझाई ।

३।४।के आगे—

जनम जनम प्रभु तव पद कंजा। बाढ़ौ प्रेम चकोर जिमि चंद।
देखि राम मुनि बिनय प्रनामा। बिबिध भाँति पाएउ बिश्रामा।

३।४।१ के आगे—

जे सिय सकल लोक सुखदाता। अखिल लोक ब्रह्मांड कि माता।
तेउपाइ मुनिबर मुनि भामिनि। सुखी भई कुमुदिनि जिमि जामिनि।

३।४।३ के आगे—

जाहि निरखि दुख दूरि पराहीं। गरुड जानि जिमि पन्नग जाहीं।
ऐसे बसन बिचित्र सुठि दिए सीय कहुँ आनि।
सनमानी प्रिय बचन कहि प्रीति न जाइ बखानि॥

३।४।१२ के आगे—

उत्तम मध्यम नीच लघु सकल कहउ समझाइ।
आगे सुनहिं ते भव तरहिं सुनहु सीय चित लाइ॥

३।६ के आगे—

मुनिहु कि अस्तुति कीन्ह प्रभु दीन्ह सुभग बरदान।
सुमन वृष्टि नभ संकुल जय जय कृपानिधान।।

३।६।५ के आगे—

आश्रम बिपुल देखि मग माहीं। देवसदन तेहि पटतर नाहीं।
बहु तड़ाग सुंदर अवराई। भाँति माँति सब मुनिन्ह लगाई।
तेहि दिन तहँ प्रभु कीन्ह निवासा। सकत्र मुनिन्ह मिलि दीन्ह सुपासा
आनि सुआसन मुदित मन पूजि पहुनई कीन्ह।
कंद मूल फल अमिअ सम आनि राम कहुँ दीन्न॥
अनुज सीय सह भोजन कीन्हा। जो जेहि भाव सुभग बर दीन्हा॥
होत प्रभात मुनिन्ह सिरु नावा। आसिरबाद सबहि सन पावा॥
सुमिरि उमा सिव सिद्धि गनेसा। पुनि प्रभु चले सुनहु उरगेसा।
बन अनेक सुंदर गिरि नाना। नाघत चले जाहिं भगवाना॥

३।६।५$\frac{1}{2}$ के आगे—

........................। गर्जत घोर कठोर रिसाता।
रूप भयंकर मानहु काला। बेगवंत धाएउ जिमि ब्याला।
गगन देव मुनि किन्नर नाना। तेहि छन हृदय हारि कछु माना।
तुरतहि सो सीतहि लै चलेऊ। राम हृदय कछु बिस्मै भयेऊ।

समुझा हृदय कैकई करनी । कहा अनुज सन बहु बिधि बरनी ।
बहुरि लषन रघुबरहि प्रबोधा । पाँच बान छाँड़े करि क्रोधा ।

भये क्रुद्ध लषन संधानि धनु सर मारि तेहि व्याकुल कियो ।
पुनि उठा निसिचर राखि सीतहिं सूल लेइ छाड़त भयो ।
जनु कालदंड कराल धावा विकल सब खग मृग भए ।
धनु तानि श्री रघुवंश मनि पुनि मारि तन झर्झर किए ।
बहुरि एक सर मारा परा धरनि धुनि माथ ।
उठेउ प्रबल पुनि गरजेउ चलेउ जहाँ रघुनाथ ।।

ऐसेइ कहत निसाचर धावा । अब नहिं बचहु तुम्हहिं मैं खावा ।
आव प्रबल एहि बिधि जनु भूधर । होइहि काह कहहिं ब्याकुल सुर ।
तासु तेज सत मरुत समाना । टूटहिं तरु उड़ाहिं पाषाना ।
जीव जंतु जहँ लगि रहे जेते । ब्याकुल भाजि चले तहँ तेते ।
उरग समान जोरि सर साता । ....

३।६।७ के आगे —

तासु अस्थि गाड़ेउ प्रभु धरनी । देवन्ह मुदित दुंदुभी हनी ।
सीता आइ चरन लपटानी । अनुज सहित तब चले भवानी ।
इहाँ सक्र जहँ मुनि सरभंगा । आएउ सकल देव निज संगा ।
गए कहन प्रभु देन सिखावन । दिसि बल भेद वसत जहँ रावन ।

सुरपति संसय तम सघन रघुपति तेज दिनेस ।
रावन जीवन निसि समन बीते छुटहिं कलेस ।।

सुनासीर प्रभु तेहि छन देखा । तेजनिधान सुभ्र अति वेषा ।
तुरग चारि बल मरुत समाना । रथ रबि सम नहिं जाइ बखाना ।
छिति न परस अंतरहित रहई । स्वेत छत्र चामर सिर ढरई ।
अनुजहिं प्रियहिं कहा समुझाई । सुरपति महिमा गुन प्रभुताई ।
जेहि कारन बासव तहँ आए । सो कछु बचन कहइ नहिं पाए ।
बीचहिं सुनि आइब प्रभु केरा । कहि सारथहि तुरत रथ फेरा ।
दूरिहि ते करि प्रभुहि प्रनामा । हरषि सुरेस गएउ निज धामा ।

३।२क।८ के आगे—

सोउ प्रिय अति पातकी जिन्ह कबहुँ प्रभु सुमिरन करयो ।
ते आजु मैं निज नयन देखिहौं पुरित पुलकित हिय भरयो ।

जे पद सरोज अनेक मुनि कर ध्यान कबहुँक आवहीं।
ते राम श्रीरघुवंश मनि प्रभु प्रेम तें सुख पावहीं।
पन्नगारि सुनु प्रेम सम भजन न दूसर आन।
यह बिचारि मुनि पुनि पुनि करत राम गुन गान॥

३।३क।१६ के आगे—

राम सुसाहेब संत प्रिय सेवक दुख दारिद दवन।
मुनि सन प्रभु कह आइ उठु उठु द्विज मम प्रान सम॥

३।४क।२० के आगे—

माया बस जग जीव रहहि बिबस संतत मगन।
तिमि लागहु मोहिं प्रीय करुनाकर सुंदर सुखद॥

३।४क।२१ के आगे—

रामभगति तजि चह कल्याना। सो नर अधम सृगाल समाना।

३।५क।१ के आगे—

मुनि प्रनाम करि कह कर जोरी। सुनहु नाथ कछु बिनती मोरी।

३।५क।५ के आगे—

आश्रम देखि महा सुचि सुंदर। सरित सरोवर हरषित भूधर।
बनचर जलचर जीव जहाँ ते। बैर न करहिं प्रीति सबहीं ते।

तरुवर बिबिध बिहंगमय बोलत बिबिध प्रकार।
बसहिं सिद्ध मुनि तप करहिं महिमा गुन आगार।

३।६क। के आगे—

पाइ सुथल जल हरषित मीना। पारस पाइ सुखी जिमि दीना।
प्रभुहिं निरखि सुख भा एहि भाँती। चातक जिमि पाए जल स्वाती।

३।६क।३ के आगे—

द्विजद्रोही न बचहिं मुनिराई। जिमि पंकज बन हिमि रितु पाई।

३।६क।५ के आगे—

भृकुटी निरखत नाथ तव रहत सदा पद कमल तर।
जिन डारे निज उदर महँ बिबिध बिधाता सिद्ध हर।
अति कराल सब पर जग जाना। औरो कहौ सुनिअ भगवाना।

३।६क।१३ के आगे—

जेहि जीव पर तव माया रहत तुम्हहिं संतत बिवस।
तिन्हहु कि महिम न जान सेवक तुम्ह कहँ प्रान प्रिय।

३।६क।१५ के आगे—

गोदावरी नदी तहँ बहई। चारिहु जुग प्रसिद्ध सो अहई।

३।६क।१८ के आगे—

दिब्य लता द्रुम प्रभुहिं मन भाए। निरखि राम तेउ भए सुहाए।
लषन राम सिय चरन निहारी। कानन अब गा भा सुखकारी।

३।१०।१ के आगे—

नाथ सुने गत मम संदेहा। भएउ ज्ञान उपजेउ नव नेहा।
अनुज बचन सुनि प्रभु मन भाए। हरषि राम निज हृदय लगाए।

३।१०।६ के आगे—

अधम निसाचरि कुटिल अति चली करन उपहास।
सुन खगेस भावी प्रबल भा चह निसिचर नास।

३।१०।१४ के आगे—

केहरि सम नहिं करिबर लवा कि बाज समान।
प्रभु सेवक इमि जानहु मानहु वचन प्रमान।

३।१०।१६ के आगे—

बिथुरे केस रदन बिकराला। भृकुटी कुटिल करन लगि गाला।

३।१०।२० के आगे—

अनुज राम मन की गति जानी। उठे रिसाइ तब सुनहु भवानी।

३।११।१ के आगे—

स्याम घटा देखत घन केरी। तहँ वासव धनु मनहु उयेरी।

३।११।३के आगे—

चौदह सहस सुभट सँग लीन्हे। जिन्ह सपनेहु रन पीठि न दीन्हे।

३।११।६के आगे—

निज निज बल सब मिलि कहहिं एकहिं एक सुनाइ।
बाजन लाग जुझाऊ हरष न हृदय समाइ॥

३।११।१०के आगे—

कोउ कह सुनहु सत्य हम कहहीं। कानन फिरहिं बीर कोउ अहहीं।
एकै कहा मष्ट भै रहहू। खर के आगे अस जनि कहहू।
बहु विधि कहत बचन रनधीरा। आए सकल जहाँ रघुबीरा।

३।१२के आगे—

घेरि रहे निसिचर समुदाई। दंडक खग मृग चले पराई।

३।१२।७के आगे—

भए काल बस मूढ़ सब जानहिं नहिं रघुबीर।
मसक फूँक कि मेरु डर सुनहु गरुड़ मतिधीर।।

३।१२।८के आगे—

आजु भयउ बड़ भाग हमारा। तोहरे प्रभु अस कीन्ह बिचारा।

३।१३।३के आगे—

एक एक को न सभार। करै तात भ्रात पुकार।
कोउ कहै खर का कीन्ह। जो जुद्ध इन्ह सन लीन्ह।
जाको बान अतिहि कराल। ग्रसै आइ मानहु काल।

३।१३।५के आगे—

उमा एक निज प्रभुहिं बस पुनि उनके बड़ भाग।
तरन चहहिं प्रभु सर लगे बिना जोग जप जाग।।

३।१५।८के आगे—

अति सुकुमारि पियारिं पटतर जोगु न आहि कोउ।
मैं मन दीख बिचारि जहाँ रहै तेहि सम न कोउ।।
अजहुँ जाइ देखब तुम्ह जबहीं। होइहहु बिकल तासु बस तबहीं।
जीवन मुक्त लोक बस ताके। दसमुख सुनु सुंदरि असि ताके।

३।१।१०के आगे—

बिनु पराध असि हाल हमारी। अपराधी किमि बचिहि सुरारी।

३।१५।१२के आगे—

भयेउ सोच मक नहिं बिश्रामा। बीतहिं पल मानउ सत जामा।

३।१६।७के आगे—

रथ अनूप जोरे खर चारी। बेगवंत इमि जिम उरगारी।
छं०—उरगारि सम अति बेगु बरनत जाइ नहिं उपमा कहीं।

सिर छत्र सोभित स्यामघन जनु चँवर सेत बिराजहीं।
एहि भाँति नाघत सरित सैल अनेक बापी सोहहीं।
बन बाग उपवन बाटिका सुचि नगर मुनि मन मोहहीं।
बहु तड़ाग सुचि बिहग मृग बोलत बिबिध प्रकार।
एहि बिधि आएउ सिंधु तट सत जोजन बिस्तार॥

सुंदर जीव बिबिध बिधि जाती। करहिं कोलाहलदिन-अरु राती।
कूदहिं ते गर्जहिं घन नाईं। महाबली बल बरनि न जाई।
कनक बालु सुंदर सुखदाई। बैठहिं सकल जंतु तहँ जाई॥
तेहिपर दिव्य लता द्रुम लागे। जेहि देखत मुनि मन अनुरागे।
गुहा बिबिध बिधि रहहिं बनाई। बरनत सारद मति सकुचाई।
चाहिय जहाँ रिषिन्ह का बासा। तहाँ निसाचर करहिं निवासा।
दसमुख देखि सकल सकुचाने। जे जड़ जीव सजीव पराने॥

३।१९के आगे--

रा अस नाम सुनत दसकंधर। रहत प्रान नहिं मम उर अंतर।

३।२०के आगे--

सीता लषन सहित रघुराई। जेहि बन बसहिं मुनिन्ह सुखदाई।

३।२०।९के आगे--

अस कहि चले तहाँ प्रभु जहाँ कपट मृग नीच।
देव हरष बिसमउ बिबस चातक बरषा बीच॥

३।२१।४के आगे--

सौंपि गए मोहि रघुपति थाती। जौ तजि जाउँ तोष नहिं छाती
यह जिय जानि सुनहु मम माता। पूछत कहब कवनि मैं बाता॥

३।२१।५के आगे--

चहुँ दिसि रेख खँचाइ अहीसा। बारंबार नाइ पद सीसा।

३।२१।६के आगे--

चितवहिं लषन सीय फिरि कैसे। तजत बच्छ निज मातुहिं जैसे।
एक डर डरपत राम के दूसरि सीय अकेलि।
लषन तेज तन हत भयो जिमि डाढ़ी दव बेलि॥

३।२१।१०के आगे--

करि अनेक बिधि छल चतुराई। माँगेउ भीख दसानन जाई।
अतिथि जानि सिय कंद मूल फल। देन लगी तेहि कीन्ह बहुरि छल।

कह दसमुख सुनु सुंदरि बानी। बाँधी भीख न लेउँ सयानी।
बिधि मति बाम काल कठिनाई। रेख नाँघि सिय बाहर आई।
बिस्वरभरमि अघ-दल-दलनि करनि सकल सुर काज।
समुझि परी नहिं समय बंचक जती समाज।

३।२१।१५के आगे--

बायस कर चह खगपतिसमता। सिंधु समान होहिं किमि सरिता।
खरि कि होइ सुरधेनु समाना। जाहि भवन निज सुनु अज्ञाना।

३।२२।३के आगे--

कैकेइ के मन जो कछु रहेऊ। सो बिधि आजु मोहि दुख दयेऊ।
पंचवटी के खग मृग जाती। दुखी भए जलचर बहु भाँती।

३।२२।५ के आगे--

बहु बिधि करत बिलाप नभ लिए जात दससीस।
डरत न खल बर पाइ मल जो दीन्हेउ अज ईस॥

३।२२।७के आगे--

अहइ प्रथम तन मम बल नाहीं। तदपि जाइ देखौं बल ताही।

३।२२।१४के आगे--

मम भुजबल नहिं जानत आवत तपन सहाइ।
समर चढ़इ तो येहि हतौं जियत न निज थल जाइ॥

३।२२।१९के आगे--

दसमुख उठि कृत सर संधाना। गीध आइ काटेउ धनु बाना।

३।२२।२०के आगे--

जेहि रावन निज बस किए मुनिगन सिद्ध सुरेस।
तेहि रावन सन समर कर धीर बीर गिद्धेस॥
सुरत भए पुनि उठि सो धावा। मरै गीध सनमुख नहिं आवा।
कीन्हेसि बहु जब जुद्ध खगेसा। थकित भयेउ तब जरठ गिधेसा॥

३।२२।२२के आगे--

मन महँ गीध परम सुख माना। रामकाज मम लागेउ प्राना।

३।२३क के आगे--

उहाँ बिधाता मन अनुमाना। सुरपति बोलि मंत्र अस ठाना।
तात जनकतनया पहिं जाहू। सुधि न पाव जिमि निसिचरनाहू।

अस कहि बिधि सुंदर छबि आनी । सौंपि बहुरि बोले मृदु बानी ।
एहि भच्छन कृत छुधा न प्यासा । बरष सहस्र यह संसय नासा ।
सो प्रसाद लेइ आयसु पाई । चलेउ हृदय सुमिरत रघुराई ।
कछु बासव माया निज मोई । रच्छक रहे गए तहँ सोई ।
तदपि डरत सीता पहिं आएउ । करि प्रनाम निज नाम सुनाएउ ।
निश्चय जानि सुरेस सुजाना । पिता जनक दसरथ सम माना ।
करि परितोष दूरि करि सोका । हविष खवाइ गएउ निज लोका ।

३।२४।३के आगे—

अहह तात भल कीन्हेहु नाहीं । सीय बिना मम जीवन नाहीं ।
एहि ते कवनि बिपति बड़ि भाई । छाड़ेउ सीय काननहिं आई ॥

३।२४।६के आगे—

कानन रहेउ तड़ाग इव चक चकई सिय राम ।
रावन निसि बिछुरन भएउ सुख बीते चहुँ जाम ॥
पर दुख हरन सो कस दुख ताहीं । भा बिषाद तिन्हहूँ मन माहीं ।

३।२४।१५के आगे—

फनि मनिहीन मीन जिमि त्यागत शीतल बारि ।
तिमि ब्याकुल भए लषन तहँ रघुबर दसा निहारि ॥

३।२४।१७के आगे—

सर बर अमित नदी गिरि खोहा । बहु बिधि लषन राम तहँ जोहा ।
सोच हृदय कछु कहि नहिं आवा । टूट धनुष सर आगे पावा ।
कहुँ कहुँ सोनित देखिअ कैसे । सावन जल भर डाबर जैसे ।
कहत राम लछिमनहिं बुझाई । काहू जुद्ध कीन्ह एहि ठाईं ।

३।२६।६के आगे—

सब प्रकार तव भाग बड़ मम चरनन्हि अनुराग ।
तव महिमा जेहि उर बसिहि तासु परम जग भाग ॥
बचन सुनत सबरी हरषाई । पुनि बोले प्रभु गिरा सुहाई ॥

३।२६।१०$\frac{1}{2}$ के आगे—

................। मुनिवर विपुल रहे जहँ छाई ।
रिषि मतंग महिमा गुन भारी । जीव चराचर रहत सुखारी ।
वैर न कर काहू सन कोऊ । जा सन बैर प्रीति कर सोऊ ।

सिखर सुहावन कानन फूले । खग मृग जीव जंतु अनुकूले ।
करहु सफल श्रम सब कर जाई ।....................

किष्किंधाकांड

४।६।२६ के आगे—

सोइ रघुबीर हृदय महँ आनहु । मोहहि छोड़ि कहा मम मानहु ॥

४।७।१ के आगे—

बालि देखि सुग्रीवहि ठाढ़ा । हृदय क्रोध बहुबिधि पुनि बाढ़ा ।

४।१०।२ के आगे—

पुनि पुनि तासु सीस उर धरई । बदन बिलोकि हृदय मों हनई ।
मै पति तुम्हहिं बहुत समुझावा । कालबस्य कछु मनहि न आवा ।
अंगद कहँ कछु कहइ न पाएहु । बीचहि सुरपुर प्रान पठाएहु ॥

४।२६।८ के आगे—

जो रघुपति चरनन चित लावै । तेहि सम आन न धन्य कहावै ।

४।२७।३ के आगे—

जिमि जिमि मैं रवि निकट उड़ाऊँ । तिमि तिमि मैं बिकल होइ जाउँ ।

४।२७।६ के आगे—

यह कहि मुनि आश्रम निज गयऊ । तेहि छिन हृदय ज्ञान कछु भयऊ ।
सदा राम कर सुमिरन करऊँ । एहि बिधि मगु जोअत मै रहऊँ ।

४।२८।१ के आगे—

जो कछु करइ राम कर काजू । तेहि सम धन्य आन नहिं आजू ।

सुंदर कांड

५।०।६ के आगे—

सिंधु बचन उर आनि तुरत उठेउ मैनाक तब ।
कपि कहुँ कीन्ह प्रनाम पुलकित तनु कर जोरि कर ॥

लंका कांड

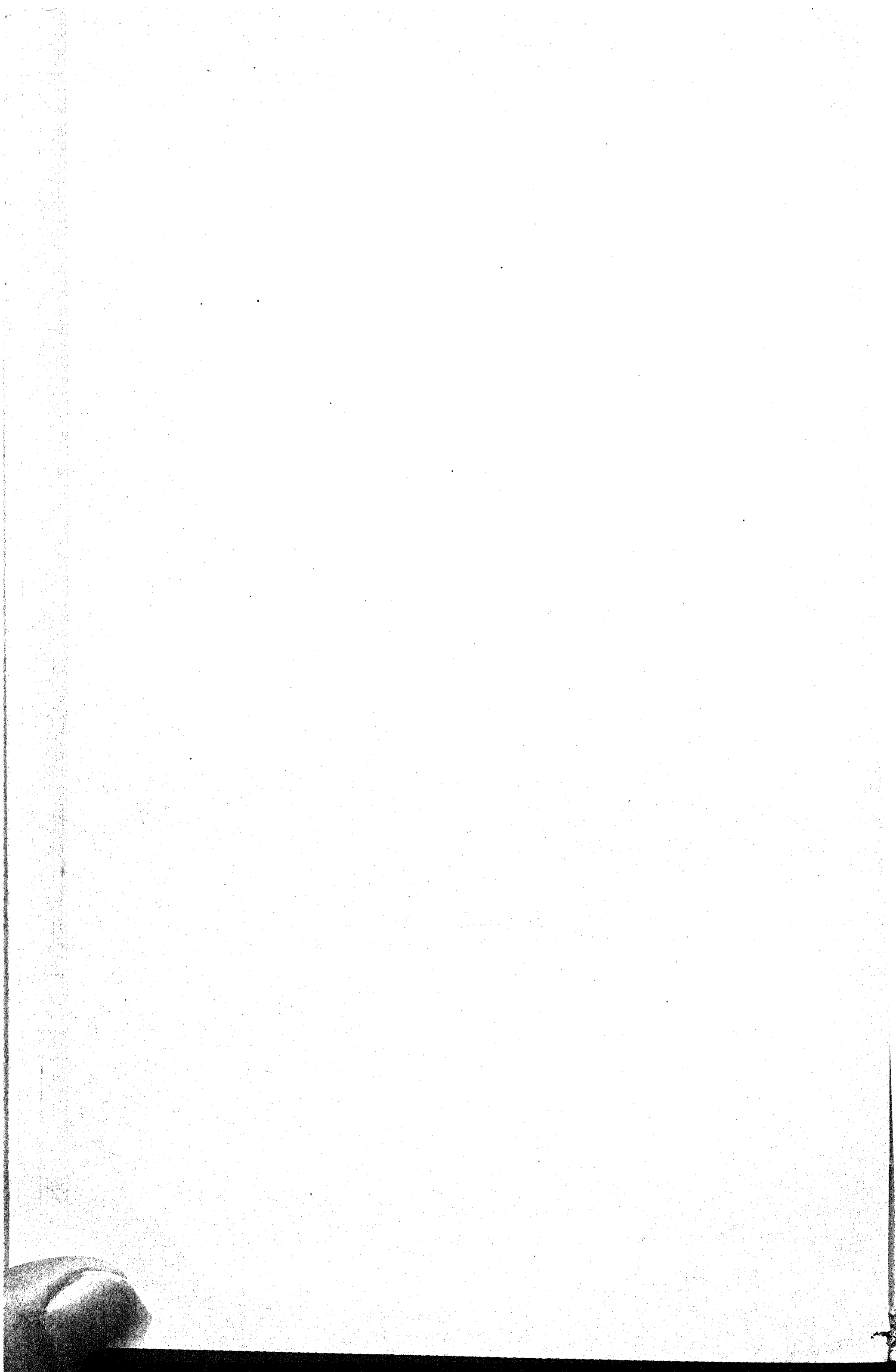
६।१०७।६ के आगे—

संग लिए त्रिजटा निसिचरी । चली राम पहिं सुमिरत हरी ॥

———

मूल रामचरितमानस की छंदसंख्या और विषयानुक्रमणी

[यह निबंध नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ४६, अंक १ (वैशाख, १९९८ वि.) में प्रकाशित हुआ था। पत्रिका के संपादकमंडल में सर्वश्री पं० केशव प्रसाद मिश्र, डा० वासुदेव शरण अग्रवाल, पं० पद्मनारायण आचार्य एवं श्री कृष्णानंद संपादक थे।]



रामचरितमानस को जैसे जैसे लोगों ने अपनाया वैसे वैसे उसे अपनी रुचि तथा योग्यता के अनुसार रूप भी दिया। कथाप्रेमियों ने छोड़ी गई कथाओं की पूर्ति में यदि क्षेपकों का समावेश किया तो पंडितों ने शब्दों के धातु रूप को शुद्ध किया। अर्थ खोलने के लिये किसी ने शब्द बदले तो चौपाइयों की संगति बैठाने के लिये किसी ने पूरी पोथी का नूतन संस्कार[1] कर डाला। इन सबके होते हुए भी रामचरितमानस अपने 'अरथ

---

१. (क) मैनपुर-निवासी लाला सुखदेवलाल ने अपने 'मानसहंसभूषण' में दोहों के बीच में आठ पंक्तियों का निर्वाह करने के लिये चतुर्थांश के लगभग मूल चौपाइयों को निकाल दिया और जहाँ मन में आया नवीन चौपाइयाँ जोड़ दीं। (देखिए ना० प्र० पत्रिका, वर्ष ४३, अंक ३, पृ० २९८)?

(ख) भारत-कलाभवन (काशी) में बालकांड की एक हस्तलिखित पोथी है जिसे सं० १९०८ भादों बदी १, वार मंगल को किसी लाला रामदीन कायथ ने लिखकर समाप्त किया था। इसमें ६४० पृष्ठ हैं और बीच बीच में चित्र भी हैं। इस पोथी में कथा का इतना विस्तार किया गया है कि शायद ही कोई पृष्ठ खुल जाय जिसमें गोसाईं जी की ही वाणी हो।

(ग) लाला श्यामलाल ने सं० १९८४ में नवलकिशोर प्रेस (लखनऊ) से 'बालकांड का नया जन्म' नाम की एक पुस्तक छपवाई थी। इसमें मनु-शतरूपा की कथा, राजा भानुप्रताप की कहानी, रावण का दिग्विजय, रामचंद्रजी का विराट् रूप दिखाना, सीता और रामचंद्रजी का फुलवारी में परस्पर देखना, लक्ष्मण और परशुराम का संवाद—ये कथाएँ निश्चयपूर्वक क्षेपक मानी गई हैं। (भूमिका)

लालाजी को अपनी सूझ का इतना भरोसा था कि उन्होंने ६ जनवरी १९२८ के वेंकटेश्वरसमाचार नामक पत्र में एक सूचना निकाली थी कि जो इसका उत्तर देगा उसे ५००) इनाम दिया जायगा। इनाम तो नहीं स्वीकार किया, पर त्रिवेणीबाँध गुफा के स्वामी अवधबिहारीदास परमहंस ने लालाजी के विरोध में सं० १९८६ में 'बालकांड का नया जन्म खंडन' नामक पुस्तक निकाली थी। यह पता न लगा कि और कांडों का नया जन्म भी लालाजी ने तैयार किया था या नहीं।

आखर के बल', भाव तथा भाषा की विशेषता के कारण भारतीय संस्कृति के इतना अनुकूल पड़ा कि उन दोनों का चिरकाल के लिये एक घनिष्ट संबंध हो गया है, और आज दिन यह कहना कठिन है कि कहाँ तक वे एक दूसरे पर अवलंबित हैं।

रामचरितमानस हमारे साहित्य का एक विशिष्ट ग्रंथ है। कालक्रम से कई अन्य दोषों के साथ साथ इसके स्वरूप में एक दोष यह भी उत्पन्न हो गया है कि इसमें छोटे बड़े कितने ही कथाप्रसंग क्षेपक के रूप में जोड़ दिए गए हैं। उन प्रक्षिप्तअंशों को हटाकर रामचरितमानस के उस शुद्ध रूप का उद्धार करना,जिसमें कि वह गोस्वामीजी के करकमलों से संपन्न हुआ था, साहित्यिक दृष्टि से भी आवश्यक कार्य है। प्रस्तुत लेख का उद्देश्य मुख्यतः यही है। रामचरितमानस की अत्यंत प्राचीन और प्रामाणिक प्रतियों के आधार पर, जिनकी तालिका आगे दी गई है, यह निर्णय किया जा सकता है कि रामचरितमानस के मूल पाठ में कुल छंदसंख्या—जिनमें दोहे, चौपाई, छंद आदि सभी सम्मिलित हों—कितनी है। इसी प्रयत्न के साथ यह भी आवश्यक है कि रामचरितमानस में जिन विषयों का वर्णन गोस्वामीजी ने किया है उनका यथार्थ निर्णय किया जाय। तभी हम प्रक्षिप्त अंश को मूल से अलग पहचानने में समर्थ हो सकेंगे। इसके लिये सौभाग्य से एक कुंजी गोस्वामीजी के हाथ की ही रामचरितमानस में मिलती है। यह उत्तरकांड कागभुसुंडि - गरुड़ - संवाद के अंतर्गत मूल रामायण नामक अंश है। इसमें गोस्वामीजी ने बहुत ही सारगर्भित प्राचीन रीति से सुंदरता के साथ रामचरितमानस के प्रायः सभी मुख्य मुख्य कथाप्रसंगों और विषयों का क्रमबद्ध वर्णन कर दिया है। इसके कारण यह प्रकरण समग्र ग्रंथ के परीक्षण के लिये एक अत्यंत प्रामाणिक और सुलभ कसौटी बन गया है।

रामचरितमानस ऐसे साधु ग्रंथ को लोगों ने खूब मनमाना अपनाया। पाठभेद की दृष्टि से देखिए अथवा क्षेपकसन्निवेश की दृष्टि से, किन्हीं दो जगहों की प्रकाशित पुस्तिकों का मेल नहीं मिलता। यही हाल ग्रंथसंख्या[1] का है। दोहों की संख्या सभी पुस्तकों में अपने अपने ढंग की रहती है।

१—ग्रंथसंख्या एक पारिभाषिक शब्द है जिसका अर्थ है छंदसंख्या।

यह सब व्यतिक्रम प्राचीन पोथियों के अक्षरशः अनुसरण न करने का फल है। गोस्वामीजी के हस्तकमल की लिखी पोथी का लोप[1] भी इसका कारण है।

प्राचीन पोथियों की सहायता से पाठशुद्धि का कार्य बाबू भागवतदास छत्री ने बड़े परिश्रम से किया था और उनकी गोलावाली प्रति[2] छपने के बाद तो लोगों को भटकना बंद ही कर देना चाहिए था। हर्ष का विषय है कि इधर कुछ दिनों से लोग शुद्ध पाठ की खोज में संलग्न हैं और बड़े परिश्रम से संशोधन का कार्य चल रहा है फलस्वरूप आज इधर की प्रका-

---

१—गोस्वामीजी के हाथ की लिखी पोथी अब तो, मेरी समझ में, कोई वर्तमान नहीं है। निम्नलिखित वस्तुओं को लोग गोसाईंजी के हाथ का लिखा मानते हैं—

(१) सं० १६४१ वि० का लिखा वाल्मीकि रामायण (उत्तर कांड) जो काशी के सरस्वती भवन में है।

(२) सं० १६६१ वि० के लिखे रामचरितमानस के बालकांड (श्रावणकुंज की प्रति) में कुछ स्थल पर किए गए संशोधन।

(३) सं० १६६६ वि० की लिखी रामगीतावली (विनयपत्रिका, जिसे भगवान ब्राह्मण ने लिखा है और जो आजकल रामनगर, बनारस राज्य के चौधरी छुन्नीसिंह के पास है) के एक पृष्ठ पर किए गए संशोधन।

(४) सं० १६६६ का लिखा पंचनामा जो सरस्वती पुस्तकालय, रामनगर में रखा है।

(५) राजापुर का अयोध्याकांड।

(६) मलिहाबाद के किसी सोनार के पास कई पीढ़ी से सुरक्षित रामायण।

पर वैज्ञानिक ढंग से अनुसंधान करने पर पता चला है (देखिए, डा० माताप्रसाद गुप्त का लेख—हिंदुस्तानी, अक्तूबर, १९३८, पृ० ३६७,), जो आगे चलकर और भी पक्का हो जायगा, कि गोस्वामीजी के हस्तकमल का लेख यदि इस नाशवान् संसार में कहीं वर्तमान है तो काशिराज के सरस्वती पुस्तकालय में सुरक्षित क्या, रखे हुए पंचनामे में।

२—नागरीप्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ४३, अंक ३' पृ० २८६।

शित पुस्तकें[1] प्रायः शुद्ध निकल रही हैं, जिनमें ग्रंथसंख्या भी ठीक दी हुई है।

प्रस्तुत लेख में ग्रंथसंख्या तथा पाठ भागवतदासजी की प्रति का दिया गया है और पृष्ठसंख्या लीडर प्रेस से प्रकाशित प० विजयानंद द्वारा संपादित रामचरितमानस की है। कांडों के लिये यथाक्रम १ से ७ तक के अंक दिए हैं, उसके आगे खड़ी पाई के बाद दोहे की संख्या है, फिर खड़ी पाई के बाद दोहे की संख्या के आगे आनेवाली चौपाई की पंक्ति की संख्या है। अंतिम संख्या पृष्ठसंख्या है। उदाहरणार्थ—

मन करि विषय अनल बन जरई।
होइ सुखी जौं एहि सर परई॥

—१।३४।८—पृ० २८।

इसमें १ बालकांड का, ३४ दोहे की संख्या का और ८ उस चौंतीसवें दोहे के बाद आनेवाली चौपाई की आठवीं पंक्ति का निर्देश करता है।

सुविधा के लिये शुद्ध मूल रामचरितमानस की ग्रंथसंख्या का विवरण दिया जाता है।

१—बालकांड में ७ श्लोक और ३६१ दोहे हैं।
२—अयोध्याकांड में ३ श्लोक और ३२६ दोहे हैं।
३—आरण्यकांड में २श्लोक और ४० दोहे हैं।
४—किष्किंधाकांड में २ श्लोक और ३० दोहे हैं।
५—सुंदरकांड में २ श्लोक और ६० दोहे हैं।
६—लंकाकांड में ३ श्लोक और १२१ दोहे हैं।
७—उत्तरकांड में ७ श्लोक और १३० दोहे हैं।

लंकाकांड को छोड़ सभी कांडों के प्रारंभ में श्लोक, और श्लोकों के बाद, सुंदरकांड को छोड़, सभी कांडों में दोहे दिए गए हैं, जिनकी संख्या एक से अधिक होती है। इन दोहों की गणनासंख्या मिलाते समय जोड़ी

१—रामचरितमानस—स्व० रामदास गौड़ द्वारा संपादित।
,, बाबा सरजूदासजी ,, ,,
,, बजरंगबली गुप्त ,, ,,
,, विजयानंद त्रिपाठी ,, ,,

नहीं जाती, क्योंकि अंकसंख्या अंकगणित में शून्य से प्रारंभ होती है। दोहों के आगे चौपाई और उनके आगे दोहे दिए गए हैं। चौपाइयाँ अधिकतर आठ पंक्तियों की हैं[१]। यह क्रम जितना बालकांड (दो० ३६

---

[१]—रामचरितमानस में अधिकतर आठ पंक्तियों की चौपाइयाँ है। न्यूनाधिक पंक्तियों की संख्या प्रत्येक कांड में इस प्रकार है—

बालकांड में—प्रथम दोहा के आगे १३ पंक्ति है [जो १।१३ इस प्रकार से व्यक्त किया गया है। यही क्रम समस्त निम्नांकित सूची में रखा है] २।१२; ३।११; ४।६; ५।६; ६।१२; ७।१४; ८।११; ६।१० १०।६; ११।१२; १२।१०; १३।११; १४।११; १६।१०; १७।१०; २७।११; ३०।१४; ३१।१४; ३४।१४; ३५।६; ३६।१५; ३७।६; ३८।१३; १८६।६; १६८।१२; २०२।६; २०७।१०; २०६।१२; ३२६।१०; ३५६।१० ।

अयोध्याकांड में—७।७; २८।६; ६३।७; १७२।७; १८४।७; २०१।६ ।

आरण्यकांड में—१।१४; ४।१६; ५।१०; ३क।२४; ४का२७; ५का१३; ६का१८; ६।१२; १०।२०; ११।१३; १२।१४; १४।११; १५।१२; २०।१७; २१।१६; २२।१६; २३।१८; २४।१०; २७।१०; ३६।१३; ३०।१०; ३१।१२; ३३।६; ३४।११; ३६।१०; ३८।६ ।

किष्किंधाकांड में—०।१०; १।६; ५।१४; ६।२६; ८।१०; ६।५; १०।१०; ११।१०; १४।१२; १५।१२; १६।६; २२।१३; २५।१२; २६।११; २७।१२; २६।१२ ।

सुंदरकांड में—०।६; १।१२; २।११; ८।६; ६।६; ११।१२; १२।११; १४।१०; १५।६; १६।६; १८।६; २०।६; २१।१०; २३।६; २४।६; ३०।६; ३२।६; ३४।१०; ३५।१०; ३६।६; ४०।६; ४२।६; ४८।१०; ५५।१०; ५६।१२ ।

लंकाकांड में—०।१०; २।६; ३।६; ४।१०; ५।६; ७।६; ८।१०; ६।६; ११।१०; १७।१०; २०।१०; २२।१०; २३।१६; २८।१०; ३१।१०; ३२।६; ३३।१४; ३४।१३; ३५।१३; ३७।१०; ३८।६; ३६।१०; ४१।१०; ४५।११; ४८।१०; ५६।१०; ६०।१८; ६१।१२; ६३।६; ६४।१०, ६५।१०; ६६।१२; ७०।१२; ७१।११; ७२।१३; ७३।१०; ७४।१४; ७५।१६; ७७।६; ७८।१३; ७६।११; ८५।१०; ८६।१०; ८७।१०; ८८।१४; ८६।१४; ८६।१४; ६७।१५; ६८।१३; ६६।११; १०१।१०; १०२।११; १०३।१३; १०७।१४; १०६।१२; ११०।२२; ११३।१०; ११४।६; ११७।१०; ११८।११; ११६।६; १२०।१२ ।

से अंत तक) और अयोध्याकांड में निभा है, उतना अन्य कांडों में नहीं। सबसे अधिक गड़बड़ी आरण्यकांड और किष्किंधाकांड में है। इनमें कहीं कहीं १६, २६ और २६ पंक्ति की चौपाइयाँ मिलती हैं। आठ पंक्ति की चौपाइयाँ बहुत कम मिलती हैं। इस बात को न समझकर लोगों ने इन लंबी चौपाइयों के टुकड़े करके बीच बीच में दोहे गढ़कर बिठाए हैं और कहीं चौपाइयाँ भी जोड़ दी हैं। यही कारण है कि आरण्यकांड में सबसे अधिक क्षेपक दीख पड़ते हैं। किसी प्रति की शुद्धता परखने के लिये आरण्यकांड की जाँच होनी है।

चौपाइयों के बाद आनेवाले दोहों से संख्या का आरंभ होता है। प्रायः चौपाइयों के बाद एक दोहा आता है, पर कहीं कहीं दो या अधिक दोहे दिए गए हैं, विशेषतः उत्तरकांड के उत्तरार्ध भाग में (दो० ६२ से दो० १२५ तक) चौपाइयों के बाद दोहों का क्रम खूब चला है। गणना के लिये एक स्थान पर आनेवाले एक से अधिक दोहों की संख्या एक ही मानी जाती है।

प्रत्येक कांड में छंद और सोरठे भी दिए गए हैं। ये चौपाइयों के बाद आते हैं, पर इनकी स्वतंत्र संख्या नहीं दी जाती। ये दोहों के अंतर्गत माने गए हैं—'छंद सोरठा सुंदर दोहा। सोइ बहुरंग कमल कुल सोहा' (१।३६।५) छंद के प्रारंभ का भाव पूर्वकथित चौपाई के अंतिम चरण से मिलता हुआ होता है। छंद के बाद दोहे, अथवा कही कहीं सोरठे अवश्य आते हैं। इनकी संयुक्त संख्या एक ही मानी गई है। कहीं कहीं पर दोहों के बाद भी छंद आते हैं। बालकांड दो० १८५, १६१, २१० तथा उत्तरकांड दो० ११,१२,१३ के आगे चौपाई न देकर छंद दिए गए हैं। ऐसे स्थलों पर गणना के लिये छंद, चौपाइयों का काम देते हैं और इनके आगे आनेवाले दोहों पर दूसरी संख्या पड़ती है।

उत्तरकांड में—१।१६; २।१०; ५।६; ७।६; ८।६; १४।१०; १८।१०; २२।१०; २३।६; २६।१०; ३४।६; ४६।६; ५०।६; ५१।६; ५४।६; ५५।१०; ५६।१०; ६१।१०; ६३।६; ७२।६; ७६।१०; ८५।१०; ६५।१०; ६६।१०; १००।१०; १०५।१६; १०६।१६; ११०।१६; १११।१६; ११२।१६; ११३।१६; ११४।१६; ११६।१६; ११७।१६; ११८।१०; ११६।१६; १२०।३७; १२१।१६; १२४।१०।

छंद प्रायः चार पंक्तियों के दिए गए हैं, पर बालकांड के दो० १८६, १६२,२१०,३२३,३२४,३२५,३२६, ३२७ के छंद, 'किष्किंधाकांड' दो० १० कांड, सुंदरकांड दो० ३, लंकाकांड दो० १०६, उत्तरकांड दो० ५, १२, १३, १३०, के छंदों में चार से अधिक पंक्तियाँ हैं। लंकाकांड में दो० ७८ से दो० १०६ तक चौपाइयों के बाद चार पंक्ति का छंद तथा एक दोहे का क्रम खूब चला है।

बालकांड में ३६१ दोहे हैं जिनकी संख्या का संकेत (प्रथम पंक्ति को लेते हुए) नीचे दिया जाता है—

दो०— ० जो सुमिरत सिधि होइ गननायक करिवर बदन।
दो०— २५ ब्रह्म राम ते नाम बड़ बरदायक बरदानि।
दो०— ५० ब्रह्म जो व्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद।
दो०— ७५ चिदानंद सुखधाम सिव बिगत मोह मद काम।
दो०—१०० मुनि अनुसासन गनपतिहि पूजेउ संभु भवानि।
दो०—१२५ सूख हाड लै भाग सठ स्वान निरखि गजराज।
दो०—१५०सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति सोइ निज चरन सनेह।
दो०—१७५ भरद्वाज सुनु जाहि जब होइ बिधाता बाम।
दो०—२०० प्रेम मगन कौसल्या निसि दिन जात न जान।
दो०—२२५ सभय सप्रेम बिनीत अति सकुच सहित दोउ भाइ।
दो०—२५० तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठै न चलहिं लजाइ।
दो०—२७५ गाधि सून कह हृदय हँसि मुनिहिं हरिअरेइ सूझ।
दो०—३०० सबके उर निर्भर हरष पूरित पुलक सरीर।
दो०—३२५ मुदित अवधपति सकल सुत बधुन्ह समेत निहारि।
दो०—३५० इहि सुख ते सत कोटि गुन पावहिं मातु अनंदु।
दो०—३६१ सिय रघुबीर बिबाह जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।

अयोध्याकांड में ३२६ दोहे हैं जिनका संकेत नीचे दिया जाता है—

दो०— ० श्री गुरु चरन सरोज रज निज मन मुकुरु सुधारि।
दो०— २५ बार बार कह राउ सुमुखि सुलोचनि पिकबचनि।
दो०— ५० सखिन्ह सिखावनु दीन्ह सुनत मधुर परिनाम हित।
दो०— ७५ मातु चरन सिर नाइ चले तुरत संकित हृदय।
दो०—१०० सुनि केवट के बयन प्रेम लपेटे अटपटे।
दो०—१२५ तात बचन पुनि मातु हित भाई भरत अस राउ।

दो०—१५० प्रथम बास तमसा भएउ दूसर सुरसरि तीर।
दो०—१७५ कीजिअ गुरु आयसु अवसि कहहिं सचिव कर जोरि।
दो०—२०० सुख सरूप रघुबंस मनि मंगल मोद निधान।
दो०—२२५ भरत प्रेम तेहि समय जस तस कहि सकइ न सेस।
दो०—२५० यह जिय जानि सँकोच तजि करिय छोहु लखि नेह।
दो०—२७५ आश्रम सागर सांत रस पूरन पावन पाथु।
दो०—३०० सुहृद सुजान सुसाहिबहि बहुत कहब बड़ि खोरि।
दो०—३२६ भरत चरित करि नेम तुलसी जो सादर सुनहिं।

आरण्य कांड में ४० दोहे हैं जिनका संकेत नीचे दिया जाता है—

दो०— ० उमा राम गुन गूढ़ पंडित मुनि पावहिं बिरति।
दो०— ५ सहज अपावनि नारि पति सेवत सुभ गति लहइ।
दो०—५क अनुज जानकी सहित प्रभु चाप बान धर राम।
दो०—१० बचन करम मन मोरि गति भजन करहिं निहकाम।
दो०—१५ सभा माँझ परि ब्याकुल बड प्रकार कह रोइ।
दो०—२० मम पाछे धर धावत धरे सरासन बान।
दो०—२५ सीता हरन तात जनि कहेहु पिता सन जाइ।
दो०—३० जाति हीन अघ जनम महि मुक्त कीन्हि अस नारि।
दो०—३५ नाना बिधि बिनती करि प्रभु प्रसन्न जिय जानि।
दो०—४० रावनारि जस पावन गावहिं सुनहिं जे लोग।

किष्किंधा कांड में ३० दोहे हैं—

दो०— ० मुक्ति जन्म महि जानि ज्ञान खानि अघ हानि कर।
दो०— ५ सखा बचन सुनि हरषे कृपासिंधु बल सींव॥
दो०—१० राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग।
दो०—१५ कबहुँ प्रबल बह मारुत जहँ तहँ मेघ बिलाहिं।
दो०—२० हरषि चले सुग्रीव तब अंगदादि कपि साथ।
दो०—२५ बदरी बन कहुँ सो गई प्रभु आज्ञा धरि सीस।
दो०—३० भव भेषज रघुनाथ जस सुनहिं जे नर अरु नारि।

सुंदर कांड में ६० दोहे हैं—

दो०— १ हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम।
दो०—१० भवन गएउ दसकंधर इहाँ पिसाचिनि बृंद।
दो०—२० कपिहिं बिलोकि दसानन बिहँसा कहि दुर्बाद।

प्रत्येक कांड की कथा का बंधान मूल रामचरितमानस से इस प्रकार है[१] —

बालकांड

विबिध बंदना १। आरंभ (जो सुमिरित सिधि होइ से बंदौं सीताराम पद जिन्हहिं परम प्रिय खिन्न) १।१८—२।

राम नाम महिमा १।१८।१ (बंदौ राम नाम रघुवर को से नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ) १।२७।१—१७।

रामचरित सर १।३४।६ (बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा से कह कवि कथा सुहाइ) १।४३—२८।

सतीचरित[२] १।४७।१ (एक बार त्रेता जुग माहीं से उमाचरित सुंदर मैं गावा) १।७४।६—३५।

शंभुचरित[२] १।७४।६ (सुनहु संभु कर चरित सुहावा से सुचि सेवक तुम्ह राम के रहित समस्त बिकार) १।१०४—५०।

उमा के प्रश्न[3] १।१०६।६ (कथा जो सकल लोक हितकारी से छल बिहीन सुनि सिव मन भाई) १।११०।६—७०।

नारद कर मोह अपारा १।१२३।५ (नारद श्राप दीन्ह एक बारा से अस बिचारि...भजिअ महामायापतिहि) १।१४०—७६।

रावन अवतारा—चार रावण का संकेत रामचरितमानस किया गया है; यथा—

(१) **द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ** १।१२१।४—१।१२२ (जय अरु बिजय)—७८,

(२) **एक कलप सुर देखि दुखारे** १।१२२।५—१।१२३।२ (जलंधर) ७८,

१—कथाक्रम का संकलन मुख्यतः भुसुंडि द्वारा कही गई रामकथा के अनुसार दिया जाता है। देखिए—उत्तरकांड (७।६३।७—७।६७।७), पृ० ६०३—६०६।

२—सतीचरित तथा शंभुचरित दोनों अट्ठाइस अट्ठाइस दोहों में वर्णित हैं।

३—देखिए—उत्तरकांड ७।१३—७।२४।५—पृ० ५६८।

नारदमोह के रुद्रगन १।१३३—१।१३६ (रुद्रगन)—८३,

भानुप्रताप कथा के १।१७५—(भानुप्रताप)—१०४।

मनुसतरूपा १।१४१।१ (स्वायंभू मनु अरु सतरूपा से यह इतिहास पुनीत अति उमहिं कही वृषकेतु) १।१५२—८८।

भानुप्रताप १।१५२।२ (बिस्व बिदित एक कैकय देसू से भए निसाचर घोर घनेरे) १।१७५।६—६३।

प्रभु अवतार कथा १।१२०।१ (सुनु गिरिजा हरिचरित सुहाए से निज इच्छा निर्मित तनु मायागुन गोपार) १।१६२—७७।

सिसुचरित १।६२।१ (सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी से सकल तनय चिरजींवहु तुलसीदास के ईस) १।१६६—११५।

बालचरित १।१६६।१ (कछुक दिवस बीते एहि भाँती से यह सब चरित कहा मैं गाई) १।२०५।१—११७।

ऋषि आगमन १।२०५।२ (बिस्वामित्र महामुनि ज्ञानी से चरित एक प्रभु देखिय जाई) १।२०६।६—१२२।

अहल्योद्धार १।२०६।१० (धनुषजज्ञ सुनि रघुकुलनाथा से...तेहि भजु छाड़िं कपट जंजाल) १।२११—१२४।

सीयस्वयंबर १।२११।१ (चले राम लछिमन मुनि संगा से सब मिलि देहिं महीपन्ह गारी) १।२६७।१—१२६।

परशुराम आगमन १।२६७।२ (तेहि अवसर सुनि सिव धनु भंगा से जँह तहँ कायर गवहिं पराने) १।२८४।८—१५५।

श्री रघुबीर विवाह १।२८५ (देवन्ह दीन्हीं दुंदुभी...से तिन्ह कहँ सदा उछाह मंगलायतन राम जस) १।३६१—१६६।

अयोध्याकांड

राम अभिषेक प्रसंगा २।०।१ (जबतें राम ब्याहि घर आए से सकल कहहिं कब होइहि काली) २।१०।६—२१२।

---

१. अयोध्याकांड में आठ अर्धाली के बाद एक दोहा और हर पचीसवें दोहे के स्थान पर एक छंद और एक एक सोरठा है। इस प्रकार इस कांड में १३ छंद हैं जिनमें १२ छंदों में तुलसीदासजी ने अपनी छाप दी है। केवल

दो०—१५० प्रथम बास तमसा भएउ दूसर सुरसरि तीर।
दो०—१७५ कीजिअ गुरु आयसु अवसि कहहिं सचिव कर जोरि।
दो०—२०० सुख सरूप रघुबंस मनि मंगल मोद निधान।
दो०—२२५ भरत प्रेम तेहि समय जस तस कहि सकइ न सेस।
दो०—२५० यह जिय जानि सँकोच तजि करिय छोहु लखि नेह।
दो०—२७५ आश्रम सागर सांत रस पूरन पावन पाथु।
दो०—३०० सुहृद सुजान सुसाहिबहि बहुत कहब बडि खोरि।
दो०—३२६ भरत चरित करि नेम तुलसी जो सादर सुनहिं।

आरण्य कांड में ४० दोहे हैं जिनका संकेत नीचे दिया जाता है—

दो०— ० उमा राम गुन गूढ़ पंडित मुनि पावहिं बिरति।
दो०— ५ सहज अपावनि नारि पति सेवत सुभ गति लहइ।
दो०—५क अनुज जानकी सहित प्रभु चाप बान धर राम।
दो०—१० बचन करम मन मोरि गति भजन करहिं निहकाम।
दो०—१५ सभा माँझ परि ब्याकुल बड प्रकार कह रोइ।
दो०—२० मम पाछे धर धावत धरे सरासन बान।
दो०—२५ सीता हरन तात जनि कहेहु पिता सन जाइ।
दो०—३० जाति हीन अघ जनम महि मुक्त कीन्हि अस नारि।
दो०—३५ नाना बिधि बिनती करि प्रभु प्रसन्न जिय जानि।
दो०—४० रावनारि जस पावन गावहिं सुनहिं जे लोग।

किष्किंधा कांड में ३० दोहे हैं—

दो०— ० मुक्ति जन्म महि जानि ज्ञान खानि अघ हानि कर।
दो०— ५ सखा बचन सुनि हरषे कृपासिंधु बल सींव॥
दो०—१० राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग।
दो०—१५ कबहुँ प्रबल बह मारुत जहँ तहँ मेघ बिलाहिं।
दो०—२० हरषि चले सुग्रीव तब अंगदादि कपि साथ।
दो०—२५ बदरी बन कहुँ सो गई प्रभु आज्ञा धरि सीस।
दो०—३० भव भेषज रघुनाथ जस सुनहिं जे नर अरु नारि।

सुंदर कांड में ६० दोहे हैं—

दो०— १ हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम।
दो०—१० भवन गएउ दसकंधर इहाँ पिसाचिनि बृंद।
दो०—२० कपिहिं बिलोकि दसानन बिहँसा कहि दुर्बाद।

दो०—३० नाम पाहरू रात दिन ध्यान तुम्हार कपाट ।
दो०—४० तात चरन गहि मांगौं राखहु मौर दुलार ।
दो०—५० प्रभु तुम्हार कुल गुर जलधि कहिहि उपाय बिचारि ।
दो०—६० सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन मान ।

लंका कांड में १२१ दोहे हैं—

दो०— ० सिंधु बचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ ।
दो०—१० सुनासीर सत सरिस सो संतत करै बिलास ।
दो०—२० प्रनत पाल रघुबंसमनि त्राहि त्राहि अब मोहिं ।
दो०—३० तोहि पटकि महि सेन हति चौपट करि तब गाँउ ।
दो०—४० नानायुध सर चाप धर जातुधान बल बीर ।
दो०—५० दस दस सर सब मारेसि परे भूमि कपि बीर ।
दो०—६० भरत बाहुबल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार ।
दो०—७० करि चिक्कार घोर अति धावा बदन पसारि ।
दो०—८० महा अजय संसार रिपु जीति सकै सो बीर ।
दो०—९० राम बचन सुनि बिहसा मोहि सिखावत ज्ञान ।
दो०—१०० देखि महा मर्कट प्रबल रावन कीन्ह बिचार ।
दो०—१२१ समर बिजय रघुबीर के चरित जे सुनहिं सुजान ।

उत्तर कांड में १३० दोहे हैं—

दो०— ० रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग ।
दो०—१० तब मुनि कहेउ सुमंत्र सन सुनत चलेउ हरषाइ ।
दो०—२० बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग ।
दो०—३० एहि बिधि नगर नारि नर करहिं राम गुन गान ।
दो०—४० ऐसे अधम मनुज खल कृतजुग त्रेता नाहिं ।
दो०—५० तेहि अवसर मुनि नारद आए करतल बीन ।
दो०—६० परमातुर बिहंगपति आएउ तब मो पास ।
दो०—७० ज्ञानी तापस सूर कवि कोविद गुन आगार ।
दो०—८० जो नहिं देखा नहिं सुना जो मनहूँ न समाइ ।
दो०—९० बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न राम ।
दो०—१०० भए बरन संकर कलि भिन्न सेतु सब लोग ।
दो०—११० गुरु के बचन सुरति करि राम चरन मन लाग ।
दो०—१२० ब्रह्म पयोनिधि मंदर ज्ञान संत सुर आहिं ।
दो०—१३० मो सम दीन न दीनहित तुम समान रघुबीर ।

दो०—१५० प्रथम बास तमसा भएउ दूसर सुरसरि तीर।
दो०—१७५ कीजिअ गुरु आयसु अवसि कहहिं सचिव कर जोरि।
दो०—२०० सुख सरूप रघुबंस मनि मंगल मोद निधान।
दो०—२२५ भरत प्रेम तेहि समय जस तस कहि सकइ न सेस।
दो०—२५० यह जिय जानि सँकोच तजि करिय छोहु लखि नेह।
दो०—२७५ आश्रम सागर सांत रस पूरन पावन पाथु।
दो०—३०० सुहृद सुजान सुसाहिबहि बहुत कहब बडि खोरि।
दो०—३२६ भरत चरित करि नेम तुलसी जो सादर सुनहिं।

आरण्य कांड में ४० दोहे हैं जिनका संकेत नीचे दिया जाता है—

दो०— ० उमा राम गुन गूढ़ पंडित मुनि पावहिं बिरति।
दो०— ५ सहज अपावनि नारि पति सेवत सुभ गति लहइ।
दो०—५क अनुज जानकी सहित प्रभु चाप बान धर राम।
दो०—१० बचन करम मन मोरि गति भजन करहिं निहकाम।
दो०—१५ सभा माँझ परि व्याकुल बड प्रकार कह रोइ।
दो०—२० मम पाछे धर धावत धरे सरासन बान।
दो०—२५ सीता हरन तात जनि कहेहु पिता सन जाइ।
दो०—३० जाति हीन अघ जनम महि मुक्त कीन्हि अस नारि।
दो०—३५ नाना बिधि बिनती करि प्रभु प्रसन्न जिय जानि।
दो०—४० रावनारि जस पावन गावहिं सुनहिं जे लोग।

किष्किंधा कांड में ३० दोहे हैं—

दो०— ० मुक्ति जन्म महि जानि ज्ञान खानि अघ हानि कर।
दो०— ५ सखा बचन सुनि हरषे कृपासिंधु बल सींव॥
दो०—१० राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग।
दो०—१५ कबहुँ प्रबल बह मारुत जहँ तहँ मेघ बिलाहिं।
दो०—२० हरषि चले सुग्रीव तब अंगदादि कपि साथ।
दो०—२५ बदरी बन कहुँ सो गई प्रभु आज्ञा धरि सीस।
दो०—३० भव भेषज रघुनाथ जस सुनहिं जे नर अरु नारि।

सुंदर कांड में ६० दोहे हैं—

दो०— १ हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम।
दो०—१० भवन गएउ दसकंधर इहाँ पिसाचिनि बृंद।
दो०—२० कपिहि बिलोकि दसानन बिहँसा कहि दुर्बाद।

दो०—३० नाम पाहरू रात दिन ध्यान तुम्हार कपाट।
दो०—४० तात चरन गहि माँगौं राखहु मौर दुलार।
दो०—५० प्रभु तुम्हार कुल गुर जलधि कहिहि उपाय बिचारि।
दो०—६० सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन मान।
लंका कांड में १२१ दोहे हैं—
दो०— ० सिंधु बचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ।
दो०—१० सुनासीर सत सरिस सो संतत करै बिलास।
दो०—२० प्रनत पाल रघुबंशमनि त्राहि त्राहि अब मोहिं।
दो०—३० तोहि पटकि महि सेन हति चौपट करि तब गाँउ।
दो०—४० नानायुध सर चाप धर जातुधान बल बीर।
दो०—५० दस दस सर सब मारेसि परे भूमि कपि बीर।
दो०—६० भरत बाहुबल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार।
दो०—७० करि चिक्कार घोर अति धावा बदन पसारि।
दो०—८० महा अजय संसार रिपु जीति सकै सो बीर।
दो०—९० राम बचन सुनि बिहसा मोहि सिखावत ज्ञान।
दो०—१०० देखि महा मर्कट प्रबल रावन कीन्ह बिचार।
दो०—१२१ समर बिजय रघुवीर के चरित जे सुनहिं सुजान।
उत्तर कांड में १३० दोहे हैं—
दो०— ० रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग।
दो०—१० तब सुनि कहेउ सुमंत्र सन सुनत चलेउ हरषाइ।
दो०—२० बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग।
दो०—३० एहि बिधि नगर नारि नर करहिं राम गुन गान।
दो०—४० ऐसे अधम मनुज खल कृतजुग त्रेता नाहिं।
दो०—५० तेहि अवसर मुनि नारद आए करतल बीन।
दो०—६० परमातुर बिहंगपति आएउ तब मो पास।
दो०—७० ज्ञानी तापस सूर कवि कोविद गुन आगार।
दो०—८० जो नहिं देखा नहिं सुना जो मनहूँ न समाइ।
दो०—९० बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न राम।
दो०—१०० भए बरन संकर कलि भिन्न सेतु सब लोग।
दो०—११० गुरु के बचन सुरति करि राम चरन मन लाग।
दो०—१२० ब्रह्म पयोनिधि मंदर ज्ञान संत सुर आहिं।
दो०—१३० मो सम दीन न दीनहित तुम समान रघुबीर।

प्रत्येक कांड की कथा का बंधान मूल रामचरितमानस से इस प्रकार है[1] —

बालकांड

विविध बंदना १। आरंभ (जो सुमिरित सिधि होइ से बंदौं सीताराम पद जिन्हहिं परम प्रिय खिन्न) १।१८—२।

राम नाम महिमा १।१८।१ (बंदौं राम नाम रघुवर को से नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ) १।२७।१—१७।

रामचरित सर १।३४।६ (बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा से कह कवि कथा सुहाइ) १।४३—२८।

सतीचरित[2] १।४७।१ (एक बार त्रेता जुग माहीं से उमाचरित सुंदर मैं गावा) १।७४।६—३५।

शंभुचरित[2] १।७४।६ (सुनहु संभु कर चरित सुहावा से सुचि सेवक तुम्ह राम के रहित समस्त बिकार) १।१०४—५०।

उमा के प्रश्न[3] १।१०६।६ (कथा जो सकल लोक हितकारी से छल बिहीन सुनि सिव मन भाई) १।११०।६—७०।

नारद कर मोह अपारा १।१२३।५ (नारद श्राप दीन्ह एक बारा से अस बिचारि...भजिअ महामायापतिहि) १।१४०—७६।

रावन अवतारा—चार रावण का संकेत रामचरितमानस किया गया है; यथा—

(१) **द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ** १।१२१।४—१।१२२ (जय अरु बिजय)—७८,

(२) **एक कलप सुर देखि दुखारे** १।१२२।५—१।१२३।२ (जलंधर) ७८,

१—कथाक्रम का संकलन मुख्यतः भुसुंडि द्वारा कही गई रामकथा के अनुसार दिया जाता है। देखिए—उत्तरकांड (७।६३।७—७।६७।७), पृ० ६०३—६०६।

२—सतीचरित तथा शंभुचरित दोनों अट्ठाइस अट्ठाइस दोहों में वर्णित हैं।

३—देखिए—उत्तरकांड ७।५३—७।५४।५—पृ० ५९८।

नारदमोह के रुद्रगन १।१३३—१।१३६ (रुद्रगन)—८३,

भानुप्रताप कथा के १।१७५—(भानुप्रताप)—१०४।

मनुसतरूपा १।१४१।१ (स्वायंभू मनु अरु सतरूपा से यह इतिहास पुनीत अति उमहिं कही बृषकेतु) १।१५२—८८।

भानुप्रताप १।१५२।२ (विस्व बिदित एक कैकय देसू से भए निसाचर घोर घनेरे) १।१७५।६—९३।

प्रभु अवतार कथा १।१२०।१ (सुनु गिरिजा हरिचरित सुहाए से निज इच्छा निर्मित तनु मायागुन गोपार) १।१९२—७७।

सिसुचरित १।९२।१ (सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी से सकल तनय चिरजींवहु तुलसीदास के ईस) १।१९६—११५।

बालचरित १।१९६।१ (कछुक दिवस बीते एहि भाँती से यह सब चरित कहा मैं गाई) १।२०५।१—११७।

ऋषि आगमन १।२०५।२ (बिस्वामित्र महामुनि ग्यानी से चरित एक प्रभु देखिय जाई) १।२०६।६—१२२।

अहल्योद्धार १।२०६।१० (धनुषजग्य सुनि रघुकुलनाथा से...तेहि भजु छाड़ि कपट जंजाल) १।२११—१२४।

सीयस्वयंबर १।२११।१ (चले राम लछिमन मुनि संगा से सब मिलि देहिं महीपन्ह गारी) १।२६७।१—१२६।

परशुराम आगमन १।२६७।२ (तेहि अवसर सुनि सिव धनु भंगा से जँह तहँ कायर गवहिं पराने) १।२८४।८—१५५।

श्री रघुबीर विवाह १।२८५ (देवन्ह दीन्हीं दुंदुभी...से तिन्ह कहँ सदा उछाह मंगलायतन राम जस) १।३६१—१६६।

अयोध्याकांड

राम अभिषेक प्रसंगा २।०।१ (जबतें राम ब्याहि घर आए से सकल कहहिं कब होइहि काली) २।१०।६—२१२।

---

१. अयोध्याकांड में आठ अर्धाली के बाद एक दोहा और हर पच्चीसवें दोहे के स्थान पर एक छंद और एक एक सोरठा है। इस प्रकार इस कांड में १३ छंद हैं जिनमें १२ छंदों में तुलसीदासजी ने अपनी छाप दी है। केवल

नृप बचन, राज रस भंगा २।१०।६ (बिघन बनावहिं देव कुचाली से भूप सोक बस उतर न दीन्हा) २।४५।५—२१७।

पुरवासिन्ह कर बिरह बिषादा २।४५।६ (नगर व्यापि गइ बात सुतीछी से चली नाइ पद पदुम सिर अति हित बारहिं बार) २।६६—२३५।

राम लछिमन संबादा २।६६।१ (समाचार जब लछिमन पाए से आवहु बेगि चलहु बन भाई) २।७२।१—२४७।

बिपिन गवन २।७८।८ (राम तुरत मुनि बेष बनाई से करत चरित नर अनुहरत संसृति सागर सेतु) २।८७—२५२।

वाल्मीकि प्रकरण के छंद में गोसाईंजी ने आदिकवि के बचन में अपनी छाप नहीं दी। इस कांड के मुख्य वक्ता तुलसीदासजी हैं इसी कारण कहीं पर मुनि भरद्वाज, उमा, या गरुड़ संबोधन नहीं मिलता। कुल ३२६ दोहों का विभाजन इस प्रकार किया है—

प्रथम १५६ दोहों में (श्रीगुरु चरन सरोजरज २।० से सोक निवारेउ सबन्हि कर निज बिज्ञान प्रकास) २।१५६ तक रामचरित्र का वर्णन है;

चौदह दोहों में (२।१५६।१ तेल नाव भरि नृप तनु राखा से दिए भरत लहि भूमि सुर भे परिपूरन काम) २।१७० तक दशरथ की अंत्येष्टि का वर्णन है;

अंत के १५६ दोहों में (२।१७०।१ पितुहित भरत कीन्ह जस करनी से सीय राम पद प्रेम अवस होइ भवरस बिरति) २।३२६ तक भरतचरित्र का वर्णन है।

भरतचरित की फलश्रुति कहकर कांड समाप्त किया गया है। पर अयोध्याकांड के रामचरित की फलश्रुति अरण्यकांड के छठे दोहे—

कलिमल समन दमन मन राम सुजस सुखमूल।
सादर सुनहिं जे तिन्हहिं पर राम रहहिं अनुकूल॥

में की गई है। इसी कारण सभी प्राचीन प्रतियों में अयोध्याकांड में 'इति' नहीं लगाई गई है। भरतचरित कहते कहते अयोध्याकांड समाप्त होता है और जिस प्रकार भरतचरित की इति नहीं है उसी प्रकार कांड की भी 'इति' नहीं है।

[देखिए रामचरितमानस—विजयानंद त्रिपाठी, पृ० ३७५]

केवट अनुरागा २।८७।१ (यह सुधि गुह निषाद जब पाई से पितर पार करि प्रभुहिं पुनि मुदित गएउ लेइ पार) २।१०१—२५६।

सुरसरि उतरि निवास पयागा २।१०१ (उतरि ठाढ़ भे सुरसरि रेता से चले सहित सिय लखन जन मुदित मुनिहिं सिर नाइ) २।१०८—२६३।

बालमीक प्रभु मिलन २।१२३।५ (देखत बन सर सैल सुहाए से आइ नहाए सरित बर सिय समेत दोउ भाइ) २।१३२—२७४।

चित्रकूट जिमि बस भगवाना २।१३२ (चित्रकूट महिमा अमित कही महामुनि गाइ से खग मृग सुर तापस हितकारी) २।१४१।३—२७६।

सचिवागमन नगर २।१४१।४ (सुनहु सुमंत्र अवध जिमि आवा से कौसल्या गृह गईं लंवाई) २।१४७।३—२८३।

नृप मरना २।१४७।४ (जाइ सुमंत्र दीख कस राजा से तनु परिहरि रघुबर बिरह राउ गए सुरधाम) २।१५५—२८६।

भरतागमन २।१५६।१ (तेल नाव भरि नृप तनु राखा से द्वारहिं भेंट भवन लेई आई) २।१५८।३—२९०.।

भरत प्रेम २।१५८।४ (भरत दुखित परिवार निहारा से उठे भरत गुरु बचन सुनि करन कहेउ सब साजु) २।१६९—२९१।

भरत चरित २।१७०।१ (पितु हित भरत कीन्ह जस करनी से सीयराम पद प्रेम अवसि होइ भव रस बिरति) २।३२६—२९६।

नृप क्रिया २।१६९ (तात हृदय धीरज धरहु करहु जो अवसर आजु से सो सुख लाख जाइ नहिं बरनी) २।१७०।१—२९६।

संग पुरबासी भरत गए जहँ प्रभु २।१७०।२ (सुदिन सोधि मुनिबर तब आए से...जुरे सभासद आइ) २।२५३—२९७।

रघुपति बहु बिधि समुझाए २।२५३।१ (बोले मुनिबरु समय समाना से बंधु प्रबोध कीन्ह बहु भाँती) २।३१५।२—३३९।

(१) प्रथम सभा २।२५६।५ (भरत मुनिहि मन भीतर भाए से प्रभु गति देखि सभा सब सोची) २।२६९।३—३४१,

(२) जनक आगमन २।२६९।४ (जनक दूत तेहि अवसर आए से रहा न ग्यान न धीरज लाजा) २।२७५।७—३४७,

(३) द्वितीय सभा २।२९५।२ (गए जनक रघुनाथ समीपा से दुहुँ

समाज हिय हरष बिषादू) २।३०८।६—३६० ।

(४) तृतीय सभा २।३११।१ (भोर न्हाइ सब जुरा समाजू से बंधु प्रबोध कीन्ह बहु भाँती) २।३१५।२—३६८ ।

लै पादुका अवधपुर आए २।३१५।२ बिनु अधार मन तोष न सांती से चौथे दिवस अवधपुर आए) २।३२१।५—३६९ ।

भरत रहनि २।३२२।१ (सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे से... अवसि होइ भव रस बिरति) २।३२६—३७२ ।

अयोध्याकांड की न्यूनाधिक चौपाइयों की तालिका सं० १

[निम्नलिखित तालिका में प्रतियों के नीचे ६, ७, ८ या ९ की संख्या बाईं ओर दिए गए दोहा के आगे आनेवाली अर्धालियों की है ।]

	दोहा सं०	भागवतदास	राजापुर	काशिराज	कोदोराम	नागरीप्रचारिणी सभा	गौड़जी	मानस पीयूष	विजयानंदजी
१	१	८	७	८	८	८	८	८	७
२	४	८	७	८	८	८	८	८	७
३	७	७	७	७	८	७	७	७	७
४	१९	८	७	८	८	८	८	८	७
५	२८	९	९	८	८	९	९	९	९
६	६३	७	७	७	८	७	७	७	७
७	८७	८	७	८	८	८	८	८	८
८	११७	७	७	७	८	७	७	७	७
९	१८३	८	७	८	८	८	८	८	७
१०	१८४	७	७	७	८	७	७	७	७
११	२०१	९	९	९	८	९	९	९	९
१२	२१७	८	७	८	८		८	८	७
१३	२५५	८	६	८	८	८	८	८	६
१४	२७८	८	७	७	८	८	८	८	७
१५	२९०	८	७	८	८	८	८	८	७

उपर्युक्त तालिका से प्रकट होगा कि भागवतदास, नागरीप्रचारिणी सभा, गौड़जी तथा मानसपीयूष—इन चार प्रतियों की अयोध्याकांड की ग्रंथ-संख्या एक है । तथा सं० ७ को छोड़ राजापुर की ग्रंथसंख्या का अनुसरण पं० विजयानंदजी ने किया है ।

अयोध्याकांड की न्यूनाधिक चौपाइयों की तालिका सं० २

२४

				रा०	का०	को०
१	१	सकल सुकृत मूरति नरनाहू। राम सुजस सुनि अतिहि उछाहू	रा० अन्यत्र है	१		
२	४	प्रमुदित मोहि कहेउ गुरु आजू। रामहि राय देहु जुवराजू।	रा० अन्यत्र है	२		
३	७	बार बार गनपतिहि निहोरा। कीजै सफल मनोरथ मोरा।	को० अन्यत्र नहीं है			१
४	१९	कीन्हेसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू। फिरि न नवइ जिमि उकठि कुकाठू।	रा० अन्यत्र है	३		
५	२८	सुनि मृदु बचन भूप हिय सोकू। ससि कर छुअत बिकल जिमि कोकू।	का० को० अन्यत्र है		१	१
६	५६	बहु बिधि बिलपि चरन लपटानी। परम अभागिनि आपुहि जानी।	का० अन्यत्र है		२	
७	६३	अस कहि सिय रघुपति पद लागी। बोली बचन प्रेम रस पागी।	को० अन्यत्र नहीं है			२
८	८७	सहज सनेह बिबस रघुराई। पूछी कुसल निकट बैठाई।	रा० अन्यत्र है	४		
९	१७२	तीनि काल त्रिभुवन जग माहीं। भूरि भाग दसरथ सम नाहीं।	को० अन्यत्र नहीं है			३
१०	१८३	राम सनेह सुधा जनु पागे। लोग बियोग बिषम बिष दागे।	रा० अन्यत्र है	५		
११	१८४	केहि न भाव सिय लछिमन रामू। सब कहँ प्रिय हिय सदा सकामू।	को० अन्यत्र नहीं है			४

				रा०	का०	को०
१२	२०१	निंदहिं आपु सराहि निषादहि । को कहि सकइ बिमोह बिषादहिं ।	को० अन्यत्र है	६		२
१३	२१७	कह गुरु बादि छोभ छल छाडू । इहाँ कपट कर होइहि भाडू ।	रा० अन्यत्र है			
१४	२२४	भरतहिं सहित समाज उछाहू । मिलिइहिं राम मिटिहि दुख दाहू ।	का० अन्यत्र है			
१५	२५५	........................। अरध तजहिं बुध सरबस जाता ।	रा० अन्यत्र है			
		तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई । फेरिय लखन सहित रघुराई । सुनि सुबचन हरषे दोउ भ्राता ।........................	रा० अन्यत्र है		३	
१६	२७८	जनु महि करत जनक पहुनाई । तब सब लोग नहाइ नहाई ।		७		
१७	२९०	रिषि धरि धीर जनक पहिं आए । राम बचन सुनि नृपहिं सुनाए ।	रा० अन्यत्र है	८		
१८	२९५	गए जनक रघुनाथ समीपा । सनमाने सब रविकुल दीपा ।	का० अन्यत्र है	९	४	
१९	३२४	भरत रहनि समुझनि करतूती । भगति बिरति गुन बिमल बिभूती ।	का० अन्यत्र है		५	

उपर्युक्त तालिका देखने से प्रकट होगा कि अयोध्याकांड के नौ स्थलों का पाठ (सं० १, २, ४, ८, १०, १३, १५, १६, १७) केवल राजापुर की प्रति में नहीं है । अन्य सभी प्रचलित प्रतियों में मिलता है ।

पाँच स्थलों का पाठ (सं० ५, ६, १४, १८ १९) केवल काशिराज की प्रति में नहीं है, अन्य सब प्रतियों में है ।

दो स्थलों का पाठ (सं० ५, १२) केवल कोदवराम की प्रति में नहीं है, और सब प्रतियों में है ।

चार स्थलों का पाठ (सं० ३, ७, ९, ११) केवल कोदवराम की प्रति में है, अन्यत्र नहीं है । ये चार ऐसे स्थल हैं जहाँ सभी प्रतियों में सात सात पंक्ति की चौपाइयों में एक एक पंक्ति बढ़ाकर पूरे अयोध्यकांड भर में आठ पंक्ति का क्रम पूरा किया गया है ।

आरण्यकांड

माया सीता कर हरना ३।१६।८ (इहाँ राम जस जुगुति बनाई **से** चला गगन पथ आतुर भय रथ हाँकि न जाइ) ३।२३—३६८ ।

श्री बिरह ३।२२।१ (हा जगदेक बीर रघुराया **से** सो छबि सीता राखि उर रटति रहति हरि नाम) ३।२३—४०१ ।

रघुबीर बिरह ३।२३।१ (रघुपति अनुजहिं आवत देखी **से** मनुज चरित कर अज अविनासी) ३।२३।१७—४०३ ।

गीध क्रिया ३।२३।१८ (आगे परा गीधपति देखा **से** हरि तजि होहिं बिषय अनुरागी) ३।२६।३—४०४ ।

बधि कबंध ३।२६।४ (पुनि सीतहिं खोजत दोउ भाई **से** ताहि देइ गति राम उदारा) ३।२७।५—४०६ ।

सबरी गति ३।२७।५ (सबरी के आश्रम पगु धारा **से** महामंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहिं बिसारि) ३।३०—४०६ ।

जेहि बिधि गए सरोवर तीरा ३।३०।१ (चले राम त्यागा बन सोऊ **से** बैठे अनुज सहित रघुराया) ३।३४।२—४०८ ।

प्रभु नारद संवाद ३।३४।५ (बिरहवंत भगवंतहिं देखी **से** भजहि राम तजि कामु मदु करहि सदा सतसंग) ३।४०—४११ ।

किष्किंधाकांड

मारुति मिलन प्रसंग ४।०।१ (आगे चले बहुरि रघुराया **से** लिए दुवौ जन पीठि चढ़ाई) ४।३।५—४१६ ।

सुग्रीव मिताई ४।३।६ (जब सुग्रीव राम कहँ देखा **से** राम खगेस वेद अस गावत) ४।६।२४—४१७ ।

बालि प्रान कर भंग ४।६।२५ (लै सुग्रीव संग रघुनाथा **से** मृतक कर्म बिधिवत सब कीन्हा) ४।१०।८—४२० ।

कपि तिलक ४।१०।६ (राम कहा अनुजहिं समुझाई **से** पुर न जाउँ दसचारि बरीसा) ४।११।७—४२३ ।

सैल प्रवर्षन बास ४।११।८ (गत ग्रीषम बरषा रितु आई **से** सुख आसीन तहाँ दोउ भाई) ४।१२।६—४२३ ।

बरषा ४।१२।८ (बरषा काल मेघ नभ छाए **से** बरषा बिगत) ४।१५।१—४२४ ।

सरद ४।१५।१ (...सरद रितु आई **से** ...बरषा गत) १।४।१७—२४५ ।

राम रोष ४।१७।१ (सुधि न तात सीता कर पाई **से** धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना) ४।१७।८—४२६ ।

कपि त्रास ४।१८ (तब अनुजहिं समुझावा रघुपति करुना सींव **से**......आए बानर जूथ) ४।२१—४२७ ।

जेहि बिधि कपिपति कीस पठाए ४।२१ (नाना बरन सकल दिसि देखिय कीस बरूथ **से** कोउ मुनि मिलै ताहि सब घेरहिं) ४।२३।२—४२८ ।

बिबर प्रवेस ४।२३।३ (लागि तृषा अतिसय अकुलाने **से** एहि बिधि कथा कहहिं बहु भाँती) ४।२६।१—४२६ ।

कपिन्ह बहोरि मिला संपाती ४।२६।१ (गिरि कंदरा सुनी संपाती **से** अस कहि गरुड़ गीध जब गएऊ) ४।२८।५—४३२ ।

सुनि सब कथा समीर-कुमारा ४।२८।५ (तिन्ह के मन अति बिसमय भएऊ **से**......जासु नाम अघ खग बधिक) ४।३०—४३३ ।

सुंदरकांड

समीर-कुमारा नाँघन भएउ पयोधि ५।०।१ (जामवंत के बचन सुहाए **से** बारिध पार गएउ मति धीरा) ५।२।५—४३८ ।

लंका कपि प्रवेस जिमि कीन्हा ५।२।६ (तहाँ जाइ देखी बन सोभा **से** जुगुति बिभीषन सकल सुनाई) ५।७।५—४३६ ।

सीतहि धीरज जिमि दीन्हा ५।७।५ (चलेउ पवनसुत बिदा कराई **से** आसिष तव अमोघ बिख्याता) ५।१६।६—४४२ ।

बन उजारि ५।१६।७ (सुनहु मातु मोहिं अतिसय भूखा **से** कपि बंधन सुनि निसिचर धाए) ५।१६।५—४४७ ।

रावनहिं प्रबोधी ५।१६।५ (कौतुक लागि सभा सब आए **से** भगति बिबेक बिरति नय सानी) ५।२३।१—४४६ ।

पुर दहि ५।२३।२ (बोला बिहँसि महा अभिमानी **से** उलटि पलटि लंका सब जारी) ५।२५।८—४५१ ।

नाघेउ बहुरि पयोधी ५।२५।८ (कूदि परा पुनि सिंधु मँझारी **से** नाघि सिंधु एहि पारहिं आवा) ५।२७।२—४५२ ।

आए कपि सब जहँ रघुराई ५।२७।६ (चले हरषि रघुनायक पासा **से**······कुसल देखि पद कंज) ५।३३।५—४५४ ।

बैदेही की कुसल सुनाई ५।२६।१ (जामवंत कह सुनु रघुराया **से** जय जय जय कृपालु सुख कंदा) ५।३३।५—४५४ ।

सेन समेत जथा रघुबीरा। उतरे जाइ बारिनिधि तीरा ५।३३।६ (तब रघुपति कपिपतिहिं बुलावा **से** जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर) ५।३५—४५६ ।

मंदोदरी का समझाना (पहला) ५।३५।४ (दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी **से** भएउ कंत पर बिधि बिपरीता) ५।३६।६—४५८ ।

मिला बिभिषन जेहि बिधि आई ५।३७।२ (अवसर जानि बिभीषन आवा **से** प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा) ५।४६।२—४५६ ।

शुक सारन प्रसंग ५।५०।८ (जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आए **से** मुनि निज आश्रम कहुँ पगु धारा) ५।५६।१२—४६५ ।

सागर निग्रह ५।०६।३ (पुनि सर्वज्ञ सर्व उरबासी **से** सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंनु बिना जलजान) ५।६०—४६५ ।

लंकाकांड

सेतुबंधु ६।० (सिंधु बचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ **से** देखि कृपानिधि के मन भावा) ६।३।१—४७४ ।

कपि सेन जिमि उतरी सागर पार ६।३।२ (चली सेन कछु बरनि न जाई **से** सिंधु पार प्रभु डेरा कीन्हा) ६।४।३—४७६ ।

मंदोदरी का समझाना (दूसरा) ६।५।२ (मंदोदरी सुन्यो प्रभु आयौ **से** काल बिबस उपजा अभिमाना) ६।७।६—४७७ ।

रावन सभा ६।७।७ (सभा आइ मंत्रिन्ह तेहि बूझा **से** परम प्रबल रिपु सीस पर तद्यपि सोच न त्रास) ६।१०—४७८ ।

सुबेल सैल की बैठक ६।१०।१ (इहाँ सुबेल सैल रघु-बीरा **से** पवन तनय के बचन सुनि बिहँसे राम सुजान) ६।१२—४८० ।

मंदोदरी का समझाना (तीसरा) ६।१३।६ (मंदोदरी सोच उर बसेऊ **से** पियहिं काल बस मति भ्रम भएऊ) ६।१५।८—४८२ ।

जेहि विधि राम नगर निज आए ६।११६।६ (पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि **से** नगर निकट···विमान) ७।४—५६० ।

उत्तरकांड

राम अभिषेका ७।६।४ (गुरु बसिष्ट द्विज लिए बोलाई **से**···जहँ नृप राम बिराज) ७।२६—५७१ ।

पुर बरनन ७।२६।१ (नारदादि सनकादि मुनीसा **से** अनिमादिक सुख संपदा रही अवध सब छाइ) ७।२६—५८२ ।

नृपनीति ७।३० (एहि बिधि नगर नारि नर करहिं राम गुन गान **से** मैं सब कही मोरि मति जथा) ७।५१।१—५८५ ।

कथा समस्त १।३२।१ (कीन्ह प्रश्न जेहि भाँति भवानी **से** बिमल कथा हरिपद दायिनी भगति होइ सुनि अनपायनी) ७।५१।५—५६७ ।

उमा के पाँच प्रश्न ७।५३ (बिरति ज्ञान बिज्ञान दृढ़ रामचरन अति प्रेम **से** कहहु कवन बिधि भा संवाद) ७।५४।५—५६७ ।

(उमा के पाँचों प्रश्नों में प्रथम और द्वितीय का उत्तर शंकरजी ने नहीं दिया, उनका उत्तर भुसुंडि ने दिया।)

प्रश्न १ का उत्तर ७।६३ (प्रभु अपने अबिबेक ते बूझौं स्वामी तोहि **से** ताते मोहिं परम प्रिय स्वामी) ७।६५।४—६२३ ।

प्रश्न २ का उत्तर ७।६५।५ (तजौं न तन निज इच्छा मरना **से** संभुप्रसाद तात मैं पावा) ७।११२।११—६२४ ।

प्रश्न ३ का उत्तर ७।५५।१ (मैं जिमि कथा सुनी भवमोचनि **से** मैं जेहि समय गएउ खग पासा) ७।५७।१—५६६ ।

प्रश्न ४ का उत्तर ७।५७।२ (अब सो कथा सुनहु जेहि हेतु **से** गएउ बसइ जहँ बसइ भुसुंडी) ७।६१।१—६०० ।

प्रश्न ५ का उत्तर ७।६२।३ (करि तड़ाग मज्जन जलपाना **से** सुगम अगम......भ्रम होइ) ७।७२—६०३ ।

राम रहस्य ६।७३।१ (सुनु खगेस रघुपति प्रभुताई **से** तजि ममता मदमान भजिय सदा सीता रमन) ७।६२—६०६ ।

कलि धर्म ७।६७ (भए लोग सब मोह बस···**से**···तजि अधर्म रति धर्म कराही) ७।१०३।६—६२५ ।

ज्ञान भगति विवेचन ७।११४।८ (एक बात प्रभु पूछौ तोही **से**···देखु खगेस विचार) ७।१२०—६४१ ।

गरुड़ के सप्त प्रश्न ७।१२०।१ (जौ कृपाल मोहिं ऊपर भाऊ **से** अस बिचारि तजि संसय रामहिं भजहिं प्रबीन) ७।१२२—६४७ ।

गरुड़ भुसुंडि संवाद का उपसंहार ७।१२२।२ श्रुति सिद्धांत इहै उरगारी **से** गएउ गरुड़ बैकुंठ तब हृदय राखि रघुबीर ७।१२५—६५१ ।

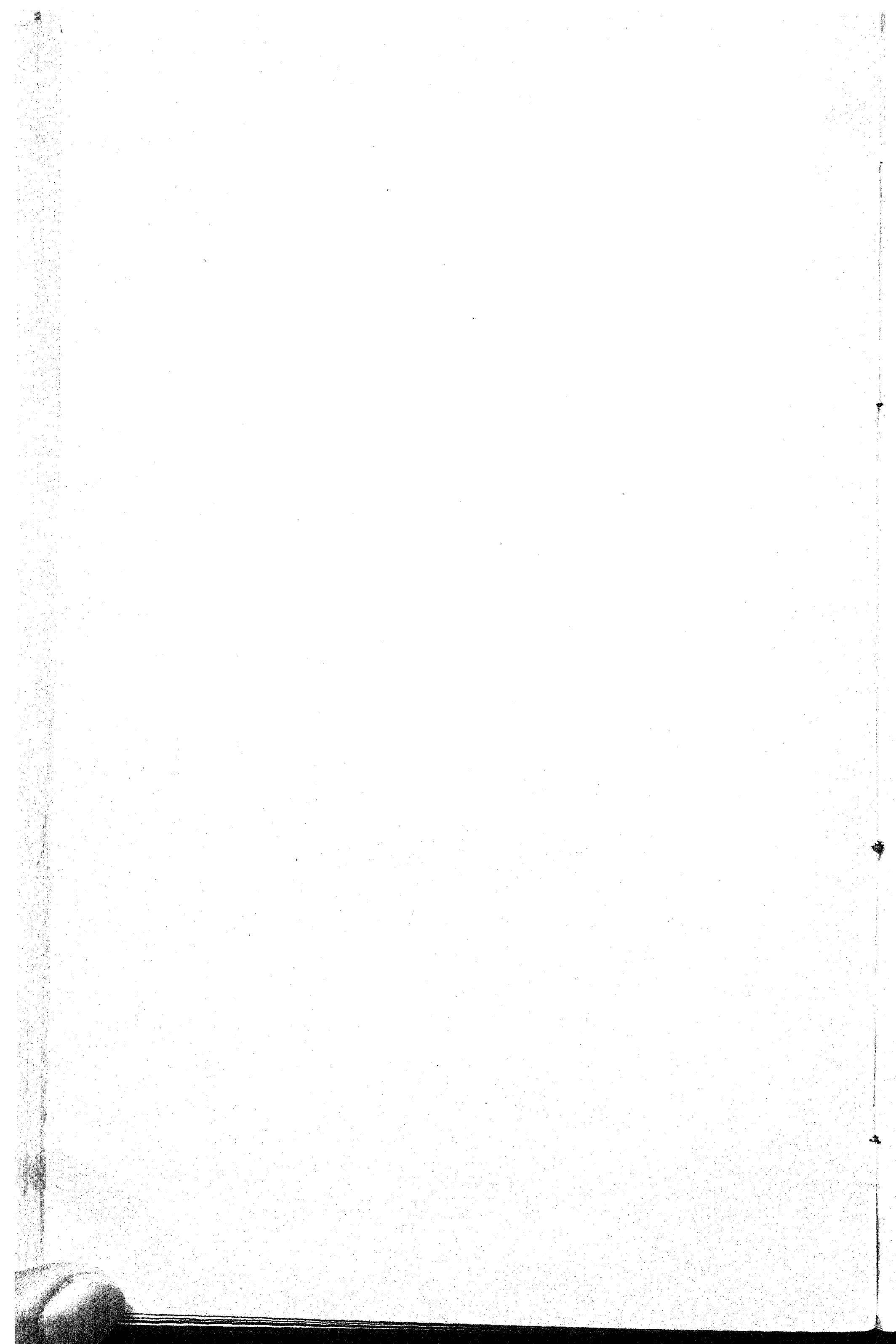
उमा शंभु संवाद का उपसंहार ७।१२५ (गिरिजा संत समागम सम न लाग कछु आन **से** उपजी राम भगति दृढ़ बीते सकल कलेस) ७।१२६—६५३ ।

भरद्वाज याज्ञवल्क्य-संवाद का उपसंहार ७।१२६।१ (यह सुभ संभु उमा संबादा **से** मैं यह पावन चरित सुहावा) ७।१२६।४—६५५ ।

इस लेख में मूल रामचरितमानस के समझने का प्रयत्न किया गया है। रामचरितमानस के भावी संपादक यदि इस ओर ध्यान देंगे तो क्षेपक-बहिष्कार स्वतः हो जायगा और मानस के मनन में, जिसका युग आ रहा है, सुविधा होगी ।

रामचरितमानस के संवाद्

[प्रस्तुत निबंध नागरीप्रचारिणी पत्रिका के वर्ष ५१, अंक १, (वैशाख, संवत् २००३) में प्रकाशित है। पत्रिका के संपादक मंडल के सदस्य थे श्री बिश्वनाथ प्रसाद मिश्र (संपादक)।]



'रामचरितमानस' में चार वक्ताओं की कथा का समावेश है। गोस्वामी तुलसीदास ने संतसमाज को, याज्ञवल्क्य ने भरद्वाज को, शिव ने पार्वती को और भुसुंडी ने गरुड़ को कथा सुनाई है। इन पृथक् पृथक् वक्ताओं की कथाएँ स्पष्ट होने पर भी एक दूसरे में इतनी ओतप्रोत या गुत्थमगुत्थ हैं कि साधारणतया अवगत नहीं होता कि कौन कथा कहाँ से कहाँ तक है और किस स्थान पर कौन वक्ता बोल रहा है।

बालकांड के आदि में गोस्वामी तुलसीदास ने कथापरंपरा इस प्रकार बताई है—

१।३०।३ संभु कीन्ह यह चरित सुहावा। बहुरि कृपा करि उमहि सुनावा।
सोइ सिव कागभुसुंडिहि दीन्हा। रामभगत अधिकारी चीन्हा।
तेहि सन जागबलिक पुनि पावा। तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा।

\+ \+ \+ \+

औरौ जे हरिभगत सुजाना। कहहिं सुनहिं समुझहिं बिधि नाना।
मैं पुनि निज गुर सन सुनी कथा सो सूकरखेत।
समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत॥
भाषाबंध करबि मैं सोई।......

गोस्वामी जी कहते हैं कि मैं उसी परंपरा से चली आई कथा को भाषा में कहूँगा—

१।३०।१ जागबलिक जो कथा सुहाई। भरद्वाज मुनिवरहिं सुनाई।
कहिहौं सोइ संबाद बखानी। सुनहु सकल सज्जन सुखु मानी।
अब रघुपति पद पंकरुह हिअँ धरि पाय प्रसाद।
कहौं जुगल मुनिवर्य कर मिलन सुभग संबाद॥

याज्ञवल्क्य जी कहते हैं—

१।४७।८ ऐसेइ संसय कीन्ह भवानी। महादेव तब कहा बखानी।
कहौं सो मति अनुहारि अब उमा संभु संबाद।
भएउ समय जेहि हेतु जेहि सुनु मुनि मिटिहि बिषाद॥

शिवजी कहते हैं—

१।१२०।११ सुनु सुभ कथा भवानि रामचरितमानस बिमल।
कहा भुसुंडि बखानि सुना बिहगनायक गरुड़॥

७।५५।१० ऐसिअ प्रस्न बिहंगपति कीन्हि काग सन जाइ।
सो सब सादर कहिहौं सुनहु उमा मन लाइ॥

भुसुंडी जी कहते हैं—

७।११३।११ रामचरित सर गुप्त सुहावा। संभु प्रसाद तात मैं पावा।
तोहि निज भगत राम कर जानी। ता ते मैं सब कहेउँ बखानी।

उपर्युक्त अवतरणों से स्पष्ट है कि गोस्वामी जी ने याज्ञवल्क्य-भरद्वाज-संवाद से, याज्ञवल्क्य ने शिव-पार्वती-संवाद से, शिव ने भुसुंडी-गरुड़-संवाद से और भुसुंडी ने शिव-पार्वती-संवाद से अपनी कथा की संगति मिलाई है। शिव भुसुंडी से और भुसुंडी शिव से कथाक्रम की संगति बतलाते हैं। इस रज्जुपाशन्याय का समाधान यह है कि 'रामचरितमानस' के मुख्य रचयिता तो शंकर ही हैं[1]। अन्य लोग तो उसके प्राप्तकर्ता मात्र हैं, कर्ता नहीं। सतीदहन के पश्चात् शिव जी घूमते घूमते सुमेरु पर्वत पर गए और वहाँ 'मराल तनु' धरकर उन्होंने भुसुंडी से रामकथा सुनी; इस प्रकार भुसुंडी से शिव का कथा सुनना सिद्ध होता है[2]। जब भुसुंडी जी शूद्र तन से उज्जैन गए तब शिवशाप से इन्हें 'अधगति' मिली थी और उन्हीं के आशीर्वाद से ब्राह्मण तन भी मिला, तब ये लोमश जी के आश्रम में गए और हठपूर्वक रामचरित सुना[3]। इस प्रकार शिव के प्रसाद से लोमश द्वारा भुसुंडी को रामचरित सुनने को मिला—

७।११३।६ मुनि मोहिं कछुक काल तहँ राखा। रामचरितमानस सब भाषा।

'रामचरितमानस' की उपमा कैलासस्थ भौगोलिक मानसरोवर से दी गई है। दोनों के रूपक का मिलान एक मनोरंजक मीमांसा है। यहाँ केवल

१—१।३०।३ संभु कीन्ह यह चरित सुहावा।
१।३५।१ रचि महेस निज मानस राखा। पाइ सुसमउ सिवा सन भाखा।

२—देखिए रामचरितमानस, उत्तरकांड ७।५६।१—७।५८।१

३—देखिए वही, ७।१०१।१—७।११३।१०

इतना ही कहना पर्याप्त है कि रूपक बहुत ही सुंदर, पूर्ण, विशद और सांग है। रूपक को छोड़कर जब हम,कथा भाग पर आते हैं तब वक्ताओं के अनुभव, आराधना और इष्ट के अनुरूप 'रामचरितमानस' के चार घाट मिलते हैं—

१।३६।१० सुठि सुंदर संबाद बर बिरचेउ बुद्धि बिचारि।
तेइ एहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि॥

तड़ागनिर्माण की शास्त्रानुकूल विधि में बताया गया है कि दक्षिण घाट सामान्य जनता, पश्चिम घाट विशिष्ट जनता, उत्तर घाट नारी और पूर्व घाट गो, गज आदि के उपयोग के लिये होता है।

(१) 'रामचरितमानस' के चारो संवादों में से याज्ञवल्क्य-भरद्वाज-संवाद दक्षिण घाट का प्रतीक है। इसमें कर्मकांड का प्रतिपादन किया गया है। इस संवाद में देवी, देवता, गो, विप्र, तीर्थ, संत आदि सभी की प्रशंसा की गई है, जिनके प्रति हिंदूसमाज पूज्यबुद्धि रखता चला आया है, और इन्हीं की कृपा एवं प्रसाद से 'मानस' के 'राम सीय जस सलिल सुधा सम'[1] की प्राप्ति कही गई। 'रामचरितमानस' में जहाँ कर्मकांड का वर्णन है, प्रकारांतर से उसका प्रतिपादन और उसके विविध अंगों का निरूपण है, वहाँ याज्ञवल्क्य-भरद्वाज-संवाद समझना चाहिए। इस संवाद की सभी उक्तियाँ कर्मकांड को ही सिद्ध करती हैं, इसका प्राक्कथन इस बात का साक्षी है। भरद्वाज ने पूछा 'राम कवन प्रभु पूछौं तोहीं', इसके उत्तर में याज्ञवल्क्य ने सीधे रामकथा न सुनाकर पहले शिवकथा सुनाई और अंत में कहा—

१।१०४।५ सिव पद कमल जिन्हहिं रति नाहीं। रामहिं ते सपनेहु न सुहाहीं॥
बिनु छल बिस्वनाथ पद नेहू। राम भगत कर लच्छन एहू॥
प्रथमहिं मैं कहि सिव चरित बूझा मरम तुम्हार।
सुचि सेवक तुम्ह राम के रहित समस्त बिकार॥

(२) शिव-पार्वती-संवाद पश्चिम घाट का प्रतीक है। इसे ज्ञान घाट कहते हैं। इसमें ज्ञान का प्रतिपादन किया गया है और विविध उक्तियों द्वारा जगत् को मिथ्या बताते हुए निर्विशेष ब्रह्म का निरूपण किया गया है।

१—मानस, १।३७।३.

इस संवाद के सभी सिद्धांत वाक्य ज्ञान की ओर संकेत करते हैं[1] और इसकी प्रारंभिक पंक्तियाँ इस प्रकार खुलती हैं—

झूठेउ सत्य जाहि बिनु जाने। जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचाने।
जेहि जाने जग जाइ हेराई। जागे जथा सपन भ्रम भाई॥

जिस प्रकार 'महाभारत' की कथा समाप्त होने पर बच रहे अनुभव एवं ज्ञान को व्यास जी ने 'शांति पर्व' में भर दिया, उसी प्रकार गोस्वामी जी ने मूल 'रामचरितमानस' कहने के उपरांत शेष ज्ञानवार्ता शंकर-पार्वती-संवाद के रूप में उत्तरकांड में कही।

(३) भुसुंडी-गरुड़-संवाद उत्तर घाट का प्रतीक है। इसे भक्ति-घाट कहते हैं। इसमें भक्ति का प्रतिपादन है, तथा 'अति अनन्य जे हरि के दासा। रटै नाम निसि दिन प्रति स्वासा' उन्हीं का इसमें प्रवेश है। इस संवाद के आमुख से अनन्यता टपकती है। कथा कहने के लिये गरुड़ का निवेदन सुनकर भुसुंडी न तो इधर उधर की भूमिका बाँधते हैं न अन्य देवी, देवताओं की वंदना करते हैं वरन् सीधे रघुनाथ जी के सामने चले जाते हैं—

७।६४।७ भा भुसुंडि मन परम उछाहा। लाग कहै रघुपति गुन गाहा।
प्रथमहिं अति अनुराग भवानी। रामचरित सर कहेसि बखानी॥

(४) पूर्व घाट गोस्वामी जी का है। इसे दीनताघाट कहते हैं। कर्म, ज्ञान, उपासनारहित, अन्य उपायशून्य, सब विधिहीन प्राणियों के कल्याणार्थ इस घाट की रचना हुई है। अपने अहंभाव को गला देने पर, 'खुदबीनी' को छोड़ परम भागवत हुए लोग ही इस घाट के अधिकारी होते हैं। ऐसे महात्माओं के लिये भगवान् उनका क्षोभ दूर करने के निमित्त कहते हैं— 'अस सज्जन मम उर बस कैसे। लोभी हृदय बसै धन जैसे।' इस संवाद की सभी उक्तियाँ दीनतापूर्ण हैं। जहाँ कहीं गोस्वामी जी 'सठ' या 'मन' को संबोधित कर कुछ कहते हैं वहाँ हृदय पिघल जाता है।

१—१।११७।१ निज भ्रम नहिं समुझहिं अज्ञानी। प्रभु पर मोह धरहिं जड़ प्रानी।
जथा गगन घन पटल निहारी। झाँपेउ भानु कहहिं कुबिचारी।
चितव जो लोचन अंगुलि लाए। प्रगट जुगल ससि तेहि के भाए।
उमा रामविषयक अस मोहा। नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा।
२।७२।४ गुर पितु मातु न जानौं काहू। कहौं सुभाउ नाथ पतिआहू।
जहँ लगि जगत सनेह सगाई। प्रीति प्रतीति निगमु निजु गाई।
मोरे सबहिं एक तुम्ह स्वामी।······

इन विविध संवादों में एक ही रामकथा कही गई है, इनमें रामचरित की एक ही अविच्छिन्न धारा का प्रवाह है, इसे गोस्वामी जी ने बड़े ही सूक्ष्म, सुंदर और कलात्मक ढंग से यत्रतत्र व्यक्त किया है। चारों संवादों से छन-कर आती हुई कथा को थोड़ी देर के लिये अलग रखकर जब हम संवादों के उपक्रम और उपसंहार की ओर, श्रोता और वक्ता के प्रश्नोत्तर की ओर, उनके आपसके मेल और संकेत की ओर ध्यान देते हैं तब तुलसी का कौशल प्रकट होता है। इन सब बारीकियों पर दृष्टि डालने से दो बातें स्पष्ट होती हैं। एक तो 'रामचरितमानस' के एक दूसरे से मिले विविध कथाप्रसंग अलग अलग बँट जाते हैं और यह अवगत होने लगता है कि कौन कथा कहाँ से प्रारंभ होकर कहाँ समाप्त हुई और दूसरे तुलसी की प्रबंधकाव्य-रचना की पटुता स्पष्ट होती है। किस कड़ी को कहाँ जोड़ना चाहिए जिसमें वह मूल कथा को आगे बढ़ाती हुई पूर्ण समन्वय और कलात्मक अवस्थान की रक्षा कर सके, इसे तुलसी खूब जानते थे।

भिन्न भिन्न संवादों में बिखरी हुई इस सामग्री को एकत्र करके अध्ययन और मनन में निम्नलिखित प्रश्नोत्तरी का संकलन सहायक होगा—

प्रश्न १—(१।५०) ब्रह्म जो व्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद।
सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत बेद॥
१।१०८ जौं नृप तनय तो ब्रह्म किमि नारि बिरह मति भोरि।
देखि चरित महिमा सुनत भ्रमत बुद्धि अति मोरि॥

उत्तर १।११२।८ गिरिजा सुनहु राम कै लीला···से १।१२०···संकर सहज सुजान।

प्रश्न २—१।१०९।४ प्रथम सो कारन कहहु बिचारी। निर्गुन ब्रह्म सगुन बपु धारी।

उत्तर १।१२०।१ सुनु गिरिजा हरि चरित सुहाए···से···१।१८७।६ यह सब रुचिर चरित मैं भाषा।

प्रश्न ३—१।१०६।५ पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा।

उत्तर १।१८८।६ अब सो सुनहु जो बीचहिं राखा··से··१।१९६ तुलसीदास के ईस।

प्रश्न ४—१।१०६।५ बाल चरित पुनि कहहु उदारा।
उत्तर १।१६६ १ कछुक दिवस बीते यहि भाँती···से···१।२०५।१ यह सब चरित कहा मैं गाई।

प्रश्न ५—१।१०९।६ कहहु जथा जानकी विवाही।
उत्तर १।२०५।१ अगिली कथा सुनहु मन लाई···से···१।३६१ तिन्ह कहँ सदा उछाह मंगलायतन रामजस।

प्रश्न ६—१।१०६।६ राज तजा सो दूषन काही।
उत्तर २। श्लोक वामांके च विभाति भूधर सुता···से···२।३२५ अवसि होइ भव रस बिरति।

प्रश्न ७—१।१०६।६ बन बसि कीन्हे चरित अपारा। कहहु नाथ···
उत्तर ३ श्लोक मूलं धर्मतरोर्विवेक जलधे···से···५।६० सिंधु बिना जलजान।

प्रश्न ८—१।१०६।७ कहहु नाथ जिमि रावन मारा।
उत्तर ६।० लव निमेष परवान जुग···से···६।१२१ नाहिन आन अधार।

प्रश्न ६—१।१०६।८ राज बैठि कीन्ही बहु लीला। सकल कहहु संकर सुखसीला।

उत्तर ७।श्लोक केकीकंठाभनीलं · से ७।४६···जन्म जन्म प्रभु पद कमल कबहु घटै जनि नेहु।

प्रश्न १०—१।११० बहुरि कहहु करुनायतन कीन्ह जो अचरज राम। प्रजा सहित रघुबंसमनि किमि गवने निज धाम॥
उत्तर ७।४६।२ हनूमान भरतादिक भ्राता···से ७।५१।१···मैं सब कही मोर मति जथा।

प्रश्न ११—१।११०।१ पुनि प्रभु कहहु सो तत्व बखानी। जेहि विज्ञान मगन मुनि ज्ञानी।
उत्तर इस प्रश्न का उत्तर सातों कांडों में यत्र तत्र बिखरा है।
प्रश्न १२—१।११०।२ भगति ज्ञान बिज्ञान बिरागा। पुनि सब बरनहु सहित विभागा।

उत्तर ७।११४।१५ ज्ञान बिराग जोग बिज्ञाना···से ७।१२०···देखु खगेस बिचारि।

प्रश्न १३—१।११०।३ औरौ राम रहस्य अनेका। कहहु नाथ अति विमल विवेका।

रहस्य का अर्थ है गोप्य विषय। कथा भाग के इस स्थल को सामान्य श्रोता की साधारण बुद्धि नहीं ग्रहण कर पाती, पर इसका ऐतिहासिक संघटन होता अवश्य है। जहाँ कहीं भक्तों पर विशेष कृपा करनी होती है, अथवा उनके 'प्रपंच माया प्रबल भय भ्रम अरति उच्चाट' का निवारण करना होता है, वहाँ 'कृपा' अथवा इसके अन्य पर्यायवाची शब्द देकर गोस्वामी जी ने 'रामचरितमानस' के प्रायः सभी कांडों में इस स्थल का संकेत किया है, जिनकी तालिका क्रमशः इस प्रकार है—

१–१।१९२ अद्भुत रूप बिचारी···निज आयुध भुज चारी।

२–१।१९४।८ कौतुक देखि पतंग भुलाना···से···१।१९५।१
यह रहस्य काहू नहिं जाना।

३–१।२००।८ देखि राम जननी अकुलानी···से १।२०१।८···
यह जनि कतहुँ कहहि सुनु माई।

४–१।२४०।४ जिन्ह कें रही भावना जैसी···से १ २४१।८
तेहि तस देखेउ कोसल राऊ।

५–१।२६०।७ लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े। काहु न लखा देख सब ठाढ़े।

६–१।३०४।७ जानीं सिय बरात पुर आई···से १।३०६।३···
सिय महिमा रघुनायक जानी।

७–२।२४३।१ आरत लोग रामु सब जाना···से २।२४३।४···
जिमि घट कोटि एक रबि छाहीं।

८–३।६ क मुनि समूह महँ बैठे सन्मुख सब को ओर।
सरद इंदु तन चितवत मानहुँ निकर चकोर।

९–३।१४ सुर मुनि सभय प्रभु देखि मायानाथ अति कौतुक कर्‌यौ।
देखहिं परस्पर राम करि संग्राम रिपुदल लरि मर्‌यौ॥

१०–३।१७ लछिमन गए बनहिं जब···से···
जो कछु चरित रचा भगवाना।

११–४।२१।१ वानर कटक उमा मैं देखा···से ४।२१।४···
विश्व रूप व्यापक रघुराई।

१२–७।५।४ प्रेमातुर सब लोग निहारी···से ७।५।७···
उमा मरम यह काहु न जाना।

१३–७।७८।४ भ्रम तें चकित राम मोहि देखा···से ७।८२
सुख बाहेर आएउँ सुनु मतिधीर।

१४–७।११६ यह रहस्य रघुनाथ कर बेगि न जानै कोइ।
जो जानै रघुपति कृपा सपनेहुँ मोह न होइ।

प्रश्न १४ १।११०।४ जो प्रभु मैं पूछा नहिं होई। सोउ दयाल जनि
राखहु गोई।

उत्तर १।१९५।३ औरौ एक कहौं निज चोरी···से १।१९५।६
कृपा राम कै जापर होई।

पार्वती के प्रश्न		गरुड़ के प्रश्न
(१) सो हरि भगति काग कहँ पाई। बिस्वनाथ मोहि कहहु बुझाई। ७।५३।८		
(२) राम परायन ग्यानरत, गुनागार मतिधीर। नाथ कहहु केहि कारन, पायउ काग सरीर॥ ७।५४	=	(१) ज्ञान बिरति बिज्ञान निवासा। रघुनायक के तुम्ह प्रिय दासा॥ कारन कवन देह यह पाई। तात सकल मोहिं कहहु बुझाई॥ ७।६३।३
(३) यह प्रभु चरित पवित्र सुहावा। कहहु कृपाल काग कहँ पावा॥ ७।५४।१	=	(२) राम चरित सर सुन्दर स्वामी। पाएहु कहहु कहाँ नभगामी। ७।६३।४

(३)

नाथ सुना मैं अस सिव पाहीं ।
महाप्रलयहु नास तव नाहीं ॥
तुम्हहि न व्यापत काल ,
अति कराल कारन कवन ।
मोहि सो कहहु कृपाल ,
ज्ञान प्रभाव कि जोग बल॥

७।६४

(४)

प्रभु तव आश्रम आए ,
मोर मोह भ्रम भाग ।
कारन कवन सो नाथ सब,
कहहु सहित अनुराग ॥[१]

७।६४

उत्तर ७।६४।१ गरुड़ गिरा सुनि हरषेउ कागा···से ७।११४।७···
सुनेउँ पुनीत राम गुन ग्रामा ।

प्रश्न ४—७।५४।२ तुम्ह केहि भाँति सुना मदनारी ।
कहहु मोहि अति कौतुक भारी ।

उत्तर ७।५५।१ मैं जिमि कथा सुनी भवमोचनि···से ७।५७।१···
मैं जेहि समय गएउँ खग पासा ।

१—पार्वती के इन तीन, तथा गरुड़ के चार प्रश्नों का समाधान उत्तरकांड के बीस दोहों में एक साथ किया गया है । ये प्रश्न प्रकारांतर से एक ही हैं और बने भी एक ही अवस्था में हैं; अर्थात् संपूर्ण रामकथा सुन लेने के बाद उधर गरुड़ के हृदय में एक ही प्रकार की जिज्ञासा का उदय होता है जिसका समावेश उपर्युक्त प्रश्नों में है ।

प्रश्न ५—७।५४।३ गरुड़ महा ज्ञानी गुनरासी ।
हरि सेवक अति निकट निवासी ।
तेहि केहि हेतु काग सन जाई ।
सुनी कथा मुनि निकर बिहाई ।

उत्तर ७।५७।२ अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू···से ७।६३···
नाथ कृतारथ भएउँ मैं तव दरसन खगराज ।

प्रश्न ६—७।५४।५ कहहु कवन बिधि भा संबादा ।
दोउ हरि भगत काग उरगादा ।

उत्तर ७।६३।१ सुनहु तात जेहि कारन आएउँ···से ७।६२।८···
राम रहस्य अनूपम जाना ।

भुसुंडी-गरुड़-संवाद[1]

प्रश्न ५—७।११४।११ ज्ञानहि भगतिहि अंतर केता ।
सकल कहहु प्रभु कृपानिकेता ।

उत्तर ७।११४।१२ सुनि उरगारि बचन सुखमाना···से ७।१२०···
देखु खगेस बिचारी ।

ज्ञान–७।११६।१ सुनहु नाथ यह अकथ कहानी···से ७।११६।१···
कहेउँ ज्ञान सिद्धांत बुझाई ।

भगति–७।११६।१ सुनहु भगति कै प्रभुताई···से ७।१२०
जय पाइय सो हरि भगति देखु खगेस बिचारि ।

गरुड़ के सप्त प्रश्न

प्रश्न ६—७।१२०।३ सब तें दुर्लभ कवन सरीरा ।

उत्तर ७।१२०।८ तात सुनहु सादर अति प्रीती···से ७।१२०।१२···
कर तें डारि परस मनि देहीं ।

प्रश्न ७—७।१२०।४ बड़ दुख कवन···

उत्तर ७।१२०।१३ नहिं दरिद्र सम दुख जगमाहीं ।

प्रश्न ८—७।१२०।४ ······कवन सुख भारी ।

१—इस संवाद के प्रथम चार प्रश्नों का उत्तर ऊपर कहे गए शिव-पार्वती-संवाद में देखिए ।

उत्तर ७।१२०।१३ संत मिलन सम सुख जग नाहीं ।

प्रश्न ९—७।१२०।५ संत असंत मरम तुम्ह जानहु ।
तिन्ह कर सहज सुभाव बखानहु ।

उत्तर ७।१२०।१४ पर उपकार बचन मन काया···से ७।१२०।२१···
बिस्व सुखद जिमि इंदु तमारी ।

प्रश्न १०—७।१२०।६ कवन पुन्य श्रुति बिदित बिसाला ।

उत्तर ७।१२०।२२ परम धरम स्रुति बिदित अहिंसा ।

प्रश्न ११—७।१२०।६ कहहु कवन अघ परम कराला ।

उत्तर ७।१२०।२२ पर निंदा सम अघ न गिरीसा···से ७।१२०।२७···
ते चमगादुर होइ अवतरहीं ॥

प्रश्न १२—७।१२०।७ मानस रोग कहहु समुझाई ।
तुम्ह सर्वज्ञ कृपा अधिकाई ।

उत्तर ७।१२०।२८ सुनहु तात अब मानस रोगा···से ७।१२१।११···
तब रह राम भगति उरछाई ।

इस प्रसंग को कुछ लोग कर्म, ज्ञान, भक्ति आदि घाटों के रूप में न देखकर गीता के चार प्रकार के भक्तों (राम भगत जग चारि प्रकारा[1] ।—आर्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी और ज्ञानी) के संतोषार्थ वर्णन किए गए नाम, रूप, लीला और धाम का निरूपण मानते हैं।

(१) पार्वती जी आर्त की श्रेणी में हैं। इन्हें लीला देखकर मोह हुआ था—

१।५०।४ चले जात सिव सती समेता । पुनि पुनि पुलकत कृपा निकेता ।
सती सो दसा संभु कर देखी । उर उपजा संदेह बिसेखी ।
संकर जगतबंद्य जगदीसा । सुर नर मुनि सब नावत सीसा ।
तिन्ह नृप सुतहिं कीन्ह परनामा । कहि सच्चिदानंद परधामा ।
भए मगन छबि तासु बिलोकी । अजहुँ प्रीति उर रहति न रोकी ।

ब्रह्म जो ब्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद ।
सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत बेद ॥

अस संसय मन भएउ अपारा । होइ न हृदय प्रबोध प्रचारा ।

१—दे० मानस १।२१।६

उन्होंने प्रश्न पूछा—

१।१०८ जौं नृप तनय त ब्रह्म किमि नारि बिरह मति भोरि।
देखि चरित महिमा सुनत भ्रमति बुद्धि अति मोरि ॥

१।१०६।३ अति आरति पूछउँ सुरराया। रघुपति कथा कहहु करि दाया ॥

यह वाक्य शिव-पार्वती-संवाद के लीला प्रकरण का उपक्रम है। शंकर जी लीला के उपासक हैं—

१।१६५।४ कागभुसुंडि संग हम दोऊ। मनुज रूप जानै नहिं कोऊ।
परमानंद प्रेम सुख फूले। बीथिन्ह फिरहिं मगन मन भूले।

६।८०।२ हमहूँ रहे उमा तेहि संगा। देखत राम चरित रन रंगा।

कथा सुन लेने पर पार्वती जी कहती हैं—

७।१२६ मैं कृतकृत्य भयउँ अब तव प्रसाद बिस्वेस।
राम भगति दृढ़ उपजी बीते सकल कलेस ॥

लीला पक्ष के संवाद का यह उपसंहार है। पार्वती जी को लीला पक्ष में जो मोह हुआ था वह लीला के उपासक शंकर भगवान् से कथा सुन लेने पर नष्ट हो गया क्योंकि रामचरित देखने से मोह उत्पन्न होता है और उसके सुनने से 'संसय सोक मोह भ्रम' का नाश हो जाता है।

(२) गरुड़ जी जिज्ञासु की श्रेणी के हैं। इन्हें देखकर मोह हुआ था—

६।७२।११ ब्याल पास बस भएउ खरारी। स्वबस अनंत एक अबिकारी।
बंधन काटि गएउ उरगादा। उपजा हृदय प्रचंड बिबादा।
प्रभु बंधन समुझत बहु भाँती। करत बिचार उरग आराती।
ब्यापक ब्रह्म बिरज बागीसा। माया मोह पार परमीसा।
सो अवतरा सुनेउ जग माँही। देखेउँ सो प्रभाव कछु नाहीं।
भवबंधन ते छूटहिं नर जपि जाकर नाम।
खर्ब निसाचर बाँधेउ नागपास सोइ राम ॥

७।५८ नाना भाँति मनहिं समुझावा। प्रगट न ग्यान हृदय भ्रम छावा।

भुसुंडी जी बालरूप के उपासक हैं—

७।७४।५ इष्टदेव मम बालक रामा। सोभा बपुष कोटि सत कामा।

७।१००।१४ रामचरन बारिज जब देखौं। तब निज जन्म सुफल करि लेखौं।

७।११०।११ भरि लोचन बिलोकि अवधेसा। तब सुनिहौं निर्गुन उपदेसा।

अपने आचार्य द्वारा कथा सुन लेने पर गरुड़ की बुद्धि समाहित हो गई और हृदय में रामरूप रखकर वे अपने स्थान को गए—

७।१२५ तासु चरन सिर नाइ करि प्रेम सहित मतिधीर।
गएउ गरुड़ बैकुंठ तब हृदय राखि रघुबीर॥

(३) अर्थार्थी के रूप में गोसाईं तुलसीदास जी हैं। अर्थार्थी सुख चाहता है। 'स्वांतःसुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा…' इस बात का उदाहरण है। इन्होंने नाम का बहुत विशद निरूपण किया है। नाम जपने का प्रभाव भी ऐसा है कि 'मिटहि कुसंकट होहिं सुखारी[1]।' उपसंहार में गोस्वामी जी कहते हैं—'पायो परम विश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूँ।'[2]

(४) धाम के उपासक भरद्वाज जी हैं, जो अपना स्थान छोड़कर कहीं नहीं जाते। देश देशांतर से लोग उन्हीं के पास आकर—

१।४४ ब्रह्म निरूपन धर्म बिधि बरनहिं तत्व बिभाग।
कहहिं भगति भगवंत कर संयुत ज्ञान बिराग॥

अन्य मोहधारियों को अपना मोह निवारण करने के लिये अन्यत्र जाना पड़ा था—

१।१०६।२ पारवती भल अवसर जानी। गईं संभु पहँ मातु भवानी।
७।६२।१ गएउ गरुड़ जहँ बसै भुसुंडी। मति अकुंठ हरिभगति अखंडी।

परंतु भरद्वाज जी स्वयं वक्ता को ही अपने आश्रम में खींच लाते हैं और उसे इस प्रकार अचल रूप से स्थापित कर देते हैं कि उसका जाना कहीं नहीं लिखा—

१।४४।४ जागबलिक मुनि परम बिबेकी। भरद्वाज राखे पद टेकी।

भरद्वाज जी चतुर्थ प्रकार के ज्ञानी भक्त हैं—

१।४३। भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा। तिन्हहिं राम पद अति अनुरागा।
तापस सम दम दया निधाना। परमारथ पथ परम सुजाना।

१—दे० मानस, १।२१।९
२—वही, ७।१३०

कथा सुनते इन्हें कहीं संशय या भ्रम नहीं हुआ था। ये अचल श्रोता हैं और इनके यहाँ कथा की आवृत्ति होती ही रहती है--'प्रति संवत अस होइ आनंदा' कथा का आरंभ होकर अंत नहीं होता[1]।

---

[1] द्रष्टव्य 'रामचरितमानस के संवाद' लेखक श्री चंद्रबली पांडेय एम० ए०, 'पत्रिका' भाग १६, अंक २ (संवत् १९९२) महत्वपूर्ण होने के कारण लेख द्रष्टव्य है। इसमें रामचरितमानस के प्रबंधों और संवादों में परंपरा के पालन के साथ ही नवीनता के संनिवेश, भक्तिरूपी राजमार्ग को निर्मल और स्वच्छ बनाए रखने के लिये सवादों के विधान, ज्ञान-कर्म-व्यवस्थित भक्ति-निरूपण के अर्थ इनकी रचना, संमिलित तथा पृथक रूप से इनकी विशेषता, प्रत्येक संवाद की योजना के लक्ष्य आदि की मीमांसा की गई है।

परिशिष्ट

१—क

रामचरितमानस

[इस परिशिष्ट में मानस के उन विशेष संस्करणों का लघु परिचय है जो चौबे जी के निधन के उपरांत प्रकाशित हुए ।]

अपने गहन अध्ययन, सतत अध्यवसाय, गंभीर चिंतन एवं अथक अनुसंधान के आधार पर मानसमराल चौबे जी ने रामचरित मानस का संपादन किया । इस पुस्तक में प्रस्तुत निबंध उस संपादन के मूलाधार हैं। उनके जीवनकाल में उनके द्वारा संपादित मानस के कुछ कांड मात्र उनकी देख-रेख में प्रकाशित हो सके थे और उनके द्वारा संपादित संपूर्ण मानस का प्रकाशन संवत् २००५ वि० में नागरीप्रचारिणी सभा से प्रकाशित हुआ। उसका प्रकाशकीय जो मानस संपादन के क्षेत्र में उनकी विमल कीर्ति का परिचायक है, यहाँ अविकल दिया जा रहा है ।

रामचरितमानस के इस संस्करण के संपादक मानसमराल स्व० श्री शंभुनारायण जी चौबे की धुन, निरति और लगन का अनुभव वे ही कर सकते हैं जिन्होंने उनको इस रामकाज में दिन रात एक करते और आपा मिटाते देखा है । इस निष्काम अध्यवसाय का फल राष्ट्र को देने से पूर्व ही उनके चल बसने से जो क्षति हुई है वह कहाँ पूरी होने की ? और न ऐसा 'रतन' कभी मिलने का । निःस्व होते हुए भी जो नित्य निरंतर निःस्वार्थ रहा, जो मूर्तिमान्—

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च ।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ॥
समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः ।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः संगविवर्जितः ॥

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येनकेनचित्—था, वही मानस के कार्य का अधिकारी था, वही, वही ।

फिर भी, क्या कहा जाय 'कालस्य कुटिला गतिः' को कि वे अपने इस भगीरथप्रयत्न के मुद्रण का आरंभमात्र देख सके; अभी बालकांड के दो ही तीन फर्मे छपे थे कि वे न रहे ।

मानस के इस संस्करण के पाठनिर्धारण में उन्होंने निम्नांकित पाँच प्रतियों का उपयोग किया है। पाठभेद में इन प्रतियों का इन्हीं संख्याओं से निर्देश हुआ है—

१. श्रावणकुंज, अयोध्यावाली १६६१ की प्रति।

२. राजापुरवाली अयोध्याकांड की प्रति।

३. १७१० वाली संपूर्ण प्रति जो इस समय काशीनरेश के सरस्वती-भंडार में है।

४. १७२१ की प्रति जो अधुना भारत कलाभवन, काशी में है। इसे तथा १७६२ वाली प्रति को स्व० चौबे जी ने खोज निकाला और उन्हीं की कृपा से अब ये भारतकलाभवन में सुरक्षित हैं।

५. १७६२ की संपूर्ण प्रति।

६. मिर्जापुर के प्रसिद्ध रामायणी श्री रामगुलाम जी के शिष्य छक्कनलाल जी की प्रति की प्रतिलिपि, जिसे म० म० पं० सुधाकर द्विवेदी के पिता ने प्रस्तुत किया था।

अब तक मानस के जो भी प्रामाणिक संस्करण प्रकाशित हुए हैं उन सब में प्रायः इन्हीं प्रतियों वा इन पर आधृत प्रतियों का उपयोग किया गया है। किंतु प्रस्तुत संग्रह की विशेषता यह है कि इसके संपादक स्वर्गीय चौबे जी ने बहुत प्रतिकूल परिस्थितियों में विशेष परिश्रमपूर्वक उक्त सभी प्रतियों से स्वयं अक्षर अक्षर मिलाकर अपने पाठ निर्धारित किए। अन्य संपादकों ने या तो भ्रामक प्रतिलिपियों का उपयोग किया वा उनके पूर्ववर्ती संपादकों ने जो भ्रामक पाठ दिए थे उन्हीं को लेकर पाठ निर्धारित किए। इस कारण अधिकांश संस्करण वैज्ञानिक दृष्टि से अशुद्ध रह गए हैं।

श्रावणकुंज वाली प्रति में कुछ हेरफेर किया गया है। राजापुरवाली प्रति में भी अनेक छूटें हैं। यद्यपि पाठ की दृष्टि तथा वर्तनी की एकरूपता की दृष्टि से यह प्रति विशेष महत्व की है पर इसके लेखक को, जान पड़ता है, पंक्ति छोड़ जाने की बान थी जिस कारण इसमें अनेक भ्रम उत्पन्न हुए।

इसी प्रकार काशीनरेश के सरस्वती भंडारवाली, १७१० वि० की प्रति में अनेक पन्ने जीर्ण होने के कारण बदल दिए गए हैं और उनके पाठ किसी इधर वाली प्रति से लिए गए हैं जो सर्वथा अमान्य हैं।

१७२१ वि० वाली प्रति बहुत दिनों तक अज्ञातवास में रही। प्रसिद्ध मानस-प्रेमी श्री भागवतदास ने, जिन्होंने मानस के प्रामाणिक संस्करण निकालने का

प्रथम प्रयास किया, इस प्रति का उल्लेख किया है और इसे अपनी प्रति का आधार माना है। इसकी प्रतिलिपियों से ही लोग काम चलाते रहे। ये प्रतिलिपियाँ भ्रामक हैं, क्योंकि मूल पोथी पर कई संशोधकों ने मनमाने संशोधन कर डाले थे जिन्हें प्रतिलिपिकारों ने तद्वत् ग्रहण किया।

१७६२ वि० वाली प्रति पौने सोलह आने १७२१ वाली प्रति की अनुगामिनी है। एक प्रतिशत में वह जहाँ १७२१ वि० वाली प्रति से भिन्न होती है वहाँ ऐसे सुंदर पाठ देती है कि उन्हें स्वीकार करना पड़ता है।

रामगुलाम जी की धारा श्रावणकुंजवाली धारा से अलग प्रतीत होती है, और ऐसा जान पड़ता है कि यह धारा उस समुदाय की थी जिसने मानस को अपने जान प्रांजल रूप देना चाहा है। क्षेपक तो उन्होंने नहीं जोड़े पर अपना पांडित्य अवश्य लगाया। छक्कनलालवाली प्रति में पीछे से किसी ने ऐसे संशोधन कर दिए हैं जो १७२१ वाली प्रति के निकट हैं अर्थात् वह रामगुलाम जी वाली परंपरा परिवर्तित कर दी गई है।

जिन अन्य प्रतियों का उपयोग मानस के दूसरे संपादकों ने किया है उनमें सर्वश्री बाबा रघुनाथदास, बंदन पाठक और कोदवराम की मुद्रित प्रतियाँ उल्लेखनीय हैं। इनमें से पूर्वोक्त दो प्रतियाँ रामगुलाम जी की परंपरा में हैं; फलतः छक्कनलाल की प्रति से इतनी समानता रखती हैं कि उनका अंतर्भाव उसमें हो जाता है। शेषोक्त कोदवराम की प्रति, जो गोसाईं जी की मूल परंपरा में बतलाई जाती है, जितनी बार मुद्रित हुई उसमें पाठपरिवर्तन होते गए। साथ ही उसकी मूल प्रति के कभी दर्शन न हुए। अतएव परिशोधन में उसका उपयोग करना उचित न समझा गया।

उक्त छह प्रतियों से प्रत्येक पाठभेद आधुनिक संपादनशैली के अनुसार तुलनात्मक रीति पर रजिस्टरों पर चढ़ाया गया और फिर उसके गुण अवगुण पर ही विचार नहीं किया गया, प्रत्युत यह भी पाया गया कि प्रति १, ३, ४ और ५ किसी एक मूल प्रति पर अवलंबित हैं। किंतु उस मूल प्रति में ही समय समय पर परिवर्तन किए गए। जिनसे शाखाभेद उत्पन्न हुआ।

ऐसा अनुमान होता है कि गोस्वामी जी ने ही समय समय पर ये परिवर्तन किए। यदि मानस की रचना के लिये बारह वर्ष का समय रख लिया जाय, जो अतिरिक्त लंबा समय है, तो 'संवत् सोरह सौ इकतीसा' से चलकर उसकी परिसमाप्ति १६४३ वि० के लगभग हुई होगी, अर्थात् इसके उपरांत गोस्वामी जी लगभग चालीस वर्ष विद्यमान रहे। यह असंभव है कि अपनी

इस स्वान्तःसुखाय कृति का वे नियमपूर्वक पारायण न करते रहे हों। ऐसे पारायणों में कवि के लिये नई सूझ का होना स्वाभाविक है, फलतः यह जान पड़ता है कि १७६२ वाली प्रति में जो पाठ हैं वे ही गोस्वामी जी के अंतिम पाठ हैं क्योंकि बादवाली प्रतियों में भक्तवृंद ने जो हेरफेर किए हैं उनमें वह स्वारस्य नहीं है जो स्वयम् कवि के परिवर्तन में।

इसी दृष्टि से स्व० चौबे जी ने अधिकतर ऐसे पाठों को मूल में स्थान दिया है। फिर भी वाचकों को सब पाठ उपलब्ध हो जायँ इसलिये सभी पाठांतर टिप्पणी में दे दिए गए हैं, जिनका पाठनिर्देश उक्त क्रमिक संख्या के अनुसार है। इन टिप्पणियों के संबंध में यह बात विश्वास के साथ कही जा सकती है कि तद् तद् प्रतियों के जो रूप इनमें दिए गए हैं वे ही मान्य हैं, अन्य संस्करणों में यदि उनका कोई दूसरा रूप दिया गया है तो प्रमादवश ही।

अवधी के ह्रस्व एकार और ओकार के लिये ` तथा ` का प्रयोग भी इस संस्करण की नवीनता है। मानस का पाठ करनेवालों विशेषतः अन्य भाषा-भाषियों को निश्चय ही इससे बहुत सुविधा होगी।

वर्तनी के संबंध में पुरानी प्रतियों का ही अनुसरण किया गया है। उनकी एकरूपता अगले संस्करण तक के लिये स्थगित कर दी गई थी। किंतु जैसा आरंभ में कह चुके हैं हमारे दुर्भाग्यवश चौबे जी पहले दो तीन फार्म की ही छपाई देख सके कि स्वजनों के हृदय में सदा हरा रहनेवाला घाव छोड़कर महाप्रस्थान कर गए। बिना अत्युक्ति के, मानस विषयक अतुल, असीम एवं अगाध ज्ञान उनके संग चला गया। अतः वह दूसरा संस्करणवाला काम अनिश्चित काल के लिये टल गया। इसी प्रकार संपादनसंबंधी विस्तृत भूमिका भी जिसकी पांडुलिपि वे बहुत कुछ तैयार कर चुके थे, नहीं दी जा सकी, क्योंकि बहुत खोजने पर भी उसका अभी तक पता नहीं लग सका। उसी के अभाव में इन पंक्तियों द्वारा उस दिवंगत आत्मा के महत् कार्य का कुछ परिचय देने की चेष्टा की गई है।

खेद, जिस काम के लिये दिन रात एककर उन्होंने अपने को मिटा दिया था उसे वे पूरा न देख सके। वे जो कार्य अधूरा छोड़ गए उसकी पूर्ति राम-अधीन है। फिर भी प्रयत्न किया जायगा कि उनके कार्य के वैज्ञानिक अंश का विस्तृत परिचय लोक के समक्ष उपस्थित किया जाय। प्रार्थना है कि भगवान् इस संकल्प को पूरा करें।

१—ख

रामचरितमानस-विजया टीका

मानसराजहंस पं० विजयानंद त्रिपाठी की श्रीरामचरित मानस की विजया टीका संवत् २०११ (सन् १९५५ ई०) में मोतीलाल बनारसीदास के यहाँ से तीन भागों में प्रकाशित हुई।

प्रथम भाग में, रामचरित मानस के भाष्यकार की जीवनी, प्रस्तावना, विस्तृत विषयानुक्रमणिका, बालकांड (प्रथम सोपान) मूल, अर्थ एवं विस्तृत व्याख्या; दूसरे भाग में, विस्तृत विषयानुक्रमणिका, अयोध्याकांड (द्वितीय सोपान), अरण्यकांड (तृतीय सोपान) अर्थ एवं विस्तृत व्याख्या सहित और तीसरे भाग में, विस्तृत विषयानुक्रमणिका, किष्किंधाकांड (चतुर्थ सोपान), सुंदरकांड (पंचम सोपान), लंकाकांड (षष्ठ सोपान), उत्तरकांड (सप्तम सोपान) अर्थ एवं विस्तृत व्याख्या सहित लगभग दो हजार से अधिक रायल आकार के पृष्ठों में प्रस्तुत है।

इसके पाठ के संबंध में त्रिपाठीजी ने लिखा है—'मूल पाठ मैंने अपने उस संस्करण के अनुसार रक्खा है, जो संवत् १९९३ वि० में लीडर प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हो चुका है। चौबेजी ने लीडर प्रेसवाली प्रति के संबंध में पृष्ठ १९ पर निवेदन किया है। पाठभेद के संबंध में त्रिपाठीजी का सिद्धांत उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार है—

'एक बात और कहनी है। आज से सत्तर वर्ष पहिले तक लोग हिंदी की वर्णमाला को संस्कृत की वर्णमाला से कुछ भिन्न सी मानते थे, और लिखने में उन्हीं अक्षरों का प्रयोग करते थे जो हिंदी के सुखोच्चार्य्य शब्द लिखने के लिये पर्याप्त थे। श्री गोस्वामीजी ने भी उसी परिपाटी को अंगीकार किया था, पर अब प्रवाह दूसरा बह उठा है, संस्कृत शब्दों का शुद्ध रूप भाषा में लिखा तथा बोला जाता है। परंतु प्राचीन भाषा की रक्षा के लिये मूल में शब्दों के वे ही रूप रक्खे गए हैं, जिनमें ग्रंथकार ने उनका प्रयोग किया, केवल ष कार को उन स्थलों से हटा दिया गया है जहाँ वह ख कार का भी बोधक बन बैठा था। शब्द के रूप में भी कहीं कहीं विकल्प

से काम लिया गया है। उच्चारण सादृश्य से 'औ', 'अऊ', 'ऐ', 'अइ', 'ये', 'ए' में कोई भेद नहीं माना गया है। किसी एक का वहिष्कार न करके, यथासाध्य प्राचीन प्रतियों के प्रयोग का ही अनुसरण किया है। समस्त पदों में बार बार योजिका (Hyphen) का प्रयोग करके उन्हें गूँथने की चेष्टा मैंने नहीं की है। सामासिक संज्ञाओं के समस्यमान पद तो सटाकर रक्खे हैं, और शेष समासों के पद स्वतंत्र ही छोड़ दिये हैं जैसे वे प्राचीन प्रतियों में मिलते हैं। ऐसे शब्द सटाकर लिखे बिना भी अविभक्तिक पदों के समान अपना अर्थ स्पष्ट ही प्रकट कर देते हैं।'

१—ग

मानसांक (गीता प्रेस, गोरखपुर)

संवत् १९९५ वि० में 'कल्याण' का मानसांक प्रकाशित हुआ। इसका पाठ श्रावणकुंज का बालकांड (संवत् १६६१), राजापुर का अयोध्याकांड, दुलही का सुंदर कांड (संवत् १६७२) और शेष चार कांडों का भागवतदासजी की प्रति (दे० पू०–) में राजापुर की प्रति के व्याकरण के अनुसार था। श्रीचिम्मन लाल गोस्वामी एवं श्रीनंददुलारे वाजपेयी ने श्रीहनुमान प्रसाद पोद्दार के संपादन में इसे प्रस्तुत किया। इसमें दिया गया भावार्थ संपादक का है जिसका संशोधन संपादन भी गोस्वामीजी एवं वाजपेयीजी का है।

यद्यपि इसमें दोहे की संख्या का क्रम श्रावण कुंज की प्रति के अनुसार है तो भी दोहों के समूह में जहाँ उस प्रति में अंतिम दोहे पर संख्या दी गई है वहाँ इस प्रति में समूह के प्रत्येक दोहे पर वही संख्या देकर (क) (ख) से पृथक् किया गया है। इसमें तद्भव शब्दों का रूप ज्यों का त्यों रखा गया है और राजापुर की प्रति के अनुसार उपलब्ध नियमों का यथा· संज्ञा के अकारांत पुलिंग शब्दों के कर्त्ता तथा कर्म कारक के विभक्तिहीन एक वचन के अकारांत पदों को उकारांत करना, आदरसूचक व्यक्तिवाचक संज्ञा के साथ बहुवचन की क्रिया रखते हुए उसे भी उकारांत करना तथा जहाँ कर्मवाच्य के कर्त्ता का प्रयोग तृतीया में और कर्म का प्रथमा विभक्ति में हुआ है, यही प्रयोग स्त्री लिंग में उकारांत एवं अकारांत शब्दों में करना, संज्ञा के समान प्रयुक्त विशेषणों के अंतिम प्रकार को उठाकर लिखना, तुक के लिये अकार को उकार करना। एक और

सब विशेषण शब्दों का उकारांत प्रयोग करने का यत्न किया गया है। इसमें उकारांत को अकारांत लिखने का यत्न प्राचीन पोथियों के आधार पर किया गया है। यह पद्धति अंत्याक्षरों में 'इ' के संबंध में भी ग्रहण की गई है।

इसमें संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्दों में करण तथा अधिकरण कारक को जताने के लिये सानुनासिक प्रयोग का नियम अपनाया गया है। कर्त्ता में सानुनासिक प्रयोग वहाँ किया गया है जहाँ कर्मवाच्य में वह तृतीया विभक्ति में प्रयुक्त होता है। संबंध कारक जहाँ विशेषण रूप में आया है वहाँ भी आदि विभक्तिचिह्नों को सानुनासिक रखा गया है। कृदंतों का जहाँ क्रिया विशेषण रूप में प्रयोग हुआ है वहाँ और ईकारांत एवं उकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के कर्त्ता एवं कर्म कारक के बहुवचनांत प्रयोग भी सानुनासिक हैं। ऐसा करते समय उच्चारण की सहजता का ध्यान भी संपादकों ने रखा है। संपादकों ने आदि अनुनासिक पंचम वर्णों में चंद्रबिंदु अनुस्वार का प्रयोग प्रचीन प्रतियों के आधार पर नहीं किया है।

क से लेकर प वर्ग के लिये बहुधा प्राचीन पोथियों के आधार पर पहले अनुस्वार के आधार पर अनुस्वार का ही प्रयोग किया गया है।

यह स्पष्ट है कि उपरोक्त तथा अन्य व्याकरण संस्कार संबंधी इस दृष्टि से प्रयुक्त किया गया है कि व्याकरणसंमत रीति से शुद्ध पाठ प्रस्तुत किया जा सके।

मानसांक में डबल क्राउन अठपेजी आकार के ८०० से अधिक पृष्ठों में मानस और उसकी टीका है तथा लगभग ३०० पृष्ठों में अनेक विद्वानों के मानस से संबद्ध महत्वपूर्ण विषयों पर लेख हैं।



रामचरित मानस (काशिराज संस्करण)

सर्वभारतीय कशोराजन्यास ट्रस्ट से श्रीविश्वनाथ प्रसाद मिश्र के संपादन में रामचरितमानस के काशीराज संस्करण का प्रकाशन सन् १९६२ ई० में हुआ। इसके संपादन का आधार मानस की निम्नांकित प्रतियाँ हैं —

१. संवत् १८७१ की बड़इया (पटना) की प्रति।
२. संवत् १७०४ की सरस्वती भंडार, रामनगर दुर्ग, वाराणसी की प्रति।
३. संवत् १७०० की प्रति के आधार पर संवत् १९५५ में खड्ग विलास प्रेस, पटना से प्रकाशित 'परिचर्या परिशिष्ट प्रकाश'।
४. संवत् १७१४ की प्रति की संवत् १८७५ में हुई अनुलिपि।
५. संवत् १७४३ की महमदा (बिहार) की प्रति।
६. संवत् १७६८ से १७८१ मनसाराम लिपिक की प्रति, रामनगर दुर्ग वाराणसी।
७. संवत् १७७१ की सरस्वती भंडार, उदयपुर की प्रति।
८. संवत् १७७१ की सरस्वती भंडार, काँकरौली की प्रति।
९. संवत् १७७८ की ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन की पटनीमल की प्रति।
१०. संवत् १७८३ की वाराहमिहिराचार्य पुस्तकालय, चौक, पटना की प्रति।

इन संपूर्ण मानस की प्रतियों के अतिरिक्त निम्नांकित खंडित प्रतियों या कांडों की प्रतियों का आधार भी ग्रहण किया गया है —

संवत् १७५९ की पेनसिलवानिया विश्वविद्यालय, अमेरिका, की प्रति सवंत् १७६३ की अरण्यकांड रहित श्रीनागेश उपाध्याय से प्राप्त प्रति, रामनगर दुर्ग, वाराणसी। बालकांड—संवत् १७५७ की जवाहरलाल चतुर्वेदी, मथुरा की प्रति।
राजापुर की अयोध्याकांड प्रति, संवत् १७५० सरस्वती भंडार, उदयपुर।
संवत् १७७५ की सरस्वती भंडार, रामनगर दुर्ग की प्रति।
संवत् १७७७ की नागरीप्रचारिणी सभा, काशी की प्रति।

संवत् १७६२ की अरण्यकांड, तुलसी संग्रहालय, रामवन, सतना की प्रति। संवत् १७७८ की किष्किंधाकांड, रामबन, सतना की प्रति।
संवत् १६७२ सुंदरकांड, दुलही ग्राम (लखीमपुर खीरी) की प्रति।
संवत् १७७६ मार्कण्डेय मिश्र, सरस्वती भंडार, रामनगर की प्रति।
संवत् १७३७ उत्तरकांड, पुरातत्वमंदिर, जोधपुर की प्रति।
संवत् १७५६ लंकाकांड, याज्ञिक संग्रह, नागरीप्रचारिणी सभा, की प्रति।

बालकांड के लिये कुंज और 'रघु' को अयोध्याकांड में 'राजा' और 'रघु', विद्यमान पाठों के लिये प्रेमनारायण, अरण्यकांड और किष्किंधाकांड में रघु की बढ़ोत्तरी के परित्याग पर वर्तनी की दृष्टि से उसका उपयोग सुंदरकांड में 'लघु' एवं 'दुलही', लंकाकांड में सं० १७१४ की प्रति को बाल, नाग एवं मन के आधार पर पाठ वर्तनी का प्रयोग कर तथा उत्तरकांड का बाल, राम, नाग, मन के आधार पर संपादन किया है।

रायल आकार के लगभग ६०० पृष्ठों के संपादित इस ग्रंथ में आत्मनिवेदन (संक्षिप्त संपादकीय), मूल रामायण, संक्षिप्त पाठभेद, बढ़ोत्तरी, अभावसूचक सारणी, प्रक्षेप और रामचरित मानस के भाषांतरित ग्रंथों की सूची दी गई है। इस संपादन में हिंदी के प्राचीन ग्रंथों के संपादन की साहित्यक तथा वैज्ञानिक रीति के तुल्य बल का उपयोग करने का दावा भी संपादक का है।

संपादक ने इस संस्करण में प्राचीन हस्तलेखों के आधार पर पाठ को आधुनिक रूप में सुवाच्य सुपाठ्य करने का आयोजन किया है। कहीं कहीं शब्दों को अनिवार्यतावश मिलाकर भी उपस्थित किया गया है। हस्तलेखों में प्राप्त पाठों का व्याकरण संमत संग्रह करने का यत्न भी संपादक का है।

सभा और काशिराज संस्करण

काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित मानसमराल पं० शम्भू नारायण चौबे द्वारा संपादित रामचरित मानस तथा काशिराजन्यास द्वारा प्रकाशित एवं श्रीविश्वनाथ प्रसाद मिश्र द्वारा संपादित रामचरित मानस में छंदसंख्या समान है; किंतु दोनों प्रतियों में संख्या सम्बन्धी निम्नलिखित भेद हैं—

सभा संस्करण	काशिराजन्यास संस्करण

अयोध्याकांड (द्वितीय सोपान)

सभा संस्करण	काशिराजन्यास संस्करण
(१) दोहा संख्या ११०	इस दोहे पर कोई संख्या अंकित नहीं है । १०६ संख्यक दोहे की सातवीं चौपाई पर अंकित है। दूसरा अगले असंख्यक दोहे की ६ठी चौपाई पर * अंकित है।[१]
(२) १६६ संख्या के आगे के दोहे पर कोई संख्या नहीं दी गई है।	काशिराज संस्करण में इस पर १६६ संख्या अंकित है।

अरण्यकांड (तृतीय सोपान)

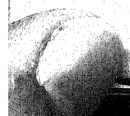
सभा संस्करण	काशिराजन्यास संस्करण
(३) ६ठीं संख्या के आगे के ६ दोहों में (१क, २क, ३क, ४क, ५क, ६क) अंकित है। इस प्रकार इस कांड में कुल ४० दोहे हैं। यद्यपि कुल दोहे ४६ हैं।	उक्त दोहों की संख्या ७ से १२ तक है। इस कांड में कुल ४६ संख्यक दोहे हैं।

सुंदर कांड (षष्ठ सोपान)

सभा संस्करण	काशिराजन्यास संस्करण
(४) ३० वें दोहे के बाद अगले दोहे की संख्या (३० क) है। इस कांड में समस्त दोहों की संख्या १२० है। यद्यपि कुल दोहों की संख्या १२१ है।	उक्त दोहे की संख्या ३१ है। इस कांड में समस्त दोहों की संख्या १२१ है।

———

१. बाद में कर्त्ता द्वारा जोड़े गए संभावित अंश दो * के बीच में संपादक ने दिखाया है। (आत्मनिवेदन--काशिराज संस्करण, पृ० १६)



नाम संकेत

काशिराजन्यास की प्रति में जिन मूलभूत हस्तलेखों को आदर्श मानकर पाठ गृहीत हुआ है, उनके नामसंकेत इस प्रकार हैं और इन्हीं का प्रयोग उसके परिचय में किया भी गया है—

कुंज—श्रावणकुंज, अयोध्या की प्रति।

रघु—रघु तिवारी, (लोलार्क कुंड काशी) लिपिकार।

राजा—राजापुर, बाँदा की अयोध्याकांड की प्रति।

प्रेम रामायण—रामू द्विवेदी (लिपिकार और संस्कृत अनुवादक) अयोध्या, किष्किंधा और सुंदर कांड मात्र।

दुलही—दुलहीग्राम, लखीमपुर की प्रति—केवल सुंदर कांड।

बाल—बालगोविंद शर्मा (लिपिकार) संपूर्ण, बाल और अयोध्या संक्षिप्त।

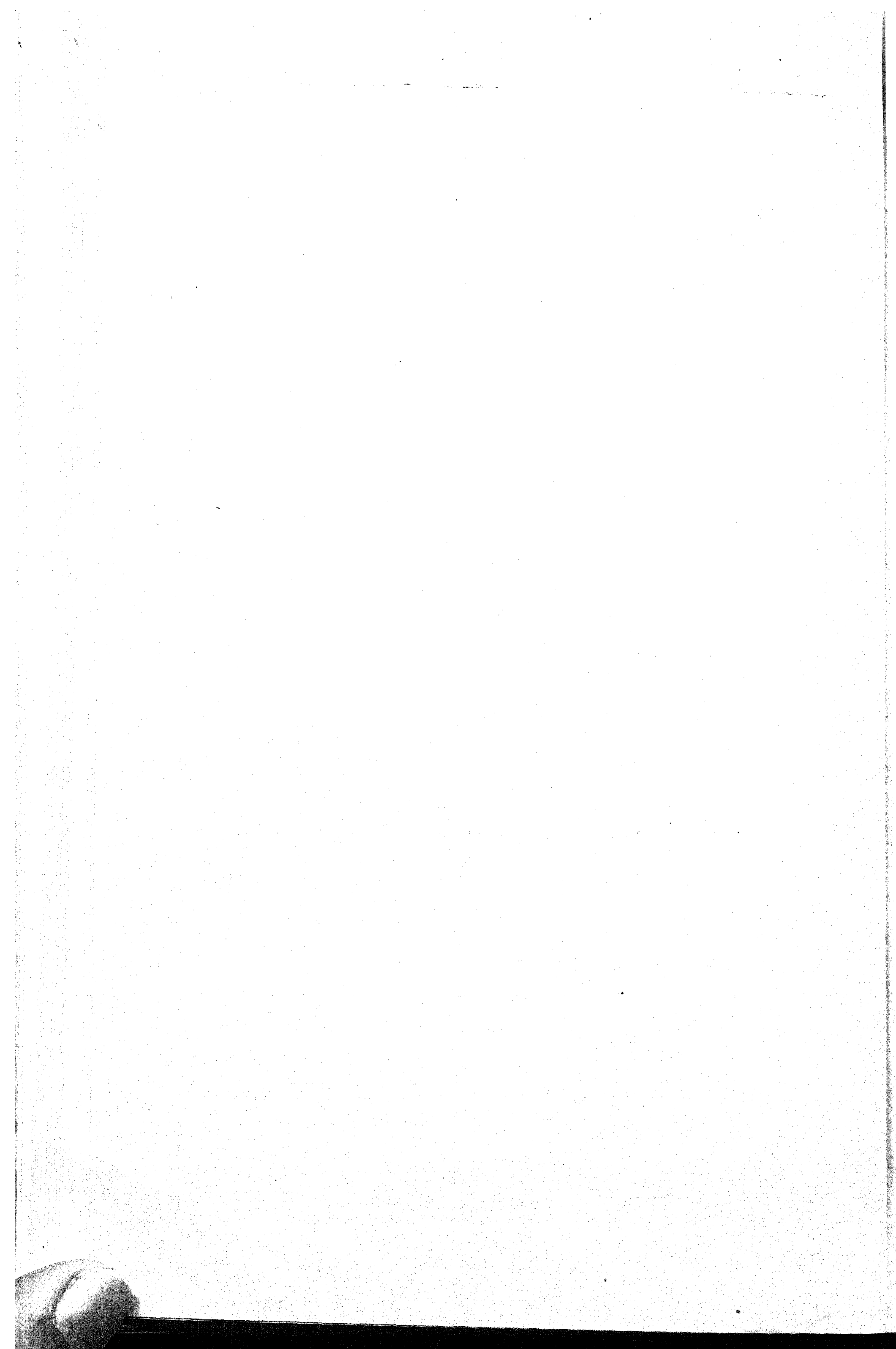
नाग—नागेश उपाध्याय की प्रति (इसमें अरण्य कांड नहीं है)।

मन—मनसाराम (लिपिकार) संपूर्ण।

राम—रामगुलाम रामायणीवाली प्रति, संपूर्ण।

———

परिशिष्ट—२



वर्तनी तथा पाठभेद↓

प्रथम सोपान (बालकांड)

	ना० प्र० स०	का० ट्र०
१।२।१	चूरन	चूरनु
४।२	किये	कियँ
५।२	हिय	हियँ
६।२	आवै	आवइ
८।२	जेहि	जेहि
२।२।२	बरनौं	बरनऊँ
२।८।२	सरसै	सरसइ
३।१।२	फल	फलु
५।२	जेहिं	जेहि
१२।१	**सन**	**सन**
४।१।१	भाए	भाएँ
१।२	बाए	बाएँ
२।१	केरे	केरँ
२।१	बसेरे	बसेरँ
४।४।१	सहसाखी	सहसाँखी
४।२	माखी	माँखी
६।२	सुनै	सुनइ
५।२।१	**बायस**	**पायस**
२।१	पलिहहि	पलिहहिं
५।२	जोक	जौंक
५।१	लहे	लहै
६।१	बिश्व	बिस्व
७।१।२	गुनहि	गुनहिं
७।७।१	कुवेष	कुवेषु
९।८।२	लोकहु	लोकहुँ
८।५।१	चहौं	चहौँ
८।१	बिश्वास	बिस्वास
९।११।२	कहौं	कहौँ
१०।१।२	मह	महु
४।१	सवारी	सँवारी
११।८।१	सीपि	सीप
१२।६।१	कहावौं	कहावौँ
६।२	गावौं	गावौँ
१३।१।२	कहे	कहैँ
१४।११।१	कृपा	कृपाँ
११	थोरि	थोर
१५।५।२	सिरजा	सिरिजा
१०।२	कहिहहि सुनिहहि	कहिहहिं सुनिहहिं
१६।५।२	बिश्व	बिस्व
१७।१।१,।१३	प्रनवौं	प्रनवौँ
१७।१०।१	बिनवौं	बिनवौ
१७।१	प्रनवौं	प्रनवौँ
१८।१।१	रीछ	रिंछ
१।२	जें	जे
६।१	प्रनवौं	प्रनवौँ
८।१	मनावौं	मनावौँ
८।२	पावौं	पावौँ

↓ वर्तनीभेद सादे टाइप में और पाठभेद काले टाइप में दिया गया है।

१९।७।१	हर	हरु
२१।३।२	भेद	भेदु
६।१	नाम	नामु
२१।१	देहरी	देहरीँ
२१।२	बाहेरहुँ जो	बाहरहुँ जौँ
२२।३।२	जानहिं	जानहु
८।२	नहिं	नहि
२२।४।१	एक	एकु
२४।२	अमिति	अमित
२५।७।१	सप्रीति	सप्रीती
७।२	जीति	जीती
२५।२	महुँ	मह
२६।४।१	नामु	नाम
२६।७।१	अपति	अपत
२६।२	ते	तैँ
२७।१	कलिकालु }	कलिकाल
२७।२	सुरसालु }	सुरसाल
२८।३।१	{पाकु {अघाती	{कृपाँ {अघाँती
३२।१२।२	घन	धन
३३।३।२	आचरज	आचरजु
३५।२।१	अमिति	अमित
८।२	जौं येहिं	जौँ येहि
४२।४।१	गमनू	गवनू
४५।६।१	सुजस	सुजसु
४६।२।१	अमिति	अमित
६।२	रावन	रावनु
४७।४।१	सुनें	सुनैं
४८।२।१	अखिलेश्वर	अखिलेस्वर
४९।२।१	बचन	बचनु
५४।७।१	विष्णु	विष्नु
५४।१	अमिति	अमित

५५।३।१	देखा	वेषा
५७।४।१	करौं	करै
५८।१।२	अमिति	अमित
८।१	सम्हारा	सँभारा
५९।२।२	बचन	बचनु
४।२	बूझिय	बूझिअ
५९।१	सुनिअ	सुनिय
६२।७।२	लावा	आवा
६४।७।१	तजिहों	तजिहौं
६४।२	रच्छा	रंछा
६५।४।२	संछेप	संछेप
६६।१	सर्वज्ञ	सर्वग्य
६७।७।१	सुलच्छन	सुलछन
७३।६।२	गिरहि	गिरिहि
७६।८।१	गिरजा	गिरिजा
७८।१।२	मूरतिवंत	मूरतिमंत
७८।८।१	अबिवेक	अबिवेकु
७९।७।२	कैं कहे	के कहें
७९।१	भीखि	भीख
८१।४।१,	नाहीं,	नाही
४।२	माहीं	माही
५।२	नतु	नत
८२।२।१	पहिं	पहि
३।२	गवनें	गवने
८३।२।१	दच्छ	दच्छ
८५।११।१	जग	जगु
८६।१।२	काम	कामु
२।२	जथाथित	जथाथिति
८७।८।१	सुख	सुखु
९।१	सुनति	सुनत
८१।१,८७।२	अनंग, प्रसंग,	अनंगु, प्रसंगु
८९।२।१	काम	कामु

८९।५।२	ऐसेइ	अैसेइ
८९।७।२	तुरतहिं	तुरतहि
८९।२	पनु	पन
९०।३।१	शिव	सिव
४।२	करम	कर्म
६।८	अबिबेक	अबिबेकु
८।२	मनमथ	मन्मथ
९०।१	हिअ	हिय
९१।१	सवारन	सँवारन
९२।६।१	शिवहिं	सिवहि
९३।२।१	बिष्णु मुसुकानें	बिष्नु मुसुकाने
३।१	महेस	महेसु
५।१	शिव	सिव
९३।११।१	सुगाल	सुकाल
१२।२	जमात	जमाति
९४।१	पुर	पुरु
९५।४।१	शिव लागें	सिव लागे
११	बिबाह	बिबाहु
	लरिकन्हि	लरिकन्ह
९६।३।२	चलीं	चली
६।१	दुख	दुखु
८।१	रूप	रूपु
९।१	बर	बरु
१२।३	हो	हौं
९६।१	देख	देखि
९७।८।१	मिटिहि	मिटिहिँ
९७।२	गवनें	गवने
९८।९८।२	इच्छा	इंछा
६।,६१,२	बिबाहीं माहीं	बिबाही माही

७।१	शिव	सिव
९८।४।२	शिव	सिव
८।१	शिव	सिव
९९।१।१	हिमवंत	हिमवंतु
२।१,२	सयानें, हरषानें	सयाने, हरषाने
६।२	बिष्णु	बिष्नु
७।१	बिबिधि	बिबिध
९९।१	कहु	कहुँ
१००।४।१	शिव	सिव
६।१	रूप	रूपु
९।१	बनैं	बनै
१०।१	सकुचहि	सकुचहिँ
११।२	शिव	सिव
१२।२	मधुकर	मधुकरु
१००।२	जिअ	जिय
१०१।३।२	हियँ	हिय
१०१।६।१	गिरजा	गिरिजा
११।१	शिव	सिव
१०३।१	प्रसंन बर	प्रसन्न बरु
१०२।३।२	पतिदेव	पतिदेउ
८।१	भेंटि	भेटि
१०।२	शिव पहिँ	शिव पहि
१०२।१	हिमवंतु	हिमवंत
१०।२	संछेपहि	संछेपहि
१०३।२	गँवारु	गवारु
१०४।१।२	सुख	सुखु
२।२	नयन्हि	नयनन्हि
५।१	शिव, जिन्हहिं	सिव, जिन्हहि
५।२	संपनेहुँ	सपनेहु
१०५।८।२	शिव	सिव
१०५।२	शिव	सिव
१०६।३।१	सुसीतल	सुसीतलु

३।२	शिव	शिव
१०७।४।१	शिव	सिव
७।१	विश्वनाथ	विस्वनाथ
१०७।१	शिव	सिव
१०८।१।१	जौं	जौं
१०९।३।१	दीख	दीखि
४।२	भलीं	भली
१११।६।१	प्रश्न, के	प्रस्न, कै
११२।१।१	जाहि	जाहिँ
६।२	नहि	नहिँ
८।२	प्रश्न	प्रस्न
११३।२	सुनैं	सुनै
११४।३।२	अगनति	अगनित
६।१	प्रश्न	प्रस्न
८।२	धरहि	धरहिँ
११५।५।२	कलपित	कलिपत
११६।२	नाअेउ	नाएउ
११८।१।१	आसृत	आश्रित
१२०।६।१	चिन्मय	चिनमय
१२१।६।२	बाढ़हिं	बाढ़हिँ
१२३।४।१	अेहि	एहिँ
७।२	जितहि	जितहिँ
१२४।६।२	बिष्णु	बिष्नु
१२६।१।२	गअेऊ, निरमअेउ	गएऊ निरमएउ
५।२	क्रीड़हि	क्रीड़हिँ
८।२	चलेहुँ, दुराअेउ	चलेहु दुराएउ
१२७।२	इच्छाइ	इंछा
१२८।२	मिटहि	मिटहिँ
१२९।१।२	ताके नहि जाके	[illegible]कैँ नहिँ जाकैँ
७।१	सिरु	सिर

१२९।१	मगु महुँ	मग महु
१३०।४।१	मोहिनी	मोहनी
१३२।४।१	जुड़ानें	जुड़ाने
१३३।८।२	सबहि	सबहिँ
१३४।४।२	हँसहि	हसँहि
१३५।४।१	दुलहिन	दुलहिनि
१३९।६।२	बिष्णु	बिष्नु
१४०।४।१	बखानें	बखाने
७।२	मोहहि	मोहहिँ
१४४।४।२	चितहि	चितहिँ
१४५।[illegible]।२	नहिं	नहि
८।२	अबहिं	अबहि
१५०।४।२	कृपालु	कृपाल
१५५।५।१,२	बखानें, मानें	बखाने, माने
१६०।१।२	आअेसु	आयसु
१६३।२।२	बिष्णु	बिष्नु
३।२	संहारा	संघारा
१६४।२।१	जानिअैं	जानिअ
४।२	पूछें	पूँछे
५।१	प्रसंन	प्रसन्न
१६५।४।२	बिष्णु	बिस्नु
१६६।२	देखों	देखौं
१६७।३।१	जुगुत	जुगुति
१६९।२।२	सहजहिं	सहजहि
१७०।२	अविसेषित	अवसेषित
१७१।४।२	बिनु	बिन
१७३।४।२	मासु	माँसु
७।१	मासू	माँसू
१७५।७।१	बाचा	बाँचा
१७६।५।२	बिष्णु	बिष्नु
१७७।१।२	मै	मैं

१७८।६।१	सवारा	सँवारा
१७९।१।२	संहारे	संघारे
२।२	रच्छक	रंछक
१८१।६।१	नहि	नहिँ
१८१।१	मिलहहिं	मिलिहहिँ
१८१।२	भाति	भाँति
१८२।५।१	चलँत	चलत
५।२	स्रवत	स्रवहिं
७।२	सूनें	सूने
१८३।१।२	पहिलेहि	पहिलेहिँ
१८३।८।१	नहि ग्याना	नहिँ ज्ञाना
१८७।२।२	लेहों	लेहौँ
१८९।५।१	शृंगी	सृंगी
१९०।१।१	बोलाई	बोलाईँ
४।२	प्रसंन	प्रसन्न
५।२	भई	भईँ
१९१।४।२	अवहि	स्रवहिँ
१९३।७।१	गुरु	गुर
,,	गअेउ	गएउ
१९४।१।१	धज	ध्वज
१९५।७।१	धुन	धुनि
१९६।१।१	नहि	नहिँ
३।१	औरो	औरौ
१९७।८।१	जाकें	जाके
१९८।२।२	तेहि	तेहिँ
३।१	ते	तैँ
१९९।१३।१	नहि	नहिँ
२००।८।२	कबहु	कबहुँ
२०२।७।२	मै	मैँ
२०४।३।१	जबहिं	जबहि
४।२	पाई	आई
२०५।५।१	जेंहि	जेहिँ
८।१	मागि	माँगि
२०६।२।१	बिश्वामित्र	बिस्वामित्र
२०७।२।१	गअेउ	गएउ
९।२	आअेउँ	आएउँ
२०८।२।१	पाअेउँ	पाएउँ
२।२	नहि	नहिँ
४।१	नाही	नाहीँ
४।२	अेक	एक
२११।१०।२	लाभु	लाभ
१५।१	अेहि	एहि
२१२।३।२	महिदेवन्ह	महिदेवन्हि
४।२	नगरु	नगर
६।२	सलिलु	सलिल
८।२	समीरु	समीर
२१३।२।१	अवारीं	अवारी
२।२	सवारी	सँवारी
४।२	सिचाँई	सिंचाई
७।२	बिथकहि	विथकहिँ
८।१	कोटु	कोट
२१४।१	भाति	भाँति
८।१	बिश्वामित्रु	विस्वामित्रु
२१५।३।१	प्रश्न	प्रस्न
३।२	बिश्वामित्र	विस्वामित्र
५।२	बिश्व	बिस्व
६।२	बिश्वामित्र	बिस्वामित्र
२१६।४।१	तें	ते
५।१	इन्हहिं	इन्हहि
७।२	मनु	मन
२१७।२।२	आनदहू आनद	आनँदहू आनँद
५।२	अधिकु	अधिक
२१८।२।२	मनहिं	मनहि

५।१	चहही	चहहीँ
५।२	कहही	कहहीँ
६।१	मै	मैं
२१८।१	भाय	भाइ
२१८।२	देखाय	देखाइ
२१६।६।१	शोन	सोन
२२०।३।२	फलु	फल
६।२	सुनिअत	सुनिअति
७।१	बिष्णु	बिष्नु
८।२	येह	यह
२२०।१	वारिअहि	वारिअहिँ
२२१।१।२	येहु रूपु	येह रूप
२।२	मै	मैं
२२२।१।१	अेक	एक
१।३	येहु	येह
८।२	कबहुक	कबहुँक
२२३।१।२	बिबाह	बिआह
५।२	अहिल्या	अहल्या
७।१	सवारी	सँवारी
२२४।१।२	सवारी	सँवारी
४।१	तेहिं पाछें	तेहि पाछे
५।१	भाति	भाँति
६।१	तिन्हके	तिन्हकें
२२५।१।१,२	जानें,बखानें	जाने,बखाने
४।१	महुँ	महु
८।१	सुहाईं	सुहाई
८।२	बरिआईं	बरिआई
२२६।२	तें	ते
२२६।१,१	कुअर	कुअँर
७।२	अकुलानें	अकुलाने
८।१	चलीं	चली
२३०।१।२	रामु	राम

२।२	बिश्व	बिस्व
३।२	कहुँ	कहँ
४।२	दिगंचल	द्रिगंचल
६।२	बिश्व	बिस्व
२३१।२।२	प्रकास	प्रकासु
७।१	लहहि	लहहिं
७।२	पावहि	पावहिं
८।१	लहहि नाही	लहहिं नाहीं
२३२।१।१	चहू	चहूँ
१।२	मन	मनु
२।१	नैनीं	नैनी
३।१	सखिन	सखिन्ह
४।१	रूपु	रूप
४।२	पहिचानें	पहिचाने
५।१	देखे	देखेँ
५।२	निमेखे	निमेषैँ
८।१	जानी	जानीँ
८।२	सकुचानी	सकुचानीँ
२३३।१ १	सींव	सीवँ
२।३	गुच्छ	गुंछ
२।१	घूँघरवारे	घूघरवारे
४।२	रतनारें	रतनारे
२३३।६।१	पाही	पाहीँ
७।१	गीवाँ	गीवा,
७।२	सीवाँ,	सीवा
८।२	कुअरु	कुअँर
२३४।२।१	ध्यानु	ध्यान
५।१	सखिन	सखिन्ह
६।१	बरिआँ	बेरिआँ
२३५।१।२	चलीं	चली
३।२	भीतीं	भीती
४।२	गईं	गईं

८।२	{ बिश्व बिमोहिनी	बिस्व बिमोहनि
२३६।३।२	कै	कँ
।४।१	कीन्हेउँ	कीन्हेउ
५।१	भवानीं	भवानी
५।२	मुसुकानीं	मुसुकानी
६।१	सिअ	सिय
८।१	बचनु	बचन
११।२	हिय	हियँ
२३७।१।२	गवनें	गवने
५।१	भोजन	भोजनु
८।२	{ हिमकरु	हिमकर
,,	नाँहीं	नाहीं
२३८ ७।१	अरुनु	अरुन
८।१	लखन	लखनु
२३८।२	आगवनु	आगमन
२३९।७।१	मुसुकानें	मुसुकाने
९।२	नहानें	नहाने
२४०।७।२	हँकारी	हकारी
२४१।१।१	राजकुअर	राजकुअँर
३।२	महुँ	महु
४।१	जिन्हकें	जिन्हके
५।२	धरें	धरे
२४१।२	सृंगारु	सिंगार
२४२।२।१,२	कैसें, जैसें	कैसे जैसे
४।२	शांत	सांत
६।१	भायँ	भाय
८।१	येहि	जेहि
२४२।१	महुँ	महु
२४२।२	तनु बिश्व	तन बिस्व
२४३।१।१	मूरत	मूरति
५।१	हासा	हाँसा
८।२	सीवाँ	सीवा

२४४।१।१,२	बाँधें, काँधें	बाँधे, काँधे
३।२	तारें	तारे
६।१	कुअर	कुअँर
२४५।२।१	अस	असि
६।२	कुअरि	कुअँरि
८।२	सयानें	सयाने
२४६।६।१	जोइ	जोई
२४७।५।१	तनु	तन
६।१	बारुनीं	बारुनीं
२४८ १।१	चलीं } सखी }	{ चली सखीं
५।१	दुंदुभीं	दुंदुभीँ
	बजाईं	बजाई
	गाईं	गाई
२४९।४।१	पन	पनु
५।२	अंतहुँ	अंतहु
६।१	येहिं लालसाँ	येहि लालसा
७।२	बिरिदावलीं	बिरिदावली
८।२	हिअ	हिय
२५०।३।१	कोदंड	कोदंडु
३।२	जेइ	जे
४।१	बैदेहीं	बैदेही
७।१	शिवधनु	सिवधनु
९।२	भातिबल	भाँतिबलु
२५०।१	उठै	उठे
२५१।२।२	बचनु	बचन
३।१	जोग	जोगु
३।२	जैसें	जैसे
६।१	जनक	जनकु
	अकुलानें	अकुलाने
२५१।१	कुअरि	कुअँरि
२५२।१।१	यहु	येहि

१।२	चापु	चाप
३।२	जानी	जानी
५।२	कुअरि	कुअँरि
	कुअरि	कुअँरि
७।२	जानकिहिं	जानकिहि
२५३।१।१	महुँ	महु
४।१	जौं	जौ
७।२	कौतुक	कौतुक
२५४।२।१	लोक, डेरानें	लोग, डेराने
२।२	जनक	जनकु
	सकुचानें	सकुचाने
४।१	सपनहिं	सपनहि
५।१	बिश्वामित्रु	बिस्वामित्रु
२५५।२।१	सकुचानें	सकुचाने
२।२	लुकानें	लुकाने
७।१	सभाँरे	सँभारे
२५६।४।१	राजकुअर	राजकुअँर
६।२	रानीं	रानी
७।२	लगें,	लगे,
	कीन्हिऊँ	कीन्हिउ
२५८।१।१	नीकें	नीके
५।१	भाति	भाँति
५।२	सिरिस	सिरस
२५६।२।२	जैसें	जैसे
५।१	भगवान	भगवानु
६।१	कें	के
७।२	राम	रामु
२६०।८।२	कँड़हारू	कड़हारू
२६१।७।१	सब	सबु
२६२।४।२	नाचहि	नाचहिँ
५।२	प्रसंसहि	प्रसंसहिँ
२६३।२।१	बाजहि	बाजहिँ
	बाजनें	बाजने
३।१	हरषीं	हरषी
४।२	थके	थकँ
६।१	भाँती	भाती
२६४।१।१	सोहतिं	सोहति
२।२	बिश्व, जेहिं	बिस्व, जेहि
३।१	संकोच	सकोचु
४।२	कुअरि	कुअँरि
२६४।१	बरिसहि	बरिसहिँ
२६५।१।१	बजनें	बजने
५।१	पातालु	पाताल
६।१	आरतीं	आरती
२६६।४।१	तोरें	तोरे
४।२	कुअरि	कुअँरि
२६७।४।१	परा	परम
५।२	गईं	गई
२६८।३।१।२	सकुचानें	सकुचाने
	लुकानें	लुकाने
६।१	भृकुटीं	भृकुटी
२६६।३।१	जानीं	जानी
३।२	जानैं	जानै
	लुटानीं	लुटानी
५।१	हरखानी	हरखानीँ
५।२	सयानी	सयानीँ
६।१	बिश्वामित्रु	बिस्वामित्रु
२७०।६।२	सोचहि	सोचहिं
७।२	सवरी	सँवरी
	बेगारी	बिगारीं
२७७।२	हृदयँ	हृदय
५।२	जैहहि	जैहहिँ
६।१	मुसुकानें	मुसुकाने

६।२	अपमानें	अपमाने
७।१	तोरीं	तोरी
७।२	कबहु	कबहुँ
दो० २७१।२	धनुहीं	धनुही
२७२।१।१	हमरें	हमरे
४।१	कीं	की
६।२	बिश्व	बिस्व
२७३।३।२	तरजनीं	तरजनी
७।२	मारतहूँ पाँ	मारतहू पा
२७४।७।१	तो	त
२७४।१	जनावहि	जनावहिं
२७४।२	करहि	करहिं
२७५।६।१	मै	मैं
७।१	छोंड़ौ	छोड़ौं
७।१२	कठोरें, थोरें	कठोरे, थोरे
दो० २७५।१	हरिअरेइ	हरिअरे
२७६।२।१।२	नीके, जीके	नीकें, जीकें
४।२	मै	मैं
२७७।४।१।२	जुड़ानें मुसुकानें	जुड़ाने मुसुकाने
दो० २७७।२	बिश्व	बिस्व
२७८।२।२	होइँहहिं	होइहहिं
८।१,२	कैसें, जैसें	कैसे, जैसे
दो०२७८।२	गवनें	गवने
२७९।३।२	{ इन्हहिं { बिदुष	इन्हहि संत
४।१	नाहीं	नाही
७।१।२	कैसें, अनैसें	कैसे, अनैसे
२७९।१	अवहिं	सवहिं
२८०।१।२	कुठार	कुठारु
२।२	हृदयँ	हृदय

३।१	दयाँ	दया
२८०।५।२	भयें	भये
८।१	मूदें	मूदे
२८१।१।२	तूं, जोरें	तू जोरे
६।२	तें	ते
दो०२८१।२	बिलोकें	बिलोके
२८२।२।१	नाम	नामु
२।२	सुभायँ	सुभाय
	तेहि	तेहिं
३।१	जौ	जौं
५।२	कहाँ, कहँ	कहा, कह
२८३।१।२	मै	मैं
४।१	येहिं	येहि
४।२	कोटिन्ह	कोटिन्ह
२८४।४।२	डरहि	डरहिं
२८६।१।१	बाजनें	बाजने
२८७।१।२	आनहि	आनहिं
४।२	सवारहु	सँवारहु
२८८।१।२	परहि	परहिं
४।२	चीर	चीरि
६।१	काढीं	काढी
७।१	पुराईं	पुराई
२८९।१।२	सवारे	सँवारे
६।२	देखिअ	देखिय
७।२	लाग	लगहिं
८।२	सुरनायकु	सुरनायक
२९०।१।२	नगरु	नगर
६।१	वाचीं	बाँची
२९१।४।२	नैन	नयन
८।१	जानें	जाने
२९१।२	बिश्व	बिस्व
२९२।२।१	आगें	आगे

दो० २९२।२ चापु	चाप
२९३।४।२ कें	के
२९४।२ गवनें	गवने
२९५।१।२ बाँचि	बाचि
३।१ राजहि	राजहिं
रानीं	रानीं
४।१ गुरनारीं	गुरनारी
४।२ महतारीं	महतारी
५।१ परसपर	परस्पर
६।२ बरनीं	बरनी
दो० २९५।२ चिरु	चिरुँ
२९६।१।१ पट्ट	पट
१।२ हनें	हने
४।२ सवारन	सँवारन
८।२ अच्छुत	अछत
२९६।२ चौके	चौकँ
२९७।४।२ बिश्व	बिस्व
६।२ कतहु	कतहुँ
२९८।२।१ चलँहु	चलहु
३।२ आयेसु	आएसु
५।२ धरनीं	धरनी
६।१ बखानें	बखाने
दो० २९८।१ छैल	छयल
२९९।१।१ बाँधे बिरिद	बाँधे बिरद
३।२ धज	ध्वज
२९९।२ जेहिं	जेहि
३००।१।१ परीं अँबारी	परी अबारी
१।२ सवारीं	सँवारी
३००।२।१ बिराजीं	बिराजी
२।२ राजीं	राजी
४।२ धरें	धरे
६।१ ऊँट	ऊट

६।२ भाँती	भाती
३०१।२।१ सुनिअँ	सुनिअ
३।१ कें द्वारें	के द्वारे
३।२ पषानु पवारें	पषान पवारे
४।१ चढ़ीं	चढ़ी
नारीं	नारी
४।२ लिएँ, थारीं	लिए, थारी
७।१ पहिं आनें	पहि आने
७।२ पहिं बखानें	पहि बखाने
दो० ३०१।१ तेहिं	तेहि
३०२।१।२ नृपु कैसे	नृप कैसँ
१।२ पुरंदरु जैसे	पुरंदर जैसँ
५।१ कोलाहल	कुलाहल
५।२ बाजनें	बाजने
७।२ सरौ	सरव
दो० ३०२।१ कुअर	कुअँर
३०३।१।२ होहि	होहिं
३।१ कागु	काग
७।१ छेमकरी,	छेमकरी,
छेम	छेम
३०४।३।१,२ नाँचे, साँचे	नाचे, साचे
६।२ संपदाँ	संपदा
९।१ असनु	असन
३०५।२।१,२ पकवानें,	पकवाने,
बखानें	बखाने
८।२ हनें	हने
३०५।१ कछुकु	कछुक
३०६।२।१ राखीं	राखी
२।२ कीन्ह	कीन्हि
५।१ पाँवड़े	पावड़े
दो० ३०६।२ लियें	लिये
३०७।२।१ भेदु	भेद

६।१	ब्रिश्वामित्र	बिस्वामित्र
८।१	जनवासे	जनवासेँ
३०७।२	उठे	उठेउ
३०८।२।२	पूँछी	पूछी
४।२	भेंटे	भेटे
६।१	दुहु	दुहुँ
६।२	मनभावतीं	मनभावती
३०९।२।१	सोहहि	सोहहिँ
४।१	बरसि	बरिसि
४।२	नटीं नाचहि	नटी नाचहिँ
३१०।२।१,२	काहुँ, काहुँ	काहु, काहु
३।२	नहिं, होनेंउ	नहि होनेउ
७।१	बयनीं	बयनी
७।२	येहिं	येहि
८।१	बड़ें	बड़े
३११।६।१	भरथु	भरतु
७।१	सत्रुसूदन	सत्रुसूदनु
७।२	तें	ते
८।२	त्रिभुअन	त्रिभुवन
३११।६।२	कहें	कहैँ
१०।२	अहें	अहै
१२।२	येहिं	येहि
दो० ३११।१	परस्पर	परसपर
३१२।१।१	येहिं	येहि
१।२	आनद	आनँद
४।१	गयें, भाँती	गये, भाती
७।२	गनीं	गनी
८।१	सुनीं	सुनी
३१३।५।१	भाँती	भाती
३१४।२।१	शिव	सिव
७।१	तिन्है सुरनारीं	तिन्हहि सुरनारी

७।२	उजिआरीं	उजिआरी
८।२	कतहुँ	कतहु
३१४।२	हृदयँ	हृदय
३१५।३।१	येहि	ये ही
५।१	समाजु	समाज
३१६।६।१	राजकुअर	राजकुअँर
१०।१	आपनें	आपने
११।२	सुमोति	सो मोति
३१७।१।१	तेहिं, बरनैं	तेहि, बरनै
५।१,२	बहुतु, तें	बहुत, ते
६।१	सुरेसु	सुरेस
८।२	दुहु	दुहुँ
१०।२	बाजहि	बाजहिँ
११।१।२	येहिं, बाजनें	येहि, बाजने
दो० ३१७।१	आरतीं सवारि	आरती सँवारि
३१८।२।२	सजें	सजे
३।१	बनाएँ	बनाए
६।२	सयानीं	सयानी
७।२	मिलीं	मिली
९।२	चलीं	चली
१०।२	भलीं	भली
११।२	भईं	भई
३१९।१।१	नीर	नीरु
२।२	भलीं	भली
३१९।३।१	सुनि	धुनि
७।१	कोलाहलु	कोलाहल
७।२	सुनैं	सुनै
११।२	कौतुकु	कौतुक
३२०।३।१	लहीं	लही
४।१	साँमध	सामध
७।२	माँची	माची
८।१	पाँवड़े	पावड़े

३२१।१,१	कीन्ह	कीन्हि
२।१	कीन्ह	कीन्हि
४।२	कहौं	कहउँ
६।२	जानहि	जानहिं
७।१	वेषु	वेष
७।२	देखहि	देखहिं
	पाएँ	पाए
८।१	जानें	जाने
८।२	पहिचानें	पहिचाने
३२२।१।१	समउ	समय
२।१	कुअरि	कुअँरि
२।२	आयसु	आयसु
४।१	विप्रबधू	विप्रबधूँ
४।१	बोलाई	बोलाईं
४।२	गाईं	गाई
७।१	सनमानहि	सनमानहिं
९।१	सखीं	सखी
१०।१	साजें सुन्दरी	साजे सुन्दरी
दो०३२२।१	महुँ	महु
३२३।३।१	किये	किए
४।१	दशरथु	दशरथ
७।२	पढ़हि	पढ़हिं
१३।२	महुँ	महु
१६।२	कैसें	कैसे
३२४।१।१	जानीं	जानी
६।१	रायँ	राय
६।२	आगें	आगे
७।२	अवसर	अवसरु
९।२	तनु	तन
१३।१	मुनिबनिताँ	मुनिबनिता
१७।१	कुअरि	कुअँरि
२०।१	बिधान	बिधानु
२२।२	बिश्व	बिस्व

३२५।१,१	कुअरु	कुअँरु
	कुअरि	कुअँरि
६।१,२	फेरीं, निबेरीं	फेरी, निबेरी
८।१	सेंदुरु	सेंदुर
९।१,२	नीकें	नीके,
	अमीकें	अमीके
११।२	सबहीं	सबही
३२६।१।२	कुअर	कुअँर
११।१२ २।२	किएँ	किए
	दिएँ	दिए
२६।१	सेवकु	सेवक
२४।२	चलीं	चली
३२७।३।२	उरु	उर
७।२	आँचरन्हि	आचरन्हि
११।१	गाँथें	गाथें
१२।२	बरहिं	बरहि
१५।१।२	कुअर कुअरि	कुअँर कुअँरि
२१	जानहि	जानहिं
२२	कुअरि चली	कुअँरि चलीं
२३	सुनिअँ	सुनिअ
दो०३२७।१	कुअर	कुअँर
३२८।२।१	पाँवड़े	पावड़े
५।२	महुँ	महु
दो०३२८।२	महुँ	महु
८।२	सवारे	सँवारे
३२९।२।१	पकवानें	पकवाने
३३०।२।१	बड़ें	बड़े
३।१	कुअर	कुअँर
९।१	तुम्हरीं	तुम्हरी
३३१।२।१	मगाईं	मगाई
३।१।२	कीन्हीं	कीन्ही
	दीन्हीं	दीन्ही
४।२	लहेउँ	लहेउ

३२।३।२	पहुँनाई	पहुनाई
४।१	नगरु	नगर
५।२	सनेहँ	सनेह
३३३।२।१।२	बिलखानें,	बिलखाने
	सकुचानें	सकुचाने
३३३।६।१	लाखु	लाख
७।२	सवारे	सँवारे
८।२	जिन्हहिं	जिन्हहि
३३४।४।१	पिआरीं	पिआरी
४।२	अहिवातु	अहिवात
६।१	सखीं	सखी
	सयानीं	सयानी
७।१	कुअरि	कुअँरि
	समुझाईं	समुझाई
८।२	रचीं	रचा
३३५।१।१	सुभायँ	सुभाय
३।२	पाहुनें	पाहुने
६।१,२	जैसें, तैसें	जैसे, तैसे
८।२	कुअर	कुअँर
दो० ३३५।२	आरतीं	आरती
३३६।१।१	अनुरागीं	अनुरागी
१।२	लागीं	लागी
४।१	रामु	राम
३३६।८।१	कुअरि	कुअँरि
	लीन्हीं	लीन्ही
८।२	कीन्हीं	कीन्ही
१२।१	सील सनेह	सीलु सनेहु
३३७।६।१	कुअरि	कुअँरि
६।२	भेटहि	भेटहिं
७।१	पहुँचावँहिं	पहुँचावहिं
७।२	परस्पर	परसपर
८।१	मिलति	मिलत

	बिलगाईं	बिचगाई
८।२	लवाईं	लवाई
३३७।१	बिरहँ	बिरह
३३८।१।१	जानकीं	जानकी
३।१	भाँती	भाती
३।२	कैसे	कैसँ
६।१	रायँ	राय
७।२	जानें	जाने
८।१,२	लाईं, मगाईं	लाई,मगाई
दो० ३३८।१	कुअरि	कुअँरि
३३९।१।१	समुझाईं	समुझाई
१।२	सिखाईं	सिखाई
२।१	दासीं	दासी
	बाजनें	बाजने
३४०।१।२	मागनें	मागने
४।२	फिरैं	फिरै
दो०३४०।१	सनमानें	सनमाने
३४१।१।२	आसिरबाद	आसिरबादु
२।१	भेंटैं	भेटे
५।१	करहि	करहिं
दो० ३४१।२	सबुइ	सबइ
३४२।३।१	सिराहि	सिराहिं
४।१	मोरें	मोरे
७।१,२	सनमानें	सनमाने
	जानें	जाने
३४३।३।१,२	तोरें, मोरें	तोरे, मोरे
६।१	कीन्ह	कीन्हि
३४३।१	सुखु	सुख
३४४।१।१	हनें	हने
२।१	झाँझि	झाझि
	डिंडिमीं	डिंडिमी
४।१	सवारे	सँवारे

३२१।१।१ कीन्ह कीन्हि
२।१ कीन्ह कीन्हि
४।२ कहौं कहउँ
६।२ जानहि जानहिँ
७।१ वेषु वेष
७।२ देखहि देखहिँ
पाएँ पाए
८।१ जानें जाने
८।२ पहिचानें पहिचाने
३२२।१।१ समउ समय
२।१ कुअरि कुअँरि
२।२ आयसु आयसु
४।१ बिप्रबधू बिप्रबधूँ
४।१ बोलाई बोलाई
४।२ गाईं गाई
७।१ सनमानहि सनमानहिँ
६।१ सखीं सखी
१०।१ साजें सुन्दरी साजे सुन्दरी
दो०३२२।१ महुँ महु
३२३।३।१ किये किए
४।१ दशरथु दशरथ
७।२ पढ़हि पढ़हिँ
१३।२ महुँ महु
१६।२ कैसें कैसे
३२४।१।१ जानीं जानी
६।१ रायँ राय
६।२ आगें आगे
७।२ अवसर अवसरु
९।२ तनु तन
१३।१ मुनिबनितॉं मुनिबनिता
१७।१ कुअरि कुअँरि
२०।१ बिधान बिधानु
२२।२ बिश्व बिस्व

३२५।१,१ कुअरु कुअँरु
कुअरि कुअँरि
६।१,२ फेरीं, निबेरीं फेरी, निबेरी
८।१ सेंदुरु सेंदुर
९।१,२ नीकें नीके,
अमीकें अमीके
११।२ सबहीं सबही
३२६।१।२ कुअर कुअँर
११।१२ २।२ किएँ किए
दिएँ दिए
१६।१ सेवकु सेवक
२४।२ चलीं चली
३२७।६।२ उरु उर
७।२ आँचरन्हि आचरन्हि
११।१ गाँथें गाथें
१२।२ बरहिं बरहि
१५।१।२ कुअर कुअरि कुअँर कुअँरि
२१ जानहि जानहिँ
२२ कुअरि चली कुअँरि चलीँ
२३ सुनिअँ सुनिअ
दो०३२७।१ कुअर कुअँर
३२८।२।१ पाँवड़े पावड़े
५।२ महुँ महु
दो०३२८।२ महुँ महु
८।२ सवारे सँवारे
३२९।२।१ पकवानें पकवाने
३३०।२।१ बड़ें बड़े
३।१ कुअर कुअँर
६।१ तुम्हरीं तुम्हरी
३३१।२।१ मगाईं मगाई
३।१।२ कीन्हीं कीन्ही
दीन्हीं दीन्ही
४।२ लहेउँ लहेउ

३२।३।२	पहुँनाईं	पहुनाई
४।१	नगरु	नगर
५।२	सनेहँ	सनेह
३३३।२।१।२	बिलखानें,	बिलखाने
	सकुचानें	सकुचाने
३३३।६।१	लाखु	लाख
७ २	सवारे	सँवारे
८।२	जिन्हहिं	जिन्हहि
३३४।४।१	पिआरीं	पिआरी
४।२	अहिवातु	अहिवात
६।१	सखीं	सखी
	सयानीं	सयानी
७।१	कुअरि	कुअँरि
	समुझाईं	समुझाई
८।२	रचीं	रची
३३५।१।१	सुभायँ	सुभाय
३।२	पाहुनें	पाहुने
६।१,२	जैसें, तैसें	जैसे, तैसे
८।२	कुअर	कुअँर
दो० ३३५।२	आरतीं	आरती
३३६ १ १	अनुरागीं	अनुरागी
१।२	लागीं	लागी
४।१	रामु	राम
३३६।८।१	कुअरि	कुअँरि
	लीन्हीं	लीन्ही
८।२	कीन्हीं	कीन्ही
१२।१	सील सनेह	सीलु सनेहु
३३७।६।१	कुअरि	कुअँरि
६।२	भेटहि	भेटहिं
७।१	पहुँचावँहिं	पहुँचावहिं
७ २	परस्पर	परसपर
८।१	मिलति	मिलत
	बिलगाईं	बिचगाई
८।२	लवाईं	लवाई
३३७।२	बिरहँ	बिरह
३३८।१।१	जानकीं	जानकी
३।१	भाँती	भाती
३।२	कैसे	कैसँ
६।१	रायँ	राय
७।२	जानें	जाने
८।१,२	लाईं, मगाईं	लाई, मगाई
दो० ३३८।१	कुअरि	कुअँरि
३३६।१।१	समुझाईं	समुझाई
१।२	सिखाईं	सिखाई
२।१	दासीं	दासी
	बाजनें	बाजने
३४०।१।२	मागनें	मागने
४।२	फिरैं	फिरै
दो०३४०।१	सनमानें	सनमाने
३४१।१।२	आसिरबाद	आसिरबादु
२।१	भेंटें	भेटे
५।१	करहि	करहिं
दो० ३४१ २	सबुइ	सबइ
३४२।३।१	सिराहि	सिराहिं
४।१	मोरें	मोरे
७।१,२	सनमानें	सनमाने
	जानें	जाने
३४३।३।१,२	तोरें, मोरें	तोरे, मोरे
६।१	कीन्ह	कीन्हि
३४३।१	सुखु	सुख
३४४।१।१	हनें	हने
२।१	झाँझि	झाझि
	डिंडिमीं	डिंडिमी
४।१	सवारे	सँवारे

५।१,२	सिचाईं	सिचाई
	पुराईं	पुराई
८।१,२	धरनीं,	धरनी,
	करनीं	करनी
दो० ३४४।१	सवारि	सँवारि
३४५।१।१	भवन	भवनु
	तेहिं	तेहि
६।१	सजें	सजे
	आरतीं	आरती
६।२	भारतीं	भारती
३४६।३।१	बाजनें	बाजने
५।१	अच्छत	अछत
	रोचन	लोचन
५।२	मंजुल	मंजुर
८।१	रचीं	रची
	आरतीं	आरती
३४६।१	लियें	लिये
३४७।३।२	सवारे	सँवारे
४।१	प्रगटहि	प्रगटहिँ
	दुरहि	दुरहिँ
४।२	दमकहि	दमकहिँ
३४७।१	दुंदुभीं	दुंदुभी
३४८।७।२	कुअर	कुअँर
३४९।२।२	भाँती	भाती
३४९।४।२	सुफल	सफल
	जीवनु	जीवन
५।१	सखीं	सखी
७।२	ढढोरीं	ढँढोरीँ
३५०।२।१,२	कुअरि	कुअँरि
	कुअर	कुअँरि
५।२	भरीं	भरी
	सोहीं	सोहीँ

दो० ३५०।१	तें	ते
	पावहि	पावहि
३५०।३	जननीं	जननी
३५१।८।१	बजनिआँ	बजनिआ
दो० ३५१।२	गुरु	गुर
३५२।३।२	भलीं	भली
	भूप जेंवाए	भूप जेवाए
३५३।२।२	आसिरबाद	आसिरबादु
४।१।२	बोलाईं	बोलाईँ
	पहिराईं	पहिराईँ
६।२	देही	देहीँ
७।२	सनमानें	सनमाने
३५४।१।२	हृदयँ	हृदय
६।२	होइ	होत
दो० ३५४।२	घरीं	घरी
३५५।७।२	रानीं	रानी
३५५।१	उनींद	उनीद
३५६।४।२	जेहिं	जेहि
६।१,२	दीन्हीं,	दीन्ही
	कीन्हीं	कीन्ही
३५६।१	नहिं	नहि
३५७।१।२	करवैं	करवैँ
४।२	महुँ	महु
५।१	बिश्व	बिस्व
८।१,२	देखें	देखे
	लेखें	लेखे
३५७।२	नींद	नीद
३५८।१।१	निदँउहँ	निदउँह
	बदनु	बदन
३।२	रानीं	रानी
४।१,२	सोइँ, गोइँ	सोई, गोई
३५९।५।२	सुनहि	सुनहिं
	महीस	महीसु

दो० ३५६।१	उछाहु	उछाह	३६१।१।१	तें,तें	ते,ते
३६०।३।१	बिस्वामित्रु	बिस्वामित्रु	६।१	बिआहु	बिवाह
५।२	मै	मे			
६।२	मै	मै"	८।१	तें	ते
१०।२	पहुँचाई	पहुचाई	६।१	तुलसी	तुलसीँ

———

पाठ भेद

द्वितीय सोपान

१।५।२	मन	मनु
	येतनिअँ	एतनिय
२।१।२	सहेली,	सहेलीँ,
	बेली	बेलीँ
२।१।१	समय	समयँ
१।२	राजसभा	राजसभाँ
२।१	येह	यह
३।१।१	सुनिअ	सुनियँ
२।२	हमरे	हमारे
४।१।१	जिय	जियँ
१।२	रहसि	रहँसि
५।१	सोच	सोचु
५।२	जेहि	जेहिँ
६।७।१	चौकइ	चौकइँ
६।१।१	आयेसु	आयसु
१।२	तेहिँ	तेहि
८।२।१	मनु	मन
	अनुरागी	अनुरागीँ
८।३।१	सुमित्रा पूरी	सुमित्राँ पूरीँ
३।२	अतिरूरी	अतिरूरीँ
५।१	पूजी	पूजीँ
९।३।१	आनें	आने
	आइसु	आयसु
१०।३।२	तुम्हारि	तुम्हहिँ
११।१।१	बाजन	बाजने
१३।४।२	तकै	तकइ
१४।२।२	जिन्हहिँ	जिन्हहि
१५।१।२	सपनेहु	सपनेहुँ
६।२	मै	मैँ
८।२	तिन्हके	तिन्हकँ
१६।२।१	फोरै	फोरइ
३।२	मै	मैँ
८।२	बड़	बड़ि
१७।७।२	करइ	करै
८।१	जरि	जर
१७।२	मुहु	मुह
१८।४।१	कौँसिलहि	कौसिलहि
७।१	येहु	यहु
१८।२	सतु	सत
१९।२।१	अबहु	अबहुँ
४।२	नहिँ	नहि
२०।७।१	कुसपनें	कुसपने
२१।७।२	होंहि	होहिँ
८।१	कइहुँ	कहीँ
८।२	हइ	है
दो० १।१	परउँ	परौँ
२२।१।१२	कैसे,जैसे	कैसँ जैसँ
२३।८।२	यहु	यह
२४।२।२	पूछहि	पूछहिँ
८।१	मते	मतँ
२५।१।२	परइ	परै
२६।३।१	अमरउ	अमरौ
७।१	माँगु	मागु
२८।२।१	माँगिहु	मागिहु
३।२	माँगि	मागि

६।२	मुनि	मनु
दो० २८।२	भयंकर	भयंकरु
२९।१	सुनहुँ	सुनहु
२।१	माँगो	मागौं
६।२	मनहु	मनहुँ
३०।१।२	माखा	माँखा
२।१,२	होंही, मोही	होहीँ, मोहीँ
६।२	माँगि	मागि
३०।१,२	राय, कुठाय	रायँ, कुठायँ
३१।२	जिय	जियँ
३२।३।२	गए	गएँ
दो० ३२।१।२	माँगु	मागु
	जेहि	जेहिं
३३।१।१,२	जिआइ	जिऔं,
	जिआइ	जिऔं
३।१	जिय	जियँ
४।२	मनहु	मनहुँ
७।१,२	सयानें,	सयाने,
	पहिचानें	पहिचाने
३५।३।२	महुँ	महु
४।२	माँगु, माँगु	मागु, मागु
३७।६।१	नृपहिं	नृपहि
३८।८।१	पूछी	पूछी
दो० ८।१	नींद	नीद
३९।१।२	पूछेहु	पूँछेहु
७।२	लेवाई	लवाई
४०।१।२	मनहु	मनहुँ
३।२	दुख	दुखु
६।२	बहुतु	बहुत
७।२	माँगेउँ	मागेउँ
४।१	बचन	बचनु
४१।२।२	मनहु,	मनहुँ,
४।२	मनहु	मनहुँ
७।१	सुत	सुतु
४२।२।१	जौ	जौं
४३।२।१	कै	कइ
३।२	मै	मैं
५।२	जेंहि	जेंहिं
४४।३।२	मनहु	मनहुँ
५।२	हृदय	हृदयँ
६।२	जेहि रघुनाथु	जेहिं रघुनाथ
४५।२।१	मोही	मोहीं
८।१	गोसाइहिं	गोसाँइहि
	पूछिउँ	पूँछिउ
८।२	पुनि	पुनि
४६।२।२	ऐहउँ	ऐहौं
	बेगिहि	बेगिहिं
४।१	माँगी	मागी
८।१	सुनइ	सुनइँ
दो० ४६।१	श्रवहिं	स्रवहिं
४७।१।१	मिलेहि	मिलेहिं
४८।२।१	भलु	भल
४।१	पहिचानें	पहिचाने
४।२	सयानें	सयाने
८।१	तुम्हारें	तुम्हारे
८।२	रामु	राम
४९।७।१	सवतिआ रेसू	सवति आरेसू
५०।५।२	तुम्हारे	तुम्हारें
१२।१	जिय	जियँ
दो०५०।२	कूबरी	कूबरीं
५१।४।२	कुचालिहिं	कुचालिहि
८।१	प्रसंनु	प्रसन्न
५३।२।२	भइ	भै
७।२	जेहि	जेहिं

५६।१	करउँ	करौँ
५७।१।१	तुम्हहिं	तुम्हहि
४।१	बनहि	बनहिं
५८।१।२	पेमु	प्रेम
५९।३।२	सींचि	सीँचि
६०।१।१,२	किसोरी,	किसोरीँ
	भोरी	भोरीँ
६।२	देउँ	देउ
६१।२।१,२	सुनहू गुनहू	सुनहूँ गुनहूँ
३।१	जौ	जौँ
५।१	अधिकु	अधिक
६२।१।१	मै	मैँ
२।२	सुनहु	सुनहुँ
५।१	पयादेहि	पयादेँहि
६३।१	सुहृद	सुहृदय
६५।३।१	नातें	नाते
३।२	तियहि	तिअहि
	तरनिहुँ	तरनिहु
७।२	तैसिअ	तइसिअ
६६।२।१	साथरी	साँथरी
	सुहाई	सुहाई
२।२	तुराई	तुराई
४।२	रहिहों	रहिहौँ
७।१	जियँ	जिअँ
दो० ६६।१	जो	जौँ
६७।२।१,२	करिहों,	करिहौँ,
	हरिहों	हरिहौँ
३।२	करिहों	करिहौँ
६८।३।१	कृपालु	कृपाल
७।२	देखिहों	देखिहौँ
दो० ६८।२	हियँ	हिय
	निरखिहों	निरखिहौँ

७०।८।१	हृदय	हृदयँ
७१।१	जिय	जियँ
८।२	दरसतु	परसत
दो० ७१।२	मइँ	मैँ
७३।३।१	हृदय	हृदयँ
	पहिँ	पहि
४।२	रघुनंदन	रघुनंदन
७४।१	जुवती	जुवती
७५।३।१	तुम्हरेहिं	तुम्हरेहि
५।२	सपनेहु	सपनेहुँ
	इन्हके	इन्हकेँ
८।१	जेहि	जेहिँ
११।१	आयेसु	आयसु
दो० ७५।१	तुरत	तुरित
७६।१।१	सुहाए	सुहाये
२।२	आए	आये
४।२	छीने	छीनेँ
८।२	भअेउ	भयेउ
७७।७।२	हृदय	हृदयँ
दो० ७७।१	करै	करइ
७८।६।१	सबहि	सबहिँ
दो० ७९।१	सब	सबु
दो० ८०।१	जेहि	जेहिँ
८१।१।१	अेहि	येहि
८२।४।३	बहुतु	बहुत
६।१	अेहि	येहि
८३।८।२	सरोबर	सरोवर
८४।३।२	जेंहि	जेहिँ
५।१	सबहि	सबहिँ
६।२	नहि	नहिँ

दो०८५।२	सचिव	सचिवँ
दो०८६।२	कोकी	कोकीँ
८७।१।२	सृंगबेर	सृंगबेर
८७।३।१	सचिव सिय	सचिवँ सियँ
३।२	पाअेउ	पायेउ
६।१	सुनाई	सुनाईं
६।२	अधिकाई	अधिकाईं
७।१	श्रम	स्रमु
८।२	श्रम	स्रमु
८८।१।१	अेह	येह
३।२	अनुरागे	अनुरागँ
५।२	भाजनु	भाजन
दो०८८।१	ब्रत	ब्रतु
८९।२।२	पठए	पठये
	ऐसे	अैसे
९०।३।१	गुह	गुहँ
५।१	भअेउ	भयेउ
५।२	हृदय	हृदयँ
९१।६।१	जनक	जनकु
दो० ९१।२	तेहि	जेहिं
९२।२।१	भअेउ	भयेउ
२।२	रामु	राम
दो०९२।२	जिय	जियँ
९३।१।१	कीजिअ	कीजिय
दो० ९५।१	करब	करबि
९५।२	कै	कइ
९६।२।१	श्रमु	स्रमु
८।२	गँवाई	गवाई
१००।१।२	अैसे	अैसँ
१।२	कैसे	कैसँ
२।१	रामु	राम

३।१	माँगी	मागी
१०१।१	साची	साँची
११।१	मारहु	मारहुँ
	जब	जब
१२।१	तब	तब
४।१	केवटहिं	केवटहि
४।२	पगहु	पगहुँ
१०२।१।१	ठाढ़	ठाढ़े
४।२	केवट	केवटँ
५।१	मइँ	मैं
८।१	जो	जोइ
८।२	मइँ	मैं
दो०१०२।१	सिय	सियँ
१०३।२।१	जेहि	जेहिं
८।१	मइँ	मैं
१०४।६।२	करिहौं	करिहौँ
८।१,२	लीन्हें, कीन्हें	लीन्हे, कीन्हे
१।२	सखा	सखाँ
५।१	अगमु	अगम
	सपनेहु	सपनेहुँ
७।१	सिंघासनु	सिंहासनु
१०७।१।१	प्रश्न	प्रस्न
११०।७।२	बयसु	बयस
१११।४।२	हृदय	हृदयँ
११३।२।२	काजु	काज
३।१	सिअ	सिय
५।२	रंकन्हि	रंकन्ह
दो० ११३।२	गँवाइअ	गवाइअ
११५।४।२	पूछत	पूँछत
५।३	सुभाए	सुभाएँ
७।२	गँवारी	गवारी
८।१,२	सलोनें,सोनें	सलोने, सो

११६।१।२	आहिं	आहिँ
३।१	घरनीं	घरनी
६।२	पिय	पिअ
८।२	लूटी	लूटीँ
११७।३।२	लखी	लखीँ
	पिआसी	पिआसीँ
५।१	पूछेउ	पूँछेउ
११८।३।२	जेंहि	जेहिँ
५।२	जौं, इन्हहिं	जौँ, इन्हहि
दो० ११८।१	जौं	जौँ
११९।१।१	जौं	जौँ
४।१	भुअन	भुअन
१२०।१।१,२	होंही,सोंही	होहीँ,सोहीँ
४।१	जौं	जौँ
५।१	जौं माँगा	जौँ मागा
५।२	आखिन्ह	आँखिन्ह
१२२।४।१	जोगाई	जोगाईँ
६।१	बनु	बन
१२१।४।१	कहउँ जिय	कहौँ जिअ
६।१,२	बराएँ लाएँ	बरायँ लायँ
८।१	होंही,बटोही	होहीँ, बटोहीँ
दो० १२२।२	श्रमु	श्रम
१२३।१।१	सपनेहु	सपनेँहुँ
१।२	रामु	राम
२।१	पथ	पथु
२।२	कबहु	कबहुँ
६।१	रामु	राम
	सुहाबन	सुहावन
दो० १२३।१	नेन	नैन
१२४।२।२	सनमानु	सनमान
	आश्रमहिं	आश्रमहि
३।१,२	पाए,मँगाए	पाये, मँगाये
४।२	दिए	दिये
७।२	तुम्हरे	तुम्हरेँ
८।२	जेहि,जेहि	जेहिँ,जेहिँ
१२५।३।१	दुखु	दुख
१२६।८।१,	साचा;नाचा	साँचा,नाँचा
१२७।३।१	कहउँ	कहौँ
१२९।१।२	हृदय	हृदयँ
१३४।३।२	तिन्हहि	तिन्हहिँ
	पूछहि	पूछहिँ
	मगु	मग
५।१।२	आगे,	आगेँ
	अनुरागे	अनुरागेँ
१३५।१।२	तुम्हहिं	तुम्हहि
७।१	जहँ	तहँ
१३७।२।२	होंहि	होहिँ
१३८।६।२	जौं	जौँ
७।२	मंदरु	मंदर
८।१	सेवहि	सेवहिँ
१३८।२	सपनेहु	सपनेँहुँ
१४०।१।२	रघुनाथ	रघुनाथु
दो० १४२।१	बिषादु	बिषाद
१४३।२।१	लै	लइ
२।२	होंहि	होहि
७।२	गँवाई	गवाईं
१४४।३	सुनइ	सुनइँ
दो० १४४।१	पूछिहहिं	पूँछिहहिँ
२	हृदय	हृदयँ
१४५।१।१	पुछिहहिं	पुँछिहहिँ
दो० १४५।२	हौं	हौँ
१४७।२।१	सुनइ	सुनइँ
६।१	उसासु	उसास
६।२	ते	तेँ
१४८।५।२	संदेसू	सँदेसू
७।२	हरष	हरषु
१४९।८।१	बिबेकु	बिबेक
१५०।१।२	गँवाई	गवाई

९	पाइहौं	पाइहौँ
१०	आइहौं	आइहौँ
१५०।२	जेहि	जेहिँ
१५१।४	सेयेहु	सेएहु
६।२	जेहि	जेहिँ
१५२।३।२	जियत	जिअत
	फिरेउ	फिरेँउ
६।२	मनहु	मनहुँ
१५३।२।१	भइ	भइँ
३।१	कौसल्या	कौसल्याँ
३।२	अथयेउ	अथँएउ
८।१	जौ, पिय	जौँ, पिअ
१५५।८।१	येहि, रैनि	येहि, रइनि
१५७।२।२	जानहि	जानहिँ
७।१	जोए	जोएँ
	बिगोए	बिगोएँ
दो०१५७।१	जोहारहि	जोहारहिँ
१५८।१।२	दह	दहँ
१५९।८।१	सबु	सब
दो०१५९।२	जिअँ	जिय
१६०।६।२	पाविनि	पापिनि
१६१।१।१	तैं	तें
५।२	जानइ	जानइँ
७।२	तू	तूँ
८।१	मुहु	मुहँ
दो०१६१।२	कहौं	कहउँ
१६२।७।२	झोंटी	झोटी
१६३।३।१	तात	तातु
६।१	तिभुवन	तिभुअन
१६४।१।१,२	लाए,आए	लाये,आये
६।१	हिय	हियँ
८।२	जानइ	जानै
दो० १६४।२	हृदय	हृदयँ
१६५।३।१	सुनतहि	सुनतहिँ
दो०१६५।२	राजगृह	राजगृहु
	नेवासु	निवासु
१६६।२।२	बिवेकमय	बिवेकपर
१६७।३।१	लोलुप	लोलप
दो०१६७।१	सुभायँ	सुभाय
१६८।१।१	प्रानहुँ	प्रानहु
२।१	अवइ	स्रवइ
५।२	अवहिं	स्रवहिं
१६९।१।२	बिचित्र	बिचित्रु
१७०।२।१	सुदिन	सुदिनु
दो०१७०।१	सुनहु	सुनहुँ
२	जीवन	जीवनु
१७२।२।२	सोचु	सोच
१७३।७।१	अग्या	आग्या
८।१	जोबनु	जौबनु
१७३।१	पालिहि	पालिहिँ
१७४।५।१	बैदेहीं	बैदेही
६।२	होंहि	होहिँ
दो०१७४।१	कीजिअ	कीजिय
१७५।७।२	हियँ	हिय
१०	अवत	स्रवत
१७६।६।२	के	कें
२।२	आयेसु	आयसु
४।१	कियें	किएँ
६।१	ओह	येह
१७८।१।१	साँचु	साचु
७।१	बिलोकिअ	बिलोकि
७।१	बासू	अबासू
७।२	उपहासू	उपहाँसू
दो० १७९।१	नहिं	नहि
२	कुलस	कुलिस
१७९।५।२	कैकई	कइकईँ

६।१	कैकै	कइकइ
१८०।३।२	राय रजायसु	रायराजु
	सब कहँ	सबही कहँ
१८१।२।१	कहुँ	कहँ
५।२	जग	जगु
७।१	लखन	लखनु
१८२।२।१	इहै	इहइ
२।२	चलिहौं	चलिहौँ
७।२	आयेसु	आयसु
१८४।३।२	चलै	चलइ
६।१	रखवारीं	रखवारी
१८५।१।२	प्रभात	परभात
३।२	चलौं	चलउँ
६।२	सपनेहु,धरमु	सपनेहुँ,धरम
दो० १८५।१	सबु	सब
१८७।२।२	पयादेहि	पयादेँहि
१८८।१।२	शृंगबेरपुर	सृंगबेरपुर
४।१	जिअ	जियँ
१८९।३।१	समरु	समर
४।२	नृपु	नृप
८।१	जाय	जायँ
१९०।३।२	रूचै	रूचइ
६।२	छाड़े	छाँड़े
८।२	लैलै	लइलइ
१९१।८।१	बूझे	बूझेँ
दो० १९१।२	करिहउँ	करिहौँ
१९२।१।२	दुरइ	दुरइँ
३।२	माँगे	मागे
१९३।६।१	येह	यह
१९५।२।१	जबही ते	जबहीँ ते
४।१	जोहारी	जोहारीँ
६।१	निषाद	निषादु

१९६।१।१	शृंगबेरपुर	सृंगबेरपुर
दो० १९६।२	नहानीं	नहानी
१९७।१।५	थोरे	थोरेँ
१९८।८।१	प्राननाथु	प्राननाथ
८।१,२	गोसाँई	गोसाईँ
	बड़ाई	बड़ाईँ
दो० १९८।२	हर	हरि
२००।५।२	भएउ	भयेउ
	बिधाता	बिधाताँ
६२।१	कुमाता	कुमाताँ
९।१	जेहि	जेहिँ
१०।१	करहि	करहिँ
११।१	हौं	हौँ
२०१।७।१	सुहाई	सुहाईँ
७।२	नई	नईँ
२०२।४।१,६।१	पयादेहि	पयादेँहि
२०३।२।२	भएउ	भयेउ
२०४।७।१	तुम	तुम्ह
दो० २०५।२	कैकइहि	कइकइहि
२०६।३।२	सब	सबु
२०७।६।१	सनेह	सनेहु
२०८।३।१	करही	करहीँ
२०८।१,२	सनेहँ	सनेह
२०९।५।१	दरसु	दरस
६।२	पेमु	पेम
दो० २०९।१	मंडिलिहि	मंडलहि
२१०।१।२	साचिहु	साचिहुँ
५।१	तेहि	तेहिँ
७।१	सुख	सुखु
२११।१।२	कुअवसरु	कुअवसर
३।२	येहु	येह
दो० २१४।६।२	अभिलाष	अभिलाषु

२१४।२	पिञ्जरा	पिंजरौं
२१५।१	कियें	किएँ
२१६।१।२	चितए	चितयें
३।१	येह	यह
२१७।१।१	मुसुकानें	मुसुकाने
५।१	सुनु	सुनि
२१८।३।२	पुंनु	पूनु
२२०।३।१,२	खेवा,	खेवाँ
	सेवा	सेवाँ
५।१	आछे	आछें
दो० २२०।२	बत्र	सब
२२३।३।१	मागहि	माँगहि
२२।४।२	प्रेम	पेम
५।१	सखा	सखाँ
दो०२२४।२	सुख	सुखु
२२६।१।२	दुखारी,	दुखारीं
	अनुहारी	अनुहारीं
५।१	येह जानें	यह जाने
२२७।४।१	ऐकाकी	एकाकी
७।१	जौ जिय	जौं जियँ
दो०२२७।१	नहुषु	नघुषु
२३०।३।१	किछु	कछु
५।१	सकुचानैं	सकुचाने
२३३।७।२	प्रवाह	प्रबाहँ
८।२	महँ	मह
२३४।१।१,२	जानें,	जाने,
	निअरानें	निअराने
२३६।३।१	बिसालु	बिसाल
२३८।३।२	जोगी	जोगीं
२३६।३।१,२	पहिचानें	पहिचाने,
	जानें	जाने
४।२	सेवा	सेवाँ
२४०।३।१	सुपेमु	सुपेम
३।१	छायाँ	छाया
६।१	मइँ	मैं
दो०२४१।१	के	कैं
२४५।५।१	मनहु	मनहुँ
	मराली,	मरालीं
५।२	कुचाली	कुचालीं
६।२	सहिअ	सहिय
२४६।१।१,२	रानी,	रानीं
	ग्यानी	ग्यानीं
८।२	मुनिहु	मुनिहुँ
२४७।४।१	भएँ	भये
दो०२४६।१	येह,जिय	यह, जियँ
२५०।२।१	गोसाँई	गोसाईँ
२।२	ईंधन	ईँधन
	सेवकाई	सेवकाईं
११।१	नेह	नेहु
२५१।२।१	सीयँ	सीय
२५२।३।१	आयेसु	आयसु
४।१	बहुरहि	बहुरहिं
२५३।७।१	प्रभुताई,	प्रभुताईँ
	गाई	गाईँ
दो०२५३।२	सयानें	सयाने
२५४।१।१	कहुँ	कहँ
८।१	येहि	येंहि
२५६।१।१	भये	भयँउ
२५६।२	जननी	जननीं
२५७।३।२	आयेसु किएँ	आयसु किएँ
५।१	गोसाँई	गोसाईँ
दो०२५७।१	करिअ	करिअँ
२५८।२।१	जानीं	जानी

८।१	किएँ	कियें
२५९।२।१	अपने	अपनैं
३।१	भए	भयें
२६०।३।१	मइँ	मैं
४।१	फरै	फरइ
५।१	सपनेहु	सपनेहुँ
दो० २६०।२	जानहि	जानहिं
दो० २६१।२	दैव	दैउ
२६२।२।२	मनहु	मनहुँ
५।१	करहु	करहुँ
दो० २६२।१	मिटिहहिं	मिटिहइ
२६५।५।२	सकोचू	सँकोचू
२६६।६।१	येह	यह
	गोसाँई	गोसाईं
७।२	भलाई	भलाईं
२६७।५।१	किए	किएँ
२६९।६।१	मुनिबर	मुनिबरँ
२७३।८।२	मोरें	मोरे
२७४।७।१	जनक	जनकु
८।१	राजहिं	राजहि
२७५।१।१	करारें	करारे
२७६।१।६	बिदेह	बिदेहु
२७७।७।१	तेरहुति	तिरहुति
दो० २७७।२	आये काँवरि	आए कावरि
२७८।२।२	आनद	आनँद
दो० २७८।१	फरहार	फलहार
२७९।२।२	अमिय	अमिअ
२८३।२।२	मानइ	मानै
दो० २८३।१,२	सतिभाय	सतिभायँ
	सहाय	सहायँ
२८४।३।२	तिनु	तिन
५।१	रौरे	रउरे
२८५।५।२	मनहु	मनहुँ
२८७।२।१	मूँदे	मूदे
२८८।६।२	सींव	सीम
२८९।४।१,२	महतारी,	महतारीं
	दुखारी	दुखारीं
२९०।१।१	सुख	सुखु
२।२	पेमु	प्रेमु
३।१,२	ही,केही	हीं,केहीं
२९३।७।२	हियँ	हिय
८।२	भए	भये
२९४।१।२	सरनागति	सरनागत
५।२	सकै	सकइ
२९८।२।२	सर्बग्य	सर्बज्ञ
३।१	सरनागति	सरनागत
४।१	गोसाइहि	गोसाइँहि
४।२	मइँ	मैं
६।१	ऊच	ऊँच
८।१	मइँ	मैं
दो० २९८।१	भलाईं	भलाई
२९९।४।१,२	सपने,	सपनैं,
	अपने	अपनैं
२९९।५।१	अनुग्रह	अनुग्रहु
२९९।७।१	मइँ	मैं
३००।४।१	अग्याँ	अग्या
५।२	भए	भये
३०१।२।२	मलिन	मलीन
	कतहूँ	कतहुँ
५।२	सदनु	सदन
दो० ३०३।२	कुसमय	कुसमयँ
३०५।२।२	घर	घरु
८।१	होंहि	होहिं
	सहाये	सहायें

८।२	असिनिहु, घाये	असिनिहुँ घायँ	३१३।१।१	गोसाई	गोसाईं
			४।१	पालु	पाल
दो० ३०५।१	करपद	पद कर	दो० ३१४।१	सों	सो
३०६।२।१	सनेह	सनेहँ	३१५।१।२	माह	माँह
३०६।१	अनुसासनु	अनुसासन	३१६।२।२	कुरोगा	कुरोगाँ
३०७।२।१	आर्येसु	आयसु	३१८।८।१	हिय	हियँ
३०८।१।१	गोसाँई	गोसाईं	३२१।३।१	भअेऊ	भयेऊ
६।२	हिय	हियँ	३।२	गअेऊ	गयेऊ
३०९।३।१	पाथ	पाथु	३२२।६।१	गेह	गेहँ
३१०।५।१	काँकरी	काकरीँ	३२३।५।२	तिनु	तिनु
५।२	कुबस्तुँ	कुबस्तु	दो० ३२३।२	टेक	टैंक
७।१	छाँहीं	छाहीँ	३२४।१।१	दिनहु	दिनहुँ
८।२	सेवहि	सेवहिँ	३२५।१।२	जीह	जीहँ
३११।२।१	नेम	नेमु	६।१	पियूष	पिऊष
६।१	आर्येसु	आयसु			

———

तृतीय सोपान

श्लो० २	बान	बाण
	तूनीर	तूणीर
दो० चौ०		
१।१	मै	मैँ
२।५।१	काहू	काहूँ
८।१	तें	तेँ
१२।२	मै	मैँ
दो० ४।२	कबहु	कबहुँ
५।१४ २	निक्रिष्ट	निकृष्ट
सो० ५।३	नामु	नाम
५।२	कहिउँ	कहेउ
६।६।१	कहाँ	कहौँ
६।१२	मै	मैँ
१३	ते	तैँ
७।२।१	आगे,पाछे	आगेँ,पाछेँ
७।६।२	काछे	काछेँ
२।२	बना	बने
८।२।१	के	कैँ
२।२	सुनेउ	सुनेउँ
	अैहहि	अइहहिँ
८।६।१,२	तब, जब	तव, जव
६।२	मिलौँ तुम्हहि	तुम्हहि मिलौँ
७।२	कहँ	कहुँ
६।२	पूछा	पूछाँ
१०।१।१	अगस्त्य	अगस्ति
१।२	सुतीछन	सुतीच्छन
३।१	आगवनु	आगमनु
३।१	स्रवन	श्रवन
५।१	गोसाँई	गोसाईँ
५।१	नाँई	नाईँ
६।१	मोरे	मोरेँ
७।१,२	नहिं, नहिं	नहि, नहि
१०।६।१	होइहँहिं	होइहहिँ
१५।१	माँझ	माझ
२०।१	राम	रामु
२३।२	भेँट	भेट
२४।२	मानहुँ, माँझ	मानहु, माझ
दो०१०।२	आस्रम	आश्रम
११।८।२	अँजोरी	अजोरी
३।१	स्याम	श्याम
	सरीरं	शरीरं
४।१	पानि,तूनीरं	पाणि,तूणीरं
५।१	कृसानुः	कृशानुः
७।१	अरुन	अरुण
	सुवेसं	सुवेशं
७।२	निसेसं	निशेशं
८।२	विसालं	विशालं
६।१	संसय	संशय
६।२	समन	शमन
	कर्कस	कर्कश
१०।१	जूथः	यूथः
११।१	निर्गुन, सगुन	निर्गुण सगुण

१६।१	गुन	गुण
१६।१	सं	शं
१८।१	स्री	श्री
१८।१	जानहि,	जानहिँ
	जानहुँ	जानहु
२३।१	मोहीं	मोही
२७।१	सो	सो
दो०११।२	यह	येह
१२।२।२	येहिं आस्रम	येहि आश्रम
३।२	कहँ	कहुँ
६।१	सुतीछन	सुतीक्षन
१२।७।१	कोसलाधीसु	कोसलाधीस
दो०१२।२	मानहुँ	मानहु
१३।१०।१	यह	येह
१०।२	स्री	श्री
१६।२	स्राप	श्राप
१८।२	निअराई	नियराई
दो०१३।१	भइ	भै
१३।२	पर्नगृह	परनगृह
१४।१।१	ते	तेँ
७।१	सोइ	सो
दो०१४।१	ईश्वर	ईस्वर
१५।१।१	मह	महु
	कहौं	कहउँ
१६।७।१,२	नाहीं,माही	नाहीँ,माहीँ
दो०१५।२	सर्ब पर	सब पर
१६।१।१	ते	तेँ
१।२	ग्यान	ज्ञान
४।२	होइँ	होहिँ
६।२	कर्म	धर्म
७।१	येह	एहि

१६।८।१	स्रवनादिक	श्रवनादिक
दो०१६।२	महुँ	महु
	बिस्राम	बिश्राम
१७।२।२	ग्यान	ज्ञान
४।२	भै	भइ
७।१	पहिं	पहि
६।१	देखेउँ	देखिउँ
१३।१	भै	मैं
१४।२	उन्हहिं	उन्हहि
१६।१	पहिं	पहि
दो०१७।१	सों	सो
२७।८	मनौ	मनहुँ
	चुनवती	चुनौती
१८।४	सपच्छ	सपक्ष
१८।६।२	तिय,छड़ाई	त्रिय; छोड़ाई
१५।१	सैल	सयल
१६।१।१	सकहि	सकहिँ
६।२	जीअत	जीवत
६।१	छत्री	क्षत्री
१२।१	घर	गृह
१६।२	स्रवन	श्रवन
२०।२।१	स्रीराम	श्रीराम
२०।६।१	अकार	अपार
६।२	सनमुख	सन्मुख
१३।१	सृगाल	सृकाल
१८।१	अंतावरी	अंतावरीँ
२०।१	कहँरत	कहरत
२३।१	स्री	श्री
२।६	उठि भट	भट उठि
२६।१	परस्पर	परसपर
२०।२।१	लछिमन	लछिमनु
४।१	पंचबटी	पंचबटीँ

६।१	उपजाए	उपजाएँ
६।२	स्नम, पढ़े	श्रम, पढ़ँ
	किए, पाए	किएँ, पाएँ
१०।१।२	ते	तँ
११।२	नासहि	नासहिँ
२२।२	बाँह	बाह
२।२	केइ	केइँ
८।२	के	कँ
६।१	सवारी	सँवारी
१०।१	स्नुति	श्रुति
११ २	महुँ,कटक	महु,कटकु
दो० २२।२	नींद	नीद
	परै	परइ
२३।४।१	बैरु	बयरु
दो० २३।१	बनहिं	बनहि
२५।३।१	सुनहु	सुनहि
४।२	मारे,	मारँ
	जिआए	जिआएँ
६।२	किए	किएँ
७।१	की	कै
	नाईं	नाईं
२६।२।१	गुरु	गुर
६।१,२	अभागे,	अभागँ,
	लागे	लागँ
२६।६	पाइहीं,	पाइहौँ
१०	लाइहीं	लाइहौँ
दो० २६।१	धरे	धरँ
६।२	सवारन	सँवारन
१३।२	गयौ	गएउ
१५।१	कै, लै	कर लइ
१६।१	निजु	निज
दो० २७।२	कहु	कहुँ

२८।४।२	सपनेहुँ	सपनेहु
१३।२	नाम	नामु
१५।१	छुद्र	छुद्र
१५।२	भयेसि	भयसि
१६।२	महुँ	महु
१६।१।२	जग एक	जगदेक
१।२	बिसारेहु	बिसारिहु
१०।१	कैसे,जैसे	कैसँ,जैसँ
१६।१	मह	महु
३०।३।१	फिरहि	फिरहिँ
६।२	तुम	तुम्ह
११।१	कली	कलीँ
१५।१	पाही	पाहीँ
१७।१	कामु, रामु	काम, राम
६।२	अधमौ	अधमौँ
८।२	ते	तँ
१०।२	देउ	देउँ
दो० ३१।२	जौं	जौ
३२।६	रामु	राम
३२।८	द्वंद,बिग्यान	द्वंद्व,बिज्ञान
१३।१	ग्यान	ज्ञान
दो० ३२।२	तेहि की	तेहि कइ
३३।७।२	पेखि	देखि
३४।१।१	स्नापत	श्रावत
५।१	राम	रामु
५।२	आस्नमु	आश्रम
६।१	राम	रामु
८।१	दोउ	द्वौ
६।१	प्रेमु, बचन	प्रेम, बचनु
३५।२।१	करौं	करहुँ
७।२	सुनु	सुनि
३६।३।१	सातव	सातवँ

४।१	आठव	आठवँ
६।१	महुँ, के	महु,कँ
१५।१	भइ	भै
३७।१।१	राम	रामु
५।२	मृगी, कह	मृगीं, कहँ
३७।६।१,२	माही,नाही	माहीं, नाहीं
३७।१	कीन्हेउ	दीन्हेउ
३८।५।२	ढेंक	ढेक
६।१	बसीठी	बसीठीं
१२।१	ते	तें
३६।१।१	गुनातीत	गुन अतीत
८।१	पिअहि	पिअहिं
दो०३६।४।१	पुरैनि	पुरइन
३६।४।२	देखिऐ,	देखिअ
	जैसे	जैसें
४०।४।१	सोहाई	सुहाई
४१।२।१	तरु बर	बर तरु
११।१	पूछि	पूँछि
४२।१।१	उदार परम	परम उदार
४१।८।१	एक	एकु
२।२	मागौं	मागउँ
५।१	मोरे	मोरें
५।२	तजहुँ	तजहु
दो० ४२।२	उडुगन	उड़गन
	बसहु	बसहुँ
४३।३।१	चाहउँ	चाहौं
३।२	करै	करइ

५।२	बालक	बालकहि
	राखै	राख
७।२	नहिं	नहि
८।१	मोरे,ग्यानी	मोरें, ज्ञानी
दो० ४३।१	कै	कइ
४३।२	महँ	मह
४४।२।१	जलासय	जलाश्रय
३।२	इन्हहि	इन्हिह
५।३	दहै सुख	देति दुख
८।१	बलु	बल
दो० ४४।२	यह	येह
४५।२।१	के	कँ
३।२	ग्यान	ज्ञान
४।२	बिग्यान	विज्ञान
७।१	षट	षड़
४६।१।१	स्रवन	श्रवन
४।१	स्रद्धा, छमा	श्रद्धा, क्षमा
	मैत्री	मइत्री
५।१	बिग्याना	बिज्ञाना
८।२	साधुन	साधुन्ह
८।२	सकै	सकँ
८।३	स्रुति	श्रुति
१०।१	भक्त गुन	भगत गुन
दो०४६।१	गावहि	गावहिं
	सुनहि	सुनहिं
४६।२	बिरागु, जपु	बिराग, जप

चतुर्थ सोपान

१।७।२	छत्री	क्षत्री
२।८।१	मइँ	मैं
३।३।२	जानौ	जानौँ
६।२	सींचि	सीँचि
दो० ३।१	जाके	जाकेँ
४।३।१	मैत्री	मइत्री
३।२	कीजै, करीजै	कीजे, करीजे
५।२	दुऔ	दुवौ
६।१	रामु, तेहिं	राम, तेहि
६।३।२	सहै	सहइ
१२।२	मइँ	मैं
१४।२	उठी द्वै	उठीं,द्वौ
दो० ६।२	उबरिहि	उबरहि
७।३।१	के	कै
७।१।३	बालि बधब	बालीबध
	इन्ह भइ	की भै
दो० ७।२	मारहि	मारहिँ
८।५।२	ते	तेँ
दो० ८।१	करि	कर
९।१।१।२	लागे, आगे	लागेँ, आगेँ
२।१,१	बनाए,	बनाएँ
	चढ़ाए	चढ़ाएँ
८।२	बधे	बधेँ
६।२	सिखावनु	सिखावन
१०।११।२	जन्मौ	जनमौँ
११।४।१	छिति	च्छिति
दो० ११।२	कहँ	कहुँ
१२।१।१	माही	माहीँ
	नाही	नाहीँ
२।१	के	केँ
१३।२।२	ते	ते
दो० १३।२	बिष्णु	बिष्नु
१४।१।१,२	माही	माहीँ
	थिरु नाही	थिर नाहीँ
३।१,२	नियराए	नियराएँ
	पाए	पाएँ
४।१,२	कैसे, जैसे	कैसेँ, जैसेँ
५।१	नदी,चली	नदीँ,चलीँ
१४।७।१	जल, भरहि	जलँ, भरहिँ
१४।१	नहिं	नहि
१५।१।१	चहु दिसा	चहुँ दिसाँ
१।२	पढ़हि	पढ़हिँ
६।२	दंभिन	दंभिन्ह
७।१,२	चलि, भये	चलि, भयेँ
१०।१	ऊसर बरषै	ऊषर बरषे
१२।२	उपजे	उपजेँ
दो० १५।२	के उपजे	के उपजेँ
१५।१	कबहुँ, महुँ	कबहुँ, महुँ
१६।२।२	बरषा	बरषाँ
३।२	सोखइ	सोखै
५।२	करहि	करहिँ
१६।२	स्रम	श्रम
१७।८।२	किए	किएँ

दो॰ १७।२	मिले,जाहि,	मिलें, जाहिं
	भ्रमु	भ्रम
१८।३।१	कतहुँ	कतहु
५।२	कहँ	कहुँ
६।१	कृपा,छूटहि	कृपाँ,छूटहिं
१।८१,२	सीव	सीवँ
१६।५।१	कहहु पाख	कहेहु पाखँ,
	महुँ	महुँ
२०।१।२	बाँह	बाह
२।१	लछिमन	लछिमनु
७।१,२	नाही माही	नाहीं,माहीं
२१।३।२	मै पाँवर	मैं पावर
२२।१।२	चह	चहे
४।१	यह	येह
८।१,२	पाए, मराए	पाएँ, मराएँ
२३।२।१	दच्छिन	दच्छिन
३।१	जतन	जतनु
३।२	सवारेउ	सँवारेहु
२४।१।१	कतहु, भेटा,	कतहुँ, भेँटा
२।२	मिलइ	मिलै
५।२	कौतुक	कउतुक
६।२	प्रबिसहि	प्रबिसहिं
७.१	ते	तैं
८।१	आगे	आगें
२५।१।१,२	ते, पूछे	तैं पूछें
५।१	मूदहुँ	मूँदहु
२६।१।१,२	माही,नाहीं	माहीं,नाहीं
२।१	लये	लएँ

३।२	दुहु	दुहुँ
४।२	गए	गएँ
५।१	मोहीं	मोही
६।१,२	लीन्हें, जैहै	लिन्हि,जैहे
६।२	नहि	किमि
दो॰ २६।२	मोच्छ सत्र	मोच्छ सुख
२।१	होइ देखि	होइ देखे
३।१	कहु	को
३।२	चलेउ	चले
४।१	कबहु उदर	कबहुँ बोदर
६।१,२	माही,नाही	माहीं, नाहीं
२७।२	सहाइ मइँ	सहाय; मैं
२८।४।२	परेउ	परेउँ
१०।१	कइ	कै
दो॰२८।१	देखउँ	देखौं
२६।१।२	काज	काजु
२।२	कृपा	कृपाँ
५।२	बिसमै	बिसमय
६।२	कै	कर
७।१	कहै	कहइ
२६।२	महँ	महुँ
३०।१।१	कहे	कहइ
३।१	कहइ रिच्छ	कह रिछेस
	सुनु	सुनहु
८।१	करि	कर
१२।२	कउतुक,	कौतुक,
	सेना	सयना
३०।२	सुनिय	सुनिअ

पंचम सोपान

श्लो० १।४	करुनाकरं	करुणाकरं	११।१।१	राछसी	राक्षसी
२।२।२	तिहि	तेहि	१।२	बीतें	बीते
३।२	पवनु	पवन	८।२	बैठी	बैठीँ
५।१	तुअ	तव	१०।१	यह	एह
६।१	नहि	नहिँ	११।२	मै	भइ
३।३।१	छाँह	छाइ	१३।१	बिश्वास	बिस्वास
१३।१	बीथी	बीथीँ	१४।४।१	कृपालु	कृपाल
१४,१५।१	गने, बने	गनै, बनै	७।२	हों	हौँ
१६	बापी	बापीँ	१०।१,२	जिय, ते	जिअ, तँ
२०	रच्छहीँ	रक्षहीँ	१५।८।१	मनहुँ	मनहु
२१	भच्छहीं	भक्षहीँ	७।२	ऐतनेहि	एतनेँहि
२३	पैहहिं	पइहहिँ	१६।२।१	उए	उएँ
४।७।१	मारैं	मारे	३।१	अबहिँ	अबहि
८।२	देखेउँ	देखउँ	दो० १६।२	गरुड़हिँ	गरुड़हि
५।९।२	महुँ	महु	१८।४।२	रच्छक	रक्षक
६।२।१	करै	करैँ	१८।१	मिलयेसि	मिलयसि
४।२	तें	तेँ	१९।१	तेहिं साधा	तेहि साँधा
६।१	पूछी	पूँछी	दो० २०।१२	परतिहुँ	परतिहु
७।१	महुँ	महु	५।२	सभा	सभाँ
८।७।१	महुँ	महु	२०।२	ह्रदय	ह्रदयँ
९।२।२	किए	किएँ	२१।३।१	मारे	मारेहि
५।१	अनुचरी	अनुचरीँ	६।१	धरै	धरइ
६।१	सूनें	सूने	२१।१,२	ते, आनिहु	तँ, आनेहु
१०।६।१	निसि तव असि	निसित बहसि	२२।३।२	सुभाव ते	सुभाउ तँ
			४।२	मारहि	मारहिँ
६।१	महुँ	महु	५।१	तुम्हारे	तुम्हारेँ

६.२ चहौं चहउँ
७।१ करौं करउँ
९।१ के कँ
१०।१,२ मोरे मोरँ
दो० २२।२ राखिहैं राखिहिं
२३।६।२ गए गएँ
२४.६।२ बिभीषन बिभीषनु
८।१ गोसाईं गोसाँईं
दो० २४।१ के, पूछि कँ, पूँछ
२५।४।१ रचै रचैँ
६।१.२ कह,हाँसी कहँ,हासी
९।१,२ अटारी,नारी अटारीँ,नारीँ
२६।१।२ ते तँ
५।१ फल फलु
६।१,२ माही, नाही माहीँ, नाहीँ
दो० २६।१ स्रम श्रम
२७।१।१,२ किछु, जैसे कछु,जैसे
४।१ दयालु दयाल
२७।६।१ महँ महु
८।१ कहु सो कहुँ सोइ
दिन सो दिनु सोइ
२८।६।२ पूछत पूँछत
२९।४ १,२ पूछी,कृपा पूँछी,कृपाँ
७।२ किए किएँ
३०।३१ बिजई,बिनई विजयी,बिनयी
५।२ सहसहु सहसहुँ
८।१,२ भाति भाँति
३०।२ जाहि जाहिँ
३१।४।२ हों हौं
८।१,२ सवहि, जरै सवहिँ जरैँ
३२ २।२ सपनेहु बूझिय सपनेहुँ, बूझिय

७।१ नाही नाहीँ
३३।१।१ चहै चहै
२।१ के कँ
७।२ ते तँ
८।१ नाँघि नाघि
३३।६।२ चलै चलैँ
७।२ कहु कहुँ
३५।३।१,२ बलु बल
६।१,२ बैदेही, देही बैदेहीँ देहीँ
३६।१।२ ते, तँ
३।२ आए आएँ
७।२ सवहि सवहिँ
३७।२।१ सुभाव,साँचा सुभाउ साचा
२।२ काँचा काचा
३।१ २ जौं जौ
४।१ जाकी जाकीँ
५।२ सभा सभाँ
७।१ सभा सभाँ
९।१,२ स्रम,नाही,माही श्रम,नाहीँ, माहीँ
दो० ३।७।२ वेगही बेगहीँ
३८।१।२ करहि करहिँ
४।१ पूछेहु पूछिहु
३९।१।२ भुवनेश्वर भुवनेस्वर
६।१ कहँ कहुँ
७।१,२ गए, विश्व गएँ बिस्व
४०।३।१ उतकर्ष उतकरष
दो० ४०।१ मागौं मागउँ
४०।८।२ भजे भजैं
२।१ पहि पहिँ
४४।१।२ आए, तबौं आएँ,तबउँ
४।२ मोरे मोरैँ
६।२ तबहु तबहुँ

८।१,२	सरनाई, की	सरनाईँ, कीँ
दो० ४४।१	भाति	भाँति
४५।१।१	आगे	आगेँ
२।१	ते, दोउ	तैँ, द्वौ
दो० ४५।१	स्रवन	श्रवन
४६।१।१,२	मंडली,भाती	मंडलीँ,भाँती
दो० ४६।१	कहुँ. बिस्राम	कहु. विश्राम
२।२	धरे	धरैँ
३।१	अधियारी	अँधियारी
४।१,२	माही, नाही	माहीँ, नाहीँ
४८।१।१	कहउँ	कहौँ
४।२	भवन	भवनु
६।१,२	नाही, माही	नाहीँ, माहीँ
७।१,२	कैसे जैसे	कैसँ, जैसँ
८।१	मोरे, निहोरे	मोरैँ निहारैँ
८।२	धरों	धरौँ
दो० ४८।२	जिन्हके	जिन्हकँ
४९।१।१,२	तोरे,ते,मोरे	तोरैँ,तैँ,मोरैँ
३।१	स्रवनामृत	श्रवनामृत
९।१	नाहीं	नाहीँ
९।२	माही	माहीँ
दो० ४९।१	दिए	दिएँ
५१।१	धरे	धरैँ
५२।२।२	पहि	पहिँ
४।२	चहु	चहुँ
८।१	दीजहु	दीजेहु
५३।३।१	पूछी	पूँछी
५३।१	स्रवन	श्रवन
५४।१।१	पूछेहु जैसे,तैसे	पूँछेहु,जैसँ तैसँ

२।२	जातहि	जातहिँ
३।२	बाधि	बाँधि
३।१	काटइ	काटइँ
५४।१	नलु	नल
५५।३।१	स्रवन,	श्रवन
४।१.२	नाही,माही	नाहीँ,माहीँ
५।२	मीजहि	मीजहिँ
५।२	देहि	देहिँ
६।२	पूरहि	पूरहिँ
७।१	मिलवहि	मिलवहिँ
५५।२	सकहि	सकहिँ
५६।१।२	सकहि	सकहिँ
६।२	मइ	मैँ
७।१,२	जाके, ताके	जाकँ, ताकँ
९।२	बँचाइ	बचाइ
दो० ५६।२	विष्णु	बिष्नु
५७।१।२	सबहिं	सबहि
६।२	धरिहीं	धरिही
५७।११।१	की स्राप	कीँ श्राप
१२।२	आस्रम	आश्रम
५८।५।२	के	कँ
दो० ५८।१	काटेहि	काटेँहि
५८।२	डाटेहि	डाटेँहि
५९।४।२	रहे	रहेँ
६।१	सूद्र	सुद्र
६०।२।१	के	कँ
४।१	बधाइअ	बँधाइअ
४।२	तिहु	तिहुँ

———

षष्ठ सोपान

१।४	निर्गुनं	निर्गुणं
दो० १।२	उतरइ	उतरै
दो० २।२	तरहि	तरहिँ
१।१।१	यह	येह
३।२	तेहिं	तेहि
४।१	उकुति	उक्ति
दो० १।१	लीलहि लेहि	लीलहिँ लेहिँ
२।४।२	मोरे, कलपना	मोरेँ कल्पना
३।२।२	नर	नरु
३।२	संकर	संकरु
४।२	स्रम	श्रम
५।२	आस्रम	आश्रम
६।१,२	यह करहि,	येह, करहिँ
८।१	यह, कइ	येह, कै
दो० ३।२	राम	रामु
४।१।२	के	कँ
२।२	गर्जहि	गर्जहिँ
५।२	तन	तनु
६।१	अइसेउ	ऐसेउ
	तिन्हहि	तिन्हहिँ
७।१	टरहि	टरहिँ
८।१	की	कीँ
५।८।२	देहि	देहिँ
१०।१	स्रवन	श्रवन
६।२।२	कौतुकही	कौतुकहीँ

५।१,२	सो, सो,	सोँ, सोँ
दो० ६।१	सौपि	सौँपि
७।३।२	चौथे	चौथेँ
४।१,२	भरता	भर्ता
	संहरता	संहर्ता
५।२	भजहु	भजहुँ
६।१,२	करहि, होहि	करहिँ होहिँ
८।२।१	तइ	तैँ
४।१ २	मोरे, तोरे	मोरेँ, तोरेँ
६।१	मंदोदरी	मंदोदरीँ
८।१	स्रवन	श्रवन
९।२।१	एक	एकु
४।१	आगे दुख	आगेँ दुखु
५।१	बधाएउ	बँधाएउ
६।२	कहहि	कहहिँ
८।१	सुनहि	सुनहिँ
दो० ९।१	जाहि जौ	जाहिँ जौँ
१०।१।१	जउ मानहु	जौ मानहुँ
१।२	प्रकारु	प्रकार
३।१,२	ते,	तेँ
५।१,२	कैसे, जैसे	कैसेँ, जैसेँ
११।६।१	दुहु	दुहुँ
दो०११।१	पूरब	पूरुब
१२।४,१;५।२	महु,महु	महुँ, महुँ
६ २	महुँ	महुँ
१३।६।१	स्रनन	श्रवन
७।२	सुनहु	सुनहुँ

दो०१·का।२	के	कँ
१४।२।१	सोचहि	सोचहिँ
४।१,२	गिरे, परे	गिरेँ, परेँ
१५।४।१	स्रवन	श्रवन
१६।५।१	सब, मोरे	सबु, मोरेँ
८।१	महु	महुँ
१६।१	बर्षहि	बर्षहिँ
१६।२	मिलहि	मिलहिँ
१७।५।१	के	कँ
१८।३।२	गै	गइ
६।२	सकहि	सकहिँ
८।१	कोलाहल	कोलाहलु
१०।१	पूछे, देहि	पूछेँ, देहिँ
१९।१।१	तुरित	तुरत
४।१,२	बैसे, कैसे	बैसा, कैसा
८।१	कहु	कहुँ
२०।१।१	तै	तैँ
५।२	आनेहु	आनिहु
६।२	छमिहि	छमिहिँ
२१।२।२	नाते, मानिए	नातेँ, मानिएँ
८।१	पहि	पहिँ
१०।१,२	के, के	कँ, कँ
२२।८।२	छमा	क्षमा
२३।५।१	जानहि	जानहिँ
८।१	नगर	नगरु
२३ख।२	हमारे	हमारेँ
२३ग।१	करिय	करिअ
२३घ।१	कहु, बधे	कहुँ, बधेँ
२३ङ।२	मनहु	मनहुँ
२४।३।२	भाती	भाँती
९।२	तेहि	तेहिँ
१२।२	स्रवन	श्रवन
दो० २४।१	एक	एकु
२४।२	महु, तै	महुँ, तैँ
२५।१।१	रावन	रावनु
२।२	पूजेउ	पूजेउँ
३।२	पूजेउ	पूजेउँ
४।१	जानहि	जानहिँ
४।२	जिन्हके	जिन्हकेँ
५।१	जानहि	जानहिँ
८।१,२	रावनु, स्रवन	रावन, श्रवन
२७।४।१	के आगे	कँ आगेँ
४।२	परिहहि, लागे	परहहिँ लागेँ
५।२	खेलिहहि	खेलिहहिँ
६।२	छुटिहहि	छुटिहहिँ
८।२	घृत	घृतु
२७।२	सुनहि	सुनेहि
२८।२।१	नाघहि	नाघहिँ
२।२	होहि	होहिँ
५।१	मै नीर	मैँ नीरु
२९।२।१	के	कँ
३।१,२	मोरे, मोरे	मोरेँ मोरेँ
४।१,२	आगे, त्यागे	आगेँ, त्यागेँ
५।१,२	माही, नाही	माहीँ, नाहीँ
७।२	ते	तेँ
९।२	काटे	काटेँ
२९।१०।२	काटइ	काटै
दो० २९।१	बहहि	बहहिँ
२९।२	कहावहि	कहावहिँ

३०।३।२	बघे सुगाला	बघैँ सुकाला
४।१	महु	महुँ
६।२	सूने	सूनैं
दो० ३०।२	जुवतीन्ह	जुवतिन्ह
३१।१।२	बघे	बघैँ
३२	बिष्णु	बिष्नु
४।२	शव	सव
५।१	बघउँ	बधौं
७।२	छोटे	छोटैं
८।१,२	जाके ताके	जाकैँ, ताकैँ
दो० ३१।२।१४	खाहि	खाहिँ
३२।१।१	कइ	कैँ
३।२	दुहु	दुहुँ
३२।६।१	सवारे	सँवारे
७।२	दिनही	दिनहीँ
८।१	कोप	कोपु
३२	देखहि	देखहिँ
३३।१।१	बधि	बिधि
७।१,२	आगे, लागे	आगैं, लागैं
८।२	गिरहि	गिरहिँ
९।१,२	नाही, माही	नाहीँ, माहीँ
३४।२।१	अस	असि
२।२	मह	महुँ
७।१	साचेहु	साचेहुँ
७।२	जौं	जौ
१२।२	बैठहिं	बैठहि
१३।१	झपटहि	झपटहिँ
३।२	ओहि	एहिँ
दो०३४।२क	बइठहि	बैठहिँ
३४।२ख	ते	तैँ
३५।२।२	गहे	गहैँ
६।१	जगदात्मा	जगदातमा
६।२	बिस्रामा	बिश्रामा
८।१	ते	तैं
१०।२	येह	यह
११।२	करौ	करौँ
१२।१	प्रथमहि	प्रथमहिँ
१२।२	रावन	रावनु
३६।३।२	येह	यह
१०।२	तुम्हौ	तुम्हौँ
३७।४।२	बाकुरे	बाँकुरे
८।१	काल	कालु
३८।८।२	होहि	होहिँ
९।२	बसहि	बसहिँ
३।१	स्रवन	श्रवन
३९।५।१	जोग	जोगु
६।१	प्रताप	प्रतापु
७।१,२	नावहि	नावहिँ
	धावहि	धावहिँ
९।२	चलेउ	चले
१०।२	मुखहि	मुखहिँ
	बजावहि	बजावहिँ
४०।१।२	अहंकारी	अहँकारी
४।२	बैठे	बैठैँ
७।१	मागी	माँगी
९।१	खावहि, मांस	खावहिँ, माँस
१०।१	चोच	चोँच
४१।१।१	सोहहि	सोहहिँ
२।१	बाजाहि	बाजहिँ
३।१	बार्जाह	बाजहिँ
३।२	जाहि	जाहिँ
४।१	कै	के

५।१,२	धावहि	धावहिँ
	करहि	करहिँ
६।१	कटकटाहि	कटकटाहिँ
६।२	काटहि	काठहिँ
४२।६।२	लंकेस	लंकेसु
दो०४२।१	भिरहि	भिरहिँ
४३।१।२	जीतिहहि	जीतिहहिँ
४।१	मेघनाद	मेघनादु
७।२	मह	महुँ
८।१	दुसरे	दुसरेँ
४४।१।२	प्रताप	प्रतापु
४।२	पीटहि	पीटहिँ
दो०४४।१	सो	सोँ
२	आगे	आगेँ
४५।२।२	देहि	देहिँ
दो० ४५।२	स्रम	श्रम
४६।२।२	स्रम	श्रम
५।२	जह तह	जहँ तहँ
६।२	मानहि	मानहिँ
११।१	अधियारा	अँधियारा
दो० ४६।२	देखई	देखइ
	करहि	करहिँ
४७।४।१	कतहु नाही	कतहुँ नाहीँ
५।२	स्रम	श्रम
८।१	माही	माहीँ
४८।२।२	स्रम	श्रम
७।१	ते	तेँ
४८ ८।२	काहु	काहुँ
दो०४८।४	सेवहि	सेवहिँ
	तासो	तासोँ
४९।६।२	नगरु	नगर
१०।२	ते	तेँ
१४।४	सयल	सैल
दो०४९।१	स्रवन, गढ़	श्रवन, गढ़
५०।४।२	स्रवन	श्रवन
५१।१।१	कटक	कटकु
५।२	भाति	भाँति
६।२	ही	हीँ
७।२	करै	करैँ
दो०५१।१	बस	बिबस
५२।१।१	बरषै	बरष
१।२	ते, होहि	तेँ, होहिँ
२।१	भाति	भाँति
२।२	बोलहि	बोलहिँ
३।२	बरषइ	बरषै
४।३	देखे, लेखे	देखेँ, लेखेँ
५२।५।१,२	कानें, जानें	काने, जाने
५।१	पहि	पहिँ
८।१	देखहि	देखहिँ
८।२	कबहुक, कबहु	कबहुँक, कबहुँ
५४।१।१	बिराजहि	बिराजहिँ
२।२	भिरहि	भिरहिँ
८।१,२	के	कैँ
५५।२।२	सेवहि	सेवहिँ
५।२	लछिमन	लछिमनु
दो०५५।२	औषधी	औषधि
५।१	भजि	भजु
७ १	तै	तैँ
५६।२	येह	यह
५७।२।१	आस्रम	आश्रम
२।२	स्रम	श्रम
४।२	कहै	कहैँ
५।२	जितिहहि	जितिहहिँ

६।१ भए भएँ
७।२ थोरे थोरेँ
दो०५७।१ मकरी मकरीँ
२।१ येह यह
३।१,२ जबही, तबही जबहीँ, तबहीँ
४।२ पाछे पाछेँ
दो०५८।२ स्रवन श्रवन
५६।५।२ तेहि, येह तेहिँ, यह
दुख दुखु
६।१ मोरे मोरेँ
७।१ स्रम श्रम
६०।२।२ महु महुँ
७।२ मोरे मोरेँ
६१।७।२ होहि,जाहि होहिँ, जाहिँ
११।१ कौन कवन
१२ १,२ माही,नाही माहीँ, नाहीँ
१५।१ सौपेसि सौँपेसि
६१।२ महँ महुँ
६२।२।२ लछिमन लछिमनु
५।१ येह यह
६।१ निसिचर निसिचरु
६।२ वैसा बैसा
८।२ काहे काहेँ
१०।२ संहारे संघारे
दो०६२।२ कुंभकरन कुंभकरनु
सठ सठु
६३।१।१ तै तैँ
३।२ के कँ
४।१ तै तैँ
६३।२ घट घटँ
७।१ रावन रावनु

७।२ सिखावन सिखावनु
६४।८।१,१ तै तैँ
८।१ नै नैँ
दो० ६४।१ कपट कपटु
२।२ गिर गिरि
६७ २।२ गुहा गुहाँ
४।१ स्रवनन्हि की श्रवनन्हि कीँ
४।२ पराहि पराहिँ
६।१ फिरहि, फिरहिँ
फेरे फेरेँ
६७।६।२ सुनहि सुनहिँ
सभारेहु सँभारेहु
६८।५।४ कटहि कटहिँ
५।२ होहि होहिँ
७ २ भागहि भाजहिँ
६६।१२ गँभीरा गभीरा
७।१ तन तनु
८।२ जबहि जबहिँ
७०।७।१ काटे काटेँ
७१।१।६२ जान्यो, तान्यो
जानेउ, तानेउ
४।२ ते तैँ
५।१ आगे आगेँ
८।२ सबहि सबहिँ
१०।२ तेही तेहीँ
१५।१ चहु चहुँ
७२।१।१ फिरी फिरीँ
३।१ छीजहि छीजहिँ
३।२ कहे भाती कहेँ भाँती
७२।५।१ रोवहि रोवहिँ
७३।८।२ करै करैँ
५।२ देखहि देखहि

७।२	परेउ	परे	
१०।१	जूझै, लागहि	जूझैँ, लागहिँ	
७४।१।२	जाहि	जाहिँ	
३।१	कटक	कटकु	
५।२	पवारै	पवारैँ	
७५।१।	मुरछा	मुरुछा	
५।२	होहू	होहूँ	
६।१	सुख	सुखु	
१०।२	रहेहु, तीनिउँ	रहहुँ, तिनिउ	
११।१	दीन्ह	दीन्हि	
६७।७।१	कहँ	कहुँ	
१२।२	कबहु	कबहुँ	
१३।२	भए	भएउ	
७७।३।१	दुंदुभी	दुदुभीँ	
५।२	लछिमन	लछिमनु	
६।१,२	जबहीं, तबहीं	जबही, तबही	
७।१	सदन	सदनु	
७८।१।१	तिन्हहि	तिन्हहिँ	
१।२	आचरहि	आचरहिँ	
३।२	चारिहु	चरिहुँ	
५।२	भए	भएँ	
११।१	ते, ते	तैँ, तैँ	
७८।१	बिस्राम	विश्राम	
७६।१।१	डिगही	डगहीँ	
६।२	छुभित	छुभित	
११।१	सुनहु	सुनहुँ	
१३।१	येह	यह	
१६।१	मानही,	मानहीँ	
छं० १७।११	बखानही	बखानहीँ	
७६।१	दुहु	दुहुँ	
८०।१	रथ	रथु	
३।२	बीर	बीरु	
४।२	स्यंदन	स्यंदनु	
११।१,२	जाके, ताके	जाकैँ, ताकैँ	
११।२	कहँ	कहुँ	
१३।१	के	कैँ	
८१।३।१	दुहु	दुहुँ	
७।१	गाड़हि	गाड़हिँ	
११।१	भीजही	भीजहीँ	
१४।१	तन	तनु	
१६।१	ते	तैँ	
८२।४।२	रावन	रावनु	
५।२	मर्दै	मर्दइँ	
७।२	येह, की	यह, कीँ	
८३।६।२	प्रबिसहि	प्रबिसहिँ	
७।१,२	माही, नाही	माहीँ, नाहीँ	
११।१	जाके	जाकैँ	
८४।३।२	बल	बलु	
४।२	जौ, तै	जौँ, तैँ	
६।१	समुझ	समुझु	
७।२	सकति	सक्ति	
८४।२	स्यंदन	स्यंदनु	
दो० ८४।२	करै	करैँ	
	बिरोधा	बिरोधी	
८५।२।२	भए	भएँ	
७।१	ते	तैँ	
८।२	मन	मनु	
७।२	ध्यान	ध्यानु	
१२।१	महु	महुँ	
८६।१।२	बैठहि	बैठिह	

४।१	कइसे, जैसे,	कैसें, जैसें,
	कहँ	कहुँ
८।१,२	माथे,	माथें,
	सोइहि	सोइहिं
८७।१।१	एही	एहीं
३।२	दमंकहि	दमंकहिं
५।२	मनहु	मनहुँ
८।२	भै	भइ
९।१,२	चिक्करही,	चिक्करहीं,
	परही	परहीं
१०।१	सबहि	सबहिं
दो० ८७।१	के	कँ
८८।१।१	मज्जहि	मज्जहिं
२।२	ते	तें
३।१	कहहि	कहहिं
३।२	दरिद्र	दरिद्रु
५।१	खैंचहिं,भए	खैंचहिँ,भएँ
६।१	जाही	जाहीं
७।२	बधू	बधूँ
छं० १।१।१	सिरु	सिर
१४।१	अंगन	अंगनि
८९।७।१	बाची	बाँची
छं० ४।२।१	महु	महुँ
दो० ८९।२	स्रमित	श्रमित
९०।३।१,२	माही,	माहीं,
	नाही	नाहीं
४।१,२	जस, जाके	जसु,जाकेँ
६।१,२	हवाले,	हवालैं,
	के पाले	कैं पालैं
९१।१।२	छाड़ै	छाड़ैं
३।२	महु	महुँ
६।१,२	कैसे, जैसे	कैसें, जैसें

९१।१	स्रवन	श्रवन
९।२	मार्गन	मारगन
९२।२।१	बल	बलु
४।१	बिफल	निफल
	होहि	होहिं
६।२	खैंचि	खैँचि
१०।२	भुजन्ह	भुजन्हि
दो० ९।२।१	होहि	होहिं
९३।५।२	कार्मुक	कारमुक
९४।२।१	पाछे	पाछें
३।२	खेल	खेलु
४।१	बिभीषन,	बिभीषनु
	स्रम	श्रम
५।२	तै	तैं
६।१	शिव, कहु	सिव,कहुँ
७।२	काल	कालु
छं० ९४।१२।१	ताकहु	ताकहुँ
९५।१।१,२	स्रमित	श्रमित,
२।२	हृदय	हृदयँ
९६।२	तेहि,	तेहिं,
	पाखंड	पाषंड
१२।१	मर्दहि	मर्दहिं
९७।१।१,२	महु, डर	महुँ,डरँ
२।१	एक	एकु
७।२	मोरे	मोरें
१२।१	बल	बलु
९८।२।१	कटहु	कटहुँ
५।२	चलहि	चलहिं
७।२	कटु	कटुहुँ
छं० १	ते	तें
६	मनहु,बीसहु	बीसहुँ,मनहुँ

१७।१	पहि	पहिँ
६६।१।१	तेही	तेहीँ
५।१	कटेहु	कटेहुँ
६।२	हाँ	हाँ
७।२	अजहु	अजहुँ
८।१	जेहि	जेँहि
१३।१,२	ते	तेँ
दो० ६६।१	रावनहि, महु, मरिहहि	रावनहिँ, महुँ, मरिहहिँ
१००।१।१	भाति	भाँति
३।१	भाती	भाँती
छं० १०।१	तेहि भए	तेहिँ, भएँ
२।२	धरे	धरेँ
१८।१म०	हु	महुँ
३।१	गहे,	गहेँ,
१६।१	तेहि	तेहिँ
१०२।३ १	मरु	मर
७।२	रोवहि	रोवहिँ
२०।१	सवहि	सवहिँ
१०२।२	मानहु	मानहुँ
१०३।४।२	हतौ	हतौँ
५।२	छुभित	छुभित
८।१	महु	महुँ
११।१	बरषहि	बरषहिँ
छं० ८।१	रायमुनी, बैठी	रायमुनीँ, बैठीँ
६।१	सकहि	सकहिँ
७।२	काहु	काहुँ
८।१	की	कीँ
१०।१	हाल	हालु
छं० ३।१	ते	तेँ
दो० १०५।१	सबु	सब
१०६।५।२	की	कै
७।१	सबही	सबहीँ
१०६।३।१	महु	महुँ
दो० १०७।१	बसहु	बसहुँ
१०८।५।२	सेवहि, निसिचरी	सेवहिँ, निसिचरीँ
११।१	पयादे	पयादेँ
१२।१	नीकी	नीकीँ
दो० १०८।२	लागी, करै	लागीँ, करैँ
१०९।१।२	बोली	बोलीँ
८।२	मोकहु	मोकहुँ
छं० १२।१	काहु	काहुँ
५	स्रुति	श्रुति
१६।२	मानहुँ	मानहु
११०।४।१	बिश्व,	बिस्व
७।१	बपु	बपुँ
६।१	येह	यह
११।२	हमरे	हमरेँ
१११।२।१	सिंध	सिंह
१६।१	दंतिकथा	दंत कथा
२०।२	सुख	सुखु
११।२	नही	नहीँ
११२।१।१	दसरथ	दसरथु
५।१	प्रेम	प्रेमु
६।२	मन	मनुँ
७।२	कहु	कहुँ
११३।२।१	बिस्राम	बिश्राम
२।१	तून	त्रोन
८।२	के	कैँ
१४।२	श्री राम	श्री रामु
१६।१	जानिए	जानिएँ
११४।३।२	जानहि	जानहिँ
५।२	पहि	पहिँ
८।२	की	कीँ

६।२	मुकु	मुक्तउ
दो० ११५।१	पुरी तिलक	पुरीं,तिलकु
११६।२ख	निहोरौ	निहोरौं
११६।१	माहि	माहिं
११७।४।१	आगे	आगें
११८।४।१	तुम्हरे, मै	तुम्हरें, मैं
४।२	तिलक, कहँ	तिलकु कहुँ
७।१	तुम्हहि	तुम्हहिं
११।१,२	सकहि,	सकहिं,
	चितवहि	चितवहिं
११६।२।१	महु	महुँ
४।१	सिंहासनु	सिंघासनु
५।२	शृंग	सृंग
११९।१	बिस्राम	विश्राम
१२०।१।१	बिमान	बिमानु
२।२	सबके	सबकें
१२०।४।२	बिमान, ते	बिमानु, तें
१।२	कहु, प्रनाम,	कहुँ, प्रनामु,
	राम	रामु
१२०।२	कहु	कहुँ
१३।१	राम	राय
१७।१	भाति	भाँति
२०।१	गावहि	गावहिं
दो० १२१।१	सुनहि	सुनहिं

———

सप्तम सोपान

१।२	सोभाढ्यं	शोभाढ्यं
१।३	जुतं	युतं
१।४	जानकीसं	जानकीशं
२।१	कोशलेंद्र	कोसलेंद्र
ख ।१,२	प्रसंन, चहु	प्रसन्न, चहुँ
१।१।१,२	एक	एकु
३।१,२	लछिमन—	लछिमनु
	बिंदु	बिंद
४।२	ते, नहि	तें, नहिं
७।१,२	जिउ,	जिय,
	मिलिहहि	मिलिहहिं
८।१	रहहि	रहहिं
१ क १,२	मह	महुँ,
१।२	श्रवत	स्रवत
२।२।२	मह	महुँ
५।१।२	सुजस	सुजसु
७।१	ते	तें
१०।१,२	प्रेम, श्रवत	प्रेमु, स्रवत
१३।१,२	माही,	माहीं,
	नाही	नाहीं
६।१,२	गुसाईं,	गोसाँई
	सुमिरहि,	सुमिरहिं
	कबहु	कबहुँ
दो० १।१,२	तुरित, यही	तुरत, किह

३।२।१	महु	महुँ
७।१,२	जैसेहि, कहँ	जैसें, कहुँ
८।१	कहँ	कहुँ
३ ख १,२	निरखहि,	निरखहिं,
	सुर	स्वर
७।१	नहि	नहिं
६।१	श्रवत	स्रवत
११।३	पहि	पहिं
१३।१४।४	बचन, ते	बचनु, तें
१५।१	कौसलनाथ,	कोशलनाथ,
	दरसन	दरसनु
५।२	लछिमन	लछिमनु
	भरत	भरतु
६।५।१	अमिति,	अमित,
	तेहि	तेहिं
७।१२	महि, यह	महुँ, येह
१२।१	श्रवत	स्रवत
१२।१	भेटी	भेटीं
६।क१,२	सुमित्रा,	सुमित्राँ
	कइकई	कैकई
६।१-२,	लछिमन	लछिमनु
	आसिस, कहँ	आसिष, कहुँ
७।१।१	सभनि	सबन्ह
७।२।१	देहि	देहिं
५।१	भाति	भाँति
८।१	मम	मेरे

७।१,२ मातु,गातु मात, गात
८।३।१।५ सनेह, सनेहु,
बरनहि बरनहिँ
४।२ सराहहि सराहहिँ
७।१।२ सुनहु, कहु सुनहुँ, कहुँ
८।२ ते तेँ
दो० ८।क१,२ दीन्हे दीन्हि
ख ८।२ देखहि देखहिँ
६।१।१।२ सवाँरे, सँवारे,
सबहि सबहिँ
२।१ बंदनिवार बंदनवार
३।१,२ बीथी, बीथीँ
सिचाई, सिचाईँ,
पुराई पुराईँ
४।१ भाति भाँति
६।२ सजे सजेँ
७।१,२ के,के केँ, केँ
दो० ६।का२ भए भएँ
६।१ होहि होहिँ,
बाजहि बाजहिँ
१०।२।२ गवन गवनु
४।१,२ गुरु, गुर,
सुदिन सुदिनु
५।२ बैठहि बैठहिँ
७।१,२ कहहि, कहहिँ,
अभिषेका अभिषेका
८।२ बिलंब बिलंबु
१०क२ सवारे सँवारे
११।४।१, हँकारे हकारे
६।२ सकहि सकहिँ
८।१ मज्जन मज्जनु
११।१क ,, ,,
११।१ख हरषी हरषीँ

११।१ तेहि तेहिँ
१२।१,२ सिंघासन सिंघासनु
६।१,२ हरषी, हरषीँ,
महतारी, महतारीँ
१।१,२ त्रिभुअन, त्रिभुवन,
दुंदुभी दुंदुभीँ
६।१ दुंदुभी दुंदुभीँ
बाजहि बाजहिँ
१०।१ नाचहि नाचहिँ
१४।१ सुर मुनि
१२।क१,२ वोह वह,
बरनै बरनैँ
१२।१,२ काहू, काहूँ,
मरम मरमु
१३।६। गुननि गुनन्हि
८। कहु कहुँ
६।१ भक्ति भगति
११।१ बिश्वास बिस्वास
१२।१ तरहि, तरहिँ,
स्मरामहे समरामहे
२०।१ फूलत फूलत
२२। कहहु कहहुँ,
जानहु, जानहुँ,
जस जसु
१३।१ के केँ
१४।२।२ पाँवर पावर
११।१,२ नितही, नही नितहीँ, नहीँ
१२।१,२ जिन्हके, तिन्हके जिन्हकेँ, तिन्हकेँ
१३।२ तिन्हके तिन्हकेँ
१४।१ ते तेँ
१५।१,२ प्रेम, लिए, हिए प्रेमु,
लिएँ, हिएँ

१६।१,२ आदरही, मही आदरहीं, महीं
१४।२ दिवाए देवाए
१५।१।१ यह येह
२२।१२ अभिषेका, लहहि अभिषेका, लहहिं
४।१ माही माहीं
७।२ कहँ कहुँ
६।२ सबके, जिन्हहि सबकँ, जिन्हहिं
१५।२ देवस दिवस
१६।१।२ नाही, माही नाहीं, माहीं
२।२ सिरु सिर
१६।४।२ केहि, करौ केहिं करौं
७।१ तुम्हहि तुम्हहिं
१६।१ ग्रह ग्रहँ
१७।१।२ कहा कहाँ
२।१,२ सकहि सकहिं
६।१ प्रथमहि प्रथमहिं
१७।२ बोले बोलेउ
१८।२।१,२ मरतीं, तुम्हारेहि, मरतीं, कोछे तुम्हारेहिं, कोंछँ
४।१ मोरे मोरँ
५।१ तुम्हहि तुम्हहिं
७।१ नीच नीचि
१६।२।२ की कीं
७।२ भाति कीन्हे भाँति कीन्हें
८।२ देखिहों देखिहौं
१६।क१,२ तुम्हहि, तुम्हहिं
२०।६।२ कहहि कहहिं
२०।२ पावहि, पावहिं, सुखहि सुख
२१।३।१,२ चारिउ, चारिहुँ, माहीं माही, सपनेहु सपनेहुँ
५।१ कवनिउ कवनिउँ
६।१ नहि नहिं
७।१ पुनी घूनी
दो० ८।१,२ माहि नाहि माहिं नाहिं
२२।२।१,२ भुअन भुवन बहुति बहुत
४।१,२ तिन्हहु तिन्हहुँ
५।२ दमुसीला दमसीला
६।२ सकै सक
२२।२ मनहि, के मनहिं,कैं
२३।१।१,२ फूलहि, फूलहिं, फरहि, रहहि फरहिं, रहहिं
२।१,२ कूजहि, कूजहिं, चरहि, करहि, चरहिं, करहिं
५।१ लागे मागे
६।१ सस्य ससि
७।१,२ प्रगटी, प्रगटीं, जगदात्मा जगदातमा
६।२ डारहि डारहिं
२३।१,२ जेतनेहि, जेतनेहिं, मागँ, देहि, के मागे,देहिं, कँ
२४।१।२ कह कहुँ
३।१ सदा सदाँ
५।२ सेवा सेवाँ
७।१ जेहि जेहिं
८।१७२ माही, नाही माहीं, नाहीं
२४।२ पदारबिंदु पदारबिन्दु
२५।१।१ सेवहि सेवहिं
२।२ हमहि हमहिं

३।१,३ राम, भाति, रामु, भाँति
सिखावहि सिखावहिँ
५।१ रहही रहहीँ
७।१ मनहु मनहुँ
२६।५।१ बूझहि बूझहिँ
दो० २६।२ नहि, सकहि नहिँ, सकहिँ
२७।२।१ अयोध्या अजोध्या
४।१,२ चहु, कँगूरा चहुँ, कगूरा
६।१ काचा काँचा
११।२।१ रची, खची रचीँ, खचीँ
२७।१ गृह प्रति प्रति रचि
२७।२ निरख मुनि ते निरखत मुनि
चुराइ चोराइ
२८।१।१ सबहि सबहिँ
लगाई लगाईँ
१।२ भाति, भाँति,
बनाई बनाईँ
२।१,२ सुहाई, सुहाईँ
फूलहि, बनाई, फूलहिँ, बनाईँ
७।१ देखहि देखहिँ
६।२ बीथी बीथीँ
१०।१ बनै बनइ
२८।२ नहि नहिँ
२६।५।१ बसहि बसहिँ
दो० २६।२ रही रहीँ
३१।२।२ बहुतन बहुतन्ह
५।२ कवनिहु कवनिहुँ
५।१ घरे घरेँ
३२।८।२ जोति जोनि
दो० ३२।२ कहँ कहुँ
३३।१।१ तीनिउ तीनिहुँ
भाई भाईँ
७।२ तुम्हरे, तुम्हरेँ,

जाहि जाहिँ
८।२ बिनहि बिनहिँ
३४।१२ पुलकित पुलकितँ
७।२ कहु कहुँ
दो० ३४।२ पर पअरि
३४।२ हमहि हमहिँ
३५।३।१ बारिद बारिधि
३६।२।२ चितवहि चितवहिँ
६।२ प्रश्न प्रस्न
७।२ अंतर अंतरु
दो० ३७।२ घनहि घनन्हि
३८।४।२ तेइ ते
६।१ मैत्री मइत्री
७।१ बसहि बसहिँ
८।२ कबहू कबहूँ
३६।१।२ भूलेहु भूलेहुँ
२।२ घालइ घालै
३।२ जरहि जरहिँ
४।१ सुनहि सुनहिँ
७।१ झूठइ, झूठइ, झूठेइ, झूठेइ
झूठ, झूठ झूठेइ, झुठै
४०।२।१,२ सुनहि सुनहिँ
लेहि लेहिँ
४०।५।१,२ मानहि, मानहिँ,
आनहि आनहिँ
८।१,२ पर, घरे सुर, घरेँ
४०।१ त्रेता त्रेता
४०।२ नाहि, माहि नाहिँ, माहिँ
४१।१।१.२ नहि, नहि नहिँ, नहिँ,
२।१ जानहि जानहिँ
३।२ करहि करहिँ
भजहि भजहिँ

८।२	परहि	परहिँ
४१।२	देखिअहि	देखिअहिँ
४२।५।२	प्रेम	प्रेमु
६।१,२	मानहि, गानहि	गानहिँ, मानहिँ
८।२	सुनहि	सुनहिँ
४३।१	,,	,,
४३।७।१,२	बड़े, सभ	बड़ँ, सब
४४।२।१	मन	मनु
३।१	कबहु	कबहुँ
६।१	कबहुक	कबहुँक
७।१	कहु	कहुँ
दो०४५।२।१	यह	येह
३।१,२	कहु	कहुँ
५।१	सुतंत्र	स्वतंत्र
६।१	मिलहि	मिलहिँ
७।१	महु	महुँ
४५।१	सभहि	सबहि
४६।३।२	कहा	कहाँ
४७।२।२	ते	तैं
६।१	माही	माहीँ
६।२	सपनेहु, नाही	सपनेहुँ, नाहीँ
४८।२।१,२	आदर पादोदक	आदरु चरनोदक
८।१	परमात्मा	परमातमा
४८।२	कहु	कहुँ
४९।३।२	पढे सुने	पढैँ सुनैँ
५।१,२	के धोए बिलोए	कैँ धोयैँ बिलोयैँ
६।२	कबहु	कबहुँ
८।२	जाके	जाकैँ
४९।२	कबहु	कबहुँ
५०।१।२	के	कैँ

५।१	अवराई	अबराई
६।२	सेवहि	सेवहिँ
८।२	सम नहि	समान
५१।७।१	सुजस	सुजसु
५२।१।१	यह	येह
२।१	बरनै	बरनैँ
दो० ५२क।१	तुम्हरी, कृपायतन	तुम्हरीँ, कृपाल मैँ
५३।२।२	सुनहि	सुनहिँ
३।२	कहँ	कहुँ
५।१,२	माहीं, सुहाहीं	माहीँ, सोहहीँ
६।२	जिन्हहि	जिन्हहिँ
८।१,२	कही यह, काग-गरुड़	कहा येह काक-गरुर
५४।१।१,२	यह, सुनहु,	महुँ सुनहुँ,
२।१	मह	महुँ
४।१	,,	,,
५।१	महु	,,
७।१	ते	तैँ
५५।२।१	तुम्ह केहि	तुम्हँ केहिँ
५।२	दोउ	द्वौ
५।२	बैरागा	बिरागा
७।२	मोरे	मोरैँ
५७।१।२	कल्पांत	कल्पांत
३।२	कबहु नहि	कबहुँ नहिँ
५।१	तह	तहँ
६।१	आव	आँव
७।२	आवहि सुनहि	आवहिँ सुनै
९।१,२	सुनहि, बसहि, तेहि	सुनहिँ बसहिँ, तेहिँ

५८।१।१	कहेउँ	कहिउँ
१।२	मै जेहि,	मैं, जेहिं,
२।१	सुनहु जेहि	सुनहुँ जेहिं
२।२	पहि	पहिं
३।१	कीन्ह	कीन्हि
४।१	बधायो	बँधायो
६।१	भाँती	भाती
८।१	माही	माहीं
५८।१	ते	तैं
५९।१।१	भाति,	भाँति
	मनहि	मनहिँ
६।१	जेहि	जेहिं
७।१,२	तोरे, कह, मोरे	तोरेँ, कहँ मोरेँ
८।१,२	पहि, होइ	पहिं, देहिं
६०।१।१	पहि	पहिं
३।१	मह करइ	महुँ करै
७।१	पहि	पहिं
६०।१,२	रहेहु	रहिहु
६१।३।१,२	मह, भाति	महुँ, भाँति
६।१	मह, राम	महुँ, रामु
६२।१।१,२	किए	किएँ
४।१,२	कहइ सुनहि	कहै,सुनहिं
५।१	सुनहु	सुनहुँ
७।१,२	ते, मै,	तैं, मैं,
	मरम, मै	मरमु, मैं
८।१	कबहु	कबहुँ
९।१	ते, मै	तैं, मैं
६२।१,२	कहँ, भजहि	कहुँ, भजहिं
६३।१।१	बसइ	बसै
४।१	तह	तहँ
५।१,२	करइ	करैं
६३क।१	भइ	भैं

६४।१।१	जेहि,	जेहिं
६।१,२	कहइ	कहै
६४।२	आगमन	आगवनु
६५।४।१	मिलन	मिलनु
५।२	गवन	गमनु
६६।२।१	की	कै
४।२	सब	सबु
५।२	तेहि	तेहिं
६७।१।२	खोज	खोजन
	दिसि धाए	सिधाए
२।१	भाती	भाँती
७।१	समेति	समेत
	बसीठी,	बसीठीं,
	जिहि	जेहि
६८।२।२	राज, देव	राजु, देव
६९।१	मह	महुँ
६९।२	करहि	करहिं
७०।५।१	कही	कहा
८।१	तृस्ना	तृष्ना
७१।२।२	जस	जसु
४।१	को	केहि
७।१	समुझे	समुझें
७२।१।२	काहु	काहुँ
४।१	व्याप्य	व्यापि
५।२	अनवद्य	अनवद्य
८।१,२	नाही, कबहु	नाहीं, कबहुँ
७२।२	आपुन	आपुनु
७३।३।१,२	कहँ, कहु	कहुँ, कहुँ
६।१	भ्रमहि, भ्रमहि	भ्रमहिं, भ्रमहिं
६।२	कहहि परसपर	कहहिं परस्पर

७।२ सपनेहु	सपनेहुँ
९।१ करही	करहीँ
दो० ७३क।२ जानहि	जानहिँ
७४।४।१ ताते	तातेँ
७।१ ते	तेँ
८।२ चिराव	चिराव
७५।४।२ रहौ	रहउँ
दो० ७५क।२ मह	महुँ
७५।१ बार,	बारँ,
सैसव	सैसवँ
७७।२।१,२ ग्रीवाँ,	ग्रीवा,
सीवाँ	सीवा,
७।१ झिगुली	झगुली
दो०७७क।१ रुदन	रुदनु
५।१ जौ	जौँ
८।१,२ माया,	मायाँ,
उपाया	उपायाँ
दो० ७८क।१,२ निरबान,	निबनि,
पूँछ	पूछ
३।१ ते	तेँ
४।१ ते	तेँ
५।१,२ काहू,	काहूँ,
पिताहू	पिताहूँ
७।२ कह	कहुँ
दो० ७९क।१ मै	मैँ
२।१ राम	रामु
२।२ माही	माहीँ
७।२ भाति	भाँति
दो०८०क।१ मनहूँ	मनहू
८०।१,२ महु	महुँ,
४।२ आनै	आनहि

९।१ भुवन	भुअन
९।२ सरऊ	सरयू
दो० ८१क।२। भुवन, देखउँ	भुअन, देखेउँ
८३।१।१ येह	यह
८३।१ प्रसंन	प्रसन्न
८५।२।१ तइँ	तैँ
३।१ तै	तैँ
८।१ तै	तैँ
८६।४।२ ते	तेँ
५।१ ते	तेँ
७।२ सभ	सब
८७।५।२ भाति	भाँति
७।१ बिश्व	बिस्व
८८।१।१ कबहू	कबहूँ
१।२ मोहीं	मोही
३।२ पहि	पहिँ
४।२ नहि	नहिँ
८८।२ नहि गनहि	नहिँ गनहिँ

३।१ ते	तेँ
४।१ येह	यह
७।२ नहि	नहि
८।१ नहिं	नहिँ
९०।१।१,२ नसाही	नसाहीँ
नाही	नाही
४।१ मिटिहि	मिटिहिँ
६।२ गोसाईं	गोसाँई
८।१ कवनिउँ	कवनिउ
९१।१।१ मह	मैँ
९२।६।१,२ बिस्नु	बिष्नु
संघर्ता	संहर्ता

१।१	भाति	भाँति
९३।२।२	प्रतापु	प्रताँप
५।२	जौ	जौँ
दो०९४।३।१	येह	यह
९४।१	आए	आएँ
९६।१।१	साँच	साच
३।२	भजै	भजिअ
४।१,२	ते	तेँ
६।२	कवहु	कबहुँ
दो०९६ का१	बिहँगेस	बिहगेस
९५७ १	मइँ	मैं
७।२	बसहि	बसहिँ
दो०९८ का१,२	धरे,पूजिति	धरेँ,पूज्य ते
७।२	महुँ	महु
दो० ९९का१	कहहि	कहहिँ
९९।१	वे	वेँ
१०१।१।१	सवारहि	सँवारहिँ
८।१	बेदहिं	बेदहि
१०।२	सबु, लोगु	सब, लोग
९।२	ताऽतिधनी	तातिधनी
१०।२	मों	मो
दो०१०१का१	कलियुग	कलिजुग
१०३।३।२	उपावा	उपाउ
६।१,१	रामहिं, पेम	रामहि, प्रेम
दो० १०२का१	विश्वास	विस्वास
१०३।२	करे	करै
६।१	माहीं	माहीँ
७।१	नहि	नहिँ
१०४।२	मै	मैँ
दो०१०५का२	देखे, बिस्नु	देखेँ, बिष्नु
१०६।१।२	भाति	भाँति
६।२	पिआए	पिआएँ
९।१	जेहि	जेहिँ

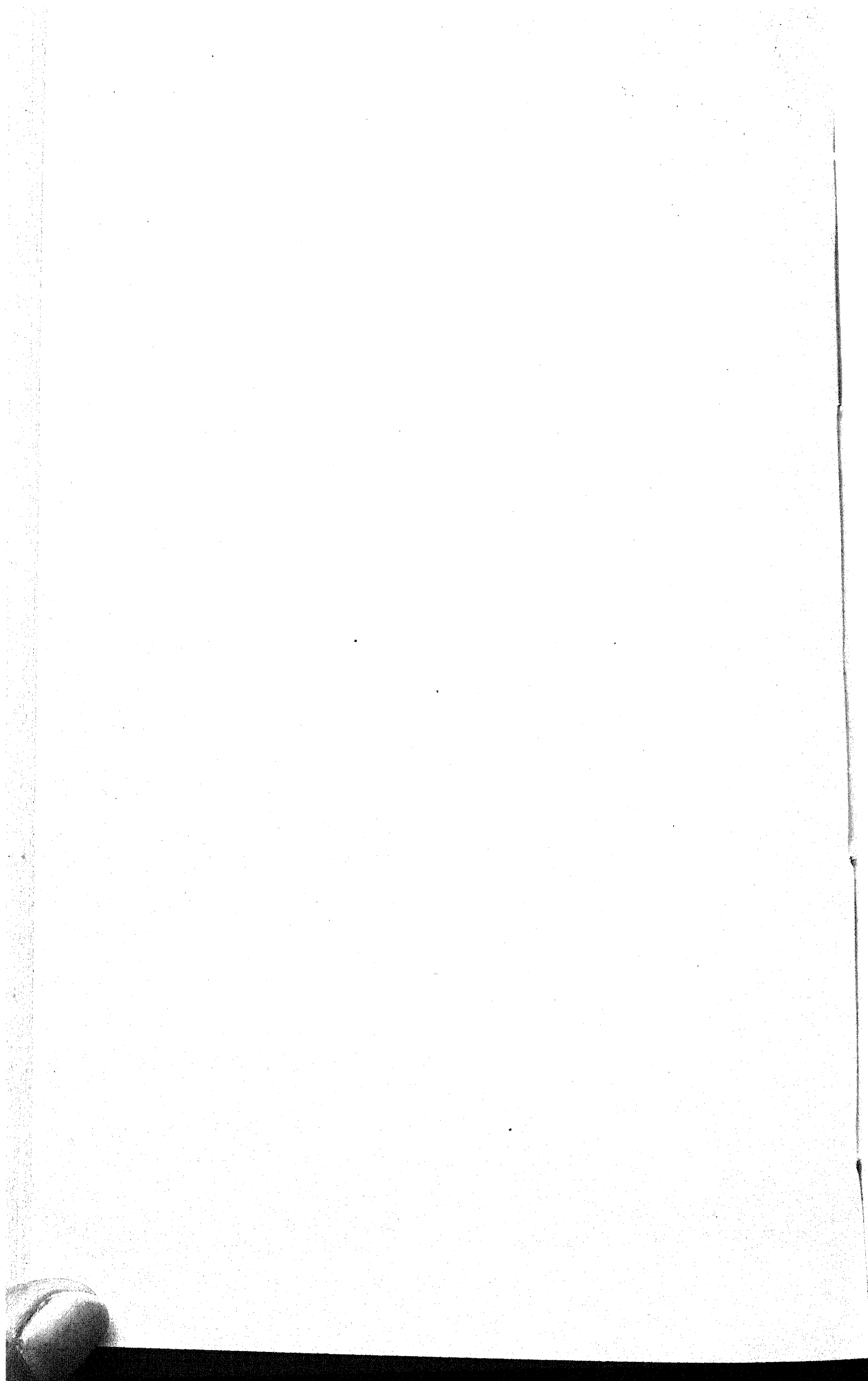
१०८।१।१	निर्वान	निर्बाण
४।२	गुनागार	गुणागार
८।१	रुंड	मुंड
१०।१	शूलपानिं	शूलपाणिं
११।१	कल्यान	कल्याण
१२।२	नरानां	नराणां
१५।१	ज्ञोगं	योगं
१०३।१,२	थोरेही	थोरेहीँ
५।१	छमा	च्छमा
८।२	सुदु	सुद्र
१५।१,२	माहीं, नाही	माहीँ, नाहीँ
१६।१	औरो	औरौ
दो० १०९खा१	मै	मैँ
११०।३।१	चर्म	चरम
५।१	भए	भएँ
६।१	ते	तेँ
९।२	मइ,	मैँ
१११।६।१	तै	तैँ
१६।२	ते	तेँ
११२।१।१	कबहु	कबहुँ
२।१	होइ	होहि
२।२	रहहि	रहहिँ
५।२	कबहु	कबहुँ
६।२	रहहि	रहहिँ
८।१	कछु	किछु
१२।१	मै	मैँ
१४।१,२	विश्वास, ते	बिस्वास, तेँ
दो०११२का१	मै	मैँ
११३।१।१	नहि	नहिँ
१२।२	ते मै	तेँ मैँ
१४।२	मइँ	मैँ
१५।२	दीन्हि	दीन्ह

११४।४।१	माही	माहीं
४।२	दुरलभ	दुलभ
	नाही	नाहीं
५।२	गभीरा	गँभीरा
१५।१	मै तुम्हहिं	मै तुम्हहिँ
१६।१	कहेउँ	कहिउ
११५।१४।१	मुनीश	मुनीस
दो०११५क।१	पुरुष	पुरुषु
	नारिहिं	नारिहि
११५क।२	विमुखु	विमुख
११६।५।२	ते	तेँ
११७।२।१	ईश्वर	ईस्वर
३।१,२	बध्यो	बँध्यौ
११७ख।१,२	दिआ, ते	दिया, तेँ
११७।२	जातहि,	जातहिँ,
	जरहि	जरहिँ
११६।४।१	मुकुति	मुक्ति
५।२	करै	करइ
दो० ११६ख।१	कह	कहँ
१२०।६।२	माहीं	माहीँ
६।१,२	जाके, ताके	जाकेँ, ताकेँ
१६।२	ते	तेँ
१२०क।१,२	आहि,	आहिँ,
	जाहि	जाहिँ
१२१।३।२	ते	तेँ
४।२	संछेपहि	संछेपहि
५।२	सुभाउ	सुभाव
१२।२	ते	तेँ
१३।१	माही	माहीँ
१६।१	भूर्ज तरू	भूरुज तरु
२२।१,२	धरम,	धर्म
	अहींसा	अहिंसा

२२।२	गिरीसा	गरीसा
२८।२	ते	तेँ
२६।२	ते, उपजहि	तेँ, उपजहिँ
दो० १२१क।२	कहु	कहुँ
२।२	बिरलेन्हि	बिरलेन्ह
३।२	ते	तेँ
५।१,२	नासहि,	नासहिँ,
	भाति	भाँति
६।१	गोसाईँ	गोसाँईँ
१४।२	नाही	नाहीँ
१६।१	फूलहि	फूलहिँ
१७।२	जामहि	जामहिँ
	बिखाना	बिषाना
१६।१	ते	तेँ
दो० १२२क।१,२	ते येह	तेँ यह
१२२।१	ते	तेँ
१२२ख।२	जे	ये
५।१	पूछेहु	पूछिहु
६।२	एको	एकौ
८।१	भाति	भाँति
दो०१२३क।१	दीन्ह	दीन
दो० १२४क।२	कृपाल	कृपालु
४।२	वारहि	बारहिँ
१२५क१,२	सिरु,	सिर
१२६।१।१	कहेउ	कहेउँ
३।२	सुनहि	सुनहिँ
८।२	काहू	काहूँ
१२६।१,२	बिनहिं, मानि	बिनहि, मानि
१२७।३।२	नाना	नाँना
४।२	छाँडि	छाड़ि
६।२	भूप	भूपु

७।२	जाकी	याकी	६।१,२	सुमिरिय,	सुमिरिअ,
१२८।३।१	कहिय,	कहिअ,		सुनिय	सुनिअ
	सठहीं	सठही	८।१	जाहि	ताहि
	हठसीलहिं	हठसीलहि		कटिलाई	कुटिलाई
३।२	लीलहिं	लीलहि	८।२	केहि	केहिँ
४।१	कहिय	कहिअ	६।१	ते, हू	तैं, हूँ
१२८।२	येहि	यहि	श्लोक १।१	प्रभुना	प्रभुणा
४।२	पाउँ	पाउ	१।२	मनिसं	मनिशं
१३०।३।२	माही, नाही	माहीँ, नाहीँ	२।१	सिवकरं	शिवकरं

———

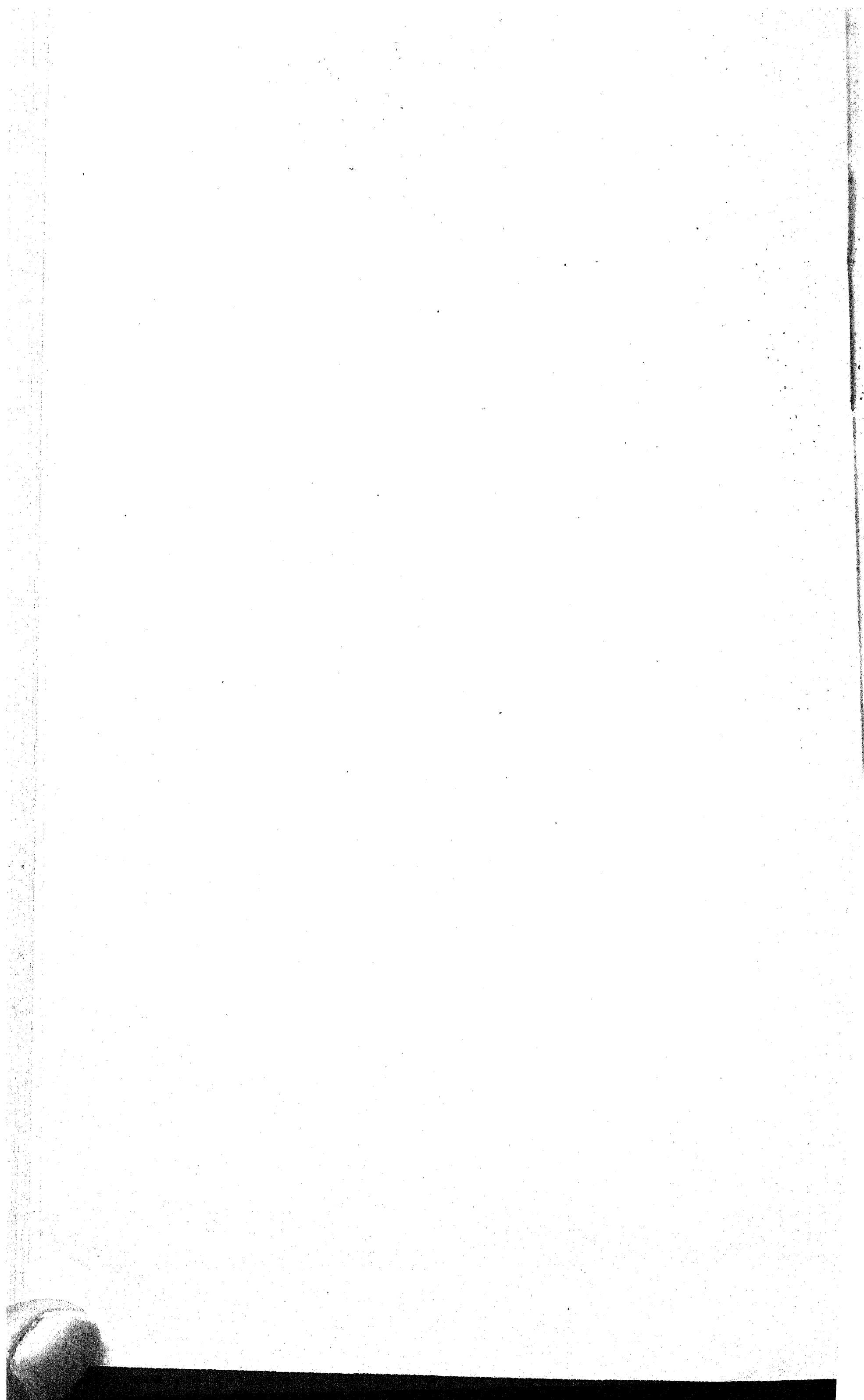


परिशिष्ट—३

रामचरित मानस

हस्तलेखों का संक्षिप्त विवरण

रामचरित मानस के उपलब्ध उन हस्तलेखों का संक्षिप्त विवरण, जो आर्यभाषा पुस्तकालय में संरक्षित हैं, प्रस्तुत किया जा रहा है। यह विवरण काल-क्रमानुसार शताधिक प्रतियों का है जो पूर्ण हैं या खंडित। मानस के गंभीर अनुशीलन करनेवालों के लिये ये विवरण उपादेय हो सकते हैं। इनका आकलन और प्रकाशन पहली बार हो रहा है। इनके संबंध में भूमिका में निवेदन किया जा चुका है। इन विवरणों में तुलसी पुस्तकालय, भदैनी स्थित मानस की तीन पूर्ण तथा अपूर्ण पांडुलिपियों का विवरण भी संकलित है।



१. पुस्तक किस चीज पर लिखी है—देशी कागज। पत्र—४४१। आकार १४½ इंच लंबाई और ६ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—६। रूप—आधुनिक। लिपि नागरी। लिपिकाल—संवत् १९२१ वि०।

तुलसी पुस्तकालय,
भदैनी,
वाराणसी

बाल कांड से—

आदि

श्री गणेशाय नमः ॥ श्लोक ॥

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छंदसामपि
मंगलानां च कर्त्तारौ वंदे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥

॥ सोरठा ॥

जो सुमिरे सिधि होय गणनायक करिवर बदन ॥
करहु अनुग्रह सोइ बुद्धिरासि शुभ गुन सदन ॥ १ ॥
मूक हौंहिं बाचाल पंगु चढ़ै गिरिवर गहन ॥
जासु कृपा सु दयाल द्रवौ सकल कलिमर्ल दहन ॥ २ ॥
नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन वारिज नयन ॥
करहु सो मम उर धाम सदा छीर सागर सयन ॥ ३ ॥
कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन ॥
जाहि दीन पर नेह करहु कृपा मर्दन मयन ॥ ४ ॥
बंदौं गुरु पद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि ॥
महा मोह तम पुंज जासु बचन रविकर निकर ॥ ५ ॥

उत्तर कांड से—

॥ छंद ॥

पाई न गति केहि पतित पावन राम भजि सुनु सठु माना ॥
गनिका अजामिल व्याध गीध गजादि खल तारे घना ॥

आभीर जमन किरात खस स्वपचादि अति अघ रूप जे ॥
कहि नाम बारक तेपि पावन होहि राम नमामि ते ॥
रघुवंस भूषन चरित यह नर कहहिं सुनहिं जो गावहीं ॥
कलिमल मनोमल धोइ बिनु श्रम राम धाम सिधावहीं ॥
सत पंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरै ॥
दारुन अविद्या पंच जनित बिकार श्री रघुबर हरै ॥
सुंदर सुजान कृपा निधान अनाथ पर कर प्रीति जो ।
सो एक राम अकाम हित निर्वान प्रद सम आन को ॥
जाकी कृपा लव लेस ते मतिमंद तुलसी दासहूँ ॥
पायौ परम बिश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूँ ॥

॥ दोहा ॥

मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुबीर ॥
अस बिचारि रघुवंस मनि हरहु बिषम भव भीर ॥
कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ॥
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥ १३१ ॥

इति श्री रामचरित्रमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने संपादनोनाम सप्तमः सोपानः । उत्तर कांड । समाप्त ॥ संवत् ॥ १६२१ ॥ श्री ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रामचरितमानस के रचयिता गो० तुलसीदास हैं। ग्रंथ पूर्ण है। लिपिकाल संवत् १६२१ वि० है। संपूर्ण कांडों में लिपिकाल संवत् १६२१ वि० लिखा है। बालकांड में पत्र सं० १ से १३२, अयोध्याकांड में पत्र सं० १ से १२३, अरण्य कांड में पत्र सं० १ से २६, किष्किंधाकांड में पत्र सं० १ से १५, सुंदर कांड में पत्र सं० १ से २७, लंका कांड में पत्र सं० १ से ५८ और उत्तर कांड में पत्र सं० १ से ६० है। सभी कांड पूर्ण हैं और उनके अंत की पुस्तिका में लिपिकाल सं० १६२१ लिखा है। लिपि स्पष्ट और सुंदर है।

२. पुस्तक किस चीज पर लिखी है—देशी कागज। पत्र—४००। आकार— ६१/० इंच लंबाई और ६ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१३। परिमाण—८४५०। पूर्ण अथवा अपूर्ण—पूर्ण। रूप कैसा है—प्राचीन। पद्य। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८६५ वि०।

।। श्री गणेशाय नमः ॥ अथ बालकांड लिख्यते ॥ वर्णानामर्थ संघानां रसानाम छंदसामपि ॥ मंगलानां च कर्त्तारौ ॥ बंदे वाणी विनायकौ ॥ १ ॥ भवानी शंकरौ वंदे । श्रद्धा विश्वास रूपणौ ॥ याभ्यां बिना न पश्यंति । सिद्धाः स्वांतस्थमीश्वरं ॥ २ ॥ वंदे बोधमयं नित्यं । गुरुं शंकर रूपिणं । यिमाश्रितो हि वक्रोपि । चंद्रः सर्वत्र वंद्यते ॥ ३ ॥ सीताराम गुण ग्राम पुण्यारण्य विहारिणौ ।। वंदे विशुध विज्ञानौ । कवीश्वर कपीश्वरौ ॥ ४ ॥ उद्भव स्थिति संहार । कारिणी क्लेश हारिणी ॥ सर्व श्रेयस्करीं सीतां नतोहं राम वल्लभां ॥ ५ ॥ यन्माया वसवर्त्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादि देवासुरा । यत्सत्वादमृषैवभाती सकलं रज्जौर्यथाहेभ्रमः । यत्पादप्लवमेकमेवही भवां भोधेस्तितीर्षेवीतां । वंदेहं तमशेष कारण परं रामाख्यमीसं हरिं ॥ ६ ॥ नाना पुराण निगमागम सम्मतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोपि ॥ स्वांतः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथां भाषा निबंध मति मंजुल मातनोति ॥ ७ ॥ सोरठा ॥ जो सुमिरत सिधि होय । गननायक करिवर वदन । करौ अनुग्रह सोइ । बुध राशि सुभ गुन सदन । मूक होइ वाचाल । पंगु चढै गिरिवर गहन । जासु कृपा सुदयाल । द्रवौ सकल कलि मल दहन ॥ २ ॥ नील सरोरुह स्यांम । तरुन अरुन वारिज नयन । करौ सो मम उर धाम । सदा क्षीर सागर सयन ॥ ३ ॥

उत्तर कांड

॥ दोहा ॥

मो सम दीन न दीन हित तुम समान रघुवीर ॥
अस विचार रघुवंस मन हरहु विषम भव भीर ॥
कामीहि नार पिआरि जिम ॥ लोभीहि प्रिय जिम दाम ॥
तिम रघुनाथ निरंतर ॥ प्रिय लागहु मोह राम ॥३५॥

॥ श्लोक ॥

यत्पूर्वं प्रभुनांकृतं सुकविना श्री संभुना दुर्गमं
श्री मद्राम पदाब्जं भक्तिमनिसं पाथोब्व रामायणं ॥
मत्वा तद्रघुनाथ नाम निरतः स्वांतस्तम सांतये ॥
भाषाबंध मिदं चकार तुलसीं दासस्तथा मानसं ॥१॥
पुन्यं पापहरं सदा सिवकरं विज्ञान भक्ति प्रदं ॥
माया मोह मलापहं सुविमलं प्रेमांबु पूरं शुभं ॥

श्री मद्राम चरित्र मानसमिदं भक्त्यावगाहंति ये ॥
ते संसार पतंग घोर कीरणैर्दह्यंति नो मानवाः ॥२॥

इति श्री रामचरित्रमानसे सकल कलु कलीष विध्वंसने अवीरल भगत संपादनी नांम सपतमो सोपांन उत्तरकांड संपूर्ण ॥ संवत् १८६५ यमुनातटे

विशेष ज्ञातव्य—गोस्वामी तुलसीदास जी रचित रामचरित मानस की इस पूर्ण प्रति का लिपिकाल संवत् १८६५ वि० है। यह प्रति मथुरा में यमुना नदी के तट पर लिखी गई थी। पाठ वर्तमान प्रकाशित रामचरितमानसों से मेल नहीं खाता है। प्रति सुस्पष्ट अक्षरों में लिखी गई है। प्रति में लिपिकर्ता ने संशोधन भी किया है। प्रत्येक कांड की पत्रसंख्या अलग अलग इस प्रकार है—

प्रथम	सोपान	—	पत्र	१	से	लेकर	१३६	तक
द्वितीय	,,	—	,,	१	,,	,,	६६	,,
तृतीय	,,	—	,,	१	,,	,,	२८	,,
चतुर्थ	,,	—	,,	१	,,	,,	१४	,,
पंचम	,,	—	,,	१	,,	,,	२२	,,
षष्ठ	,,	—	,,	१	,,	,,	५०	,,
सप्तम	,,	—	,,	१	,,	,,	५१	,,

प्रतिलिपिकर्ता ने ग्रंथ की प्रतिलिपि संवत् १८६४ में शुरू की थी, क्यों कि प्रथम सोपान को पुष्पिका में १८६४ उल्लिखित है। यथा —'संवत् १८६४ मिती चैत वदी २ श्री मथुरा जी मध्ये लिपी कृतं श्री राम…'। पूरे एक वर्ष में यह प्रति तैयार हुई थी।

प्रति में प्राप्त कुछ पाठांतर भी द्रष्टव्य हैं—

काल सुभाव करम बरिआई। भलेउ प्रकृति बस चुकइ भलाई।
(प्र० रा० पृ० ६)

काल सुभाव कर्म वर आई। भले प्रक्रति वस चूक भलाई।
(ह० प्र० पत्र ४)

३. पुस्तक किस चीज पर लिखी गई है?—देशी कागज। पत्र–२५४। आकार—$६\frac{3}{10}$ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—

२५ । परिमाण—६६२२ । पूर्ण अथवा अपूर्ण ?—पूर्ण । रूप कैसा है ?—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—सं १८६२ वि० ।

श्रीमते रामानुजाय नमः ।। मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघेते गिरिं जत्कृपात्महं बन्दे परमानन्द माधवं ।। १ ।। तत्रैव गंगा यमुनाश्च वेनी गोदावरी सिंधु शरश्वतिश्च ।। सर्वाणि तीर्थानि वसंत तत्र जत्राच्युतो द्वार कथा प्रसंगः ।। २ ।। शोरठा जेहि सुमिरे सिधि होइ ।। गणनायक करिवर वदन ।। करहु अनुग्रह शोइ बुद्धि राशि सुभ गुन सदन ।।१।। मूक होहि वाचाल पंगु चढे गिरिवर गहन ।। याशु कृपा से दयाल द्रवहु शकल कलि मल दहन ।। २ ।। नील सरोरूह स्याम तरूण अरूण वारिज नयन ।। करहु सो मम उरधाम सदा क्षीर सागर सयन ।। ३ ।। कुन्द इन्दु सम देह उमा रमन करूनायतन ।। जाहि दीन पर नेह करहु कृपा मर्दन मयन ।। ४ ।। बन्दौ गुर पद कंज कृपा सिंधु नर-रूप हरि ।। महामोह तम पुंज याशु वचन रविकर निकर ।। ५ ।। चौपाई ।। बन्दौ गुर पद पदुम परागा ।। सुरूचि सुवाश सरश अनुरागा ।। अमिय मूरि मय चूरण चाइ ।। समन शकल भव रूज परिवारू ।।

अंत—

रघुवंस भूषन चरित यह नर कहहि सुनहि जो गावही ।। कलिमल मनोमल धोई विनु श्रम राम धाम सिधावही ।। सतपंच चौपाइ मनोहर जानि जो नर उर धरै ।। दारून अविद्या पंजनिति विकार श्री रघुपति हरै ।। सुन्दर सुजान कृपानिधान अनाथ कर सो प्रीति सो ।। सो एक राम अकाम हित निर्वान श्रम पद आन को ।। जाकी कृपा लवलेश ते मतिमंद तुलशी दाशहूँ ।। पायौ परम विश्राम राम समान प्रभु नाही कहूँ ।। दोहा ।। मो सम दीन न हित प्रभु तुम्ह समान रघुवीर ।। अस विचारि रघुवंस मनि हरहु विषय भयभीर ।। कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभी जिमि प्रिय दाम ।। तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ।। रामायन श्रुति अनुहरति जगभव भारत रीति ।। तुलसी सठ की को सुनै कलि कुचालि परतीति ।। २२४ ।। इति श्री राम- चरित्रे मानसे कलि कलुष विध्वंसने अविरल हरि भक्ति संपादिनो नाम उत्तर कांड संपूर्णम् ।। सुभमस्तु मंगलं भवतु ।। सम्वत् ।। १८६२ ।। शाके ।। १७५ ।। कार्तिक माशे सुक्ल पक्षे अष्ठै नौमी ।। क पोथी संपूर्णम् ।। दोहा ।। जैसी पुस्तक देखिए वैसी लिखिए शोइ ।।

सुद्ध असुद्ध बिचारि के लेषक दुष्ट न होई ॥ १ ॥ श्रोता सुमति सुशीलता तासो विनै हमारि ॥ लघु विशाल अच्छर परै सो सभ लेव सभाँरि ॥ २ ॥ श्री सीता राम जीव सहाइ ॥

विशेष ज्ञातव्य—रामचरित मानस सातों कांड की यह प्रति सं० १८६२ में प्रतिलिपि की गई थी। अक्षर सुस्पष्ट और लिखावट साफ है। प्रति में संशोधन भी है। कांड के अनुसार पत्रों की संख्या निम्न है—

बालकांड	पत्र	१से	७६ पत्र
अयोध्याकांड	,, १	,	६३
अरण्यकांड	,, १	,	१७
किष्किंधाकांड	,, १	,	१०
सुंदरकांड	,, १	,	१४
लंकाकांड	,, १	,	३८
उत्तर कांड	,, १	,	३३

ग्रंथ संख्या

४. **रामचरितमानस-संपूर्ण**। पत्र ३११। आकार—१२ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—२२। परिमाण (छंदों में)—१०२६३। पूर्ण अथवा अपूर्ण ?—पूर्ण। रूप कैसा है ?—प्राचीन। लिपि नागरी। लिपिकाल सं० १६०२ वि०। [**तुलसी पुस्तकालय** (२१२१। ८६ तु०) **भदैनी, वाराणसी**]

श्री गणेशायनमः अथ बालकांड लिष्यते

अश्लोक

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छंदसामपि ॥
मंगलानां च कर्तारौ बंदे बानीबिनायकौ ॥

× × ×

॥ सोरठा ॥

जेहि सुमिरे सिधि होइ ॥ गणनायक करिवर बदन
करहु अनुग्रह सोइ ॥ बुधिरासि सुभ गुन सदन
मूक होइ बाचाल। पंगु चढै गिरिवर गहन
जासु कृपा सो दयाल ॥ द्रवौ सकल कलिमल दहन

नील सरोरुह स्याम ।। तरुन अरुन बारिज नयन
करौ सो मम उर धाम ।। सदा छीर सागर सयन
कुंद इंदु सम देह ।। उमारवन करुनायतन
जाहि दीन पर नेह ।। करौ कृपा मर्दन मयन
बंदौ मुनिपद कंज ।। रामाइन जिन निर्मयौ
सषरस कोमल मंजु ।। दोष रहित दूषन सहित
बंदौ गुर पद कंज ।। कृपा सिंधु नररूप हरि
महामोह तम पुंज ।। जासु बचन रबिकर निकर

आरण्यकांड पत्र १ से—

श्री गनेसजू अथ आरंन्य कांड लिष्यते

अश्लोकः ।।

मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधे पूर्णादुमानंददं ।।
वैराग्यंबुजभारकरं ह्रिदयंघनंध्वांतापहंतापहं ।।

× × ×

।। सोरठा ।।

उमा राम गुन गूढ ।। पंडित मुनि पावहि बिरति ।।
पावहि मोह बिमूढ ।। जे हरि बिमुष न धर्मरत ।।

।। चौपाई ।।

पूरन भरत प्रीति मै गाई ।। मति अनरूप अनूर सोहाई ।।
अब प्रभुचरित सुनहु अति पावन ।। करत जो बन सुर नर मुनि भावन ।।
एक बार चुनि कुसुम सोहाये ।। निज कर भूषन राम बनाये ।।
सीतहि पहिराये प्रभु सादर ।। बैठे फटक सिला पर भावर ।।
सुरपति सुत धरि बायस बेषा ।। सठ चाहत रघुपति बल देषा ।।
जिमि पपलिका सागर थाहा ।। महा मंद मति पावन चाहा ।।
सीता चरन चोंच हति भागा ।। मूढ मंदमति कारन कागा ।।
चला रुधिर रघुनायक जाना ।। सींक धनुष सायक संधाना ।।

———

उत्तरकांड से—

।। दोहा ।।

मो सम दीन न दीन हित तुम समान रघुबीर ।।
अस बिचार रघुबंसमनि हरौ बिषम भव पीर ।।

कामिहि नारि पियारि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ॥
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥

इति श्रीरामचरित्रेमानसे सकलकलिकलुष बिध्वंसने बिमल बैराग्य-संपादिनी नाम सप्तमो सोपान उत्तरकांड ॥ रामायन ॥ श्री गोसांई तुलसी दास कृत संपूर्न समाप्त ॥ मिति चैत्र सुदि १२ ॥ संवत १९०२ ॥ मुकांम ॥ बांदा की छावनी ॥ लिष्यते लाः भवानीप्रसाद ॥ पोथी उक्काहिल सिपाही की कंपिनी ॥ ४ पलटन ६७ ॥ रजमट कंडैल कालियर ॥ श्री सीतारामजू सदा सहाइ रहौ ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ पूर्ण है। लिपिकाल किष्किंधा कांड को छोड़ कर अन्य सभी कांडों में सं० १९०२ वि० है। किष्किंधाकांड में सं० १९०१ वि० है। अक्षर स्पष्ट एवं मनोरम हैं। क्षेपक कथा का समावेश भी है।

५. पुस्तक किस चीज पर लिखी है?—देशी कागज। पत्र—१८०। आकार—१२ इंच लंबाई और ८३/४ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—१६। परिमाण—छंदों में ५५५८। पूर्ण अथवा अपूर्ण?—खंडित। रूप कैसा है?—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८६३ वि०।

तुलसी पुस्तकालय, भदैनी, वाराणसी।

अयोध्याकांड पत्र सं० ६१ से—

भायप भगति भरत आचरनू। कहत सुनत दुष दूषन हननू ॥
जो कछु कहब थोर सषि सोई। राम बंधु अस काहे न होई ॥
हम सब सानुज भारतहि देषें। भइन्ह धन्य जुवती जन लेषें ॥
सुनि गुन देषि दसा पछिताहीं। कैकइ जननि जोगु सुतु नांही ॥
कोउ कह दूषन रामहि नाहिन। बिधि सबु कीन्ह हमहि जो दाहिन ॥
कहँ हम लोक बेद बिधि हीनी। लघु तिय कुल करतूति मलीनी ॥
बसहिं कुदेस कुगांव कुबामा। कहँ येह दरसु पुन्य परिनामा ॥
अस अनंदु अचिरिजु प्रति ग्रामा। जनु मरु भूमि कलपतरु जामा ॥

दोहा

भरत दरसु देषत षुलेउ मग लोगन्ह कर भागु ।
जनु सिंघलवासिन्ह भयेउ बिधि बस सुलभ प्रयागु ॥ २२२ ॥

अंत—

॥ छंद ॥

पाइ न केहि गति पतित पावन राम भजीय सुनु सठ मना ॥
गनिका अजामिल व्याध गीध गजादि षल मल ते घना ॥
अभीर रंजवनी कीरात षस स्वास पंचादिक अति अघरूप जे ॥
कहिअ नाम बारक तेपि पावन होहि राम नमामि ते ॥
रघुवंस भुषन चरित जे नर कहहिं सुनहि जे गावही ॥
कलिमल मलाएन धोइ बिनु स्रम राम धाम सीधावहीं ॥
सत पंच चौपाइ मनोहर जा जो नर उर धरे ॥
दारुन अवि विद्या पंच जननीत बीकार श्रीरघुवीर हरे ॥
सुंदर सुजान क्रीपा निधान अनाथ पर करत प्रीति जो ॥
सो एक राम अकाम हित नीर्वान पद सम आन को ॥
जाकी क्रीपा लव लेस ते मति मंद तुलसी दासहु ॥
पायो परम विस्राम राम समान प्रभु नाही कहु ॥

॥ दोहा ॥

मो सम दीन न दीन हित तुम्ह सम नर रघुवीर ॥
अस बिचारि रघुवीर मनि हरहु विषम भव भीर ॥ २१६ ॥

॥ दोहा ॥

कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि जिमि प्रीय दाम ॥
तिमि मम हृदय नीरंतर बसहु सदा श्री राम ॥ २१७ ॥

इति श्री रामचरित्रे मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य संपादिनो नाम सप्तमो कांड संपूर्ण ॥ संवत् १८६२ मीती माघ सुदी ७ । वार सनीचर के लीः भगवंत लाल ॥ श्री रा जी सहाय ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रामचरित मानस के रचयिता गो० तुलसीदास हैं। संक्षेप में ग्रंथ का विवरण निम्नांकित रूप में है—

१—बालकांड नहीं है ।

२—अयोध्याकांड खंडित है। केवल पत्र सं० ६१ से ८६ तक उपलब्ध है। लिपिकाल सं० १८६३ वि० है।

३—अरण्यकांड पूर्ण है। पत्र सं० १ से २३ तक। लिपिकाल सं० १८६३।

४—किष्किंधाकांड पूर्ण। पत्र सं० १ से १६ तक। लिपिकाल नहीं है।

५—सुंदरकांड पूर्ण। पत्र सं० १ से १८ तक। लिपिकाल नहीं है।

६—लंकाकांड पूर्ण। पत्र सं० १ से ५४ तक। लिपिकाल नहीं है।

७—उत्तर कांड पूर्ण। पत्र सं० १ से ४३ तक। लिपिकाल संवत् १८६३ वि० है।

६. रामचरितमानस। पत्र १६६। कागज देशी। आकार—८ इंच लंबाई और ६ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१६। छंद परिमाण—२७६३। पूर्ण अथवा अपूर्ण। ? अपूर्ण। रूप कैसा है ?—प्राचीन। गद्य अथवा पद्य ?—पद्य। लिपि—कैथी। लिपिकाल—अज्ञात।

तुलसी पुस्तकालय; भदैनी, वाराणसी

अरण्यकांड की पत्र सं ८७ से—

× ×

तीन के हृदय कमल महः सदा करौ बीस्राम

-चौपाई-

भक्ती जोग सुनी अती सुष पावा। लछीमन राम चरन सीर नावा।
नाथ सुनो मम गत संदेहा। राम चरन उपजा नव नेहा।
अनुज बचन सुनी प्रभु मन भाए। हरषी राम नीज हृदय लगाए।
एही बीधी गएउ काल कछु बीतीं। कहत बीराग ग्यान कछु नीती।
सुपनषा रावन की बहीनी। दुस्ट हृदय दारुन जीमी अहनी।
पंचबटी सो गई एक बारा। देषी बीकल भई जुगल कुमारा।
भ्राता पीता पुत्र उरगारी। रूप मनोहर हर्षत नारी।
होई बीकल सकै मनही न रोकी। जीमी रवी मनी द्रवै रबीही बीलोकी।

॥ दोहा ॥

अधम नीसाचरी कुटील मती : चली करन उपहास :
सुनु षगेस भाबी प्रबल : भा चहै नीस्चर नास :

अंत—

चौपाई

करी बीनती जब संभु सीधाए। तब प्रभु नीकट बीभीषन आए।
नाइ चरन सीर कह म्रीदु बानी। बीनए सुनहु प्रभु सारंगपानी।

... ...

सब बीधी नाथ मोही अपनाओ। पुनी मोही सहीत अवधपुर जाओ।
सुनत बचन म्रीदु दीन दआला। सजल भए दोउ दैन बीसाला।

॥ दोहा ॥

तोर कोस ग्रह मोर सब। सत्य बचन सुनि भ्रात :
दसा भरत की समुझी मोही : नीमीषी कलप भरी जात :
तापस भेष सरीर क्रस : जपत निरंतर मोही :
देषहु बेगी सो जतन करी : सषा नीहौरा तोही :
जो जैहौ बीते अवधी : जीअत न पैहौ बीर :
प्रीती भरत की सुमीरी प्रभु : पुनी पुनी पुलक सरीर :
करहु कलप भरी राज तुम : मोही सुमीरेहु मन लाइ :
पुनी मन लोक सीधाएहु : जहाँ संत सब जाइ :

चौपाई

× × ×

अपूर्ण

विशेष ज्ञातव्य—प्रति का लिपिकाल नहीं है। लिपि कैथी है। ग्रंथ खंडित है। केवल चार कांड निम्नलिखित रूप में उपलब्ध हैं—

१—अरण्य कांड पत्र सं० १७ से ३६ तक कुल—२३ पत्र।

२—किष्किंधा कांड—पत्र सं० २ से २४ तक कुल—२३ पत्र।

३—सुंदर कांड—पत्र सं० १ से ३४ तक कुल—३४ पत्र।

४—लंका कांड—पत्र सं० २ से ५५, ५७ से ११८ तक कुल—११६ पत्र।

७. बालकांड मात्र। पुस्तक किस चीज पर लिखी है ?—देशी कागज। पत्र—८५। आकार—६½ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१८। परिमाण—३२५१। पूर्ण अथवा अपूर्ण ?—अपूर्ण। रूप कैसा है ?—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८२४।

•••नमः वर्णानामर्थ संघानां रसनां छंद सामपि मंगलानां च कर्त्तारौ बंदे•••विनायकौ ॥ १ ॥ भवानी शंकरौ बंदे श्रद्धा विस्वास रुपिणौ ॥ याभ्यां बिना न पश्यंति सिद्धाः ॥ स्वान्त स्थमीश्वरं ॥ २ ॥ बंदे बोध मयं नित्यं ॥ गुरुं शंकर रुपिणं ॥ यमाश्रितोहि वक्रोपि चंद्रः सर्वत्र बंद्यते ॥ ३ ॥ विना॰ द्यर्थैः ॥ समर्थ चष्टयं ॥ मंगलायतनं तन्मेय द्वा•••रा प्रमुदितं ॥ ४ ॥ सीता राम गुण ग्रामौ पुण्यारण्य बिहारिणौ ॥ बंदे विशुद्ध विज्ञानौ क•••कपी-श्वरौ ॥ ५ ॥ उद्भव स्थिति संहारं कारिणीं क्लेश हारिणीं ॥ सर्वश्रेयस्करी सीतां•••हं रांम बल्लभां ॥ यन माया बशबर्ति बिश्वमखिलं ब्रह्मादि देवासुरा ॥ यत्सत्वाद मृषैव भांति सकलं रज्जौ यथा हेभ्रंम ॥ यत्पादौ प्लवमेकमेवहि भवां भोधेस्तितीर्षाबतां ॥ बंदेहं तमशेषकारनपरं रामख्य ध्यमीशं हरिं ॥ ६ ॥ नांना पुराङ्ण निगमागम संमृतं च ॥ यद्रामायणे निगादितं क्चिदन्यतोपि ॥ स्वांतः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा॥ भाषांनिबंध-मतिमंजुलमातनोति ॥ सोरठा ॥ जो सुमिरत सिद्धि होइ ॥ गणनायक करिबर वदन ॥ करो अनुग्रह सोई ॥ बुधि रासि शुभ गुन सदन ॥ २ ॥ मूक होई वाचाल ॥ पंगु चढै गिरिवर गहन ॥ जासु कृपा सो दीयाल ॥ द्रवो सकल कलि मल दहन ॥ ३ ॥ नील सरोरुह स्याम ॥ तरुन अरुन वारिज नयनं ॥ करौ सौ मम उर धाम ॥ सदा छीर सागर ॥ ४ ॥

अंत—

॥ दोहा ॥ रामरूप भूपति भगति ॥ व्याह उछाह अनंद ॥ जात सराहत मनहि मन ॥ मुदित गाधिकुल चंद ॥ ८३ ॥ चौपाई ॥ बामदेव रघुकुल गुरज्ञानी ॥ बहुरि गाधिसुत कथा बषानी ॥ सुनि मुनि जस मनहो मन राऊ ॥ बरनत आपन पुन्य प्रभाऊ ॥ जहां तहां राम व्याह सब गावा ॥ सुजस पुनीत लोक तिहु छावा ॥ आये राम व्याहि घर जबतें ॥ बसें अनंद अवध सब तबतें ॥ प्रभु विवाह जस भयो उछाहू ॥ सकहि न बरनि गिरा अहि-नाहू ॥ कवि कुल जीवन पावन जानी ॥ राम सीय जस मंगल षानी ॥ तेहि तें में कुछ कहा वषानी ॥ करन पुनीत हेतु निज वानी ॥ छंद ॥ निज गिरा पावनि करन कारन राम जस ॥ तुलसी कह्यो ॥••••••वीर चरित अपार वारिध पार कवि कवने लह्यौ ॥ उपवीत व्याह उछाह मंगल सुनि जे सारद गावहीं ॥ वैदेहि राम प्रसाद तें जन सर्वदा सुष पावहीं ॥ सौरठा ॥ सिय रघुवीर विवाह जे सप्रेम सादर सुनहि ॥ तिन्ह कह सदा उछाह मंगलायतन राम जस ॥ ३८४ ॥ श्री श्री श्री श्री श्री इति श्री रामचरित

मानसे कमल कलि कलुष विध्वंसने प्रथम सोपान ॥ २ ॥ संमत १८२४ का साल १७०० प्रव्रत्तमाने श्री सूर्य दच्छणांगते मासोत्तमासे उत्तमासे फागणे बुदी ६ बुदवार लीकृतं जमना बाई अतराल्या मधे सार वो सुदारा का मंदरसा गोतम जी गमान जी वाकी सवा ॥

विशेष ज्ञातव्य—

यह प्रति सुस्पष्ट और साफ अक्षरों में लिखी हुई है। प्रतिलिपि कर्त्री जमना बाई हैं जिन्होंने संपूर्ण रामचरित मानस की प्रतिलिपि की थी। इस प्रति के साथ अन्य कांड भी संलग्न हैं। जिनका विवरण अलग है। प्रति में संशोधन भी हुआ है। कुछ पाठांतर भी उपलब्ध हैं। प्रारंभ के मंगलाचरण का एक श्लोक—'विनाद्यर्थैं समर्थ चष्टयं मंगलायतनं तन्मेय द्वा ... रा प्रमुदितं।' किसी प्रकाशित प्रति में नहीं है।

पाठांतर

गिरा अरथ जल विच्चि सम देषीअत भिंन न भिंन ॥
बंदौ सीता राम पद जिन्हहि परम प्रिय षिंन ॥

तदपि करब मैं काज तुम्हारा। श्रुति कहै परम धरम उपकारा ॥
चलत मार अस हृदय बिचारा। सिव विरोध ध्रुव मरन हमारा ॥
प्रगटेसि तुरितु रुचिर रितुराजा। कुसम बिनवतरु राज विराजा ॥
विजई सूर वीर विष्याता। धरि बराह बपु एक निपाता ॥
हृदय सरायत सिय लुनाई। गुरु समीप गवने दोउ भाई ॥
घटै बढै बिरहिन दुष दाई। ग्रसहि राहू निज संधिनि पाई ॥

रेखांकित शब्दों के आधार पर यह देखा जा सकता है कि किस प्रकार प्रतियों में पाठांतर हो जाते हैं। इस प्रति में क्षेपक कथाओं का भी वर्णन है। खेमराज श्री कृष्णदास द्वारा प्रकाशित रामचरित मानस की क्षेपक-कथाओं से इस प्रति में भिन्न क्षेपक कथाएँ हैं। उनके वर्णन की शैली और भाषा भी भिन्न है।

पत्रों की कुल संख्या ८६ है किंतु ६६ वाँ पत्र उपलब्ध नहीं है जिससे कुल ८५ पत्र हैं।

८. बालकांड मात्र। पुस्तक किस चीज पर लिखी है ?—देशी कागज। पत्र १३४। आकार—६½ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१२। परिमाण—६४१५। पूर्ण अथवा अपूर्ण ?—पूर्ण। रूप कैसा है ?—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८३६ वि०।

श्री गणेसायनमः ।। श्री सरसुतीनमः ।। श्री पर्मगुरुभेनमः ।। अथा तुलसी क्रत रामाइिन बालकांड लिष्यते ॥ सोरठा ।। जा सुमिरै सिधि होइ ॥ गननाइिक कर वर वदन ॥ करहु अनुग्रह सोई ॥ बुध्धि रासि सुभ गुन सदन ॥ मूक होइ वाचाल ॥ पंगु चढै गिरवर गहन ।। जासु कृपा सु दयाल ॥ द्रवहु सकल कल मल दहन ।। नील सेरुहु स्याम ।। तरुन अरुन वारिज नयन ॥ करौ सो मम उर धाम सदा छीर सागर सयन ॥ कुंद इंद सम देहु ॥ उमा रमवन करुनायतन ॥ जासु दीन पर नेहु ।। करहु कृपा मर्दन मयन ॥ वरनहु गुर पद कंज कृपासिंध नर रूप हर ॥ महामोह तम पुंज ॥ जासु वचण रवि किरनकरः । चौपही ॥ बंदौ गुर पद पदम परागा ॥ सुरूचि सुवासु सरस अनुरागा ।। अमीय मूरिमय चूरनु चारू ।। समन सकल भव रूचि परिवारू ।। सुक्रत संभुतन विमल विभुती ।। मंजुल मंगल मोद प्रसुती ॥ जन मु मंजु मुकर मल हरनी ॥ कीये तिलक गुन गन सब करनी ॥ श्री गुर पद नष मनिगन जोती ॥ सुमित दिव्य द्रिस्टि हीय होती ।

× × ×

अंत—

बहुरे लोग रजायसु भयऊ । सुनत समेत न्रपति ग्रह गयऊ ॥
जह तह राम विवाहु सब गावा । सुजस पुनीत लोक तिहु छावा ॥
आये व्याह राम घर जबतै । सबै अनंद अवध सब तबतै ॥
प्रभु विवाहु जस भयौ ऊछाहु । सकहि न वरहि गिरा अहि नाहु ॥
कवि कुल जीवन पावन जानी । राम सीय जसु मंगल षांनी ॥
तिहितै मै कुछ कहा बषानी । करन पुनीत होत निजु बानी ॥
छंद ॥ निज गिरा पावन करन कारन राम जस तुलसी कह्यो ॥

× × ×

व्याह ऊछाह मंगल सुनि जु सादर गावही ॥
इ रा वैदेम प्रसाद ते जन सर्वदा सुष पावही ॥
सोरठा ॥ सीय रघुवीर बिबाहु । जे सप्रैम गावहि सुनहि ॥
तिन कह सदा ऊछाह । मंगलायतन राम जस ॥

इिति श्री राम चरित मानसे सकल कलुष विधंसने ॥ बालकांड संपुर्ण समाप्त ॥ सुभं भवतु मंगल दधातु ॥ सावन वदि ३ गुरौ संवद १८३६ मुकामु महतीगवा ॥ लिषतं श्री पंचम तिवारी ॥ जो वाचै सुनै ताकौ रांम रांम डंडवत भुल चुक सम्हांर कै गार न दीजौ ॥ मित्र ॥ श्री रांम रांम रघुपति

करुना निधानं जानुकी वलभं विस्व रुपं गरुड नायक सील समुद्रं गुन निधिं लछमी कांतं कमल नयनं कमलाय..........करुन गोविंद माधौ दयाल नरसिंह हरि मुरार सकल जन ऊवार

विशेष ज्ञातव्य—

बालकांड की यह प्रति पूर्ण स्पष्ट और स्वच्छ अक्षरों में लिखी गई है। प्रति में प्रारंभ के मंगलाचरण के श्लोक नहीं हैं। कहीं कहीं पंक्ति की पंक्ति प्रतिलिपिकर्ता ने छोड़ दी है। पाठान्तर विशेष उपलब्ध हैं—

गिरा मुखर तनु **अरध** भवानी। रति अतिदुखिति अतनु पति जानी॥

प्र० रा०, पृ० १२४

गिरा मुषर तन **अधर** भवांनी। रति अति दुषित अंतन पति जानी॥

ह० प्र० पत्र ६५

९. बालकांड। पुस्तक किस चीज पर लिखी है?–देशी कागज। पत्र—२१८। आकार—९$\frac{१}{२}$ इंच लम्बाई और ६$\frac{२}{११}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)--१८। परिमाण—२६४३। पूर्ण अथवा अपूर्ण?–पूर्ण। रूप कैसा है?–प्राचीन। लिपि–नागरी। लिपिकाल–संवत् १८६५ वि०।

श्रीगणेशाय नमः बालकांड लिष्यते।

॥ सोरठा ॥

जेहि सुमिरे सिधि होइ गननायक करिवर बदन
करहु अनुग्रह सोइ बुधि रासि सुभ गुन सदन
मूक होइ बाचाल पंगु चढै गिरवर गहन॥
जासु कृपा सो दयाल द्रवहि सकल कलिमल हरन
नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नैन
करौ सो मम उर धाम सदा छीर सागर सैन॥
कुंद इंदु सम देह उमा रवन करुनायतन।
जासु दीन पर नेह करौ क्रिपा मरदन मयन॥
बंदौ गुर पद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि॥
महो मोह तम पुंज जासु बचन रविकर निकर

अंत—

छंद

निजु गिरा पावन करन कारन राम जस तुलसी कह्यो
रघुवीर चरित अपार बारिधि पार कबि कौने लह्यो

उपबीत व्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावही
बैदीही राम प्रसाद ते जन सबदा सुष पावही।

सोरठ

सिय रघुबीर बिबाह जे सप्रेम गावै सुनौ। तिन्ह कह सदा उछाह
मंगलायतन राम जस ।। बाल चरित सतिभाव बरन्यौ
तुलसीदास हित। कहै सुनै सुष पाव परम पुनीत पवित्र अति।
भद्रेस्वरी सुग्राम अति नृमल सुष शिवपुरी
महादेव विस्राम सो महिमा बरनिय कह
कहै सुनै समुझै जो जन सुफल सु प्रभु गुनगान
सीता पति रघुकुल तिलक सदा करौ कल्यान

इति श्री रामचरित्रमनसे सकलकलिकलुष बिध्वासने प्रथमे सोपान बालकांड समाप्त जो देषा सो लिषा मम दोष न दीयते ।। मिति अषाढ सुदि १२ संबतु १८६५ पोथी के मालिक रामकिसुन कडहर राम राम सत्य है।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता गो० तुलसीदास हैं। लिपि कैथी हैं। लिपिकाल सं० १८६५ वि० है! प्रारंभिक श्लोक नहीं लिखा है। लिपिकर्त्ता ने अपनी ओर से भी कुछ जोड़ दिया है। पाठांतर भी हैं।

"बाल चरित सतिभाव बरन्यौ तुलसीदास हित
कहै सुनै सुष पाव परम पुनीत पबित्र अति ।।
भद्रेस्वरी सुग्राम अति नृमल सुष शिवपुरी
महादेव विस्राम सो महिमा बरनिय कह
कहै सुनै समुझै जो जन सुफल सु प्रभु गुन गान
सीता पति रघुकुल तिलक सदा करौ कल्यान"

संवत सोरह सै एकतीसा। करौं कथा हरिपद धरि सीसा। (प्र०)
संबत सोरह सै एक तीसा। कहेउ कथा हरिपद धरि सीसा। (ह०)
नौमी भौमवार मधुमासा। अवधपुरीं यह चरित प्रकासा। (प्र०)
नौमी भौमबार मधुमासा। अवधपुरी जहा चरित प्रकासा। (ह०)
जेहि दिन राम जनम श्रुति गावहि। तीरथ सकल तहाँ चलि आवहि। (प्र०)
जा दिन राम जन्म स्रुति गावहि। तीरथ सकल तहाँ चलि आवहि। (ह०)
जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना। करहि राम कल कीरति गाना। (प्र०)
जन्म होत सब रचहि सुजाना। करहि राम कल कीरति गाना। (ह०)

१०—बालकांड। पुस्तक किस चीज पर लिखी है—देशी कागज। पत्र—२१६। आकार—६½ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१६। छंद परिमाण —३६४०। पूर्ण अथवा अपूर्ण ?—(प्रथम पत्र खंडित) खंडित। रूप कैसा है ?—प्राचीन। लिपि—नागरी मिश्रित कैथी। लिपिकाल—सं० १८७८।

आदि

बंदौ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा॥
अमीय मुरी मए चुरन चारु। समन सकल भव रुज परीवारु॥
सुकीत सींभु तन बीमल बीभुती। मंजुल मंगल मोद प्रसुती॥
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी। कीए तीलक गुन गन बस करनी॥
श्री गुर पद नष मनी गन जोती। सुमीरत दीव्य दीस्टी हीए होती॥
दलन मोह तम सो सुप्रकासु। बड़े भाग उर आवत जासु॥
उघरही बीमल बीलोचन हींके। मीटही दोष दुष भव रजनी के॥
सुझही राम चरीत्र मनी मानीम। गोत प्रगट जहाँ जो जेही षांनीक॥

दोहा

जथा सुअंजन अंजी द्रीग, साधक सीध सुजान।
कौतुक देषही सैल बन: भुतल भुरी नीधान।

छंद

नीज गीरा पावन करन कारन राम जस तुलसी कहा
रघुबीर चरीत अपार बारीध पार कबी कौनै लहा
उपबीत व्याह उछाह मंगल सुनी जे सादर गावही
बैदेही राम प्रसाद ते नर सर्बदा सुष पावही
सुनु गाइ कहौ गीरीस कन्या धंन्य अधीकारी सही
नीत प्रीती नुतन सुनत हरी गुन भग्ती अनुपमा लही
रघुबीर पद अनुराग जन लोभादी बेगी बुझावही
एह जानी तुलसीदास मन क्रम बचन हरी गुन गावही

सोरठा

कठीन काल मल कोस साधन कछु न होइ
एह बीचारी वीस्वास करी हरी सुमीरहु जन सोइ
मन हरी पद अनुराग करहु त्याग नाना कपट
महा मोह नीसी जाग सोवत बीते काल बहु

सीए रघुबीर बीवाह जे सप्रेम गावही सुनही
तीन कह सदा उछाह मंगलाए तन राम जस

इते श्री रामचरित्रमानसे सकलकलिकलुषवीध्वंसनो अबीरल हरी भग्ती संपादीनी नाम प्रथम सोपान संपुर्न ॥ शुभमस्तु ॥ संवतु १८७८ वैसाष सुदि ४ सनउ लिषा इटाए की छाउनी ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ में प्रथम पत्र नहीं है। लिपिकाल सं० १८७८ वि० है। मात्राओं में छोटी 'इ' के स्थान भी बड़ी 'ई' का प्रयोग हुआ है। प्रस्तुत प्रति का प्रतिलिपि इटावा के फौजी छावनी में हुई है।

११. बालकांड पुस्तक किस चीज पर लिखी है ?—देशी कागज। पत्र—१०१। आकार—१३$\frac{५}{१०}$ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१३। पूर्ण अथवा अपूर्ण ?—पूर्ण। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८८३ वि०।

आदि

श्री गणेशाय नम ॥ श्री रामांनुजाय नम ॥ श्लोक ॥ वर्णानामर्थ संधानां रसानां छंदसामपी मंगलानां च कर्तारौ वंदे बांणी विनायकौ ॥ १ ॥ भवांनी शंकरौ वंदे श्रधा विश्वास रूपणौ ॥ याभ्यां विना न पस्यंती सिद्धाः सांतस्थमीश्वरं ॥ २ ॥ वंदे बोधमयं नित्यं गुरू शंकर रूपेणौ ॥ यमाश्रितो हि वक्रोपि चंद्र सर्वत्र वंद्यते ॥ ३ ॥ सीता राम गुण ग्रामै पुण्यारिराय विहारिणौ ॥ वंदे विशुद्ध विज्ञानौ कवीश्वर कपीश्वरौ ॥ ४ ॥ उद्भव सर्व भूतानां स्थिति संहार कारिणी ॥ शर्वश्रेयस्करी सीता न तोहं राम बल्लभां ॥ ५ ॥ यन्माया वशवर्त्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादि देवेस्वरः यत्सः स्वादमृषैव भाति मकलं रज्जो यथाहेभ्रम ॥ यत्पादप्लवमेवहिभवांभोवेस्तितीरषावतां ॥ वंदेहंतमशेषकारणपरं रामास्य मीशं हरिं ॥६॥ नाना पुराण निगमागम संम्मतं ॥ यद्रामणे निगदितं कचिदन्यतोपि ॥ स्वांति सुषाय तुलसी रधुनाथ गाथा भाषा प्रबंध मति मंजुल मात नोती ॥ ७ ॥ सोरठा ॥ जो सुमिरत सिधि होइ गणनायक करिबरवदन ॥ करौ अनुग्रह सोइ बुद्धिरासि सुभ गन

सदन ॥ १ ॥ मूक होइ वाचाल पंगु चढै गिरवर गहन ॥
जासु क्रपा सु दयाल द्रवौ सकल कलि मल दहन ॥ २ ॥

नील सरोरूह स्यांम तरून अरून वारिज नयन ॥
करौ सो मम उर धांम ॥ सदा छीर सागर सय ॥ ३ ॥

कुंद इंदु सम देह उमा रवन करूनां अयन ॥
बाहि दीन पर नेह करौ कृपा मर्दन मयन ॥ ४ ॥
वंदौ गुर पद कंज कृपासिंधु नर रूर हरि ॥
महा मोह तम पुंज जासु वचन रवि किरनि सम ॥
चौपई ॥ वंदौ गुर पद पदम परामा । सुरुचि सुवासु सरस अनुरागा ॥
अमीय मूरिमय चूरन चारू । समन सकल भव रुज परिवारू ॥

अंत

॥ सोर्ठा ॥ सिय रघुवीर विवाह । जे सप्रेम गांवहिं सुनहिं ॥
तिन कहं सदा सदा उछाह । मंगलायतन राम जस ॥ १ ॥
वालि चरित सत भाउ । वरनौं तुलसी दास हित ॥
कहै सुनैं सुष पाउ । परम पुनीत पबित्र अति ॥
भै ईस्वरी सुग्रांम । अति निर्मल सुष सिवपुरी ॥
तहां देव विश्रांम । सो महिमां वरनिय कहा ॥ २ ॥
श्री हरिपद अनुराग । करहिं त्याग नानां कपट ॥
महा मोह निस जाग । सोवत बीते काल बहु ॥

दोहा ॥ कहै सुनर समुझैं सुनैं सुफल सुप्रभु गुन गांन ॥
सीतापति रघुकुल तिलक सदां करहिं कल्यांन ॥

इति श्री रामचरित्र मांनसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य संपादिनी नाम अविरल भक्ति दातमं रामांयन बालकांड प्रथम सोपांन समाप्त ॥ तथाद्रसंतथा प्रतं ॥ संवत् ॥ १८॥ ८२ ॥ मिती कार्तिग सुदी ॥ ७ ॥ बुधवासरां ॥ बयानैं सुभ स्थांन पारा भूवी ॥ लाला चिरंजीव पटनार्थ जीतमल जी ॥ लिषतं नृमल राम ॥ सुजस ॥ बांचै विचारैं सुनैं ॥ तिनकौं जै श्री राम ॥ नमस्कार ॥ वारंवार ॥ शुभंभुवात् ॥ श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री ॥ श्री श्री श्री श्रीं श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्रीं राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ ॥राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति पूर्ण है। लिपिकर्ता निरमल राम है, जिसने बयाना (भरतपुर राज्य) में बैठकर लिखा था। लिपिकर्ता ने संपूर्ण रामचरित-मानस की प्रतिलिपि की है जो याज्ञिक संग्रह में विद्यमान है। प्रति के अक्षर सुस्पष्ट हैं। पाठांतर के साथ साथ दोहे तथा चौपाइयों की संख्या अधिक है।

१२. बालकांड। पुस्तक किस चीज पर लिखी है ?—देशी कागज। पत्र—२३७। आकार—६½ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१७। परिमाण—३२७४। पूर्ण अथवा अपूर्ण ?—खंडित। रूप कैसा है ?—प्राचीन। लिपि—कैथी। लिपिकाल—सं० १८८७।

आदि

बीधी नीखेद मऐ कलीमल हरनी, कर्म कथा रवी नदनी ब्रनी
हरीहर कथा बीराजती बैनी, सुनत सकल मुद मंगल देनी
बट बीश्वास अचल नीज धर्मा, तीरथराज समाज सुकर्मा
सभही सुलभ सभ दीन, सब देसा, सेवत सादर समन कलेसा
अकथ अलौकीक तीरथ राजु, देई सीध्य फल प्रगट प्रभाजु

दोहा

सुनी समुझही जन मुदीत मन : मज्जही अती अनुराग :
लहही चारी अछुत तन साधु समाज प्रआग

अंत

दोहा

नीज गीरा पावन करन कारन राम जस तुलसी कहा :
रघुबीर चरीत अपार बारीध पार कवी कवने लहा :
उपबीत व्याह उछाह मंगल सुनी जो सादर गावही :
बैदेही राम प्रसाद ते नर सर्वदा सुख पावही :
सुनी गाइ कहै गीरीस कंन्या धन्य अधीकारी सही :
नीती प्रीती नुतन सुनंत हरी गुन भक्ती अनुपम तें लहै :
रघुबीर पद अनुराग जल लौं भागी बेगी बुझावही :
ऐही लागी तुलसीदास मन क्रम बचन हरी गुन गावही

दोहा

कठीन काल मल को ग्रसै : तन साधंन नही होए :
एही बीचारी वीस्वास करी : हरी सुमीरौ बुधी सोइ :
मन हरी पद अनुराग : भजहु त्यागी नाना कपट :
महा मोह नीसी जागु : सोवत बीते काल बहु :
सीया रघुवीर बीवाह : जो सप्रेम गावही सुनही :
तीन कह प्रम उछाह : मंगलाऐतन राम जस :

इती श्री रामचरीत्र मानसे सकलकली कलुख बीधुसने नाम बीमल बैराग्य संपादनी नाम प्रथमोपान बालकांड संपुरन समाप्त सुभमस्तु असाढ सुदी

दसमी रोज बीएफे के तेआर भइल मो : बरइली कंप सदर बजार मे समत १८८७ साल :

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ आदि से खंडित है। लिपि कैथी है। प्रस्तुत ग्रंथ को किसी फौजी सिपाही ने बरैली सदर बाजार के फौजी कैंप में लिपिबद्ध किया है। लिपिकाल संवत् १८८७ है। अंत में छंद के स्थान पर 'दोहा' लिखा है।

१३. बालकांड। पुस्तक किस चीज पर लिखी है?—देशी कागज। पत्र—११२। आकार—१३½ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—११। परिमाण—३३८८। पूर्ण अथवा अपूर्ण ?—पूर्ण। रूप कैसा है ?—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—संवत् १८६४।

आदि

श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वतीयनमः ॥ श्री गुरुभ्योनमः ॥

ॐ श्लोक ॥

ॐ वर्णानामर्थसंघानां रसानां छंदसामपि ॥
मंगलानां च कर्तारौ वंदे वाणी विनायकौ ॥ १ ॥
भवानी शंकरौ वंदे श्रद्धाविश्वास रूपिणौ ॥
याभ्यां विना न पश्यंति सिद्धा स्वांतस्थमीश्वरं ॥ २ ॥
वंदे वोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणं ॥
यमाश्रितोहि वक्रोपि चंद्रः सर्वत्र वंद्यते ॥ ३ ॥
सीतारामगुणग्रामौ पुण्यारण्य विहारिणौ ॥
वंदे विशुद्ध विज्ञानौ कपीश्वरकवीश्वरौ ॥ ४ ॥
उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीं ॥
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोहं रामवलभां ॥ ५ ॥
यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवसुरा।
यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहिभ्रमः॥
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवांभोधेस्तितीर्षावतां
वदेहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिं ॥ ६ ॥
नानापुराणनिगमागमसंमतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोपि।
स्वांतःसुखायतुलसीरघुनाथगाथा भाषानिबंधमतिमंजुलमातनोति॥७

मध्य

॥ दोहा ॥

भोजन करत चपल चित इत उत अवसर पाइ।
भाजि चले किलकत मुष दधि बोदन लपटाइ ॥२४४॥

॥ चौपाई ॥

बाल चरित अति सरल सोहाये। सारद सेस संभु श्रुति गाये॥
जिन्हकर मन इन सब नहि राता। ते जग वंचक किये विधाता॥
भयेउ कुमार जबहि सब भ्राता। दीन्ह जनेउ गुरू पितु माता॥
गुर ग्रह गये पढन रघुराई। अलपकाल विद्या सब पाई॥
जाकी सहज स्वास श्रुतिचारी। सो हरि पढ इह कौतुक भारी॥
विद्या विनय निपुन गुनशीला। षेलहि षेल सकल नृपलीला॥
करतल बान धनुष अति सोहा। देषति रूप चराचर मोहा॥
जिन्ह वीथिन विहरहि सब भाई। थकित होहि सब लोग लुगाई॥

अंत

॥ छंद ॥

निज गिरा पावनि करनकारन राम जस तुलसी कहेउ।
रघुवीर चरित अपार वारिध पार कवि कवने लहेउ॥
उपवीत व्याहु उछाह मंगल सुनि जे सादर गावहीं।
वैदेह राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुष पावही॥
मुनि गाइ कही गिरीश कन्या धन्य अधिकारी सही।
नित प्रीति नूतन सुनत हरि गुण भक्ति अनुपम तै लही॥
रघुवीर पद अनुराग जल लो भागि वेगि बुझावही।
यह जान तुलसीदास मन क्रम वचन हरि गुण गावहीं॥

॥ सोरठ ॥

सिय रघुवीर विवाह जे सप्रेम गावहि सुनहि।
तिन कह सदा उछाह मंगलायतन राज जसु॥

॥ दोहा ॥

कठिन काल मन ग्रसत तन साधन कछू न होइ।
यह विचारि विस्वास करि हरि सुमिरहि बुध सोइ॥

॥ सोरठा ॥

मन हरि पद अनुरागु करहि त्यागहि नाना कपट।
महा मोह निसि जागु सोवत बीते काल बहु ॥४३१॥

इति श्री रामचरित मानसे सकल कलुष विध्वंसने विमल विग्यान भगति संपादनी नाम प्रथमोसोपान ॥ बालकांड समाप्त ॥ संवत् १८६४ ॥ मिति फागुन कृष्न तृतीयायां सोमवासरे ॥ शुभम् ॥ पोथी भवानीसिंह ठाकुर की ॥

विशेष ज्ञातव्य—इसका लिपिकाल सं० १८६४ वि० है। इस प्रति से और सभा से प्रकाशित (संपादक शंभुनारायण चौबे) मानस से मिलान करने से पाठ में अंतर है—अवसरु—'अवसर', सुहाए—'सोहाये', सेष—'सेस', इन्ह—'इन', जन—'जग', वंचित—'वंचक', भए—'भयेउ', जनेऊ—'जनेउ', ग्रह—'ग्रह', सीला—'शीला', देखत—'देखति', बीथिन्ह—'वीथिन', बिहरैं—'विहरहि';—कह्यो—'कहेउ', पारु—'पार', लह्यो—'लहेउ' आदि। उपर्युक्त शब्दों में प्रथम शब्द प्रकाशित रामायण के और दूसरे शब्द (ऊर्ध्व विराम में) प्रस्तुत के हैं।

ग्रंथ के अंत में एक छंद दिया है जिसमें अंतिम भाग की चार पंक्तियाँ प्रकाशित रामायण के अतिरिक्त हैं। इसके पश्चात् एक दोहा और एक सोरठा भी अधिक हैं।

१४. बालकांड। पुस्तक किस चीज पर लिखी है?—देशी कागज। पत्र—२२३। आकार—११ इंच लंबाई और ४½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—८। परिमाण—३२३३। पूर्ण अथवा अपूर्ण?—पूर्ण। रूप कैसा है?—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—संवत् १८६८ वि०। आर्यभाषा पुस्तकालय (ह० सं० ७३६), नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ बालकांड रामायन कृत गोसाईं तुलसीदासजी का भाषा प्रारंभ करते ॥

॥ अश्लोक ॥

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छंदसामपि ॥
मंगलानां च कर्तारौ वंदे वाणी विनायकौ ॥ १ ॥

× × ×

॥ सोरठा ॥

जेहि सुमीरत सिधि होइ। गननायक करिवर वदन ॥
करहू अनुग्रह सोइ। बुधिरासि सुभ गुण सदन ॥ १ ॥
मूक होही वाचाल। पंगू चढै गिरिवर गहन ॥
जासु कृपा सू दयाल। द्रवो सकल कलिमल हरन ॥
नील सरोरुह स्याम। तरुन अरुन बारिज नयन ॥
करौ सो मम उर धाम। सदा छीर सागर सयन ॥ ३ ॥
कुंद इंदु सम देह। उमा रमन करुनायतन ॥
जाहि दीन पर नेह। करौ कृपा मर्दन मयन ॥ ४ ॥
वंदौ गुर पद कंज। कृपासिंधु नर रूप हरी ॥
महा मोह तम पुंज। जासू बचन रविकर निकर ॥

अंत

॥ चौपाई ॥

वामदेव रघुकुल गुरु ज्ञानी। बहुरि गाधि सुत कथा बषानी ॥
सुनि मुनि सुजश मनहिं मन राऊ। वरणत आपन पुन्य प्रभाऊ ॥
बहुरे लोग रजायेसु भयऊ। सुतन समेत नृपति गृह गयेऊ ॥
जहँ तहँ राम व्याह जश गावा। सुजश पुनीत लोक तिहुँ छावा ॥
आये ब्याहि राम घर जब ते। वसे अनंद अवध सब तब ते ॥
प्रभु विवाह जस भयेउ उछाहा। सकहि न वरणि गिरा अहिनाहा॥
कवि कुल जीवन पावन जानी। राम सीय जश मंगल षानी ॥
तेहि ते मैं कछु कहा बषानी। करण पुनीत हेतु निज वानी ॥

॥ छंद ॥

निज गिरा पावन करण कारण। राम जश तुलसी कह्यौ ॥
रघुवीर चरित अपार वारिधि। पार कवि कवने लह्यो ॥
उपवीत व्याह उछाह मंगल। सुनहिं सादर गावहीं ॥
वैदेहि राम प्रसाद ते जन। सर्बदा सुष पावहीं ॥
सुनु गाय कहौं गिरीश कन्या। धन्य अधिकारी सही ॥
नित प्रीति नूतन सुनत हरिगुण। भक्ति अनुतम तें लही ॥
रघुवीर पद अनुराग जल लो। भाग वेग बुझावई ॥
यह जान तुलसीदास मन क्रम। वचन हरि गुण गावई ॥

॥ दोहा ॥

कठिन कालमल ग्रसित तनु। साधन कछुक न होई ॥
यह विचारि विश्वास करि। हरि सुमिरै बुध सोइ ॥

॥ सोरठा ॥

मन हरि पद अनुराग। करहु त्याग नाना कपट ॥
महा मोह निशि जाग। सोवत बीते काल बहु ॥
सिय रघुवीर विवाह। जे सप्रेम सादर सुनहिं ॥
तिन कहँ सदा उछाह। मंगलायतन राम जश ॥

इति श्री रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विमल विज्ञान बैराग्य संतोष संपादनो नाम तुलसीकृत बालकांड प्रथम सोपान समाप्त सुभमस्तु ॥ संवत् १८६८ ॥ मीति कुआर वदि ११ वार सोमार के तयार कीया नन्हकूलाल कायथ मोकाम गौरिगंज मो लड़िका पढ़ावते हैं ॥ दोहा ॥ जैसी प्रति पोथी लीषि ॥ तैसी लेइ उतारि ॥ भूल चूक जौं होइ कहुँ लीजो सुजन सुधारि ॥ बलिहारी वोहि ग्राम के ॥ जहाँ होत हरिणाम ॥ नर तरबे को को कहै ॥ तरथौ जात वह ठाँम ॥ कासी सहर बनारसी। गौरिगंज सुमहाल॥ तहाँ बैठि पोथी लिषि ॥ लाला नन्हकु लाल ॥ चौपाई ॥ बालकांड येह कहि जो गाई ॥ ताको राम राम कहि भाई ॥ पंडित जन सो विनती मोरी ॥ टुटल आखर लेवै जोरी ॥ बहुत कहाँ लौं विनती करऊँ ॥ आखर भूल ताहि लै धरऊ ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सं० १६३१ वि० और लिपिकाल सं० १८६८ वि० है। प्रति पूर्ण है और महत्व की है परंतु पाठांतर की कमी नहीं है। जैसे—

जो—'जेहि', सुमिरत—'शुमीरत', करौ—'करहू', बुद्धिरासि—'बुधिरासि', गुन—'गुण', मूक होइ—'मूक होही', करुनाअयन—'करुनायतन', द्रवौ सकल कलिमल दहन—'द्रवो सकल कलिमल हरन', अमिअ—'अमिय'-सुकृत—'सुक्रीत' आदि। अंत में लिपिकर्त्ता ने अपनी ओर से या किसी प्राप्त प्रति के आधार पर कुछ पंक्तियाँ जोड़ दी हैं यद्यपि उसने स्पष्ट लिखा है कि "जैसी प्रति पोथी लीषि ॥ तैसी लेइ उतारि ॥ भूल चूक जौं होइ कहुँ लीजो सुजन सुधारि ॥" लिपिकर्ता नन्हकू लाल हैं। ये गौरीगंज में पढ़ाते थे और वहीं ग्रंथ की प्रतिलिपि की।

१५. बालकांड। पुस्तक किस चीज पर लिखी है?—देशी कागज। पत्र—७६। आकार—११ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१५। परिमाण—२७०८। पूर्ण अथवा अपूर्ण?—पूर्ण। रूप कैसा है?—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १६१४ वि०।

आदि

श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ श्री रामचंद्रायनमः ॥ श्लोक ॥ वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि ॥ मंगलानां च कर्त्तारौ बंदे वाणी विनायकौ भवानी शंकरौ वंदे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ॥ याभ्यां विना न पश्यंति सिद्धाः स्वांतस्थमीश्वरं ॥२॥ बंदे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकर रूपिणं ॥ यमाश्रितोहि वक्रोपि चन्द्रः सर्वत्र बंद्यते ॥ ३ ॥ सीताराम गुण ग्राम पुण्यारण्य विहारिणौ ॥ बंदे विशुद्ध विज्ञाणौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥ ४ ॥ उद्भवस्थितिसंहार कारिणीं क्लेश हारिणीं ॥ सर्वं श्रेयस्करीं सीतां नतोहं राम वल्लभां ॥ ५ ॥ यन्मायावसवर्त्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादि देवा सुरा यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ॥ यत्पादप्लवमेकमेव हि भवांभोधेस्तितीर्षावतां वन्देहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिं ॥ ६ ॥ नाना पुराणनिगमागम सम्मतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोपि ॥ स्वांतः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा भाषा निबंध मति मंजुलमा नोति ॥ ७ ॥

॥ सोरठा ॥

जेहि सुमिरत सिधि होइ गन नायक करिवर बदन ॥
करौ अनुग्रह सोइ बुद्धिरासि सुभ गुन सदन ॥ १ ॥
मूक होइ वाचाल पंगु चढै गिरिवर गहन ॥
जासु क्रिपा सो दयाल द्रवो सकल कलि मल दहन ॥ २ ॥
नील सरोरुह स्याम तरुण अरुण वारिज नयन ॥
करौ सो मम उरधाम सदा क्षीर सागर सयन ॥ ३ ॥

अंत

॥ दोहा ॥

राम रूप भूपति भगति ब्याह उछाह अनंद ।
जात सराहत मनहि मन मुदित गाधि कुलचंद ॥३५६॥

॥ चौपाई ॥

वामदेव रघुकुल गुर ज्ञानी । बहुरि गाधिसुत कथा बषानी ॥
सुनि मुनि सुजस मनहि मन राऊ । बरनत आपन पुन्य प्रभाऊ ॥
बहुरे लोग रजायसु भयऊ । सुतन्ह समेत राउ गृह गयऊ ॥
जहँ तहँ राम ब्याह सभ गावा । सुजस पुनीत लोक तिहुँ छावा ॥
आए ब्याहि राम घर जबते । बसे अनंद अवध सभ तबते ॥
प्रभु विवाह जस भयउ उछाहू । सकहि न वरनि गिरा अहिनाहू ॥
कवि कुल जीवन पावन बानी । रामसीय जस मंगल षानी ॥
तेहि ते मे कछु कहा बषानी । करन पुनीत हेतु निज बानी ॥

॥ छंद ॥

निज गिरा पावन करन कारन राम जस तुलसी कह्यौ ॥ रघुवीर चरित अपार वारिध पार कवि कोने लह्यौ ॥ उपवीत ब्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावही ॥ वैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुष पावही ॥ ३६ ॥ सोरठा ॥ सिय रघुवीर विवाह जे सप्रेम गावहि सुनहि ॥ तिन्ह कह सदा उछाह मंगलायतन राम जस ॥ इ इ ॥ इति श्री रामचरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराज्ञ सदिनो नाम श्री मद्गोस्वामी तुलसीदास विरंचिते श्री रामायणे प्रथम सोपान बालकाण्ड संपूर्णम् ॥ माघ कृष्ण द्वीतीया शुक्र वासरे ॥ दशषत रामशरण रामांनुजदास ॥ सम्बत् ॥१६१४॥

विशेष ज्ञातव्य – यह प्रति सुस्पष्ट अक्षरों में लिखी गई है। लिपिकर्ता राम-शरण नामक कोई व्यक्ति है, जिसने सं० १६१४ वि० में बालकांड (पूर्ण) की प्रतिलिपि की थी। पाठांतर की दृष्टि से भी प्रति अत्यंत महत्वपूर्ण है।

कवि न रसिक न राम पद नेहू। तिन्ह कहँ सुखद **हास्य** रस एहू ॥
भाषा भनिति **मोरि** मति **थोरी** । **हसिबे** जोग हसे नहि षोरी ॥
(ह० प्रति०)

कवित रसिक न राम पद नेहू । तिन्ह कहँ सुखद **हास** रस एहू ॥
भाषा भनिति **भोरि** मति **मोरी** । **हँसिबे** जोग हसें नहिं खोरी ॥
रेखांकित पाठांतर विशेष महत्वपूर्ण हैं। (प्र० राम०)

प्रति में कहीं-कहीं अनुपयुक्त शब्दों को मिटा दिया गया है। संशोधन भी हुआ है। संशोधन के शब्द हाशिए से दाएँ-बाएँ लिखे गए हैं।

१६. बालकांड । पुस्तक किस चीज पर लिखी है ?—देशी कागज। पत्र—२१६ । आकार—१६ इंच लंबाई और ५ १/२ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—८ । परिमाण—२६१६ । पूर्ण अथवा अपूर्ण ?—खंडित (केवल पत्र सं० १ और २) । रूप कैसा है ?—प्राचीन । लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १९२३ वि० ।

आदि × × × ×

> वंदो प्रथम महीसुर चरना । मोह जनित संशय सब हरना ॥
> सज्जन समाज सकल गुनखानी । करौ प्रनाम सप्रेम सुबानी ॥
> साधु सिरिस सुभ चरित कपासू । निरस बिसद गुनमय फल जासू ॥
> जो सहि दुष पर छिद्र दुरावा । वंदनिय जेहि जग जस पावा ॥
> मुद मंगलमय संत समाजू । जो जग जंगम तीरथ राजू ॥

अंत

> सीय रघुवीर विवाहु जश प्रेम सगावहि सुनहि ॥
> तिन्ह कह शदा उछाहु मंगलायतन राम जश ॥ ३६३॥ चौपाई

इति श्री रामचरित मानशे सकल कलि कलुष विध्वंशिने गुसाई श्री तुलसीदास जी कृत रामायणे वालकांड नाम प्रथम शोपान शंपूर्ण ॥समाप्तं॥ श्री मस्तु कल्यान कारन ॥ पुश मासे कृष्ण पक्षे तिथौ अंवास्यां ॥ सोमवारे संमत ॥ १९२३ ॥ गाम धौरेरा वंदर मंद्धि रामजी का ॥ स्वामि रामानुजदास जी महाराज ॥ श्रीमते रामानुजायनमः ॥ श्री जानकी नाथाय नमः ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रारंभ के दो (१–२) पत्रे नहीं हैं । कुल २१६ पत्रे हैं । अधिकांश 'स' के स्थान पर 'श' का प्रयोग किया गया है । पाठांतर भी हैं । लिपिकाल १९२३ वि० है ।

१७. बालकांड । पुस्तक किस चीज पर लिखी है ?–देशी कागज । पत्र–४६ । आकार–१२ ३/१० इंच लंबाई और ५ ६/१० इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—१३ । परिमाण–३३८० । पूर्ण अथवा अपूर्ण ?–पूर्ण । रूप कैसा है ?–प्राचीन (जीर्ण) । लिपि–नागरी । लिपिकाल–सं० १९६३ वि० ।

आदि

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्लोक वर्णानामर्थ संघानां रसानां छंदसामपि ॥ मंगलानां च कर्तारौ वंदे वाणी विनायकौ ॥ १ ॥ भवानी शंकरौ वंदे

श्रद्धा विश्वास रूपिणौ ॥ याभ्यां विना न पश्यंति सिद्धाः स्वांतस्थमीश्वरं ॥ २ ॥ वंदे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकर रूपिणौ ॥ यमाश्रितोहि वक्रोपि चंद्र सर्वत्र वंद्यते ॥ ३ ॥ सीताराम गुण ग्राम पुण्यारण्य विहारिणो । वंदे विशुद्ध विज्ञानो कवीश्वर कपीस्वरो ॥ ४ ॥ उद्भव स्थिति संहार कारिणी क्लेश हारिणी ॥ सर्वश्रेयस्करी सीतां नतोहं राम वल्लभां ॥ ५ ॥ यन्माया वसवर्तिविश्वमखिलं ब्रह्मादि देवासुरा ॥ यत्सत्वादमृषैव भाँति सकलं रज्जो यथा हे भ्रम ॥ यत्पादपल्लव मेक मेवही भवां बोधेस्तितीर्षावतां ॥ वंदेहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिं ॥ ६ ॥ नाना पुरान निगमागम संमतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोपी ॥ स्वांत सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा भाषा निबंध मति मंजुल मातनोती ॥ ७ ॥ सोरठा ॥ जिहि सुमिरत सिधि होय गणनायक करिवर वदन ॥ करौ अनुग्रह सोय, बुद्धिराशि शुभ गुण सदन ॥ १ ॥ मूक होय वाचाल पंग चढै……हन ॥ जासु कृपा सु दयाल ॥ द्रवो सकल कलिमल दहन ॥ २ ॥ नील सरोरुह स्याम तरुण अरुण वारज नयन ॥

अंत

बहुरे लोग रजायसु भयेउ सुतन समेत नृपति ग्रह गयेउ
जह तहं……ब्याह जस गावा सुजस पुनीत लोक तिहु छावा
आये राम ब्याह घर जबते वसे अनंद अवध सब तबते
प्रभु विवाह जस भयेउ उछाहा सकहि न वरणि गिरा अहिनाहा
कविकुल पावन जीवन जानी राम सीय जस मंगल खानी
तेहि ते मैं कछु कहा बखानी करन पुनीत हेतु निज वानी ॥

छंद ॥ निज गिरा पावन करन कारण राम यस तुलसी कह्यौ
रघुवीर चरित अपार वारिधि पार कवि कौने लह्यौ
उपवीत व्याह उछाह मंगल सुनहि सादर गावही
वैदेही राम प्रसाद तै जन सर्वदा सुख पावही ॥

सोरठा ॥ सिय रघुवीर विवाह जे सप्रेम सादर सुनहि
तिन कह सदा उछाह मंगलायतन राम यस ॥

इति श्री रामचरितमानसे सकल कलि कलुख विध्वंसने विमल वैराग्य संतोष संपादनी नाम तुलसी कृत बालकांड प्रथमो सोपान समाप्त नये पुराने पत्रन की यह वार्ता है कि एक दुष्ट इस कांड को हरण कर ले गया

बहोत दिवस पीछे ये पत्र कहीं पडे पा गये तब विहारी लाल ब्राह्मण ने पुस्तक अंग भंग समझ कर अति परिश्रम करके पूरण किया संवत १९६३ मास आश्विन तिथि दुतिया वार गुर शुभं भवतु कल्याणमस्तू ।।०।।०।।०।। ।।०।।०।।०।।०।।०।।०।।०।।०।।

ग्राम फारैन जहा अग्नि मैं हो कै ब्राह्मण निकलै।

विशेष ज्ञातव्य—प्रति अत्यंत जीर्ण है। इस प्रति के अधिकांश पत्र नवीन हैं। जिसे विहारीलाल ब्राह्मण ने तैयार किया था। प्राचीन प्रति के पत्रों को किसी चोर ने चुराकर नष्ट कर दिया था।

पत्र १-३, १९-२०, २२-२५, २८-३०, ३२, ३५-३७, ३९-४१, ४३, ४४, ४६-४९, ५१-५९, ६७-७८, ८०-९२, ९४ नए हैं।

पत्र ४-१८, २१, २६, २७, ३१, ३३-३४, ३८, ४२, ४५, ५०, ६०-६६, ७९, ९३ पुराने हैं।

कहीं कहीं पाठांतर भी है। प्राचीन पत्रों में यत्र-तत्र कठिन शब्दों का अर्थ भी लिखा हुआ है। पत्र १३ पर 'श्रोता त्रिविध' का अर्थ लेखक ने लिखा है—श्रोता तीन ३, बध्य १, मुमुष्य २, नित्यमुक्त ३।

अशुद्ध शब्दों को हरताल लगाकर मिटा दिया गया है। टूटे हुए शब्द हाशिए पर दाएँ-बाएँ, ऊपर नीचे लिखे हुए हैं।

पुराने पत्रों की प्रतिलिपि सं० १८६४ वि० में की गई थी, क्योंकि अन्य कांड जो इस प्रति के साथ संलग्न हैं उनमें प्रतिलिपि काल सं० १८६४ दिया है।

१८. बाल कांड। पत्र—२। आकार—८$\frac{3}{4}$ इंच लंबाई और ४$\frac{3}{4}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१०। परिमाण—७५। पूर्ण अथवा अपूर्ण ?—(केवल पत्र सं० १ और १० प्राप्त)—खंडित। रूप कैसा है ?—प्राचीन (अत्यंत सुंदर)। लिपि—नागरी।

बालकांड से—

ॐ श्री गणाधिपतयेनमः ।। ॐ श्री रामायनमः ।।
ॐ वर्णानामर्थसंघानां रसानां छंदसामपि ।।
मंगलानां च कर्त्तारौ बंदे वाणीविनायकौ ।। १ ।।
भवानीशंकरौ वंदे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।।
याभ्यां विना न पश्यंति सिद्धाः स्वांतस्थमीश्वरं ।। २ ।।

वंदे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकर रूपिणं ॥
यमाश्रितो हि वक्रोपि चंद्रः सर्वत्र वंद्यते ॥ ३ ॥
सीताराम गुणग्राम पुण्यारण्य विहारिणौ ॥
वंदे विशुद्ध विज्ञानौ कवीश्वर कपीश्वरौ ॥ ४ ॥

× × ×

× × × संकट किये साधु सुधारी ॥
नामु सप्रेम जपत अनयासा ॥ भगत होहि मुदमंगल वासा ॥
राम एक तापस तिय तारी ॥ नाम कोटीलकुष मति सुधारी ॥

अंत

नाम प्रसाद संभु अविनासी ॥ साजु अमंगल मंगलरासी ॥
सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी ॥ नाम प्रसाद ब्रह्म सुष भोगी ॥
नारद जानेउ नाम प्रतापू ॥ जग प्रिय हरि हरिहर प्रिय आपू ।
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू ॥ भगत सिरोमनि भे प्रहलादू ॥
ध्रुव सगलानि जपेउ हरिनाउ । पायेउ अचल अनूपम ठाउ ॥
सुमिरि पवन सुत पावन नामू ॥ अपनै वस करि राखे रामू ॥
अपतु अजामिलु गजु गनिकाउ ॥ भये मुकुत हरिनाम प्रभाउ ॥
कहउ.....

विशेष ज्ञातव्य—केवल दो पत्रे (पत्र सं० १ और १०) ही प्राप्त हैं। प्रस्तुत प्रति की लिखावट अत्यंत सुंदर है। लिपिकाल आदि का कुछ भी पता नहीं चलता। लिपिकर्त्ता के दोष से विचित्र शब्दों का निर्माण होना और उससे उलझनें पैदा होना स्वाभाविक है। इस संबंध में निम्नलिखित पंक्ति द्रष्टव्य है...

"राम एक तापस तिय तारी ॥ नाम कोटीलकुष मति सुधारी ।"

रेखांकित शब्द को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि लिपिकर्त्ता की चित्त, वृत्ति लिपि करते समय चंचल थी। वास्तव में होना इस प्रकार चाहिए था—'कोटि षल कुमति'। 'ष' के स्थान पर 'ल' और उसके स्थान पर 'ष' और 'ल' 'ष' के बीच में 'कु' कर दिया। अतः 'लकुष' शब्द का निर्माण हो जाता है पर यह पाठभेद नहीं बल्कि लिपिकर्त्ता का दोष स्पष्ट विदित होता है। प्रस्तुत प्रति के साथ ही जिल्द में रासपंचाध्यायी, विष्णु-सहस्र नाम, हनुमान कवच आदि भी हैं। ग्रंथ के प्रारंभ में एक चित्र भी है।

१६. बालकांड। पुस्तक किस चीज पर लिखी है?—देशी कागज। पत्र—२४३ (सं० २५ से २५६ तक)। आकार—६½ इंच लंबाई और ५ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—८। परिमाण—३०३७। पूर्ण अथवा अपूर्ण?—अपूर्ण। रूप कैसा है?—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल— सं० १८६०?

पत्र सं० २५ से—

× × × × वा॥
'ते श्रोता वकता सम सीला। सवदरसी जानहि हरि लीला॥
जानहि तिनि काल निज ज्ञाना। करतलगत आमलक समाना॥
औरौ जे हरि भक्त सुजाना। कहहि सुनहि समुझहि विधि नाना॥

॥ दोहा॥

मै पुनि निज गुर सन सुनी कथा सो सुकरषेत।
समुझि नहि तसि वालपन तब अति रहेउ अचेत॥ ४०॥
श्रोता वकता ज्ञान निधि कथा राम कै गूढ।
किमि समुझौ मै जीव जड कलिमल ग्रसित विमूढ॥ ४१॥

अंत—

॥ चौपाई॥

वामदेव रघुकुल गुर ज्ञानी। वहुरि गाधिसुत कथा वषानी॥
सुनि मुनि सुजस मनहि मन राउ। वरनत आपन पुन्य (प्रभाउ)॥
.........ग रजायेसु भयेउ। सुतन समेत नृपति गृह गयउ॥
जहाँ तहाँ राम व्याह.........। सुजस पुनीत लोक तिहु छावा॥
आए राम व्याह घर जवते। वसे अनंद अ.........व तवते॥
प्रभु विवाह जस भयेउछाहु। सकहि न वरनि गिरा अहिनाहु॥
कवि (कुल) जीवन पावन जानी। राम सीय जस मंगल षानी॥
तेहिते मै कछु कहा वषानी। करन पुनीत हेतु निज वानी॥

॥ छंद॥

निज गिरा पावनि करन कारन राम जस तुलसी कहा॥
रघुवीर चरित अपार वारिध पारु कवि कोने लह्यो॥
उपवित व्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावही॥
वैदेही राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुष पावही॥

सोरठा ॥

सिय रघुवीर बिबाह जे सप्रेम गावहि सुनहि ॥
जिन्ह के सदा उछाह मंगलायतन रामजस ॥४०३॥

इति श्री रामचरितमानसे सकल कली कलुष............(संवत् १८६० मास)

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के आदि में पत्र सं० १ से २४ तक के पत्रे नहीं हैं। अंतिम पत्र (सं० २५६) थोड़ा फटा हुआ है जिससे कुछ शब्द स्पष्ट नहीं होते। पत्र सं० १६६ के स्थान पर २६६, २५४ के स्थान पर १५४ लिखा है। पत्र सं० १०४ और १०५ एक पत्र पर, पत्र सं० १०५ और १०६ एक पत्र पर लिखा गया है। लिपिकाल (सं० १८६०) लिखा है जो बाद में किसी व्यक्ति के द्वारा लिखा प्रतीत होता है। लि० का० सं० १८६० है या कुछ और, स्पष्ट नहीं होता।

२०. बालकांड। पुस्तक किस चीज पर लिखी है?—देशी कागज। पत्र—२१। आकार—११ इंच लंबाई और ६।१।२ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—२२। मुद्रित (मुद्रणकाल, स्थान आदि का पता नहीं चला)। परिमाण—८३७। पूर्ण अथवा अपूर्ण—खंडित। रूप कैसा है? प्राचीन। लिपि—नागरी।

आदि--

.........लक्ष्मण विहँसे बहुरि नयन तरेरे राम
गुरु समीप गवने सकुचि परिहरि वाणी वाम

चौपाई

अति बिनीत मृदु शीतल बाणी बोले राम जोरि युग पाणी
सुनहु नाथ तुम सहज सुजाना वालक वचन करिय नहिं काना
वर्रै वालक एक सुभाऊ इनहिं न सन्त विदूषहिं काऊ
ते नाही कछु काज विगारा अपराधी मै नाथ तुम्हारा
कृपा कोप बध बंधु गोसाई मो पर करिय दास की नाई
कहिय बेगि जेहि बिधि रिसि जाई मुनि नायक सोई करिय उपाई
कह मुनि राम जाइ रिसि कैसे अजहु बंधु तव चितव अनैसे
यहि के कंठ कुठार न दीन्हा तौ मै कहा कोप करि कीन्हा

दोहा

गर्भं स्रवहिँ अवनिप रवनि सुनि कुठार गति घोर
परशु अछत देखौँ जियत बैरी भूप किशोर

अंत

चौपाई

वामदेव रघुकुल गुरु ज्ञानी, बहुरि गाधि सुत कथा बखानी
सुनि मुनि सुयश मनहिँ मन राऊ, बरणत आपन पुण्य प्रभाऊ
बहुरे लोग रजायसु भयऊ, सुतन समेत नृपति गृह गयऊ
जहँ तहँ राम व्याह यश गावा, सुयश पुनीत लोक तिहु छावा
आये व्याहि राम घर जबतँ, बसे अनन्द अवध सब तब तँ
प्रभु बिवाह जस भयऊ उछाहा, शकहिँ न बरणि गिरा अहिनाहा
कवि कुल जीवन पावन जानी, राम सीय यश मंगल खानी
तेहि ते मैं कछु कहा बखानी, करण पुनीत हेतु निज बाणी

छंद

निज गिरा पावन करण कारण राम यश तुलशी कह्यौ
रघुबीर चरित अपार बारिधि पार कबि कवने लह्यौ
उपबीत व्याह उछाह मंगल सुनहिँ सादर गावहीँ
बैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुख पावहीँ

दोहा

कठिन काल मल ग्रसित तनु साधन कछुक न होइ
यह बिचारि विश्वास करि हरि सुमिरै बुध सोइ

सोरठा

मन हरि पद अनुराग करहु त्याग नाना कपट
महा मोह निशि जाग सोवत बीते काल बहु
सिय रघुबीर बिबाह जे सप्रेम सादर सुनहिँ
तिन कहँ सदा उछाह मंगलायतन राम यश
इति श्री रामचरितमानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने
विमल विज्ञान बैराग्य सम्पादनोनाम तुलसी कृत बालकांडः
प्रथमो सोपानः समाप्तः शुभमस्तु सिद्धिरस्तु श्री सीताराम

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ लीथो टाइप में मुद्रित है। संभवतः संपादक द्वारा शब्दों को सुसंस्कृत रूप देने का प्रयास किया गया है—'सुजस' (सुयश), 'बरनत' (बरणत), 'पुन्य' (पुण्य)' 'जस' (यश), 'बानी' (वाणी), 'लछिमन' (लक्ष्मण), 'सीतल' (शीतल), 'किसोर' (किशोर), 'संभु' (शंभु) 'गुन' (गुण), 'बान' (बाण), आदि (कोष्ठक के शब्द प्रस्तुत पुस्तक के हैं)।

बारात, अगवानी, जनवास, द्वारपूजा, विवाह मंडप, जनकपुर, दशरथ की बिदाई, विश्वामित्र की विदाई आदि की तस्वीरें भी हैं।

प्रारंभ से पत्र सं० १३५ तक एवं एक दो पत्रे और भी खंडित हैं। मुद्रण काल, प्रेस, संपादक आदि के नाम का पता नहीं चला।

२१. बालकांड। पुस्तक किस चीज पर लिखी है? देशी कागज। पत्र—३१। अपूर्ण। रूप-जीर्ण। लिपि—नागरी। आकार—५ $\frac{1}{2}$ इंच लंबाई और ३ $\frac{1}{2}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—११। परिमाण—(छंदों में) २५६। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

हरषित सुर संतन चित चाऊ ॥
बन कुशुमित गिरि मनि पारा ॥ श्रवहि सकल सरिता म्रदु धारा ॥
सो अवसर बिरंचि जब जाना ॥ चले सकल सुर साजि बिमाना ॥
गँगँन बिमल संकुल सुर जूथा ॥ गावहि गुन गंधर्व वरूथा ॥
वरषहि सुमन अंजुली साजी ॥ गह गहि गँगँन दुंदुभी बाजी।
अस्तुति करहि नाग मुनि देवा ॥ बहु बिधि लावहि निज हित सेवा।

॥दोहा॥ सुर समूह विनती करहि पहुचे निज निज धाम।
जगनेवास प्रभु प्रगटे अषिल लोक बिस्राम ॥

॥छंद॥ भय प्रगट क्रपाला दीन दयाला कवसिल्या हितकारी ॥
हरषित महतारी ॥ मुनिमन हारी अद्भुत रूप विचारी ॥
लोचन अभिराम तन घन स्यामा निज अयुध भुज चारी ॥
भूषण बनमाला नयन विसाला सोभा सिंधु षरारी ॥
कह द्वौ कर जोरी अस्तुति तोरी ॥ केहि विधि करौ अनंता ॥

अंत

॥चौ०॥ षोदा महि हम चरिउ कोधा रे रे दुष्ट बहुत हम शोधा ॥
कोउ कह चौर दीष यहु होई यहि सम छली अवर नहि कोई
सुनत बचन मुनि चितवा जबही भये भस्म सब छुण मंह तबही
पावक जानि धरहि कर आनी जरहि न काहे न ते अभिमानी
जानि गल जे संगह करही कहहु उमा ते काहे न मरही
क्रोध किन्हेनि बिन किये बिचारा भये सकल तेहि ते जरि छारा
इहा नृपति अंशुमान बोलाये नहि आये सब तिन्हिहि पठाये

॥दोहा॥ दीन्ही नृपति अशिस तब अति हित बारहि बार ।
बेगि फिरेहु लै तुरंग शुत मोरे प्राण अधार ॥

॥चौपाई॥ चलेउ नाइ पद सीश कुमारा विष्णु भक्त तिहु लोक पियारा
जह कहु निरषि मुनिन्ह के धामा पूछि कुसल करि दंडउप्रनामा
पन्नग उरगण पार असीसा चारिउ दिग्गज नावत शीसा
यहि विधि शोधत मग मह जाता मिले गरुड शुमनि के भ्राता ॥
चरण परत तब आशिष दयऊ ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति के प्रारंभिक ७ पत्र नहीं हैं। बालकांड की संपूर्ण प्रतिलिपि लिपिकर्ता ने नहीं की थी। उसने थोड़े से अंशों को लिख लिया था। प्रति विशेष महत्वपूर्ण नहीं है।

२२. बालकांड। पुस्तक किस चीज पर लिखी है?—देशी कागज। पत्र—१५। आकार—११९/१० इंच लंबाई और ५६/१० इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१२। परिमाण—३७१। अपूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—×।

आदि

२१ चौपई नाम जिह जप जागहि जोगी विरति विरंचि प्रपंच वियोगी वृंह्म सुषहि अनुभवहि अनूपा अकथ अनामय नाम न रुपा। जांन चहहि गुढ मत जेउ नांम जीह जपि जानै तेउ साधक नाम जपहि लय लाये होहि सिधि अनिमादिक पायै जपहि नाम जन आर्त्त भारी मिटहि कुसंकट होहि सुषारी रांम भक्त जग चारि प्रकारा अक्रत च्यारिउ अनघ उदारा चहु चतुर कहु नाम आधारा ग्यानी प्रभुव विशेष पियारा चहु जुग चहु श्रुति नाम प्रभाउ कलि विशेष नहि आन उपाउ

दोहा सकल कामना हीन जे राम भक्ति रस लीन नाम प्रेम पिउष ह्रदि तिनहुँ कीये मन मीन। २२ चौपइ। अगुन सगुन द्वि ब्रह्म सरुपा अकथ अनादि अगाध अ'''मेरै मत वड नाम दुहु ते किये तेहि युग निज वस निज बूते।

× × ×

अंत

सब विधि पुरी मनोहर जानी सकल सिद्धिप्रद मंगल खांनी
विमल कथा कर कीन अर्भा सुनत नसाय कांम मद दंभा
रांमचरित मानस यह नांमा सुनत श्रवन पाइय विस्रांमा
मन करि विषय अनल बन जरइ होय सुषी जो यह सर परही
रांम चरित मांनस मुनि भांवन विरचेउ संभु सुहावन पावन
त्रिविध दोष दुष दारिद दावन कलि कुचाल कलि कलुष नसावन
रच महेस निज मानस राषा पाय सो समय सिवा सन भाषा
तातै रांम चरित मांनस वर धरेहु नांम हीय हेरि हरिष हर
कहौ कथा सोइ सुषद सुहाइ सादर सुनहु सुजन मन लाइ

दो० जस मानस जिहि विध भये जग प्रचार जेहि हेत
अब सोइ कहौ प्रसंग सब सुमरि उमा वृहकेत

चौ० संभु प्रसाद सुमति हिय हुलसी रांम चरित मानस कवि'''

विशेष ज्ञातव्य—प्रति अपूर्ण है, लिपिकाल ज्ञात नहीं।

२३. बालकांड—देशी कागज। पत्र—१०३। आकार—१० इंच लंबाई और ५ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—१२। परिमाण—३३६६। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

श्री गणेशायनमः॥ वर्णानामार्थसर्वानां रसानां छंदशामपि॥ मंगलानां च कर्त्तारौ वंदे वानी विनायकौ॥ १॥ भवानी शंकरौ वंदे श्रद्धा विस्वस्व स्वरूपिणौ॥ जाभ्यां विना न पश्यंति सिद्धा स्वर्गस्थमीस्वरं॥ २॥ वंदे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकर रूपिणो मयाश्रितोहि वक्रोपि चंद्रः सर्वत्र वंद्यते॥ ३॥ सीता राम गुण ग्रामौ पुण्यारण्य विहारिनौ बंदे विशुद्ध

विग्यानौ कपिस्वर कवीस्वरौ ॥ ४ ॥ उद्भवस्थिति संहार कारिनीं क्लेश हारिणीं ॥ सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोहं राम वल्लभां ॥ ५ ॥ जन्माया वस वर्त्ति विस्वमखिलं ब्रह्मादि देवासुरा ॥ जत्सत्वादमृषै भाति सकलं रज्जौ जथा हे भ्रमः ॥ जत्पादौ प्लव मेक हि भवां भोधा स्तितीर्षावतां ॥ वंदेहं तमशेष वरं रामाख्या मीशं हरिं ॥ ६ ॥ नाना पुराण निगमागम संवतं जद्रामायणं निगदितं क्वचिदन्यतोपि स्वांत शुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा भाषा निबंध मति मंजुल मातनोति ॥ ७ ॥

सोर्ठा—जा सुमिरे सिधि होइ गणनायक करिवर बदन ॥ करहु अनुग्रह सोई बुद्धिरासि शुभ गुण सदन ॥ १ ॥ मूक होहि वाचाल पंगु चढै गिरिवर गहन ॥ जासु कृपा सो दयाल द्रवौ सकल कलि मल हरन ॥ २ ॥ नील सरोरुह स्याम तरुण अरुण वारिज नयन ॥ करहु सो मम उर धाम सदा क्षीर सागर सयन ॥ ३ ॥ कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन ॥ जाहि दीन पर नेह करहु कृपा मर्दण मयन ॥ ४ ॥

अंत

छंद—निज गिरा पावनि करन कारण राम जसु तुलसी कहेऊ ॥
रघुवीर चरित अपार वारिध पार कवि कवणे लहेऊ ॥
उपवीत व्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावही ॥
वैदेहि राम प्रशाद ते जण सर्वदा शुष पावही ॥
सुनि गाइ कहौ गिरीश कन्या धन्य अविकारी शही ॥
नित प्रीति नूतण शुणत हरि गुण भगति अनुपम तै लही ॥
रघुवीर पद अनुराग जल भो भागि वेगि बुझावही ॥
यह जाणि तुलसीदास मण क्रम वचण हरि गुण गावही ॥

सोर्ठा—सिय रघुवीर विवाह जे सप्रेम गावहि सुणहि ॥
तिण कह सदा उछाह मंगलायतन राम जसु ॥
दोहा—कठिन काल मन ग्रसित तन साधण कछू ण होई ॥
यह विचारि विस्वास करि हरि सुमिरहि बुध सोई ॥
सोर्ठा—मन हरि पद अनुरागु करहि त्याग नाना कपट ॥
महा मोह निसि जागु शोवत बीते काल बहु ॥४३१॥

इति श्री रामचरितमाणसे सकल कलि कलुष विध्वंसे ॥ विमल विग्यान भगति संपादिनी नो नाम प्रथम शोपाण बालकांड सप्तं ॥ शुभं भूयात्

वैशाष मासे कृष्ण पक्षे पारर्वणि त्रितीयायां ॥ शुक्रवासरे ॥ लिष्यतेन् हुलाश शुक्लेन् ॥ राम ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति पूर्ण तथा सुस्पष्ट अक्षरों में लिखी गई है। पाठांतर की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है। प्रकाशित रामचरित मानस से इस प्रति में छंद की संख्या अधिक है। विवरण के अंत का छंद 'सुणि गाइ......गावही' प्रकाशित प्रतियों में नहीं है। स्थान स्थान पर 'न' अक्षर की जगह 'ण' का प्रयोग है तथा 'स' के स्थान पर 'श' प्रयुक्त है।

आकर चारि लाष चौराशी। जाति जीव नभ थल जल वाशी॥
षलौ करहि भल पाइ शुसंगू। मिटै ण मलिन शुभाउ अभंगू॥
करण चहौ रघुपति गुण गाहा।......

पाठांतर

१. गति कूर कवि शुरसरित की ज्यों सरित पावन पाथ की॥
२. जापक जण प्रहलाद जिमि **राषहि** दलि शुरशाल॥

अशुद्ध शब्दों को मिटा दिया गया है। टूटे हुए वाक्यों को हाशिए के अगल बगल लिख दिया है।

२४. बालकाण्ड। देशी कागज। पत्र—२५७। आकार—६ इंच लंबाई और ६ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—१८। परिमाण (छंदों-में) —३७५६ ।—पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—कैथी। लिपिकाल अज्ञात।

आदि

श्री गनेश जी सहाऐ श्री राम चंद्रं जी सहां श्री देवी जी सहाऐ श्री महावीर जी सहां श्री गंगा जी सहाऐ श्री सुरसती जी सहाऐ श्री पोथी बालकांड रमाऐन भाषा गोसांइ तुलसी दास लीषाते।

॥ सोरठं ॥

जेहि सुमीरे सीधी होई॥ गन नाऐक करिवर बदन॥
करो अनुग्रह सोइ॥ बुधी रासी सुभ गुन सदन॥

मुक होहीं वाचांल पंगु चढ़े गीरीवर गहन ॥
जासु क्रीपाल दआल ॥ दवही सकल कलीमल हरनं ॥
नील सरोरुह साम ॥ तरुन अरुन वारीज नैनं ॥
करहु सो मम उर धाम ।। सदा छीर सागर सैनं ॥
कुद इंदु सम देह ॥ उमा रवन करुनाऐतन ॥
जाही दीन पर नेह ॥ करो क्रीपां मरदन मऐनं ॥
वंदौ गुर पद कंज ॥ क्रीपा सींधु नर रुप हरी ॥
महामोह तम पुंज ॥ जासु वचन रवी कर नीकर ॥

× × ×

अंत

॥ छंद ॥

नीज गीरा पावन मल नसावन राम जस तुलसी कहा ॥
रघुवीर चरीत अपार वारीघा पार केवी कवंनि लहा ॥
उपवीत व्याह उछाहे मंगल सुनही जो सादर गावाही ॥
वैदेही राम प्रसाद ते नर सँवदा सुख पावाही ॥

॥ दोहा ॥

सीआ रघुवीर वीहाउ ॥ जे सप्रेम गांवाही सुनही ॥
तेन्ह कहा सदा उछाह मंगल ऐतना राम जस ॥
बाल चरीत अती भाय ॥ वरनौ तुलसीदास हीत ॥
कहत सुने सुख पाय ।। प्रम प्रीत वीचीत्र अत ।
कहे सुने समुझे स्कल चरीत सुनौ प्रभु गान
सीतापती रघुकुल तीलक ।। सदा करै कल्यान ।।

विशेष ज्ञातव्य—कैथी लिपि में लिखी यह प्रति पूर्ण है। प्रारंभ में दो पत्र सादे हैं। पत्र संख्या देते समय प्रतिलिपिकर्ता ने दूसरे पत्र पर संख्या ३ दे दी है। जिससे पत्र संख्या २५८ हो जाती है किंतु पत्र २५७ ही हैं। प्रति में प्रारंभ के संस्कृत श्लोक नहीं हैं। प्रति सीधे सोरठे से प्रारंभ कर दी गई है। पाठ ठीक नहीं है। कुछ पाठांतर भी द्रष्टव्य हैं—

मुद मंगल मय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथ राजू॥

(प्र० राम०, ना० प्र० स०, पृ० ४)

मुद मंगल में संत समाजु। जोगी जंगम तीरथ राजु ॥

(ह० प्र०, पत्र ४)

२५. बालकांड—देशी कागज। पत्र—१४५। आकार—८ $\frac{४}{१०}$ इंच लंबाई और ६ $\frac{२}{१०}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१४। परिमाण—२५३८। अपूर्ण। रूप—जीर्ण। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

कासी मुक्ति हेत उपदेसू ॥·········· न गनराऊ ॥ प्रथम पूजियत नाम प्रभाउ ॥ जांनि आदि कवि नाम प्रतापू ॥ भयउ सुध्धि करि उलटा जापू। सहस नाम सुनि सुनि सिव वानी ॥ जपहि जासु प्रिय संग भवानी ॥ हरषे हेतु हेर हर ही कौ ॥ किय भूषन जग भूषन त्रिय कौ ॥ नाम प्रभाउ जानि सिव नीकौ ॥ काल कूट फल दीन्ह अमी कौ ॥

दोहा ॥ वरषारित रघुपति भगत तुलसी साल सुदास ॥
राम नाम वर वरन जुग सावन भादव मास ॥

चौपही ॥ आषर मधुर मनोहर दोऊ ॥ वरन विलोचन जन जिय दोऊ ॥ सुमिरत सुलम सुषद सब काहू । लोक लाभ परलोक निवाहू ॥ कहत सुनत सुमिरत सुठ नीके ॥ राम लषन सम प्रिय तुलसी के ॥ वरनत वरन प्री··· ········जीव सम सहज सघाती ॥ नर नाराइनि सरस सुभ्राता ॥ जग पालक विसेष जन त्राता ॥ भग्ति सुत्रिय कल करन विभूषन ॥ जग हित हेत विमल विधि पूषन ॥ स्वाद तोष सम सुगति सुधा के ॥ कमठ सेष सम धर वसुधा के ॥ जन मन कंज मंजु मधुकर से ॥ जीव जसोमति हरि हलधर से ॥

दोहा ॥ येक छत्र यिक मुकट मन सब वरनन पर जोयि ॥

अंत

कुल रीति प्री···मेत रवि कहि देत सब सादार किये ॥ यिहि भाति··· सीतहि सुभग सिंघासन दिये ॥ सिय राम अवलोकनि परसपर प्रैम न काहू लषि परै ॥ मन बुध्धि वर वांनी अगोचर प्रगट कवि कैसे करै ॥

दोहा ॥ हौम समय तनु धरि अनल अति हित आहुति लेहि ॥
विप्र वेष धरि वेद सब कहि विवाहि विधि देहि ॥

चौपही ॥ जनक पाट महिषी जग जानी सिया मातु किमि जायि वषानी
सुजसु सुक्रत सुव सुंदरि ताई। सब समेटि सुर रची वनाई
समय जांनि मुनि वरंन बुलाये ॥···················

पद सरोज मनोज अरि उर सर्व देव विराजही ॥ जे सुनत सुमिरत विमलता मन सकल कलिमल भाजही ॥ जो परस मुनि वनिता लही गति रही जो पातिक मही ॥ मकरंद जिन्हको संभु सुचता अवध सुर वरनई ॥ करि मधुप मन मुनि जोग जन जे सई अभिमति गति लहै ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति खंडित है। प्रारंभ के अधिकांश पत्र लुप्त हो गए हैं। लिपिकाल ज्ञात नहीं है। लिपि यद्यपि नागरी है तथापि कहीं कहीं लिपिकर्ता ने कैथी लिपि की विशेषता को भी ग्रहण कर लिया है, जिससे शुद्ध पाठ नहीं मिल पाता है। पाठांतर विशेष हैं—

भंजौ राम अपुन भव चापू ॥ भव भय भंजन नाम प्रतापू ॥
ध्रुव शमाबि लगि जपि हरिनामा ॥ पाइिउ अचल अनूपम ठामा ॥
राम नाम नर केहरी कनिक कशिव कलिकाल ॥
जापिक जन प्रहिलाद जिमि पालहि दल सुरसाल ॥

२६. बालकांड। देशी कागज। पत्र (अव्यवस्थित क्रम)—१०५। आकार—१२ इंच लंबाई और ७½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—२४। परिमाण—३४६५। अपूर्ण। रूप—प्राचीन (जीर्ण)। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

······चारा ॥ विधनषेद मय कलि मल हरनी ॥ कर्म कथा रवि नंदन वरनी ॥ हरिहर कथा विराजत वैनी ॥ सुनत सकल मुद मंगल दैनी ॥ वट विश्वास अचल निज धर्मा ॥ तीरथु राज समाज सुकर्मा ॥ सबहि सुलभ सब दिन सवा देसा ॥ सेवत सादार समन कलेसा ॥ अकथ अलौकिक तीरथ राउ ॥ देइ साद्य फल प्रगट प्रभाउ ॥

दोहा ॥ सुन समुझहि सज्जन मुदित मंज्जइ अति अनुराग ॥
लहहि चार फल अछत तन साध समाज प्रयाग ॥

चौपही ॥ मंजन फल पेषिय ततकाला ॥ काक होहि पिक बगउ मराला ॥
सुन अचर्ज करहि जन को ॥ सत संगत महिमा नहि गोई ॥
वालमीक नारद घटजौनी ॥ निज निज मुखन कही निज हौनी ॥

× × ×

अंत

लीन्ह राय उर लाइ जानुकी मिटी महामरजाद ज्ञान की
समुझावत सब सचिव सयानै कीन्ह विचार अनवसर जानैं
बारहि बार सुता उर लाई सजि सुंदर पालकी मगाई
दो ।। प्रैंम विवस परिवार सब जानि सु लगन नरेस
कुवरि चढ़ाई पालकिनि सुमिरे सिध्य गनेस ॥ ४२७ ॥
वहुविधि भूप सुता समुझाई नारि धर्म कुल रीति सिषाई
दासी दास दिये वहुतेरे सुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे
सीय चलत व्याकुल पुरवासी होहिं सगुन सुभ मंगल रासी
भूसुर सचिव समेत समाजा संग चले पहुचावन राजा
समय विलोकि बाजनै बाजै रथ गज वाजि बरातिन साजे
दशरथ विप्र बोल सब लीन्है दांन मान परि पूरन कीन्हैं
चरन सरोज धूरि धरि सीसा मुदित महीपति पाइ असीसा
सुमिरि गजानन कीन्ह पयाना मंगल......सगुन भये...नाना
दोहा सुर प्रसून बरषहि हरषि करहि अपसरा गान
चले अवधपति अवध पुर...

विशेष ज्ञातव्य—प्रति का लिपिकाल ज्ञात नहीं। पत्र जीर्ण हैं। प्रारंभ के कुछ पत्र तथा अंत के पत्र उपलब्ध नहीं हैं। अंतिम आठ पत्र अर्द्ध-फटे हैं।

मैं अपनी दिसि कीन्ह निहोरा। तिन्ह निज ओर न लाउब भोरा ॥
बायस पलिअहि अति अनुरागा। होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा ॥
(रा० म० पृ० ५०)

मै अपनी दिस कीन निहोरा ॥ तिन्ह जिन और न लागउ भोरा॥
वाइस पाली अति अनुरागा ॥ होइ निरामष कबहु क कागा ॥
(ह० प्र०)

२७. बालकांड। देशी कागज। पत्र—६२। आकार—६½ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१३। परिमाण (छंदों में) २०६३। अपूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

पद सरोज मनोज अरि उर सर्व देव विराजही ।। जे सुनत सुमिरत विमलता मन सकल कलिमल भाजही ।। जो परस मुनि वनिता लहीं गति रही जो पातिक मही ।। मकरंद जिन्हको संभु सुचता अवध सुर वरनई ।। करि मधुप मन मुनि जोग जन जे सई अभिमति गति लहै ।।

विशेष ज्ञातव्य—प्रति खंडित है। प्रारंभ के अधिकांश पत्र लुप्त हो गए हैं। लिपिकाल ज्ञात नहीं है। लिपि यद्यपि नागरी है तथापि कहीं कहीं लिपिकर्ता ने कैथी लिपि की विशेषता को भी ग्रहण कर लिया है, जिससे शुद्ध पाठ नहीं मिल पाता है। पाठांतर विशेष हैं—

भंजौ राम अपुन भव चापू ।। भव भय भंजन नाम प्रतापू ।।
धुव शमाधि लगि जपि हरिनामा ।। पाइिउ अचल अनूपम ठामा ।।
राम नाम नर केहरी कनिक कसिव कलिकाल ।।
जापिक जन प्रहिलाद जिमि पालहि दल सुरसाल ।।

२६. बालकांड। देशी कागज। पत्र (अव्यवस्थित क्रम)—१०५। आकार—१२ इंच लंबाई और ७½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ) —२४। परिमाण—३४६५। अपूर्ण। रूप—प्राचीन (जीर्ण)। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

......चारा ।। विधनषेद मय कलि मल हरनी ।। कर्म कथा रवि नंदन वरनी ।। हरिहर कथा विराजत वैनी ।। सुनत सकल मुद मंगल दैनी ।। वट विश्वास अचल निज धर्मा ।। तीरथु राज समाज सुकर्मा ।। सबहि सुलभ सब दिन सवा देसा ।। सेवत सादार समन कलेसा ।। अकथ अलौकिक तीरथ राउ ।। देइ साद्य फल प्रगट प्रभाउ ।।

दोहा ।। सुन समुझहि सज्जन मुदित मंज्जह अति अनुराग ।।
लहहि चार फल अछत तन साध समाज प्रयाग ।।

चौपही ।। मंजन फल पेषिय ततकाला ।। काक होहि पिक बगउ मराला ।।
सुन अचर्ज करहि जन को ।। सत संगत महिमा नहि गोई ।।
वालमीक नारद घटजौनी ।। निज निज मुखन कही निज हौनी ।।

× × ×

अंत

लीन्ह राय उर लाइ जानुकी मिटी महामरजाद ज्ञान की
समुझावत सब सचिव सयानै कीन्ह बिचार अनवसर जानैं
बारहि बार सुता उर लाई सजि सुंदर पालकी मगाई
दो ॥ प्रेंम बिवस परिवार सब जानि सु लगन नरेस
कुवरि चढ़ाईं पालकिनि सुमिरे सिध्य गनेस ॥ ४२७ ॥
बहुविधि भूप सुता समुझाई नारि धर्म कुल रीति सिषाई
दासी दास दिये बहुतेरे सुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे
सीय चलत ब्याकुल पुरवासी हौहिं सगुन सुभ मंगल रासी
भूसुर सचिव समेत समाजा संग चले पहुचावन राजा
समय बिलोकि बाजनै बाजै रथ गज वाजि बरातिन साजे
दशरथ विप्र बोल सब लीन्है दांन मान परि पूरन कीन्हैं
चरन सरोज धूरि धरि सीसा मुदित महीपति पाइ असीसा
सुमिरि गजानन कीन्ह पयाना मंगल......सगुन भये...नाना
दोहा सुर प्रसून बरषहि हरषि करहि अपसरा गान
चले अवधपति अवध पुर...

बिशेष ज्ञातव्य—प्रति का लिपिकाल ज्ञात नहीं। पत्र जीर्ण हैं। प्रारंभ के कुछ पत्र तथा अंत के पत्र उपलब्ध नहीं हैं। अंतिम आठ पत्र अर्द्ध-फटे हैं।

मैं अपनी दिसि कीन्ह निहोरा। तिन्ह निज ओर न लाउब भोरा ॥
बायस पलिअहिं अति अनुरागा। होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा ॥
(रा० म० पृ० ५०)

मै अपनी दिस कीन निहोरा ॥ तिन्ह जिन और न लागउ भोरा॥
वाइस पाली अति अनुरागा ॥ होइ निरामष कबहु क कागा ॥
(ह० प्र०)

२७. बालकांड। देशी कागज। पत्र—६२। आकार—६½ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१३। परिमाण (छंदों में) २०६३। अपूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

·········रय को वंदिय मलय प्रसंग ॥ १ ॥

दोहा ॥ स्याम सुरभि पय बिसद अति गुनहि करै ते पान
गिरा ग्राम सियराम जस गावहि सुनहि सुजान ॥ २ ॥

चौपही ॥ मनि मानिक मुकता छवि जैसी ॥ अहि गिरि गज सिर सोह न तैसी
त्रप कीरीट तरुणी तनु पाई ॥ लहहि सकल सोभा अधिकाई ॥
तैसहि सुकवि कबित वुधि कहही ॥ उपजहि अनत अनत छवि लहही ॥
भगत हेत विधि भवन त्रिहाई ॥ सुमिरत सादर आवत धाई ॥
राम चरित सर विन अन्हवायै ॥ सो श्रम जाइ न कोट उपायै ॥
कवि कोविद अस हृदय विचारी ॥ गावहि हरि गुन कलिमल हारी ॥
कीन्है प्राकत जन गुन गाना । सिर धुन गिरा लाग पछिताना ॥

× × ×

अंत

नाथ सकल संपदा तुम्हारी ॥ मै सेवक सेवक सुत चारी ॥
करब सदा लरिकन पर छोहू ॥ दरसन देत रहब मुनि मोहू ॥
अस कहि राउ सहित सुत रानी ॥ परवि वचन मुष आव न वानी ॥
दीन्ह असीस विप्र बहु भांती ॥ चले न प्रीति रीति कहि जाती ॥
राम सप्रेम संग सब भाई । आयसु पाइ फिरे पहुचाई ।

॥ दोहा ॥ राम रूप भूपति भगति व्याइ उछाह अनंद ॥
जात सराहत मनहि मन मुदित गाधि कुल चंद ।

चौपही ॥ वामदेव रघुकुल गुर ग्यानी ॥ बहुरि गाध सुत कथा वषानी ॥
सुनि मुनि सुजस मनहि मन राऊ ॥ बरनत आपन पुंन्य प्रभाऊ ॥
बहुरे लोग रजाइसु भयऊ ॥ सुतन समेत त्रपति घर गयऊ ॥
जहँ तहँ राम व्याह सब गावा ॥ सुजस पुनीत लोक तिहु छावा ॥
आये ब्याहि राम घर जबतै ॥ बसै अनंद अवधि सब तबतै ॥
प्रभु विवाह जस भयउ उछाहू ॥ सकहि न बरन गिरा अहि नाहू ॥
कवि कुल जीवन पावन जानी ॥ राम सिया जस मंगल खानी ॥
तिहि तै मै कछु कहा वषा·········

× × ×

विशेष ज्ञातव्य—कागज तथा स्याही की दृष्टि से प्रति १८ वीं शताब्दी की ज्ञात होती है। इस के अधिकांश पत्र अप्राप्य हैं। संशोधन भी किया गया है। पाठांतर बहुत कम है।

मासदिवस कर दिवस भा मरम न जानै कोइ।
रथसमेत रबि थाकेउ निसा कवन बिधि होइ ॥
यह रहस्य काहू नहि जाना। दिनमनि चले करत गुन गाना ॥
(प्र० रा०, पृ० १००)

मास दिवस कर दिवस भा मरम न जानै कोइ।
रथ समेत रवि थकित भय निसा कवनं विधि होइ ॥
यह रहस्य काहू नहि जाना ॥ दिनमनि चले कहत गुन गाना ॥
(इ० प्र०, पत्र ७८)

अयोध्याकांड

२८. अयोध्याकांड। देशी कागज। पत्र—८६। आकार—८४/१० इंच लंबाई और ४६/१० इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१७। परिमाण—१८२८। अपूर्ण। रूप-जीर्ण (प्राचीन)। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १७७७ वि०।

आदि

..........सुंदर सब भाती ॥
कहि न जाऐ कछु नगर विभूति ॥ जनु थेतनीय विरंन्चि करतुति ॥
सब विधि शब पुर लोग सुषारी ॥ रामचंद्र मुष चंद निहारी ॥
मुदित मातु सब शषि शहेली ॥ फलित विलोकि मनोरथ वेली ॥
रामरुप गुन शील शुभाउ ॥ प्रमुदित होहि देषि मुनि राउ ॥
दो० सब के उर अभिलाष अस कहहि मनाइ महेसु।
आपु अछत जुवराज पद रामहि देहु जनेसु ॥ १ ॥
एक वार जानकि शमेता ॥ बैठे प्रभु निज रुचिर निकेता ॥
भुल प्रलंब उर नयन विसाला ॥ पीत बसन तन स्याम तमाला ॥
कोटि मनोंज देषि छबि मोहा ॥ सीता कर चामर वर सोहा ॥
तेहि अवसर रिषि नारद आए ॥ शुर हित लागी विरंचि पठाये ॥

तेज पुंज तन करतल विना ॥ हरि गुन गन गावत लय लीना ॥
देषि राम सहसा उठि धाऐ ॥ करि दंडवत हिद्रय मुनि लाऐ ॥

× × ×

अंत

नहि सीय राम पद पेम अवसि होइ भव रस विरति ३२६ ॥

इति ॥ श्री रामचरित मानसे सकल कलुष विंध्वंसने विमल वैराग्य संपाति जोगो नाम द्वितीय सोपानः समाप्तः शुभमस्तु संवत ॥ १७७७ ॥ वेशाष माशे कृष्णा पक्षे रवीवाशरे दाशी पुस्तक समाप्त शुभमस्तु ॥ राम राम राम राम राम ॥ राम राम राम राम ॥ राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम ।

विशेष ज्ञातव्य—पत्र १, २५, २६—४३, ४६, ५७, ५८, ६७, ७१, ८६, १०४, १०५, ११० लुप्त हो गए हैं। यह प्रति सं० १७७७ की है। लिपिकर्त्ता ने अपने नाम को कहीं उल्लेख नहीं किया है। पत्र १४ पर इतना ही लिखा है कि "अयोध्या के पोथी ब्रह्मचारी जी सोधी"।

२६. अयोध्या कांड। देशी कागज। पत्र—७२। आकार—६$\frac{3}{2}$ इंच लंबाई और ६$\frac{3}{2}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१८। परिमाण—२५६२। अपूर्ण। रूप—प्राचीन—लिपि—नागरी। लिपि-काल—सं० १८३६।

आदि

एकबार जानकी समेता ॥ बैठे प्रभु निज रुचिर निकेता ॥ भुज प्रलंब उर नयन विसाला ॥ पीत वसन तन शाम तमाला ॥ कोटि मनोज देषि छवि मोहा ॥ सीता निकट वाम स्म वर ॥ तेहि ओसर रीष नारद आये ॥ सुरहित लागि विरंचि पठाये ॥ तेज पुंज तन करतल वीनां ॥ हरि गुन गावत अति लवलीनां ॥ देषि राम सहसा उठि धाये ॥ कै दंडवत हृदय मुनि लाये ॥ सादर निज आसन बेठारे ॥ जनक सुता तब चरन पषारे ॥ तेहि चरनोदक भवन सीचावा ॥ जग पावनि हरि सीस चढावा ॥ सुनु मुनि विषय निरति जे प्रानी ॥ हम सारीषे देह अभिमांनी ॥ तिन्ह कौ सत संगति जब होई ॥ करहु कृपा जा कह प्रभु सोई ॥ ताके मुनि नहि भव पुनि आगै ॥ जेहि बिनु हेतु संत प्रिय लागै ॥ तातै नारद मै वडभागी ॥ जद्यपि गृह कुटुंब अनुरागी ॥

दोहा ।। सुनि हरि वचन मधूर प्रिय ।। करि विचार मुनि धीर ।।
पर्म कृपाल लोकहित ।। लगे कहन रघुवीर ।।

चौपाई।। कह मुनि तब महिमा रघुराया ।। मै जानौ तुम्हारी कछु दाया ।।
बचन कहहु प्राकृत की नाई ।। प्रभु यह तुम्हहि सदा चलि आई ।।

× × ×

अंत

पुलक गात हिय सिय रघुवीरू ।। जीह नाम जपे लोचन नीरू ।।
लषन राम सिय कानन बसही ।। भरत भवन बसि तप तन कसही ।।
दोउ दिश समुझि कहत सब लोगू ।। सब विधि भरत सराहन जोगू ।।
सुनि व्रत नेम साध सकुचांही ।। देषि दशा मुनिराज लजांही ।।
परम पुनीत भरत आचरनू ।। मधुर मंजु मृदु मंगल करनू ।।
हरन कठिन कलि कलूष कलेसू ।। महा मोह निसि दलन दिनेसु ।।
पाप पुंज कुंजर मृगराजु ।। समन सकल संताप समाजु ।।
जन रंजन भंजन भव भारू ।। राम सनेह सुधानिधि सारू ।।

छंद ।। सियराम प्रेम पियूष पूरण होत जनम न भरत को ॥ मुनि मन अगम जम निय सम दम बिषम व्रत आचरन को ॥ दुख दाह दारिद दंभ दुषन सुजस मिस अपहरत को ॥ कलिकाल तुलसीदासन्हि हठि रांम सनमुष करत को ॥

सोरठा ॥ भरत चरित करि नेम ॥ तुलसी जो सादर सुनहि ॥ सीय राम पद प्रेम ॥ अवसि होय भवन सस विरति ॥ ३२७ ॥

इति श्री रामचरित्र मानते सकल कलि कलुक विध्वंसने वैष्णावी संपादनी नाम द्वितीय सोपान २

श्र संपूर्ण श्री ॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ रस्तू संमत १८३६ साषे १७०० प्रवर्त्तमान्य मासोत्तमासे चेतत्रमासे कृष्न पक्ष द्वादशी ११ रस मंगलवार गे सरे लीषतें प्रगणे अतराल्या मव ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रति सुस्पष्ट लिपि में है। पत्र १ और ३५ अप्राप्त हैं। इसकी प्रतिलिपि जमना वाई ने कि है। प्रति में क्षेपक कथाओं का भी समावेश है। प्रति संशोधित है। संशोधन हाशिए के ऊपर नीचे बना दिए गए हैं। यत्र तत्र पाठांतर भी मिलता है।

३०. अयोध्याकांड । देशी कागज । पत्र—४५ । आकार—६$\frac{6}{10}$ इंच लंबाई और ४$\frac{6}{10}$ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—९ । परिमाण—१५१६ । अपूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—सं० १८३७ ।

आदि

× × ×

त दोउ भाइ ८२

चौ० तव सुमंत्र नृप वचन सुनाए करि बिनती रथ राम चढाए
चढि रथ सीय सहित दोउ भाई चले हृदय अवधहि सिर नाई
चलत राम लषि अवध अनाथा विकल लोग सब लागे साथा
कृपासिंधु बहु विधि समुझावहीं फिरहि प्रेम बस पुनि फिरि आवहि
लागति अवध भयावनि भारी मानहु काल राति अधिआरी
घोर जंतु सम पुर नर नारी डरपति एकहि एक निहारी
घर मसान परिजन जनु भूता सुत हित मीतु मनहु जम दूता
बागन्ह विटप वेलि कुभिलाहीं सरित सरोवर देषि न जाही
दो०।। हय गय कोटिन्ह केलि मृग पुर पसु चातकी मोर
पिक रथांग सुक सारिका सारस हंस चकोर ८३

× × ×

अंत

दोउ दिसि समुझि कहत सब लोगू सब विधि भरत सराहन जोगू
सुनि व्रत नेम साधु सकुचाही देषि दसा मनिराज लजाही
परम पुनीत भरत आचरनू मधुर मंजु मुद मंगल करनू
हरन कठिन कलि कलुष कलेसू महामोह निसि दलन दिनेसू
पाप पुंज कुंजर मृगराजू समन सकल संताप समाजू
जन रंजन भंजन भव भारू राम सनेह सुधाकर सारू

छंद सियराम प्रेम पियूष पूरन होत जनम न भरत को
मुनि मन अगम जम गोम सम दम विषम व्रत आचरत को
दुष दाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिसि अपहरत को
कलिकाल तुलसी सठहि हठि राम सनमुष करत को
सोरठा भरत चरित करि नेम तुलसी जे सादर सुनहि
सीय राम पद प्रेम अवसि होइ भव रस विरति ३२८

इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल संपादिनी नाम दुतिय सोपान समाप्तः शुभमस्तु संवत् १८३७ मिति फाल्गुन सुदि प्रतिपदायां आदित्य वासरे कास्यांम मध्ये लिष्यते रामदत ब्राह्मण शुभ राम राम राम राम राम राम राम राम ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रति अपूर्ण है । पत्र १—४८ तथा ८६—६६, ६६, ११२, ११५—१३०, १३२, १४७—४८ नहीं हैं । लिपिकाल सं० १८३७ है । लिपिकर्ता रामदत्त ब्राह्मण है, जिसने काशी जी में रहकर प्रति तैयार की थी ।

३१. अयोध्याकांड । देशी कागज । पत्र—७१ । आकार—१२$\frac{२}{१०}$ इंच लंबाई और ५$\frac{६}{१०}$ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)--१३ । परिमाण-- २४२३ । पूर्ण । रूप—जीर्ण । लिपि—नागरी । लिपिकाल --सं० १८६४ वि० ।

आदि

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ अजोध्या कांड लिष्यते ॥ श्लोक ॥ बामांके च विभाति भूधरसुता देवपगामस्तके ॥ भाले बाल विधूर्गले च गरलं यस्यौरासि व्यालराट् ॥ सोयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपसर्वदा ॥ सर्वः सर्वगत शिव सशिनिभ श्री शंकरः पात्रुमां ॥ १ ॥ प्रसन्नताया न गताभिषेकतस्तथा न मम्ले बनबासदुःखतः ॥ मुखांबुज श्री रघुनंदस्य मे सदास्तु सा मंजुल मंगल प्रदा ॥ २ ॥ नीलांबुज स्यामल कोमलांगं ॥ सीता समारोपित बाम भागं ॥ पाणौ महासायक चारुचापं ॥ नमांमि रामं रघुबंस नाथं ॥ ३ ॥ दोहा ॥ श्री गुरु चरन सरोज रज ॥ निज मन मुकुर सुधार ॥ बरनौ रघुपति बिसद जस जो दायक फल चार ॥ १ ॥

चौ०॥ जब तै राम व्याह घर आये ॥ नित नव मंगल मोद बधाये ॥
भुवन चारि दस भूधर भारी ॥ सुकृत मेघ बरषै सुष बारी ॥
रिधि सिधि संपति नदी सुहाई ॥ उमगि अवधि अंबुध कह धाई ॥
......गन पुर नर नारि सुजाती ॥ सुचि अमोल सुंदर सब भांती ॥
कहि न जाइ निज नगर बिभूती ॥.....नियं बिरंचि करतूती ॥
सब बिधि सब पुर लोग सुषारी ॥ रामचंद मुष चंद्र निहारी ॥

× × ×

अंत

सुनि जत नेम साधु सकुचांही ॥ देषि दसा मुनिराज लजांही ॥
परम पुनीत भरत आचारनु ॥ मधुर मंजु मुद ंगल करनू ॥
हरन कठिन कलि कलुष कलेषु ॥ महा मोहनिशि दलन दिनेषू ॥
पाप पुंज कुंजर मृगराजू ॥ समन सकल संताप समाजू ॥
जनरंजन भंजन भव भारू ॥ राम सनेह सुधाकर सारू ॥
छंद ॥ सियरांम पेम पियूष पुरन होत जनम न भरत को ॥
मुनि मन अगम यम नियम सम दम विषम व्रत आचरत को ॥
दुष दाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिस अपहरत को ॥
कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठ राम सनमुष करत को ॥
सोरठा ॥ भरत चरित करि नेम ॥ तुलसी सादर जे सुनहि ॥
सीय राम पद पेम अवसि होइ भव रस विरत ॥ ३२६ ॥
॥ इति श्री राम चरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने अविरल भक्त संपादिनी नाम द्वितीय सोपानं समाप्तं ॥ इति श्री अजोध्याकांड संपूर्णं ॥ संवत् १८६४ का मासोत्तमासे आसाढमासे शुक्ले पक्षे तिथौ नवम्यां सोमवासरे लिषतं ब्राह्मण मगनी लिषायितं बैष्नव मनोहरदास जी तत् सिष्य वैष्नव सेवादास पठनार्थे आत्मकल्याणार्थे ॥ लिषतं बिसाइ मध्ये स्वामी सुषराम जी का स्थान मध्ये ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्रीरामचंद्राय नमः ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति पूर्ण है। लिपिकर्ता मगनी नामक कोई व्यक्ति है। यह प्रति सं० १८६४ में प्रतिलिपि की गई थी। इसी संवत् के मगनी द्वारा प्रतिलिपि किए गये बालकांड, किष्किंधाकांड तथा अरण्यकांड की भी प्रतियाँ उपलब्ध हैं। संभवतः प्रतिलिपिकर्ता ने पूर्ण रामचरितमानस की प्रतिलिपि की थी। पर अन्य कांड उपलब्ध नहीं हैं।

३२. अयोध्या कांड। देशी कागज। पत्र—३३। आकार—१०$\frac{1}{2}$ इंच लंबाई और ५$\frac{1}{2}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१२। परिमाण—७६२। अपूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८८३ वि०।

आदि

॥श्री गणेशाय नमः॥ श्री रामानुंजाय नमः॥ ॥अथ श्री अज्योधाकांड लिख्यतें॥ अस्यांके विभांति॥ भूधर सुतां देवापगे मुस्तके॥ भालें बाल

विधु गले च गरलं ॥ यस्योरसि व्यालरटा ॥ सोयभूति विभूषणां ॥ सुरवरर सर्वाधिपः ॥ सदा सर्वरसर्वगतः ॥ शिव शशी नीभः श्री संकर पातुमः ॥ १ ॥ प्रसन्नतायागनाभिष्येक ॥ तस्तथा न बनबास दुःखतः ॥ मुषांबुज श्री रघुनंदनस्य मे सदास्तु सा मंजुल मंगल प्रद ॥ २ ॥ नीलांबुज स्यांमल कोमलंगं ॥ सीता समारोपीत वांम भागं ॥ पाणौ महासायक चारू चापं ॥ नमांमि रामं रघुवंस नाथं ॥

दोह ॥ श्री गुरु चरन शरोज रज ॥ निज मन मुकर सुधार ॥
वरनउ रघुवर विमल जस । जो दायक फल चार ॥

मध्य

दोहा ॥ सहज सरल रघुवर वचन ॥ कुमती कुटील करी जांन ॥
चलहि जोक जल वक्र गती ॥ जद्यपी सलील समांन ॥

चौ० ॥ विहसी रांनी रांम रुष पाई ॥ बोली कपट सनेह जनाई ॥
सपथ तुम्हारी भरत की आंनां ॥ हेतु न दूसर मैं कछु जांनां ॥
तुम्हु अपराध जोग नहि ताता ॥ जननी जनक बंधु सुष दाता ॥
रांम सत्य सब जो कछु कहउ ॥ तुम्ह पीतु मातु वचन रत अहउ ॥
पीतुहि बुजाई कहउ वलि सोई ॥ चौथे पन जेहि अजस न होई ॥
तुम्ह सम सुअन सुक्रत जैहि दीने ॥ उचीत न तासु निरादर कीनें ॥
लागहि कुमुष वचन सुभ केसैं ॥ मगहि गयादिक तीरथ जैस ॥

अंत

चौ० ॥ विनती भूप कीन्ह जेही भांती आरत प्रीती ना सो कहि जाती ॥
पीतु संदेस सुनी क्रीपा नीधांना ॥ सीयेहि दीन्ह सीष कोटी वींधांनां ॥
सासु ससुर गुरु प्रीये परिवारू ॥ फीरहु तो मीटहि सबके दूष भारू ॥
सुनि पती वचन कहती वैदेही ॥ सुनहु प्रांनपती परम सनेह ॥
प्रभु करुनामये परम वीवेकी ॥ तनु तजी छाइ रहई कीमी छेकी ॥
प्रभा जाही कांहा भानु वोहाई ॥ कहा चंद्र की चंद तजी जाही ॥
पतिहि प्रेम वस विनये सुनाई ॥ कहनी सचोव सन गीरा सुहाई ॥
तुम्ह पीतु ससुर सरिस हितकारी ॥ उतरु देहु फीरि अनुचीत भारी ॥

दोहा ॥ आरत वस सनमुष भयेउ वीलग न मांनव तात।
आरज सुत पद कमल वीनु। बादि जहा लगी नात॥
चौपाई ॥ पीतु वी........

विशेष ज्ञातव्य—प्रति अधूरी लिखी गई है। प्रारंभ के १ पत्र से लेकर ३४ पत्र हैं जिनमें ३३ वाँ पत्र उपलब्ध नहीं।

३३. अयोध्याकांड पत्र—८३। अकार—१३½ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१३। परिमाण—२५६३। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि--नागरी। लिपिकाल—सं० १८८३ वि०।
आदि

श्री रामायनम ।। श्री गणेशायनम
।।श्लोक।। नीलांबुजश्यांमलकोमलांगो ।। सीता समरोपतिवांमभाग़े ।।
पानै महसायकैचारुचापं ।। नमामि रामं रघुवंशनाथं ।। १ ।।
जन्माय वसव विस्वनाथं ।। माषिलंब्रह्मादि देवाशुरा ।।
जन्मत्यामृषैवभातुमा ।। सकलं राज्ये कथा हेरभृम ।। २ ।।
।। दोहा ।।
श्री गुर चरन सरोज रज निज मनु मुकर सुधारि ।।
वरनउ रघुवर विमल जसु जो दाइक फल चारि ।।
।। चौपई ।।
जवते रामु व्याहि घर आये ।। नित नव मंगल मोद वधाए ।।
भुवन चारिदस भूधर भारी ।। सुकृत मेघ वरषहि सुष वारी ।।
रिधि सिधि संपति नदी सुहाई ।। उमगि अवधि अंबुध कहुँ आई ।।
मनि गन पुरनर नारि सुजाती ।। सुचि अमोल सुंदर बहु भाती ।।
कहि न जाइ कछू नगर बिभूती ।। जनु विरंचि विरची करतूती ।।
सब बिधि सव पुर लोग सुषारी ।। रामचंद्र मुष चंद्र निहारी ।।
मुदित मातु सव सषी सहेली ।। फलित विलोकि मनोरथ वेली ।।
राम रूप गुन सील सुभाऊ ।। प्रमुदित होइ देषि सुनि राऊ ।।
अंत

॥ छंद ॥
सिय राम प्रेम पिउष पूरन होत जन्म न भरत कौ ।।
मुनि मन अगम अरु नेम सम दम विषम वृत आचरत कौ ।।

दुष दाहु दारिद दंभ दूषन सुजस मिस अपहरत को ॥
कलिकाल तुलसी सठनि हठि करि राम सनमुष करत को ॥

सोर्ठा ॥

भरत चरित करि नेमु तुलसी जोसा जो सादर सुनहिं ॥
सिया राम पद प्रेमु अवसि होइ भव रस विरति ॥

इति श्री रामचरित्रमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विमल बैराग्य संपादिनी नाम अविरल भक्तिदातमं रामाइनि कौ अजुध्याकांड द्वतीय सोपांन समातम् ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्यांणमस्तु ॥ शुभंभुवात् ॥ श्री राम जी ॥ संवत् ॥ १८ ॥ ८३ ॥ मीती अगहन वदी ॥ ७ ॥ सनिवासरां । शुभंसुथानवयां नौपारारिषी पठनार्थं चिरंजीव लाला जीतमल ॥ नृमलरांम भट्ट ॥ वाचै विचारै राम राम नमस्कार ॥ १ ॥

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल सं० १८८३ वि० है। प्रति पूर्ण है। अनेक स्थलों पर लिपिकर्त्ता के दोष से अशुद्धियाँ हुई हैं। श्लोक में भूलें और छूटें हैं।

३४. अयोध्याकांड । देशी कागज । पत्र—२१२ । आकार—९½ इंच लंबाई और ६ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—१५ । परिमाण छंदों में—२८३४ । पूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि—कैथी । लिपिकाल—सं० १८९४ वि० ।

आदि

श्री गनेश जी सदा सहाए
श्री पोथी अयोध्याकांड का :

दोहा

श्री गुरु चरन सरोज रज : नीज मन मकुर सुधारी
वरनो रघुबर बीमल जस : जो दाएक फल चारी

– चौपाई –

जब ते राम ब्याही घर आए । नीती नव मंगल मोद बधाए
भुवन चारी दस भुंधर धारी । सुक्रीत मेघ बर्षही सुची बारी

रीध सीध संपती नदी सोहाइ। उमगी अवध अंबुध कह धाइ
मनी गन पुर नर नारी सुजाती। सुची अमोल सुंदर सब भांती
कही न जाइ कछु नग्र बीभुती। जनु एतनी बीरंची करतुती
सब बीधी सब पुर लोग सुषारी। रामचंद्र मुष चंद्र सो नीहारी
मुदीत मातु सब सषी सहेली। फुलित बीलोकी मनोरथ बेली
रामचंद्र गुन सील सुभाउ। प्रमुदीत होही देषी सुनी राउ

अंत

पुलकी गात हीय सीय रघुबीरु। जीह नाम जपी लोचन नीरु
लषन राम सीय कानन बसही। भरत भवन बसी तप तन कसही
दोउ दीस समुझी कहत सब लोगु। सब बीधी भरत सराहन जोगु
सुनी ब्रत नेम साधु सकुचाही। देषी दशा मुनीराज लजाही
परम पुनीत भरत आचरनु। मधुर मंजु मुद मंगल करनु
हरन कठीन कली कलुष कलेसु। माहा मोह नीसी दलन दीनेसु
पाव पुंज कुंजर म्रीगराजु। समन सकल संताप समाजु
जन रंजन भंजन भव भारु। राम सनेह सुधाकर सारु

छंद

सीय राम प्रेम पीउष पुरन होत जनम न भरत को
मुनी मन अगम जम नीयम सम दम : बीषम व्रत आचरत को
दुष दाह दारीद दंभ दुषन : सुजस मीस अपहरत को
कलीकाल तुलसी से सठन हठी : राम सन्मुष करत की

सोरठा

भरथ चरीत करी नेम : तुलसी जे सादर सुनहीं
सीया राम पद प्रेम : अवसी होइ भौरत बीरती

इति श्री रामचरीत्रेमानसे सकल कलीकलुष बीधंसने बीमल बैराग्य संपादीनो नाम दुतीअ सोपान अजोध्या कांड रामाएन कीत तुलसीदास भाषा समाप्त : संबत १८६४ मी : पुस सुदी एबार सुक के तइआर भआ दसषत नन्हकुलाला काएस्थ मोकाम गउरीगंज मे लडीका पढावते है।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ पूर्ण है। लिपि कैथी है। लिपिकाल संवत् १८६४ वि० है। प्रारंभिक श्लोक नहीं है। क्षेपकों का समावेश है। पाठांतर भी है।

३५. अयोध्याकांड । देशी कागज । पत्र — ११० । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)— २५ । परिमाण (छंदों में)—२४०६ । पूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि—कैथी । लिपिकाल—सं० १६१२ वि० ।

आदि

श्री राम जी सदा सहाए रहै

अथ अस्लोकः । बामांके बीभाची भुधर सुता देवाऐगा मस्तकेः ।।
भाले वाल बीधुगले च गरलं जस्योरशी व्यालराटु
शोयंम भुती बीभुखराः सुर वर सरवांवीप शरवदा
शर्व गची शीवः शशिनीम श्री शंकरः प्रातु माः
प्रस्नचायां न गती भीषेकतः तथा न ल्पे वनवास दुखत
मुखांमबुज श्री रघुनंदनंस्य मे स्वदास्तु शां मंजुल मंगल प्रदाः।।२
नीलांबुब स्यामल कोमलांगः सीता समारोपीत बाम भांगं
पाणौ महा शाऐक चारु चांपंगः नमामी रामं रघुवंस नाथां।।३

।।दोहा।। श्री गुरु चरन सरोज रज : नीज मन मुकुर सुधारि
वरनौ रघुवर वीमल जस : जो दाऐक फल चारि
जवते राम वीआह घर आऐ नीत नव मंगल मोद वधाऐ
भुअन चारी दस भुंधर भारी शुक्रीत मेघ बरखही वर वारी
रीधी शी संपती नदी सोहाइ उमगी अवध अंबुध कह जाइ
मनी गन पूरनर नारी सुजाती शुची अमोल सुंदर सब भाती

अंत

छंद

सीय राम प्रेम पीउख पुरन होत जन्म न भरत को :
मुनी मन अगम जम नियम सम द वीखम व्रत अचरत को :
दुख दाह दारीद दंभ दुखन सुजमीस अपहरत को :
कलीकाल तुलसी से स सो सठन्हो हठी राम सनमुख करत को :

दोहा

भरत चरित करी नेम तुलसी जे सादर सुनही
सीआ राम पद प्रेम अवसो होइ भव रत बीरती

इति श्री राम चरीत्ते मानसे सकल कली कलुष बीधंसनो बीमल वैराग्य संपादीनो नाम दुतीअ सोपान अजोध्या कांड रामाऐन तुलसीदास

रीध सीध संपती नदी सोहाइ । उमगी अवध अंबुध कह धाइ
मनी गन पुर नर नारी सुजाती । सुची अमोल सुंदर सब भांती
कही न जाइ कछु नग्र बीभुती । जनु एतनी बीरंची करतुती
सब बीधी सब पुर लोग सुषारी । रामचंद्र मुष चंद्र सो नीहारी
मुदीत मातु सब सषी सहेली । फुलित बीलोकी मनोरथ बेली
रामचंद्र गुन सील सुभाउ । प्रमुदीत होही देषी सुनी राउ

अंत

पुलकी गात हीय सीय रघुबीरु । जीह नाम जपी लोचन नीरु
लषन राम सीय कानन बसही । भरत भवन बसी तप तन कसही
दोउ दीस समुझी कहत सब लोगु । सब बीधी भरत सराहन जोगु
सुनी ब्रत नेम साधु सकुचाही । देषी दशा मुनीराज लजाही
परम पुनीत भरत आचरनु । मधुर मंजु मुद मंगल करनु
हरन कठीन कली कलुष कलेसु । माहा मोह नीसी दलन दीनेसु
पाव पुंज कुंजर म्रीगराजु । समन सकल संताप समाजु
जन रंजन भंजन भव भारु । राम सनेह सुधाकर सारु

छंद

सीय राम प्रेम पीउष पुरन होत जनम न भरत को
मुनी मन अगम जम नीयम सम दम : बीषम व्रत आचरत को
दुष दाह दारीद दंभ दुषन : सुजस मीस अपहरत को
कलीकाल तुलसी से सठन हठी : राम सन्मुष करत की

सोरठा

भरथ चरीत करी नेम : तुलसी जे सादर सुनहीं
सीया राम पद प्रेम : अवसी होइ भौरत बीरती

इति श्री रामचरीत्रेमानसे सकल कलीकलुष बीधंसने बीमल बैराग्य संपादीनो नाम दुतीअ सोपान अजोध्या कांड रामाएन क्रीत तुलसीदास भाषा समाप्त : संबत १८६४ मी : पुस सुदी एबार सुक के तइआर भआ दसषत नन्हकुलाला काएस्थ मोकाम गउरीगंज मे लडीका पढावते है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ पूर्ण है । लिपि कैथो है । लिपिकाल संवत् १८६४ वि० है । प्रारंभिक श्लोक नहीं है । क्षेपकों का समावेश है । पाठांतर भी है ।

३५. अयोध्याकांड । देशी कागज । पत्र – ११० । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—२५ । परिमाण (छंदों में)—२४०६ । पूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि—कैथी । लिपिकाल—सं० १६१२ वि० ।

आदि

श्री राम जी सदा सहाए रहै

अथ अस्लोकः । बामांके बीभाची भुधर सुता देवाऐगा मस्तकेः ॥
भाले वाल बीधुगले च गरलं जस्योरशी व्यालराटु
शोयंम भुती बीभुखराः सुर वर सरवांबीप शरवदा
शर्व गची शीवः शशिनीम श्री शंकरः प्रातु माः
प्रस्नचायां न गती भीषेकतः तथा न ल्पे वनवास दुखत
मुखांमबुज श्री रघुनंदनंस्य मे स्वदास्तु शां मंजुल मंगल प्रदाः॥२
नीलांबुज स्यामल कोमलांगः सीता समारोपीत वाम भांगं
पाणौ महा शाऐक चारु चांपंगः नमामी रामं रघुवंस नाथां॥३

॥दोहा॥ श्री गुरु चरन सरोज रज : नीज मन मुकुर सुधारि
वरनौ रघुवर वीमल जस : जो दाऐक फल चारि
जवते राम बीआह घर आऐ नीत नव मंगल मोद बधाऐ
भुअन चारी दस भुंवर भारी शुक्रीत मेघ बरखही वर वारी
रीधी शी संपती नदी सोहाइ उमगी अवध अंबुध कह जाइ
मनी गन पूरनर नारी सुजाती शुची अमोल सुंदर सब भाती

अंत

छंद

सीय राम प्रेम पीउख पुरन होत जन्म न भरत को :
मुनी मन अगम जम नियम सम द वीखम व्रत अचरत को :
दुख दाह दारीद दंभ दुखन सुजमीस अपहरत को :
कलीकाल तुलसी से स सो सठन्हो हठी राम सनमुख करत को :

दोहा

भरत चरित करी नेम तुलसी जे सादर सुनही
सीआ राम पद प्रेम अवसो होइ भव रत बीरती

इति श्री राम चरीत्ते मानसे सकल कली कलुष बीधंसनो बीमल वैराग्य संपादीनो नाम दुतीअ सोपान अजोध्या कांड रामाऐन तुलसीदास

कीत संपुरनः जो देखा सो लीखा सुभमस्तु : श्री संवत १६१२ मीती सावन सुदी १० दसमी के तइग्रार भए ग्रा पहर दीन रहते सीताराम जी की जै पंडीत जन से बीनती मोरी टुटल ग्रछुर लेव सब जोरी

बिशेष ज्ञातव्य—ग्रत्तर सुस्पष्ट और साफ हैं। स्थान स्थान पर क्षेपक भी हैं। पाठांतर विशेष है। बीच बीच में कहीं कहीं कुछ ऐसी भी पंक्तियाँ हैं जो प्रकाशित रामचरित मानस में नहीं हैं।

पाठांतर—भरत मातु मह गइ बीलखानी। का ग्रनमानी रहसी कह रानी॥
(ह० प्र०)

भरत मातु पहिं गइ बिलखानी। का ग्रनमनि हसि कह हँसि रानी॥
(ना० प्र० सभा काशी)

२६. अयोध्याकांड। देशी कागज। पत्र—६५। आकार—११ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१५। परिमाण छंदों में—२४६६। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—संवत् १६१४ वि०।

आदि

श्रीमते रामानुजाय नमः॥

श्लोक॥ वामाङ्के च विभाति भूधर सुता देवापगा मस्तके भाले वाल विधुर्गले च गरलं यस्योरसी ब्यालराट्॥ सोयं भूति विभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा सर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्री शंकरः पातु मां॥ १॥
प्रसन्नता या न गताभिषेकतः तथा न मन्ये वन दुःख वासत॥
मुखाम्बुजः श्री रघुनंदनस्य मे सदास्तु सा मंजुल मंगलप्रदा॥ २॥
नीलाम्बुज श्यामल कोमलांगं सीता समारोपित वाम भागं॥
पाणौ महासायक चारु चापं नमामि रामं रघुवंश नाथम्॥ ३॥

॥ दोहा॥ श्री गुरु चरन सरोज रज निज मन मुकुर सुधारि॥
वरनौ रघुवर विमल जस जो दायक फल चारि॥ १॥

चौ०॥ जबते राम व्याहि घर आए॥ निति नव मंगल मोद बधाए॥
भुवन चारिदस भूधर भारी॥ सुकृत मेघ वरषहिं सुष वारी॥
रिधि सिधि संपित नदी सुहाई॥ उमगि अवध अंबुधि कह आई॥
मनिगन पुरनर नारि सुजाति॥ सुचि अमोल सुंदर सम भाँती॥
कहि न जाइ कछु नगर विभूती॥ जनु एतनीं विरंति करतूती॥
सभ विधि सभ पुर लोग सुषारी॥ रामचंद्र मुष चंद निहारी॥
मुदित मातु सब सषी सहेली॥ फलित विलोकि मनोरथ वेली॥
राम रूप गुण सील सुभाऊ॥ प्रभुदित होहि देषि सुनि राऊ॥

अंत

चौ सचिव सुसेवक भरत प्रबोधा। निज निज काज पाइ सिष सोधे ॥
पुनि सिष दीन्ह बोलि लघु भाई। सौपी सकल मातु सेवकाई ॥
भूसुर बोलि भरत कर। करि प्रनाम वर विनय बहोरी ॥
ऊच नीच मध्यम भल पोचू। आयसु देव न करब संकोचू ॥
परिजन पुरजन प्रजा बोलाए। सवाधान करि सुबस बसाए ॥
सानुज गेए गुर गेह बहोरी। करि दंडवत कहत करजोरी ॥
आयसु होय त रहेउ सनेमा। बोले मुनि तन पुलक सप्रेमा ॥
समुझव कहब करब तुम जोई। धर्म सार जग होइहि सोई ॥

दोहा ॥ सुनि सिष पाइ असीस बड गनक बोलि दिन साधि ॥
सिंहासन प्रभु पादुका बैठारे निरुपाधि ॥ ३१७ ॥

चौपाई ॥ राम मातु गुरु पद सिर नाई। प्रभु पद पीठि रजायसु पाई ॥
नंदि ग्राम करि पर्ण कुटिरा। कीन्ह निवास धर्म धुर धीरा ॥
जटा जूट सिर मुनि पट धारी। महि षनि कुस साँथरी सवारी ॥
मन क्रम वचन तजे तृण तूरी। ....
अवध राज सुर राज सिहाही। दशरथ धन लषि धनद लजाही
तेहि पुर बसत भरत बिनु रागा। चंचरीक जिमि चंपक बागा ॥
रमा बिलास राम अनुरागी। तजन वमन जिमि जन बड भागी

दोहा ॥ राम प्रेम भाजन भरत बडी न एइ करतूति ॥
चातक हंस सराहियेत टेक बिबेक बिभूति ॥ ३१८ ॥

चौ० । देह दिनहु दिन दूबरि होई ॥ बढे तेज बल मुष छवि सोई ॥
निति नव राम प्रेम पद प्रीना ॥ बढत धर्म दल मन न मलीना ॥
जिमि जननिघटत सरद प्रकासे ॥ विलसत वैतस बनज बिकासे ॥
सम दम संजम नियम उपासा ॥ नषत भरतहिय विमल अकासा ॥
ध्रुब विस्वास अचल राकासी ॥ स्वामि सुरति सुर बिथि विकासी ॥
राम प्रेम बिधु अचल अदोषा ॥ सहित समाज सोह निति चोषा ॥
भरत रहनि समुझनि करतूती ॥ भक्ति विरति गुन विमल बिभूती ॥
बरनत सकल सुकवि सकुचाही ॥ सेष गनेस गिरा गमि नाही ॥

दोहा ॥ निति पूजत प्रभु पावरी प्रीति न हृदय समाति ॥
मागि मागि आयसु करत राज काज वहु भाँति ॥ ३१९ ॥

चौ० ॥ पुलक गात हिय सिय रघुबीरू ॥ जीह नाम जपु लोचन नीरू ॥
लषन राम सिय कानन वसहि ॥ भरत भवन बसि तप तन कसहि ॥
दोउ दिसि समुझि कहत सभ लोगू ॥सभ बिधि भरत सराहन जोगू ॥
सुनि व्रत नेम साधु सकुचाही ॥ देषि दसा मुनिराज लजाही ॥
परम पुनीत भरत आचरनू ॥ मधुर मंजु मुद मंगल करनू ॥
हरन कठिन कलि कलुष कलेसू ॥ महामोह निसि दलन दिनेसू ॥
पाप पुंज कुंजर मृगराजू ॥ समन सकल संताप समाजू ॥
जन रंजन भंजन भव भारू ॥ राम सनेह सुधाकर सारू ॥

छंद ॥ सियराम प्रेम पयूष पूरन होत जन्म न भरत को ॥
मुनि मन अगम यम नियम सम दम विषम व्रत आचरत को ॥
दुख दाह दारिद दंभ दूषन सुजसु मिषु अपहरत को ॥
कलि काल तुलसी से सठहि हठि राम सन्मुख करत को ॥ १४ ॥

सोरठा ॥ भरत चरित करि नेम तुलसी जे सादर सुनहि ॥
सीय राम पद प्रेम अवसि होइ भव रस विरस ॥ २० ॥

इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुषविध्वंसने विमल भक्ति विज्ञान संपादिनी नाम अयोध्याकांड रमायण द्वितीय सोपान श्री गोसाई तुलसीदास कृत संपूर्णम् ॥ सम्वत् ॥ १६१४ ॥ फाल्गुन कृष्ण द्वितीया सुभ नक्षत्र रविवार ॥ द्वितीय कांड रामायण पोथी भइ तेयार ॥ १ ॥ दशषत रामशरण रामानुज दास ॥ पदक्षर पदभ्रष्ट मात्रा हीने तु यद्भवेत् ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देव कैस्य वै निश्चलं मनः ॥ श्री सुभ मस्तु ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति सुस्पष्ट और साफ अक्षरों में लिखी गई है। प्रतिलिपिकर्ता कोई रामशरण जी हैं। प्रतिलिपिकार ने लंकाकांड को छोड़कर बाकी ६ कांडों की प्रतिलिपि की थी, जो इसी प्रति में है और उसका विवरण अलग अलग लिया गया है। आए हुए छंदों के नाम भी निर्देशित हैं। कुछ शब्दों को मिटा दिया गया है।

पाठांतर भी विशेष स्थानों पर मिलता है। दो एक पाठांतर द्रष्टव्य हैं—
देह दिनहु दिन दूवरि होई ॥ वढे तेज वल मुष छवि सोई ॥ (ह० प्र०)
देह दिनहु दिन दूबरि होई ॥ घटइ तेजु बलु मुख छवि सोई ॥ (प्र० मानस)
सौपि सचिव गुरु भरतहि राजू ॥ तिरहुति चले साज सभ साजू ॥ (ह० प्र०)
सौंपि सचिव गुरु भरतहि राजू ॥ तेरहुरि चले साजि सबु साजू ॥
(प्र० मानस)

३७. अयोध्याकांड। देशी कागज। पत्र—६१। आकार—१२$\frac{8}{10}$ इंच लंबाई और ७$\frac{3}{10}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—१७। परिमाण (छंदों में)—३०६६। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

श्रीमते रामानुजाय न्मै ॥ अथ रस अजोध्या कांड लीष्यते ॥ श्री महागणाधिपतेन्मै ॥ वामांके च विभाति भूधर सुता ॥ देवापगा मस्तके ॥ भाले बाल बिधर्गले च गरलं ॥ यस्योरसि व्यालराट् ॥ सोयं भूतिविभूषणः सुरवः ॥ सर्वाधिपः ॥ सर्वदा सर्व सर्वगतः शशिनिभः ॥ श्री शंकरः पातु मां ॥ १ ॥ प्रसन्नता यो न गतोभिषेकतस्तथा न मम्ले बनवास दुखतः ॥ मुखांबुजः ॥ श्री रघुनंदस्य मे सदा स्वयौ ॥ मंजुल मंगलप्रद ॥ २ ॥ नीलांबुज श्यामल कोमलांगं ॥ सीता समारौपित बाम भागं ॥ पाणौ महाशायक चारु चापं ॥ नमामि रामं रघुवंश नाथं ॥ ३ ॥

दोहा ॥ श्री गुरु चरन सरोज रज ॥ निज मन मुकर सुधार ॥
बरनौ रघुबर बिमल जस ॥ जो दायक फलचार ॥ १ ॥

चौपई ॥ जवतें ब्याहि रांम घरि आए। नित नव मंगल मोद बधाए ॥
भुवन चारिदश भूधर भारी। सुकृत मेघ वरषहि सुष वारी ॥

अंत

परम पुनित भरत आर्चनू ॥ मधुर मंजु मुद मंगल करनू ॥
हरन कठिन कलि कलुष कलेसू ॥ महामोह निसि दलन दिनेसू ॥
पाप पुंज कुंजर मृगराजू ॥ समन सकल संताप समाजू ॥
जन रंजन भंजन भव भारू ॥ राम सनेह सुधाकर सारू ॥

छंद ॥ सिय राम प्रेम पिउष पुरन ॥ होत जन्म न भरत को ॥
मुनि मन अगम नियम सम ॥ दम विषम व्रत आचरत को ॥
दुष दाह दारिद दंभ दूषन ॥ सुजस मिस अपहरत को ॥
कलिकाल तुलसी से सठहि ॥ हठि राम सनमुष करत को ॥

सोरठा ॥ भरत चरित कर नेम। तुलसी सादर जे सुनहिं ॥
सीय राम पद प्रेम अवसि होई भव रस विरति ॥ ३३७ ॥

इति श्री रामचरित्रे मानसे सकल कलि कलुष वि ॥ ध्वंसने विमल वैराग्य संपादिनी नाम द्वितीयो सोपान ॥ अजोध्याकांड संपूर्ण ॥ श्री राम ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति पूर्ण है। लिपिकाल ज्ञात नहीं। कागज और स्याही के आधार पर प्रति १६ वीं शताब्दी की जान पड़ती है। प्रति का महत्व इतना ही है कि अक्षर सुस्पष्ट और साफ हैं जिससे पढ़ने में कठिनाई नहीं होती।

३८. अयोध्याकांड। देशी कागज। पत्र—५४। आकार—११ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—२२। परिमाण—२०७६। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

श्री गणेशायनमः

श्लोक

वामांके च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्यौरसि व्यालराट्
सोयं विभूति विभूषण: सुरवरस्सर्वाधिपस्सर्वदा
सोयं राम सदा प्रिय सुखकरं श्री शंकर पातु मां ॥ १ ॥
प्रसन्नता या न गताभिषेकतःस्तथा न ममले बनवास दुःखतः
नीलांबुजस्यामल कोमलांगं सीता समारोपितवामभागं
पाणौ महाशायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथं ॥ २ ॥

दोहा

श्री गुरु चरण सरोज रज निज मन मुकुर सुधारि
बरणौं रघुबर विमल यश जो दायक फल चारि ॥ १ ॥

चौपाई

जबतें राम व्याहि घर आये नित नव मंगल मोद बधाए
भुवन चारिदश भूधर भारी सुकृत मेघ बरषहिं सुख वारी
ऋधि सिधि सम्पति नदी सुहाई उमगि अवध अंबुधि कहँ आई
मणि गण पुर नर नारि सुजाती शुचि अमोल सुंदर सब भाँती

अंत

॥ दोहा ॥

सरनि सरोरुह जल बिहग कूजत गुञ्जत भृंग
बैर बिगत बिहरत बिपिन मृग बिहंग बहुरंग

चौपाई

कोलह किरात भिल्ल बन बासी मधु शुचि सुंदर स्वादु सुधा सी
भरि भरि पर्ण कुटी रचि रूरी कंद मूल फल अंकुर जूरी
सबहिं देहिं करि बिनय प्रणामा कहि कहि स्वाद भेद गुणनामा
देहिं लोग बहु मोल न लेहिं फेरत राम दोहाई देहीं
कहहिं सनेह मगन मृदु बानी मानत साधु प्रेम पहिचानी
तुम सुकृती हम नीच निषदा पावा दरशन राम प्रसादा
हमहिं अगम अति दरश तुम्हारा जस मरु धरणि देवसरिधारा
राम कृपाल निषाद नेवाजा परिजन प्रजा चहिय जस राजा

दोहा

यह जिय जानि सकोच तजि करिय छोह लषि नेहु
हमहिं कृतारथ करण लगि फल तृण अंकर लेहु

चौपाई

तुम प्रिय पाहुन बन पगु धारे सेवा योग न भाग्य हमारे
देब कहा हम तुमहिं गोसाँई इंधन पात किरात मिताई

यह हमार अति ब...

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ लीथो में मुद्रित है। इसमें शब्दों को सुसंस्कृत रूप देने का प्रयास किया गया है। चारिदस—'चारिदश', रिधि—'ऋधि' संपति', मनिगन—'मणिगण', चरन रेनु—'चरण रेणु', नरेस 'नरेश',—जसु—'यश', महिपमनि—'महिपमणि', मृदुबानी—'मृदुबाणी', सिव—'शिव' आदि। स्पष्ट है कि मानस के मूल शब्दों को संपादक ने अपने ढंग से बदल कर रखा है। ग्रंथ का अंतिम भाग खंडित है। मुद्रण-काल का पता नहीं चला।

दशरथ की सभा, मंथरा कैकेयी, कोप भवन (तीन चित्र), लक्ष्मण, रामचंद्र और सीता, कोप भवन, अयोध्या (वशिष्ठ, रामचंद्र), वन गमन, निषाद, केवट, भरद्वाज, पुरवासी, वाल्मीकि, पुरजन, सुमंत, दशरथ, शत्रुघ्न, भरत, कैकेयी कौशल्या, मंथरा, वशिष्ठ भरत, निषाद भरत, भरद्वाज, भरत, चित्रकूट, निषाद भरत, शत्रुघ्न, चित्रकूट भरत रामचंद्र और चित्रकूट में रामचंद्र, और वशिष्ठ के भावभरे चित्र हैं।

३६. अयोध्याकांड। देशी कागज। पत्र—१६३। आकार—६ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१८। परिमाण (छंदों में)—२६०५। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—कैथी। लिपिकाल अज्ञात।

आदि

श्री गनेसाए नम्हः श्री अजोध्याकांड रमाएन क्रीत तुलसीदास रमाएन

श्री गुर चरन सरोजरज निज मन मकुर सीधारी
बरनो रघुबर बीमल जस जो दाएक फल चारी
जाही सुमीरे सीधी होए गनीनाएक करीवर बदनं
करहु अनुग्राह सोइ बुधी रासी सुभु गुन सदनं
मुक होए बाचाल पंगु चढ़े गीरीवर गहंनं
जासु क्रीपाल देआल द्रवो सकल कलीमल हरनं
नील सरोरहु स्याम करहु क्रीपा मरदन म्हनं
कुंद इंदु सम देब उमा रबन करुनाएतनं
जाही दीन प्रनेह करहु क्रीपा मरदंग महनं
बंदो मुनी पद कंज रामाएन जीन्ह नीमयो

अंत

सानुज सीअ समेत प्रभु : राजत प्रन कुटीर
भग्ती ग्यान बैराग जनु : सोहत धरे सरीर

मुनी महीसुर गुर भरथ भुआलु, राम बीरह सब साज बेहारु
प्रभु गुन ग्यान गुनत मन माही सब चुपचाप चले मग जाही
जमुना उतरी पार सब भैउ, सो बासर बीनु भोजन गैउ
उतरी देवसरी दुसर वासु, राम सषा सब कीन्ह सुपासु
सइ उतरी गोमती अन्हाए, चौथे देवस अवधपुर आए

× × ×

विशेष ज्ञातव्य—पत्र सं० २, १८६, १८७ और अंतिम पत्र सं० १६३ के बाद के शेष पत्र खंडित हैं। खंडित होने के कारण लिपिकाल का पता नहीं चलता।

प्रथम पत्र में बाल कांड के आदि के छंद जुड़े हुए हैं। जिससे ग्रंथ अशुद्ध लग रहा है। पाठांतर तो हैं ही।

४०. अयोध्या कांड । देशी कागज । पत्र—५६ । आकार—६$\frac{६}{१०}$ इंच लंबाई और ४$\frac{६}{१०}$ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—८ । परिमाण (छंदों में)—८२६ । खंडित । रूप—प्राचीन ; लिपि—नागरी । लिपिकाल—अज्ञात ।

आदि

···धियः सर्बदा सर्व सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्री संकर । पातु मां
प्रसन्नतायां न गताभिषेकतः तथातमल्पे वनबास दुःखतः
मुखांबुज श्री रघुनंदस्य मे सदास्तु सा मंजुल मंगल प्रदा
नीलांबुज स्यामल कोमलांगं सीता समारोपित वाम भागं
पाणौ महा सायक चारु चापं नमामि रामं रघुवंश नाथं

दोहा ।। श्री गुरु चरण सरोज रज निज मनु मुकुर सुधारि
वरणौ रघुवर विमल जस जो दायक फल चारि १ ।।
जबते राम ब्याह घर आए नित नव मंगल मोद बधाए
भुवन चारि दस भूधर भारी सुकुत मेघ बरषहि सुष वारी
रीधि सिधि संपति नदी सुहाई उमगि अवध अंबुधि कहु आई
मणि गण पुर नर नारि सुजातीं सुचि अमोल सुंदर सब भाती
कहि न जाइ कछु नगर विभूती जनु इतनिय बिरंचि करतूती
सब बिधि सब पुर लोग सुषारी राम चंद्र मुष चंद निहारी
मुदित मातु सब सषी सहेली फलित विलोकि मनोहर वेली

अंत

धरि धीरजु उठि बैठ भुआलू कहु सुमंत्र कहं राम कृपालू
कंहं लषनु कहं राम सनेही कहं प्रिय पुत्रबधू वैदेही
विलपत राउ विकल बहु भांती भइ जुग सरिस सिराति न राती
तापस अंध स्राप सुधि आई कौसल्यिहि सब कथा सुनाई
भयउ विकल बरनत इतिहासा राम रहित धिक जीवन आसा
सो तनु राषि करबि मैं काहा जेहि न प्रेम पनु मोर निवाहा
हा रघुनदन प्रान पिरीते तुम्ह बिनु जिअत बहुत दिन बीते
हा जानकी लषन हा रघुवर हा पितु हित चित चातक जलधर

दोहा राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम
तनु परिहरि रघुवर विरह राउ गये सुरधाम १४४

चौ जिअन मरन फल दसरथ पावा अंड·········

विशेष ज्ञातव्य—प्रति खंडित है। प्रथम तथा १८-३७, ४१-४४, ४८ और ८५ के बाद के पत्र उपलब्ध नहीं हैं। लिपिकाल भी नहीं दिया हुआ है। जगह-जगह संशोधन किया गया है। प्रति महत्वपूर्ण नहीं है।

४१. अयोध्याकांड। देशी कागज। पत्र—१६७। आकार—६१/१० इंच लंबाई और ६१/१० इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१३। परिमाण (छंदों में)—२६८५। अपूर्ण। रूप—प्राचीन जीर्ण शीर्ण। लिपि—कैथी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

ऐहि बिधि कहि मुनि वचन सोहाऐ सहित कुअर त्रीप पह चली आऐ ॥
गुर आऐसु लषि सहित समाजा ॥ उठी प्रनाम कीन्ह मन राजा ॥
लहि आसीस आसन बैठाऐ ॥ केकैनंद तब राउ जोहारऐ ॥
भुपती·····················जानी बैठन कहेउ बीहसी बर बानी ॥
कुअरन बैठेउ जोरीवत रहेउ गुर वासीस्ठ तव त्रीप सन कहेउ ॥
कैकय नाथ ग्रीह गवना चहही मागत वीदया सकुचत मन अहही ॥
अब त्रीपाल मनी आऐसु दीजै अवरो ऐक वचन सुनी लीजै ॥

दोहा

भरथ सत्रुहन बंधु दोउ पठइअ इन्हके साथ
सील संधु कछु दीन नेवसी करी सब लोग सनाथ

चौपाइ

कछु दीन रहही जननी के माऐक············सुनीऐ नर नाएक
मम सदेस सुन·········अइहही·········सुनहू मन लाइ

अंत

छन्द

अवगाह सोक समुर्द सोचहि र्न व्यैकुल महा
देइ दोख सकल सरोख बोलहि वाम निधि की कीन्हो कहा
सुर सीध तापस जोगी जन बीसरी सबन्ह सुधी देह की
तुलसी समै समरथ को तरी सकै सरी सने कीहु

सोरठा ॥

कीए अमीत उपदेस जाहा ताहा लोगन्ह मु·········न्ह
धीरज धरीअ नरेस कहेउ बासीस्ट विदेह सन्
जासु नाम जपी भौ निसि नासा वचन क्रीनी सुनी कमल वी···
तेहि कि मोह महिमा निअराइ ऐही सीआ राम सनेह स···
···इ साधक सीधी सआने त्रीवीधि जीव जग···बखाने
राम सनेह सरीस मन जासु ॥ साधु सभा वहु आदर तासु ॥
सोहै न राम प्रेम वीनु ग्यानु करन धार बीनु जीमी जल जानु

विशेष ज्ञातव्य—यह प्रति १६७ पत्रों में लिखी गई है। पाठांतर विशेष हैं। इस प्रति में क्षेपकों की भरमार है। प्रसंगवश जो क्षेपक आए हैं वे प्रकाशित ज्वालाप्रसाद कृत टीका रामचरित मानस की क्षेपक कथाओं से भिन्न हैं। अयोध्या कांड के प्रारंभ में भरत और शत्रुघ्न के कैकय देश जाने की कथा १० पत्रों में लिखी गई है। बीच बीच में भी क्षेपक हैं। प्रति का लिपिकाल नहीं दिया हुआ है। प्रति के अधिकांश पत्र अत्यंत जीर्ण हैं। प्रारंभ तथा अंत के कई एक पत्र उपलब्ध नहीं है।

४२. अयोध्याकांड। देशी कागज। पत्र—१२३। आकार—८½ इंच लंबाई और ५ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—११। परिमाण (छंदों में)—२४५२। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—कैथी मिश्रित नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

× × ×

राम रूप गुन सील सुभाउ ॥ प्रमुदित होहि देषि सुनि राउ

॥ दोहा ॥

सब के उर अभिलाष अस कहहि मनाइ महेस ॥
आपु अछत जुवराज पद रामहि देहि नरेस ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

ऐक बार जानुकी समेता ॥ बैठे प्रभु निज रुचिर निकेता ॥
भुजप्रलंब उर नैन बिसाला ॥ पीत वसन तन स्याम तमाला ॥

कोटि मनोज देषि छवि मोहा ।। सीताकर वर चामर चोहा ।।
तेहि अवसर नारद रिषि आऐ ।। सुरहित लागि विरंचि पठाऐ ।।
तेज पुंज तन करतल बींना ।। हरिगुन गावत अति लवलीना ।।
देषि राम सहसा उठि धाऐ ।। करि दंडवत भवन मुनि ल्याऐ ।।
सादर निज आसन बैठारे ।। जनक सुता तब चरन पषारे ।।
तेहि चरनोदक भवन सिचावा ।। जगपावन हरि सीस चढावा ।।

अंत

मुनि महिसुर गुर भरत भुवाला ।। राम विरह सब साजु विहाला ।।
प्रभु गुन ग्राम गुनत मन माही ।। सब चुप चाप चले मग जाही ।।
जमुना उतरि पार सब भएउ ।। सो वासर बिनु भोजन गएउ ।।
उतरि देवसरि दुसर वासू ।। राम सषा तब कीन्ह सुपासू ।।
सई उतरि गोमती नहाए ।। चौथे देवस अवधपुर आए ।।
जनक रहे पुर वासर चारी ।। राज काज सब भाति सवारी ।।
सौपि सचिव गुर भरतहि राजू ।। तिरहुति चले साजि सब साजू ।।
नगर नारि नर गुर सिष मानी ।। बसे सुषेन राम रजधानी ।।

।। दोहा ।।

राम दरस हित लोग सब करत नेम उपवास ।।
तजि तजि भूषन भोग वर जियत अवधि की आस ।।

।। चौपाई ।।

सचिव महाजन सकल बोलाए ।। निज जिन काज लागे सब धाए ।।
पुनि सिष दीन्ह बोलि लघु भाई ।। सौपी सकल जननी सेवकाई ।।
भूसुर बोलि भरत कर जोरी ।। करि प्रनाम बर बिनै बहोरी ।।
उंच नीच कारज भल पोचू ।। आयसु देत न करब सकोचू ।।
पुरजन..........

विशेष ज्ञातव्य—अंतिम पत्र खंडित होने के कारण लिपि काल का पता नहीं चला। पत्र सं० १ नहीं है। पत्र सं० २ से १२३ तक पूर्ण है। और पत्र सं० १२४ से १२६ तक खंडित है। इसके बाद पत्र सं० १२७ प्राप्त है। शेष अंत के पत्र उपलब्ध नहीं। क्षेपक कथा का समावेश इस प्रति में प्रारंभ से ही है। पांठातर भी हैं।

सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे। निज निज काज पाइ सिख ओधे॥
पुनि सिख दीन्हि बोलि लघु भाई। सौंपी सकल मातु सेवकाई॥
(प्रकाशित)

सचिव महाजन सकल बोलाए॥ निज निजकाज लागे सब धाए॥
पुनि सिष दीन्ह बोलि लघु भाई॥ सौंपी सकल जननी सेवकाई॥
(हस्तलेख)

४१. अयोध्याकांड। पत्र –८०। आकार—१० इंच लंबाई और ५ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१२। परिमाण (छंदों में)—२७००। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

वा श्री गणेशायनम॥
वामांके च विभाति भूधरशुता देवापगा मस्तके॥
भाले बालविधुरगले च गरलं जस्योरसि व्यालराट्॥
सोयं भूतिविभूषणः सुरवरस्सर्वाधिपः सर्वदा॥
सर्वस्य सर्वगत शिव शसिनिभः श्रीशंकरः पातु मां॥ १॥
प्रसन्नता न जान गताभिषेकस्तथा न ममले न वनबास दुषतः॥
मुषांबुज स्त्री रघुनंदस्या मे सदास्तु सा मंजुल मंगल प्रदा॥ २॥
नीलांबुज स्यामलकोमलांगे सीतासमारोपितवाम भागं॥
पाणौ महाशायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथं॥ ३॥

॥ दोहा ॥

श्री गुर चरण सरोज रज निज मन मुकुर सुधारि॥
बरणौ रघुबर विमल जसु जो दायक फल चारि॥ १॥

॥ चौपाई ॥

जबते राम व्याहि घर आये॥ नित नव मंगल मोद बधाये॥
भुवण चारि दस भूधर भारी॥ शुक्रत मेघ वरषहि शुभ वारी॥

अंत

॥ छंद ॥

सिय राम प्रेम पियूष पूरण होत जनम न भरत को॥
मुनि मन अगम नियम सम दम विषम व्रत आचरत को॥

दुष दाह दारिद दंभ दूषण शुजसु मिस अपहरत को ।।
कलिकाल तुलशी से सठण हठि राम सन्मुष करत को ।।

।। सोर्ठा ।।

भरत चरित कर नेम तुलसी सादर जे सुनहि ।।
सिया राम पद प्रेम अवसि होइ भव सरि बिगत ।। ३३० ।।

इति श्री रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविधुंसने विमल विग्याण भगति संपादिनीनोनाम द्वितीय शोपान अयोध्याकांड समाप्त शुभं चैत्रमासे शुक्ल पछे पारर्वाणि त्रितीयायां शनिवासरे ।। लिष्यतेन् हुलाशशुक्लेन् ।।
राम × × × × × × ×राम राम

विशेष ज्ञातव्य—लिपि स्पष्ट है। कहीं कहीं अशुद्धियाँ भी हैं। लिपि-कर्त्ता हुलाश शुक्ल हैं। यद्यपि ग्रंथ की समाप्ति चैत्र मास के शुक्ल पक्ष (शनिवार) को हुई थी परंतु संवत का उल्लेख नहीं है।

४४. अयोध्याकांड। देशी कागज। पत्र—२२। आकार—९ इंच लंबाई और ५ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ) १०। परिमाण (छंदों में)—३४४। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

ऐक देषि बट छाह भलि : डासि म्रिदुल तन पात ।।
कहहि गंवाइअ छिनुक श्रम : गवनब अबहि कि प्रात ।।११८।।

ऐक कलस भरि आनहि पानी ।। अचइय नाथ कहहि मृदु वानी ।।
सुनि प्रिय वचन प्रीति अति देषी ।। राम क्रिपाल सुसील बिसेषी ।।
जानी श्रमित सीय मन माही ।। घरिक बिलंब कीन्ह वट छाही ।।
मुदित नारि नर देषहि सोभा ।। रूप अनूप नयन मन लोभा ।।
ऐक टक सब देषहि चहुओरा ।। रामचंद्र मुष चंद चकोरा ।।
तरुन तमाल बरन तन सोहा ।। देषत कोटि मदन मन मोहा ।।
दामिनि वरन लषन सुठि नीके ।। नष सिष सुभग भावते जी के ।।
मुनि पट कटिन्ह कसे तूनीरा ।। सोहति कर कमलनि धनु तीरा ।।

दोहा ।। जटा मुकुट सीसनि सुभग : उर भुज नैन बिसाल ।।
सरद परब विधु बदन पर : लसत स्वेद कन जाल ।। ११९ ।।

× × ×

अंत

ऐह सुनि समुझि सोच परिहरहू ॥ सिर धरि राज रजायसु करहू ॥
राय राज पद तुम्ह कह दीन्हा ॥ पिता बचन फुर चाहिय कीन्हा ॥
तजे राम जेहि वचनहि लागी ॥ तनु परिहरेउ राम बिरहागी ॥
नृपहि वचन प्रिय नहि प्रिय प्राना ॥ करहु तात पितु वचन प्रमाना ॥
करहु सीस धरि भूप रजाइ ॥ है तुम्ह कह सब भाति भलाइ ॥
परसुराम पितु अज्ञा राषी ॥ मारी मातु लोक सब साषी ॥
तनय जजातीहि जौबन दैउ ॥ पितु अज्ञा अघ अजसु न भैउ ॥

॥ दोहा ॥ अनुचित उचित विचारु निज : जे पालिहि पितु वैन ॥
ते भाजन सुष सुजस के : बसहि अमर पति अैन ॥१७८॥

अवसि नरेश वचन फूर करहू ॥ पालहु प्रजा शोक परिहरहू ॥
सुरपुर नृिप पाइहि परितोषू ॥ तुम्ह कह सुकित सुजस नहि दोषू ॥
वेद विहित संमत सबही का ॥ जेहि पितु देइ सो पावइ टीका ॥
करहु राब परिहरहु गलानी ॥ मानहु मोर बचन हितु जानी ॥
मुनि सुख लहब राम वैदेही ॥ अनुचित कहब न पंडित केही ॥
कौसिल्यादि सकल महतारी ॥ तेउ प्रजा सुख होहि सुषारी ॥
मरम तुम्हार राम कर जानहि ॥ सो सब विधि तुम्ह सन भल मानही ॥
सोपेहु राज राम के आऐ ॥ सेवा करेहु सनेह सुहाऐ ॥

दोहा ॥ कीजिय गुर आयसु अवसि : कहहि सचिव कर जोरि ॥
रघुपति आये उचित जस तस तब करब बहोरी ॥ १७९ ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति खंडित है। २२ पत्र उपलब्ध हैं। प्रति का पाठ शुद्ध है। नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित रामचरित मानस के पाठ से इस उपलब्ध प्रति का पाठ बहुत कुछ मिलता है। संपूर्ण प्रति उपलब्ध न होने के कारण लिपिकाल का पता नहीं लगता। कागज, स्याही तथा लिखावट के आधार पर लगता है कि यह प्रति लगभग २०० वर्ष पूर्व लिखी गई होगी।

४९. अयोध्यांकड। देशी कागज। पत्र—१४६। आकार—१०$\frac{3}{10}$ इंच लंबाई और ८$\frac{1}{10}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१०। परिमाण (छंदों में)—२२०३। पूर्ण। रूप—नवीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

दुष दाह दारिद दंभ दूषण शुजसु मिस अपहरत को ।।
कलिकाल तुलशी से सठण हठि राम सन्मुष करत को ।।

।। सोर्ठा ।।

भरत चरित कर नेम तुलसी सादर जे सुनहि ।।
सिया राम पद प्रेम अवसि होइ भव सरि बिगत ।। ३३० ।।

इति श्री रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविधुंसने विमल विग्याण भगति संपादिनीनोनाम द्वितीय शोपान अयोध्याकांड समाप्त शुभं चैत्रमासे शुक्ल पछे पारर्वणि त्रितीयायां शनिवासरे ।। लिष्यतेन् हुलाशशुक्लेन् ।। राम × × × × × × ×राम राम

विशेष ज्ञातव्य—लिपि स्पष्ट है। कहीं कहीं अशुद्धियाँ भी हैं। लिपि-कर्त्ता हुलाश शुक्ल हैं। यद्यपि ग्रंथ की समाप्ति चैत्र मास के शुक्ल पक्ष (शनिवार) को हुई थी परंतु संवत का उल्लेख नहीं है।

४४. अयोध्याकांड। देशी कागज। पत्र—२२। आकार—९ इंच लंबाई और ५ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ) १०। परिमाण (छंदों में)—३४४। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

ऐक देषि बट छाह भलि : डासि म्रिदुल तन पात ।।
कहहि गंवाइअ छिनुक श्रम : गवनब अबहि कि प्रात ।।११८।।

ऐक कलस भरि आनहि पानी ।। अचइय नाथ कहहि मृदु बानी ।।
सुनि प्रिय वचन प्रीति अति देषी ।। राम क्रिपाल सुसील बिसेषी ।।
जानी अमित सीय मन माही ।। घरिक बिलंब कीन्ह वट छाही ।।
मुदित नारि नर देषहि सोभा ।। रूप अनूप नयन मन लोभा ।।
ऐक टक सब देषहि चहुओरा ।। रामचंद्र मुष चंद चकोरा ।।
तरुन तमाल बरन तन सोहा ।। देषत कोटि मदन मन मोहा ।।
दामिनि वरन लषन सुठि नीके ।। नष सिष सुभग भावते जी के ।।
मुनि पट कटिन्ह कसे तूनीरा ।। सोहति कर कमलनि धनु तीरा ।।

दोहा ।। जटा मुकुट सीसनि सुभग : उर भुज नैन बिसाल ।।
सरद परब विधु बदन पर : लसत स्वेद कन जाल ।। ११९ ।।

× × ×

अंत

ऐह सुनि समुझि सोच परिहरहू ॥ सिर धरि राज रजायस करहू ॥
राय राज पद तुम्ह कह दीन्हा ॥ पिता बचन फुर चाहिय कीन्हा ॥
तजे राम जेहि वचनहि लागी ॥ तनु परिहरेउ राम बिरहागी ॥
नृिपहि वचन प्रिय नहि प्रिय प्राना ॥ करहु तात पितु बचन प्रमाना ॥
करहु सीस धरि भूप रजाइ ॥ है तुम्ह कह सब भाति भलाइ ॥
परसुराम पितु अज्ञा राषी ॥ मारी मातु लोक सब साषी ॥
तनय जजातीहि जौबन दैउ ॥ पितु अज्ञा अघ अजसु न भैउ ॥

॥ दोहा ॥ अनुचित उचित विचारु निज : जे पालिहि पितु बैन ॥
ते भाजन सुष सुजस के : बसहि अमर पति अैन ॥१७८॥

अवसि नरेश वचन फूर करहू ॥ पालहु प्रजा शोक परिहरहू ॥
सुरपुर नृिप पाइहि परितोषू ॥ तुम्ह कह सुकित सुजस नहि दोषू ॥
वेद बिहित संमत सबही का ॥ जेहि पितु देइ सो पावइ टीका ॥
करहु राज परिहरहु गलानी ॥ मानहु मोर बचन हितु जानी ॥
मुनि सुख लहब राम वैदेही ॥ अनुचित कहब न पंडित केही ॥
कौसिल्यादि सकल महतारी ॥ तेउ प्रजा सुख होहि सुषारी ॥
मरम तुम्हार राम कर जानहि ॥ सो सब विधि तुम्ह सन भल मानही ॥
सोपेहु राज राम के आऐ ॥ सेवा करेहु सनेह सुहाऐ ॥

दोहा ॥ कीजिय गुर आयसु अवसि : कहहि सचिव कर जोरि ॥
रघुपति आये उचित जस तस तब करब बहोरी ॥ १७९ ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति खंडित है। २२ पत्र उपलब्ध हैं। प्रति का पाठ शुद्ध है। नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित रामचरित मानस के पाठ से इस उपलब्ध प्रति का पाठ बहुत कुछ मिलता है। संपूर्ण प्रति उपलब्ध न होने के कारण लिपिकाल का पता नहीं लगता। कागज, स्याही तथा लिखावट के आधार पर लगता है कि यह प्रति लगभग २०० वर्ष पूर्व लिखी गई होगी।

४९. अयोध्यांकड। देशी कागज। पत्र—१४९। आकार—१०$\frac{३}{१०}$ इंच लंबाई और ८$\frac{३}{१०}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१०। परिमाण (छंदों में)—२२०२। पूर्ण। रूप—नवीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

श्री गणेशायनमः ॥ श्री जानकी वल्लभो विजयते ः ॥
वामाङ्के च विभाति भूधर सुता देवापगा मस्तके ॥
भाले बाल विधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट् ॥
सोयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा ॥
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्री शंकरः पातु माम् ॥ १ ॥
प्रसन्नतां यो न गतोभिषेकतस्तथा न मम्लौ वनवासदुःखतः ॥
मुखाम्बुजं श्री रघुनन्दनस्य मे सदास्तुन्मंजुल मंगल प्रदम् ॥ २ ॥
लीलाम्बुज श्यामल कोमलांगं सीतालमारोपित वाम भागं ॥
पाणौ महाशायक चारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथं ॥ ३ ॥

दो० श्री गुरु चरण सरोज रज निज मन मुकुर सुधारि ।
वरणौं रघुबर विमल यश जो दायक फल चारि ॥

चौ० ॥ जबते राम व्याहि घर आये । नित नव मंगल मोद बधाये ॥
भुवन चारि दश भूधर भारी । सुकृत मेघ बरषहिं सुख वारी ॥
ऋधि सिधि सम्पति नदी सुहाई । उमँगि अवधि अम्बुधि कहँ आई ॥
मणि गण पुन नर नारि सुजाती । शुचि अमोल सुन्दर सब भाँति ॥
कहि न जाय कछु नगर विभूती । जनु इतनी विरंचि करतूती ॥
सब बिधि सब पुरलोग सुखारी । रामचन्द्र मुख चंद्र निहारी ॥

अंत

लषन राम सिय कानन बसही । भरतु भवन बसि तप तनु कसही ॥
दोउ निसि समुझि कहत सबु लोगू । सब विधि भरत सराहन जोगू ॥
सुनि वृत नेम साधु सकुचाही । देखि दसा मुनिराज लजाही ॥
परम पुनीत भरत आचरनू । मधुर मंजु मुद मंगल करनू ॥
हरन कठिन कलि कलुष कलेसू । महा मोह निसि दलन दिनेसू ॥
पाप पुंज कुंजर मृगराजू । समन सकल संताप समाजू ॥
जन रंजन भंजन भव भारू । राम सनेह सुधाकर सारू ॥

छंद ॥ सियराम प्रेम पियूष पूरन होत जनमु न भरत को ।
मुनि मन अगम जम नियम सम दम विषम व्रत आचरत को ॥
दुष दाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिलि अपहरत को ।
कलि काल तुलसी से सठन्हि हठि राम सन्मुष करत को ।

सोरठा भरत चरित करि नेमु। तुलसी जो सादर सुनहि ॥
सीय राम पद प्रेम। अवसि होय भव रति विरति ॥ ३२५ ॥

इति श्री रामचरित्रे कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य नामो दुतीया सुभयाना ॥ अजोध्याकांड श्री गोसाईं जी की प्रति हाथन की लिषी शुभ मस्तु ॥ श्री राम श्री राम श्री राम ॥

विशेष ज्ञातव्य—यह हस्तलिखित प्रति नवीन है। कागज तथा स्याही से ज्ञात होता है कि लगभग ५० वर्ष पूर्व इसकी प्रतिलिपि तैयार की गई होगी। यह तुलसीदास के हाथ की लिखी अयोध्याकांड की प्रतिलिपि है, जैसा कि पुष्पिका में लिपिकर्ता ने लिखा है। छूटी हुई पंक्तियाँ हाशिए के बगल में लाल स्याही से लिख दी गई हैं। प्रति नवीन होते हुए भी पाठांतरों से रहित नहीं है।

येह विचारू उर आनि नृप सुदिन सुअवसर पाइ
तन पुलकित मन मुदित अति गुरहिं सुनायउ जाइ ॥
(प्रकाशित रामचरितमानस)

तन पुलकित मन मुदित अति गुरुहिं सुनायउ जाइ ॥
(ह० प्र०)

कहइ भुआल सुनिय मुनि नायक। भये रामु सब बिधि सब लायक ॥
(प्र० रा०)

कह्यो भुआल सुनि मुनि नायक। भये राम सब बिधि सब लायक ॥
(ह० रा०)

जे हमरे अरि मित्र उदासी। (प्र० स०)
जे हमार अरि मित्र उदासी। (ह० रा०)

अरण्यकांड

४६. अरण्यकांड। देशी कागज। पत्र—४८। आकार—६$\frac{3}{4}$ इंच लंबाई और ६$\frac{1}{2}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ) १७। परिमाण (छंदों में)—६१२। रूप—प्राचीन। लिपि—कैथी। लिपिकाल— सं० १८१०।

आदि

श्री गनेसाएनम श्री रामचंद्राएनम श्री पोथी अर्रन्यकांड कीत गोसई तुलसीदास लीषते :

सोरठा

उमा राम गुन गुढ । पंडीत मुनी पावही वीरती
पावही मोह वीमुढ : जे हरी वीमुख न धरमरत

चौपाई

पुरन भरथ प्रीती मै गाई । मती अनरुप अनुप सोहाई
अब प्रभुचरीत सुनहु अती पावन । करत जे बन सुर नर मुनी भावन
एक बार चुनी कुसम सोहाए । नीज कर राम भुषन राम बनाए
सीतही पहीराए प्रभु सादर । बैठे फटीक सीला पर भाघर
सुरपती सुत धरी बाईस भेषा । सठ चाहत रघुपती बल देवा
जीमी पपील चहै सागर थाहा । महामंद मती पावन चाहा
सीता चरन चौच हती भागा । मुढ मंद मती कारण कागा
चला रुधीर रघुनाएक जाना । सीक धनुष साएक संधाना

अंत

चौपाई

नीज गुन स्रवन सुनत सकुचाही । पर गुन सुनत अधीक हरषाही
सम सीतल नही त्यागही नीती । सरल सुभाव सबही सन प्रीती
जप तप मष ब्रत संजम नेमा । गुर गोवींद वीप्र पद प्रेमा
सरधा छमा मईत्री दाआ । मन क्रम वचन मम भगती अमाआ
वीरती बीबेक वीनए वीग्याना । बोध जथारथ वेद पुराना
दंभ मान मद करही न काउ । भली न देही कुमारग पाउ
गावही सुनही सदा मम लीला । हेतु रहीत पर हीत रत सीला
सुनी मुनी साधन के गुन जेते । कही न सकही सारद सुती तेते

छंद

कही सकै न सारद सेस नारद सुनत पद पंकज गहे :
अस दीन बंधु क्रीपाल अपने भगती गुन नीज मुष कहे :
सीर नाई बारही बार चरनन ब्रह्म पुर नारद गए :
ते धन्य तुलसीदास आस बीहाई जे हरी रग रए :

दोहा

रावनारी जस पावन : गावही सुनही जे लोग :
राम भगती दीढ पावही : बीना बीराग जप जोग :

दीप सीषा सम जुबती रस : मन जनी होसी पतंग :
भजहु राम तजी काम मद : करहु सदा सतसंग :

ईती श्री राम चरित्रे मानसे सकल कली कलुष बीधंसनो बीमल बैराग संपादीनीनाम त्रीतीश्रमो सोपान संपुरन समापत सुभमस्तु १८१० मास अषाड बदी ६ बार बुधेबार श्री राम राम ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ कैथी लिपि में है । सर्वत्र छोटी 'इ' की मात्रा के स्थान पर दीर्घ (ई) का ही प्रयोग हुआ है । अन्यत्र भी मात्राओं के संबंध में ऐसी बातें लक्षित होती हैं । कहीं कहीं पाठ में भी अंतर है ।

४७. अरण्यकांड । देशी कागज । पत्र—२० । आकार—६½ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१८ । परिमाण (छंदों में)—६७५ । पूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—सं० १८२३ ।

आदि

श्री रामचंद्राय नम श्लौक ॥ मूलं धर्म तरोर्विवेक जलधेः ॥ पूर्णेंदु मानंददं वैराग्यांबुज भास्करं ह्यघघन ध्वांतापहं तापहं ॥ मोहांभूधर पूग पाटन विधौ ॥ स्व संभवं शंकरं वंदे ब्रह्म कुलं कलंक समनं श्री राम भूप प्रियं ॥ १ ॥ सांद्रानंद पयोद सौभगतनुं ॥ पीतांबर सुंदरं पाणौ बाण सरासनं कटिलसत्तूनीरंभारं । वरं ॥ राजीवायत लोचनं धृत जटा जुटेन संसौभितं ॥ सीता लक्ष्मण संयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥ २ ॥

सौरठा ॥ उमा राम गुण गूढ ॥ पंडित मुन पावहि विरति ॥
पावहि मोह विमूढ ॥ जे हरि विमूख न धर्म रति ॥ १ ॥

चौपई ॥ पूरण भरत प्रीति में गाई ॥ मति अनुरूप अनूप सुहाई ॥
अब प्रभू चरित सुनौं अति पावन ॥ करत जे वन सुर नर मुनि भावन ॥
एक बार चुनि कुसम सुहाए ॥ निज कर भूषण रुचिर बनाए ॥
सीताहि पहिराए प्रभु सादर ॥ बैठे फटिक सिला पर सुंदर ॥
सुरपति सुत धरि बायस बेषा ॥ सठ चाहत रघुपति बल देषा ॥
जिमि पपीलका सागर थाहा ॥ महामंद मति पावन चाहा ॥

× × ×

अंत

चौपई ॥ निज गुन श्रवन सुनत सकुचाहिं । परगुन सुनंत अधिक हरषाहिं ॥
सम सीतल नहि त्यागहि नीती । सरल सुभाउ सबहि सन प्रीती ॥
जप तप ब्रत दम संजम नेमा । गुर गोविंद विप्र पद प्रेमा ॥
श्रधा छमा मैत्री अरु दाया । मुदित मम पद प्रीती अमाया ॥
विरति विवेक बिनै विज्ञाना । बोध जथारथ वेद पुराना ॥
दंभ मान मद करहि न काउ । भूलि न देहि कुमारग पाउ ॥
गावहि सुनहि सदा मम लीला । हेतु रहित परहिते रति सीला ॥
सुनु मुनि साध के गुन जैते । केहि न सकहि सारीद स्रुति तेते॥

छंद ॥ कहि सकै न सारद सेस नारद सुनत पद पंकज गहे ॥
अस दीनन बंधु कृपाल अपने भक्त गुन निज मुख कहे ॥
सिर नाई बारहि बार चरननि ब्रह्म पुर नारद गए ॥
ते धन्य तुलसीदास आस बीहाई जे हरी रंग रए ॥

दोहा ॥ रावनारि जस पावन गावहि सुनहि जे लोग ॥
राम भगति द्रढ पावहि बिनु राग जप जोग ॥

दोहा ॥ दीप सिषा सम जुवति रस । मन जनि होसि पतंग ॥
भजहि राम सब काम तजि । करहि सदा सतसंग ॥

···ति श्री राम चरीत मानसे सकलक कली कीलुष बीधुंसने वीमल वैराग्य संपादीनी नाम तृतीयो सोपान ३ संपुर्ण श्री संमत ॥ ३४ ॥ साके ॥ १६८८ प्रवर्त्तमन्ये ॥ श्री सूर्यो उत्तरांगते मासोतमासे उस...

विशेष ज्ञातव्य—प्रति पूर्ण है । इस प्रतिलिपि का काल सं० १८२३ वि० है । प्रति में आवश्यतानुसार संशोधन भी है । संशोधन हाशिए के अगल बगल, ऊपर नीचे है । क्षेपक कथाओं का समावेश भी है । पाठांतर भी हैं ।

यह प्रति जमना बाई द्वारा तैयार की गई थी । जमना बाई ने पूरे रामचरित्र मानस की प्रतिलिपि की थी ।

४८. अरण्यकांड । देशी कागज । पत्र—२६ । आकार—१० इंच लंबाई और ५ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१० । परिमाण (छंदों में) । —६०१ । पूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपि काल—सं० १८३७ वि० ।

आदि

श्री गणेशायनमः

॥ सोर्ठा ॥

उमा राम गुण गूढ पंडित मुनि पावहि विरति ॥
पावहि मोह विमूढ जे हरि विषमु न धर्मरत ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

पूरण प्रीति भरत मैं गाई । मति अणरूप अनूप शोहाई ॥
अब प्रभु चरित सुनहु अतिपावन । करत जे वन सुर मुनि मण भावन ॥
येक बार चुनि कुशुम सुहाये । निज कर भूषण राम बनाये ॥
सीतहि पहिराये प्रभु सादर । बैठे फटिक सिला पर भावर ॥
सुरपति शुत धरि वायस वेषा । सठ चाहत रघुपति बल देषा ॥
जिमि पपील चह सागर थाहा । महा मंदमति पावन चाहा ॥
सीता चरण चोच हति भागा । मूढ मंदमति कारण कागा ॥
चला रुधिर रघुनायक जाना । शीक धनुष शायक संधाना ॥

अंत

॥ चौपाई ॥

निज गुण श्रवण सुनत सकुचाही । पर गुण सुनत अधिक हरषाही ॥
सम सीतल णहि त्यागहि नीती । सरल शुभाउ सबहि सण प्रीती ॥
जप तप मष व्रत संजम नेमा । गुरु गोबिंद विप्र पद प्रेमा ॥
छुधा शमा समयेती दाया । प्रमुदित मम पद प्रीति अमाया ॥
विनय विवेक विरति विग्याना । बोध जथारथ वेद पुराना ॥
दंभ मान मद करहि न काउ । भूलि न देहि कुमारग पाउ ॥
गावहि सुनहि सदा मम लीला । हेत रहित परहित रत शीला ॥
मुनि सुनु शाधण के गुण जेते । कहि न सकहि सारद श्रुति तेते ॥

॥ छंद ॥

कहि सक न सारद शेष नारद शुनत पद पंकज गहे ॥
अस दीण बंधु कृपाल अपणे भगत गुण निज मुष गहे ॥
सिर नाइ वारहि वार चरणन्ह ब्रह्मपुर नारद गये ॥
ते धन्य तुलसीदास आस विहाई जे हरि रग रये ॥

॥ दोहा ॥

रावण अरि जशु पावण गावहि शुणहि जे लोग ॥
राम भगति द्रिढ पावहि बिन बिराग जप योग ॥
दीप सिषा सम युवति जन मन जनि होसि पतंग ॥
भजहि राम सब काम तजि करहि सदा सत संग ॥ ८८ ॥

इति श्री रामचरितमाणसे सकल कलि कलुषविध्वंसने विमल विज्ञान भगति संपादिनीनोनाम त्रतीय शोपाण वनकांड समाप्तं ॥ संवत् १८३७ ॥ शाके १७०२ जेष्ठ मासे कृष्ण पक्षे पार्वणि द्वितीयायां शनिवासरे लिष्यतं हुलास शुक्ल ।

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल सं० १८३७ वि० है। ग्रंथ पूर्ण है। लिपि नागरी है। लिपिकर्ता संभवतः राजस्थानी था क्योंकि 'न' के स्थान पर प्रायः 'ण' का प्रयोग मिलता है। प्रारंभिक श्लोक नहीं हैं। पाठांतर भी हैं। यथा—

पुर नर भरत प्रीति मैं गाई। मति अनुरूप अनूप सुहाई॥
अब प्रभु चरित सुनहु अति पावन। करत जे बन सुर नर मुनि भावन॥
सीतहि पहिराए प्रभु सादर। बैठे फटिक सिला पर सुंदर ॥(प्रकाशित)

पूरण प्रीति भरत मै गाई। मति अणुरूप अनूप शोहाई॥
अब प्रभु चरित सुनहु अति पावन। करत जे वन सुर मुनि मण भावन॥
सीतहि पहिराये प्रभु सादर। बैठे फटिक सिला पर भाधर ॥(हस्तलिपि)

४६. अरण्यकांड। देशी कागज। पत्र–३०। आकार—८३/१० इंच लंबाई और ४६/१० इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—११। परिमाण—५७८। अपूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल–सं० १८७३ वि०।

आदि

मजं अकाम स्याम सुंदरं भवांबु नाथ मंदरं
प्रफुल्ल कंज लोचनं मदादि दोष मोचनं
प्रलंब बाहु विक्रमं प्रभु प्रमेय वयभमं
निषंग चाप सायकं धरे त्रिलोक नायकं
दिनेस वंस मंडनं महेस चाप षंडनं

मुनिंद्र संत रंजनं सुरारि त्रिंद भंजनं
मनोज वैरि वंदितं अजादि देव सेवितं
विसुद्ध बोध विग्रहं समस्त दूषनापहं।
सुषाकरं सतं गतिं नमामि इंद्रिरा पतिं
भजे सु सक्तिसानुजं सचीपति प्रियानुजं
त्वदंघ्रि मूल जे नरं भजंति हीन मत्सरं
पतंति नो भवार्नलं वितर्क बीच सकुलं
विविक्त वासिनं सदां भजंति मुक्ति जे मुदां
नीरीस इदिरादिक प्रयक्तितं गतिं स्वक

अंत

॥ दोहा ॥ दीप सिषा सम जुव्रती मन जनि होसि पतंग
सुमिरु राम पद पंकजहि मुनिवर लोचन भ्रिंग
रामनारि जस पावन गावहि सुनहि जे लोग
राम भक्ति ते पावहि विनु विराग जप जोग

इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य संपादिनि नाम त्रितियौ सोपनः संवत १८७३ मास उत्तम जेष्ठ शुक्ल पछ तिथौ पूर्णा वास्यां न १४ चंद्रवारे कः समाप्त सुभमस्तु लीष्यर्त मिदं पौस्तकं सुभः

जादृशं पुस्तकं दृष्ठा तादृसं लिषितं मम जदि सुधमसुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥ दोषो न दीयते ॥ श्रीः राम राम पंडित जन सो विनती मोरी टूट अछर लेव सब जोरी।

विशेष ज्ञातव्य—प्रति अपूर्ण है। प्रारंभिक ३ पृष्ठ नहीं हैं। पाठांतर विशेष हैं।

५०. अरण्यकांड। देशी कागज। पत्र—३६। आकार—८ इंच लंबाई और ५½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१६। परिमाण (छंदों में)—५१३। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८६१, १२११ फसली।

आदि

धर्म धुरंधर प्रभु कै बानी। सुनि सप्रेम बोले मुनि ग्यानी
जासु कृपा अज सिव सनकादी। चहत सकल परमारथ बादी

ते तुम्ह राम अकाम पिआरे। दीन बंधु म्रीदु बचन उचारे
अब जानी मै श्री चतुराई। भजिय तुम्हहि सब देव बिहाई
जेहि समान अतिसे नहि कोइ। ताकर सील अस काहे न होइ
(के) हि विधि कहौ जाहु अब स्वामी। कहहु नाथ तुम्ह अंतरजामी
अस कहि प्रभु बिलोकि मुनि धीरा। लोचन जल बह पुलक सरीरा

छंद

तन पुलक निर्भर प्रेम पूरन नयन मुष पंकज दिए
मन ग्यान गुण गौतीत प्रभु मै दीष जप तप का किए
जप जौग धर्म समूह ते नर भग्ति अनुपम पावइ
रघुवीर चरित पुनित निस दिन दास तुलसी गावइ

दोहा

कलिमल समन दमन मन राम सुजस सुष मूल
सादर सुनहि ते तरहि भव राम रहहि अनकूल

अंत

छन्द

कहि सक न सारद निगम नारद सुनत पद पंकज गहे
अस दीनबंधु कृपाल अपने भक्त गुन निज मुष कहे
सिर नाइ वारहि बार चरननिह ब्रह्मपुर नारद गये
ते धन्य तुलसीदास आस विहाये जे हरि रंग रये

दोहा

रावनारि जस पावन गावहि सुनहि जे लोग
राम भक्ति दिढ पावहि बिनु बिराग जप लोग
दीप सिषा सम जुवति जन मन जनि होसि पतंग
भजहि राम तजि काम मद करहि सदा सतसंग

इति श्री रामचरित्रे मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसनो विमल वैराग्य संपादनो नाम त्रितिय सौपान आरन्न काण्ड समाप्त सिद्धिरस्तु सुभमस्तु सम्वत १८६१ ॥ समैनाम भाद्र कृष्ण पक्षे दसम्यां दिन गुरूवार सन् १२११ साल फसली।

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल सं० १८६१ वि० (१२११ फसली) है। प्रति खंडित है।

५१. अरण्यकांड । देशी कागज । पत्र—२० । आकार—१२ इंच लंबाई और ५६० इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—१४ । परिमाण (छंदों में)—१५०५ । पूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—संवत् १८६४ ।

आदि

॥ श्री गणेशायनमः ॥ श्री जानकीवल्लभाय नमः ॥
मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेंदुमानंददं ॥
वैराग्यांबुजभास्करं ह्दिघनध्वांतापापहं ॥
मोहांभोधरपूगपाटनविधौ खं संभवं संकरं ॥
वंदे ब्रह्मकुलं कलंक समनं श्री राम भूपप्रियं ॥ १ ॥
सांद्रानंदपयोदसौभगतनुं पीतांबर सुदरं ॥
पाणौ बानसरासनं कटिलसत्तूनीरभारंबरं ॥
राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संसोभितं ॥
सीतालंक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥ २ ॥

॥ सोरठा ॥

उमा राम गुन गूढ़ पंडित मुनि पावत विरत ॥
पांवहि मोह विमूढ जे हरि बिमुष न धर्म रत ॥ ३ ॥

अंत

॥ चौपाई ॥

निज गुन स्रवन सुनत सकचांही । परिगुन सुनत अधिक हरषांही ॥
सम सीतल नहि त्यागहि नीती । सरल सुभाउ सबहि सन प्रीती ॥
जप तप व्रत दम संजम नेमा । गुर गोविंद बिप्र पद प्रेमा ॥
श्रद्धा छमा मैत्री दाया । मुदिता मम पद प्रीति अमाया ॥
बिरति बिबेक बिनय बिज्ञाना । बोध जथारथ वेद पुराना ॥
दंभ मान मद करहि न काउ । भूल न देह कुमारग पाउ ॥
गांवहि सुनहि सदा मम लीला । हेतु रहित परहित रत सीला ॥
मुनि सुनु साधन्ह के गुन जेते । कहि न सकै सारद श्रुति तेते ॥

छंद ॥

कहि सक न सारद सेष नारद सुनत पद पंकज गहे ॥
अस दीनबंधु कृपाल पालक भक्त गुन निज मुख कहे ॥

ते तुम्ह राम अकाम पिआरे। दीन बंधु म्रीदु वचन उचारे
अब जानी मैं श्री चतुराई। भजिय तुम्हहि सब देव बिहाई
जेहि समान अतिसै नहि कोइ। ताकर सील अस काहे न होइ
(के) हि विधि कहौ जाहु अब स्वामी। कहहु नाथ तुम्ह अंतरजामी
अस कहि प्रभु बिलोकि मुनि धीरा। लोचन जल बह पुलक सरीरा

छंद

तन पुलक निर्भर प्रेम पूरन नयन मुष पंकज दिए
मन ग्यान गुण गौतीत प्रभु मैं दीष जप तप का किए
जप जौग धर्म समूह ते नर भग्ति अनुपम पावइ
रघुवीर चरित पुनित निस दिन दास तुलसी गावइ

दोहा

कलिमल समन दमन मन राम सुजस सुष मूल
सादर सुनहि ते तरहि भव राम रहहि अनकूल

अंत

छन्द

कहि सक न सारद निगम नारद सुनत पद पंकज गहे
अस दीनबंधु कृपाल अपने भक्त गुन निज मुष कहे
सिर नाइ वारहि बार चरनन्हि ब्रह्मपुर नारद गये
ते धन्य तुलसीदास आस विहाये जे हरि रंग रये

दोहा

रावनारि जस पावन गावहि सुनहि जे लोग
राम भक्ति दिढ पावहि बिनु विराग जप लोग
दीप सिषा सम जुवति जन मन जनि होसि पतंग
भजहि राम तजि काम मद करहि सदा सतसंग

इति श्री रामचरित्रे मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसनो विमल वैराग्य संपादनो नाम त्रितिय सौपान आरन्न काण्ड समाप्त सिद्धिरस्तु सुभमस्तु सम्वत १८६१ ॥ समैनाम भाद्र कृष्ण पक्षे दसम्यां दिन गुरूवार सन् १२११ साल फसली।

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल सं० १८६१ वि० (१२११ फसली) है। प्रति खंडित है।

५१. अरण्यकांड । देशी कागज । पत्र—२० । आकार—१२ इंच लंबाई और ५६॰ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—१४ । परिमाण (छंदों में)—१५०५ । पूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—संवत् १८६४ ।

आदि

॥ श्री गणेशायनमः ॥ श्री जानकीवल्लभाय नमः ॥
मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेंदुमानंददं ॥
बैराग्यांबुजभास्करं ह्रदिघनध्वांतापापहं ॥
मोहांभोधरपूगपाटनविधौ खं संभवं संकरं ॥
वंदे ब्रह्मकुलं कलंक समनं श्री राम भूपप्रियं ॥ १ ॥
सांद्रानंदपयोदसौभगतनुं पीतांबर सुदरं ॥
पाणौ बानसरासनं कटिलसत्तूनीरभारंबरं ॥
राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संसोभितं ॥
सीतालंक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥ २ ॥
॥ सोरठा ॥
उमा राम गुन गूढ़ पंडित मुनि पावत विरत ॥
पांवहि मोह विमूढ जे हरि बिमुष न धर्म रत ॥ ३ ॥

अंत

॥ चौपाई ॥
निज गुन स्रवन सुनत सकचांही । परिगुन सुनत अधिक हरषांही ॥
सम सीतल नहि त्यागहि नीती । सरल सुभाउ सबहि सन प्रीती ॥
जप तप ब्रत दम संजम नेमा । गुर गोविंद बिप्र पद प्रेमा ॥
श्रद्धा छमा मैत्री दाया । मुदिता मम पद प्रीति अमाया ॥
बिरति बिबेक बिनय बिज्ञाना । बोध जथारथ वेद पुराना ॥
दंभ मान मद करहि न काउ । भूल न देहि कुमारग पाउ ॥
गांवहि सुनहि सदा मम लीला । हेतु रहित परहित रत सीला ॥
मुनि सुनु साधन्ह के गुन जेते । कहि न सकै सारद श्रुति तेते ॥
छंद ॥
कहि सक न सारद सेष नारद सुनत पद पंकज गहे ॥
अस दीनबंधु कृपाल पालक भक्त गुन निज मुख कहे ॥

सिर नाइ बारहि बार चरननि्ह ब्रह्मपुर नारद गए ॥
ते धन्य तुलसी दास आस बिहाइ जे हरि रंग रए ॥
दोहा ॥

रावन अरि जसु पावन । गावहि सुनहि जे लोग ॥
राम भगति दृढ पावहि । बिनु बिराग जप जोग ॥
दीप सिषा सम जुवति रस । मन जिन होसि पतंग ॥
भजहि राम तजि काम मद । करहि सदा सतसंग ॥ ७५ ॥

इति श्री रामचरित्र मानसे सकल कलि कलुष बिध्वंसने बिमल बैराग्य संपादनी नाम तृतीय सोपान समाप्तं ॥ संवत् १८६४ का मासोत्तमासे श्रावण मासे कृष्ण पक्षे तिथौ ४ चतुर्थ्यां गुरु वासरे लिषतं ब्राह्मण मगन लिषायतं वैष्णव मनोहरदास जी तत् सिष्य सेवादास जी आत्म पठनार्थं ॥ लिषतं बिसाहू मध्ये स्वामी रुषराम जी का मंदर मध्ये ॥ श्री रस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्री ॥

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल सं० १८६४ वि० है। यत्र तत्र सामान्य पाठांतर भी हैं। लिपि सुंदर सुपाठ्य है।

५२. अयोध्याकांड। देशी कागज। पत्र—१३४। आकार—११ इंच लंबाई और ५½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१०। परिमाण (छंदों में)—२५१२। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपि-काल—सं० १८७६।

आदि

ॐ श्रीमते रामानुजाये नमः
ॐ वामांके च बिभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके ॥
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट् ॥
सोयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा ॥
शर्वः सर्वगतः शिवं शशिनिभः श्री शंकरः पातु मां ॥ १ ॥
प्रसन्नतायां न गताभिषेकतस्तथा न मस्ते वनवास दुःखतः ॥
मुखांबुज श्री रघुनंदनस्य मे सदास्तु सा मंजुलमंगल प्रदा ॥ २ ॥
नीलांबुजस्यामलकोमलांगं सीतासमारोपितवामभागं ॥
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंसनाथं ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

श्री गुरु चरन सरोज रज निज मन मुकर सुधारि ॥
बरनउ रघुवर विमल जसु जो दायक फल चारि ॥

॥ चौपाई ॥

जबते राम ब्याहि घर आए ॥ नित नव मंगल मोद बधाए ॥
भुवन चारि दस भूधर भारी ॥ सुकृत मेघ बरषहिं सुष वारी ॥

अंत

॥ चौपाई ॥

पुलक गात हिय सिय रघुवीरू ॥ जीह राम जपि लोचन नीरू ॥
लषन रा(म) सिय कानन बसहीं ॥ भरत भवन बसि तप तनु कसहीं ॥
दोउ दिसि समुझि कहत सब लोगू ॥ सब विधि भरत सराहन जोगू ॥
सुनि व्रत नेम साधु सकुचाहीं ॥ .... ॥
परम पुनीत भरत आचरनू ॥ मधुर मंजु मुद मंगल करनू ॥
हरन कठिन कलि कलुष कलेषू ॥ महा मोह निसि दलनि दिनेसू ॥
पाप पुंज कुंजर मृगराजू ॥ समन सकल संताप समाजू ॥
जन रंजन भंजन भव भारू ॥ राम सनेह सुधाकर सारू ॥

॥ छंद ॥

सिय राम प्रेम पिउष पूरन होत जनम न भरत को ॥
मुनि मन अगम जम नियम सम दम विषम व्रत आचरत को ॥
दुष दाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिस अपहरत को ॥
कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि राम सनमुष करत को ॥

॥ सोरठा ॥

भरत चरित करि नेम तुलसी जे सादर सुनहिं ॥
सीय राम पद प्रेम अवसि होइ भव रस विरति ॥
इति श्रीरामायणे द्वितिये कांड समाप्त ॥

॥ दोहा ॥

साल व्योम वसु उदधि रस मास जनम मृगधीस ॥
स्वेत पक्ष अरु दीप तिथि पुष्य नषत दिन ईस ॥ १ ॥

जन रंजन भंजन विपति हरि आलय सुपासु ॥
नाम रासि तुल भुमिसुर अवध कांड लिषि जासु ॥

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल—"साल व्योम वसु उदधि रस मास जनम मृगधीस ॥" (१८७६) है। यद्यपि 'व्योम' का अर्थ आकाश है और इसके लिये '०' माना गया है परंतु यहाँ '०' मान लेने से काल ठीक नहीं प्रतीत होता। अतः 'व्योम' का अर्थ '१' ही मानना उचित प्रतीत होता है। '१' मान लेने से लिपिकाल १८७६ हो जाता है जो उचित जान पड़ता है। यदि '०' मान लिया जाय तो काल '०८७६' या '६७८०' होता है जो बिल्कुल अशुद्ध ठहरता है।

ग्रंथ पूर्ण है। लिपिकर्त्ता से कहीं कहीं छूट हो गई है। उदाहरणार्थ—'सुनि व्रत नेम साधु सकुचाही !' के बाद—'देखि दसा मुनिराज लजाही ॥' होना चाहिए था परंतु यह अर्धाली छूट गई है। पाठ शुद्ध है पर कहीं कहीं पाठांतर भी हैं—

'कहि न जाइ कछु नगर विभूति। जनु येतनिअँ विरंचि करतूती' ॥
(प्रकाशित)

'कहि न जाइ कछु नगर विभूती। जनु तन धरि विरंचि करतूती ॥'
(हस्तलेख)

५३. अरण्यकांड। देशी कागज। पत्र—३६। आकार—६ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—२०। परिमाण (छंदों में)—६३४। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—कैथी मिश्रित नागरी। लिपिकाल—सं० १८६४।

आदि

×　　　　×　　　　×

....　　मनी　　स्वधामजं
नीकाम स्याम सुंदरं　　भवाब नाथ मदीरं
प्रफुल कंज लोचनं　　मदादी दुष मोचनं
प्रलंब बाहु बीक्रमं　　प्रभो प्रमेए बैभ्रमं
नीषंग चाप साइके　　धरै त्रइलोक नाइके
दीनेस बंस मंडनं　　मुनीद संत रंजनं

सुरारी ब्रंद भंजनं महेस चाप षंडनं
मनोज बैरी बंदीतं अजादी देव सेव्यतं
बीस्वध बोध बीग्रीहं समस्त दुषनापाहं
नमामी इंद्रापती सुषाकार सतागति
भजे ससक्त सानुजं ....
त्वदघ्र मुल जे नरा भजंती हीन मस्तरा

अंत

छंद

कही न सकै सारद सेस नारद सुनत पद पंकज गहे
अस दीनबंधु क्रीपाल अपने भगति गुन नीज मुष कहे
सीर नाइ बारही बार चरनन्ह ब्रम्हपुर नारद गए
ते धंन्य तुलसीदास आस बीहाइ जे हरी रंग रए

दोहा

रावनारी जस पावन गावही सुनही जे लोग
राम भगति दीढ पावही बीन बीराग जप जोग
दीप सीषा सम जुवती रस मन जनी होसी पतंग
भजहु राम तजी काम मद करहु सदा सतसंग

इति श्री राम चरीत्रे मानसे सकल कलीकलुष वीधंसने बीमल वैराग संपादीनी नाम आरीन्य कांड संपुरन समापति सुभमस्तु संवतु १८६४ जेष्ठ सुदि ४ गुरउबार।

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल सं० १८६४ वि० है। कुल पत्र सं० ४२ थी जिनमें पत्र सं १ से ३ तक खंडित हैं। लिपि नागरी मिश्रित कैथी है। सामान्य पाठांतर के साथ क्षेपक भी हैं।

५४. अरण्यकांड। देशी कागज। पत्र—१६। आकार—११ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१५। परिमाण (छंदों में)—७२६। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १९१४ वि०।

आदि

श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ श्लोक ॥ मूलंधर्म तरोर्विवेक जलधेः पूर्णेन्दु-मानंददं वैराग्यंबुज भास्करं ह्यघघनं ध्वांतापहं तापहं ॥ मोहांभोधर पुंग पाटन विधौ स्वशंभु वंशः करं वंदे ब्रह्म कुलं कलंक समनं श्री राम भूपप्रियं ॥ १ ॥ सांद्रानंद पयोद सौभगतनु पीताम्बरं सुंदरं पाणौ बाण शरासनं कटिलसत्तूनीर भारं वरं ॥ राजीवायत लोचनं धृत जटा जूटेन संशोभितं सीता लक्ष्मण संयुतं पथि गतं या भीर रामं भजे ॥ २ ॥

सोरठा ॥ उमा राम गुण गूढ मुनि पंडित पावहि विरति ॥
पावहि मोह विमूढ जे हरि विमुख न धर्म रत ॥ १ ॥

चौ ॥ पूरन भरत प्रीति मै गाई ॥ मति अनुरूप अनूप सोहाई ॥
अब प्रभु चरित सुनहु अति पावन ॥ करत जे बन सुर नर मुनि भावन ॥
एक बार चुनि कुसुम सोहाए ॥ निज कर भूषन राम बनाए ॥
सीतहि पहिराए प्रभु सादर ॥ बैठे फटिक सिला पर भाधर ॥
सुरपति सुत धरि वायस बेषा ॥ सठ चाहत रघुपति बल देषा ॥
जिमि पिपीलका सागर थाहा ॥ महामंद मति पावन चाहा ॥
सीता चरण चोंच हति भागा ॥ मूढ मंदमति कारन कागा ॥
चला रुधिर रघुनायक जाना ॥ सीक धनुष सायक संधाना ॥

दोहा ॥ अति कृपाल रघुनायक सदा दीन पर नेह ॥
तासन जाइ जो कीन्ह छल मूरष औगुन गेह ॥ १ ॥

अंत

॥ चौ ॥ निज गुन सुनत श्रवन सकुचाही ॥ पर गुन सुनत अधिक हरषाही ॥
सम सीतल नहि छाडहि नीती ॥ सरल सुभाव सबनि सन प्रीती ॥
जप तप ब्रत अरु संजम नेमा ॥ गुरु गोबिंद विप्र पद प्रेमा ॥
सर्द्धा छमा मयंत्री दाया ॥ मुदिता मम पद प्रीति अमाया ॥
विरति विवेक विनय विज्ञाना ॥ बोध जथारथ वेद पुराना ॥
दंभ मान मद करहि न काऊ ॥ भूलि न देही कुमारग पाऊ ॥
गावहि सुनहि सदा मम लीला ॥ हेतु रहित परहित रत सीला ॥
मुनि सुनु साधुन के गुन जेते ॥ कहि न सकहि सारद श्रुति तेते ॥

छंद ॥ कहि सक न सारद सेष नारद सुनत पद पंकज गहै ॥
अस दीनबंधु कृपा अपनै भक्त गुन निज मुष कहै ॥

सिर नाइ बारहि बार चरनन्ह ब्रह्मपुर नारद गए ॥
ते धन्य तुलसीदास त्रास विहाय जे हरि रँग रए ॥ १२ ॥
दोहा ॥ रावणारि जस पावन गावहि सुनहि जे लोग ॥
राम भक्ति दृढ़ पावहि बिनु बिराग जप जोग ॥ ६० ॥
दीप सिषा सम जुवती मन जनि होसि पतंग ॥
भजसि राम पद पंकज काम मद करसि सदा सत संग ॥ ६१ ॥

इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल विज्ञान संपादिनी नाम आरण्य कांड रामायन संपूर्णम् ॥ सुभ संवत् ॥ १६१४ ॥ फाल्गुन मास कृष्ण पक्ष षष्टी गुर वार ॥ दशषत राम शरण रामानुज दास ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति सुस्पष्ट तथा स्वच्छ अक्षरों में लिखी हुई है। प्रतिलिपिकर्ता रामशरण दास जी हैं। प्रति में पाठांतर भी है।

५५. अरण्यकांड। देशी कागज। पत्र—१८। आकार—१३$\frac{5}{10}$ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१३। परिमाण (छंदों में)—५५८। अपूर्ण। रूप–प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल–अज्ञात।

आदि

श्री गणेशाय नमः ॥ श्लोक ॥ मूलोधर्मतरो विवेक जलधैः पूर्णेंदु-मानंददा वैराग्यांबुज शंकरं घरध्मीः ॥ तापहं मोहा भूयंग पाटन विधौ। स्वा संभवं शंकरं। वंदे ब्रह्मकुले फलंक शमनं श्री राम भूपतिं ॥१॥
सांद्रा नंदप्रदं सौभाग्य तनुं पीतांबरं सुंदरं ॥
पानौ वान सरासनं कटिल संकणि रांधरं बरं ॥ २ ॥
राजीव लोचनं धृत जटाँ जूटेन संसोभितं ॥
सीता लक्ष्मण संजुतं पथिगतं रामभिराम भजे ॥
सोरठा ॥ उमा राम गुन गूढ ॥ पंडित मुनि पावहि विरति ॥
पावन मोह विमूढ़ ॥ जे हरि विमुख न धर्म रत ॥
चौपई ॥ पूरन भरथ प्रीति मैं गाई ॥ मति अनरूप स्वरूप सुहाई ॥
अब प्रभु चरित सुनहु अति पांवन ॥ करत जु सुर नर मुनि भावन ॥

अंत

रघुपति कमल चरन सिर नाई ॥ गे गंधर्ब अपनि गति पाई ॥
ताहि देइ गति राम उदारा ॥ स्त्रवरी के आश्रम पगु धारा ॥

आदि

श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ श्लोक ॥ मूलंधर्म तरोर्विवेक जलधेः पूर्णेन्दु-मानंददं वैराग्यंबुज भास्करं ह्यघघनं ध्वांतापहं तापहं ॥ मोहांभोधर पुंग पाटन विधौ स्वशंभु वंशः करं वंदे ब्रह्म कुलं कलंक समनं श्री राम भूपप्रियं ॥ १ ॥ सांद्रानंद पयोद सौभगतनु पीताम्बरं सुंदरं पाणौ बाण शरासनं कटिलसत्तूनीर भारं वरं ॥ राजीवायत लोचनं धृत जटा जूटेन संशोभितं सीता लक्ष्मण संयुतं पथि गतं या भीर रामं भजे ॥ २ ॥

सोरठा ॥ उमा राम गुण गूढ मुनि पंडित पावहि विरति ॥
पावहि मोह विमूढ जे हरि विमुख न धर्म रत ॥ १ ॥

चौ ॥ पूरन भरत प्रीति मैं गाई ॥ मति अनुरूप अनूप सोहाई ॥
अब प्रभु चरित सुनहु अति पावन ॥ करत जे बन सुर नर मुनि भावन ॥
एक बार चुनि कुसुम सोहाए ॥ निज कर भूषन राम बनाए ॥
सीतहि पहिराए प्रभु सादर ॥ बैठे फटिक सिला पर भाधर ॥
सुरपति सुत धरि बायस बेषा ॥ सठ चाहत रघुपति बल देषा ॥
जिमि पिपीलका सागर थाहा ॥ महामंद मति पावन चाहा ॥
सीता चरण चोंच हति भागा ॥ मूढ मंदमति कारन कागा ॥
चला रुधिर रघुनायक जाना ॥ सींक धनुष सायक संधाना ॥

दोहा ॥ अति कृपाल रघुनायक सदां दीन पर नेह ॥
तासन जाइ जो कीन्ह छल मूरष औगुन गेह ॥ १ ॥

अंत

॥ चौ ॥ निज गुन सुनत श्रवन सकुचाही ॥ पर गुन सुनत अधिक हरषाही ॥
सम सीतल नहि छाडहि नीती ॥ सरल सुभाव सबनि सन प्रीती ॥
जप तप व्रत अरु संजम नेमा ॥ गुरु गोबिंद विप्र पद प्रेमा ॥
सर्द्धा छमा मयत्री दाया ॥ मुदिता मम पद प्रीति अमाया ॥
विरति विवेक विनय विज्ञाना ॥ बोध जथारथ वेद पुराना ॥
दंभ मान मद करहि न काऊ ॥ भूलि न देही कुमारग पाऊ ॥
गावहि सुनहि सदा मम लीला ॥ हेतु रहित परहित रत सीला ॥
मुनि सुनु साधुन के गुन जैते ॥ कहि न सकहि सारद श्रुति तेते ॥

छंद ॥ कहि सक न सारद सेष नारद सुनत पद पंकज गहै ॥
अस दीनबंधु कृपा अपनै भक्त गुन निज मुष कहै ॥

सिर नाइ बारहि बार चरनन्ह ब्रह्मपुर नारद गए ॥
ते धन्य तुलसीदास त्रास विहाय जे हरि रँग रए ॥ १२ ॥

दोहा ॥ रावणारि जस पावन गावहि सुनहि जे लोग ॥
राम भक्ति दृढ़ पावहि बिनु बिराग जप जोग ॥ ६० ॥
दीप सिषा सम जुबती मन जनि होसि पतंग ॥
भजसि राम पद पंकज काम मद करसि सदा सत संग ॥ ६१ ॥

इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल विज्ञान संपादिनी नाम आरण्य कांड रामायन संपूर्णम् ॥ सुभ संवत् ॥ १६१४ ॥ फाल्गुन मास कृष्ण पक्ष षष्टी गुर वार ॥ दशषत राम शरण रामानुज दास ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति सुस्पष्ट तथा स्वच्छ अक्षरों में लिखी हुई है। प्रतिलिपिकर्ता रामशरण दास जी हैं। प्रति में पाठांतर भी है।

५५. अरण्यकांड। देशी कागज। पत्र—१८। आकार—१३$\frac{5}{10}$ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१३। परिमाण (छंदों में)—५५८। अपूर्ण। रूप-प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल-अज्ञात।

आदि

श्री गणेशाय नमः ॥ श्लोक ॥ मूलोधर्मतरो विवेक जलधैः पूर्णेंदु-मानंददा वैराग्यांबुज शंकरं धरध्मीः ॥ तापहं मोहा भूयंग पाटन त्रिधौ। स्वा संभवं शंकरं। वंदे ब्रह्मकुले कलंक शमनं श्री राम भूपतिं ॥१॥
सांद्रा नंदप्रदं सौभाग्य तनुं पीतांबरं सुंदरं ॥
पानौ वान सरासनं कटिल संकणि रांवरं बरं ॥ २ ॥
राजीव लोचनं धृत जहाँ जूटेन संसोभितं ॥
सीता लक्ष्मण संजुतं पथिगतं राम्मभिराम भजे ॥

सोरठा ॥ उमा राम गुन गूढ ॥ पंडित मुनि पावहि विरति ॥
पावन मोह विमूढ़ ॥ जे हरि विमुख न धर्म रत ॥

चौपई ॥ पूरन भरथ प्रीति मैं गाई ॥ मति अनरूप स्वरूप सुहाई ॥
अब प्रभु चरित सुनहु अति पांवन ॥ करत जु सुर नर मुनि भावन ॥

अंत

रघुपति कमल चरन सिर नाई ॥ गे गंधर्ब अपनि गति पाई ॥
ताहि देइ गति राम उदारा ॥ स्वबरी के आश्रम पगु धारा ॥

खबरी देषि राम ग्रह आए ।। मुनि के वचन समुझि मन भाए ।।
सरजिस लोचन बाहु बिसाला ।। जटा मुकुट सिर उर बनमाला ।।
स्याम गौर सुंदर दोऊ भाई ।। सबरी परी चरन लपटाई ।।
प्रेम मगन मुष वचन न आवा ।। पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा ।।
सादर जल लै चरन पषारी ।। पुनि सुंदर आसन बैठारी ।।
दोहा ।। कंद मूल फल सरस अति दीए राम कहुँ आं......

\+ \+ \+

विशेष ज्ञातव्य—प्रति अपूर्ण है। अंतिम कुछ पत्र उपलब्ध नहीं हैं। यह प्रति भी वियैना (भरतपुर) राज्य में लिखी गई है। नृमलराम ही प्रतिलिपिकर्त्ता भी हैं।

५६. अरण्यकांड। देशी कागज। पत्र—५०। आकार—८ इंच लंबाई और ६ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—१८। परिमाण—(छंदों में) ६००। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—कैथी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

× × × ×

कटिलस्त तुनीर भार वरं : ।।
राजीवायत लोचनं : ।।
श्रीत जटा जुटेन शंशोभीतं : ।।
शीता लछीमन संजुतं : ।।
पथीगतं रा भी रामं भजेतु ३२

शोरठा

उमा रमा गुन गुढ़ : पंडीत मुनी पावही वीरती
पावही मोह वीमुढ : जे हरी वीमुख न धर्म रती :

।। चौपाई ।।

पुर नर भरथ प्रीती मै गाइ मती अनुरुप अनुप शोहाइ।
अब प्रभु चरीत शुनो अती पावन करत जे वन शुर नर मुनी भावन
एक वार चुनी कुशुभ शोहाए नीज कर भूखन राम बनाऐ :
शीतही पहीराऐ प्रभु शादर : बैठे फटीक शीला ऐक तापर :

अंत

छंद—कही सक न शारद शेष नारद शुनत पद पंकज गहे :
अश दीन बंधु क्रीपाल अपने भग्त गुन नीज मुख कहे :
शीर नाइ बारही वार चरनन्ह ब्रह्म पुर नारद गए :
ते धन्य तुलशी दाश आश विहाइ जो हरी रंग रऐ :
दोहा—रावनारी जश पावनः गावही शुनही जे लोग :
राम भग्ती दीढ पावही वीनु वीराग जप जोग :
दोहा—दीप शीखा शम जुवती रश मन जनी होशी पतंग :
भजहु राम तजी काम मन : करहु सदा शत शंग :

इती श्री पोथी आरन्यकांड : कथा शंपुरन जो देखा शो लीखा मम दोख न दीअते : ॥

बिशेष ज्ञातव्य—प्रति कैथी लिपि में है। लिपिकर्ता तथा लिपिकाल ज्ञात नहीं। पाठांतर विशेष हैं।

४७. अरण्यकांड। देशी कागज। पत्र—५३। आकार—८½ इंच लंबाई और ५½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—६। परिमाण (छंदों में)—४४७। खंडित, पत्र सं० १ खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

॥ चौपाई ॥

पूर नर भरत प्रीति मै गाई। मति अनुरूप अप अनूपू सुहाई ॥
अब प्रभु चरित सुनऊ अति पावन। करत जे बन सुर नर मुनि भावन ॥
एक बार चुनि कुसुम सुहाए। निज कर भूषन राम बनाए ॥
सीतहि पहिराए प्रभु सादर। बैठे फटिका सला पर भाधर ॥
सुर पति सुत धरि बायस बेषा। सठ चाहत रघुपति बन बेषा ॥
जिहि पिपीलिका सागर थाहा। महा मंदमति पावन चाहा ॥
सीता चरन चौंचे हति भागा। मूढ मंदमति कारन लागा ॥
चला वीधिर रघुनायक जाना। सीक धनुष सायक संधाना ॥

॥ दोहा ॥

अति कृपाल रघुनायक सदा दीन पर नेह
तासन आइ कीन्ह छल मूरष अवगुन गेह ॥ १ ॥

अंत

॥ चौपाई ॥

निज गुन सुनत बहुत सकुचाही। पर गुन सुनत अधिक हरषाही॥
समसीतल नहि त्यागहि नीती। सरल सुभाव सबन सन प्रीती॥
जप तप व्रत दम संजम नेमा। गुर गोविंद बिप्र पद प्रेमा॥
सरधा छमा मैत्रा दाया। प्रमुदित मम पद प्रीति अमाया॥
विरति विवेक विनय विग्याना। बोध जथारथ वेद पुराना॥
दंभ मान मद करहि न काऊ। भुलि न देहि कुमारग पांऊ॥
गावहि सुनहि सदा मम लीला। हेतु रहित परहित रत सीला॥
सुनु मुनि साधुन के गुन जेते। कहि न सकै सादर श्रुति तेते॥

॥ छंदः ॥

कहि सक न सारद सेस नारद सुनत पंकज गहे॥
अस दीनबंधु कृपाल अपने भगति गुन निज मुष कहे॥
सिर नाइ वारहि वार चरनन ब्रह्मपुर नारद गए॥
ते धन्य तुलसीदास आस विहाई जे हरि रंग रए॥

॥ दोहा ॥ रावनारि जस पावन गावहि सुनहि जे लोग॥
राम भगति दृढ पावहि विनु विराग जप जोग॥
दीप सिषा सम जुवती रस मन जनि होसि पतंग॥
भजऊ राम तजि काम मद करऊ सदा सत संग॥

इति श्रीरामचरित्रेमानसे सकलकालिकलुषविध्वंसिनी विमल वैराग्यं संपातंनीनाम तृतीयोसोपान : शुभं॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रथम पत्र खंडित है। लिपिकाल दिया नहीं है। लिपि स्पष्ट और अत्यंत सुंदर है। यत्र तत्र पाठांतर भी हैं।

किष्किंधा कांड

५८. किष्किंधाकांड। देशी कागज। पत्र—१५। आकार—१० इंच लंबाई और ५ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१०। परिमाण (छंदों में)—३७५। पूर्ण रूप—प्राचीन लिपि—नागरी। लिपिकाल सं १८३७ वि० शाके १७०२।

आदि

श्री गणेशाय नमः

॥ सोठा ॥

मुक्ति जन्म महि जानि ग्याग षानि अघ हानिकर
जह बस शंभु भवानि सो कासी सेइय कसन ॥
जरत सकल सुर बृंद विषम गरल जिन पान किया ॥
तेहि न भजसि मति मंद को कृपाल शंकर उरस ॥ २ ॥

चौपाई ॥

आगे चलेउ बहुरि रघुराया । ऋष्य मूक पर्बत नियराया ॥
तह बस सचिव सहित सुग्रीवा । आवत देष अतुल बल सीवा ॥
अति सभीत कह सुनु हनुमाना । पुरुष जुगुल बल रूप निधाना ॥
धरि वट रूप देषु तै जाई । कहेसु जानि जिय सैन बुझाई ॥
पठवा बालि होई मनु मैला । भाजौ तुरत तजौ यह सयला ॥
विप्र रूप धरि कपि तह गयउ । माथ नाइ अस पूछत भयउ ॥
को तुम स्यामल गौर सरीरा । छत्री रूप फिरहु बल वीरा ॥
कठिन भूमि कोमल पदगामी । कवन हेत वन विचरहु स्वामी ॥

अंत

दोहा

बलि बाँधत प्रभु बाढेउ सो तनु वरनि न जाई ॥
उभय घरीं मह दीन्हेउ सात प्रदच्छिन धाई ॥ ३४ ॥

॥ चौपाई ॥

अंगद कहा जाउ मै पारा । जिय संसय कछु फिरती वारा ॥
जामवंत कह तुम सब लायक । पठइय किमि सबही कर नायक ॥
कहेउ रीछपति सुनु हनुमाना । का चुप साधि रहेउ बलवाना ॥
पवन तनय बल पवन समाना । बुधि विवेक विग्यान निधाना ॥
कवन सो काज कठिन जग माही । जो नहि तात होत तुम पाही ॥
राम काज लगि तव अवतारा । सुनतहि भयो पर्वताकारा ।
कनक वरन तन तेज विराजा । मानहु अपर गिरिन्ह कर राजा ॥
सिंह नाद करि बारहि बारा । लीलहि नाघउ जलधि अपारा ॥

सहित सहाय रावनहि मारी । आनौ तुरत त्रीकूट उपारी ॥
जामवंत मै पूछौ तोही । उचित सिषावन दीजै मोही ॥
यतना करहु तात तुम जाई । सीता देषि कहहु सुधि आई ॥
तव निज भुज बल राजीव नयना । कौतुल लागि संग कपि शयना ॥
कपि सयन संग सघारि निसिचर राम सीतहि आनि है ॥
त्रैलोक पावन सुजसु सुर मुनि नारदादि वषानि है
जो सुनै गावै कहै समुझै परम पद नर पावही ॥
रघुवीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावही

दोहा

भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहि जे नर अरु नारि ॥
तिन्ह के सकल मनोरथ सिद्ध करहि तिपुरारि ॥

सोठा

नील जलद तण स्याम काम कोटि सोभा अधिक ॥
सुनिय तासु गुन ग्राम्य जासु नाम अघ षग बधिक ॥ ३६ ॥

॥ चौ ॥

इति श्री रामचरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्यसेने विमल विग्यान भक्ति संपादिनीनो नाम चतुर्थ शोपान किःकिंधा काण्ड समाप्त संपूर्ण संवत १८३७ शाके १७०२ समय नाम वैशाष सुदि चतुर्थी चंद्रवासरे इदं पुस्तक लिषितं वेनी प्रशाद शुक्ल ॥

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल सं० १८३७ शाके १७०२ है । ग्रंथारंभ में जो श्लोक होना चाहिए—नहीं है । यत्र तत्र पाठांतर भी हैं ।

५६. किष्किंधाकांड । देशी कागज । पत्र—१६ । आकार—१० इंच लंबाई और ५४/१० इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—८ । परिमाण (छंदों में) २६७ । पूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—सं० १८४२ वि० ।

आदि

श्री गणेशाय नीमांग

सोठा : मुकती जनम मह जनि ॥ ज्ञान षांनि अघ हानीकर :
जह बस शंभु भवानि ॥ शौ कासी सेउये कस न ॥ १ ॥

जरत सकल सुर बृंद : विषम गरल जेहि पान किय ॥
तेहि न भजसि मतिमंद : को कृपाल संकरा सरिस ॥ २ ॥

चौपइ : आग चले बहुरि रघुराया ॥ रीषी मुक परबत नियराया ॥
ताहा रह सचीव सहित सुग्रीवा ॥ आवत देषि अतुल बलसीवा ॥

अंत

छंद कपि सैन संग सम्हारि निशिचर रांम सीतहि आनिहें
त्रैलोक्य पांवन सुजस सुर मुनि नारदादि वषांनिहें
जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावई
रघुबीर पद पाथोज मधुकुर दाश तुलसी गावई

शोरठा नीलोत्पल दल स्याम काम कोटि शोभा अधिक
सुनिय तास गुण ग्राम जास नांम अघ खग वधिक ३०

इति श्री तुलसी दास विरचितं रामचरित्रे किस्कंधा समये वालि निग्रणो कलि कलुख विद्धंसने समाप्तम् । सिंधुकूल सारंग पुर चारि वरण कौ वास निज निज धर्म सदा धरें इष्ट मंत्र प्रकास । लिषि पूरण पुस्तक करी प्रथमहि दौलत रांम । द्वितीय नेदसुष द्विज तृतीय गणपति सुह्रद ललाम ॥ मिति अर्क सुदी भृगु छट्टि समवि मति धीर ठारह सै व्यालीश नृप विक्रम वत्सर वीर ॥ श्री राम

विशेष ज्ञातव्य—प्रति का पाठ अत्यंत भ्रष्ट है । फिर भी जैनियों द्वारा प्रतिलिपि किए जाने के कारण प्रति का महत्व है । यह प्रति समुद्र के किनारे सारंगपुर में गणपति ने लिखी थी । सर्व प्रथम दौलत राम ने प्रतिलिपि की, उनके बाद नैन सुख । नैनसुख के द्वारा की गई उसी प्रतिलिपि से सं० १८४२ वि० में प्रतिलिपि की गणपति ने । पाठांतर विशेष हैं ।

जामवंत कहि तुम सब लायक । पठई हनु जे सबहि कर नायक ॥
(ह० प्र०)

जामवंत कह तुम्ह सब लायक । पठइअ किमि सबही कर नायक ॥
(४ । २६।२ सभा की मुद्रित प्रति)

६०. किष्किंधा कांड । देशी कागज । पत्र—२० । आकार—८ इंच लंबाई और ५.१ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१६ । परिमाण (छंदों में)—२८५ । पूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—संवत् १८६०, १२१० फ० ।

आदि

श्री गणेशायनमः श्लोक ॥
कुन्देदीवरसुन्दरावतीबलौ　विज्ञानधामाम्बुधी
सोभोढ्यो वरधन्विनौ अतिनुतौ गोविप्रवन्दप्रियौ-
मायामनुषरूपिणौ　रघुवरौ　सधर्म्माम्वभौ
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः १
ब्रह्मांभोधिसमुद्भवं कलिमलंप्रध्वंसिनं चाव्ययं
श्रीमत्संभुमुखेन्दुसुन्दरपरं संसोभितं सर्वदा
संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं
धन्यास्ते कृतिणः पिबति सततं श्रीरामनामामतम् ॥

सोरठा

मुक्ति जन्म महि जान ग्यान षानि अघहानिकर
जहं बस संभु भवानि सो कासी सेइय कस न ॥ १ ॥
जरत सकल सुर बृन्द विषम गरल जेहि पान किय
तेहि न भजसि मतिमंद को कृपाल संकर सरिस

अंत

दोहा

भव भैषज रघुनाथ जस सुनही जे नर औ नारी
तीन्ह के सकल मनोरथ सीध करही त्रीपुरारी

सोरठा

नव तमाल तन स्याम काम कोटी सोभा अधीक
सुनीय तासु गुन ग्राम जासु नाम अघ षग वधीक

इती श्रीरामचरीत्रे मानसे सकलकलीकलुष वीध्वंसनो विमल वैराग्य सम्वादनोनाम चतुर्थ सौपान किसकिन्दा काण्ड समाप्त सिद्धरस्तु सुभ मस्तु जाद्रसीमच्चर द्दष्ट्वा ताद्दसी लिखितं मया। सम्वत् १८ सै ६० शाल शन १२१० शाल फसली ॥ १ ॥ श्रीराम श्रीराम

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल सं० १८६० वि० (१२१० फसली) है। प्रति पूर्ण है।

६१. किष्किंधाकांड। देशी कागज। पत्र—१०। आकार—१२$\frac{3}{1}$० इंच लंबाई और ५$\frac{6}{1}$० इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१३। परिमाण (छंदों में)—३३३। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८६४ वि०।

आदि

श्री गणेशाय नमः ॥ कुंदेंदी बर सुंदरावति बलौ बिग्यान धामावुभौ ॥
सोभाढयौ बर धन्विनौ श्रुतिनुतौ गो विप्र वृंद प्रियौ ॥
माया मानुषरुपिणौ रघुवरौ सद्धर्म बर्मौ हितौ ॥
शीतान्वेषण तत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौहिन ॥ १ ॥
ब्रह्मांभोधि समुद्भवं कलि मल प्रध्वंसनं चाव्ययं ॥
श्री मच्छंभुसुखेंदु सुंदर बरे संशोभितं सर्वदा ॥
संसारामय भेषजं सुषकरं श्री जानकी जीवनं ॥
धन्यास्ते कृतिनः पिवंति सततं श्री राम नामामृतं ॥ २ ॥

सोरठा ॥ मुक्ति जनम मही जानि ॥ ग्यांन षांन अघ हानि कर ॥
जह बस संभु भवानि ॥ सो काशी सेईये कस न ॥ १ ॥
जरत सकल सुरबृंद ॥ विषम गरल जेहि पान किय ॥
तेहि न भजसि मन मंद ॥ को कृपाल संकर सरस ॥ २ ॥

चौपई ॥ आगे चले बहुरि रघुराया ॥ रिषी मुक पर्बत नियराया ॥
तहं रह शचिव सहित सुग्रीवां ॥ आवत देषि अतुल बल सीवां ॥
अति सभीत कह सुनु हनुमाना ॥ पुरुष जुगल बल रूप निधाना ॥
धरि बटु रूप देष तैं जाई ॥ कहेशु यांनि जिय शयन बुझाई ॥
पठए बालि होहि मन मैला ॥ भागौं तुरत तजौं यह शैला ॥
बिप्र रूप धर कपि तह गयेउ ॥ माथ नाय पूछत अस भयेउ ॥
को तुम स्यामल गौर सरीरा ॥ छत्री रूप फिरहु बन बीरा ॥
कठिन भूमि कोमल पद गामी ॥ कवन हेतु विचरहु बन स्वामी ॥

× × ×

अंत

कहइ रीछपति सुनु हनुमाना ॥ का चुप साध रहे बलवांना ॥
पवन तनय बल पवन समाना ।। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना ॥
कवन सो काज कठिन जग मांही ।। जो नहि होइ तात तुम्ह पाही ॥
राम काज लगि तव अवतारा ॥ सुनतहि भयेउ परबताकारा ॥
कनक बरन तन तेज बिराजा ॥ मानहु अपर गिरिन कर राजा ।
सिंघनाद कर बारहि बारा ॥ लीलहि नांघउ जल निधि षारा ॥
सहित सहाय रावनही मारी ॥ आंनौ इह्हा त्रिकूट उपारी ॥
जामवंत मैं पूछौं तोही ॥ उचित सिषावन दीजेहु मोही ॥
इतनां करहु तात तुम जाई ॥ सीतहि देषि कहेहु सुधि आई ॥
इहिते अधिक सिषावनि नाही ॥ बेगि करहु तुम्ह धरि मनमाही ॥
तब निज भुजबल राजिव नयना ॥ कौतुक लागि संग कपि सेना ॥
छंद॥ कपि सेन संग सघारि निसिचर राम सीतहि आंनहि ॥
त्रैलोक पावन सुजस सु मुनि नारदादि बषानि है ॥
जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावई ॥
रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावई ॥

दोहा ॥ भव भेषज रघुनाथ जसु ॥ सुनहि थे नर अरु नारि ॥
तिनकर सकल मनोरथ ॥ सिध करहि त्रिपुरारि ॥ ३० ॥

सोरठा॥ नीलोत्पल तन स्यांम ॥ काम कोटि सोभा अधिक ॥
सुनिअ तासु गुन ग्राम ॥ जासु नाम अघ षग बधिक ॥३१॥

इति श्री राम चरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विष्नव संतोष पादिनी नाम चतुर्थो सोपान ॥ ४ ॥ समाप्तं ॥ श्री ॥ संवत् १८६४ मासोत्तमासे श्रावण मासे कृष्न पक्षे तिथौ सप्तम्यां रविदिने लिषतं ब्राह्मण मगनी ॥ लिषायतं वैष्णव मनोहर दास तत् सिष्य सेवादास आत्म पठनार्थे ॥शुभंभूयात् ॥ श्रीरस्तु ॥

विशेष ज्ञातव्य—यह प्रति सुस्पष्ट अक्षरों में लिखी हुई है। प्रतिलिपि-कार मगनी नामक कोई ब्राह्मण थे। जिन्होंने मनोहरदास के शिष्य सेवादास के पठनार्थ रामचरित्र मानस की पूर्ण प्रतिलिपि की थी। संपूर्ण कांड उपलब्ध नहीं। प्रति में प्रकाशित रामचरित मानस से चौपाइयों की संख्या अधिक है। पाठांतर भी मिलते हैं।

६२. किष्किंधाकांड । देशी कागज । पत्र—१७ । आकार—८ ६/१० इंच लंबाई और ४। ७/१० इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—११ । परिमाण (छंदों में)—३२७ । पूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—सं॰ १८७३ वि॰ ।

आदि

श्री गणेशाय नमः ।। जिहि सुमिरे सिधि होहि गन नायक करिवर बदन
करहु अनुग्रह सोइ बुधि रासि सुभ गुन सदन
चौ…… आगे चले बहुरि रघुराया रीकमूक परवत नियराया
तह रह सचिव सहित सुग्रीवा आवत देखि अतुल बलसींवा
अति सभीत कह सुनु हनुमाना पुरुष जुगल बल रूप निधाना
धरि वट रूप देषु तै जाई कहेसु मोहि निज सैन बुझाई
पठवा बालि होई मन मैला भागौ तुरत तजौ एह सैला
बिप्र रूप धरि कपि तह गयऊ दै असीस पूछत अस भयऊ
को तुम स्यामल गौर सरीरा छत्री रूप फीरौहु बन बीरा
कठिन भूमि कोमल पद गामी कवन हेतु बिचरहु बन स्वामी
मृदुल मनोहर सुंदर गाता सहत दुसह बन आतप बाता
की तुम तीनि देवन मह कोऊ नर नारायन की तुम दोऊ

अंत

सहित सहाइ रावनहि मारी आनव ईहा त्रिकूट उपारी
जामवंत पूछौं मै तोही उचित सिषावन दीजे मोही
इतना करहु जाइ तुम सोही सीतहि देषि कहौं सुधि आई
तब निज भुजबल राजिव नैना कौतुक लागि संग कपि सैना
छंद कपि सयन संग सधारि निसिचर राम सीतहि आन्यिहौं
त्रैलोक पवन सुजस सुर मुनि नारदादि वषानिहौं
जे सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावही
रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावही
दोहा भव भेषज रघुनाथ जस सुनहि जे नर अरु नारि
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्धि करहि त्रिपुरारि
सोरठ नीलोतपदल स्याम कोटि सोभा अधिक
सुनिए तासु गुन ग्राम जासु नाम अघषग बधिक

इति श्री राम चरित्रे मानसे सकल कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य संपादिनि नाम चतुरथो सौपनः संम्वत् १८७३ मास उत्तम श्रावन कृष्न पक्षे चतूर्थी कः समाप्त शुभः लीषितं पुस्तकं टीकाराम उपाध्यः ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रतिलिपिकर्ता टीकाराम उपाध्याय हैं। उन्होंने सं १८७३ में प्रतिलिपि की थी। पाठांतर की दृष्टि से प्रति कुछ महत्व रखती है।

६३. किष्किंधाकांड। बाँसी कागज। पत्र—३१। आकार ६$\frac{3}{8}$ इंच लंबाई और ४$\frac{7}{10}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१०। परिमाण (छंदों में)—६५६। पूर्ण। रूप—आधुनिक। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं १८८०, शाके १७४५।

आदि

श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः ॥ श्री गुरुभ्यां नमः अथ किसकिंधा कांड प्रारंभ ॥

श्री गुरु चरण सरोज निज मन मुकुर सुधारी ॥
वरणौ रघुपती विमल जस जो दायेक फल चारी ॥

चौपाई

सुनहुँ उम छबि निधी गुण धामा। पंपा सार ते चले श्रीरामां।
अनुज समेत तहा चली आये। जहा प्रकाशिक मुनि ध्यान लगाये।
पूछा मुनहि नया पद माथा। जदपि सब जानत रघुनाथा।
सुनी प्रीय बचन मुनीस प्रवीना। भाग्य सराहि हरीष अति कीना।
कर जोरी तब प्रीति दीढाई। प्रेम प्रमोद न हृदये समाई।
तदपि सुनौ तुम्ह अति कुल देवा। राम चहहि निज सुजस गवावा।

अंत

राम काज लगु तव अवतारा। सुनतहि भयौ पर्वताकारा ॥
कनक वरन तन तेज बिराजा। मनहुँ अपर गिरि निकर विराजा ॥
सिंहनाद करी वारहि वारा ॥ लीलही लांघहि जलधि आपारा ॥
सहिति सहाई रावनही मारी ॥ अन्यौ चहत त्रकूट उपारी ॥
जामवंत मै पूछौ तोहि ॥ उचित सिषावन दीजै मोहि ॥
यतना करहुँ तात तुम्ह जाई ॥ सीतही देषि कहौ सुधि आई ॥

येहितै अधिक सिषावनु नाहि ॥ वेगी करहु तुम धरी मन माहि ॥
तब निज भुज बल राजीव नयना ॥ कौतुक लागी संग कपि सयना ॥

॥ छंद ॥

कपि सयन संग संघारी निसिचर राम सीतहि आनिहै ॥
त्रैलोक पावन सुजसु सुर नर मुनि नारदापि वषानिहै ॥
जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावहि ॥
रघुवीर पद कंज मधुकर दास तुलसी गावहि ॥

॥ दोहा ॥

भव मेषज रघुनाथ जस सुनत जे नर नारि ॥
तिनकर सकल मनोरथ सिद्धि करहि तृपुरारी ॥

॥ दोहा ॥

नील तत तन श्याम ॥ काम कोटि सोभा अधिक ॥
सुनत तासु गुण ग्राम ॥ जासु नाम षग अघ वधिक ॥

इति श्रीरामचरित्रमानसे सकलकलि कल······सिने ॥ विमल विशुद्ध संतोष संपा······चतुर्थ कांड सोपान ॥ किसकिंवा······संपूर्ण समाप्त शुभमस्तु ॥ श्री शुभ·········संवत् १८८० ॥ शाके १७४५··············

विशेष ज्ञातव्य—लि० का० सं० १८८० वि० शाके १७४५ है। पत्र सं० १ से ३ तक क्षेपक कथा दी गई है। उसके बाद मूल प्रारंभ हुआ है। पाठांतर भी है। अंतिम पत्र की स्याही मद्धिम पड़ गई है जिससे कुछ शब्द पढ़े नहीं जा सके।

'तहा रहे सचीव सहीत सुग्रीवा। आवत देषि अतुल बल सींवा।

'मुनिवर वेष पानी सर चापा'।'

'मुनिवर वेष पानी सर चापा' कहाँ से और कैसे लिखा गया है—समझ में नहीं आता।

६४. किष्किंधाकांड। देशी कागज। पत्र--६। आकार—१३ $\frac{3}{10}$ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ) १४। परिमाण (छंदों में)—२६६। अपूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८८३।

इति श्री राम चरित्रे मानसे सकल कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य संपादिनि नाम चतुरथो सौपनः संम्वत् १८७३ मास उत्तम श्रावन कृष्न पक्षे चतूर्थी कः समात शुभः लीषितं पुस्तकं टीकाराम उपाध्यः।

विशेष ज्ञातव्य—प्रतिलिपिकर्ता टीकाराम उपाध्याय हैं। उन्होंने सं १८७३ में प्रतिलिपि की थी। पाठांतर की दृष्टि से प्रति कुछ महत्व रखती है।

६३. किष्किंधाकांड। बाँसी कागज। पत्र—३१। आकार ६$\frac{3}{5}$ इंच लंबाई और ४$\frac{7}{10}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१०। परिमाण (छंदों में)—६५६। पूर्ण। रूप—आधुनिक। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं १८८०, शाके १७४५।

आदि

श्री गणेशायनमः॥ श्री सरस्वत्यैनमः॥ श्री गुरुभ्यां नमः अथ किस-किंधा कांड प्रारंभ॥

श्री गुरु चरण सरोज निज मन मुकुर सुधारी॥
बरणौ रघुपती विमल जस जो दायेक फल चारी॥

चौपाई

सुनहुँ उम छबि निधी गुण धामा। पंपा सार ते चले श्रीरामांः।
अनुज समेत तहा चली आये। जहा प्रकाशिक मुनि ध्यान लगाये।
पूछा मुनहि नया पद माथा। जदपि सब जानत रघुनाथा।
सुनी प्रीय बचन सुनीस प्रवीना। भाग्य सराहि हरीष अति कीना।
कर जोरी तब प्रीति दीढाई। प्रेम प्रमोद न हृदये समाई।
तदपि सुनौ तुम्ह अति कुल देवा। राम चहहि निज सुजस गवावा।

अंत

राम काज लगु तव अवतारा। सुनतहि भयौ पर्वताकारा॥
कनक वरन तन तेज बिराजा। मनहुँ अपर गिरि निकर विराजा॥
सिंहनाद करी वारहि बारा॥ लीलही लांघहि जलधि आपारा॥
सहिति सहाई रावनही मारी॥ अन्यौ चहत त्रकूट उपारी॥
जामवंत मै पूछौ तोहि॥ उन्चित सिषावन दीजै मोहि॥
यतना करहुँ तात तुम्ह जाई॥ सीतही देषि कहौ सुधि आई॥

येहितै अधिक सिषावनु नाहि ।। वेगी करहु तुम धरी मन माहि ।।
तब निज भुज बल राजीव नयना ।। कौतुक लागी संग कपि सयना ।।

।। छंद ।।

कपि सयन संग संघारी निसिचर राम सीतहि आनिहै ।।
त्रैलोक पावन सुजसु सुर नर मुनि नारदापि वषानिहै ।।
जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावहि ।।
रघुवीर पद कंज मधुकर दास तुलसी गावहि ।।

।। दोहा ।।

भव भेषज रघुनाथ जस सुनत जे नर नारि ।।
तिनकर सकल मनोरथ सिद्धि करहि त्रपुरारी ।।

।। दोहा ।।

नील तत तन श्याम ।। काम कोटि सोभा अधिक ।।
सुनत तासु गुण ग्राम ।। जासु नाम षग अघ वधिक ।।

इति श्रीरामचरित्रमानसे सकलकलि कल······सिने ।। विमल विशुद्ध संतोष संपा······चतुर्थ कांड सोपान ।। किसकिंधा······संपूर्ण समाप्त शुभमस्तु ।। श्री शुभ·········संवत् १८८० ।। शाके १७४५···············

विशेष ज्ञातव्य—लि० का० सं० १८८० वि० शाके १७४५ है। पत्र सं० १ से ३ तक क्षेपक कथा दी गई है। उसके बाद मूल प्रारंभ हुआ है। पाठांतर भी है। अंतिम पत्र की स्याही मद्धिम पड़ गई है जिससे कुछ शब्द पढ़े नहीं जा सके।

'तहा रहे सचीव सहीत सुग्रीवा। आवत देषि अतुल बल सींवा।
'मुनिवर वेष पानी सर चापा'।'

'मुनिवर वेष पानी सर चापा' कहाँ से और कैसे लिखा गया है—समझ में नहीं आता।

६४. किष्किंधाकांड। देशी कागज। पत्र—९। आकार—१३ ५/१० इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ) १४। परिमाण (छंदों में)—२९९। अपूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८८३।

आदि

अस कहि चला महा अभिमांनी । तृन समांन सुग्रीवहिं जांनी ॥
बालि देखि सुग्रीवहिं ठाढा । हृदय क्रोध मुनि बहु बिधि बाढा ॥
भिरे उभय बालि पुनि तर्जा । मुष्टिक मारि महाधुनि गर्जा ॥
तब सुग्रीव विकल होइ भागा । मुष्टि प्रहार वज्र सम लागा ॥
मै जो कहा रघुवीर कृपाला । बंधु न होइ मोर यह काला ॥
एक रूप भ्राता तुम्ह दोऊ । तेहि भ्रंम ते नहीं मारेउ सोऊ ॥
कर परसा सुग्रीव सरीरा । तन भा कुलिश गई सब पीरा ॥
मेली कंठ सुमन की माला । पठवा पुनि बल देइ बिसाला ॥
पुनि नाना बिधि भई लराई । बिटप ओट देषहिं रघुराई ॥
दो । बहु छल बल सुग्रीव करि हिये हारि भय मांनि ॥
मारा बालिहि राम तब हृदय मांझ सर तांनि ॥

अंत

॥ दो ॥ भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहि जे नर अरु नारि ॥
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिपुरारि ॥
सोर्ठा ॥ नीलोत्पल दल स्यांम कोटि काम सोभा अधिक ॥
सुनिय तासु ग्रांम जासु नाम अघ षग बधिक ॥

इति श्री रामचरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विशुद्ध संपादिनी नाम चतुर्थ सोपान समाप्त ॥ १ ॥ शुभं भुवात्.................. रक्त ॥ मीति मार्गसिर सुदी ॥ २ ॥ रवि वासरां । बयानैं शुभ स्थांन पारारिषी पठनार्थ लाला चिरंजीव जीतमल ॥ नृमलराम ॥ वांचैं विचारै जिन कूं नमस्कार डंडवत राम वंचनात् ॥ श्री । श्री ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति अपूर्ण है । प्रारंभ के ४ पत्र नहीं हैं । पाठांतर विशेष हैं । प्रति बियाने (भरतपुर राज्य) में निर्मलराम ने लिखी है । प्रति के अक्षर सुस्पष्ट और साफ हैं ।

६५. किष्किंधाकांड । देशी कागज । पत्र—२७ (पत्र सं ४ से ३० तक) । आकार—११ इंच लंबाई ६½ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—११ । परिमाण (छंदों में)—५२० । खंडित । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—१८८६ वि. ।

आदि

× × ×

॥ दोहा ॥

तब हनुमंत उभय दिसि कही कथा समुझाई ॥
पावक साखी देइ करि जोरी प्रीति बढाई ॥

॥ चौपाई ॥

कीन्हि प्रीति कछु बीच न राखा । लछिमन राम चरित सब भाखा ॥
कहि सुग्रीव नयन भरि बारी । मिलब नाथ मिथिलेस कुमारी ॥
मंत्रिन सहित इहां इक बारा । बैठ रहेउ मैं करत बिचारा ॥
गगन पंथ देखी मैं जाती । परबस परी बहुत बिलखाती ॥
राम राम हा राम पुकारी । हमहि देखि दीनेउ पट डारी ॥
मागा राम तुरित तिहि दीन्हा । पट उर लाय सोच अति कीन्हा ॥
कहि सुग्रीव सुनहु रघुबीरा । तजहु सोच मन आनहु धीरा ॥
सब प्रकार करिहौं मिवकाई । जिहि बिधि मिलेहि जानकी आई ॥

अंत

॥ छंद ॥

कपि सयन संग संघारि निसिचर राम सीतहि आनिहैं ॥
त्रैलोक पावन सुजस सुर मुनि नारदादि वषानिहैं ॥
जे सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावहीं ॥
रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावहीं ॥५३॥

॥ दोहा ॥

भव भेषज रघुनाथ जस सुनहि जे नर अरु नारि ॥
तिन्ह कर सकल मनोरथहि सिधि करहि त्रिपुरारि ॥ ५४ ॥

॥ सोरठा ॥

नीलोत्पलं दल स्याम काम कोटि सोभा अधिक ॥
सुनियें तासु गुण ग्राम जासु नाम खग अघ वधिक ॥ ५ ॥

इति श्री रामचरित्र मानसे सकल कलिक कलुषविध्वंसने विमल वैराग्य संपादिनीनाम चतुर्थो सोपान संपूर्णो ॥ किसकंदाकांड संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १८८६ ॥ आषाढ कृष्ण ॥ २ लिषितं मिश्र घुरामल पठनार्थं चिरंजीव लाला राधे ॥ श्री रामचंद्र जानुकी ॥ जै बोलो हनुमान की ॥ श्री राम ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ आदि से खंडित है अर्थात् पत्र सं० १ से ३ तक नहीं है । लिपिकाल संवत् १८८६ वि० है । लिपि स्पष्ट एवं सुंदर है ।

६६. किष्किधाकांड। देशी कागज। पत्र—१८। आकार—६ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—२०। परिमाण (छंदों में)—२७०। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—कैथी। लिपिकाल—सं० १८६४।

आदि

.........। दीनेउ मोही राज बरीआइ॥
बाली सुमारी ताही ग्रह आवा। देषी मोही जीअ भेद बढाया॥
रीपु समान मोही मारसी भारी। हरी लीन्ही सरसु अरु नारी॥
ताके भए रघुबीर क्रीपाला। सकल भुवन मह फीरेउ बीढाला॥
एहा स्राप बस आवत नाही। तदपी सभीत रहौ मन माही॥
तब पुछत भए क्रीपानीकेता। बालीही स्राप भए केही हेता॥

दोहा

तब नीज हृदय बीचारी जोरी पानीं अस्तुती करत
सुनहु बचन दुषहारी कहौ कथा सब स्राप की

चौपइ

सुनहु नाथ इतिहास पुराना। दुंदभी नाम असुर बलबाना
मल जुध्य की गति सब जानै। अवर बली काहु मनही न आनै
एक बार जलनीधी तट आवा। बैठी मधी तेही सीधु थहावा
जबहीं कटी प्रमान जल भएउ। करी अभीमान मथन तब लएउ
मथत सीधु ब्याकुल सब गाता। जीव जंतु सब भए नीपाता

अंत

चौपइ

अंगद कहेउ जाउ मै पारा। जीअ संसए कछु फीरती बारा
जामवंत कहा तुम सब लाइक। पठइए कीमी सब ही के नाइक
कहै रीछपति सुन हनुमाना। का चुप साधी रहेउ बलवाना
पवनतन बल पवन समाना। बुधी बीबेक बीग्यान नीधाना
कवन सुकाज कठीन जगमाही। जों नही तात होत तुम पाही
राम काज लगी तब अवतारा। सुनतही भऔ परवत आकारा
कनक बरन तन तेज बीराजा। मानहु अपर गीरन के राजा
सीघनांद करी बारही बारा। लीलही नाघौ जलनीधी पारा

सहीत सहाइ रावनही मारी । आनौ एहा त्रीकुट उपारी
जामवंत मै पुछौ तोही । उचीत सीषावन दीजै मोही
इतना करहु तात तुम जाइ । सीतही देषी कहौ सुधी आइ
एहीतै अधीक सीषावन नाही । बेगी करहु तुम धरी मन माही
तब नीज भुजबल राजीवनैना । कौतुक लागी संग कपी सैना

छंद

कपी सैन संग संघारी नीसचर राम सीतही आनीहै
त्रइलोक पावन सुजस सुर मुनी नारदादी बषानीहै
जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावही
रघुवीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावही

दोहा

भव भेषज रघुनाथ जस । सुनही जे नर अरु नारी
तीन के सकल मनोरथ । सीधी करै त्रीपुरारी

सोरठा

नील जलद तन स्याम : काम कोटी सोभा अधीक :
सुनीऐ तासु गुन ग्राम : जसु नाम अघ खग बधीक :

इती श्री रामचरित्रेमानसे सकल कली कलुषबीधंसने बीमल बीराग्य संपादीनी नाम कीसीकीदाकांड संपुरन समापत सुभ संवतु १८८४ जेठ सुदि १४ सनीचर बार ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रारंभ के ४ पत्र खंडित हैं। लिपि कैथी है। लिपि-काल सं० १८६४ वि० है। यत्र तत्र पाठांतर भी हैं। उदाहरणार्थ एक दोहा द्रष्टव्य है। स्व० शंभुनारायण चौबे द्वारा संपादित मानस में दोहा इस प्रकार है—

बलि बाँधत प्रभु बाढेउ सो तनु बरनि न जाइ ।
उभय घरी महँ दीन्हीं सात प्रदच्छिन धाइ ॥ २६ ॥

प्रस्तुत प्रति में—

"बलीही छलत प्रभु बाढेउ : सो तनु बरनी न जाइ :
उभए घरी मह दीनेउ : सात प्रदछीन धाइ :

६७. किष्किंधाकांड । देशी कागज । पत्र—८ । आकार ११ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१५ । परिमाण (छंदों में)—३१५ । पूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—सं० १६१४ वि० ।

आदि

श्रीमते रामा नुजायनमः ॥ श्लोक ॥ कुंदेंदीवर सुंदरावतिबलौ विज्ञान-धामावुभौ शोभाढ्यौ वर धन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृंदप्रियौ ॥ माया मानुष रूपिनौ सद्धर्म वर्मौ हितौ सीतान्वेषण तत्परौ पथि गतौ भक्तिप्रदौ तौ हितौ॥१॥ ब्रह्मांभोधि समुद्भवं कलिमल प्रध्वंसिनं चाव्ययं श्रीमच्छंभुमुखेंदु सुखरं संशोभित सर्वदा ॥ संसारामय भेषजं सुखकरं श्री जनकी जीवनं धन्यास्ते कृतिनः पिवंति सततं श्री रामनामामृतं ॥ २ ॥

सोरठा ॥ मुक्ति जन्म महि जानि ज्ञान षानि अघ हानिकर ॥
जहै बस शंभु भवानि सो कासी सेइय कस न ॥ १ ॥
जरत सकल सुर वृंद विषम गरल जेहि पान किअ ॥
तेहि न भजसि मतिमंद को कृपाल शंकर सरिस ॥ २ ॥

चौ० ॥ आगे चलेउ बहुरि रघुराई ॥ रिषिमुक पर्वत गए नियराई ॥
तहँ बस सचिव सहित सुग्रीवा ॥ आवत देषु अतुल बल सीवा ॥
अति सभीत कह सुनु हनुमाना ॥ पुरुष जुगल बल रूप निधाना ॥
धरि बटुरूप देषु तुम जाई ॥ कहेसु जान जिय सयन बुझाई ॥
पठवा बालि होइं मन मयला ॥ भागो तुरत तजौ एह सयला ॥
विप्र रूप धरि कपि तहाँ गएऊ ॥ माथ नाइ पूछत अस भयऊ ॥

अंत

चौ० ॥ अंगद कहेउ जाव मै पारा । जिय संसय कछु फिरति बारा ॥
जाम्बवंत कह तुम सम लायक । पठइय किमि सभही कर नायक ॥
कहै रिछपति सुनु हनुमाना । का चुप साधि रहेउ बलवाना ॥
पवनतनय बल पवन समाना । बुद्धि विवेक विज्ञान निधाना ॥
कवन सो काज कठिन जगमाही । जो नहि होत तात तोहि पाही ॥
रामकाज लगि तव अवतारा । सुनत भएउ कपि पर्वत कारा ॥
कनक बरन तन तेज विराजा । मानहु अपर गिरिन्ह कर राजा ॥
सिंहनाद करि बारहि बारा । लीलहि नाघहि जलनिधि षारा ॥

सहित सहाय रावनहि मारी । आनौ इहा तृकूट उपारी ॥
जाम्बवंत मै पूछौ तोही । उचित सिषावन दीजै मोही ॥
एतना करेहु तात तुम्ह जाई । सीतहि देषि कहेउ सुधि आई ॥
तब निज भुजबल राजिव नयना । कौतुक लागि संग कवि सयना ॥

छंद ॥ कपि सेन संग संहारि सी नीसिचर राम सीतहि आनिहै ॥
त्रैलोक्य पावन सुजस सुर मुनि नारदादि बषानिहै ॥
जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावही ॥
रघुवीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावही ॥ २ ॥

दोहा ॥ भव भेषज रघुनाथ जस सुनहि जे नर अरु नारि ॥
तिन्हके सकल मनोरथ सिद्ध करहि त्रिपुरारि ॥ ३१ ॥

सोरठा नीलोत्पल तन स्याम काम कोटि सोभा अधिक ॥
सुनिय तासु गुन ग्राम जासु नाम अघ षग वधिक । ३४ ॥

इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य संदिनो नाम श्री मद्गोसाइ तुलसीदासा कृत रामायन चतुर्थं सोपान किष्किंधाकांड संपूर्णम् ॥ शुभंमस्तु ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति सुस्पष्ट स्वच्छ अक्षरों में लिखी गई है । लिपिकर्ता रामशरण दास हैं । यत्र तत्र पाठांतर भी मिलते हैं । प्रति में संशोधन भी किया गया है ।

६८. किष्किंधाकांड । पत्र –१५ । आकार —८½ इंच लंबाई और ४½ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१० । परिमाण (छंदों में)—३०० । खंडित । पत्र—सं० २ नहीं है । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल – अज्ञात ।

आदि

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री जानकीवल्लभो जयति ॥
ॐ कुंदेंदीवरसुंदरावतिबलौ विज्ञानधामांवुभौ ॥
सौभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृंदप्रियौ ॥
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्म वम्मौ हितौ ॥
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौहि नः ॥ १ ॥

ब्रह्मांभोधिसमुद्भवं कलिमल प्रध्वंसनं चाव्ययं ॥
श्रीमच्छंभुमुखेंदुसुंदरवरं संशोभितं सर्वदा ॥
संसारामयभेषजं सुषकरं श्री जानकीजीवनं ॥
धन्यास्ते कृतिनः पिबंति सततं श्री रामनामामृतं ॥ २ ॥

× × ×

नाथ जीव तव माया मोहा । सो निस्तरै तुम्हारेहि छोहा ॥
तापर मैं रघुवीर दुहाई । जानौ नहीं कछु भजन उपाई ॥
सेवक सुत पति मातु भरोसे । रहै असोच बनै प्रभु पोसें ॥
असि कहि परेउ चरन अकुलाई । निज तनु प्रगटि प्रीति उर छाई ॥
तब रघुपति उठाइ उर लावा । निज लोचन जल सींचि जुडावा ॥
सुनु कपि जिअ मानस जिनि ऊना । तै मम प्रिय लछिमन तें दूना ॥

अंत

॥ छंद ॥

कपि सेन संग संघारि निसिचर रामु सीता आनिहैं ॥
त्रैलोक पावन सुजसु सुर मुनि नारदादि वषानिहैं ॥
सो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावही ॥
रघुवीर पद पायोज मधुकर दास तुलसी गावही ॥

॥ दोहा ॥

भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहि जे नर औ नारि ॥
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहि त्रिपुरारि ॥

॥ सोरठा ॥

नीलोतपल तन स्याम काम कोटि सोभा अधिक ॥
सुनिअ तासु गुण ग्राम जासु नाम अघ षग वधिक ॥ ३२ ॥

इति श्री रामचरित मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसने श्री शुक संष संपादनं नाम चतुर्थः सोपानः समाप्तः ॥ इति सुंदर कांड समाप्तेति शुभम् ॥

विशेष ज्ञातव्य—लि० का० अज्ञात है । ग्रंथ १६ पत्रों में समाप्त किया गया है पर पत्र सं० २ नहीं है। ग्रंथ के अंत की पुष्पिका में भूल से 'किष्किंधा कांड' के स्थान पर 'सुंदर कांड' लिख दिया गया है। किसी महाशय ने सुंदरकांड को काट कर आधुनिक स्याही से 'किष्किंधाकांड' लिख दिया है ।

लिखावट अत्यंत सुंदर और सुपाठ्य है। कहीं कहीं पाठ भेद भी हैं। ग्रंथ के आरंभ में एक सुंदर चित्र भी है।

६६. किष्किंधाकांड। पत्र—२३। आकार—१०इंच लंबाई और ६$\frac{9}{10}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—१७। परिमाण (छंदों में)—२६६। अपूर्ण। रूप—जीर्ण। लिपि—कैथी। लिपिकाल—सं० १८६८ वि०।

आदि

नाथ जीव तव माञ मोहा सो नीसचै तरे तुम्हरी छोहा
ताप्र मै रघुवर दोहाइ बानो नही कछु आन उपाइ
सेवक सुत पीतु मातु भरोसे रहो असोच बने प्रभु पोसे
अस कही परे त्रन अकुलाइ नीज तन प्रगट प्रीती उर छाइ
तव रघुब्री उठाये उर लावा नीज लोचन जल सीची जुड़ावा
सुनु कपी जीव मन सी जानी उना तुम्मम प्रीआ लछुमन ते दुना
स्म द्रसी मोही कहै······सेवक प्रीआ अ············

॥ दोहा ॥ ··················आस। मती ना टरै हनीवंत।
मै से············राचरा। रुप रासी भगवंत।

अंत

कपी सैन संग संघारी नीसाचर ॥ राम सीताही आनही
तीनी लोक पावन सुबसु सुर मुनी नारद आदि बखनाही।
जोसु जो सुनत गावत कहत। समुझता प्रेम पद नर पाइहै
रघुवीर पद जै मधुक्र दास तुलसी गावही ॥
भाव भेषज रघुनाथ जस ॥ सुन्ही जो नर नारी
तीन्ह के सकल मनोरथ संसीधी करही तीपुरारी :
राम मरा राम

राम नाम सभ कोई कहै। ठग ठाकुर औ चोर ॥
वीना प्रीती रीझत न्ही। तुलसी नंद किसोर ॥ राम राम

ऐती श्री पौथी कीष्कींधाकांड संपुरन आगे जो प्रती देखा सो लीखा मम दौख न दीआते पंडीत जन सो वीनती मोर छुठल आछर लेव सभ जौरी ॥ पोथी तएर भइ दीन बीफै के रौजा ॥ स्न स्मता म्हीन जेठ ॥ स्न १२।१।७।

विशेष ज्ञातव्य—यह प्रति कैथी लिपि में लिखी गई है। लिपि कर्ता का नाम नहीं है। प्रारंभ के प्रथम दो पत्र उपलब्ध नहीं हैं।

७०. किष्किंधाकांड। देशी कागज। पत्र—२१। आकार—११$\frac{२}{१०}$ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—२०। परिमाण (छंदों में)—३४१। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

श्री गणेशाय नमः

सोरठा ॥ मुक्त जन्म महि जानि ज्ञान खानि अघ हानि कर ॥
जह बसैं संभु भवानि सो कासी सेइये कस न ॥ १ ॥
जरत सकल सुर वृंद विखम गरल जिंहि पान किये ॥
तेहि नु भजसी मतिमंद को कृपाल शंकर सरस ॥ २ ॥

चोपई ॥ आगे चलेउ बहुरि रघुराया ॥ रिखमुखक परबत नियराया ॥
तहां रहे सचिव सहित सुग्रीवा ॥ आवत देखि अतुल बल सींवा ॥
अति सभीत कह सुन हनुमाना ॥ पुरख जुगल वहु रूप निधाना ॥
धरि बट रूप देखि तैं जाई ॥ कहेसु जान जीय सयन बुझाई ॥
पठवा बालि होइ मन मैला ॥ भागौं तुरत तजौं यह सैला ॥
विप्र रूप धरि कपि तहां गएऊ ॥ माथ नाइ पूछत अस भएऊ ॥
को तुम स्यामल गौर सरीरा ॥ छत्रिय रूप फिरहु वन वीरा ॥
कठिन भूमि पद कोमल गामी ॥ कवन हेत वन विचरहु स्वामी :

\+ \+ \+

अंत

एतना करहु तात तुम जाइ ॥ सीताहि देखि कहू सुधि पाइ ॥
तब निज भुजा बल राजव नयना ॥ कौतुक लागि सिंधु संग कपि सैयना ॥

छंद कपि सयन संग सधारि निसिचर राम सीतहि आंनिहैं ॥
त्रैलोक पावन सजसु सुर मुनि नारदादि बखानिहैं ॥
जे सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावही ॥
रघुवीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावही ॥

दो० ॥ भव भेख रघुवीर जस सुनहि जे नर अरु नारि ॥
तिन कर सकल मनोरथ सिद्धि करहि त्रिपुरारि ॥

नीलोत्पल दल स्याम काम कोटि सोभा अधिक ।।
सुनहि तासु गुन ग्राम जासु नाम अघ खग बधिक ।। ५०

इती श्री राम चरित्रे मानसे सकल कलुख विधुंसेने विग्नो संपादिनी नाम चतुर्थ सोपान नाम किसकंदा कांड संपूर्ण ।। शुभं ।।

विशेष ज्ञातव्य—किष्किंधाकांड की यह प्रति खंडित है । पत्र संख्या ५, ६, ७, तथा ८ नहीं है । मंगलाचरण के प्रारंभिक श्लोक नहीं हैं । पाठ भी अशुद्ध है । लिपिकर्ता और लिपिकाल का उल्लेख नहीं हुआ है । इस प्रति के साथ सुंदर कांड की भी प्रतिलिपि है जिसका विवरण अलग है ।

७१. किष्किंधाकांड । देशी कागज । पत्र—११ । आकार—११ ९/१० इंच लंबाई और ६ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—११ । परिमाण (छंदों में)—३१० । पूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—अज्ञात ।

आदि

।। श्री गणेशाय नमः ।।

श्लोक ।। कुंदेदीवर सुंदरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ
शोभाढ्यौ वर धन्विनौ श्रुतिनुतौ गो विप्र वृंद प्रियौ
माया मानुष रूपिणौ रघुवरौ संद्धर्म वर्मौ हितौ
सीतान्वेषण तत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौहिनः ।। १ ।।
ब्रह्मांभोधि समुद्भवं कलिमल प्रध्वंसिनं चाव्ययं
श्री मच्छंभुमुखेंदु सुंदरवरे संशोभितं सर्वदा ।।
संसारामयभेषजं सुखकरं श्री जानकी जीवनं ।।
धन्यास्ते कृतिनः पिबंति सततं श्री रामनामामृतं ।। २ ।।

सोरठा मुक्ति जन्म महि जानि ज्ञान षानि अघ हानिकर
जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइय कस न ।। १ ।।
जरत सकल सुर वृंद विषम गरल जेहि पान किय
तेहि न भजसि मन मंद को कृपाल संकर सरिस ।। २ ।।

चौपाई आगे चले बहुरि रघुराया रिष्यमूक पर्वत नियराया
तह रह सचिव सहित सुग्रीवा आवत देषि अतुल बल सींवाँ
अति सभीत कह सुनु हनुमाना पुरुष जुगल बल रूप निधाना

\+ \+ \+

अंत

चौपाई अंगद कहइ जाउँ मैं पारा जिय संसय कछु फिरती बारा
जामवंत कह तुम्ह सब लायक पठइय किमि सबही कर नायक
कहइ रीछपति सुनु हनुमाना का चुप साधि रहेउ बलवाना
पवन तनय बल पवन समाना बुधि विवेक विज्ञान निधाना
कवन सो काज कठिन जग माहीँ जो नहि होइ तात तुम्ह पाहीँ
राम काज लगि तव अवतारा सुनतहि भएउ पर्वताकारा
कनक बरन तन तेज बिराजा मानहुँ अपर गिरिन्ह कर राजा
सिंह नाद कर बारहि बारा लीलहि नाघउँ जलनिधि षारा
सहित सहाई रावनँहि मारी आनौँ इहाँ त्रिकूट उपारी
जामवंत मैं पूछउँ तोही उचित सिखावन दीजहु मोही
एतना करहु तात तुम्ह जाई सीतहि देषि कहौ सुधि आई
तब निज भुजबल राजिव नैना कौतुक लागि संग कपि सैना

छंद ॥ कपि सैन संग संघारि निसिचर राम सीतहि आनिहैँ
त्रैलोक पावन सुजस सुर मुनि नारदादि वषानिहैँ
जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावई
रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावई

दोहा भव भेषज रघुनाथ जस सुनहिँ जे नर अरु नारि
तिन्हके सकल मनोरथ सिद्ध करहिँ त्रिपुरारि

सोरठा। नीलोत्पल तन श्याम काम कोटि सोभा अधिक
सुनिय तासु गुन ग्राम जासु नाम अघ षग बधिक ॥ ३० ॥

इति श्री राम चरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विशुद्ध संतोष संपादनो नाम चतुर्थ सोपानः ४ समासः ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति लीथो टाइप में मुद्रित है। किस समय प्रकाशित हुई थी, यह ज्ञात नहीं। पाठ शुद्धता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

७२. किष्किंधाकांड। देशी कागज। पत्र—१४ । आकार—६$\frac{६}{१०}$ इंच लंबाई और ३$\frac{६}{१०}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—८। परिमाण (छंदों में)—११६। अपूर्ण। रूप—जीर्ण। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

श्री गोपालाया नमः ।। कुंदेंदा वर सुंदरावतिलौ विज्ञान धामावुभौ
सौभाढ्यौ वरर्थिवनौ श्रुति नुतौ गो विप्र वृंद प्रियौ ।।
माया मनुष्य रूपिणौ रघुवरौ सुधर्म वर्मो हितौ ।।
सीतान्वेषण तरपरौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौहिनः ।।१।।
ब्रह्मांभोधि समुद्भवं कल मल प्रध्वंसनं चाव्ययं ।।
श्री मछंभु मुखेंदु सुंदर वरे संशोभितं सर्वदा ।।
संसारो मयं भेषजं सु स्वकरं श्री जानकी जीवनं ।।
धन्यास्ते कृतिनं पिवंति सततं श्री रामनामामृतं ।। २ ।।

दो० ।। जहि सेवत विधि ईस सनकादिक जेहि ध्यान धरि ।।
सेवहि ताहि सुरीस प्रगट भए संसार हरि ।।१।।
सो० ।। जो सब की गति जान जीव जाहि ते सब प्रगट ।।
विश्वरूप भगवान षोजत फिरे तहां सीय सोई ।।२।।
दो० ।। मुक्ति जन्म महि जानि ज्ञान षानि अघ हानि कर ।।
जहां बश शंभु भवानि सो कासी सेईअ कस न ।।३।।
जरत सकल सुर वृंद विषम गरल जेहि पान किय ।।
तेहि न भजसि मतिमंद को कृपाल संकर सरिस ।।४।।

अंत

× × ×

तासु दूत तुम्ह तजि कदराई ।। राम हृदय धरि करहु उपाई ।।
अस कहि गरुड गीध जब गएउ ।। तिन्ह के मन अति विस्मै भएउ ।।
निज निज बल सब काहु भाषा ।। पार जाइ कै संसय राषा ।।
जठर भएउ अस कहै रिछेसा ।। नांहिन रहा प्रथम बल लेसा ।।
जबहि त्रिविक्रम भएउ षरारी ।। तब मैं तरुन रहै बलभारी ।।
दो० ।। बलि बांधत प्रभु बाढेउ सो तनु बरनि न जाई ।।
उभय घरी मंहं दीन्ही सात प्रदछिन जाई ।।३१।।
चौ० ।। अंगद कहै जाउ मैं पारा ।। जिय संसय कछु फिरती वारा ।।
जामवंत कह तुम्ह सब लायक ।। पठइय किमि सबहिं कर नायक ।।
कहइ रिछपति सुनुह हनु............

विशेष ज्ञातव्य—प्रति के पत्र १–२, ११–१४, १६–१७, १६, ३०–३१, ३३–३५ मात्र उपलब्ध हैं। प्रति में कोई विशेष पाठांतर नहीं है। प्रारंभ का एक दोहा तथा एक सोरठा प्रकाशित प्रतियों में नहीं है। प्रति में संशोधन भी हुआ है।

सुंदर कांड

७३. सुंदर कांड। पत्र—२२। आकार—१० इंच लंबाई और ५ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—११। परिमाण (छंदों में)—५१४। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८३७ वि०, शाके १७०२।

आदि

श्री गणेशानमः ॥

सांता सास्वतमप्रमेयमनर्घं निर्बान सांतिप्रदं ॥
ब्रह्मा शंभुफणींद्र सेमतिसं वेदांत विद्यविभुं ॥
रामाष्यं जगदीस्वरं सुरगुरुं माया मनुष्या हरिं ॥
वंदेहं तमशेषकारणपरं भूपालचूडामणिं ॥ १ ॥
नान्यसप्रहा रघुपते हृदयस्मदीये सत्यंवदामि च भवामिषिलातरात्मा ॥
भक्ति प्रयच्छ रघुपुंग निर्भरा मे कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥२॥
अतुलित बलधामं स्वर्ण सैलाभदेहं दनुजवन कृशानुं ग्यानिनामग्रगण्यं ॥
सकल गुननिधानं वानरानामधीशं रघुपति वरदूतं वातजातं नमामि ॥३॥

चौपाई ॥

जामवंत के वचन सोहाये ॥ सुनि हनुमान हृदय अति भाये ॥
तब लगि मोहि परष्येहु भाई ॥ सहि दुष कंद मूल फल षाई ॥
जब लगि आवौ सीतहि देषी ॥ होहि काज मुहि हर्ष विशेषी ॥
अस कहि नाई सबन्हु कहु माथा ॥ चले हर्षि हिय धरि रघुनाथा ॥
सिंधु तीर यक भूधर सुंदर ॥ कौतुक कूदि चढेउ ता ऊपर ॥

अंत

॥ छंद ॥

निज भवन गवनेउ सिंधु श्री रघुपतिहि यह मत भायउ ॥
यह चरित कलिमल हरन जथा मति दास तुलसी गायउ ॥

सुष भवन संसय समन दमन विषाद रघुनायक गुना ॥
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सुचि मना ॥
दोहा ॥
सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान
सादर सुनहि ते भव तरहि सिंधु बिना जल जान ॥६४॥

इति श्री रामचरित मानसे सकलकलि कलुष विध्वंसने विमल विग्यान भक्ति संपादिनी नो नाम पंचम सोपान संवत ॥ १८३७ ॥ शाके १७०२ ॥ समय नाम वयसाष सुदि ॥ ११ ॥ रविवासरे लिषितं वेनीप्रसाद शुकुल जगदीसपुरवासिनः ॥

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल सं० १८३७ वि०, १७०२ शाके है। पाठांतर हैं।

७४. सुंदर कांड। देशी कागज। पत्र—२१। आकार—८६/१० इंच लंबाई और ४६/१० इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—११। परिमाण (छंदों में)—४०४। अपूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८७३ वि०।

आदि

श्री गनेशाय नमः लीषते सुंदरकांड
श्री गुर चरन सरोज रज नीज मन मुकुर सुधारि
वरनो रघुवर विमल जसा जो दाएक फल चारि
लव निमेक परिमान जुग बरष कल्प सर चंड
ए मन भजसि न राम कह काल जास कोदंड
चौपाई जामवंत के बचय सुहाये सुनि हनुमंत हृदय अति भाये
तब लगि मोहि परषीहहु भाई सहि दुष कंद मूल फल खाई
जब लगि आवौ सीतहि देषी होइ काज मोहि हरष बिसेषी
अस कहि नाइ सवन कह माथा चले हरषि हिय धरि रघुनाथा
सींधु तीर एक भूधर सुंदर कौतुक कूदि चढे तेहि उपर
वार बार रघुवीर संभारी तरकेउ पवन तनै बल भारी
जेहि गिरि चरन देइ हनुमंता सो चलि जाइ पताल तुरंता

अंत

जब तेइ देन कहेउ वैदेही चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही
चरन नाये सीर चला सो तहवा क्रीपासिंधु रघुनायक जहवा

कै प्रनाम नीज कथा सुनाई　राम क्रीपा आपनी गति पाई
रीषी अगस्ती कै स्राप भवानी　रछस भएउ रहा मुनि ग्यानी
बंदी राम पद बारही बारा पुनी　नीज अस्रम का पगु धारा

दोहा　बीनै न मानत जलधी जड गये तीनी दीन बीती
बोले राम सकोप तब : मै बीनु होत न प्रीती
लछिमन बान सरासन आनू सोषउ वारीध बीसीष क्रीसानू
सठ सो बीनै कुटील सो प्रीती...

विशेष ज्ञातव्य—प्रति विशेष महत्व की नहीं है।

७५. सुंदर कांड। देशी कागज। पत्र—३५। आकार—८½ इंच लंबाई और ४½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—६। परिमाण (छंदों में)—६३४। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८७६ वि०।

आदि

श्री रामकृष्णाय नमो नमः श्री गणेशाय नमः श्री रामानुजाय नमः
अथ सुंदर कांड लिष्यते तुलसी क्रित।
शांतं सास्वतमप्रमेयं मनुषं निर्वान शांतिप्रदं
व्रह्मा संभु फनिंद्र सेव्यमनिसं वेदांत वेद्यं विभुं
रामख्यं जगदीस्वरं सुरगुरुं माया मानुष्यं हंरी
वंदेहं करुनाकरं रघुवरं भुपाल चुडामनीं

चोपइ ॥ जामवंत के वचन सुहाए　सुनि हनुमंत हृदय अति भाए
तब लगि मोहि परेषेहु भाइ　सहि दूष कंद मुल फल षाइ
जब लगि आवों सीतहि देषी　होय काज मोहि हरष विसेषी
अस कहि नाइ सबन कहि माथा　चलेउ हरषि धरि हिय रघुनाथा
सींधु तीर एक भुधर सुंदर　कौतुक कुदि चढेउ ता उपर

अंत

सुनि क्रपाल सागर मुष पीरा　तुरतहि हतेउ राम रनधीरा
देषि राम वल पोरष भारी　हरष पयोनिधि भयेउ सुषारी
सकल चरित कह प्रभुहि सुनावा　चरन वंधि पाथोधि सिधावा

छंद : निज भवन गवनेउ सिंधु श्री रघुपतिहि यह मत्त भाएउ
यह चरित कलिमल हरन जथा मति दास तुलसी गायउ

सुष भवन संशय समन दमनं विषाद रघुपति गुनगनां
तज सकल आस भरोस गावहि सुनिहि संतत सुचि मना

दोहा सकल सुमंगलदायक रघुनायक गुन गान
सादर सुनिहि ते तरहि भव सिंधु विना जलबान ६१

इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष वीध्वंसने ज्ञान संपादिनि नाम पंचमो सोपान सुंदरकांड लिष्यते चैत्र मास कृष्ण पक्षे द्वितीया शुक्रवार इलास के पेडे लिषिते बाबा श्री बालक दास जि कि ज धामा लिष्यते शुभमस्तु शुभ संवत् १८७६ मंगलं ददात् * राम * राम * राम * राम * राम * राम * राम * राम * राम * राम * राम * राम।

विशेष ज्ञातव्य—प्रति पूर्ण है। लिपिकाल सं० १८७६ वि० है।

७६. सुंदरकांड। देशी कागज। पत्र—१५। आकार—१३१½ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१३। परिमाण (छंदों में)—४७५। अपूर्ण (पत्र सं० ३ नहीं है)। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८८३ वि०।

आदि

श्री गणेशाय नमः ॥

साता सास्वतंमप्रमेयंमानिर्घंनिर्वान शांति प्रदं
व्रह्मा संभूफनिंद्रसेव्यमनिसं वेदांतवेद्या विभू
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरं माया मनुष्य हरियं
वंदेहं करुनाकरं रघुवरं भूपाल चूडामनिं। १।

नान्या स्पृहा रघुपति हृदयेस्मदीये ॥ सत्यं वदामि भवान् ॥ खिल्नत तरात्मा भक्ति प्रियं। हरघुपुंगवंनिर्भरामं कामादि दोष रहितं कुरु मानसं च ॥२॥ अतुलित बलधामं। स्वरणसैलाभ देहं ॥ दनुज वन कृसानां ग्यानंनाग्रंगण्यंमूः सकलगुननिधानं वांनरानांमधीसं ॥ रघुपति वर दूतं वातजातं नमामी ॥

॥ दोहा ॥

हनूंमान पुलकत भये तेज रूप वल पुंज ॥
भूधराकार तब पवन सुत श्री रामचरन अति पुंज ॥

चौ ॥

जामवंत के वचन सुहाए ॥ सुनि हनुमांत हृदय अति भाये ॥
तब लगि मुहि परषहु सुनुं भाई ॥ सहि दुष कंद मूल फल षाई ॥
जब लगि आऔं सीतहि देषी ॥ होहि काज मोहि हरष बिसेषी ॥
अस कहि नाय सबन कहुँ माथा ॥ चले हर्षि हिय धरि रघुनाथा ॥
सिंधु तीर एक भूधर सुंदर ॥ कौतुक कूदि चढ्यौ ता ऊपर ॥
बार बार रघुबीर सम्हारी ॥ तरकेउ पवनतनय बल भारी ॥

अंत

॥ छंद ॥

निज भवन गवनैंउ सिंधु श्रीपति हीयैं यह मति भावहु ।
यह चरित सकल मल हरन जथामति दास तुलसी गावहु ॥
सुष भवन संसय समन दमन वारि विषाद रघुपति गुन गना ॥
तजि सकल आस भरोस गांवहि सुनहिं संतत सठ मना ॥

दोहा

सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुनगांन
सादर सुनहि ते तरहिं भव सिंधु बिनहि जलजांन ॥

इति श्री राम चरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने ज्ञांन संपादिनी नाम वर्णननांम पंचम सोपान समापितं ॥ संवत् ॥ १८८३ ॥ मीति मार्गसिर सुदी ॥ ५ ॥ बुध वासरां ॥ वयानैं सुभस्थांन परारिषी ॥ पठनार्थ लाला जीतमल ॥ नृमल रांम बांचैं विचारै जिनकूं राम राम नमस्कार डंडवत ॥ श्री राम राम ॥ ॥श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री॥

विशेष ज्ञातव्य—लि० का० सं० १८८३ वि० है। पत्र सं० ३ नहीं है। पाठांतर भी हैं।

७७. सुंदरकांड। देशी कागज। पत्र—३१। आकार-६ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)-२०। परिमाण (छंदों में)—४६५। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—कैथी मिश्रित नागरी। लिपि-काल—सं० १८६४।

आदि

श्री गनेस जी सहाए श्री हनमान जी सहाए श्री गंगाजी जमुनाजी सहाए श्री पोथी सुंदरकांड कथा लिषते।

दोहा

बारी बरोबरी वारी है : तापर बहै बआरी :
रघुबर पार उतरी है : आपनी ओर नीहारी :

चौपइ

जामवंत के वचन सुहाए, सुनी हनुमान हृदए अतिभाए
तब लगी मोही परषीहहु भाइ, सही दुष कंद मुल फल षाइ
जब लगी आवौ सीतही देषी, होइ काज मोही हरष बीसेषी
अस कही नाइ सबनी कह माथा, चले हरषी हीए घरी रघुनाथा
सीधु तीर एक भुंघर सुंदर, कौतुक कुदी चढ़े तेही उपर
बार बार रघुबीर सम्हारी, ····पवन तनए बल भारी
जेही गीरी चरन दीन्ह हनुमंता, सो चली गएउ पताल तुरंता
जीमी अमोघ रघुपति के बाना, ताही भाती चले हनुमाना
जलनीधी रघुपति दुत बीचारी, कहा मैनाक होइ समझारी

अंत

नींज भवन गवनेउ सींधु श्री रघुपति एह मत भाइऔ :
एह चरीत सकल कलीमल दास तुलसी गाइऔ
सुष भवन संसए समन बीषाद रघुपति गुनगन :
तजी सकल आस भरोस गावही सुनही संतत सुची मना :

दोहा

सकल सुमंगल दाइक : रघुनाइक गुन गना :
सादर सुनही ते तरही भव : सीधु बीना जलजान

इति श्री रामचरित्रेमानसे सकल कलीकलुषेबीधंसने बीमल बैराग्य संपादीनी नाम पंचमोपान सुंदरकांड कथा संपुरन समापतेः सुभमस्तु संवतु १८६४ जेठ सुदी १३ सुक्रबार।

विशेष ज्ञातव्य—पत्र सं० ११ खंडित है। लिपिकाल सं० १८६४ है। लिपि कैथी मिश्रित नागरी है।

७८. सुंदरकांड। देशी कागज। पत्र—१४। आकार—११ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१५। परिमाण (छंदों में) ५२५। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल-सं० १६१४ वि०।

आदि

श्री मते रामानुजाय नमः ॥

श्लोक ॥ शांतं साश्वत प्रमेयमनर्घ गीर्वाण शांतिप्रदं
ब्रह्मा शंभु फणींद्र सेव्यमनिशं वेदान्त वेद्यं विभुं
रामाख्यं जगदीश्वरं सुर गुरुं माया मनुष्यं हरिं
वंदेहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयस्मदीये सत्यं वदामि च भवान्नखिलांतरात्मा ॥
भक्तिं प्रयच्छ रघु पुंगव निर्भरा मो कामादि दोष रहितं कुरु मानसं च ॥२॥

अतुलित बल धामं स्वर्ण शैलाभदेहं दनुज वन कृशानुं ज्ञानिनामाग्रगण्यं ॥
सकल गुण निधानं वानरानामधीशं रघुपति वर दूतं वातजातं नमामि ॥ ३ ॥

चौ० ॥ जाम्बवंत के वचन सोहाए। सुनि हनुमान हिदय अति भाए ॥
तव लगि मोहि परिषिहहु भाई। सहि दुष कंद मूल फल षाई ॥
जब लगि आवो सीतहि देषी ॥ होइ काज मन हर्ष विशेषी ॥
अस कहि नाइ सभन्हि कह माथा॥ चले हर्षि हिय धरि रघुनाथा ॥
सिंधु तीर एक सुंदर भूधर ॥ कौतुक कूदि चढे तेहि ऊपर ॥
वार वार रघुवीर संभारी ॥ तर्कें पवन तनय वल भारी ॥

अंत

चौ० नाथ नील नल कपि दोउ भाई। लरिकाई रिषि आसिष पाई ॥
जिन्हके परस किए गिरि भारे। तरिहहि जलधि प्रताप तुम्हारे ॥
मै पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई। करिहौं बल अनुमान सहाई ॥
एहि विधि नाथ पयोधि बधाइए। जे एह सुजस लोक तिहु गाइए॥
एहि सर मम उत्तर तट वासी। हतहु नाथ षल नर अघ रासी ॥
सुनि कृपाल सागर मन पीरा। तुरतहि हरी राम रणधीरा ॥
देषि राम बल पौरुष भारी। हरषि पयोनिधि भएउ सुखारी ॥
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा। चरन बंदि पाथोधि सिधावा ॥

छंद ।। निज भवन गवने सिंधु श्री रघुपति इहै मत भाएऊ ।।
एह चरित कलि मल हर जथामति दास तुलसी गाएऊ ।।
सुख भवन संसय समन दमन विषाद रघुपति गुन गना ।।
तजि सकल आस भरोज गावहि सुनहिं संतत सुचि मना ।।

दोहा ।। सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ।।
सादर सुनहि ते तरहि भव सिंधु विना जलजान ।।६२।।

इति श्री रामचरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य संपादिनो नाम श्री मग्दोसाई तुलसीदास विरचिते रामायन पंचमो सोपान सुंदर कांड संपूर्णम् ।। सुभ सम्वत् ।। १९१४।। फाल्गुन कृष्ण द्वादशी बुधवार के संपूर्ण ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रति सुस्पष्ट और स्वच्छ अक्षरों में लिखी गई है अशुद्ध शब्दों को हड़ताल लगाकर मिटा गया है । प्रतिलिपिकर्ता रामशरण दास नामक कोई व्यक्ति है । जिसने सातों कांड रामचरित मानस की प्रतिलिपि की थी । अन्य कांडों का विवरण अलग है । पाठांतर की दृष्टि से प्रति महत्त्वपूर्ण है ।

७९. सुंदर कांड । देशी कागज । पत्र—५६ । आकार—७ इंच लंबाई और ५ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—८ । परिमाण (छंदों में)—५०४ । पूर्ण । रूप–प्राचीन । लिपि–नागरी । लिपिकाल-सं० १९३८ वि० ।

आदि

श्री गनेस जू ।।
जा सुमिरै सिधि होइ ।। गन नाइक करवर वदन ।।
करहु अनुग्रह सोइ ।। बुधि रास सुभ गुन सदन ।।
मूक होइ वाचाल ।। पंग चढ़य गिरवर गहन जासु कृपा सु दयाल ।।
द्रवहु सकल कल मल दहन ।। नील सरोरहु स्याम ।।
तरून अरुन वारज नयन करहु सु ममि उर धाम ।।
सदां छरि सागर सयन।।वंदौ पवन कुमार ।। षल वन पावक ग्यान घन।।
जासु हिदैय आगार ।। वसहु रांम सिय चांप धर ।।

दोहा ।। रांम कथा के रसक तुम भक्तराज मति धीर ।।
आइ सुआसन लजिये तेज पुंज कपि वीर ।।

७८. सुंदरकांड। देशी कागज। पत्र—१४। आकार—११ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१५। परिमाण (छंदों में) ५२५। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल-सं० १६१४ वि०।

आदि

श्री मते रामानुजाय नमः ॥

श्लोक ॥ शांतं साश्वत प्रमेयमनघं गीर्वाण शांतिप्रदं
ब्रह्मा शंभु फणींद्र सेव्यमनिशं वेदान्त वेद्यं विभुं
रामाख्यं जगदीश्वरं सुर गुरुं माया मनुष्यं हरिं
वंदेहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयस्मदीये सत्यं वदामि च भवान्नखिलांतरात्मा ॥
भक्तिं प्रयच्छ रघु पुंगव निर्भरा मो कामादि दोष रहितं कुरु मानसं च ॥२॥
अतुलित बल धामं स्वर्ण शैलाभदेहं दनुज वन कृशानुं ज्ञानिनामाग्रगण्यं ॥
सकल गुण निधानं वानरानामधीशं रघुपति वर दूतं वातजातं नमामि ॥ ३ ॥

चौ० ॥ जाम्बवंत के वचन सोहाए। सुनि हनुमान हिदय अति भाए ॥
तब लगि मोहि परिषिहहु भाई। सहि दुष कंद मूल फल षाई ॥
जब लगि आवो सीतहि देषी ॥ होइ काज मन हर्ष विशेषी ॥
अस कहि नाइ सभन्हि कह माथा ॥ चले हर्षि हिय धरि रघुनाथा ॥
सिंधु तीर एक सुंदर भूधर ॥ कौतुक कूदि चढे तेहि ऊपर ॥
वार वार रघुवीर संभारी ॥ तर्के पवन तनय बल भारी ॥

अंत

चौ० नाथ नील नल कपि दोउ भाई। लरिकाई रिषि आसिष पाई ॥
जिन्हके परस किए गिरि भारे। तरिहहि जलधि प्रताप तुम्हारे ॥
मै पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई। करिहौं बल अनुमान सहाई ॥
एहि विधि नाथ पयोधि बधाइए। जे एह सुजस लोक तिहु गाइए ॥
एहि सर मम उत्तर तट वासी। हतहु नाथ षल नर अघ रासी ॥
सुनि कृपाल सागर मन पीरा। तुरतहि हरी राम रणधीरा ॥
देषि राम बल पौरुष भारी। हरषि पयोनिधि भएउ सुखारी ॥
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा। चरन बंदि पाथोधि सिधावा ॥

छंद ।। निज भवन गवने सिंधु श्री रघुपति इहै मत भाएऊ ।।
एह चरित कलि मल हर जथामति दास तुलसी गाएऊ ।।
सुख भवन संसय समन दमन विषाद रघुपति गुन गना ।।
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहिं संतत सुचि मना ।।

दोहा ।। सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ।।
सादर सुनहि ते तरहि भव सिंधु विना जलजान ।।६२।।

इति श्री रामचरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य संपादिनो नाम श्रीं मग्दोसाई तुलसीदास विरचिते रामायन पंचमो सोपान सुंदर कांड संपूर्णम् ।। सुभ सम्वत् ।। १६१४।। फाल्गुन कृष्ण द्वादशी बुधवार के संपूर्ण ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रति सुस्पष्ट और स्वच्छ अक्षरों में लिखी गई है अशुद्ध शब्दों को हड़ताल लगाकर मिटा गया है । प्रतिलिपिकर्ता रामशरण दास नामक कोई व्यक्ति है । जिसने सातों कांड रामचरित मानस की प्रतिलिपि की थी । अन्य कांडों का विवरण अलग है । पाठांतर की दृष्टि से प्रति महत्त्वपूर्ण है ।

७६. सुंदर कांड । देशी कागज । पत्र—५६ । आकार—७ इंच लंबाई और ५ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—८ । परिमाण (छंदों में)—५०४ । पूर्ण । रूप-प्राचीन । लिपि-नागरी । लिपिकाल-सं० १६३८ वि० ।

आदि

श्री गनेस जू ।।
जा सुमिरै सिधि होइ ।। गन नाइक करवर वदन ।।
करहु अनुग्रह सोइ ।। बुधि रास सुभ गुन सदन ।।
मूक होइ वाचाल ।। पंग चढ़य गिरवर गहन जासु कृपा सु दयाल ।।
द्रवहु सकल कल मल दहन ।। नील सरोरहु स्याम ।।
तरून अरुन वारज नयन करहु सु ममि उर धाम ।।
सदां छरि सागर सयन।।वंदौ पवन कुमार ।। षल वन पावक ग्यान घन।।
जासु हिदैय आगार ।। वसहु रांम सिय चांप धर ।।

दोहा ।। रांम कथा के रसक तुम भक्तराज मति धीर ।।
आइ सुआसन लजिये तेज पुंज कपि वीर ।।

दोहा रांम कथा मंदाकिनि चित्रकीट चित चार ॥
तुलसी सुभग सनेहि वन सिय रघुवीर विहार ॥

दोहा ॥ श्री गुर चरन सरोज रज निज मुष मुकर सुधार ॥
वरनौ रघुवर विमल जस जो दायक फल चार ॥ श्री सीतारांम

सिध श्री गनेसाय नमः ॥ श्री सरसुती जू देव नमः ॥ अथा सुंदर कांड लिष्यते ॥

चौपही ॥ जामवंत के वचन सुहाये ॥ सुन हनुमंत हृदय अति भाये ॥
तव लगि मोह परषिवौ भाई ॥ सहि दुष कंद मूल फल षाई ॥
जब लगि आउ सीतहि देषी ॥ होइ कार्ज मुहि हर्ष विसेषी ॥
अस कहि नाइ सबन कौ माथा ॥ चलयौ सुमिर हीय धर रघुनाथा ॥

अंत

देष राम बल अतिलित भारी । हर्ष पवोनिधि भवौ सुषारी ॥
सकल चरित कहि प्रभहि सुनावा । चरन वंद पथोज सिधावा ॥

छंद ॥ निज भवन गमने सिंधि श्री रघुपतहि यह मत भईवौ ॥
यह चरित कल मल हरन जथा मति साद तुलसी गुन गाईवौ ॥
सुष भषन संसय समन मन विषादि तज रघुपति गुन गाना ॥
तज सकल आस भरौस गावहि संतत सज्जना ॥

दोहा ॥ सकल सुमंगल दाइक रघुनाइक गुन गान ॥
सादर सुनहि ते तरहि नर सिंधि विना जलजान ॥

इति श्री रांम चरित्र मानसे सकल कल कलुष विध्वंसने विस्वध्य संतोष संपादनी नाम पंचमो सोपान संपुर्न ॥ सुभंमस्तु मंगलं ॥ वैसाष वदि ४ । सौमे ॥ संवद १६३८ ॥ लिष्यते श्री महाराज के । मोर श्री दिवान परताप सीग जू देव ॥ मुः ॥ मात गुवां ॥

दोहा तुलसी जो जस राम कौ ताकौ ॥ तैसे रांम ॥
जैसे पथिक पथि तकौ होत दाहनै ॥ वांम ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति पूर्ण है। इस की प्रतिलिपि सं० १६३८ में मध्य-प्रदेश अंतर्गत परताप दीवान सिंह जी ने की थी। प्रति के प्रारंभिक पत्र में बालकांड के कुछ दोहे हैं। इसके बाद सुंदर कांड लिखा गया है।

८०. सुंदर कांड । देशी कागज । पत्र—२६ । आकार—८½ इंच लंबाई और ४½ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)--१० । परिमाण (छंदों में)—५६६ । पूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि--नागरी । लिपिकाल—अज्ञात ।

आदि

ॐ श्री गणेशायनमः ॥ श्री जानकी वल्लभायनमः ॥
श्री हनुमते नमः ॥

ॐ शांतं शाश्वतमप्रेयमनघं निर्वाण शांतिप्रदं ॥
ब्रह्मा शंभु फणिंद्रसेव्यमनिशं वेदांत वेद्यं विभुं ॥
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामानुष्यं हरिं ॥
वंदेहं करुनाकरं रघुवरं भूपाल चूडामणिं ॥ १ ॥

नान्य स्पृहा रघुपते हृदयेस्मदीये ॥ सत्यं वदामि च भवानखिलांतरात्मा । भक्तिं प्रयच्छ रघुपुंगव निर्भरां मे ॥ कामादि दोष रहितं कुरु
मानसं च ॥ २ ॥

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं ॥ दनुजवन कृशानुं
ज्ञानिनामग्रगण्यं ॥
सकल गुन निधानं वानरानामधीशं ॥ रघुपतिवरदूतं वातजातं ॥
नमामि ॥ ३ ॥

जामवंत के वचन सुहाए ॥ सुनि हनुमंत हृदय अति भाए ॥
तब लगि मोहि परिषिहु तुम्ह भाई ॥ सहि दुष कंद मूल फल षाई ॥
जब लगि आवौ सीतहि देषी ॥ होइहि काजु मोहि हरष विसेषी ॥
अस कहि नाइ सबन्हि कहु माथा ॥ चलेउ हरषि हिय धरि रघुनाथा ॥
सिंधु तीर एक भूद्धर सुंदर ॥ कौतुक कूदि चढेउ ता उपर ॥
वार वार रघुनाथ संभारी ॥ तरकेउ पवन तनय बलभारी ॥
जेहि गिरि चरन देइ हनुमंता ॥ चलेउ सो गिरि पाताल तुरंता ॥
जिमि अमोघ रघुपति कर वाना ॥ एही भांति चला हनुमाना ॥
जलनिधि रघुपति दूत विचारी ॥ तैं मैनाक होहि श्रम हारी ॥

अंत

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई ॥ लरिकाइं रिषि आशिष पाई ॥
तेन्ह के परस किएं गिरि भारें ॥ तरिहहि जलधि प्रताप तुम्हारें ॥

मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई ॥ करिहौं बल अनुमान सहाई ॥
एहि बिधि नाथ पयोधि बधाइअ॥जेहि एह सुजसु लोक तिहु गाइय ॥
एहि सर मम उत्तर तटवासी ॥ हतहु नाथ षल मल अघरासी ॥
सुनि कृपाल सागर मन पीरा ॥ तुरतहि हरी राम रनधीरा ॥
देषि राम बल पौरुष भारी ॥ हरषि पयोनिधि भएउ सुषारी ॥
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा ॥ चरन बंदि पाथोधि सिधावा ॥

छंद ॥

निज भवन गवनेउं सिंधु श्रीरघुपतिहि यह मन भाएउ ॥
यह चरित कलिमल हर जथा मति दास तुलसि गायउ ॥
सुष भवन संसन समय दवन विषाद रघुपति गुन गना ॥
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना ॥

दोहा ॥

सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुनगान ॥
सादर सुनहि ते तरहि भव सिंधु विना जलजान ॥६०॥

इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने ज्ञान संपादिनी नाम पंचम सोपानः समाप्तः ॥ इति सुंदरकांडः समाप्तः ॥ ॥ शुभभवतु ॥

विशेष ज्ञातव्य--कुल पत्रों की सं० २९ है। पत्रों पर संख्या देते समय सं० २३ देने में भूल हो गई है। दो बार सं० २४ ही पड़ी है। लिपि सुंदर और सुपाठ्य है। पाठ भी अन्य प्रतियों के अपेक्षा शुद्ध है। लिपिकाल अविदित है।

प्रस्तुत प्रति के साथ एक ही जिल्द में--विष्णु सहस्रनाम, रासपंचाध्यायी, हनुमान कवच, हनुमान स्तोत्र आदि भी हैं।

८१. सुंदरकांड। देशी कागज। पत्र—२१। आकार--११ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)--११। परिमाण (छंदों में)--५३८। अपूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि--नागरी। लिपिकाल--अज्ञात।

आदि

श्री गणेसायनमः ॥ अथ सुंदर कांड प्रारंभ ॥

श्लोकः ॥

सर्वान्सास्वतमप्रमेः ॥ यमनंवं नीर्वान सांतीः ॥ प्रदं
ब्रह्माज्ञुभु फनिंद्रसेव्यंमनीसं वेदांतवंद्यं वभुः ॥

श्रीरांम जगदिसरं सुर गुरुं माया मनुष्यं हरि
वंदेहं करुणाकरं : रघुवरं सुपाल चुडामनी : ।।१।।
नान्य स्पृहा रघुपती हृदयं सत्यं वदाम्मि भवन षिलत्वः ।।
राम रामात्म भक्तीं प्रयछु रघुपुंगव निर्भयामेकादि
दोष रहितं कुरु मानसं चः ।।२।।

आतुलीतबलघामं श्वर्णसेलाभदेहं दनुजवनकसानं ज्ञानमाग्रगण्यं: ।।
सकल गुन नीधानं वानरांनामधीसं रघुपती बरदुतं वातजातं नमामि:।।३।।

चौपाई ।।

जामवंत के वचन सुहाये : ।। सुनी हनवंत हृदय अती भाये : ।।
तव लगी मोहि परसेउ तुम भाई : ।। सहि दुख हृदय आती भाऐ : ।।
तव लगी एहि सीतहि देषि : ।। होईहि काज मोह हरख वीसेषी : ।।
अस कहि नाय सवनी कहु माथा : ।। चलेउ हरष धरि रघुनाथा : ।।

अंत

चौपाई : ।।

नाथ नील नल कपि दोउ भाई ।। लरकाई रिषि आयस पाई ।।
तिनके परस कीऐ गिरे ।। तरीइहि जलधि प्रताप तुम्हारे ।।
मै पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई ।। करिहौ बल आनुमान सहाई ।।
ऐहि विधि नाथ पयोधि बंधाईऐ ।। जेहि एह सुजस लोक तिहु गाइऐ ।।
एह सर मम उतर तट वासी ।। हतहु नाथ नर षल आघरासि ।।
सुनी कृपाल सागर उर पीरा ।। तुरतह हरि राम रणधिरा ।।
देषि राम बल पौरुष भारि ।। हर्षि पयोनीधी भयो सुषारि ।।
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा ।। चरन वंदि पाथोधि सधावा ।।

॥ छंद ॥

नीज भवन गवनो सींधु श्री रघुपति हिऐ मत भएउ ॥
ऐह चरित कलीमल हरन जथा मति दास तुलसि गाएउ ॥
सुभ भवन संसय समन दमन 'विषाद रघुपति गुनगना ॥
तजी सकल आस भरोस गोवहिं संतत सुठि मना ॥

दोहा

सकल सुमंगल दायक : रघुनायक कर गुन गान : ॥
सादर सुनहि सो ते तरहि : भव सिंधु बीना जलजान॥६०॥

इति श्री राम चरित्र मानसे सकल कली कलुष विध्वंसने विमल विज्ञान संपादनि नांम पंचम सेपान स्वामि तुलसिदास क्रतं सुदरकांड संपुर्णमः ॥५॥

॥ श्री ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

विशेष ज्ञातव्य—लि० का० अज्ञात है। ग्रंथ के हाशिए पर २५ पत्रों की संख्याएँ पड़ी हैं जिनमें पत्र सं० १६ नहीं है। पत्र सं० ११ के बाद १२ होनी चाहिए थी—पर १३ है। कहीं कहीं पाठ भेद भी हैं। यत्र तत्र लिपि दोष भी हैं।

८२. सुंदरकांड। मिल का बना कागज। पत्र—३८। आकार-१० इंच लंबाई और ६१/१० इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१७। परिमाण (छंदों में)—४४४। पूर्ण। रूप—जीर्ण। लिपि—कैथी। लिपिकाल-अज्ञात।

आदि

राम राम

श्री गनेसा जी स्हऐ न्म्हा श्री सरौसती जी स्हऐ न्म्हा
श्री ब्रह्मा जी स्हऐ नाम्म्हा श्री ' ' ' ' जी स्हऐन ॥ म्हा
श्री छापना कोटी देवता जी स्हऐ। श्री पोथी सुंद्रकांड ॥ रामऐन
कृंति गैसइ तुलसीदास ॥ कै

दोहा बारी वरोवर वर है ॥ ताप्र वहै त्रैआ ॥ री
रघुत्र पार उतारउ ॥ आपनी वोरा नीहारी

चौपाइ जामावंता के वचन सोहाए सुनी हानुमान ह्रीदैए हखाए
जब लागी मोही परीखेउ भाई स्ही दुखा कंदमुलफल खाइ
जब लागी अवो सीतही देखी होए काज मन हखा वीसेखी

अंत

दोहा

सकल सुमंगल दाएक रघुनाएक गुना गवान।
स्दर सुन्ही से तरही भव न वीना जल जन।
अतुलीत सुन्हु सैल भद्र दनुज वन क्रीसानु वीग्यान धींस
रघुपती ब्र दु वद जातम न्म मी राम न इती श्री पौथी

सु'द्र काड रामऐन कथा संपुरान भाइरल सही जो प्रंती
देखा सो प्रंती लीखा म्म दोखा न्दीजीए पंडीत जन
सो बीनती मोरी छुटाल अछ्र लेहु सभ बोरी आगे
मीती जेठा सुदी पंचमी ॥ दीन मंग्र के रोज मे पौथी
संपुरन भइ रही रही आगे दसखाती ज्न्की प्रस्द मीस्री
कै पौथी ताएरा भाइ त्रहवा जे के समै मे तऐर भ्इ राम

राम राम

संमता १६ से ७ स्न सतर से पचौताहारी १७ से ७५ : राम :

विशेष ज्ञातव्य—प्रति कैथी लिपि में लिखी गई है । प्रति का लिपिकाल गलत दिया हुआ । कैथी लिपि की अपनी विशेषताएँ इस प्रति में देखी जा सकती हैं । पाठ भ्रष्ट है ।

८३. सुंदरकांड । देशी कागज । पत्र—२२ । आकार—११३/१० इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ) २४ । परिमाण (छंदों में)—४२६ । पूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—अज्ञात ।

आदि

श्री गणेशाय नमः ॥

सोरठा ॥ सुनहु उमा मन लाय ॥ सुंदर कथा रसाल यह ॥
जेहि सब भरम नसाय ॥ कहौ कथा सादर सुनहु ॥ १ ॥
॥ चौपई ॥ जामवंत के बचन सुहाए ॥ सुनि हनुमान हृदय तब भाए ॥
तवि लगि मोय परखियहु भाइ ॥ सहि दुख कंद मूल फल खाइ ॥
जब लगि आवैं सीतहि देखी ॥ होई काज मोहि हर्ख सेखी ॥
अस कहि नाइ सबन कहु माथा ॥ चलेउ हरखि हीय धरि रघुनाथा ॥
सींधु तिर एक भूधर सुंदर ॥ कौतुक कूद चढे ता उपर ॥
बार बार रघुवरहि सभारि ॥ तरकेउ पवन तनय बल भारी ॥
जिहि गिरि चरन देइ हनुमंता ॥ चलेउ सो गयो पताल तुरंता ॥
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना ॥ तिही भाति चला हनुमाना ॥
जलनिधि रघुवर दूत विचारी ॥ तै मैनाक होहि श्रम हारी ॥

अंत

देखि राम बल पौरुख भारी ॥ हरखि पयौनिधि भयौ सुखारि ॥
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा ॥ चरन वंदि पाथोधि सिधावा ॥

॥ छंद ॥ निज भवन गवनेहु सिंधु श्री रघुवीर इह मत भायेउ ॥
यह चरित कलि मल हरन जथामति दास तुलसी गायेउ ॥
सुख भवन संशय समन दमन विखाद रघुपति गुन गना ॥
तजि सकल आस भारोसा गावहि सुनत संत मुदित मना ॥

॥ दोहा ॥ सकल सुमंगलदायक रघुनायक गुन गान ॥
सादर सुनहि नर भव सागर विन जान ॥ ५२ ॥

इति श्री रामचरित्रमानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल ज्ञान संपादि नाम पंचमो सोपान सुंदरकांड संपूर्ण ॥ शुभं ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति पूर्ण है। लिपिकाल ज्ञात नहीं। प्रति में आदि के मंगलाचरण के संस्कृत श्लोक नहीं हैं। यत्र तत्र पाठांतर भी हैं।

८४. सुंदरकांड। देशी बाँसी कागज। पत्र—२६। आकार–११$\frac{३}{१०}$ इंच लंबाई और ६$\frac{५}{१०}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१०। परिमाण—४४१। अपूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

............नि कहि माथा ॥ चलेउ रषिय धरि रघुनाथा ॥
सिंधु तीर यक भूदरि सुंदर ॥ कौतक कूदि चढेउ ता उपर ॥
वार वार रघुबीर संभारी ॥ तरकेउ पवन तनय बलभारी ॥
जिहि गिरि चरन देइ हनुमंता ॥ चलि सो गअन पाताल तुरंता ॥
तिमि अमोघ रघुपति कर वाना ॥ तोहि भांति चला हनुमाना ॥
जलनिधि रघुपति दूत विचारी ॥ तै मैनाक होहि श्रम हारी ॥
कहा मैनाक सुनो हनुमानाः ॥ करु विस्राम दुरी बड़ी जानाः ॥

॥ सोरठा ॥ सिंधु वचन सुनि कानि तुरत उठेउ मेनाक तव ॥
रामदूत जय जानि पुलक जतन कर जोरि करि ॥

॥ दोहा ॥ हनुमान तेहि परस कर पुनि ती कीन्ह प्रनाम ॥
राम काज कीन्हे विनु मोहि कहां विश्राम ॥ २ ॥

अंत

॥चौपई॥ सुनु लंकेश सकल गुन तोरे। तेहि ते तुम्ह अतिशय प्रिय मोरे ॥
राम वचन सुनि बानर जूथा। सकल कहे जय कृपा बरूथा ॥

सुनत विभीषन प्रभु कै बानी। नहि अघात श्रवणामृत बानी ॥
पद अंबुज गहि बारंबारा। हृद समात न प्रेमु अपारा ॥
सुनहु देव सब चराचर स्वामी। प्रनत .... ॥
बन गवने सिंधु श्री रघुपतिहि मति भाइयो ॥
इहिं चरत कल मल हर जथामति दास तुलसी गाइयो ॥
सुष भवन संसय समन दवन विषाद रघुपति गुनगना ॥
तज सकल आस भरेस गावहि सुनहि संतत सुच मना ॥ २६ ॥
दोह ॥ जस कल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ॥
सादर सुनहि ते तरहि भव सिंधु बिना जलजान ॥ ३ ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति अपूर्ण है। प्रारंभ का पत्र १ तथा अंत के २७-२८-२६-३०-३१ पत्र भी नहीं हैं। लिपिकाल तथा लिपिकर्ता का उल्लेख नही हुआ है। पाठांतर विशेष हैं।

८५. सुंदरकांड। देशी कागज। पत्र—३०। आकार—८ इंच लंबाई और ५½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—२०। परिमाण (छंदों में)—६००। अपूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—कैथी। लिपिकाल—अज्ञात।
आदि

श्री गणेशायनमः
श्री रामायनमः
सुंदर कांडः
दोहा
बारी बराबर बारी है तापर बहत बेआर
रघुबर पार उतारी है अपनी बोर नीहार

जामवंत कै बचन सोहाइ। सुनी हनुमान हर्षी उठी धाइ
तब लगी मोही परीषेहु भाइ। सही दुष कंद मुल फल षाइ
अस कही नाये सबन्ह के माथा। चले हर्षी हीय धरी रघुनाथा
सीधु तीर ऐक सुधर सुंदर। कौतुक लागी चढे तेही उपर
बार बार रघुबीर संभारी। तरकेउ पवन तनै बलभारी
जेही गीरी चरन देइ हनुमांता। चला सो जाइ पताल तुरंता
जीमी अमोघ रघुपती कै वाना। तेही भाँती चले हनुमाना
जलनीधी रघुपती दुत बीचारी। तब मैनाक होही स्रम भारी

अंत

नाथ नील नल दोनो भाइ। लरीकाइ रीषी आसीष पाइ
तीन्ह के परस कीए भरी भारे। तरीहै जलधी प्रताप तुम्हारे
मैं तव उर धरी तव प्रभुताइ। करीहौ बल अनुमान सहाइ
ऐही बीधी स्रम उतर कटकाइ। इतह नाथ षल कर अघमाइ
सुनी कृपाल सागर मन धीरा। तुरीतही हरी राम नर पीरा
देषी महाबल पौरुष भारे। हरषी पयोधी भआ सुषारे
सकल चरीत्र कही प्रभुही सुनाऐ। चरन बंदी पयोधी सीधाऐ

छंद

नीज भवन गऐ तब सीधु श्रीरघुबीर सो परमीत भऐ
इह चरीत्र कलीमल हरन जो मती दास तुलसी गाऐ
सुष भवन करनी सैमन दैम बीषाद रघुपती गुन गना
तेजी सकल भरौस गावही सुनही जे सुचीत मना

॥ दोहा ॥

सकल सुमंगल दाऐक रघुनाऐक गुन गान
सादर सुनही सो तरही भौ सीधु बीना जलजान

इति श्री रामचरीत्रेमानसे सकल कलुष बीध्वंसनो नाम वीसुध संतोष संपादनी नाम पंचमो सौपान समाप्ताः ॥ लीषीते सबुर सींह मालीक मौजे सुरज पुर बडगांव प्रगने वेसवक हेमराज पाठार्थे लीषीत मितीः ॥ जो देषा सो लीषा मम दोषं न दीयते ॥

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल का पता नहीं चला। लिपि कैथी है। "तब मैनाक होही सहाइ" लिखा था पर बाद में उसे काटकर 'स्रम भारी' बनाया गया है। पाठ भेद के लिये निम्नांकित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

तिन्ह के परस किए गिरि भारे। तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥ (प्र०)
तीन्ह के परस कीए भरी भारे। तरीहै जलधी प्रताप तुम्हारे (ह०)
मै पुनि उर धरि प्रभुताई। करिहौं बल अनुमान सहाई ॥ (प्र०)
मै तव उर धरी तब प्रभुताइ। करीहौ बल अनुमान सहाइ (ह०)
अेहि बिधि नाथ पयोधि बधाइअ। जेहि अेह सुजसु लोक तिहु गाइअ (प्र०)
ऐही बीधी स्रम उतर कटकाइ। इतह नाथ षल कर अघमाइ ॥ (ह०)

८६. सुंदर कांड । देशी कागज । पत्र—१८ । आकार–११६ ० इंच लंबाई और ६ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—११ । परिमाण (छंदों में) —५४६ । पूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—अज्ञात ।

आदि

श्री गणेशायनमः

श्लोक॥ शांतं शाश्वत प्रमेय मनघं गीर्वाण शांतिप्रदं
ब्रह्मा शंभु फणींद्र सेव्यमनिशं वेदांतवेद्यं विभुं
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं माया मनुष्यं हरिं
वंदेहं करुणाकरं रघुवरं भूपाल चूडामणिं ॥१॥

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेस्मदीये सत्यं वदामि च भवानखिलांतरात्मा
भक्ति प्रयच्छ रघुपुंगव निर्भरां मे कामादि दोष रहितं कुरु मानसं च॥२॥
अतुलित बलधामं स्वर्ण शैलाभदेहं दनुज वन कृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यं
सकल गुण निधानं वानराणामधीशं रघुपति वरदूतं वातजातं नमामि ॥३

चौपाई जामवंत के वचन सोहाए सुनि हनुमंत हृदय अति भाए
तव लगि मोहि परषेहु तुम्ह भाई सहि दुष कंद मूल फल षाई
जब लगि आवउँ सीतहि देषी होइ काज मोहि हरष विसेषी
अस कहि नाइ सवन्हि कहु माथा चलेउ हरषि हिय धरि रघुनाथा
सिंधु तीर एक भूधर सुंदर कौतुक कूदि चढेउ ता ऊपर
बार बार रघुबीर संभारी तरकेउ पवन तनय बल भारी
जेहि गिरि चरन देइ हनुमंता चलेउ सो गा पाताल तुरंता

अंत

चौ० नाथ नील जल कपि दोउ भाई लरिकाई रिषि आसिष पाई
तिन्हके परस किए गिरि भारे तरिहहिँ जलधि प्रताप तुम्हारे
मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई करिहौं बल अनुमान सहाई
एहि बिधि नाथ पयोधि बधाइय जेहि यह सुजस लोक तिहुँ गाइय
एहि सर मम उत्तर तटवासी हतहु नाथ षल नर अघरासी
सुनि कृपाल सागर मन पीरा तुरतहिँ हरी राम रनधीरा
देषि राम बल पौरुष भारी हरषि पयोनिधि भयो सुषारी
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा चरन बंदि पायोधि सिधावा

छंद निज भवन गवनेउ सिंधु श्री रघुपतिहि यह मत भाएऊ
यह चरित कलिमलहर जथामति दास तुलसी गाएऊ
सुष भवन संसय समन दमन विषाद रघुपति गुन गना
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना

दो० सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान
सादर सुनहिँ ते तरहिँ भव सिंधु विना जलजान ६० ॥

इति श्री राम चरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने ज्ञान संपादनो नाम पंचमः सोपानः ५ ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति लीथो टाइप में है। प्रति किस प्रेस से प्रकाशित हुई थी यह ज्ञात नहीं। लिपिकाल भी नहीं दिया गया है।

८७. सुंदरकांड। देशी कागज। पत्र—२२। आकार–१०१/२ इंच लंबाई और ६१/२ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१२। परिमाण (छंदों में)—४६२। अपूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

.........न्ह प्रनाम ॥ पुलकित तनु कर जोरि कह ॥ १ ॥

दोहा ॥ हनुमान तेहि परसि करि पुनि तेहि कीन्ह प्रनाम ॥
रांम काज कीन्हे विना मोहि कहां विश्रांम ॥ २ ॥

चौपई ॥ जात पवनसुत देवन्ह देषा ॥ जानै कहँ बल बुद्धि विशेषा ॥
सुरसा नाम अहिन की माता ॥ पठइहि आई कही तेई बाता ॥
आजु सुरन मोहि दीन्ह अहारा ॥ सुनत वचन कहै पवनकुमारा ॥
राम काज करि फिरि मैं आवौ ॥ सीता की सुधि प्रभुहिं सुनावौं ॥
तव तुव बदन पैठिहौं आई ॥ सत्य कहौं मोहि जान दै माई ॥
काहूं जतन देई नहिं जाना ॥ ग्रसिसिं न मोहि कहेउ हनुमाना ॥
जोजन भर तेहि वदनु पसारा ॥ कपि तनु कीन्ह दुगन विस्तारा ॥
सोरह जोजन मुष तेहि ठऐऊ ॥ तुरत पवन सुत बत्तीस भऐऊ ॥
जैसे जैसे सुरसा बदन बढावा ॥ तासु दून कपि रूप दिखावा ॥
सत जोजन तेहि आनन कीन्हां ॥ अति लघु रूप पवनसुत लीन्हां ॥
वदन पैठि पुनि बाहिर आवा ॥ मागां बिदा तांहि सिरु नावा ॥

× × ×

अंत

।।चौपई।। लछिमन बान सरासन आनू ।। सोषौ बारिधि बिसिख कृसानू ।।
सठ सन विनय कुटिल सन प्रीती ।। सहज कृपिनि सन सुंदर नीति ।।
ममता रत सन ज्ञान कहानी ।। अति लोभी सन बिरति बषानी ।।
क्रोधिहिं सम कामिहि हरिकथा ।। ऊपर बीज बये फल जथा ।।
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा ।। यह मत लछिमन के मन भावा ।।
संधानेउ धनु बिसिष कराला ।। उठेउ उदधि उर अंतर ज्वाला ।।
मकर उरग झष गन अकुलाने ।। जरत जंतु जलनिधि पहिचाने ।।
कनक थार भरि मनि गन नाना ।। विप्र रूप आए तजि माना ।।
दोहा ।। काटेहि पैं कदली फरैं कोटि जतन कोऊ सीच ।।
विनय न मान षगेस सुनु डाटे नवै पै नीच ।। ६० ।।
सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरें ।। छमहु नाथ अवगुन सब मेरैं ।।
मगन समीर अनल जल धरनी ।। इन्हकै नाथ सहज जड करनी ।।
तव प्रेरित माया उपजाए ।। सिष्टि हेत सब ग्रंथिन गाए ।।

× × ×

विशेष ज्ञातव्य—प्रारंभ का प्रथम पत्र तथा अंत के पत्र उपलब्ध नहीं नहीं हैं। प्रति का पाठ प्रायः शुद्ध है। लिपिकाल तथा लिपिकर्ता का उल्लेख हुआ है। पाठांतर की दृष्टि से प्रति महत्वपूर्ण है। नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से मुद्रित रामचरित मानस-सुंदर कांड से उद्धृत कुछ पाठांतर इस प्रकार हैं—

हनुमान तेहि परसि करि पुनि तेहि कीन्ह प्रनाम ।। (ह० प्रति)
हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम ।। (प्र० मानस)
सुरसा नाम अहिन की माता। पठइहि आइ कही तेई बाता ।।
(ह० प्र०)
सुरसा नाम अहिन्ह कै माता ।। पठइन्हि आइ कही तिहिं बाता ।।
(प्र० रा०)

७७. सुंदरकांड। देशी कागज। पत्र—३५। आकार—६$\frac{१}{२}$ इंच लंबाई और ४$\frac{४}{१०}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—६। परिमाण (छंदों में)—४१३। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल— अज्ञात।

आदि

..............................लोचन नीर ॥ ७ ॥

चौपइ ॥ जानतहूं अस स्वामि बिसारी । फिरहि ते काहे न होहि दुषारी ॥
इति बिधि कहत राम गुन ग्रामा । पावा अति आचरज बिसरामा ॥
पुनि सब कथा बिभीषन कही । जिहि बिध जनकसुता तहं रही ॥
तब हनुमंत कहा सुन भ्राता । देषा चहो जानकी माता ॥
जुगत बिभीषन सकल सुनाइ । चलेउ पवनसुत बिदा कराइ ॥
करि सोइ रूप गयो पुन तहंवा । बन असोक सीता रहे जहंवा ॥
देषि मनही मन कीन प्रनामा । बैठे ही बीति जात निस जामा ॥
कृस तनु सीस जटा इक बेनी । जपति हृदय रघुपति गुन स्रेनी ॥

दोहा ॥ निज पद नयन दिये मन राम कमल पद लीन ॥
परम दुषी भा पवन सुत देषि जानकी दीन ॥ ८ ॥

तरु पल्लध महु रहा लुकाइ । करै विचार करौ का भाइ ॥
तिहि अवसर रावन तहं आवा । संग नारि बहु किऐ बनावा ॥

अंत

देषि राम बल पौरुष भारी । हरषि पयोनिधि भएउ सुषारी ॥
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा । चरन बंदि पाथोधि सिधावा ॥

छंद ॥ निज भवन गवनेउ सिंधु श्री रघुपतिहि येह मत भाएउ ॥
यह चरित कलिमल हर जथामति दास तुलसी गावहि ॥
सुष भवन संसय समन दवन विषाद रघुपति गुनगना ॥
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहु सतत सठ मना ॥

दोहा ॥ सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ॥
सादर सुनहि तें तरहि भव सिंधु विनय जलजान ॥ ६० ॥

इति श्री राम चरिते मानसे सकल कलि कलुष विध्वसने ज्ञान सं०......

विशेष ज्ञातव्य—प्रति खंडित है । प्रारंभ के ७ पत्र नहीं हैं । अंतिम पत्र भी उपलब्ध नहीं जिससे लिपिकाल का पता नहीं लगता । प्रति सुस्पष्ट अक्षरों में लिखी गई है । यत्र तत्र संशोधन भी हुआ है । कुछ पाठांतर भी द्रष्टव्य हैं—

सो भुज कंठ कि तव असि घोरा । सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा ॥
(प्र० रा०, पृ० ३८६)

सो भुज काट कि तब अस घोरा। सुन सठ अस प्रमान मत मोरा॥
(इ० प्र०, पत्र ८)

तासु बचन सुन ते सब डरीं। जनक सुता के चरनन्हि परी॥
(प्र० रा०, पृ० ३८६)

तासु वचन सुन ते सब डरइ। जनक सुता के चरनन्हि परइ॥
(इ० प्र०, पत्र १०)

काटेहि पइ कदली फरै कोटि जतन कोउ सींच।
विनय न मान खगेस सुनु डाटेहि पै नव नीच॥
उभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे। छमहु नाथ सब अवगुन मेरे॥
(प्र० रा०, पृ० ४०६)

कांटे तें पइ कदली फरै कोटि जतन कोउ सींचु॥
विनय न मान षगेस सुनु डाटेंहि पइ नव नीच॥
उभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे। छमहु नाथ सब अवगुन मोरे॥
(इ० प्र०, पत्र ४)

७८. सुंदरकांड। देशी कागज। पत्र—१६। आकार—६$\frac{1}{2}$ इंच लंबाई और ६$\frac{1}{2}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)-१८। परिमाण (छंदों में)—५४०। अपूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

श्री रामाय नमः॥
शांतं शाश्वतमप्रमेयंममलं निर्वाण प्रदं॥
ब्रम्हा शंभु फणींद्र सेव्यमनिशं वेदांतवेद्यं विभुं॥
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायानुष्यं हरिं॥
वंदेहं करुणाकरं रघुवरं भूपाल चूडामणि॥१॥
नाना स्पृहा रघुपते हृदयेस्मदीये॥
सत्यं वदामि च भवानखिलांतरात्मा॥
भक्ति प्रयछ रघुपुंगव निर्भरांमं॥
कामादिदोष रहितं कुरु मानसं च॥२॥
अतुलित बलधामं स्वर्णभेदेहं॥
दनुज वन कृशानुं ज्ञानीनामग्रगण्यं॥

सकल गुण निधानं वानराणमधीशं ॥
रघुपति बरदूतं वातजातं नमामि ॥ ३ ॥

चौपई॥ जामवंत के वचन सुहाये। सुनि हनुमंत हृदय अति भाये॥
तेब लगि मोहि परिषेहु भाई। सहि दुख कंद मूल फल षाई॥
जब लगि आउ सीतहि देषी। होइहि काज मोहि हरष विसेषी॥
अस कहि नाइ सबन्हि कहुं माथा। चलेउ हरषि हिय धरि रघुनाथा॥
सिंधु तीर एक भूंधर सुंदर। कौतुक कूदि चढे ता ऊपर॥
बार बार रघुवीर संभारी। तरकेउ पवनतनय बल भारी॥
जिंहि गिरिं चरन दीन्ह हनुमंता। चलि गयेउ पताल तुरंता॥
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना। एही भाति चलेउ हनुमाना॥

अंत

लछिमन बान सरासन आनु। सोषउ वारिधि विसिष कृसानु॥
सठ सन विनय कुटिल सन प्रीति। सहज कृपन सन सुंदर नीति॥
ममता तर सन ज्ञान कहानि। अति लोभी सन विरति बषानि॥
क्रोधिहि सन कामिहि हरि कथा। ऊसर बीज बोई फल जथा॥
अस कहि रघुपति चाप चढावा। यह मत लछिमन के मन भावा॥
संधानेउ प्रभु बिसिष कराला। उठी उदधि उर अंतर ज्वाला॥
मकर उग झष गन अकुलाने। जरत जंतु जलनिधि जब जाने॥
कनक थार भरि मनिगन नाना। विप्र रूप आएउ तजि माना॥

॥दोहा॥ काटहि कदली पै फरै कोटि जतन कोउ सींच॥
विनय न मानि षगेस सुनु डाटिहि विनवे नीच॥ ४६॥

चौपाई॥ सभय सिंधु गहि पद प्रभु कैरे॥ छमहु नाथ सब अवगुन मोरे॥
गगन समीर अनल जल धरनी॥ इन्हकै नाथ सहज जड करनी॥
तव प्रेरित माया उपजाये॥ श्रिष्टि हेतु शब ग्रंथिन्ह गाए॥
प्रभु आयसु जेहि कह जस अहही॥ सो तिहि भांति रहें सुष लहही॥

× × ×

विशेष ज्ञातव्य—प्रति अपूर्ण है। इस प्रति की प्रतिलिपि जमनाबाई ने की है क्योंकि अन्य पाँच कांडों की प्रतिलिपि जमनाबाई ने की थी जिसका स्पष्ट उल्लेख पुष्पिका में है।

प्रति में संशोधन भी हुआ है। फिर भी कुछ गलतियाँ रह गई हैं। पाठांतर भी विशेष हैं—

राम काज सब करिहु तुम्ह ॥ बुद्धि बल रूप निधान ॥
आसिष दे सुरसा गई ॥ हरषि चले हनुमान ॥
(ह० प्र०, पत्र० २)

राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान ।
आसिष देई गई सो हरषि चलेउ हनुमान ॥
(प्र० रा०, पृ० ३८२)

७६. सुंदरकांड । मिल का कागज । पत्र —२६ । आकार —७ ६/१० इंच लंबाई और ६ १/१० इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१६ । परिमाण (छंदों में)—५८० । पूर्ण । रूप —नवीन । लिपि —नागरी । लिपिकाल—अज्ञात ।

आदि

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सुंदरकांड लीष्यते ॥
शांतं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाण शांतिप्रदं
ब्रह्मा शंभु फणींद्र सेव्यमनीशं वेदांत वेद्यं विभुं ।
राजानं जगदीश्वरं सुरगुरुं माया मनुष्यं हरिं ॥
वंदेहं करुणाकरं रघुवरं भूपाल चूड़ामणीं ॥ १ ॥
नान्य स्पृहा रघुपते हृदयमदीये ॥
सत्यं वदामी च भवानिषिलांतरात्मा ॥
भक्ति प्रियछ रघुपुंगव नीर्भरामे ॥
कार्जादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥ २ ॥
अतुलित बलधामं स्वर्णशैलाभदेहं ॥
दनुज बन कृसानं —ज्ञानीनामग्रगम्यं ॥
सकल गुण नीधानं वानरानामधीशं ॥
रघुपति वरदूतं वातजातं नमामी ॥ ३ ॥

दोहा ॥ सींधु तीर सब बेठि के कपी मन कीन्ह विचार ॥
अती अगाध सागर पर केहि विधि उतरब पार ॥ १ ॥
वार बरोवर बारि हे तापर चलत बयार ॥
रघुपती पार उतारिहे अपनी ओर नीहार ॥ २ ॥
चौपाई ॥ जामवंत के वचन सुहाए ॥ सुनी हनुमंत हृदय अती भाऐ ॥

अंत

...सुनी कृपाल सागर मन पीरा ॥ तुरतही हतेनु राम रन धीरा ॥
देषी राम बल पौरुष भारी ॥ हरष पयोनीधी भयेउ सुषारी ॥
सकल चरीत कही प्रभुहि सुनावा ॥ चरन बंदी पाथोधी सीधावा ॥

छंद ॥ नीज भवन गवनेउ सींधु श्री रघुपती हिय मत भाएउ ॥
यह चरीत कलीमल हरन यथामती दास तुलसी गाएउ ॥
सुष भवन संशय सवन दवन वीष्याद रघुपती गुन गाना ॥
तजी सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सुची मना ॥

दोहा ॥ सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ॥
सादर सुनही ते भव तरही सींधु विना जलजान ॥ ६४ ॥

इ इ श्री—रामचरीत मानसे सकल कली कलुष विध्वंसने विशुद्ध सत्व अविरल भक्ति वैराग्य संपादिनो नाम पंचमो सोपान : ॥ समाप्तः॥
श्री ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥

८०. सुंदरकांड । देशी कागज । पत्र—२३ । आकार—१० इंच लंबाई और ४½ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—१३ । परिमाण (छंदों में)—५६० । खंडित । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—अज्ञात ।

आदि

॥ ०६० ॥ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ॥

सोरठा ॥ जे सुमिरत सीध होई गननायक करीवर वदन ॥
करौ अनुग्रह सोई बुधि रासि सुभ गुन सदन ॥

चौपई ॥ जामवंत के वचन सुहाए । सुनि हनुमंत हृदय मन भाए ॥
तब लगी मोहि परिषेहु तम भाइ । सही दुष कंद मुल फल षाई ॥
जब लगी आवौ सीतही देषी । होइही काज मोहि हरष विसेषी ॥
अस कहि नाई सवन कह माथा । चले हर्षि हिय धर रघुनाथा ॥
सिंधु तिर एक भुधर सुंदर । कौतुक कूदि चढेउ ता उपार ॥
बार बार रघुवीर संभारी । तरकेउ पवन तनय बल भारी ॥
जेही गिरी चरन देइ हनुमंता । चलेउ सोउ पाताल तुरंता ॥
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना । एहि भांति चले हनुमाना ॥

× × ×

अंत

...सुनी क्रपाल सागर मन पीरा ॥ तुरतही हतेनु राम रन धीरा ॥
देषी राम बल पौरुष भारी ॥ हरष पयोनीधी भयेउ सुषारी ॥
सकल चरीत कही प्रभुहि सुनावा ॥ चरन बंदी पाथोघी सीधावा ॥

छंद ॥ नीज भवन गवनेउ सींधु श्री रघुपती हिय मत भाऐउ ॥
यह चरीत कलीमल हरन यथामती दास तुलसी गाएउ ॥
सुष भवन संशय सवन दवन वीष्याद रघुपती गुन गाना ॥
तजी सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सुची मना ॥

दोहा ॥ सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ॥
सादर सुनही ते भव तरही सींधु विना जलजान ॥ ६४ ॥

इ इ श्री—रामचरीत मानसे सकल कली कलुष विध्वंसने विशुद्ध सत्व अविरल भक्ति वैराग्य संपादिनो नाम पंचमो सोपान : ॥ समाप्तः॥
श्री ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥

८०. सुंदरकांड । देशी कागज । पत्र—२३ । आकार—१० इंच लंबाई और ४$\frac{5}{6}$ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—१३ । परिमाण (छंदों में)—५६० । खंडित । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—अज्ञात ।

आदि

॥ ०६० ॥ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ॥

सोरठा ॥ जे सुमिरत सीध होई गननायक करीवर वदन ॥
करौ अनुग्रह सोई बुधि रासि सुभ गुन सदन ॥

चौपई ॥ जामवंत के वचन सुहाए । सुनि हनुमंत हृदय मन भाए ॥
तब लगी मोहि परिषेहु तम भाइ । सही दुष कंद मुल फल षाई ॥
जब लगी आवौ सीतही देषी । होइही काज मोहि हरष विसेषी ॥
अस कहि नाई सवन कह माथा । चले हर्षि हिय धर रघुनाथा ॥
सिंधु तिर एक भुधर सुंदर । कौतुक कूदि चढेउ ता उपार ॥
बार बार रघुवीर संभारी । तरकेउ पवन तनय बल भारी ॥
जेही गिरी चरन देइ हनुमंता । चलेउ सोउ पाताल तुरंता ॥
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना । एहि भांति चले हनुमाना ॥

× × ×

अंत

सभय सिं (धु) गहिं पद प्रभु केरे। छमहु नाथ सब अवगुन मोरे।
गगन समिर अनल जल धरनि। इन्हकर नाथ सहज जड करनि ॥
तव प्रेरित माया उपजाए। सिष्टि हेतु सब ग्रंथन्ह गाए ॥
प्रभु आएस जेहि कह जस अहइ। सो तेहि भांति रहे सुष लहइ ॥
प्रभु भल किन्ह मोहि सिष दीन्ही। मर्जादा पुनि तुम्हरिय कीन्ही ॥
ढोल गवारि सुद्र पसु नारी। सकल ताडना के अधिकारि।
प्रभु प्रताप मै जाब सुषाइ। उतरिहि कटकु न मोरि बडाइ ॥
प्रभु अज्ञा अपेल श्रुति गाइ। करहु सो बेगि जौ तुम्हहि सोहाइ ॥

दो ॥१०४॥ सुनत विनित बचन प्रभु कह कृपाल मुसुकाइ ॥
जेहि बिधि उत्तरै कपि कटक तात सो कहहु उपाइ ॥ १०५ ॥
नाथ निल नल कपि दोउ भाइ। लरिकाइ रिषि आसि······॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति में लिपिकाल तथा लिपिकर्ता का उल्लेख नहीं है। कागज, लिखावट तथा स्याही की दृष्टि से प्रति १६ वीं शताब्दी की ज्ञात होती है।

॥ लंका कांड ॥

८१. लंकाकांड। देशी कागज। पत्र—१०६। आकार—६$\frac{१}{२}$ इंच लंबाई और ६$\frac{३}{४}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—२२। परिमाण (छंदों में)—१७६८। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १६५० ?

आदि

पत्र सं० ४ से—

× × ×······बदन दशन कै रूप अनूपा ॥
आनन देषि पुलक की नाइ ॥ अतिशै कोउ कहा नाही जाइ ॥

दोहा

नाना रूप रंग गुनीं करै कटाछ अनेक ॥
बहुतउ गर्जहि तर्जहि बीर ऐक तें ऐक ॥

चौपाइ

धावहि बीर तोरि गीरी लेहीं ॥ उछरी पहार नील कहं देहीं ॥

बांधहि बल सों आनी पहारा ।। आवही बेगी न लावही बारा ।।
गरजहि तरजहि भालू कपीसा ।। मानहू घटा उनै दहूं दीसा ।।

× × ×

सेत बंध कीन्ह नल नागर ।। सुमन समान कीन्ह गीरी शागर
देषि सेतु अति सुंदर रचना ।। बीहशी कृपानीधी बोलेउ बचना ।।
परम रम्य उत्तम ऐह धरनी ।। महीमा अमीत जाए नही बरनी।।
करीहौ इहा शँभु अस्थाना ।। मोरे ह्रदैंए परम कल्पाना ।।
सुनी कपीस बहू दुत पठाए ।। मुनीवर सकल बोली लैय आए ।।
लींग थापि बीधीवंत करि पूजा ।। सीव समान प्रीअ मोही न दूजा ।।
सीव द्रोहि मम भग्त कहावा ।। सो नर सपनेहू मोहि न पावा ।।
शंकर बीमुख भग्ती यहै मोरी ।। तें नर मूढ मंद मति थोरी ।।

दोहा

शंकर प्रीय मम द्रोही शीव द्रोही मम दास ।।
तें नर करहि कल्प भरी घोर नरक मह बास ।।

अंत
पत्र सं० ११२ से—

छंद

लीए ह्रदैं लगाए कृपानीधान सुजान राए रंमापती ।।
बैठारि परम सुप्रेम बुझी सों कुसल करी अती बीनती ।।
अब कुसल प्रद पंकज बीलोकि बीरंची संकर सेव्री ज्यो ।।
सुषधाम पुरनकाम राम नमामी राम नमामी ज्यो ।।
सब भाती अधम नीषाद सो हरी भरत सो उर लाइए ।।
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोह बस बीसराइए ।।
ऐह रावनारी चरीत्र पावन रामपद रतप्रद सदा ।।
कामादी हर बीग्यान कर सुर सीध मुनी गावही मुदा ।।

दोहा

समर बीजै रघुबीर को सुनही जो सदा सुजान ।।
बीजए बीवेक बीभूती नीती तीनही देही भगवान ।।
एह कलीकाल मलाएतन मन करी देषु बीचार ।।
श्रीरघुनाएक नाम तजी नहीं कछु आन अधार ।।

इतिश्रीरामचरीत्रेमानसे सकल कली कवलुष बीधंशनौ बीमल वैराग संपादनोनाम षष्टम सोपांन इती श्रीं लंकाकांड रमायन संपुर्न जो देषा शो लीषा मम दोष न दीयते पंडीत जन सो बीनती मोरी टुटल अछर लेव जोरी संबत १६५० शाल समैनाम दसषत कतवारूदास साकीन अलीगंज लीषावल गीअानीराम रौनीअार मोकाम मेहराजगंज ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति आदि से (पत्र सं० १ से ३ तक) खंडित है। पत्र सं० ४ से ११२ तक है परंतु जिल्दबंदी करते सम पत्रों के क्रम में उलट फेर हो गया है। प्रारंभ में पत्र सं० ६५ से ७२, ८१ से ११२ तक है, इसके बाद पत्र सं० ४ से ६४ तक और ७३ से ८१ तक है जिसका ठीक क्रम पत्र सं० ४ से ११२ तक होना चाहिए। कागज देशी, लिखावट प्राचीन, पत्रों में कीड़े लगे होने पर भी अत्यंत प्राचीन नहीं जँचता। लिपिकाल संवत् १६५० है। ऐसा प्रतीत है कि आठ (८) के ऊपर छतरी ' ै ' लगा देने के कारण ही '६' विदित होता है। अतः लिपिकाल सं० १८५० ही ठीक जँचता है।

प्रस्तुत प्रति किसी कैथी लिपिवाली प्रति की प्रतिलिपि है। इस संबंध में निम्नांकित पंक्ति द्रष्टव्य है—"···जो देषा शो लीषा मम दोष न दीयते······।"

यद्यपि संपूर्ण ग्रंथ नागरी लिपि में है पर कहीं कहीं कैथी के अक्षर भी प्रयुक्त हुए हैं—'र' के लिये '॑' और 'रूप' के लिये 'नूप' आदि। क्षेपक कथाओं का भी समावेश है।

प्रतिलिपिकार भोजपुरी प्रदेश का रहनेवाला था जिसका नाम 'कतवारूदास' था और जिसने प्रतिलिपि कराई उसका नाम 'गीअानीराम' था। प्रतिलिपिकार का नाम 'कतवारूदास' है जिससे प्रकट होता है कि कम पढ़ा लिखा था और भोजपुरिया होने के कारण भोजपुरी शब्दों का प्रयोग भी किया। इस संबंध में—'दसषत', 'लीषावल' और 'गीअानीराम' —आदि द्रष्टव्य हैं।

सारांश यह कि यदि प्रस्तुत प्रति का लिपिकाल सं० १६५० सिद्ध हो जाता तो प्रति अत्यंत महत्व की होती। परंतु उपर्युक्त कारणों से प्रति का लिपिकाल सं० १८५० ही मानना ठीक जँचता है, सं० १६५० नहीं।

८२. लकांकांड । देशी कागज । पत्र—३७ । आकार—१३ इंच लंबाई और ५½ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—११ । परिमाण (छंदों में)—१३२३ । अपूर्ण (पत्र सं० २ से ९ तक और १२, १३ नहीं हैं) । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—सं० १७५९ वि० ।

आदि

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री जानकीवल्लभो विजयतेः ॥

दोहा

लव निमेष परिमान जुग बरष कलप सर चंड
भजसि न मन तेहि राम कहं काल जासु कोदंड ॥ १ ॥

रामं कामारिसेब्यं भव भय हरणं काल मत्तेभसिंहं ॥
योगेंद्रं ज्ञानगम्यं गुननिधिमजितं निगु र्नं निर्विकारं ॥
मायातीतं सुरेशं षलबधनिरतं ब्रह्मबृंदैकदेवं ॥
वंदे कंदावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीश्वरूपं ॥ १ ॥
शंखेंद्वाभवतीव सुंदरतनुं शादूर्ल चर्म्मांबरं ॥
काल व्याल कराल भूषणधरं गंगाशशांकप्रियं ॥

× × ×

......................ल गर्वा । जीतन चलेउ रामु रण सर्वा
सागर उतरि पार सो गऐउ । नारि बृंद सो देषत भऐउ
तेन्ह सन कहेसि पतिन्ह पह जाहू । कहेहु कि आऐउ निसिचर नाहू
तब मैं तेन्हहि जीति संग्रामा । लेइ जैहौ तुम्ह कह निज धामा
सुनत वचन एक जठरि रिसानी । धाइ चरण गहि गगन उडानी
गई हरि धरि धरि झकझोरा । डारेसि सिंधु मध्य अति जोरा

दोहा

गऐउ अगाध अचेत होइ मरै न विप्र प्रसाद
सावधान उठि चलेउ पुनि हिय हरषेउ न विषाद ३५

एक रावन के कहौं कहानी । जीतै चलेउ ससिहि अभिमानी
गऐउ निकट अति सित बहु व्यापेउ । कंपित गात बिकल भय व्यापेउ
बलि जीते एक गऐउ पताला । राषेउ बाधि सिसुन्ह हयसाला

अंत

प्रभुहि विलोकि सहित बैदेही । परेउ अवनि तन सुधि तहि तेही
प्रीति परम विलो (कि)......। हरषि उठाइ लियो उर लाई

छंद

लयो हृदय लाई कृपानिधान सुजान राम रमापती
बैठारि परम समीप बूझी कुसल..................नती
अब कुसल पद पंकज विलोकि विरंचि शंकर सेव्य जे
सुषधाम पूरन काम राम नमामि नाम नमामि ते
सब भाति.....निषाद सो हरि भरत ज्यो उर लाइयो
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोह बस बिसराइयो
एह रावनारि विरित्र पावन राम........प्रद सदा
कामादि हर विज्ञान कर सुर सिद्ध मुनि गावहि मुदा

॥ दोहा ॥

समर विजय रघुपति चरित सुनहि जे सदा सु...
विजय विवेक विभूति नित तेन्हहि देइ भगवान
यह कलिकाल मलायतनु मन करि देषु विचार
श्री रघुनायक ना...हि कछु आन अधार १८०

इति श्री रामचरिमानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल विज्ञान संपादिनाम... पान समाप्तः ॥ ॥ शुभमस्तु ॥ ॥ संवत् १७५६ मिति चैत्र शुदी पुनी श्री राम ॥

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल सं० १७५६ वि० है। संपूर्ण ग्रंथ में ६६ पत्र थे जिनमें पत्र सं० २ से ६ तक और पत्र सं० १२, १३ नहीं हैं। प्रथम पत्र प्रस्तुत प्रति के पत्रों से भिन्न जान पड़ता है। यत्र-तत्र पाठांतर भी हैं। कहीं कहीं शब्दों का उलट फेर भी कर दिया गया है। कुछ पंक्तियाँ क्षेपक की भी लगती हैं। इसलिए के शब्द फट गए हैं या मरम्मत करने में कागज के नीचे दब गए हैं—स्पष्ट नहीं होता। लिपिकाल की दृष्टि से ग्रंथ महत्वपूर्ण है।

८३. लंकाकांड। देशी कागज। पत्र—५६। आकार—६½ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१८। परिमाण (छंदों में)—१८६०। आंशिक खंडित। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८३५; शाके १७००।

आदि

श्री जानकीबल्लभाय नमः।

लव निमेष परवान जुग बरष कल्प सर चंड॥
भ...हि न मन तेहि राम कह काल जासु कोदंड॥ १॥
॥ श्लोक॥
रामं कामारि सेव्यं (भ) व भय हरणं कालमत्तेभसिंहं
योगेंद्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निगु णं निर्विकारं॥
मायातीत सूरेसं खलवंधनिरतं वृह्मबृंदैकदेव॥ २॥
वंदे···वातं सरसिजनयनं देवमुर्विस्वरूपं॥
संखेद्वाभमतिवसुंदरतनु सादुंल चर्मोवरं॥ ३॥
कालव्यालकरालभूषणंधरं गंगाससांकप्रीयं॥
कासीस···लि कल्मषौघसमनं कल्यानकल्पद्रुमं॥
नौमिड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं···करं मनमथारीं॥
यो ददाति संता संभु कैवल्यमपि दुर्लभं॥
खलानां दंडकृ···जो सौंकर सांतनोतु माम॥ ४॥

अंत

॥ छंद॥
लिये हृदय लाई कृपानिधान सुजान राम रमापती॥
बैठारि परम समीप बुझी परम कुसल कौसलपती॥
अब कुसल पद पंकज बिलोकि विरंचि संकर सेव्य जे॥
सुखधाम पूरन काम राम नमामि राम नमाम ते॥
सब भांति अधम निषाद सो हरि भरत जों उर लाईयो॥
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोह बस बिसराईयो॥
एहि रावनारि चरित पावन राम पद रति प्रद सदा॥
कामादि हर विज्ञान कर सुर सीध मुनि गावही मुदा॥
दोहा॥ समर विजय रघुबीर के चरित जे सुने सुजान॥
विजय बिबेक बिभुति नित तीनहि देहि भगवान॥ ०॥

यह कलिकाल मलायतन मन कर देषु विचार ॥
श्री रघुनायक नाम तजि नहीं कछु आन अधार ॥ २४७ ॥

श्री रामा ईती श्री रामचरित्रमानसे सकल कलिकूलू विध्वंसन वीमल ज्ञान संपदानीनाम सछ्मो सोपान ईति श्रीरामायन लंका कांड संपूर्ण श्री रस्तु सुभं संमत ॥ १८३५ ॥ का साके १७०० का वर्तमाने मासोतमासे जठमासे कष्न पखे नोमी गुरुवासरे श्री सूर्य उत्तेरायणगते लीखतं गजमनाबाई अतराला मध्य ।

विशेष ज्ञातव्य—लि० का० सं० १८३५ वि०, शाके १७०० है। क्षेपक कथाओं का समावेश है । पाठांतर का बाहुल्य है। यथा—

इहाँ निषाद सुना प्रभु आए । नाव नाव कह लोग बोलाए । (प्र०)
ईहा निषाद सुना प्रभु आये । ल्याव नाव कहुं लोग बोलाये ॥ (ह०)
सुरसरि नाधि जान तब आयो । उतरेउ तट प्रभु आअेसु पायो । (प्र०)
सुरसरी नाधि जान जब आई । उतरे तट प्रभु आईसु पाई । (ह०)
बैठारि परम समीप बूझी कुसल सो कर बीनती । (प्र०)
बैठारि परम समीप बुझी परम कुसल कौसलपती । (ह०)
कहु रावन रावन जग केते । मैं निज स्रवन सुने सुनु जेते
बलिहि जितन अेकु गअेउ पताला । राखेउ बाँधि सिसुन्ह हयसाला ।
खेलहि बालक मारहिं जाई । दया लागि बलि दीन्ह छोड़ाई ।
एकु बहोरि सहसभुज देखा । धाइ धरा जिमि जंतु बिसेखा ।
(प्रकाशित, पृ० ४२६ से)—

कहु रावन रावन जग केते ॥ मै निज श्रवन सुने है तै तै ॥
रावन एक महाबल गर्वा । जीतन चलेउ सुरासुर सर्वा ।।
सागर उतर पार सो गयेउ । नारी वृंद सो देषते भयेउ ॥
तिन्ह सन कहसि पतिन्ह पही जाहु । कहेउ कि आयेउ निश्चर नाहु ॥
(हस्तलेख पत्र सं० १०)—

८४. लंकाकांड । देशी कागज । पत्र—५६ । आकार—१० इंच लंबाई और ५ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१२ । परिमाण (छंदों में)—१७२२ । पूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—संवत् १८३७, शाके १७०२ ।

८३. लंकाकांड । देशी कागज । पत्र—५६ । आकार – ६½ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१८ । परिमाण (छंदों में)—१८६० । आंशिक खंडित । लिपि – नागरी । लिपिकाल—सं० १८३५; शाके १७०० ।

आदि

श्री जानकीबल्लभाय नमः ।

लव निमेष परवान जुग वरष कल्प सर चंड ।।
भ...हि न मन तेहि राम कह काल जासु कोदंड ।। १ ।।
।। श्लोक ।।
रामं कामारि सेव्यं (भ) व भय हरणं कालमत्तेभसिंहं
योगेंद्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निगुंणं निर्विकारं ।।
मायातीत सूरेसं खलवंधनिरतं ब्रह्मबृंदैकदेव ।। २ ।।
वंदे···वातं सरसिजनयनं देवमुर्विस्वरूपं ।।
संखेंद्वाभमतिवसुंदरतनु सादुंल चर्मांवरं ।। ३ ।।
कालव्यालकरालभूषणंधरं गंगाससांकप्रीयं ।।
कासीस···लि कल्मषौघसमनं कल्यानकल्पद्रुमं ।।
नौमिड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं···करं मनमथारीं ।।
यो ददाति संता संभु कैवल्यमपि दुर्लभं ।।
खलानां दंडकृ···जौ सौंकर सांतनोतु माम ।। ४ ।।

अंत

।। छंद ।।
लिये हृदय लाई कृपानिधान सुजान राम रमापती ।।
बैठारि परम समीप बुझी परम कुसल कौसलपती ।।
अब कुसल पद पंकज बिलोकि बिरंचि संकर सेव्य जे ।।
सुखधाम पूरन काम राम नमामि राम नमाम ते ।।
सब भांति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उर लाईयो ।।
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोह बस बिसराईयो ।।
एहि रावनारि चरित पावन राम पद रति प्रद सदा ।।
कामादि हर विज्ञान कर सुर सीध मुनि गावही मुदा ।।
दोहा ।। समर बिजय रघुबीर के चरित जे सुने सुजान ।।
विजय बिबेक बिभुति नित तीनहि देहि भगवान ।। ० ।।

यह कलिकाल मलायतन मन कर देखु बिचार ॥
श्री रघुनायक नाम तजि नहीं कछु आन अधार ॥ २४७ ॥

श्री रामा ईती श्री रामचरित्रमानसे सकल कलिकलूष विध्वंसन वीमल ज्ञान संपदानीनाम सप्तमो सोपान ईति श्रीरामायने लंका कांड संपूर्ण श्री रस्तु सुभं संमत ॥ १८३५ ॥ का साके १७०० का वर्तमाने मासोतमासे जठमासे कष्न पक्षे नोमी गुरुवासरे श्री सूर्य उत्तरायणगते लीखतं गजमनाबाई अतराला मध्य ।

विशेष ज्ञातव्य—लि० का० सं० १८३५ वि०, शाके १७०० है। क्षेपक कथाओं का समावेश है। पाठांतर का बाहुल्य है। यथा—

इहाँ निषाद सुना प्रभु आए। नाव नाव कहँ लोग बोलाए। (प्र०)
ईहा निषाद सुना प्रभु आये। त्यान नाव कहुं लोग बोलाये ॥ (ह०)
सुरसरि नाघि जान तब आयो। उतरेउ तट प्रभु आयसु पायो। (प्र०)
सुरसरी नाघि जान जब आई। उतरे तट प्रभु आईसु पाई। (ह०)
बैठारि परम समीप बूझी कुसल सो कर बीनती। (प्र०)
बैठारि परम समीप बुझी परम कुसल कौसलपती। (ह०)
कहु रावन रावन जग केते। मैं निज स्रवन सुने सुनु जेते
बलिहि जितन अेकु गअेउ पताला। राखेउ बाँधि सिसुन्ह हयसाला।
खेलहि बालक मारहिं जाई। दया लागि बलि दीन्ह छोड़ाई।
एकु बहोरि सहसभुज देखा। धाइ धरा जिमि जंतु बिसेखा।
(प्रकाशित, पृ० ४२६ से)—

कहु रावन रावन जग केते ॥ मै निज श्रवन सुने है तै तै ॥
रावन एक महाबल गर्वा। जीतन चलेउ सुरासुर सर्वा।
सागर उतर पार सो गयेउ। नारी वृंद सो देखते भयेउ ॥
तिन्ह सन कहसि पतिन्ह पही जाहु। कहेउ कि आयेउ निश्चर नाहु ॥
(हस्तलेख पत्र सं० १०)—

८४. लंकाकांड। देशी कागज। पत्र—५६। आकार—१० इंच लंबाई और ५ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१२। परिमाण (छंदों में)—१७२२। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—संवत् १८३७, शाके १७०२।

आदि

श्री गणेशाय नमः ॥

रामं कामारिसेव्यं भव भय हरणं काल मत्तेभसिंहं ॥
योगिंद्रं ग्यानगम्यं गुणनिधिमजितं निगुर्णं निरविकारं ॥
मायातीतं शुरंशं षल वध निरतं ब्रह्म वृंदैकदेवं ॥
वंदे कंदावदांतु सरसिजनयणं देवमूर्वीस्वरूपं ॥ १ ॥
संखेंद्वाभमतीवशुंदरतनुं शार्दूलचमर्वारं ॥
कालव्याल कराल भूषणवरं गंगासशांक प्रियं ॥
काशीसं कलिकलमषौघसमनं कल्याणकलपद्रुमौ ॥
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्री शंकरः पातु मां ॥ २ ॥
जो ददाति सतां शंभुः कैवल्यमपि दुर्लभं ॥ ३ ॥
षलानां दंडकृतयोशौ शंकरः शं तुनोतु मां ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

लव निमेष परमाण युग वरष कलप सर चंड ॥
भजसि ण मण तेहि राम कह काल जासु कोदंड ॥ १ ॥

अंत

दीन्हि अशीश मुदित मन गंगा ॥ सुंदरि तव अहिवात अभंगा ॥
सुनत गुहा धायो प्रेमाकुल ॥ आयो निकट परम शुख संकुल ॥
प्रभुहि बिलोकि सहित वैदेही ॥ परेउ अवनि तल शुधि नहि तेही ॥
परम प्रीति विलोकि रघुराई ॥ हरषि उठाइ लियो उर लाई ॥

॥ छंद ॥

लिय हृदय लगाइ कृपानिधान शुजान राय रमापती ॥
बैठारि परम समीप बूझी कुशल कर विनती अती ॥
अब कुशल पद पंकज विलोकि विरंचि शंकर सेव्य जे ॥
शुषधाम पूरण काम राम नमामि राम नमामि ते ॥
सब भांति अधम निषाद शो हरि भरत ज्यो उर लाईउ ॥
मतिमंद तुलसी दास शो हरि मोह बस बिसराइयो ॥
यह रावनारि चरित्र पावन राम पद रति प्रद सदा ॥
कामादि हर विग्यान कर शुर सिद्ध मुनि गावहि मुदा ॥

॥ दोहा ॥

समर विजय रघुपति चरित सुणहि जे परम शुजान
विनय विवेक विभूति रति तिनहि देहि भगवान ॥
यह कलिकाल मलायतन मन करि देषु विचार
श्री रघुनायक नाम तजि नहि कछु आश अधार ॥ २१७

इति श्री रामचरितमानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने संवत् १८३७ शाके १७०२ वैशाष मासे शुक्ल पक्षे पार्वनि चतुर्दश्यां ॥ शौम्यवासरे ।

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल सं० १८३७ ; शाके १७०२ है। ग्रंथ पूर्ण है । लिपि नागरी है। लिपिकर्ता संभवतः राजस्थानी हैं क्योंकि 'न' के स्थान पर कहीं. कहीं 'ण' प्रयोग किया है । पाठांतर भी हैं। परवानु—पंरमाण', भजसि न—भजसि ण', कहुँ 'कह', कालु—काल' सोरठा-'सोठा' बचन—'बचण', उतरइ कटक—'उतरै कटक', कति बारा—'केति वारा', रुदन—'रोदण' भम्रेउ—'भयो', सुनि अति उकुति—'सुनि असि उक्ति', पवन— पवण', दोउ—'द्वौ', सकल सुनहु बिनती कछु मोरी—'सुनहुसकल विनती यक मोरी'—आदि ।

८५. लंकाकांड । देशी कागज । पत्र—७८ । आकार—१०$\frac{3}{10}$ इंच लंबाई और ५$\frac{4}{10}$ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१२ । परिमाण (छंदो में)—२१०६ । पूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—सं० १८६० वि० ।

आदि

॥ ॐ श्री पर्मात्माने नमाः ॥ श्री राम कृष्ण सत्य छे ॥ अथ लंका कांड लिषतं:

॥श्लोक॥ रामं कामारि सेव्यं भव भय हरणं काल मतेव सिंहं ॥
योगींद्र ज्ञान गम्यं गुण नधिमजितं निर्गुनं निर्विकारं ॥
मायातितं सुरेसं खल वध निरतं ब्रह्म ब्रंदैक देवं ॥
वंदे कुंदावदातं सरसिज नयनं देव मुनि सेव्य रूपं ॥ १ ॥
संखेद्वाभमतीव सुंदर तनु सारदल चर्मांबरं ॥
काल व्याल कराल भुषणधरं गंगा सशांक प्रियं ॥
कासीसं कलि कल्मषौघ समनं कल्यान कल्पद्रुमं ॥
नौमीडं गिरिजापतिं गुणनिधिं संभु शिव संकरं ॥ २ ॥

आदि

श्री गणेशाय नमः ॥

रामं कामारिसेव्यं भव भय हरणं काल मत्तेभसिंहं ॥
योगिंद्रं ग्यानगम्यं गुणनिधिमजितं निगुंणं निरविकारं ॥
मायातीतं शुरेशं षल वध निरतं ब्रह्म वृंदैकदेवं ॥
वंदे कंदावदातं सरसिजनयणं देवमूर्वोस्वरूपं ॥ १ ॥
संखेंद्वाभमतीवशुंदरतनुं शादूंलचमर्वारं ॥
कालव्याल कराल भूषणवरं गंगासशांक प्रियं ॥
काशीसं कलिकलमषौघसमनं कल्याणकलपद्रुमौ ॥
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्री शंकरः पातु मां ॥ २ ॥
जो ददाति सतां शंभुः कैवल्यमपि दुर्लभं ॥ ३ ॥
षलानां दंडकृतयोशौ शंकरः शं तुनोतु मां ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

लव निमेष परमाण युग वरष कलप सर चंड ॥
भजसि ण मण तेहि राम कह काल जासु कोदंड ॥ १ ॥

अंत

दीन्हि अशीश मुदित मन गंगा ॥ सुंदरि तव अहिबात अभंगा ॥
सुनत गुहा धायो प्रेमाकुल ॥ आयो निकट परम शुख संकुल ॥
प्रभुहि बिलोकि सहित वैदेही ॥ परेउ अवनि तल शुधि नहि तेही ॥
परम प्रीति विलोकि रघुराई ॥ हरषि उठाइ लियो उर लाई ॥

॥ छंद ॥

लिय हृदय लगाइ कृपानिधान शुजान राय रमापती ॥
बैठारि परम समीप बूझी कुशल कर विनती अती ॥
अब कुशल पद पंकज विलोकि विरंचि शंकर सेव्य जे ॥
शुषधाम पूरण काम राम नमामि राम नमामि ते ॥
सब भाति अधम निषाद शो हरि भरत ज्यो उर लाईउ ॥
मतिमंद तुलसी दास शो हरि मोह बस बिसराइयो ॥
यह रावनारि चरित्र पावन राम पद रति प्रद सदा ॥
कामादि हर विग्यान कर शुर सिद्ध मुनि गावहि मुदा ॥

॥ दोहा ॥

समर विजय रघुपति चरित सुणहि जे परम शुजान
विनय विवेक विभूति रति तिनहि देहि भगवान ॥
यह कलिकाल मलायतन मन करि देषु विचार
श्री रघुनायक नाम तजि नहि कछु आश अधार ॥ २१७

इति श्री रामचरितमानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने संवत् १८३७ शाके १७०२ वैशाष मासे शुक्ल पक्षे पार्बनि चतुर्दश्यां ॥ शौम्यवासरे ।

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल सं० १८३७ ; शाके १७०२ है। ग्रंथ पूर्ण है। लिपि नागरी है। लिपिकर्ता संभवतः राजस्थानी हैं क्योंकि 'न' के स्थान पर कहीं. कहीं 'ण' प्रयोग किया है। पाठांतर भी हैं। परवानु—पंरमाण', भजसि न—भजसि ण', कहुँ 'कइ', कालु—काल' सोरठा-'सोठा' बचन—'बचण', उतरइ कटक-—'उतरै कटक', कति बारा—'केति बारा', रुदन—'रोदण' भयेउ—'भयो', सुनि अति उकुति—'सुनि असि उक्ति', पवन— पवण', दोउ—'द्वौ', सकल सुनहु बिनती कछु मोरी—'सुनहुसकल विनती यक मोरी'—आदि।

८५. लंकाकांड। देशी कागज। पत्र—७८। आकार—१०३/१० इंच लंबाई और ५४/१० इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—११। परिमाण (छंदो में)—२१०६। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८६० वि०।

आदि

॥ ॐ श्री पर्मात्माने नमाः ॥ श्री राम कृष्ण सत्य छे ॥ अथ
लंका कांड लिषतं:

॥श्लोक॥ रामं कामारि सेव्यं भव भय हरणं काल मतेव सिंहं ॥
योगींद्र ज्ञान गम्यं गुण नधिमजितं निगुंनं निविकारं ॥
मायातितं सुरेसं खल वध निरतं ब्रह्म ब्रंदैक देवं ॥
वंदे कुंदावदातं सरसिज नयनं देव मुनि सेव्य रूपं ॥ १ ॥
संखेद्वाभमतीव सुंदर तनु सारदल चर्मोबरं ॥
काल व्याल कराल भुषणधरं गंगा सशांक प्रियं ॥
कासीसं कलि कल्मषौघ समनं कल्यान कल्पद्रुमं ॥
नौमीडं गिरिजापतिं गुणनिधिं संभु शिव संकरं ॥ २ ॥

जो ददाति सततं संभुः कैवल्यमपि दूःर्लभं ॥
षलानां दंड क्र्योसौ संकरः संतनोतु मे ः ३ ॥

दोहा ॥ लव निमेख परमान जुग वरष कल्प सरचंड ॥
भजसि न मन तेहि रांम कहूं काल जासु कोदंड ॥

सोरठा॥ सिंधु वचन सुनि कान सचिव बोलि प्रभु अस कह्यो ॥
अब बिलंब केहि काम ॥ करहु सेतु उतरै कटक ॥ ० ॥
सुनहु भानुकुलकेतु ॥ जामुवंत कर जोरि कही ॥
नाथ नाम तव सेतु ॥ नर चढि भव सागर तरहि ॥ २ ॥

चौ०॥यह लघु जलधि तरत केति बारा ॥ अस सुनि पुनि कहे पवनकुमारा॥
प्रभु प्रताप वडवानल भारि ॥ सोषेउ प्रथम पयोनिधि वारि ॥
तब रिपु नारि रुदन जलधारा ॥ भरेउ बहोरि भयेउ तेहि षारा ॥
सुनि सब जुक्ति पवनसुत केरे ॥ बिहॅसे रघुपति कपि तन हेरि ॥
जामवंत बोलेउ दोउ भाई ॥ नल नीलहि सब कथा सुहाई ॥

अंत

प्रभुहि विलोकि सहित वैदेही ॥ परयो अवनि तल सुधि नहि तेहि ॥
प्रीति पर्म विलोकि रघुराई ॥ हरषि उठाई लीयो उर लाई ॥

छंद॥ लीयो हृदय लगाय क्रपानिधान सुजान राम रमापती
बैठारि पर्म समीप पुछी कुसल कहु करी विनती ॥
अब कुसल पद पंकज बिलोकि विरंन्चि संकर सेव्य जे ॥
सुष धाम पुरन काम राम नमामि राम रमापते ॥
सब भांति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यौं उर लाईयो ॥
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोह बस्य बिसराईयो ॥
यह रावनारि चरित पावन राम पद रति प्रद सदा ॥
कामादि हर विज्ञान कर सुर सिध मुनि गावहि मुदा ॥

दोहा॥ समर विजय रघुपति चरित ॥ सुनहि जे सदा सुजान ॥
बिजय बिवेक विभुति नित ॥ तिनहि देहि भगवान ः ॥
यह कलिकाल मलायतन ॥ मन करि देषि विचार ॥
श्री रघुनायक नाम तजि ॥ नहि कछु आन अधार ॥२१८॥

इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विद्धंसने नाम वैराग्य विमल वर्णनो षष्टमो सोपान ॥ संवत ॥ १८ ॥ ६० ॥ नावरषेचई नरः

सुद्य त्रीजः गुरु वारे समापतः संपुर्णः श्रा पुस्तक सईजेराम नो छे : दसतक वसताराम नो छे : जे वाचे साभले तेने राम राम छे ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति पूर्ण है। प्रतिलिपिकर्ता गुजराती था जिसका नाम बसता राम है। यह प्रति संवत् १८६० में प्रतिलिपि की गई थी। प्रकाशित राम चरित मानस (लंकाकांड) से इसमें बहुत ही अधिक पाठांतर हैं।

८६. लंकाकांड। देशी कागज। पत्र—१२०। आकार—८ इंच लंबाई और ५.१/२ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—२०। परिमाण (छंदों में)—१६५०। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—स० १८६२ वि० (१२१३ फसली)।

आदि

श्री गणेशाय नमः
श्री हनुमतये नमः
पोथी लंकाकांड

नीलाम्बुजस्यामलकोमलांगी सीतासमारोपितवाम भागैः ॥
पाणौ महासायकचारूचापं नमामि रामं रघुवंशनाथं ॥ १ ॥

दोहा

लव निमेष प्रवान जुग वर्ष कल्प सर चण्ड ॥:
भजसि न मन तेहि राम कह काल जासु कोदंड ॥:

सोरठा

सेधु बचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहे
अब बिलंब केहि काम रचहु सेत उतरै कटक
सुनहु भानुकुल केतु : जामवंत कर जोरि कह
नाथ नाम तव सेतु : नर चढ़ि भौसागर तरही
सुनहु भालु कपि रीछ जामवंत कह बचन अस
उदधिहि देहु असीस ; जिन्ह राषा यह प्रभु प्रनही

अंत

प्रभु हनिवंतहि कहा बुझावा । धरि बटु रूप अवधपुर आवा
भरतहि कुसल हमार सुनाएहु । समाचार लै तुमहि चलि आवहु
तुरित पवनसुत गवनत भएउ । तब प्रभु भारद्वाज पह गएउ
नाना विध पूजा तिन्ह कीन्हा । अस्तुति कैर मुनि आएस दीन्हा
मुनि पद बंदि जुगल कर जोरी । चढि बिमान प्रभु चले बहोरी
जहां निषाद सुना प्रभू आवा । नाव नाव कहि लाग बूझावा
सुरसरि नाधि जान जो आवा । उत्रे प्रभू तट आएसू पावा
पूनि सिता भेटी सुरसरी । बहु प्रकार पूनी चरननि परी
दीन्ह असीस हरषि पुनि गंगा । सुंदरि तव अहिवात अभंगा
सुनत गुहा प्रेमाकुल धाऐ । आऐ हरष परम सुष पाए
प्रभुहि बिलोकि सहित बैदेही । परे धरनि तल सुधि न तेही
प्रीति परम बोले रघुराइ । हरषि उठाए लिए उर लाइ

छंद

लिए हिए लगाए कृपा निधान सुजान गो रमापती
बैठारि प्रम समीप पूछा कुसल छमापती
अब कुसल पद पंकज बिलोकत बिरंचि संकर सेष ते
सुषधाम पूरन काम राम नमामि राम नमामि ते
सब भाति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उर लाइयै
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोह बस बिसराइयै
यह राम रावन चरित पावन राम पद रत प्रद सदा
ब्रह्मादि आदि प्रसंससुर सब सिध मुनि गावहि मुदा

दोहा :

समर बिजै रघुनाथ के : चरित जो करहि सुजान :
बिजै बिबेक बिभूति तिंन : सदा देत भगवान :

इति श्री लंकाकांड संपूर्णम् समाप्त सिद्धिरस्तु सुभमस्तु जो देषा सो लिषा तस्य दोषो न दीयते : सम्ब १८ सै ६२ शाल शन १११३ शाल फशली आसिन सुक्ल दसम्यां गुरूवासरे समाप्ता :॥ श्री राम : गंगापापहरंसषिस्वतापंदैन्न्यांकल्पतरूस्तथा ॥ पापं तापं दैन्नर्यंचहन्ति सज्जन संगमे :॥ ११ । श्रीहरि : श्रीराम ।

विशेष ज्ञातव्य--लिपिकाल सं० १८६२ वि०, १२१३ फसली है। प्रस्तुत प्रति में--'सैल बिसाल आनि कपि देही। कंदुक इव नल नील सो लेही॥' के बाद की चौपाइयाँ किसी (छपी) प्रति में नहीं मिलतीं। उदाहरणार्थ—

'धावहि रीक्ष सब कपि बलवंता। पलक न परत फिरहि हनिवंता॥
कौतुक दीष प्रभु अनुज समेता। बिहंसि बचन कह कृपानिकेता॥
कपि मस्तक पर सोह पहारा। जस नभ सोभत मेघ भरारा॥
बांधा सेत तेहि दिबस षरारी। सेष प्रहार जोजन दस चारी॥
बिगत दिवस रजनी संग ताइ। बानर रीछ रहै तेहि ठाइ॥
करहि कोलाहल बहु बिघ रंगा। गर्जहि तर्जहि पुलकित अंगा॥
भरि धरनी नभ कपि सन हेरहि। महि कर थाभि लगूर सो फेरहि॥
सब्द अघात करहि अतिवंता। जनु नभ गर्जैं घन बलिवंता॥
रजनी गत पुनि बासर भयेउ। तब सुग्रीव बिभीषन पह गयेउ॥

उपर्युक्त पंक्तियाँ पत्र सं० २ से ६ के बीच हैं। इसके बाद पुनः मूल पंक्तियाँ शुरू हो जाती हैं।

८७. लंकाकांड। देशी कागज। पत्र—५०। आकार—१३$\frac{१}{१०}$ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—१३। परिमाण (छंदों में)—१४६३। अपूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि-नागरी। लिपिकाल—सं० १८८३ वि०।

आदि

श्री गणेशाय नम॥

रामं कामारि सेव्यं भव भय हरनं काल मत्तेभसिंहं॥
जोगेंद्र ग्यांन गम्यं गुननिधिमयितं निर्गुणं निर्विकारं॥
मायातीतं सुरेसं षल बध निरतं ब्रंह्मवृदैव देवं॥
वंदे कान्दांद्रदातं सरसिज नयनं देवमाद्यं स्वरूपं॥ २॥
संष स्वछमतीव सुंदर तनुं सादूंल चर्मावरं॥
कालिव कराल भूषणंधरं गंगा च संग प्रियं॥
कासीसं कलि गुणनिधिं श्री शंकरं प्रियं मनमथारिं॥
जो ददाति सत संग कैवलमपि दुर्ल्लभं षलान दंड क्चासौ तनोतुः व॥

अंत

प्रभु हनिवंतहि कहा बुझावा। धरि बटु रूप अवधपुर आवा
भरतहि कुसल हमार सुनाएहु। समाचार लै तुमहि चलि आवहु
तुरित पवनसुत गवनत भएउ। तब प्रभु भारद्वाज पह गएउ
नाना विध पूजा तिन्ह कीन्हा। अस्तुति कैर मुनि आएस दीन्हा
मुनि पद बंदि जुगल कर जोरी। चढि बिमान प्रभु चले बहोरी
जहां निषाद सुना प्रभू आवा। नाव नाव कहि लाग बूझावा
सुरसरि नाघि जान जो आवा। उत्रे प्रभू तट आएसू पावा
पूनि सिता भेटी सुरसरी। बहु प्रकार पूनी चरननि परी
दीन्ह असीस हरषि पुनि गंगा। सुंदरि तव अहिवात अभंगा
सुनत गुहा प्रेमाकुल धाऐ। आऐ हरष परम सुष पाए
प्रभुहि बिलोकि सहित बैदेही। परे धरनि तल सुधि न तेही
प्रीति परम बोले रघुराइ। हरषि उठाए लिए उर लाइ

छंद

लिए हिए लगाए कृपा निधान सुजान गो रमापती
बैठारि प्रम समीप पूछा कुसल छमापती
अब कुसल पद पंकज विलोकत विरंचि संकर सेष ते
सुषधाम पूरन काम राम नमामि राम नमामि ते
सब भाति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उर लाइयै
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोह बस बिसराइयै
यह राम रावन चरित पावन राम पद रत प्रद सदा
ब्रह्मादि आदि प्रसंससुर सब सिध मुनि गावहि मुदा

दोहा :

समर बिजै रघुनाथ के : चरित जो करहि सुजान :
बिजै विबेक बिभूति तिन : सदा देत भगवान :

इति श्री लंकाकांड संपूर्णम् समाप्त सिद्धिरस्तु सुभमस्तु जो देषा सो लिषा तस्य दोषो न दीयते : सम्ब १८ सै ६२ शाल शन १११३ शाल फशली आसिन सुक्ल दसम्यां गुरूवासरे समाप्ता :॥ श्री राम : गंगापापहरंससिस्वतापंदैन्न्यांकल्पतरूस्तथा ॥ पापं तापं दैन्नयंचहन्ति सज्जन संगमे : ॥ ११। श्रीहरि : श्रीराम।

विशेष ज्ञातव्य--लिपिकाल सं० १८६२ वि०, १२१३ फसली है। प्रस्तुत प्रति में--'सैल बिसाल आनि कपि देही। कंदुक इव नल नील सो लेही॥' के बाद की चौपाइयाँ किसी (छपी) प्रति में नहीं मिलतीं। उदाहरणार्थ—

'धावहि रीक्ष सब कपि बलवंता। पलक न परत फिरहि हनिवंता॥
कौतुक दीष प्रभु अनुज समेता। बिहंसि बचन कह कृपानिकेता॥
कपि मस्तक पर सोह पहारा। जस नभ सोभत मेघ भरारा॥
बांधा सेत तेहि दिवस षरारी। सेष प्रहार जोजन दस वारी॥
बिगत दिवस रजनी संग ताइ। बानर रीछ रहै तेहि ठाइ॥
करहि कोलाइल बहु बिध रंगा। गर्जहि तर्जहि पुलकित अंगा॥
भरि धरनी नभ कपि सन हेरहि। महि कर थाभि लगूर सो फेरहि॥
सब्द अघात करहि अतिवंता। जनु नभ गर्जै घन बलिवंता॥
रजनी गत पुनि बासर भयेउ। तब सुग्रीव बिभीषन पह गयेउ॥

उपर्युक्त पंक्तियाँ पत्र सं० २ से ६ के बीच हैं। इसके बाद पुनः मूल पंक्तियाँ शुरू हो जाती हैं।

८७. लंकाकांड। देशी कागज। पत्र—५०। आकार—१३$\frac{1}{10}$ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—१३। परिमाण (छंदों में)—१४६३। अपूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि-नागरी। लिपिकाल—सं० १८८३ वि०।

आदि

श्री गणेशाय नम॥

रामं कामारि सेव्यं भव भय हरनं काल मत्तेभसिंहं॥
जोगेंद्र ग्यांन गम्यं गुननिधिमयितं निर्गुणं निर्विकारं॥
मायातीतं सुरेसं षल बध निरतं ब्रंह्मवृदैव देवं॥
वंदे कान्दांद्रदातं सरसिज नयनं देवमाद्यं स्वरूपं॥ २॥
संष स्वच्छमतीव सुंदर तनुं सादूंल चर्माविरं॥
कालिव कराल भूषणधरं गंगा च संग प्रियं॥
कासीसं कलि गुणनिधिं श्री शंकरं प्रियं मनमथारिं॥
जो ददाति सत संग कैवलमपि दुर्ल्लभं षलान दंड क्वचासौ तनोतुः व॥

दोहा ॥ लव निमेष परिवान जुग वर्ष कल्प सर चंड ॥
भजसि न मन तिहि रांम कह काल जासु कोदंड ॥

सोर्ठा ॥ सिंधु वचन सुनि रांम । सचिव बोलि प्रभु अस कहिउ ॥
अब विलंबु कहि कांम ॥ रचिउ सेतु उतरहि कटक ॥
सुनहु भांनुकुल केतु ॥ जामवंत कर जोरि कहि ॥
नांथ नांम तुव सेतु ॥ नर चढि भवसागर तरहिं ॥

मध्य

॥ दोहा ॥ तिन मह सषी सयांन इक कहि समुझाई बैंन ॥
सोकु छाडिं पतिदेवता सुमति करिय चित चैंन ॥

चौ ॥ सुनि कहि सहसानन तनुजाता । सत्य कहा तुंम सषी सुमाता ॥
बिधि निमित दुष मो कह लाहू । सुष परिपूरि भुवन सब काहू ॥
विजय राम लछिमन कर आएऊ । सुजस सकल मर्कट कुल पाएऊ॥
कुल कलंक वड लहेउ विभीषन । कुल कुठार अस सुना न दीषन ॥
छुटी वंदि अब सुर गन केरी । निज निज पुरन दुहाइ फेरी ॥
मुनि पुलस्ति कर भा अब नासू । अब रवि ससि सुष करौ प्रकासू ॥
तेजवत पावक परिहरि दुष । वहहि समीर आजु अपनैं सुष ॥
सलिल गंग जल निर्मल आजू । सुबस बसहिं सुरनायक राजू ॥

× × ×

अंत

॥ छंद ॥ लिए हृदय लगाइ कृपानिधांन सुजांन राम रमापती ॥
बैठारि परम समीप बूझी कुसल सो करि वीनती ॥
अब कुशल पद पंकज विलोकि विरंजि सुर मुनि सेव्यजे॥
सुष धांम पूरन कांम राम नमामि राम नमामि जे ॥
सब भाँति अधम विषाद सो हरि भरथ ज्यौं उर लाइयौ॥
मतिमंद तुलसी दास सो प्रभु मोहबस बिसराईयौ ॥
यह रावनारि चरित्र पांवन राम पद रति प्रति सदा ॥
कामादि हरि विग्यांन कर सुर सिद्ध मुनि गावहिं मुदा ॥

॥ दोहा ॥ समर विजय रघुवीर के चरित जे सुनहि सुजांन ॥
विजय विवेक विभूति नित तिनहि देत भगवांन ॥

यह कलिकाल मलायतन मन करि देषि विचारि ॥
श्री रघुनाथ सु नाम तजि नाहि न आंन अधारि ॥

इति श्री राम चरित्रे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल विग्यान संपादिनी नाग अविरल भक्ति दातमं षष्टम सोपान लंकाकांड समाप्तं ॥ संवत्। १८॥ ८३ मार्गसिर सुदी। १५। रवि वासरां पठनार्थ जीतमल नृमल राम।

विशेष ज्ञातव्य—प्रति अपूर्ण है। पत्र १५ उपलब्ध नहीं है। यह प्रति बयाने (भरतपुर राज्य) में लिखी गई थी। लिपिकर्ता नृमलराम हैं। प्रति में पाठांतर के अतिरिक्त चौपाइयों की संख्या प्रकाशित राम चरित मानस से अधिक है।

८८. लंकाकांड। देशी कागज। पत्र—३४। आकार—११ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१५। परिमाण (छंदों में)—१३३६। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १६१४ वि०।

आदि

श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

श्लोक ॥ रामं कामारिसेव्यं भव भय हरणं काल मत्तेभ सिंहं
योगिंद्रं ज्ञान गम्यं गुण निधिमजितं निर्गुणं निर्विकारं ॥
मायातीतं सुरेशं खल वध निरतं ब्रह्म वृंदैकदेवं
वंदे कंदावदातं सरसिज नयनं देवमूर्वीस्वरूपं ॥ १ ॥
शंखं दाममतीव सुंदर तनं शार्दूल चर्माम्बरं
काल व्याल कराल भूषणधरं गंगा शशार्क प्रियं ॥
काशीशं कलि कलमषौघ समनं कल्यान कल्पद्रुमं
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्री शंकरं मन्मथारिं ॥ २ ॥
यो ददति सतां शंभुः कैवल्यमपि दुर्ल्लभम् ॥
खलानां दंडकृद्योऽसौ शंकरः सं तनोतु माम् ॥ ३ ॥

दोहा ॥ लव निमेष परमान जुग बरष कल्प सर चंड ॥
भजसि न मन तेहि राम कह काल जासु कोदंड ॥ १ ॥
सिंधु वचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेऊ ॥
अब बिलंब केहि काम करहु सेतु उतरे कटक ॥ २ ॥

दोहा ॥ लव निमेष परिवान जुग वर्ष कल्प सर चंड ॥
भजसि न मन तिहि रांम कह काल जासु कोदंड ॥

सोर्ठा ॥ सिंधु वचन सुनि रांम । सचिव बोलि प्रभु अस कहिउ ॥
अब विलंबु कहि कांम ॥ रचिउ सेतु उतरहि कटक ॥
सुनहु भांनुकुल केतु ॥ जामवंत कर जोरि कहि ॥
नांथ नांम तुव सेतु ॥ नर चढि भवसागर तरहिं ॥

मध्य

॥ दोहा ॥ तिन मह सषी सयांन इक कांह समुझाई बैंन ॥
सोकु छाडिं पतिदेवता सुमति करिय चित चैंन ॥

चौ ॥ सुनि कहि सहसानन तनुजाता । सत्य कहा तुंम सषी सुमाता ॥
विधि निमित दुष मो कह लाहू । सुष परिपूरि भुवन सब काहू ॥
विजय राम लछिमन कर आएऊ । सुजस सकल मर्कट कुल पाएऊ ॥
कुल कलंक वड लहेउ विभीषन । कुल कुठार अस सुना न दीषन ॥
छुटी वंदि अब सुर गन केरी । निज निज पुरन दुहाइ फेरी ॥
मुनि पुलस्ति कर भा अब नासू । अब रबि ससि सुष करौ प्रकासू ॥
तेजवत पावक परिहरि दुष । वहहि समीर आजु अपनैं सुष ॥
सलिल गंग जल निर्मल आजू । सुबस बसहिं सुरनायक राजू ॥

× × ×

अंत

॥ छंद ॥ लिए हृदय लगाइ कृपानिधांन सुजांन राम रमापती ॥
बैठारि परम समीप बूझी कुसल सो करि वीनती ॥
अब कुशल पद पंकज विलोकि विरंजि सुर मुनि सेव्यजे ॥
सुष धांम पूरन कांम राम नमामि राम नमामि जे ॥
सब भौंति अधम विषाद सो हरि भरथ ज्यौं उर लाइयौ ॥
मतिमंद तुलसी दास सो प्रभु मोहबस बिसराईयौ ॥
यह रावनारि चरित्र पांवन राम पद रति प्रति सदा ॥
कामादि हरि विग्यांन कर सुर सिद्ध मुनि गावहिं मुदा ॥

॥ दोहा ॥ समर विजय रघुवीर के चरित जे सुनहि सुजांन ॥
विजय विवेक विभूति नित तिनहि देत भगवांन ॥

यह कलिकाल मलायतन मन करि देषि विचारि ॥
श्री रघुनाथ सु नाम तजि नाहि न आंन अधारि ॥

इति श्री राम चरित्रे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल विग्यान संपादिनी नाग अविरल भक्ति दातमं षष्टम सोपान लंकाकांड समाप्तं ॥ संवत् । १८॥ ८३ मार्गसिर सुदी । १५ । रवि वासरां पठनार्थं जीतमल नृमल राम ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रति अपूर्ण है । पत्र १५ उपलब्ध नहीं है । यह प्रति बयाने (भरतपुर राज्य) में लिखी गई थी । लिपिकर्ता नृमलराम हैं । प्रति में पाठांतर के अतिरिक्त चौपाइयों की संख्या प्रकाशित राम चरित मानस से अधिक है ।

८८. लंकाकांड । देशी कागज । पत्र—३४ । आकार—११ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१५ । परिमाण (छंदों में)—१३३६ । पूर्ण । रूप –प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—सं० १६१४ वि० ।

आदि

श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

श्लोक ॥ रामं कामारिसेव्यं भव भय हरणं काल मत्तेभ सिंहं
योगिंद्रं ज्ञान गम्यं गुण निधिमजितं निर्गुणं निर्विकारं ॥
मायातीतं सुरेश खल वध निरतं ब्रह्म वृंदैकदेवं
वंदे कंदावदातं सरसिज नयनं देवमूर्वीस्वरूपं ॥ १ ॥
शंखं दाममतीव सुंदर तनं शार्दूल चर्माम्बरं
काल व्याल कराल भूषणधरं गंगा शशाकं प्रियं ॥
काशीशं कलि कलमषौघ समनं कल्यान कल्पद्रुमं
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्री शंकरं मन्मथारिं ॥ २ ॥
यो ददति सतां शंभुः कैवल्यमपि दुर्ल्लभम् ॥
खलानां दंडकृद्योस्सौ शंकरः सं तनोतु माम् ॥ ३ ॥

दोहा ॥ लव निमेष परमान जुग बरष कलप सर चंड ॥
भजसि न मन तेहि राम कह काल जासु कोदंड ॥ १ ॥
सिंधु वचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेऊ ॥
अब बिलंब केहि काम करहु सेतु उतरे कटक ॥ २ ॥

सुनहु भानुकुल केतु जाम्बवंत कर जोरि कह ॥
नाथ नाम तव सेतु नर चढि भवसागर तरहि ॥ ३ ॥

चौ ॥ एह लघु जलधि तरत कत वारा । अस सुनि मुनि कह पवनकुमारा ॥
प्रभु प्रताप वडवानल भारी । सोषेउ प्रथम पयोनिधि वारी ॥
तव रिपु नारि रुदन घर धारा । भरेउ बहोरि भयेउ तेहि षारा ॥

अंत

सुरसरि उतरि जान जब आवा ॥ उतरे तट प्रभु आयसु पावा ॥
तब सीता पूजी सुरसरी ॥ बहु प्रकार पुनि चरनन्ह परी ॥
दीन्ह असीस हर्षि मन गंगा ॥ सुंदरि तव अहिवात अभंगा ॥
सुनत गुहा धायउ प्रेमाकुल ॥ आयउ निकट परम सुष संकुल ॥
प्रभुहि बिलोकि सहित वैदेही ॥ परेउ अवनि तन सुधि नहि तेही ॥
प्रीति परम बिलोकि रघुराई ॥ हर्षि उठाइ लिए उर लाई ॥

छंद ॥ लिये हृदय लाय कृपानिधान सुजान राम रमापती ॥
बैठारि परम समीप पूछि कुशल सो करू वीनती ॥
अब कुशल पद पंकज विलोकि विरंचि शंकर सैव्य जे ॥
सुख धाम पूरन काम राम नमामि राम नमामि ते ॥
सभ भाँति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यौं उर लाइयो ॥
मतिमंद तुलसी दास सो प्रभु मोह बस बिसराइयो ॥
एह रावनारि चरित्र पावन राम पद रति प्रद सदा ॥
कामादि हर विज्ञान कर सुर सिद्ध मुनि गावहि मुदा ॥ ३७ ॥

दोहा ॥ समर विजय रघुपति चरित सादर सुनहि सुजान ॥
विजय विवेक विभूति निति तिन्हे देहि भगवान ॥ १५३ ॥
एहि कलिकाल मलायतन मन करि देषु विचारि ॥
श्री रघुनायक नाम तजि नाहिन अवर अधार ॥ १५४ ॥

इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने बिमल वैराग्य संपादिनी नाम लंकाकांड रामायण कृत गोसाइ तुलसी दास षष्टम सोपान संपूर्णम् ॥ ६ ॥ फाल्गुन शुक्ल चौथी बुधवार ॥ दशषत रामशरण रामानुज दास ॥ सुभसंवत ॥ १६१४ ॥ राम

विशेष ज्ञातव्य—प्रतिलिपिकार रामशरण नामक कोई व्यक्ति है । प्रति पाठ की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है ।

८६. लंकाकांड। देशी कागज। पत्र--४५। आकार—१५ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१६। परिमाण (छंदों में)—१६८२। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं १६२२ वि०।

आदि

श्रीमते रामानुजाय नम॥ अथ लंका कांड लिख्यते॥
रामं कामारिसेव्यं भवभय हरणं कालमत्तेभसिंहं
योगीद्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निगुर्णं निर्विकारं॥
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृंदैकदेवं
वंदे कंदावदातं सरसिज नयनं देवमुर्वीशरुपं॥ १॥
शंखेंद्वाभमतीवसुंदरतनुं शार्दूलचर्माबरं॥
कालव्यालकरालभूषणधरं गंगाशशांकप्रियं॥
काशीशं कलिकल्मषौघसमनं कल्याणकल्पद्रुमं॥
नौमिड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्रीशंकरं मन्मथारिं॥ २॥
यो ददाति शतां शंभुः कैवल्यमपि दुल्लभं॥
खलानां दंडकृत्योसौ शंकर शं तनोतु मे॥ ३॥

॥ दो ॥

लव निमेष पुरवान जुग बरष कल्प सर चंड॥
भजसि न मन तेहि राम कहुं काल जासु कोदंड॥ १॥

॥ सोरठा ॥

सिंधु बचन उर आनि सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ॥
अब बिलंबु केहि काम करहु सेत उतरै कटक॥ १॥

अंत

॥ चौ ॥

प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई। धरि बटू रूप अवध पुर जाई॥
भरतहि कुशल हमारि सुनायेहु। समाचार लै तुम्ह चलि आयेहु॥
तुरत पवनसुत तब चलि गयेऊ। तब प्रभु भरद्वाज पहि गयेउ॥
नाना विधि मुनि पूजा कीनी। अस्तुत करि पुनि आशिष दीन्ही॥
मुनि पद वंदि जुग कर जोरि। चढे विमान प्रभु चले बहोरी॥
इहां निषाद सुना हरि आये। नाव नाव कहि लोग बुलाये॥

सुरसरि नाकि जान जब आवा । उतरेउ तट प्रभु आयुस पावा ॥
तब सीता पूजी सुरसरी । बहु प्रकार पुनि चरण परी ॥
दीन्हि असीस हरषि मन गंगा । सुंदर तव अहिवात अभंगा ॥
सुनि ग्रह चलेउ सपदि प्रेमाकुल । आयेउ निकट परम सुख संकुल ॥
प्रभुहि विलोकि सहित वैदेही । परेउ अमनि तल सुधि नहि तेही ॥
प्रीति परम विलोकि रघुराई । हरषि उठाय लीयो उर लाई ॥

॥ छं ॥

लियो हृदय लगाय लाइ कृपानिधान सुजान राइ रमापती ॥
बैठारि परम समीप बूझी कुशल सो करि विनती ॥
अब कुल पद पंज विलोकि विरंन्चि संकर सेव्य जै ॥
सुखधाम पूरण काम राम नमामि राम नमामि ते ॥
सब भाति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उर लाइयो ॥
मतिमंद तुलसीदास सों प्रभु मोहबस बिसराइयो ॥
यह रावणारि चरित्र पावन राम पद रति प्रद सदा ॥
कामादि हर विज्ञान कर सुर सिद्ध मुनि गावहि मुदा ॥

॥ दो ॥

समर विजय रघुपति चरत सुनहि जे सदा सुजान ॥
विजैय विवेक विभूति नि··· तिन्हहि देहिं भगवान ॥
येहि कलिकाल मलायतन मन करि दखु विचारि ॥
श्री रघुनायक नाम तजि नहि कछु आन अधार ॥ १८० ॥

इति श्री रामचरित्रेमानसे शकलकलि कलुष विधुंसने विमल विज्ञान संपादिनी नाम षष्टो सोपान समाप्तम् ॥ शुभं ॥ मिति चैत्र वदि ३ संवत् ॥ १९२१ ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ पूर्ण है। लिपिकाल सं० १९२१ वि० है। पाठांतर भी हैं—

नाघि—नाकि', आअेसु—'आयुस', चरनन्हि—'चरण', अवनि—'अमनि', आयो—'आवा'।

सुनत गुहा धाअेहु प्रेमाकुल । आअेउ निकट परम सुख संकुल । (प्र०)
सुनि ग्रह चलेउ सपदि प्रेमाकुल । आयेउ निकट परम सुख संकुल (ह०)
लियो हृदय लाइ कृपानिधान सुजान राम रमापती । (प्र०)
लियो हृदय लगाय लाइ कृपानिधान सुजान राइ रमापती । (ह०)

सिंधु बचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ । (प्र०)
यह लघु जलधि तरत कति बारा । (प्र०)
एहि बिधि लघु जलधि तरत कति बारा । (ह०)

६०. लंकाकांड । देशी कागज । पत्र—४५ । आकार—११३/४ इंच लंबाई और ६ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)--११ । परिमाण (छंदों में)—१२३७ । पूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—अज्ञात ।

आदि

॥ श्री गणेशायनमः ॥ श्लोक

रामं कामारिसेव्यं भव भय हरणं काल मत्तेभसिंहं
योगीन्द्रं ज्ञान गम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारं
मायातीतं सुरेशं खल वधनिरतं ब्रह्म वृंदैकदेव
वंदे कंदावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपं ॥ १
शंखेंद्वभमतीवसुंदरतनुं शार्दूलचर्मांबरं
कालव्यालकरालभूषणधरं गंगाशशांकप्रियं
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याण कल्पद्रुमं
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्रीशंकर मन्मथारि ॥ १
यो ददाति सतां शंभुः कैवल्यमपि दुर्लभं
खलानां दंडकृद्यौसौ शंकरः शं तनोतु मां ॥ २

॥ दोहा ॥

लव निमेष परमानु जुग बरष कलप सर चंड
भजहि न मन तेहि राम कहुँ कालु जासु कोदंड

सोरठा ॥

सिंधु वचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ
अब बिलंब केहि काम करहु सेतु उतरइ कटक
सुनहुँ भानुकुल केतु जामवंत कर जोरि कह
नाथ नाम तव सेतु नर चढि भव सागर तरहिँ ॥ १

अंत

चौपाई

प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई । धरि बटु रूप अवधपुर जाई
भरतहि कुसल हमारि सुनाएहु । समाचार लै तुम चलि आयेहु

तुरत पवनसुत गवनत भएऊ। तब प्रभु भरद्वाज पहिँ गएऊ
नाना विधि मुनि पूजा कीन्ही। अस्तुति करि पुनि आसिष दीन्ही
मुनि पद बंदि जुगल कर जोरी। चढ़ि बिमान प्रभु चले बहोरी
इहा निषाद सुन्यौ प्रभु आये। नाव नाव कहुँ लोग बोलाए
सुरसरि नाघि जान तब आयो। उतरे तट प्रभु आयसु पायो
तब सीता पूजी सुरसरी। बहु प्रकार पुनि चरन्हि परी
दीन्हि असीस हरषि मन गंगा। सुंदरि तव अहिवात अभंगा
सुनत गुहा धायो प्रेमाकुल। आए निकट परम सुष संकुल
प्रभुहि सहित बिलोकी वैदेही। परेउ अवनि तन सुधि नहि तेही
प्रीति परम बिलोकि रघुराई। हरषि उठाइ लियो उर लाई

छंद

लियो हृदय लाइ कृपानिधान सुजान राय रमापती
बैठारि परम समीप बूझी कुसल सो करै बिनती
अब कुसल पद पंकज बिलोकि बिरंचि शंकर सेव्य जे
सुष धाम पूरन काम राम नमामि राम नमामि ते
सब भाँति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यो उर लाइयो
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोह बस बिसराइयो
यह रावनारि चरित्र पावन राम पद रति प्रद सदा
कामादि हर बिज्ञान कर सुर सिद्ध मुनि गावहिँ मुदा

दोहा

समर विजय रघुवीर के चरित जे सुनहिँ सुजान
विजय विवैक विभूति नित तिन्हहिँ देहि भगवान
यह कलिकाल मलायतन मन करि देषु विचार
श्री रघुनाथ नाम तजि नाहिन आन अधार १२० ॥

इति श्री रामचरित्रमानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल विज्ञान संपादनोनाम षष्टः सोपान समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ लीथो टाइप में मुद्रित है। मुद्रणकाल आदि का उल्लेख नहीं है। पाठ शुद्ध हैं पर एक आध स्थान पर अशुद्ध छप जाने से भ्रांति हो जाती है।

६१. लंकाकांड। देशी कागज। पत्र—१५६। आकार—८ इंच लंबाई और ७¾ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१५। परिमाण (छंदों में)—११६.७। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—कैथी। लिपि-काल—अज्ञात।

आदि

× × ×

बसु रस बांध वेद चकराइ। जोजन अष्टदस केर उचाइ
सब जोजन जल के परमाना। लोक देवस मह सेत बंधाना
सेत बंध कीन्ह नल नीला। सुमन समान भऐ स्पसीला
बाधेउ सेत नील नल नागर। राम क्रीपा जस भऐउ उजागर
धाऐउ कपी जह आनेउ गीरा। बहुतो डारी बहुत सुनी फीरा

छंद

बहु उपारी मही ग्री डारी दीन्ह। सुनेउ की सेत बंधानेउ
ग्री डारी कपीस ही रीच। फीरे हरखी हीऐ अनुमानेउ
देहांक अती बल बांकु मुख के। कोटी कोटीन धावही
जैराम सुजस सुर धाम उठै। चढी वेवान सब आवही
सुनी सेत बंध अचेत नभ अरी। सोक सुर सुख मानेउ
अब मेटे दंद प्रभु बंद छोरेउ। मुनीही मन अनुमानेउ
जै नाथ सुर मुनी कही के हंखीत। सुमन बहु बीधी डारेउ
करी दाम प्रभु सर चाप धरीके। सौहे सेत नीहारेउ

अंत

॥ दोहा ॥

अनुज जानकी सहीत प्रभुः कुसल कौसील्याधीस
छवी बीलोकी मन हंख अती : अस्तुती करे सुर इस

॥ छंद ॥ तोमर

जै राम सोभा धाम। दाऐक प्रनत बीसाम
धीत त्रोन वर सर चाप। अज दंड परबल परताप
खर दुखना खरारी। मरदेवनीसाचर भारी
जै दुष्ट मारेउ नाथ। भव देव सकल सनाथ

× × ×

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के खंडित होने के कारण लिपिकाल का पता नहीं चला। सभा द्वारा प्रकाशित मानस से मिलान करने से पता चला कि बहुत सी पंक्तियाँ अनावश्यक हैं। कहीं कहीं छूटें भी हैं। पाठांतर भी हैं।

६२. लंकाकांड। पत्र ६६—आकार ११ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—२३। परिमाण (छंदों में)—१८०३। पूर्ण। रूप–प्राचीन। लिपि–नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

श्री गणेशसाय नम ॥ श्री रामजी ॥ अथ लंकाकांड लिष्यते ॥

दोहा॥ लव निमेष परिमान जुगु कल्प वर्ष सर चंड।
भजसि न मन तेहि राम कहुँ काल जासु कोदंड ॥ १ ॥

॥ श्लोक ॥

रामं कामारिसेव्यं भव मय हरनं कालमत्तेभासिंहं।
जोगेद्रं ग्यानगम्यं गुनविधिमाजितं निर्गुनं निर्विकारं ॥
मायातीतं सुरेसं षल वध निरतं बृह्मवृंदैकदेवं।
वंदे कंदावदातं सरसिजनयनं देवभूर्वीस्वरूपं ॥ २ ॥
संषेंद्वाभमतीवसुंदरतनुं सार्दूलंचर्मांवरं।
कालव्यालकराल भूषनंधरं गंगाससांकप्रियं ॥
काशीसं कलिपकलमषौघसमनं कल्यानकल्पद्रुमं।
···मिज्यं गिरिजापतिं गुननिधि संकर मन्मथारि ॥ ३ ॥
जो ददाति संता सुंभु कैवल्यमपि दुर्लभं।
षलानां दंडकृतयोसौ संकर सतनोत मे ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

सिंधु बचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेऊ।
अब बिलंबु किहि काम करहु सेतु उरै कटक ॥ १ ॥

अंत

॥ छंद ॥

लीयो हृदय लाई कृपानिधान सुजान राजा रघुपती
बैठारि परम समीप बूझा कुसल सो कर बीनती

अब कुसल पद पंकज विलोकि बिरंचि संकर सेव्य जे ॥
सुष धाम पूरन काम राम नमामि ते ।
सब भांति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यो उर लाईयो ।
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोहबस बिशराईयो ॥
इह रावनारि चरित्र पावन राम पद रति प्रद सदा
कामादि हर बिज्ञान कर सुर सिद्ध मुनि गावहि सदा ॥

दोहा ॥

समर बिजय रघुपति चरित सुनहि जे सदा सुजान ॥
बिजय विवेक बिभूति निति तिन्हहि देहि भगवान ॥

इति श्री रामचरित्रेमानसे सकल कलिकलुष विध्वंसने विमल विज्ञान संपादनीनामयष्टमो सोपान ६ ॥ लंकाकांड संमपूरण ॥

विशेष ज्ञातव्य—समस्त पत्रों की संख्या ६६ है। परंतु पत्र सं० ५४ के बादवाले पत्र पर ५५ की संख्या नहीं पड़ी है और पत्र के पढ़ने से विदित होता है कि प्रस्तुत पत्र उत्तरकांड का है। प्रस्तुत प्रति के साथ 'उत्तरकांड' भी है और जिल्दबंदी करते समय पत्र उल्टा सिल गया है जिससे भ्रम हो जाता है। लिपिकाल अज्ञात है। पाठभेद और अशुद्धियाँ भी हैं।

९३. लंकाकांड। देशी कागज। पत्र—८१। आकार—८½ इंच लंबाई और ४½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—१०। परिमाण (छंदों में)—१७२१। पूर्ण। रूप—प्राचीन (सुंदर)। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

ॐ ग (णे) शा (य) न (मः) ॐ जा (न) की (व) ल्ल (भा) य (न) मः ॥

ॐ लव निमेषु परवानु जुग बरष कल्प सर चंड
भजसि न मन तेहि राम कहु कालु जासु कोदंड ॥ १ ॥

रामं कामारि सेव्यं भवभय हरणं कालमत्तेभसिंहं
योगींद्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारं

मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृंदैकदेवं
वंदे कुंदावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपं ॥ २ ॥
शंखेन्द्वाभमतीव सुंदरतनुं शार्दूलचर्मांबरं
काल व्याल कराल भूषणधरं गंगा शशांकप्रियं ॥
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्यान कल्पद्रुमं ॥
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं शंकरं मन्मथारिं ॥ ३ ॥
यो ददाति सतां शंभुः कैवल्यमपि दुर्लभं ॥
खलानां दंडकृद्योसौ शंकरः शंतनोत्तमां ॥ ४ ॥

सोरठा ॥

सिंधु वचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ ॥
अब विलंब केहि काम करहु सेतु उतरै कटकु ॥ ५ ॥

अंत

॥ छंद ॥

लियो हृदय लाइ कृपानिधान सुजान राय रमापती ॥
बैठारि परम समीप बूझी कुशल सो कर बीनती ॥
अब कुशल पद पंकज विलोकि विरंचि संकर सेऽयते ॥
सुखधाम पूरण काम नमामि राम नमामि ते ॥
सब भाँति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उर लाइयो ॥
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोह बस बिसराइयो ॥
यह रावणारि चरित्र पावन राम पद रति प्रद सदा ॥
कामादि हरि विज्ञान कर सुर सिद्ध मुनि गावहि मुदा ॥१५॥
समर विजय रघुपति चरित सुनहि जे सदा सुजान ॥
विजय विवेक विभूति नित तिन्हहि देहि भगवान ॥१६॥

दोहा ॥

यह कलिकाल मलायतन मन करि देखु विचारि
श्री रघुनायक नामु तजि नहि कछु आन अधार ॥१७॥

इति श्री रामचरितमानसे सकल कलिकलुषविध्वंसने विमलविज्ञान संपादिनी नाम षष्टमः सोपानः समासः ॥ ६ ॥ इति श्री लंकाकांड संपूर्णः समासः ॥ शुभमस्तु सर्व जगताम् ॥

विशेष ज्ञातव्य—लि० का० का उल्लेख नहीं है। अक्षर अत्यंत सुंदर हैं। पाठ भी शुद्ध है। कहीं कहीं लिपिकर्ता के दोष से भूलें हो गई हैं। संपूर्ण पुस्तक में ८१ पत्र हैं पर ग्रंथ में ८० लिखा है। दो पत्रों पर ७७ की संख्या पड़ी हुई है। पत्र सं० ३४ के बाद ३५ न लिखकर ४५ दिया गया है। प्रथम पत्र पर राम और रावण का चित्र बना है जो अत्यंत सुंदर है। चित्र के नीचे श्लोक की एक पंक्ति है जिसमें चित्र के कारण मात्राओं का अभाव हो गया है।

६४. लंकाकांड। देशी कागज। पत्र—६६। आकार—६½ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१६। परिमाण (छंदों में)—१५८४। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—कैथी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

राम सीधी श्री गंनेससाय नमह

श्री लंकाकांड लीषते ॥

॥ दोह ॥

(ल) व नमेक परवान जुगा : बरष कल्प सर चंड

(भ) जसी न मन तेही रामु कह : काल जासु कोदंड

सींधु बचन सुनी रामु : सचीव बोली प्रभु अस…

अब बीलंबु केही काम : करहु सेत उतरै कटक

सुनहु भान कुल केता : जामवंत कर जोरी कह

नाथ राम तुअ सेता : नर चडो भवसागर त (रहि)

चौपाई

जह लघु जलधी तरत कीत बारा। अस सुनी पुनी कह पवनकुमारा ॥

प्रभु प्रताप बड़वानल भारी। सोषेउ प्रथम पयोनिधी बारी ॥

तव रीपु नारी रुदीन जल धारा। भरेउ बहोरी पयो तेही षारा ॥

सुनी अस उक्ती पवनसुत केरी। हरषे रघुपती कपी तन हेरी ॥

अंत

छंद

लीए हृदय लाई कृपानीधान सुजान राई रमापती ॥

बैठारी परम सप्रीती पुछी कुसल संकुल छीमापते ॥

अब कुसल पद पंकज बीलोकी : बीरंची संकर सेव्य ते ॥
सुषधाम पुरन काम राम नमामी रममामते ॥
सब भाती अधम नीषाद से हारी भरत सम उर लाईये ॥
मतीमंद तुलसीदास सो प्रभु मोह बस बीसराईयो ॥
एह रावन नारी बर चरीत पावन राम पद रती प्रद सदा ॥
कामादी हर बीग्यान कर सुर सीध मुनी गावही मुदा ॥

॥ दोहा ॥

समर बीजअ रघुवर चरीत गावही सुनही सुजान ।
बीजै बीबेक भग(ति) नर तीनही देही भगवानो ।
एह कलीकाल मलएतन मन करी देषु बीचार ।
श्री रघुनाथ नाम तजी नाही न आन आधार ।

एती श्री रामचरीत्रे मानसे कल कलुष बीधंसने संपादीनोनामु षस्टमो सोपान समापतो जथा पार्था तथा लोपते मम दोषो न दीअते पठंते गुनंते सुनते के राम राम राम राम राम राम रम रम ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति पूर्ण है पर कुछ स्थानों पर शब्द खंडित हैं। लिपिकाल नहीं है। लिपि कैथी है। प्रारंभिक श्लोक नही है। एक स्थान पर 'सोरठा' शीर्षक के स्थान पर 'दोहा' लिखा मिला। यत्र तत्र पाठांतर भी हैं, कलप—कंल्प', कहुँ—'कह', काम—कामु, तव—तुअ', अति उतंग गिरि पादप—'अती उतंग तरु सैल गन।' भरतहि कुसल हमारि सुनाएहु। समाचार लै तुम्ह चलि आएहु ॥—'भरतही कुसल हमारी सुनावहु समाचार लै तुम चली आवहु ॥"

कहीं कही अक्षर भी छूटे हुए हैं जिससे विचित्र शब्दों का निमार्ण हो गया है।

६५. लंकाकांड । देशी कागज। पत्र—८७। आकार—८$\frac{3}{10}$ इंच लंबाई और ४$\frac{9}{10}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)--२०। परिमाण (छंदोंमें)--१३०५। अपूर्ण। रूप–प्राचीन। लिपि—कैथी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

लोपे गंगन चंद्र वौ भांनु···

प्रभु कपी देषु जो हुलसु गपारा। जनु नलनी सर पुहुप सवारा
देषी वीभीषन अस्तुती लाइ। प्रबल प्रताप तोहार गोसांइ

कपी सधुर बल करइ न पारा। इ सब रचना प्रभुजी तुमारा
ताही देवस बाधेउ जल धारा। छबीस जोजन बांध सवारा १०४
संध्या समौ जब आइ तुलाइ। तब कपी प्रभु मस्तक नांइ
कइ प्रभु महावीर होइ काआ। द्रषा मंह सुष तुम इमही जनाआ
कैत वषान तव करब कपीसा। धन्य नीरपती जीन सैन सरीसा
वचन कवंध हीदें अनुसरेउ। धन्य धन्य सब अस्तुती करेउ
नीसा भांग सब सैन ठवाइ। औ प्रभु हीदें बहुत सुष पाइ
गा रजनी पुनी भएउ बीहांनां। कपी उदम कर बांध समाना
नीरषेउ राम नएन भरी। प्रम सहीत हनीवंत
उतर दीसा लै धाए। कपी सब साथ अनंत

अंत

बीनै कीन्ह बहु भाती वीधी प्रेम पुलकी अती गात
बदन बीलोकत राम के लोचन नाही अघात
ताही समौ समाज सुर आए दसरथ राए॥
सुन बोलोकी औलोकी सुर नैन सजल भरी आए

तेही औसर दसरथ चली आए। तनै बीलोकी नएन जल छाए
सहीत अनुज प्रनाम प्रभु कीन्हा। आसीरबाद पीतै तब दीन्हा
तात सकल तुम पुन्य परभाउ। जीतै अछै नीसाचर राउ
सुनत बचन प्रीती उर बाढी। सजल नएन रोमावली ठाढी
रघुपती प्रथम प्रेम अनुमांना। चीतै पीतै दीन्हेउ दीढ ग्यांनां
ता ते उमा मोछ नही पावा। दरसथ भेद भग्ती मन लावा
सगुन उपासक मोछ न लेही ....

विशेष ज्ञातव्य—प्रारंभ और अंत के पत्र एवं पत्र सं० ८ से ११ तक के पत्र खंडित हैं। खंडित होने के कारण लिपिकाल का पता नहीं चला। क्षेपक के साथ पाठांतर भी हैं—

बिनय कीन्हि चतुरानन प्रेम पुलक अति गात।
सोभा सिंधु बिलोकत लोचन नहीं अघात॥११०॥ (प्र०)
वीनै कीन्ह बहु भाती वीधी प्रेम पुलकी अती गात॥
बदन बीलोकत राम कै लोचन नाही अघात॥ (ह०)

अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा । आसिरबाद पिता तब दीन्हा । (प्र०)
सहीत अनुज प्रनाम प्रभु कीन्हा । आसीरबाद पीतै तब दीन्हा । (इ०)
तात सफल तव पुन्य प्रभाऊ । जीत्यो अजय निसाचर राऊ ।
सुनि सुत बचन प्रीति अति बाढी । नयन सलिल रोमावलि ठाढी । (प्र०)
'तात सकल तुम पुन्य परभाउ । जीतै अछै नीसाचर राउ ।
सुनत बचन प्रीती उर बाढी । सजल नएन रोमावली ठाढी (इ०)

१६. लंकाकांड । पत्र—६४ । आकार—७३⁄४ इंच लंबाई और ५१⁄२ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१६ । परिमाण (छंदों में)—१४०८ । खंडित । रूप—प्राचीन । लिपि—कैथी । लिपिकाल—अज्ञात ।

आदि

एह लघु जलधी तरत कत बारा अस सुनी पुनी कह पवनकुमारा
प्रभु प्रताप बडवाल भारी सोषेउ प्रथ पवोनिधि बारी
तोडो रीपु नारी रुदन जल धारा भए बहोरी भए सो षारा
सुनी असी उक्ती पवनसुत केरी बीहसे प्रभु सब कपी तन हेरी
जामवंत बोले दोउ भाइ नल नीलही सब कथा सुनाइ
रामचरन पंकज उर धरहु कौतुक एक भालु कपी करहु
बोली लीए कपी नीकर बहोरी सकल सुनहु बीनती एक मोरी
राम प्रताप सुमीरी मन माही करहु सेतु प्रयास कछु नाही
धावहु मर्कट बीकट बरुथा आनहु बीटप गीरीन्ह के जुथा
सुनी कपी भालु चलै दै दुहा जै रघुबीर प्रताप समुहा

॥ दोहा ॥

अती उतंग तरु सैलगन लीलही लेही उठाइ
आनि देही नल नील कह रचही सो सेतु बनाइ

अंत

प्रभु हनोमानही कहा बुझाइ । धरी बट रुप अवधपुर जाइ ॥
भरतही कुशल हमार सुनाएहु । समाचार लै आतुर आएहु ॥
तुरीत पवन सुत गवनत भएउ । तब प्रभु भारद्वाज पह गएउ ॥
नाना बीधी मुनी पूजा कीन्ह । अस्तुती करी मुनी असीष दीन्ह ॥
मुनी पद कंज जुगल कर जोरी । चढी बेवान प्रभु चले बहोरी ॥
इहा नीषाद सुना प्रभु आए । नाव नाव के लोग बोलाए ॥

सुरसरी नाघी जान जब अब । उतरे तट प्रभु आएसु पाव ॥
तब सीतै पुजा सुरसरी । बहु प्रकार प्रभु पाइन्ह परी ॥
दीन्ह असीस हर्ष मन गंगा । भामीनी तव अहीवात अभंगा ॥
सुनत गुहा धाए प्रेमाकुल । आए नीकट पर्म सुख संकुल ॥
प्रभुही बीलोकी सहीत बैदेही । परे अवनी तन सुधी न तेही ॥
पर्म प्रीती बीलोकी रघुनायक । हर्षी उठाइ लीन्ह उर लायक ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ का प्रथम और अंतिम पत्र (पत्र सं० १ और पत्र-सं० ६६) खंडित हैं। अंतिम पत्र खंडित होने के कारण लिपिकाल का पता नहीं चला। लिपि कैथी है। लिपिकर्त्ता ने कलात्मक ढंग से लिखने का प्रयास किया है।

६७. लंकाकांड। देशी कागज। पत्र—५८। आकार—७½ इंच लंबाई और ५½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—१४। परिमाण (छंदों में)—१७७६। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

× × ×

बोलि लिये कपि निकर बहोरी ॥ सकल सुनहु बिनती एक मोरी ॥
राम चरण पंकज उर धरहू ॥ कौतुक एक भालु कपि करहू ॥
धावहु मर्कट बिकट बरूथा ॥ आनहु बिटपु गिरिन्ह के यूथा ॥
सुनि कपि भालु चले करि हूहा ॥ जय रघुबीर प्रताप समूहा ॥

॥ दोहा ॥

अति उतंग गिरि पादप लीलहिं लेहिं उठाई ॥
आनि देहिं नल नील कहँ विरचहिं सेतु बनाई ॥

॥ चौपाई ॥

शैल विशाल आनि कपि देहीं ॥ कंदुक इव नल नील सो लेहीं ॥
देषि सेतु अति सुन्दर रचना ॥ विहँसि कृपानिधि बोले बचना ॥
परम रम्य उत्तम यह धरणी ॥ महिमा अमित जाइ नहिं बरणी ॥
करिहौं इहां शंभु थापना ॥ मोरे हृदय परम कलपना ॥

सुनि कपीस बहु दूत पठाये ॥ मुनिवर सकल बोलि लै आये ॥
लिंग थापि विधिवत करि पूजा ॥ शिव समान प्रिय मोहि न दूजा ॥

अंत

॥ दोहा ॥

तब रघुनंदन सिय सहित अवधहिं कीन्ह प्रणाम
सजल विलोचन पुलक तन पुनि पुनि हर्षित राम
बहुरि त्रिवेणी आइ प्रभु हर्षित मज्जन कीन्ह
कपिन समेत महीसुरन्हि दान विविधि विधि दीन्ह

॥ चौपाई ॥

प्रभु हनुमन्तहि कहा बुझाई ॥ धरि द्विज रूप अवधपुर जाई ॥
भरतहिं कुशल हमार सुनावहु ॥ समाचार लै पुनि चलि आवहु ॥
तुरत पवनसुत गवनत भयऊ ॥ तब प्रभु भरद्वाज पहं गयऊ ॥
नाना विधि पूजा मुनि कीन्हीं ॥ अस्तुति करि पुनि आशिष दीन्हीं॥
मुनि पद बंदि जुगल कर जोरी ॥ चढ़ि विमान पुनि चले बहोरी ॥
इहां निषाद सुना प्रभु आये ॥ नाव नाव करि लोग बुलाये ॥
सुरसरि लांघि यान जब आवा ॥ उतरा तहं प्रभु आयसु पावा ॥
तब सीता पूजी सुरसरी ॥ बहु प्रकार करि चरणनु परी ॥
दीन्ह असी (स) मुदित म··· ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ आदि और अंत से खंडित है। अंत से खंडित होने के कारण लिपिकाल का पता नहीं चला। रूप से लगता है कि ग्रंथ प्राचीन है। पाठ की दृष्टि से निम्नलिखित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

इहाँ सेतु बाध्यो अरु थापेउँ सिव सुख धाम। (प्रकाशित)
सीता सहित कृपानिधि संभुहि कीन्ह प्रनाम ॥
सुन्दरि सेतु देखि यह थापेउं शिव सुख धाम।
सीता सहित कृपायतन शंभुहिं कीन्ह प्रणाम ॥ (हस्तलेख)
तीरथपति पुनि देखु प्रयागा। निरखत जन्मकोटि अघ भागा ॥
देखु परम पावनि पुनि बेनी। हरन सोक हरि लोक निसेनी ॥
(प्रकाशित)
तीरथपति पुनि दीख प्रयागा। देखत जाहि पाप सब भागा ॥
देखि राम पावन पुनि बेनी। हरण शोक सुर लोक निसेनी ॥
(हस्तलेख)

पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि । त्रिविध ताप भव रोग नसावनि ॥ (प्र०)
देखी अवधपुरी अति पावनि । त्रिविध ताप भव दाप नसावनि ॥ (ह०)

सीता सहित अवध कहु कीन्ह कृपाल प्रनाम ।
सजल नयन तन पुलकित पुनि पुनि हरषित राम ।
पुनि प्रभु आइ त्रिबेनी हरषित मज्जन कीन्ह ।
कपिन्ह सहित विप्रन्ह कहु दान विविध विधि दीन्ह ।(प्रकाशित)
तब रघुनंदन सिय सहित अवधहिं कीन्ह प्रणाम ।
सजल विलोचन पुलक तन पुनि पुनि हर्षित राम ।
बहुरि त्रिवेणी आइ प्रभु हर्षित मज्जन कीन्ह ।
कपिन समेत महीसुरन्हि दान विविधि विधि दीन्ह । (हस्तलेख)

उत्तर कांड

६८. उत्तर कांड । देशी कागज । पत्र—८६ । आकार—६½ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई । पक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)— १८ । परिमाण—११०१ । पूर्ण । रूप— प्राचीन । लिपि—कैथी । लिपिकाल—सं० १८१० ।

आदि

श्री गनेसाएनमः श्रीरामचंद्राएनमः श्री पोथी उतर कांड कीत गोसांई तुलसीदास लीषते ।

रहा एक दीन अवधी कर : अती आरत पुरलोग :
जहा तहा सोचही नारी नर : कीस तन राम बीओग :
सगुन होही सुंदर सकल : मन प्रसंन्य सब केर :
प्रभु आगवन जनाव जनु : नग्र रम्य चहु फेर :
कौसील्यादी मातु सब : मन अनंद अस होई
आए प्रभु सीअ अनुज जुत : कहन चहत अस कोई :
भरथ नएन भुज दछीन : फरकही बारहीं बार :
जानी सगुन मन हरष अती : लागे करन बीचार :

अंत

छंद

पाई न केही गती पतीत पावन राम भजु सुनु सठ मना :
गनीका अजामील ब्याधी गीध गजादी षल तारे घना :

सुनि कपीस बहु दूत पठाये ॥ मुनिवर सकल बोलि लै आये ॥
लिंग थापि विधिवत करि पूजा ॥ शिव समान प्रिय मोहि न दूजा ॥

अंत

॥ दोहा ॥

तब रघुनंदन सिय सहित अवधहिं कीन्ह प्रणाम
सजल विलोचन पुलक तन पुनि पुनि हर्षित राम
बहुरि त्रिवेणी आइ प्रभु हर्षित मज्जन कीन्ह
कपिन समेत महीसुरन्हि दान विविधि विधि दीन्ह

॥ चौपाई ॥

प्रभु हनुमन्तहि कहा बुझाई ॥ धरि द्विज रूप अवधपुर जाई ॥
भरतहिं कुशल हमार सुनावहु ॥ समाचार लै पुनि चलि आवहु ॥
तुरत पवनसुत गवनत भयऊ ॥ तब प्रभु भरद्वाज पहं गयऊ ॥
नाना विधि पूजा मुनि कीन्हीं ॥ अस्तुति करि पुनि आशिष दीन्हीं॥
मुनि पद बंदि जुगल कर जोरी ॥ चढ़ि विमान पुनि चले बहोरी ॥
इहां निषाद सुना प्रभु आये ॥ नाव नाव करि लोग बुलाये ॥
सुरसरि लांघि यान जब आवा ॥ उतरा तहं प्रभु आयसु पावा ॥
तब सीता पूजी सुरसरी ॥ बहु प्रकार करि चरणनु परी ॥
दीन्ह असी (स) मुदित म··· ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ आदि और अंत से खंडित है। अंत से खंडित होने के कारण लिपिकाल का पता नहीं चला। रूप से लगता है कि ग्रंथ प्राचीन है। पाठ की दृष्टि से निम्नलिखित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

इहाँ सेतु बाध्यो अरु थापेउँ सिव सुख धाम। (प्रकाशित)
सीता सहित कृपानिधि संभुहि कीन्ह प्रनाम ॥
सुन्दरि सेतु देखि यह थापेउं शिव सुख धाम।
सीता सहित कृपायतन शंभुहिं कीन्ह प्रणाम ॥ (हस्तलेख)
तीरथपति पुनि देखु प्रयागा। निरखत जन्मकोटि अघ भागा ॥
देखु परम पावनि पुनि बेनी। हरन सोक हरि लोक निसेनी ॥
(प्रकाशित)
तीरथपति पुनि दीख प्रयागा। देखत जाहि पाप सब भागा ॥
देखि राम पावन पुनि बेनी। हरण शोक सुर लोक निसेनी ॥
(हस्तलेख)

पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि । त्रिविध ताप भव रोग नसावनि ॥ (प्र०)
देखी अवधपुरी अति पावनि । त्रिविध ताप भव दाप नसावनि ॥ (ह०)

सीता सहित अवध कहु कीन्ह कृपाल प्रनाम ।
सजल नयन तन पुलकित पुनि पुनि हरषित राम ।
पुनि प्रभु आइ त्रिबेनी हरषित मज्जन कीन्ह ।
कपिन्ह सहित विप्रन्ह कहु दान विविध विधि दीन्ह ।(प्रकाशित)
तब रघुनंदन सिय सहित अवधहिं कीन्ह प्रणाम ।
सजल विलोचन पुलक तन पुनि पुनि हर्षित राम ।
बहुरि त्रिवेणी आइ प्रभु हर्षित मज्जन कीन्ह ।
कपिन समेत महीसुरन्हि दान विविधि विधि दीन्ह । (हस्तलेख)

उत्तर कांड

९८. उत्तर कांड । देशी कागज । पत्र—८६ । आकार—६½ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई । पक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)— १८ । परिमाण—११०१ । पूर्ण । रूप— प्राचीन । लिपि—कैथी । लिपिकाल—सं० १८१० ।

आदि

श्री गनेसाएनमः श्रीरामचंद्राएनमः श्री पोथी उतर कांड कीत गोसांई तुलसीदास लीषते ।

रहा एक दीन अवधी कर : अती आरत पुरलोग :
जहा तहा सोचही नारी नर : कीस तन राम बीओग :
सगुन होही सुंदर सकल : मन प्रसंन्य सब केर :
प्रभु आगवन जनाव जनु : नग्र रम्य चहु फेर :
कौसील्यादी मातु सब : मन अनंद अस होई
आए प्रभु सीअ अनुज जुत : कहन चहत अस कोई :
भरथ नएन भुज दछीन : फरकही बारहीं बार :
जानी सगुन मन हरष अती : लागे करन बीचार :

अंत

छंद

पाई न केही गती पतीत पावन राम भजु सुनु सठ मना :
गनीका अजामील ब्याधी गीध गजादी षल तारे घना :

सुनि कपीस बहु दूत पठाये ॥ मुनिवर सकल बोलि लै आये ॥
लिंग थापि विधिवत करि पूजा ॥ शिव समान प्रिय मोहि न दूजा ॥

अंत

॥ दोहा ॥

तब रघुनंदन सिय सहित अवधहिं कीन्ह प्रणाम
सजल विलोचन पुलक तन पुनि पुनि हर्षित राम
बहुरि त्रिबेणी आइ प्रभु हर्षित मज्जन कीन्ह
कपिन समेत महीसुरन्हि दान विविधि विधि दीन्ह

॥ चौपाई ॥

प्रभु हनुमन्तहि कहा बुझाई ॥ धरि द्विज रूप अवधपुर जाई ॥
भरतहिं कुशल हमार सुनावहु ॥ समाचार लै पुनि चलि आवहु ॥
तुरत पवनसुत गवनत भयऊ ॥ तब प्रभु भरद्वाज पहं गयऊ ॥
नाना विधि पूजा मुनि कीन्हीं ॥ अस्तुति करि पुनि आशिष दीन्हीं॥
मुनि पद बंदि जुगल कर जोरी ॥ चढ़ि विमान पुनि चले बहोरी ॥
इहां निषाद सुना प्रभु आये ॥ नाव नाव करि लोग बुलाये ॥
सुरसरि लांघि यान जब आवा ॥ उतरा तहं प्रभु आयसु पावा ॥
तब सीता पूजी सुरसरी ॥ बहु प्रकार करि चरणनु परी ॥
दीन्ह असी (स) मुदित म··· ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ आदि और अंत से खंडित है । अंत से खंडित होने के कारण लिपिकाल का पता नहीं चला । रूप से लगता है कि ग्रंथ प्राचीन है । पाठ की दृष्टि से निम्नलिखित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

इहाँ सेतु बाध्यो अरु थापेउँ सिव सुख धाम । (प्रकाशित)
सीता सहित कृपानिधि संभुहि कीन्ह प्रनाम ॥
सुन्दरि सेतु देखि यह थापेउं शिव सुख धाम ।
सीता सहित कृपायतन शंभुहिं कीन्ह प्रणाम ॥ (हस्तलेख)
तीरथपति पुनि देखु प्रयागा । निरखत जन्मकोटि अघ भागा ॥
देखु परम पावनि पुनि बेनी । हरन सोक हरि लोक निसेनी ॥
(प्रकाशित)
तीरथपति पुनि दीख प्रयागा । देखत जाहि पाप सब भागा ॥
देखि राम पावन पुनि बेनी । हरण शोक सुर लोक निसेनी ॥
(हस्तलेख)

पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि । त्रिविध ताप भव रोग नसावनि ॥ (प्र०)
देखी अवधपुरी अति पावनि । त्रिविध ताप भव दाप नसावनि ॥ (ह०)

सीता सहित अवध कहु कीन्ह कृपाल प्रनाम ।
सजल नयन तन पुलकित पुनि पुनि हरषित राम ।
पुनि प्रभु आइ त्रिबेनी हरषित मज्जन कीन्ह ।
कपिन्ह सहित विप्रन्ह कहु दान विविध बिधि दीन्ह ।(प्रकाशित)
तब रघुनंदन सिय सहित अवधहिं कीन्ह प्रणाम ।
सजल विलोचन पुलक तन पुनि पुनि हर्षित राम ।
बहुरि त्रिवेणी आइ प्रभु हर्षित मज्जन कीन्ह ।
कपिन समेत महीसुरन्हि दान विविधि विधि दीन्ह । (हस्तलेख)

उत्तर कांड

६८. उत्तर कांड । देशी कागज । पत्र—८६ । आकार—६½ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई । पक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)— १८ । परिमाण—११०१ । पूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि—कैथी । लिपिकाल—सं० १८१० ।

आदि

श्री गनेसाएनमः श्रीरामचंद्राएनमः श्री पोथी उतर कांड कीत गोसांई तुलसीदास लीषते ।

रहा एक दीन अवधी कर : अती आरत पुरलोग :
जहा तहा सोचही नारी नर : कीस तन राम बीओग :
सगुन होही सुंदर सकल : मन प्रसंन्य सब केर :
प्रभु आगवन जनाव जनु : नग्र रम्य चहु फेर :
कौसील्यादी मातु सब : मन अनंद अस होई
आए प्रभु सीअ अनुज जुत : कहन चहत अस कोई :
भरथ नएन भुज दछीन : फरकही बारहीं बार :
जानी सगुन मन हरष अती : लागे करन बीचार :

अंत

छंद

पाई न केही गती पतीत पावन राम भजु सुनु सठ मना :
गनीका अजामील ब्याधी गीध गजादी षल तारे घना :

अभीर जमन कीरात षल सुपचादी अती अघ रुप जे:
कही राम बारक तेपी पावन होही राम नमामी जे:
रघुबंस भुषन चरीत पावन सुनै जो नर गावही:
कलीमल मलोमल धोई बीनु स्रम राम धाम सीधावही:
संतपंच चौपाई : मनोहर जानी जो नर उर धरै:
दारुन अबीद्या पंच जनीत बीकार श्रीरघुबर हरै:
सुंदर सुजान क्रीपा नीधान अनाथ पर कर प्रीती जो:
सो एक राम अकाम हीत नीरबान पद सम नेती जो:
जाकी क्रीपा लवलेस तै मतीमंद तुलसीदासहु:
पाऔ परम बीस्राम राम समान प्रभु नाही कहु:

दोहा

मोसे दीन न दीन हीत : तुम समान रघुबीर
अस बीचारी रघुबंस मनी : हरै बीषम भव भीर:
कांमीही नारी पीआरी जीमो: लोभी ही प्रीअ जीमी दाम:
तीमी रघुनाथ नीरंतर : प्रीअ लागहु मोही राम

ईती श्री रामचरीत्रे मानसे सकल कली कलुष बीधंसनो बीमल वैराग संपादीनी नाम उतरकांड संपुरन समापत सुभमस्तु संवतु १८१०० मास अषाढ सुदी ७ बार भोमे लीषावा ठाकुर सीघ सीपाही पलटन काटर की कंपनी ३ रजमठी ६० छावनी पीरोजपुर ।।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ कैथी लिपि में है। लिपिकाल सं० १८१० है। लिपिकर्ता फौजी सिपाही था, पुष्पिका में स्पष्ट उल्लेख है। पाठांतर भी हैं।

६६. उत्तरकांड। देशी कागज। पत्र—६०। आकार—८½ इंच लंबाई और ६ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—६। परिमाण (छंदों में) ११६४। अपूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८३० वि०।

आदि

..............................वहर न भक्त न आदरी ॥
तेही पाही सुर दुर्लभ पदारथ परत हम देषे हरी ॥

विश्वास करि सब आस परिहरि दास जे तव ह्वै रहे ॥
जपि नाम तुव बिन श्रम तरहि भवनाथ सो समरामहे ॥
जे चरन सिव अज पुज्य रज सुभ परसि मुनि पतिनी तरी ॥
..............पत्र मुनि वंदिता त्रैलोक्य पावन सुरसरी ॥
धुज कुलस अंकुस कंज जुत बन फिरत कंटक किम लहे ॥
पद कंज छंद मकुंद राम रमेश निच्च नमामहे ॥
अव्यक्त मुल मनादत सुत च चार निगमागम भनै ॥
षट कंध साषा पच्चीस अनेक पन सुमन घनै ॥
फल जुगल विधि कर मधुर बेल अकेलि जिहि आश्रत रहे ॥
पल्लवत फूलत नवल नित संसार विटप नमामहे ॥
जे ब्रंम्हं मयमद्वैतमनभवगंम्य मन पर ध्यावही ॥
ते कहुहु जानहि नाथ तव हम सगन जस नित गावही ॥
करुनाइतन प्रभु सद गुनाकर देहु यह वर मागही ॥

× × ×

अंत

सुंदर सुजान ...निधान अनाथ कर पद प्रीत जे ॥
सो येक राम निकाम हित तन बीस पद सत आंन को ॥
जाकी कृपा लवलेस ते मतिमंदि तुलसीदास हूं ॥
पायौ परम विश्रांम रांम समांन प्रभु नाही कहु ॥

दोहरा ॥ मो सम दीन न दीन हित तुम समांन रघुवीर ॥
अस विचार रघुवंस मनि हरहु विषम भवभीर ॥
कांमिही नारि प्यार अति लोभी प्रिया जिमि दांम ॥
तिमि रघुनाथ हिदै बसौ तुलसी के मन रांम ॥
तुम प्रसाद परमेसुरी ॥ सुभमस्तु पियालांमनि महि रांम ॥
असलोक ॥ के तप त्वु वे प्रभुनं क्रतं ॥
सुकविना श्री संभुना दुर्गम ॥
श्रीमद्राम पदाज•••भक्तमनिषंपष्यौनुरांम जमावं ॥
मदचतं रघुनाथ नांम निरुतां ॥

इ श्री कलिकलुष विधुसते नाम उतर कांड संपुर समापते ॥
जा दस्य पुस्तकं दिस्वा ता दिस्ट लिषते माया ॥

अभीर जमन कीरात षल सुपचादी अती अघ रुप जे :
कही राम बारक तेपी पावन होही राम नमामी जे :
रघुबंस भुषन चरीत पावन सुनै जो नर गावही :
कलीमल मलोमल धोई बीनु स्रम राम धाम सीधावही :
संतपंच चौपाई : मनोहर जानी जो नर उर धरै :
दारुन अबीद्या पंच जनीत बीकार श्रीरघुबर हरै :
सुंदर सुजान क्रीपा नीधान अनाथ पर कर प्रीती जो :
सो एक राम अकाम हीत नीरबान पद सम नेती जो :
जाकी क्रीपा लवलेस तै मतीमंद तुलसीदासहु :
पाऔ परम बीस्राम राम समान प्रभु नाही कहु :

दोहा

मोसे दीन न दीन हीत : तुम समान रघुबीर
अस बीचारी रघुबंस मनी : हरै बीषम भव भीर :
कांमीही नारी पीआरी जीमो : लोभी ही प्रीअ जीमी दाम :
तीमी रघुनाथ नीरंतर : प्रीअ लागहु मोही राम

ईती श्री रामचरीत्रे मानसे सकल कली कलुष बीधंसनो बीमल वैराग संपादीनी नाम उतरकांड संपुरन समापत सुभमस्तु संवतु १८१०० मास अषाड सुदी ७ बार भोमे लीषावा ठाकुर सीघ सीपःही पलटन काटर की कंपनी ३ रजमढी ६० छावनी पीरोजपुर ।।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ कैथी लिपि में है। लिपिकाल सं० १८१० है। लिपिकर्ता फौजी सिपाही था, पुष्पिका में स्पष्ट उल्लेख है। पाठांतर भी हैं।

६६. उत्तरकांड। देशी कागज। पत्र—६०। आकार—८½ इंच लंबाई और ६ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—६। परिमाण (छंदों में) ११६४। अपूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८३० वि०।

आदि

..............................वहर न भक्त न आदरी ॥
तेही पाही सुर दुर्लभ पदारथ परत हम देषे हरी ॥

विश्वास करि सब आस परिहरि दास जे तब ह्वै रहे ॥
जपि नाम तुव बिन श्रम तरहि भवनाथ सो समरामहे ॥
जे चरन सिव अज पुज्य रज सुभ परसि मुनि पतिनी तरी ॥
..............पत्र मुनि वंदिता त्रैलोक्य पावन सुरसरी ॥
धुज कुलस अंकुस कंज जुत बन फिरत कंटक किम लहे ॥
पद कंज छंद मकुंद राम रमेश निच्त नमामहे ॥
अव्यक्त मुल मनादत सुत च च्यार निगमागम भनै ॥
षट कंध साषा पच्चीस अनेक पन सुमन घनै ॥
फल जुगल विधि कर मधुर बेल अकेलि जिहि आश्रत रहे ॥
पल्लवत फूलत नवल नित संसार विटप नमामहे ॥
जे ब्रंम्हं मयमद्वैतमनभवगंम्य मन पर ध्यावही ॥
ते कहुहु जानहि नाथ तव हम सगन जस नित गावही ॥
करुनाइतन प्रभु सद्द गुनाकर देहु यह वर मागही ॥

× × ×

अंत

सुंदर सुजान ...निधान अनाथ कर पद प्रीत जे ॥
सो येक राम निकाम हित तन बीस पद सत आंन कौ ॥
जाकी क्रपा लवलेस तै मतिमंदि तुलसीदास हूं ॥
पायौ परम विश्रांम रांम समांन प्रभु नाही कहु ॥

दोहरा ॥ मो सम दीन न दीन हित तुम समांन रघुवीर ॥
अस विचार रघुवंस मनि हरहु विषम भवभीर ॥
कांमिही नारि प्यार अति लोभी प्रिया जिमि दांम ॥
तिमि रघुनाथ हिदै बसौ तुलसी के मन रांम ॥
तुम प्रसाद परमेसुरी ॥ सुभमस्तु पियालांमनि महि रांम ॥
असलोक ॥ के तप त्वु वे प्रभुनं क्रतं ॥
सुकविना श्री संभुना दुर्गम ॥
श्रीमद्राम पदाज...भक्तमनिषंपष्यौनुरांम जमावं ॥
मदच्वतं रघुनाथ नांम निरुतां ॥

इ श्री कलिकलुष विधुसते नाम उतर कांड संपुर समापते ॥
जा दस्य पुस्तकं दिस्वा ता दिस्ट लिषते माया ॥

जल सुभवामसुध दोस न दीयते
जदप अछर पद भरिस्टं मात्रा हीनो जदं भवेत ॥
तद सर्व छिमिता देवी तुम प्रसाद परमेसुरी ॥
लिखतं प्रधान दीपसा बाचै सुनै ताको राम् राम् ॥

जेठ सुदी ८ स्नौ संवतु १८३० मुकामु छत्रपुर श्री महराजाधिराज श्री महाराज श्री राजा हिंदुपति जु देव के राज मै लिषते।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रामचरित मानस उत्तरकांड की प्रतिलिपि संवत् १८३० वि० ज्येष्ठ शुक्ल ८ शनिवार को छत्रपुर के महाराज हिन्दुपति के राज्य से की गई थी। प्रारंभ के ग्यारह पत्र एवं चौदहवाँ तथा पंन्द्रहवाँ पत्र नहीं है। यत्र-तत्र पाठांतर भी मिलते हैं—

भरत अनुज सौमित्रि समेता। पठवन चले भगत कृत चेता ॥–प्र०रा०,पृ५०५
भरत अनुज सौमित्र समेता। पढ़वन चले नगर क्रत वेता ॥–ह०प्र०,पत्र१६

१००. उत्तरकांड। देशी कागज। पत्र—४१। आकार—६½ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१८। परिमाण (छंदो में)—१४७६। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८३४ वि०।

आदि

श्री जानकीबल्लभाय नमः ॥
केकी कंठाभनीलं रघुवरं विलसत् विप्र पादाब्ज चिन्हं ॥
सोभाढ्यं पीत बस्त्रं सरसिज नयनं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥
पाणौ नाराच चापं कपि निकर युतं बंधुना शेव्यमानं ॥
नौमीड्यं जानकीशं ॥ रघुबरमनिशं पुष्पकारूढ रामं ॥ १ ॥
कोसलेद्रं पद कंज मंजुलोः ॥ कोमलाबुज महेश दीवंतौ ॥
जानकि कर सरोज लालीतो चिंतकश्य मन भंग संगीतो ॥ २ ॥
कुंदेदुवर गोर सुंदरं अंबिका पतीमभीष्टमीदंरं॥
कारुणीक कल कंज लोचनं ॥ नौमी संकरमनंगमोचनं ॥ ३ ॥

दोहा। रहा एक दिन अवधी कर ॥ अति आतुर पुर लोग ॥
जहां तहां सोचहि नारि नर ॥ कस तन राम वियोग ॥ १ ॥

सुगन होहि सुंदर सकल ॥ मन प्रशन्न सभ केर ॥
प्रभू आगमन जनावहि ॥ जनु नग्र रम्य चहु फेर ॥ २ ॥
कोशल्यादिक मातु सब मन आनंद अश होय ॥
आये प्रभू शीये अनुज जुत ॥ कहन चहत अस कोय ॥ ३ ॥
भरत नयन भूज दछिन फरकत बारहि बार ॥
जानी सगुन मन मन हर्ष अति लागे करन विचार ॥ ४ ॥

चौ० ॥ रहा अेक दीन अवध अधारा ॥ समुझत मन दुष भएउ अपारा ॥
कारन कवन नाथ नहि आये ॥ जानि कुटिल किधो मोहि बिसराये ॥
अहहु धन्य लछिमन बड भागी ॥ राम पदारविंद अनुरागी ॥

अंत

कामिहि नारि पियारि जिमि लोभहि प्रिया ग जिमि दाम
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रीय लागेहु मोहि रामा ।
यदि अच्छर कछु भ्रष्ट होइ ते सब लहु
सुधारि विनय करौ कर जोरि कै दोष न दे वह टारि २२५
यत्पूर्व प्रभु संकृतं सुकविता श्री संभुना दुर्गमा
श्री मंद्रामपदांबुज भक्ति मनिसं पार्थैव रामायणं
मात्वी श्री रघुनाथ नंमनिरंतरतः स्वांतस्तमः शांतये
भाषा वंधनिदं चकार तुलसीदास संतती मानसं ॥
पुन्य पापहरं सदाशिवकर विग्यान भक्ति प्रदायकं
माया मोहि मलापहं सुविल प्रवे पुरं सुभं
श्री राम चरित मानसमिद भगवत्यावगीहंतं
वाल अयोध्या आरन्य किस्कंदा सुंदरस्तथा लंका च उत्तर
श्चैव सप्त कांड राम्यायणे ॥

ईति श्री राम चरित्र मानसे सकल कलिक विध्वंसने आविरल हरि भक्ति संपादनी नाम सपतमो सोपान ७, ईति श्री राम चरित्र उत्तर कांड सपुरण श्रीरस्तु सुभु संतमत १८३४ साषे साषे ॥१६६६॥श्री सूर्य उत्तरायणे गच्चे वैसाख समान मासे कृष्न पछे असाड मास चतुर्थी बुद्ध वासरे लीक्षतं यथा यस्थ राजा माहाराजे ॥ रामायण सातेही कांड संपुरन लेषे जमना

दास जालरा पाटण वाली ॥ लषीआ वदम परगणही गेला जेकतालक गाम अतरालो सुदारा कामंदरन—रवोसाहाजी। श्री गोतमं गुमान जी दोई भाई वी राषी लषाई दीनी सो रनी लाला जी से बन राषी लषाई ॥ मीती असाढ ॥ बुदी नोमा ॥ ८ ॥ समत ॥ १८०१६ ॥ का साल म उतारी जमना बाई का हात का दसकत घट बद ता होई तो संत सब मल षमा करजो लुघु बीदी। सुलषी बाच बीचारो जासं तासु प्रनाम ससतहीत कंनक डंडोत बंच्च जो हात जोड़ वीयन करो जो छमा करजो ॥ आप वडा संत हो ॥ जो आपकी दास जान छमा करो माहाराज ॥ ईति श्री रामायन उत्तरायणे कांड संपूर्ण श्रीरस्तु सुभमं सतु संपूरण याना सात ७ समापता संब सु बार बार वीनती करो सातु कांड बाल अयोध्या आंरन कीस्कंदा सुंदर लंका उत्तरायण संपूरण समापता जानो गाजीसर लोक दुवा चोपई छंद सौरठा सर्ट ॥

१०१. उत्तरकांड। देशी कागज। पत्र—६८। आकार—१०$\frac{5}{10}$ इंच लंबाई और ५$\frac{5}{10}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—११। परिमाण (छंदों में)—१४६६। अपूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८४६ वि०।

आदि

श्री राम कृष्णाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

श्लोक : केकिकंठाभनीलं सुरबर विलसद्विप्रपादाब्जचिन्हं
सोभाढ्यां पीत वस्त्रं सरसिज नयनं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥
पाणौ नाराच चापं कपि निकर संयुतं बंधुना सेव्यमानं ॥
नौमिडयं जानकीशं रघुवरमनिसं पुष्पकारूढरामं ॥ १ ॥
कौशलेंद्र पद कंज मंजुलौ कमल योनि महेश वंदितौ ॥
जानकी कर सरोज लालितौ चिंतकस्य मन भृंगसंगिनौ २ ॥
कुंद इंदुदर गौर सुंदरं ॥ अंबिका पतिमभीष्ट सिद्धिदं ॥
कारुणीक कलकंज लोचनं नौमी शंकरमनंगमोचनं ॥ ३ ॥

दोहा ॥ रहा एक दिन अवधि कर अति आतुर पुर लोग ॥
जहां तहां सोचहिं नारि नर क्रस तन राम वियोग ॥

दोहा ॥ सगुन होहिं सुंदर सकल मन प्रसन्न सब केर ॥
प्रभु आगमन जनाव जनु नगर रम्य चहूँ फेर ॥

× × ×

अंत

श्लोक : यत्पूर्वं प्रभुना कृतं सुकविना श्री शंभुना दुर्गमं
श्री मद्राम पदाब्ज भक्तिमनिसं प्राथेव रामायणं ॥
मत्वाचद्रघुनाथ नाम निरत स्वांतः श्नम शांतये ॥
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसं ॥१॥
पुन्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं ॥
माया मोह भयापहं सु विमलं प्रेमाघ पूरं शुभं ॥
श्री मद्राम चरित्र मानसमिदं भक्त्यावगाहंति ये ॥
ते संसार सार देनेश घोर कीरणै र्दह्यंति ने मानवां ॥२॥

ईति श्री राम चरित्र मानसे सकल कलि कलुष विधंसने ॥ अविरल भक्ति संपादिनि नाम सप्तमो सोपान संपूर्ण : ॥ संवत । १८।४६ ॥ ना वर्षे मास मासो कार्त्तिक मासे ॥ शुक्ल पक्षे तिथि चतुर्दसी : १४ ॥ आदित्य वासरे ॥ वैष्नव उद्धवदास कवि कृतं ॥ वैष्नव हरिदास जी पठनार्थः ॥ सुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तः ॥ श्री कस्कः श्रीएनमः ॥ श्री रामकृष्णाय नमः ॥
राग विहागडोः ॥

आरति श्री रामयण जु की ॥ कीरति कलिति ललीत सीय पीये की ॥टेक॥
गाधे ब्रह्मा अरु मुनि नारद ॥ बालमिक बिग्यान बिसारद ॥
शुक सनकादि शेष अरु सारद ॥ बरनि पवन सुत कीरति नीकी ॥ १ ॥
चारु वेद पूरान अष्टादस ॥ सार अंस संमत सबहि की ॥ २ ॥
गावे संतत संभु भवानी ॥ अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी ॥
व्यास आदि मुनि बिरद बषानी ॥ काक भुसुंड गरुड रुचि हीये की ॥ ३ ॥
कलिमल हरन बिषऐ से फीकी ॥ सुभग सिगार मुक्ती जुवती की ॥
हरण रोग भये सुरी अभी की ॥ तात मात सम हित तुलसी की ॥ ४ ॥
इति श्री रामयण जु की आरती संपूर्ण : ॥ ज्यांनकी नाथाय नमः ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति अपूर्ण है। पत्र सं० ३ उपलब्ध नहीं। लिपिकर्ता कोई वैष्णव भक्त उद्धव दास हैं। जिन्होंने वैष्णव भक्त हरिदास जी के पठनार्थ इस प्रति की प्रतिलिपि की थी। पाठ शुद्ध नहीं है।

१०२. उत्तरकांड। देशी कागज। पत्र—४७। पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—१६। परिमाण (छंदों में)—५१७। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—कैथी मिश्रित नागरी। लिपिकाल—संवत् १८७० वि० (१२२० फ०)।

आदि

पत्र सं० ४२ से—

॥ चौपाई ॥

नीस्चर निकर मरन वीधि नाना। रघूपति रावन समर बषाना ॥
रावन बधन मदोदरी सोका। राम वीभीषन देव असोका ॥
सीता रघूबर मीलन बहोरी। सूरन फेरी अस्तूत कर जोरी ॥
पुनि पूष्पक चढी कपीन समेता। अवध चले प्रभु कृपा नीकेता ॥
जीहि बीधी राम अवध नीयराए। बायस बीसद चरीत सब गाए ॥
कहिसी बहोरी राम अभीषेका। पूर ब्रनन त्रीप नीति अनेका ॥
कथा समस्त भूसूडी बषानी। जो मै तूम स्न कहा भवानी ॥
सूनी सब राम कथा षगनाहा। कहत बचन मन प्रम उछाहा ॥

दोहा

गयो मोर संदेह सून्यो सकल रघूपति चरीत।
भवो राम पद नेह तव प्रसाद बायस तिलक।
मोहि भवो अति मोह प्रभू बंधन रन मह नीर्षी।
चीदानंद संदोह राम बीकल कारन कवन।

अंत

॥ दोहा ॥

मो सम दीन न दीन हित तूम सम रघूवीरा ॥
अस बीचारी रघूबंस मनी हरहू बीषम भव भीरा ॥ २२३
कामीहि नारी पीयारी जीमी लोभीहि प्रीय जीमी दाम॥
तिमी रघूनाथ नीरंतर प्रीय लागहू मूहि राम ॥

इति श्री राम चरीत्रमानसे सकल कलीलूक वीध्वंसने बीमल वैराग्य संपादीनो नाम ससमा सोपान उत्तकांड समपूरन समापती सूभमस्तू संवत १८७० साल मीती सावन सूदी दवोदसी बार अत्यार मोकाम कीसुरगंज पलटन पदरहा रेजमट दोसरा..............न करनइल करन साहेब पोथी लपर...सीपाही कंपनी पहीला षास दसष बंदे अजाएब लाल काएथ ६ १२२० साल ॥

विशेष ज्ञातव्य—लिपि कैथी मिश्रित नागरी है। कहीं कहीं पाठांतर भी हैं। लिपि काल संवत् १८७० एवं १२२० फसली है। प्रति प्रारंभ से (पत्र सं० १ से ४१ तक) खंडित है।

१०३ उत्तरकांड। देसी कागज। पत्र—६३। आकार—११ इंच लंबाई और ५ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—१०। परिमाण (छंदों में) १२६६। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८७६।

आदि

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सीतापतये नमः ॥ उत्तर कांड प्रारंभ ॥

श्लोकः ॥ केकिं कंठामनीलं ॥ उरवरावे लसत् विप्रपादाब्ज्य चिह्नं ॥
सोभाढ्यं पीतवासं ॥ सरसिज नयनं सर्वदा सु प्रसन्नं ॥
पार्श्वें नाराच चापं ॥ कपि निकर युतं ॥ बंधुना सेव्यमानं ॥
नौडमीब्यं जानकीशं ॥ रघुबरमनिशं ॥ पुष्पकारूढरामं ॥ १ ॥
कौशलेय पद पंकज मंजुलौ ॥ कोमलांबुज महेश वदितौ ॥
जानकी कर सरोज लालितौ ॥ चिंतकस्य मन भृंग संगिनौ ॥
कुंद इंदु दर गौर सुंदरं ॥ अंबिकापतिमभिष्टसिद्धिदं ॥
कारुणीक कलकंज लोचनं ॥ नौमि शकरमनंगमोचनं ॥

रहा एक दिन अवधि कर ॥ अति आरति सब लोग ॥
जांहां तांहां सोचहि नारि नर ॥ कृश तन राम वियोग ॥ ॥
सगुन होइ सुंदर सकल ॥ मन प्रसन्न सब केर ॥
प्रभु आगमन जनाव जन ॥ नगर रम्य चहु फेर ॥२॥

अंत

दोहा—मो सम दीन न दीन हित ॥ तुम्ह समान रघुबीर ॥
अस विचारि रघुबंश मनि ॥ हरहु विषम भव भीर ॥२३॥

दोहा—कामिहि नारि पियारि जिमि लोभिहि जिमि प्रिय दाम ॥
तिमि रघुनाथ निरंतर ॥ प्रिय लागहु मोहि राम ॥

इति श्री रामचरित्रे मानस सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य मम्या······नो नाम उत्तर काण्ड सप्तमो सोपान समाप्तम् ॥ संवत् ॥ १८७६ ॥ मिती सावन शुक्ल तृतीयो बुधे ॥ गुरु का वंदिगी ब्राह्मण वैष्णवन कौ प्रणाम ॥ सकल सभा को सीताराम पौंहोच ॥ यथा प्रत्य लीषीह ॥ शुभं भवतु ॥

श्लो० यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्री शंभुना दुर्गमं
श्री मद्रामपदाब्ज भक्तिमनिशं प्राप्ती तु रामायणं

नत्वातद्रघुनाथ नाम निरतं स्वांतस्तम शांतये
भाषाबद्धमिदं करोति तुलसी दासस्तथा मानसं ॥१॥
पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञान भक्तिः प्रदं ॥
माया मोह मलापहं सु विमलं प्रेमांबुपूरं शुभं
श्री मद्राम चरित्र मानसमिदं भक्त्यावगाहंति ये
ते संसार पतंग घोर किरणैर्दह्यंति नो मानवा ॥ २ ॥

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकर्ता ने अपना नाम नहीं दिया किंतु पुष्पिका से ज्ञात होता है कि किसी रामभक्त ने इस प्रति को तैयार किया है। कांड के अंत में आए संस्कृत के श्लोकों को प्रतिलिपिकार ने भूल से छोड़ दिया था जिसे उसने पत्र के हाशिए पर चारों तरफ लिख दिया है। प्रति के अक्षर स्पष्ट और शुद्ध हैं।

इस प्रति को स्वर्गीय पंडित लज्जाराम जी महता बूँदी निवासी ने अपने पुस्तकालय में से सभा को समर्पित किया था। इससे ज्ञात होता है कि इसकी प्रतिलिपि बूँदी में ही की गई होगी।

१०४. उत्तरकांड। आधुनिक कागज। पत्र—८२। आकार—८ इंच लंबाई और ७$\frac{२}{५}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—१५। परिमाण (छंदों में)—६६६। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—कैथी। लिपिकाल—सं० १८७७ (१२२८ फसली)।

आदि

× × × ·····जानी कुटील प्रभु मोही बीसराऐ
अहो ध्यंन लछुमन बड भागी, राम पदारथ वींद्र अनुरागी
कपटी कुटील नाथ मोही चीन्हा, ताते नाथ संग नाही लीन्हा
जौ क्रनी समुझो प्रभु मोरी, नाही नीस्तार कल्प सत कोरी
जन औगुन प्रभु माने न काउ, दीनबंधु अती म्रीदुल सुभाउ
मोरे मन भरोस दीढ सोइ, मीलीहे राम सगुन सुभ होइ
बीते अवधी रहै जौ प्राना, अधम कवन जग मोही समाना

॥ दोहा ॥

राम वीरह सागर मह : भरथ मगण मण होत ॥
बीप्र रुप धरी पवन सुत : आऐ गऐ जीमी पोत ॥

बैठी देखी कुस आसनं : जटा मकुट क्रीस गात ॥
राम राम रघुपती जपत : संवत नयन जलजात ॥

अंत

॥ दोहा ॥

मो सम दीन ना दीन हीत : तुम समान रघुवीर
अस बीचारी रघुबंस मनी : हरहु बीखम भ्व पीर
कामीही नारी पीआरी : लोभी जीमी प्रीव दाम
तीमी रघुनाथ नीरंत्र : प्रीव लागहु श्रीराम

ऐती श्री उत्र काड समापती जौ प्रती देखा सो लीखा मम दोख ना दीअते पंडीत जन सो बीनती मोर : टुटल आखर लेब सब जोरी : सीताराम समेनाम समत २८७७ समेनाम मीती अगहन सुदी ॥ १५ सन १२२८ साल दसखत फकीरचंद साः समरदेह ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित हैं। यत्र तत्र पाठांतर भी हैं। लिपिकाल सं० १८७७ (१२२८ फसली) है ।

१०५. उत्तरकांड । देशी कागज । पत्र—७६ । आकार—८ इंच लंबाई और ६ इंच चौड़ाई । पक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)--१८ । परिमाण (छंदों में)--१५३९ । पूर्ण । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपि-काल--सं० १८७७ वि० ।

आदि

श्री गणेशायनमः ॥
श्री रामचरित्रे मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य संपादिनो नाम ॥
श्रीमत गोसाई तुलसीदास कृत महामंगलदायिकं ॥
श्री रामायने सप्त सोपान उत्तर कांड प्रवर्त्तते ॥
अथ श्लोक लिष्यते ॥ श्री जानकीवल्लभो विजयते ॥
केकीकंठाभनिलं शुर वरविलास द्विप्रदाअब्ज चिन्हं
सोभाढ्यं पीत वस्त्रं सरसिज नयेनं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ १ ॥
पानी नाराच चापं कपीनीकरजुतं बंधुना सेव्यमानं ॥
.... जानकीसं रघुवरंमनीसं पुसुपकारूढरामं ॥

कोसलेंद्रपदपंकज मंजुलं कोमलब्ज महेस वंदितौ ॥
जानकीकरसरोजललितौ च्चित्तकस्य मनभृंग संगिनौ ॥ २ ॥
कुंद इंदु बर गौरं सुंदरं ॥ अंबिकापतिमभीष्ट मंदिरं ॥
कारूनीक कलकंज लोचनं नौमी संकरं मनमद मोचनं ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

रहा एक दिन अवधि कर अति आतुर पुर लोग ॥
जहां तहां सोचहि नारि नर क्रिस तन राम वियोग ॥ २ ॥

अंत

शोरठा

कामिहि नारि जीमी लोभीहि प्रीअ दाम ॥
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिअ लागहु मोहि राम ॥

इति श्री राम चरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य संपादिनोनाम उत्तरकांड समाप्तम् ॥ श्री संवत् ॥ १८७७ ॥ आषाढशुक्ल ॥ ८ ॥ बुधे ॥ तादिन पुस्तक समाप्तम् ॥ लिषितं यं मंगलमै रहा ॥ काशी मध्ये ॥ ईश्वरगंगे उत्तर भागे ॥ श्री रामचंद्रायनमः ॥ श्री मंगल-मस्तू ॥ श्री श्री श्रीरामो जयति श्री ॥

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल संवत् १८७७ वि० है । अंत में—'कामिहि नारि पिआरि ········ ।' के बाद जो श्लोक—'यत्पूर्वं प्रभुना कृतं ········ ।' होना चाहिए था उसे पुष्पिका के अंत में लिखा गया है। लिखावट से स्पष्ट है कि किसी दूसरे व्यक्ति ने उक्त श्लोक को बाद में जोड़ दिया है ।

'प्रभु रघुपति तजि सेइअ काही, मोही से सठ पर ममता जाही ।'
के बाद—'तुम्ह बिग्यान रूप नहि मोहा ।
नाथ कीन्हि मो पर अति छोहा ॥"

से लेकर

—"जाहि भजहि मन तजि कटिलाई ।
राम भजे गति केहि नहि पाई ॥"—तक

लगभग दो—तीन पृष्ठ छूट है। पर ग्रंथ के अंत में कुछ पत्र अलग से जुड़े हुए हैं और उन्हीं पत्रों में उपर्युक्त छूटा हुआ अंश लिखा गया है।

ग्रंथ के अनेक स्थलों पर अक्षर, शब्द, पंक्तियाँ छूटी हुई हैं जिन्हें ग्रंथ के हाशिए पर लिखा गया है । पाठांतर भी हैं ।

१०६. उत्तरकांड। देशी कागज। पत्र—४१। आकार—१३½ इंच लंबाई और ७½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१३। परिमाण (छंदों में—११६६। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८८३ वि०।

आदि

श्री गणेशाय नमः ॥

केकीकठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपाब्जचिन्हं
सौभाढ्यं पीतवस्त्रं शरसिज नयनं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ १ ॥
पाणौ नाराच चापं कपिनिकरयुतं बंधुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानुकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामं ॥ २ ॥
कौशलेंद्रपदकंजमंजुलौ कमलयोनिमहेशवंदितौ ॥
जानुकीकरसरोजलालितौ चिंतकस्य मनभृंगसंगिनौ ॥

॥ दोहा ॥

रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग ॥
जहं जहं सोचहि नारि नर कसतन राम वियोग ॥
सगुन होंहि सुंदर सकल मन प्रसंन्न सब केर ॥
प्रभु आगमन जनाव जनु नगर रम्य चहु फेर ॥
कौशल्यादिक मातु सब मन अनंद अस होई ॥
आए प्रभु श्री अजुन जुत कहन चहत अस कोइ ॥
भरत नयन भुज दच्छिणी फरकैहि बारंबार ।
जानि सगुन मन हर्ष अति लागै करन विचार ॥

अंत

॥ दो ॥

मो सम दीन न दीन हित तुम समांन रघुवीर ॥
अस विचारि रघुवंस मनि हरहु विषम भवभीर ॥
कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दांम ।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥

इति श्री राम चरित मानसे सकलकलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य वरनननाम अविरल भक्तिदातमं रामायन उत्तरकांड सप्तम सोपांन समाप्तं ॥ संमत ॥ १८८३ ॥ पौष वदी ॥ ६ ॥ सनिवासरां ॥ लिषतं वयांनै शुभ

कोसलेंद्रपदपंकज मंजुलं कोमलब्ज महेस वंदितौ ॥
जानकीकरसरोजललितौ चिंतकस्य मनभृंग संगिनौ ॥ २ ॥
कुंद इंदु बर गौरं सुंदरं ॥ अंबिकापतिमभीष्ट मंदिरं ॥
कारूनीक कलकंज लोचं नौमी संकरं मनमद मोचनं ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

रहा एक दिन अवधि कर अति आतुर पुर लोग ॥
जहां तहां सोचहि नारि नर क्रिस तन राम वियोग ॥ २ ॥

अंत

शोरठा

कामिहि नारि जीमी लोभीहि प्रीअ दाम ॥
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिअ लागहु मोहि राम ॥

इति श्री राम चरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्र संपादिनोनाम उत्तरकांड समाप्तम् ॥ श्री संवत् ॥ १८७७ ॥ आषाढशुक्ल ॥ ८ ॥ वुधे ॥ तादिन पुस्तक समाप्तम् ॥ लिषितं यं मंगलमै रहा ॥ काशी मध्ये ॥ ईश्वरगंगे उत्तर भागे ॥ श्री रामचंद्रायनमः ॥ श्री मंगलमस्तू ॥ श्री श्री श्रीरामो जयति श्रीं ॥

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल संवत् १८७७ वि० है । अंत में—'कामिहि नारि पिआरि .... ।' के बाद जो श्लोक—'यत्पूर्वं प्रभुना कृतं .... ।' होना चाहिए था उसे पुष्पिका के अंत में लिखा गया है। लिखावट से स्पष्ट है कि किसी दूसरे व्यक्ति ने उक्त श्लोक को बाद में जोड़ दिया है।

'प्रभु रघुपति तजि सेइअ काही, मोही से सठ पर ममता जाही ।'
के बाद—'तुम्ह बिग्यान रूप नहिं मोहा ।
नाथ कीन्हि मो पर अति छोहा ।।''
से लेकर
—''जाहि भजहि मन तजि कुटिलाई ।
राम भजे गति केहि नहि पाई ।।''—तक
लगभग दो—तीन पृष्ठ छूट है। पर ग्रंथ के अंत में कुछ पत्र अलग से जुड़े हुए हैं और उन्हीं पत्रों में उपर्युक्त छूटा हुआ अंश लिखा गया है।

ग्रंथ के अनेक स्थलों पर अक्षर, शब्द, पंक्तियाँ छूटी हुई हैं जिन्हें ग्रंथ के हाशिए पर लिखा गया है। पाठांतर भी हैं।

१०६. उत्तरकांड। देशी कागज। पत्र—४१। आकार—१३½ इंच लंबाई और ७½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१३। परिमाण (छंदों में—११६६। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८८३ वि०।

आदि

श्री गणेशाय नमः॥

केकीकंठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिन्हं
सौभाढ्यं पीतवस्त्रं शरसिज नयनं सर्वदा सुप्रसन्नं॥ १॥
पाणौ नाराच चापं कपिनिकरयुतं बंधुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानुकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामं॥ २॥
कौशलेंद्रपदकंजमंजुलौ कमलयोनिमहेशवंदितौ॥
जानुकीकरसरौजलालितौ चिंतकस्य मनभृंगसंगिनौ॥

॥ दोहा॥

रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग॥
जहं जहं सोचहि नारि नर कसतन राम वियोग॥
सगुन हौंहि सुंदर सकल मन प्रसंन्न सब केर॥
प्रभु आगमन जनाव जनु नगर रम्य चहु फेर॥
कौशल्यादिक मातु सब मन अनंद अस होई॥
आए प्रभु श्री अजुन जुत कहन चहत अस कोइ॥
भरत नयन भुज दच्छिणी फरकैहि बारंबार।
जानि सगुन मन हर्ष अति लागै करन विचार॥

अंत

॥ दो॥

मो सम दीन न दीन हित तुम समांन रघुबीर॥
अस विचारि रघुवंस मनि हरहु विषम भवभीर॥
कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दांम।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम॥

इति श्री राम चरित मानसे सकलकलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य वरनननाम अविरल भक्तिदातमं रामायन उत्तरकांड सप्तम सोपांन समाप्तं॥ संमत॥ १८८३॥ पौष वदी॥ ६॥ सनिवासरां॥ लिषतं वयांनै शुभ

कोसलेंद्रपदपंकज मंजुलं कोमलब्ज महेस वंदितौ ॥
जानकीकरसरोजललितौ चिंत्तकस्य मनभृंग संगिनौ ॥ २ ॥
कुंद इंदु बर गौरं सुंदरं ॥ अंबिकापतिमभीष्ट मंदिरं ॥
कारूनीक कलकंज लोचं नौमी संकरं मनमद मोचनं ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

रहा एक दिन अवधि कर अति आतुर पुर लोग ॥
जहां तहां सोचहि नारि नर क्रिस तन राम वियोग ॥ २ ॥

अंत

शोरठा

कामिहि नारि जीमी लोभीहि प्रीअ दाम ॥
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिअ लागहु मोहि राम ॥

इति श्री राम चरित्रे मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्र संपादिनोनाम उत्तरकांड समाप्तम् ॥ श्री संबत् ॥ १८७७ ॥ आषाढशुक्ल ॥ ८ ॥ बुधे ॥ तादिन पुस्तक समाप्तम् ॥ लिषितं यं मंगलमै रहा ॥ काशी मध्ये ॥ ईश्वरगंगे उत्तर भागे ॥ श्री रामचंद्रायनमः ॥ श्री मंगल-मस्तू ॥ श्री श्री श्रीरामो जयति श्री ॥

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल संवत् १८७७ वि० है । अंत में—'कामिहि नारि पिआरि ·········।' के बाद जो श्लोक—'यत्पूर्वं प्रभुना कृतं ·········।' होना चाहिए था उसे पुष्पिका के अंत में लिखा गया है। लिखावट से स्पष्ट है कि किसी दूसरे व्यक्ति ने उक्त श्लोक को बाद में जोड़ दिया है ।

'प्रभु रघुपति तजि सेइअ काही, मोही से सठ पर ममता जाही ।'
के बाद—'तुम्ह विग्यान रूप नहि मोहा ।
नाथ कीन्हि मो पर अति छोहा ।।''

से लेकर

• —''जाहि भजहि मन तजि कुटिलाई ।
राम भजे गति केहि नहि पाई ॥''—तक

लगभग दो—तीन पृष्ठ छूट है। पर ग्रंथ के अंत में कुछ पत्र अलग से जुड़े हुए हैं और उन्हीं पत्रों में उपर्युक्त छूटा हुआ अंश लिखा गया है।

ग्रंथ के अनेक स्थलों पर अक्षर, शब्द, पंक्तियाँ छूटी हुई हैं जिन्हें ग्रंथ के हाशिए पर लिखा गया है। पाठांतर भी हैं।

१०६. उत्तरकांड। देशी कागज। पत्र—४१। आकार—१३½ इंच लंबाई और ७½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१३। परिमाण (छंदों में—११६६। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १८८३ वि०।

आदि

श्री गणेशाय नमः ॥

केकीकठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपाब्जचिन्हं
सौभाढ्यं पीतवस्त्रं शरसिज नयनं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ १ ॥
पाणौ नाराच चापं कपिनिकरयुतं बंधुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानुकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामं ॥ २ ॥
कौशलेंद्रपदकंजमंजुलौ कमलयोनिमहेशवंदितौ ॥
जानुकीकरसरौजलालितौ चिंतकस्य मनभृंगसंगिनौ ॥

॥ दोहा ॥

रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग ॥
जहं जहं सोचहि नारि नर कसतन राम वियोग ॥
सगुन हौंहि सुंदर सकल मन प्रसंन्न सब केर ॥
प्रभु आगमन जनाव जनु नगर रम्य चहु फेर ॥
कौशल्यादिक मातु सब मन अनंद अस होई ॥
आए प्रभु श्री अजुन जुत कहन चहत अस कोइ ॥
भरत नयन भुज दच्छिणी फरकैहि बारंबार ।
जानि सगुन मन हर्ष अति लागै करन विचार ॥

अंत

॥ दो ॥

मो सम दीन न दीन हित तुम समांन रघुवीर ॥
अस विचारि रघुवंस मनि हरहु विषम भवभीर ॥
कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दांम ।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥

इति श्री राम चरित मानसे सकलकलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य वरनननाम अविरल भक्ति दातमं रामायन उत्तरकांड सप्तम सोपांन समाप्तं ॥ संमत ॥ १८८३ ॥ पौष वदी ॥ ६ ॥ सनिवासरां ॥ लिषतं वयांनै शुभ

स्थांन ॥ पाराऋषी गोत्र सनाढ्य पठनार्थ लाला जीतमल ॥ शुभं भुवात ॥ नृमलराम वांचै विचारै जिनकू राम राम डंडवत ।

विशेष ज्ञातव्य—लि० का० सं० १८८३ वि० है । ग्रंथ पूर्ण है । कहीं कहीं पाठ भेद है । अंतिम श्लोक—'यत्पूर्वं प्रभुना कृतं……' प्रस्तुत हस्तलेख में नहीं है ।

१०७. उत्तर कांड । देशी कागज । पत्र—६५ । आकार—११ इंच लंबाई और ६ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रतिपृष्ठ)—११ । परिमाण (छंदों में)—६२६ । खंडित (पत्र सं० ५, १८, १९, २० नहीं हैं ।) रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—सं० १८६१ वि० ।

आदि

श्री रामाय नमः ॥ अथ उत्तर कांड लषितेः ॥

केकीकंठाभनीलं सुरवरविलसुद्विप्रपादाब्जचिन्हं
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसंनं
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बंधुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरतिलकं पुष्पकारूढरामं ॥ १ ॥
कोशलेंद्र पदकंजमंजुलौ कमलजोनिमहेशवंदितौ ॥
जानकी करसरोजलालितौ चिंतकस्य मनभृंगसंगिनौ ॥ २ ॥
कुदेंदुवरगौरसुंदरं मंबिकापतिमभीष्टमंदिरं ॥
कारुणीककलकंजलोचनं नौमि शंकरमनंगमोचनं ॥ ३ ॥

दोहा

रहा ऐक दिन अवधि कर ॥ अति आतुर पुरलोग ॥
जहाँ तहाँ सोचहि नारि नर ॥ कृसतन राम वियोग ॥ १ ॥
सगुन होहि सुंदर सकल ॥ मन प्रसन्न सब केर ॥
प्रभु आगमन जनाव जनु ॥ नगर रम्य चहुँ फेर ॥ २ ॥

अंत

कांमिहि नारी पियारी जिमि ॥ लोभिहि प्रीय जिमि दांम ॥
तिमि रघुनाथ निरंतर ॥ प्रिय लागहु मोहि राम ॥

॥ श्लोक ॥

यत्पुर्वं प्रभुनाकृतं सुकविना श्रीशंभुना दुर्गमं ॥
श्रीमद्रामायणपदांब्जभक्तिमनिसं प्राप्यैव रामायन ॥

मत्वां तद्रघुनाथनाम निरतं लब्रध्वास्तमः शांतये ॥
भाषाबंधमिदं चकार तुलसिदास सततं मानसं ॥ ३६१ ॥
पुन्यं पापहरं सदा शीवकरं विज्ञान भक्ति प्रदायकं ॥
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमांबुपुरं शुभं ॥
श्रीमद्रामचरीत मानसमिदं भक्त्याच गायंति ये ॥
ते संसार पतंगघोरकिरनैर्दह्यंति नो मानव ॥ ३६३ ॥

इति श्री रामचरीत मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसने अविरल भक्ति संपादने नाम सप्तमो सोपान संपुर्ण ॥ सवंत ॥ १८६१ ॥ ना असो वदितथि त्रीज सोमवासरे भावनगर बंदर मध्ये समुद्र नापाजनेरस्ते रामनाथ तथा षारीया हनुमान ॥ गरीबदासजीनी जायगा मध्ये लिषितं साधु जानकी दास षदरपरना साधु पाठार्थि रावलज्ञाति ॥ विप्रइंद्रजी भाल मध्ये आंब-लीना ॥ जे वांचे सांभले तेने अमारो राम राम राम ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत प्रति में दोहों, चौपाइयों आदि के अतिरिक्त श्लोकों में भी पाठांतर हैं। लि० का० सं० १८६१ वि० है। ग्रंथ में कुल ६६ पत्र थे। बीच के (पत्र सं० ५, १८, १६, २०) पत्र गायब हैं।

१०८. उत्तरकांड। देशी कागज। पत्र—३४। आकार—११ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१५। परिमाण (छंदों में)—१२७५। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १६१४ वि०।

आदि

श्रीमते रामानुजाय नमः ॥
श्लोक ॥ केकिकंठाभनीलं सुर वर विलसद्विप्रपादाब्ज चिन्हं
सोभाढ्यं पीत वस्त्रं सरसिज नयनं सर्वदा सुप्रसंनं ॥
पाणौ नाराच चापं कपि निकर युतं बंधुना सेव्यमानं
नौमिड्यं जानकीशं रघुबरमनिशं पुष्पकारूढरामं ॥ १ ॥

कोशलेंद्र पद कंज मंजुलौ कोमलाब्ज महेश वंदितौ ॥
जानकी कर सरोज ललितौ चिंतकस्य मनंग भृंगिनौ ॥ २ ॥

कुंदेन्दुदर गौर सुंदरं अम्बिकापतिमभिष्टमंदिरं ॥
कारुणीक कल कंज लोचनं नौमि शंकरमनंग मोचनम् ॥ ३ ॥

दोहा ॥ रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग ॥
जहँ तहँ सोचहि नारि नर कृस तन राम वियोग ॥ १ ॥

सगुन होहि सुंदर सकल मन प्रसन्न सभ कर ॥
प्रभु आगमन जनाव जनु नगर रम्य चहु फेर ॥ २ ॥

कौशिल्यादि मातु सभ मन अनंद अस होइ ॥
आए प्रभु सिय अनुज जुत कहन चहत अस कोई ॥ ३ ॥

भरत नयन भुज दक्षिन फरकत बारहि बार ॥
जानि सगुन मन हर्ष अति लागे करन विचार ॥ ४ ॥

चौ० ॥ रहा एक दिन अवधि अधारा ॥ समुझत मन दुष भएउ अपारा ॥
कारन कवन नाथ नहिं आए ॥ जानि कुटिल किधौं मोहि बिसराए ॥

अंत

दोहा ॥ मो सम दीन न दीन हित तुम समान रघुबीर ॥
अस बिचारि रघुवंस मणि हरहु विषम भव भीर ॥२२४॥

कामिहि नारि पियारि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ॥
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥ २२५ ॥०॥

॥ श्लोक ॥ यत्पूर्वं प्रभुनाकृतं शुकविना श्री शंभुना दूर्गमं
श्री मद्राम पदाब्ज भक्तिमनिशं प्राप्यै तु रामायनं ॥
मत्वा तद्रुनाथ नाम निरतं स्वान्तस्तमःसान्तये
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम् ॥ १ ॥

पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं भक्तिप्रदं
माया मोह मलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम् ॥
श्री मद्राम चरित्र मानशमिदं भक्त्यावगाहंति ये
ते संसार पतंग घोर किरणैर्दह्यंति नो मानवाः ॥ २ ॥

इति श्री मद्रामचरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंशने अविरलि भक्ति संपादनी नाम सप्तमः सोपान कृत श्री गोसाई तुलसीदास उत्तरकांड संपूर्णम् ॥ शुभ सम्वत् ॥ १६१४ ॥ मधुमास कृष्णा द्वितीया सोमवार ॥ दशषत रामशरण रामानुजदास साकीन महतपाल ॥ लषावल श्री बाबु साहेब श्री बाबु राज कुमार सिंह जी मालिक महतपाल जिले गाजीपुर परगने षरीष ॥

दोहा ॥ राम सनेही राम गति राम चरण रति जाहि ॥
तुलसी फल जग जन्म को दियो विधाता ताहि ॥ १ ॥
श्री राम जी श्री सीता राम जी राम ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति सुस्पष्ट और स्वच्छ अक्षरों में लिखी गई है। अंतिम ३०-३४ पत्र मिल के बने बाँसी कागज पर लिखे गए हैं। प्रतिलिपिकर्ता रामशरण नामक कोई व्यक्ति हैं। यह प्रति गाजीपुर जनपद के निवासी बाबू राजकुमार सिंह ने लिखवाई थी।

स्थान स्थान पर पाठांतर भी हैं। दोहा, सोरठा, चौपाई के अतिरिक्त नाराच छंद, भुजंगप्रयात, हरगीत छंद का नाम है।

१०६. उत्तरकांड। देशी कागज। पत्र—३४। आकार—१५ इंच लंबाई और ६३/४ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ) - १३। परिमाण (छंदों में)—१३८१। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १६२२ वि०।

आदि

॥ श्री रामायनम् ॥

केकीकंठाभनीलं सुरबरविलसद्विप्रपादाब्जचिन्हं।
सौभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ १ ॥
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बंधुना सेव्यमानं ॥
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिसं पुष्पकारूढरामं ॥ १ ॥
कौशलेंद्रपदपंकजमंजुलौ कमलयोनिमहेसवंदितौ ॥
जानकीकरसरोजलालितौ चिंतकस्य मनभृंगसंगिनौ ॥ २ ॥
कुंदइंदुदरगौरसुदरं अंबिकापतिमभीष्टसिद्धिदं ॥
कारुणीककलकंजलोचनं नौमि शंकरमनंगमोचनं ॥ ३ ॥

दोहा

रहा एक दिन अवधि कर अति आतुर पुर लोग।
जहाँ तहाँ सोचहिं नारि नर कृश तन राम वियोग ॥ १ ॥
सगुन होहिं सुंदर सकल मन प्रसन्न सब केर ॥
प्रभु आगमन जानिव जनु नगर रंम्य चहु फेर ॥ २ ॥

कौशल्यादि मातु सब मन अनंद अस होई ॥
आएउ प्रभु सीय अनुज जुत कहन चहत अब कोई ॥
भरत नयन भुज दक्षिन फरकत बारहिं बार ॥
जानि सगुण मन हरष अति लागे करण विचार ॥७॥

अंत

॥ दो० ॥

मो सन दीन न दीन हित तुम समान रघुवीर ।
अस विचारि रघुवंसमनि हरहु विषम भव भीर ।
कामिहि नारि पियारी जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरंत(र) प्रिय लागहु मोहि राम ॥ १३० ॥

॥ श्लो० ॥

यत्पूर्वं प्रभुना कृतं सुकविना श्रीसंभुना दुर्गमं ॥
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिसं प्राप्त्यैव रामायणं ॥
मत्वा तद्रघुनाथनामनिरत स्वांतस्तमः शांतये ॥
भाषाबंधमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसं ॥ १ ॥
पुन्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञान भक्तिप्रदं ।
मायामोहभयाप सुविमलं प्रेमांबुपूरं सुभं ॥
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहंतिये ।
ते संसारपतंगघोरकिरणैर्दंशति नो मानवाः ॥ २ ॥

इति श्री रामचरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने सत्य सप्तमो सोपानः ॥ ७ ॥ संवत् १६२२ मिति चैत्र वदि ॥ ३० ॥ भृगो वासरे लिखितं मातेराम मिश्र जी शेषसाइ मध्ये श्री लक्ष्मीनारायन .... संनिधौ समाप्त उत्तर कांड ॥ ७ ॥

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल सं० १६२२ वि० है। पाठांतर भी है। उदाहरणार्थ निम्नांकित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग । (प्र०)
रहा एक दिन अवधि कर अति आतुर पुर लोग । (ह०)
जहँ तहँ सोचहि नारि नर कृसतन राम बियोग । (प्र०)
जहाँ तहाँ सोचहिं नारि नर कृशतन राम वियोग । (ह०)
आभीर जमन किरात खस स्वपचादि अति अघरूप जे । (प्र०)
अभीर जषन किरात षग स्वपचादिक अति अघरूप ते । (ह०)

११०. उत्तरकांड। देशी कागज। पत्र--१३४। आकार—७३/४ इंच लंबाई और ५ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१२। परिमाण (छंदों में)—२६१३। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १६३१ वि०।

आदि

श्री गनेसय नम श्री सरसुती देवी न्म श्री परम गुरमे न्म ॥
अथा उत्तरकांड तुलसी क्रत लिषते ॥
रहा येक दिन अवधि कर अति अरत पुर लोग ॥
जह तह सोचहि नार नर क्रस तन राम वियोग ॥
सुगुन हौहि सुंदर सकल मन प्रसंन सब केर ॥
प्रभ आगमन जनाइ जनु नगर रंम चहु फेर ॥
कौसिल्यादक मात्ति सब मन अनंद अस होइ ॥
आये प्रभ सिय अनुज जुत कहन चहत अब कोइ ॥
भरथ नयन भुज दंछि फरकत बारहि बार ॥
जान सुगुन मन हरष अति लागे करन विचार ॥

अंत

कामी नार प्यार जिमि लोभी प्रिय जिमि दाम ॥
तिम रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मुहि राम ॥
असलोक ॥ यत पुर्वं प्रभुना क्रतं सुकविना संभ प्रसादा दुर्गम ॥
श्रीमदाम पज्य भगति प्रदं माया मोह मलताय ॥
सुच मल प्रैमाबुधुर·········· सुभं ॥
श्री रामद्राम चरित मानसमिदं भक्तयो बगाहंत ये ॥
ते संसार पतंग घोर किरसपादै[illegible] नो [illegible]ानव ।

इत श्री राम चरित्र मानसे सकलि कल[illegible] ॥ अवरल भगति विमुल वैराग्य संपादनीना ॥ म सपतमो [illegible]ति श्री उत्तरकांड संपुरन स्मापाता ॥ मीती चैत सुदी [illegible]वौर ॥ संवद ॥ १६३१ दसकत बैनी परसाद जयराके [illegible] तिवारी सैनापति मलिपुरावलिन की ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति महत्वपूर्ण न[illegible]

कौशल्यादि मातु सब मन अनंद अस होई ॥
आएउ प्रभु सीय अनुज जुत कहन चहत अब कोई ॥
भरत नयन भुज दक्षिन फरकत बारहिं बार ॥
जानि सगुण मन हरष अति लागे करण विचार ॥७॥

अंत

॥ दो० ॥

मो सन दीन न दीन हित तुम समान रघुवीर ।
अस विचारि रघुवंसमनि हरहु विषम भव भीर ।
कामिहि नारि पियारी जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरंत(र) प्रिय लागहु मोहि राम ॥ १३० ॥

॥ श्लो० ॥

यत्पूर्वं प्रभुना कृतं सुकविना श्रीसंभुना दुर्गमं ॥
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिसं प्रार्थैव रामायणं ॥
मत्वा तद्रघुनाथनामनिरत स्वांतस्तमः शांतये ॥
भाषावंधमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसं ॥ १ ॥
पुन्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञान भक्तिप्रदं ।
मायामोहभयाप सुविमलं प्रेमांबुपूरं सुभं ॥
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं मक्तयावगाहंतिये ।
ते संसारपतंगघोरयौदंशति नो मानवाः ॥ २ ॥

इति श्री रामचरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने सत्य सप्तमो सोपानः ॥ ७ ॥ संवत् १६२२ मिति चैत्र वदि ॥ ३० ॥ भृगो वासरे लिखितं मातेराम मिश्र जी शेषसाइ मध्ये श्री लक्ष्मीनारायन.... संनिधौ समाप्त उत्तर कांड ॥ ७ ॥

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल सं० १६२२ वि० है। पाठांतर भी है। उदाहरणार्थ निम्नांकित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग । (प्र०)
रहा एक दिन अवधि कर अति आतुर पुर लोग । (इ०)
जहँ तहँ सोचहि नारि नर कृसतन राम बियोग । (प्र०)
जहाँ तहाँ सोचहिं नारि नर कृशतन राम वियोग । (इ०)
आभीर जमन किरात खस स्वपचादि अति अघरूप जे । (प्र०)
अभीर जषन किरात षग स्वपचादिक अति अघरूप ते । (इ०)

११०. उत्तरकांड। देशी कागज। पत्र--१३४। आकार—७½ इंच लंबाई और ५ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१२। परिमाण (छंदों में)—२६१३। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १६३१ वि०।

आदि

श्री गनेसय नम श्री सरसुती देवी न्म श्री परम गुरमे न्म ॥
अथा उत्तरकांड तुलसी क्रत लिषते ॥
रहा येक दिन अवधि कर अति अरत पुर लोग ॥
जह तह सोचहि नार नर कस तन राम वियोग ॥
सुगुन हौहि सुंदर सकल मन प्रसंन सब केर ॥
प्रभ आगमन जनाइ जनु नगर रंम चहु फेर ॥
कौसिल्यादक माति सब मन अनंद अस होइ ॥
आये प्रभ सिय अनुज जुत कहन चहत अब कोइ ॥
भरथ नयन भुज दंछि फरकत बारहि बार ॥
जान सुगुन मन हरष अति लागे करन विचार ॥

अंत

कामी नार प्यार जिमि लोभी प्रिय जिमि दाम ॥
तिम रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मुहि राम ॥
असलोक ॥ यत पुर्व प्रभुना क्रतं सुकविना संभ प्रसादा दुर्गम ॥
श्रीमदाम पज्य भगति प्रदं माया मोह मलताय ॥
सुच मल प्रैमाबुधुर.......... सुभं ॥
श्री रामद्राम चरित मानसमिदं भक्तयो बगाहंत ये ॥
ते संसार पतंग घोर किरसपादैदवतिनो मानव ।

इति श्री राम चरित्र मानसे सकलि कलुष विपासने ॥ अवरल भगति विमुल वैराग्य संपादनीना ॥ म सपतमो सोपान इति श्री उत्तरकांड संपुरन स्मापाता ॥ मीती चैत सुदी । १५ ॥ बुधवौर ॥ संवद ॥ १६३१ दसकत बैनी परसाद जयराके पोथी पं श्री । तिवारी सैनापति मलिपुरावलिन की ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति महत्वपूर्ण नहीं है।

१११. उत्तरकांड। देशी कागज। पत्र—४६। आकार—११½ इंच लंबाई और ६ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—११। ग्रंथ कहीं प्रकाशित हो चुका है या नहीं—छापेखाने मुहल्ला मदैनी, काली महल के पास (काशी)। परिमाण (छंदों में)—११७६। पूर्ण (केवल अंतिम पत्र थोड़ा खंडित)। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। मुद्रणकाल—१६३६ वि०।

आदि

श्री गणेशायनमः॥ श्लोक॥

केकीकंठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्ज चिन्हं
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिज नयनं सर्वदा सुप्रसन्नं
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बंधुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामं १
कोशलेंद्रपदकंजमंजुलौ कोमलांबुजमहेशवंदितौ
जानकीकरसरोजलालितौ चिंतकस्य मनभृंगसंगिनौ २
कुंदइंदुदरगौर सुदरं अंबिकापतिमीष्टसिद्धिदं
कारुणीककलकंज लोचनं नौमि शंकरमनंगमोचनं ३

दोहा

रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग
जहँ तहँ सोचहिँ नारि नर कृस तन राम वियोग
सगुन होहिँ सुंदर सकल मन प्रसन्न सब केर
प्रभु आगमन जनाव जनु नगर रम्य चहुँ फेर
कौसल्यादि मातु सब मन अनंद अस होइ
आयेउ प्रभु सिय अनुज जुत कहन चहत अब कोइ
भरत नयन भुज दच्छिन फरकत बारहिँ बार
जानि सगुन मन हरष अति लागे करन विचार ४

चौपाई

रहेउ एक दिन अवधि अधारा। समुझत मन दुष भएउ अपारा।
कारन कवन नाथ नहिं आएउ। जानि कुटिल किधौं मोहि बिसराएउ।

मध्य

चौपाई

निसिचर निकर मरन बिधि नाना, रघुपति रावन समर बषाना
रावन वध मंदोदरि सोका, राज विभीषन देव असोका

सीता रघुपति मिलन बहोरी, सुरन्ह कीन्ह अस्तुति कर जोरी
पुनि पुष्पक चढि कपिन्ह समेता, अवध चले प्रभु कृपा निकेता
जेहि बिधि राम नगर निज आए, बायस बिसद चरित सब गाए
कहेसि बहोरि राम अभिषेका, पुर बरनन नृप नीति अनेका
कथा समस्त भुसुंड बषानी, जो मै तुम्ह सन कही भवानी
सुनि सब राम कथा षगनाहा, कहत बचन मन परम उछाहा

सोरठा

गएउ मोर संदेह सुनेउँ सकल रघुपति चरित
भएउ राम पद नेह तव प्रसाद बायस तिलक
मोहि भएउ अति मोह प्रभु बंधन रन महँ निरषि
चिदानंद संदोह राम विकल कारन कवन ।। ६८ ।।

अंत

इति श्री रामचरित्र मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसने विमल वैराग्य संपादिनो नाम सप्त···पान ७ समाप्त ।। श्री गणेशाय नमः ।।

अथ आरती ।।
निरखि स्वरूप सिया रघुवर ···
छवि नहि जात बखानी
श्री आरति करत कौशिला रानी
कनक थार गज मानिक मुक्ता भरे प्रेम···ठाढी
मारयौ मानसकल भूपन को महिमा देव बखानि
श्री आरति करत कौशिला रानी
तोरयौ ध···जनक जग पूरन तीन लोक भय मानी
जनक राय की लज्जा राखी परशुराम हित मानी
श्री आरति (क) रत कौशिला रानी
सुर पुर नारि मोद मङ्गल भर प्रेम उमगि हरषानी
नाचत नभ अपसरा मुदित···बरषि सुमन हरषानि
श्री आरती करत श्री आरति करत कौशिला रानी
कनक रतन मनि जडित सिंहासन बै··सारङ्गपानी

मातु कौशिला करत आरती निरखि रूप हरषानी १
दसरथ सहित अवधपुर वा···उच्चरत जय जय बानी
तुलसिदास अविच्चल यह जोरी भक्ति अभय वरदानि
श्री आरति करत कौशिला रानी ॥ ० ॥
अथ दूसरी आरती ॥ ० ॥

आरती श्री रामायन जी की ॥
कीरत कलित ल (लित) सिय पिय की,
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद बालमीक विज्ञान बिसारद,
सुक सनकादि सेष अरु (सा) रद
बरनि पवनसुत कीरति नीकी १
गावत वेद पुरान अष्टदस, छवो सास्त्र सब ग्रंथन को रस
···जन धन सन्तन को सर्बस सार अंस सम्मत सबही की २
गावत सन्तति सम्भु भवानी अब घट···व मुनि विज्ञानी
व्यास आदि कवि बर्ज बखानी, काग भसुंड गरुड के हिय की ३
कलिमल हरनि···षय रस फीकी, सुभग सिङ्गार भक्ति युवती की
दलन रोग भव भूर अमी की, तात मातु सब विधि तुलसी की ४

इति श्री आरती संपूर्णम् शुभमस्तु ॥ ० ॥ श्री काशी विश्वनाथ पुरी मे दिवाकर छ (ापे) खाने मे पोथी रामायन की छपा शिवचरन के यहाँ साकीन मुहल्लै भदइनी कालौं महल के पाश छ (पी) जिसको लेना होय चाननी चौक मे शिवचरन के दुकान पर मीलैगा वाः महीपनारायन पांडे शोधने वाले पंडित बटुक ॥ श्री सम्बत् १६३६ मीती भाद्रपद कृष्ण ६ वार शुक्रवार ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ लाथो में छपा है । मुद्रण काल सं० १६३६ वि० है । प्रकाशक ने अपना पूरा पता आदि दिया है ।

इस प्रति में जो पहली आरती दी गई है वह अन्यत्र पोथियों में नहीं मिलती । इसे भी गोस्वामी जी ने ही लिखा था ।

"श्री काशी विश्नाथपुरी में दिवाकर छा (पे) खाने में पोथी रामायन की छपा शिवचरन के इहाँ साकीन मुहल्लै भदइनी काली महल

के पाश छ···जिस्को लेना होय चाननी चौक मे शिवचरन के दुकान पर मीलैगा बाः महीपनारायन पांडे शोधनेवाले पंडित बटुक ।।"

पाठ शुद्ध है।

११२. उत्तरकांड। देशी कागज। पत्र—५६। आकार—८½ इंच लंबाई और ४½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१०। परिमाण (छंदों में)—१२५४। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

ॐ श्री राम कृ (पा) लो जयति ।। अथ उत्तर कांड लिख्यते ।।

।। श्लोक ।।

ॐ केकीकंठाभनीलं सुरवरविप्रलसद्विप्र पादाब्जचिन्हं ।।
सौभाग्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नं ।।
पानौ नाराचचापं कपनकर युतं बंधुना सेवमानं ।।
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामं ।। १ ।।
कौशलेंद्रपदकंजमंजलौ कोमलावजमहेशवंदितौ ।।
जानकीकर सरोजलालतौ चिंतकस्य मनभृंगसंगिनौ ।। २ ।।
कुंदइंदुवर गौर सुंदरं अंबिकापतिमभीष्ट मंदिरं ।।
कारुणीक कल कंज लोचनं नौमि शंकरमनंगमोचनं ।। ३ ।।

।। दोहा ।।

रहा एक दिन अवध कर अति आरत पुर लोग
जह तह सोचे नारि अस तन राम वियोग

।। दोहा ।।

सगुन होहि सुंदर सकल मन प्रसंन सभ केर ।।
प्रभ आगमन जनाव जन नगर रम्य चौहु फेर

।।दोहा ।।

कौसल्यादि मात सभ मन आनंद अस होइ
आए प्रभ श्री अनुज जुत कहिन चहित अब कोइ

अंत

सोई सर्वज्ञ गुनी सोइ ज्ञाता ।। सोइ महि मंडन पंडित दाता ।।
धर्म परायन सोइ कुल त्राता। रामचरन जाकर मन राता ।।

नीति निपुन सोइ परम सयाना । श्रुति सिद्धांत नीक तेहि जाना ॥
सोइ कवि कोविद सोइ रनधीरा । जो छल छाडि भजै रघुबीरा ॥
धन्य देश जो जहं सुरसरी । धन्य नारि पतिब्रत अनुसरी ॥
धन्य सो भूप नीति जो करई । धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई ॥
सो धनु धन्य प्रथम गति जाकी । धन्य पुन्यरत मति सोइ पाकी ॥
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा । धन्य जन्म द्विज भगति अभंगा ॥

॥ दोहा ॥

सो कुल धन्य उमा सुनु जगत पूज्य सुपुनीत ॥
श्री रघुबीर परायन जेहि नर उपज बिनीत ॥ १२७ ॥

मति अनुरूप कथा मैं भाषी । यद्यपि प्रथम गुप्त करि राषी ॥
तब मन प्रीति देषि अधिकाई । तौ मैं रघुपति कथा सुनाई ॥
एइ नहि कहिय सठहि हठसीलहि । जौ मन लाइ न सुन हरि लीलहि
कहिअ न लोभिहि कोधिहि कामिहि । जो न भजै सचराचर स्वामिहि॥
द्विज द्रोहिहि न सुनाइअ कबहू । सुरपति सरिस होइ नृप जबहू ॥
रामकथा के तेइ अधिकारा । जिन्हके संत संगति अति प्यारा ॥
गुर पद प्रीति नीति रत जेई । द्विज········

× × ×

विशेष ज्ञातव्य— पत्र सं० ५१ और अंत का भाग खंडित है। अंतिम पत्र खंडित होने से लिपिकाल का भी उल्लेख नहीं मिला। लिपि अत्यंत सुंदर है। ग्रंथ के प्रारंभ में एक सुंदर चित्र भी बनाया हुआ है। पाठ शुद्ध है पर कहीं कहीं पाठांतर भी है।

२११. उत्तर कांड। देशी कागज। पत्र—११४। आकार—८३/४ इंच लंबाई और ५१/२ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—८। परिमाण (छंदों में)—२३६४। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

चौपई

·······································रन विचार
रहेउ एक दिन अवधि अधारा। सुमुझत मन दुख भयेउ अपारा
कारण कवन नाथ नहि आएउ। जानि कुटिल किधौं मोहि बिसरायेउ

अहो धन्य लछमन बड भागी । राम पदारविंद अनुरागी
कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा । ताते नाथ संग न लीन्हा
जो करनी समुझै प्रभु मोरी । नहि निस्तार कलप सत कोरी
जन अवगुन प्रभु मान न काई । दीनबंधु अति मृदुल सुभाई
मोरे जीव भरोस दृढ सोई । मिलिहहि राम सगुन सुभ होई
बीतें अवधि रहइ जो प्रणा । अधम कवन जग मोहि समाना

॥ दोहा ॥

राम बिरह सागर महं भरत मगन मन होत
विप्र रूप धरि पवन सुत आय गयेउ जनु पोत
बैठे देखि कुसासन जटा मुकट कृस गात
राम राम रघुपति जपत श्रवत नयन जलजात १

अंत

॥ चौपाई ॥

यह सुभ संभु उमा संवादा । सुष संपादन समन बिषादा
भव भंजन गंजन संदेहा । जनरंजन सज्जन प्रिय एहा
राम उपासक जे जग मांहि । एह सम प्रिय तिनके कछु नाहि
रघुपति कृपा जथामति गावा । मैं यह पावन चरित सुहावा
एहि कलिकाल न साधन दुजा । जोग जज्ञ जप तप व्रत पूजा
रामहि सुमरिए गाइए रामहि । संतत सुनीऐ राम गुन ग्रामहि
जासु पतित पावन बड बाना । गावहि कवि श्रुति संत पुराना
ताहि भजहि मन तजि कुटिलाई । राम भजे गति केहि नहि पाई

छंद

पाई न केहि गति पतीत पावन राम भजि सुनुं सठ मना
गनका अजामेल व्याधि गीध गजादि खल त्यारे घना
आभीर जवन किरात खल स्वपचादि अति अघरुप जे
कहि नाम वारक तेपी पावन होहि रा⋯⋯⋯⋯

विशेष ज्ञातव्य—प्रारंभ में पत्र सं० १ और अंतिम पत्र खंडित हैं। हाशिए पर पत्र संख्याएँ पड़ी हुई हैं, जिनमें पत्र सं० ६५ के बाद ६६ होना चाहिए था—नहीं है परंतु छंद आदि का क्रम ठीक है। लि० का० अज्ञात है। इस प्रति का पाठ शुद्ध है। कहीं कहीं लिपिकर्त्ता के दोष से पाठ-भेद या अशुद्धियाँ प्रतीत होती हैं।

११४. उत्तरकांड । देशी कागज । पत्र—५१ । आकार—११ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई । पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—२२ । परिमाण (छंदों में)—६१७ । खंडित । रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी । लिपिकाल—अज्ञात ।

आदि

अथ उत्तरकांड रामायन लिष्यते ॥ श्लोक ॥
केकीकंठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिन्हं ॥
सोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बंधुना सेव्यमानं ॥
नौमीड्यं जानुकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामं ॥ १ ॥
को (श) लेंद्रपदकंज मंजुलौ कोमलांबुज महेसवंदितौ ॥
जानकीकरसरोजलालितौ चिंतकस्य मनभृंगसंगिनौ ॥ २ ॥
कुंदइंदुदरगौरसुंदरं अंबिकापतिमभीष्ट मंदिरं ॥
कारुनीककलकंज लोचनं नौमि शंकरमनंगमोचन ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

रहा एक दिन अवधि कर्अति आरत पुर लोग ॥
जह तह सोचहि नारि नर क्रिस तन राम वियोग ॥ १ ॥
सगुन होंहि सुंदर सकल मन प्रसन्न सब केर ॥
प्रभु आगमन जनाव जनु : नग्र रम्य चहुँ फेर ॥ २ ॥
कौशल्यादि मातु सब मन अनंद अस होई ॥
आए प्रभु सिय अनुज जुत कहन चहत अस कोई ॥ ३ ॥

अंत

कामिहि नारि पियारि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ॥
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥१३२॥

॥ श्लोक ॥

यत्पूर्वं प्रभुनाकृतं सुकविना : श्री संभुना दुर्गमं ॥
श्री मद्रामपदाब्ज भक्तिमनिसं प्राथैंव रामायणम् ॥
नत्वा तद्रघुनाथ नामनिरतः स्वांतस्तम शांतिये ॥
भाषाबंधमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसं ॥ १ ॥
पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञान भक्ति प्रदम् ॥
माया मोहभयापहं सुविमलं प्रेमांबुपूरं शुभं ॥

श्रीमद्रामचरितमानसमिदं भक्त्यावगाहंति ये ॥
ते संसारपतंगघोरकिरणैर्दह्यंति नो मानवा ॥ २ ॥
अतुलित बलधामं स्वर्ण शैलाभदेहं ॥
दनुजवन कृसानुं ज्ञाननामाग्रगण्यं ॥
सकल गुण निधानं वानरानाम(धी)शं ॥
रघुपतिवर दूतं वातजातं नमामि ॥ ३ ॥

इति श्री उत्तरकांडे तुलसीदासेन कृतं सप्तमो सोपान ॥ ७ संमपूर्ण ॥ कांड दोय २ ॥ लंका ॥ उतर ॥

विशेष ज्ञातव्य—लि० का० नहीं दिया गया है। प्रस्तुत प्रति के साथ एक जिल्द में लंका कांड भी है जिसमें प्रस्तुत ग्रंथ उत्तरकांड का एक पत्र ग्रंथ सिलते समय चला गया है और लंकाकांड का पत्र इस प्रति में आ गया है। कहीं कहीं पाठांतर और अशुद्धियाँ भी हैं। लिपिकर्त्ता के दोष के कारण बहुत सी छूटे भी हैं।

११५. उत्तरकांड। पत्र—२२। देशी कागज। आकार—७ इंच लंबाई और ५ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१०। परिमाण (छंदों में)—३१६। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

× × ×

॥ दोहा ॥

तातै येह तन मोहि प्रिय भयेउ राम पद नेहु ॥
निज प्रभु दरसन पायेउ गयेउ सकल संदेहु ॥
भक्ति पछ्छ हढ करि रहेउ दिन्ह महामुनि श्राप ॥
मुनि दुर्ल्लभ वर पायेउ देष (हु) भजन प्रताप ॥

चौपाइ

जे अस भक्ति जानि परिहरही। केवल ग्यान हेतु श्रम करही ॥
ते जड कामधेनु गृह त्यागी। खोजत आक फीरहि पये लागी ॥
सुनु षगेस हरि भक्ति बिहाइ। जो सुष चाहहीं आन उपाइ ॥
ते सठ महा सिंधु बिनु तरनि। पैरि पार चाहंही जड करनी ॥
सुनि भुसुंड के बचन भवानी। बोले गरुड हरषि मृदु बानी ॥

११४. उत्तरकांड। देशी कागज। पत्र—५१। आकार—११ इंच लंबाई और ७ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—२२। परिमाण (छंदों में)—६१७। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

अथ उत्तरकांड रामायन लिष्यते ॥ श्लोक ॥
केकीकंठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिन्हं ॥
सोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बंधुना सेव्यमानं ॥
नौमीड्यं जानुकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामं ॥ १ ॥
को (श) लेंद्रपदकंज मंजुलौ कोमलांबुज महेसवंदितौ ॥
जानकीकरसरोजलालितौ चिंतकस्य मनभृंगसंगिनौ ॥ २ ॥
कुंदइंदुदरगौरसुंदरं अंबिकापतिमभीष्ट मंदिरं ॥
कारुनीककलकंज लोचनं नौमि शंकरमनंगमोचन ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

रहा एक दिन अवधि कर्अति आरत पुर लोग ॥
जह तह सोचहि नारि नर क्रिस तन राम वियोग ॥ १ ॥
सगुन हौहि सुंदर सकल मन प्रसन्न सब केर ॥
प्रभु आगमन जनाव जनु: नग्र रम्य चहुँ फेर ॥ २ ॥
कौशल्यादि मातु सब मन अनंद अस होई ॥
आए प्रभु सिय अनुज जुत कहन चहत अस कोई ॥ ३ ॥

अंत

कामिहि नारि पियारि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ॥
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥१३२॥

॥ श्लोक ॥

यत्पूर्वं प्रभुनाकृतं सुकविना: श्री संभुना दुर्गमं ॥
श्री मद्रामपदाब्ज भक्तिमनिसं प्राप्तैव रामायणम् ॥
नत्वा तद्रघुनाथ नामनिरतः स्वांतस्तम शांतिये ॥
भाषाबंधमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसं ॥ १ ॥
पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञान भक्ति प्रदम् ॥
माया मोहभयापहं सुविमलं प्रेमांबुपूरं शुभं ॥

श्रीमद्रामचरितमानसमिदं भक्त्यावगाहंति ये ॥
ते संसारपतंगघोरकिरणैर्दह्यंति नो मानवा ॥ २ ॥
अतुलित बलधामं स्वर्ण शैलाभदेहं ॥
दनुजवन कृसानुं ज्ञाननामाग्रगण्यं ॥
सकल गुण निधानं वानरानाम(धी)शं ॥
रघुपतिवर दूतं वातजातं नमामि ॥ ३ ॥

इति श्री उत्तरकांडे तुलसीदासेन कृतं सप्तमो सोपान ॥ ७ संमपूर्ण ॥ कांड दोय २ ॥ लंका ॥ उतर ॥

विशेष ज्ञातव्य—लि० का० नहीं दिया गया है। प्रस्तुत प्रति के साथ एक जिल्द में लंका कांड भी है जिसमें प्रस्तुत ग्रंथ उत्तरकांड का एक पत्र ग्रंथ सिलते समय चला गया है और लंकाकांड का पत्र इस प्रति में आ गया है। कहीं कहीं पाठांतर और अशुद्धियाँ भी हैं। लिपिकर्त्ता के दोष के कारण बहुत सी छूटे भी हैं।

११५. उत्तरकांड। पत्र—२२। देशी कागज। आकार—७ इंच लंबाई और ५ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१०। परिमाण (छंदों में)—३१६। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

× × ×

॥ दोहा ॥

तातै येह तन मोहि प्रिय भयेउ राम पद नेहु ॥
निज प्रभु दरसन पायेउ गयेउ सकल संदेहु ॥
भक्ति पक्ष दृढ करि रहेउ दिन्ह महामुनि श्राप ॥
मुनि दुर्ल्लभ वर पायेउ देष (हु) भजन प्रताप ॥

चौपाइ

जे अस भक्ति जानि परिहरही। केवल ग्यान हेतु श्रम करही ॥
ते जड कामधेनु ग्रह त्यागी। खोजत आक फीरहि पये लागी॥
सुनु षगेस हरि भक्ति बिहाइ। जो सुष चाहहीं आन उपाइ ॥
ते सठ महा सिंधु बिनु तरनि। पैरि पार चाहंही जड करनी ॥
सुनि भुसुंड के बचन भवानी। बोले गरुड हरषि मृदु बानी ॥

तव प्रसाद प्रभु मम उर माही। संसय सोक कछुक भ्रम नाहीं ॥
सुनेउ पुनित राम गुन ग्रामा। तुम्हरि कृपा लहेउ विश्रामा ॥

अंत

॥ दोहा ॥

मो सम दीन न दीन हीत तुम्ह समान रघुवीर ॥
अस विचारी रघुवंस मनि हरहु वि (षम) भवभीर ॥
कामिहि नारि पियारि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ॥
तिमि रघुवीर निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥

॥ छंद ॥

भाषाबंधमिदं चकार तुलसिदास सतत मानसं ॥
पुन्यकरं पापहरं सीवकरं विज्ञान भक्ति प्रदायकं ॥
मायामोह मलापहं सुविमलं प्रेमावापूरं शुभं ॥
श्री रामचरितमानसमिदं भगवत्यावगाहतं ॥ २६ ॥

इति श्री रामचरित्रमानसे सकलकलिकलुषविध्वंशने अविरल हरिभक्ति संपादनी नाम सपतमो सोपान संपूर्ण जैसा श्याही शींगरफ आदरस मिला तैसा लिषाई ॥ १ ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ आदि से खंडित है। लगभग ११ दोहे नहीं हैं। लिपिकाल अज्ञात है। पाठांतर भी हैं। जहाँ तहाँ लिपिकर्त्ता की अशुद्धियाँ भी दिखाई पड़ती हैं। परंतु वह स्पष्टवादी था। इस संबंध में लिपिकर्ता ने स्पष्ट शब्दों में अंत की पुष्पिका में लिखा है—

"......जैसा श्याही शींगरफ आदरस मिला तैसा लिषाई ॥ १ ॥" उसने नाम आदि भी नहीं लिखा है।

११६. उत्तरकांड। देशी कागज। पत्र—६१। आकार—६ इंच लंबाई और ६½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—२२। परिमाण (छंदों में)—१००६। खंडित। रूप—प्राचीन। लिपि—कैथी मिश्रित नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

श्री गनस जी सहाए
श्री सरसुती जी सहाए

श्री हनुमान जी सहाय

श्री पोथी उतरकांड कथा लीषते

॥ दोहा ॥

रहा एक दीन अवधी कर : अती आरत पुर लोग :
जहा तहा सोचही नारी नर : क्रीष तन राम बीओग :
सगुन होही सुंदर सकल : मन प्रसंन्य सब केर :
प्रभु आगवन जनाव जनु ; नगर रम्य चहुफेर :
कौसील्यादी मातु सब : मन अनंद अस होइ :
आए प्रभु सीअ अनुज जुत : कहन चहत अब कोइ :
भरत नएन भुज दछीन : फरकत बारही बार :
जानी सगुन मन हरष अति : लागे करन बीचार :

चौपइ

रहा एक दिन अवधी अघारा । समुझत मन दुष भएउ अपारा
कारन कवन नाथ नही अएउ । जानी कुटील प्रभु मोही बीसराएउ

अंत

चौपइ

सुनहु तात एह अकथ कहानी । समुझत बनै न जाइ बषानी
इस्वर अंस जीव अबीनासी । चेतन अमल सहज सुषरासी
सो माआ बस भएउ गोसांइ । बँधौ कीर मरकट की नाइ
जड चेतन्य ग्रंथ परी गाइ । जदपी म्रीथा छुटत कठीनाइ
तब तै जीव भएउ संसारी । छुट नी ग्रंथ नी होइ सुषारी
सुती पुरान बहु कहे उपाइ । छुट न अधीक अधीक उरझाइ
जीव ह्रदए तम मोहं बीसेषी । ग्रंथ छुटी कीमी परै न देषी
अस संजोग इस जब करइ । तबहु कदाचीत सो नीरवरइ
सातीक सरधा धेनु सुहाइ...... ।

× × ×

बिशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है । पत्र सं० १ के बाद पत्र सं० ६८ गया है जो सिलाई करते समय पत्र उलटा सिल जाने से ही ऐसा हो गया है । पत्र सं० ११ खंडित है । अंतिम पत्र सं० ६१ के बाद के पत्र उपलब्ध

नहीं हैं। ग्रंथ का अंतिम भाग खंडित होने से लिपिकाल का पता नहीं चला।

११७. उत्तरकांड। देशी कागज। पत्र—६७। आकार—८ इंच लंबाई और ५½ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—२१। परिमाण (छंदों में)—११४३। खंडित। रूप—नागरी। लिपि—कैथी और नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

श्री गणेशाय नमः
श्री हनुमतये नमः
श्री दुर्गादेव्यै नमः
पोथी उत्तरकाण्ड

रहा ऐक दिन अवधि कर। अति आरत पुर लोग :
जहँ तहँ सोचहि नारि नर। कृस तन राम वियोग :

सगुन होहि सुंदर सकल। मन प्रसंन सब केर :
प्रभु आगवन जणाव जनु। नग्र रम्य चहु फेर : *

कौसिल्यादि मातु सब : * : मन अति आनन्द होए :
आऐ प्रभु सिय अनुज जुत : कहन चहत अब कोऐ :

भरत नयन भुज दछिन : फरकत बारहि बार : *
जानि सगुन मन हरष अति : लागे करन बिचार :

अंत

कहेउ ग्यान सीध्यांत बुझाइ। सुनहु भग्ती मनी कै प्रभुताइ
राम भग्ती चीन्तामनी सुंदर। बसै गरुर जाके उर अंतर
परम प्रकास रूप दीन राती। नही तहां चहीअ दीआ घीत बाती
मोह दरीद्र नीकट नही आवा। लोभ बात नही ताही बुझावा
प्रबल अबीद्या तम मीटी जाइ। हारही सकल सुलभ समुदाइ
षल कमादी नीकट नै जाही। बसै भग्ती जाके उर माही
गरल सुधा सम अरी हीत होइ। तेही मनी बीनु सुष पाव न कोइ
ब्यापही मानस रोग न भारी। जीन्ह के बस सब जीव दुषारी

राम भग्ती मनी उर बस जाके। दुष लवलेस न सपनेहु ताके
चतुर सीरोमनी ते जग माही। बसै भग्ती जाके उर माही

× × ×

दोहा

ब्रह्म पयोनीधी मंदर: ग्यान संत सुर आही
कथा सुधा थम काढहि भग्ती मधुरता जाही
बीरती चर्म असी ग्यान मद लोभ मोह मद रीपु मारी
जो पाइ सो हरी भग्ती देषु षगेस बीचारी

जो सप्रेम बोलेउ षग राउ। जो कृपाल मोहि उपर भाउ
अब मोही नीज कींकर करी जानी। संत प्रसन सब कहहु बषानी
प्रथमही कहहु नाथ म.........।

विशेष ज्ञातव्य--लिपि कैथी मिश्रित नागरी है। ग्रंथ का अंतिम भाग खंडित होने के कारण लिपिकाल का पता नहीं चला। प्रारंभिक श्लोक नहीं हैं। पाठांतर भी हैं--

कौसल्यादि मातु सब मन अनंद अस होइ। (प्र०)
कौसल्यादि मातु सब मन अति आनन्द होए। (ह०)
कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा। ता ते नाथ संग नहि लीन्हा। (प्र०)
कपटी कुटिल नाथ मोहि चीन्हा। ता ते नाथ संग नहि लीन्हा। (ह०)
भाव सहित खोजै जो प्रानी। पाव भगति मनि सब सुखखानी। (प्र०)
भाव सहीत षोदै जो प्रानी। पावै भग्ती मनी सब सुषषानी। (ह०)

११८. उत्तरकांड। मिल का कागज। पत्र—३६। आकार—६$\frac{2}{10}$ इंच लंबाईऔर ६$\frac{3}{10}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—२२। परिमाण (छंदों में)—११८८ पूर्ण। रूप—नवीन। लिपि—नागरी। मुद्रणकाल—सं० १६३३।

आदि

केकीकंठाभलीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्ज चिन्हं
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिज नयनं सर्वदा सुप्रसन्नं
पाणौ नाराच चापं कपि निकर युतं बंधुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामं १
कोशलेंद्र पथ कंज मंजुलौ पद्मयोनिशितिकंठवंदितौ
जानकी कर सरोज लालितौ चिंतकस्य मन भृङ्ग सङ्गिनौ २

कुन्द इन्द दर गौर सुंदरं अंबिकापतिमभीष्टसिद्धिदं
कारुणीक कल कंज लोचनं नौमि शङ्करमनंगमोचनं ३
श्री रामचंद्राय नम :

दो० ॥ रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग ॥
जहँ तहँ सोचहिं नारि नर कृश तन राम बियोग ॥
शकुन होहिं सुंदर सकल मन प्रसन्न सब केर ॥
प्रभु आगन बनाव जनु नगर रम्य चहुँ फेर ॥
कौसल्यादिक मातु सब मन अनंद अस होइ ॥
आये प्रभु सिय अनुज युत कहन चहत अस कोइ ॥

अंत

दो० ॥ मो सन दीन न दीन हित तुम समान रघुवीर
अस बिचारि रघुवंश मणि हरहु विषम भय पीर
कामिहि नारि पियारि जिमि लेभिहिं प्रिय जिमि दाम
ऐसेहु इ कर लागहू तुलसी के मन राम ॥

इति श्री राम चरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य संपादनो नाम सप्तमो सोपानः समाप्तम् शुभं संवत् १९३३ ॥

अथ आरती श्री रामायण

आरति श्री रामायण जी की ॥ कीरति कलित ललित सिय पी की॥
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद ॥ बाल्मीक विज्ञान विशारद ॥
शुक सनकादि सेष अरु शारद ॥ वरणि पवनसुत कीरति नीकी ।
संतत गावत शंभु भवानी ॥ औ घटसंभव मुनिबर ज्ञानी ॥
व्यास आदि कवि पुंग बषानी ॥ काग भुसुंडि गरुड़ के ही की ॥
चारिहु बेद पुराण अष्टदश ॥ छयौ शास्त्र सतग्रंथनि को रस ॥
तन मन धन संतन को सर्वस ॥ सार अंश सम्मत सबही की ॥
कलि मल हरण विषय रस फीकी ॥ सुभग सिंगार मुक्ति युवती की ॥
हरणि रोग भव भूरि अभी की ॥ तात मातु सब विधि तुलसी की॥

इति समाप्तं

विशेष ज्ञातव्य—प्रति लीथो टाइप में छपी है। कहीं कहीं पाठांतर हैं। किस प्रति के आधार पर यह प्रति प्रकाशित की गई है। इसका उल्लेख नहीं है। यह संवत् १९३३ में लखनऊ से मुद्रित हुई थी।

११६. उत्तरकांड। देशी कागज। पत्र—८३। आकार—१०$\frac{1}{10}$ इंच लंबाई और ५$\frac{3}{10}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—१०। परिमाण (छंदों में)—१५५६। पूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अज्ञात।

आदि

॥ श्री जानकीवल्लभो विजयते ॥
केकिकंठाभनीलं सुरवरविलसत् विप्र पादाब्ज चिन्हं॥
सोभाढ्यं पीत वस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नं
पाणौ नाराच चापं कपि निकर युतं बंधना सेव्यमानं॥
नौमीड्यं जानकीसं रघुवर मणिसं पुस्पकारूढरामं॥ १॥
कौसलेंद्र पद कंज मंजुलौ कोमलांज्व महेस वंदितौ॥
जानकि कर सरोज लालितौ॥ चिंतकस्य मन भृंग संगिनौ॥ २॥
कुंद इंद दर गौर सुंदरं॥ अंबिका। पतिमभिस्ट मंदिरं
कारुणिक कल कंज लोचनं॥ नौमी संकरमनंगमोचनं॥

दोहा॥ रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग॥
जहाँ तहँ सोचहि नारि नर कृस तन राम विवोग॥
सगुण होहिं सुंदर सकल मन प्रसन्न सब केर॥
प्रभु आगमन जनाबइ नग्र रम्य चहु फेर॥
कौसिल्यादि मातु सब मन अनंद अस होई॥
आए प्रभु श्री अनुज जुत कहन चहत अब कोइ॥
भरत नयन भुज दच्छिण फरकहि बारंबार॥
जानि सगुन मन हरष अति लागें करण विचार॥ १॥

रह्यौ एक दिन अवधि अधारा। समुझत मन दुष भयो आपारा

अंत

॥ दोहा॥ मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुवीर॥
अस विचारि रघुवंस मणि हरहु विषम भव भीर॥
कामिहि नारि पियारि जिमि लोभीहि प्रिय जिमि दाम॥
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम॥ १३१॥

श्लोक यत्पूर्वं प्रभुना कृतं सुकवीना श्री शंभुना दुर्गमं॥
श्री मद्रामपदाब्ज भक्तिमणिसं प्राप्त्यै तु रामायनं॥

मत्वा तद्रघुनाथ नाम निरतं स्वांतस्तमः सांतये ॥
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसं ॥
पुन्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं ॥
माया मोह मलापहं सुविमलं प्रेमांब पुरं सुभं ॥
श्री मद्राम चरित मानसमिदं भक्तयावगाहंति ये ॥
ते संसार पतंग घोर किरणै दह्यंति नो मानवा; ॥ २ ॥

इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विधंसने अविरल हरि भक्ति संपादिने नाम सप्तम ॥ सोपान ॥ सुभमस्तु ॥ सिद्धिरस्तु ॥ संवत् ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रति पूर्ण है। अशुद्ध शब्दों को हड़ताल लगाकर शुद्ध बना दिया गया है। छूटी हुई पंक्तियाँ पत्र के दाएँ बाएँ प्रतिलिपिकर्ता ने लिख दिया है।

१२०. उत्तरकांड। देशी कागज। पत्र—३६। आकार—११$\frac{६}{१०}$ इंच लंबाई और ५$\frac{२}{१०}$ इंच चौड़ाई। पंक्तियाँ (प्रति पृष्ठ)—११। परिमाण (छंदों में)—१२८७। अपूर्ण। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी। लिपि-काल—अज्ञात।

आदि

॥ श्री गणेशाय नमः श्री जानकीवल्लभो विजयतेः
केकीकंठाभनीलंसुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं
सोभाढ्य पीत वस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नं
पानौ नाराच चापं कपि निकर जुतं बंधुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानकीसं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामं १
कोशलेंद्र पद्म कंज मंजुलौ कोमलावज महेशवंदितौ
जानकीकरसरोजलालितौ चिंतकस्य मनभृंगसंगिनौ २
कुंद इंदु कर गौर सुंदरं अंबिकापतिमभीष्ट मंदिरं
कारुनीक फल कंज लोचनं नौमि शंकरमनंगमोचनं ३
रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग
जहा तहं सोचहिं नारि नर कुस तन वियोग
सगुन होंहि सुंदर सकल मन प्रसन्न सब केर
प्रभु आगमन जनाव जनु नगर रम्य चहुं फेर
कौशल्यादि मातु सब मन अनंद अस होई
आएउ प्रभु श्री अनुज जुत कहन चहत अब कोई

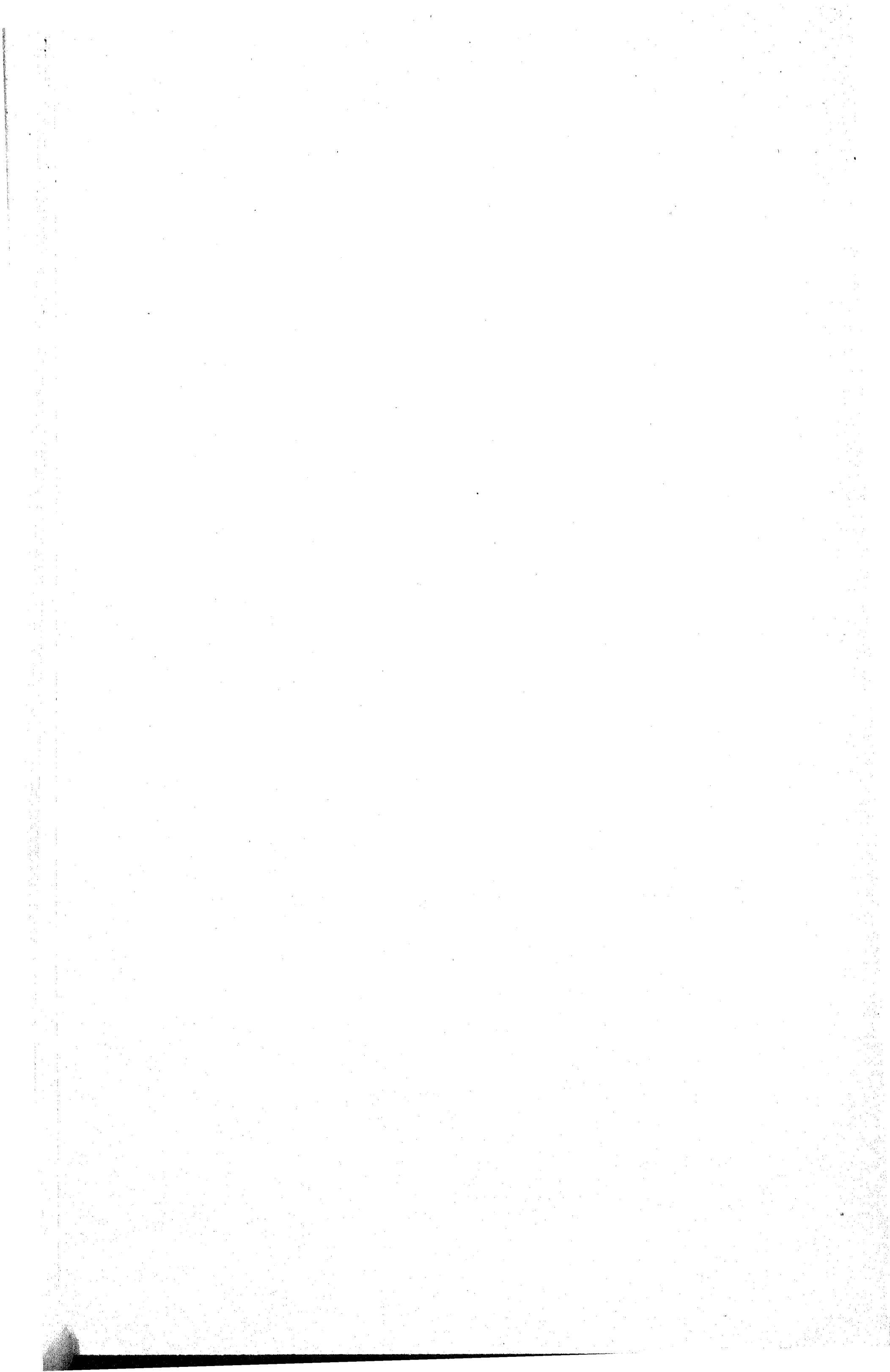
भरत नयन भुज दच्छिन फरकत बारंहि बार
जानि सगुन मन हरष अति लागे करन बिचार
रहेउ एक दिन अवधि अधरा । समुझत मन दुष भएऊ अपारा ॥

अंत

॥दोहा॥ मै कृत कृत्य भइऊ अब तब प्रसाद बिस्वेस
ऊपजी राम भगति दृढ बीते सकल कलेस १२६
येहु सुभ संभु ऊमा संवादा सुख संपादन समन बिषादा
भवभंजन गंजन संदेहा जन रंजन सज्जन प्रिय एहा
राम ऊपासक जे जग माही एह सम प्रिय तिन्हके कछु नाही
रघुपति कृपा जथामति गावा मै यह पावन चरित सुहावा
एहि कलिकाल न शाधन दूजा जोग जज्ञ जप तप व्रत पूजा
रामहि सुमिरिय गाइअ रामहि संतत सुनिय राम गुन ग्रामहि ।
जासु पतित पावन बहु बाना गावहि कवि श्रुति संत पुराना
ताहि भजहि मन तजि कुटिलाई राम भजें गति केंहि नहि पाई ॥
॥छंद॥ पाई न केहि गति पतित पावन राम भजि सुनु सठ मना
गनिका अजामिल व्याध गिध गजादि षल तारे घना
आभीर जमन किरात षस स्वपचादि अति अघ रूप जे
कहि नाम बारक तेपि पावन होहि राम नमामि ते
रघुवंस भूषन चरित ये नर कहंहि सुनहि जे गावही
कलिमल मनोमल धोई बिनु श्रम राम धाम सिधावही
सतपंच चौपाई मनोहर जानि जो नर ऊर धरे
दारुन अविद्या पंच जनित विकार श्रीरघुबर······

विशेष ज्ञातव्य—यह प्रति सुस्पष्ट अक्षरों में लिखी हुई है। अंतिम पत्र तथा पत्र सं० ३२ अप्राप्य हैं। प्रथम पत्र पर (मध्य में) श्री रामचंद्र जी के राज्याभिषेक का चित्र भी बना है। प्रति संशोधित है। संशोधन अगल बगल हाशिए पर या शब्दों पर हरताल लगाकर कर दिया गया है। पाठांतर कोई विशेष नहीं है। प्रकाशित राम चरित मानस से पाठ मिलता जुलता है।

———



कथा-भाग

[तुलसी ग्रंथावली—पहला खंड, पहला संस्करण; आचार्य रामचंद्रशुक्ल, लाला भगवानदीन, व्रजरत्नदास द्वारा संपादित तथा नागरीप्रचारिणी सभा, द्वारा संवत् १९८० में प्रकाशित से साभार ।]

अगस्त्य—ऋग्वेद में लिखा है कि इनके पिता मित्रावरुण जी ने आकाश मार्ग से जाती हुई तथा शृंगार किए हुए उर्वशी नामक अप्सरा को देखा और काम-पीड़ित हो वीर्यपात किया जिससे अगस्त्य ऋषि का जन्म हुआ । सायणाचार्य ने अपने भाष्य में लिखा है कि इनकी उत्पत्ति एक घट में हुई । इसी से इन्हें मैत्रावरुणि, और्वशेय, कुंभसंभव, घटोद्भव और कुंभज कहते हैं । जब विंध्य पर्वत ने बढ़कर सूर्य का मार्ग रोक लिया तब देवताओं की प्रार्थना पर ये उसके पास गए । उसने गुरु को आते देखकर प्रणाम किया । तब इन्होंने उससे कहा कि 'जब तक मैं न लौटूँ तुम इसी प्रकार पड़े रहो' । इस कारण इनका नाम अगस्त्य पड़ा । वृत्रासुर-वध के अनंतर असुरगण देवताओं के डर से समुद्र में छिप गए और रात्रि को निकल कर वे ऋषियों को कष्ट देने लगे । इससे यज्ञ कर्म रुक गया । तब देवताओं ने अगस्त्य जी से समुद्र पान करने के लिये प्रार्थना की । इनके समुद्र पान करने पर देवताओं ने कालकेय असुरों को मार डाला । इस कारण इनका नाम समुद्रचुलुक तथा पीताब्धि हुआ ।

एक समय अगस्त्य जी ने महादेव जी से अपना जन्म वृत्तांत वर्णन कर कहा था कि ऐसे नीच स्थान से उत्पन्न होने पर भी सत्संग तथा हरिकीर्त्तन से उनकी बुद्धि सन्मार्ग की ओर लगी थी ।

अजामिल—इस नाम का आचारभ्रष्ट और कुकर्मी ब्राह्मण था । जिसने अपने एक पुत्र का नाम नारायण रखा था । जब मृत्यु का समय निकट आया और यमराज के विकट दूत इसका प्राण खींचने आए तब यह उन्हें देख कर घबराया । अपने प्रिय पुत्र नारायण को उसने अंतिम समय में जोर से पुकारा । मृत्युकष्ट में पकड़ कर पुत्रस्नेह से भी ईश्वर का नाम मुँह से निकल जाने के कारण भगवान के पार्षद वहाँ पहुँच गए और उसे अंत में वैकुंठ प्राप्त हुआ ।

अदिति—देखिए "कश्यप" ।

अहिल्या—यह महर्षि गौतम की स्त्री और वृद्धाश्व की पुत्री थी। यह अत्यंत रूपवती थीं। एक बार मुनि के गंगा स्नान को चले जाने पर इंद्र उन्हीं का रूप धारण कर आश्रम में चला गया। थोड़ी देर के अनंतर जब वह बाहर निकल रहा था उसी समय ऋषि लौट कर आ गए और योगबल से कुल वृत्तांत से अवगत होकर उन्होंने इंद्र को शाप दिया कि तू सहस्त्रभग हो जा। फिर अहिल्या को भी शाप दिया कि 'तू पत्थर हो जा और त्रेता में श्रीरामचंद्र जी के पैरों की धूलि पाने पर तेरा उद्धार होगा।'

इंद्र—त्रैलोक्य के राज्य पाने के मद से एक बार इंद्र ने गुरु बृहस्पति को सभा में आते समय किसी प्रकार का सत्कार नहीं किया। गुरु यह देख कर लौट गए तथा अदृश्य हो गए। दैत्यों ने घर की फूट का समाचार सुन कर चढ़ाई की और देवता परास्त होकर भाग निकले। इंद्र देवताओं सहित ब्रह्मा जी की शरण गया और उनके आज्ञानुसार उसने विश्वरूप ऋषि को गुरु बना कर उनकी सहायता से दैत्यों पर विजय प्राप्त की।

अंध तापस—अयोध्या के पास ही एक अंधा तपस्वी अपनी स्त्री और पुत्र के साथ रहता था। एक दिन वह पुत्र जल लाने को तट पर गया। जल भरने के शब्द को सुन कर पास ही मृगया-रत महाराज दशरथ ने उसे जल पीते हुए हाथी के भ्रम से शब्दवेधी बाण चलाकर मार डाला। अंध मुनि इस शोक से अग्नि में जल कर मर गया और राजा दशरथ को शाप देता गया कि 'तुम्हें भी पुत्र-शोक में प्राण त्यागना पड़ेगा।'

कद्रू—कश्यप ऋषि की दो स्त्रियाँ कद्रू और विनता नाम की थीं! पहली की संतान सर्प और दूसरी के गरुड़ थे। एक समय दोनों में प्रश्न उठा कि सूर्य के घोड़ों का कौन रंग है। विनता ने श्वेत और कद्रू ने काला कहा तथा यह निश्चय हुआ कि जो हारे वह दूसरे की दासी हो। विनता ने अपनी संतान सर्पों को पहले ही भेजा जो घोड़ों में लिपट रहे जिससे वे काले दिखलाई पड़े। विनता ने दासी भाव स्वीकार कर लिया।

कश्यप—ये ब्रह्मा के पौत्र और मरीचि के पुत्र थे। प्रजापति होने पर ये अपनी स्त्री अदिति के साथ तपस्या करने चले गए। इनकी तपस्या

से प्रसन्न होकर भगवान ने इनसे वर माँगने को कहा। इन दोनों ने प्रार्थना की कि आप हमारे पुत्र हों। त्रेता में ये दोनों महाराज दशरथ और कौशल्या हुए।

कैकेयी—देवासुर संग्राम में महाराज दशरथ को इंद्र ने सहायतार्थ बुलाया था। युद्ध में रथ के पहिए के धुरे की कील टूट कर निकल गई। कैकेयी ने जो साथ थी उस छिद्र में अपना हाथ डालकर उसे सँभाला। युद्ध के बाद राजा दशरथ ने यह देख कर प्रसन्न हो वर माँगने को कहा जिस पर कैकेयी ने दोनों वर उनके पास धरोहर रख दिए कि समय पर माँग लूँगी।

गज—क्षीरसागर के बीच में त्रिकूटाचल पर्वत है जिस पर एक बहुत बड़ा सरोवर है। उसी सरोवर पर एक मत्त गज हथिनियों के साथ आकर जलक्रीड़ा करने लगा। इसी समय एक भारी मगर ने आकर हाथी का पैर पकड़ा। अब दोनों में एक सहस्र वर्ष तक युद्ध होता रहा। अंत में गजेंद्र निरुत्साह होकर ईश्वर की स्तुति करने लगा। विष्णु भगवान ने तुरंत पहुँच कर गजेंद्र की रक्षा की। ये गज और ग्राह शाप से मुक्त हो गए और ग्राह जो हूहू नामक गंधर्व था अपने लोक को चला गया तथा गज, जो पूर्व जन्म में इंद्रद्युम्न नामक राजा था विष्णु भगवान का पार्षद हो गया।

गणिका—जीवंती नामक एक नवयौवना स्त्री पति की मृत्यु पर व्यभिचारिणी हो गई और वेश्यावृत्ति से कालक्षेप करने लगी। उसने एक सुग्गा पाला था जिसे रामनाम पढ़ाती थी। इस पावन नामोच्चारण से उसकी मुक्ति हो गई।

गरुड़—एक समय भुसुंडि मोह से बालक रामचंद्र के हाथ से पूरी का टुकड़ा छीन कर भाग गए। भगवान ने गरुड़ का स्मरण किया, जिनसे और भुसुंडि से घोर युद्ध हुआ। अंत में परास्त होकर भुसुंडि राम जी की शरण आए तब रक्षा हुई। गरुड़ जी को उसी समय से अहंकार हुआ था।

गालव—विश्वामित्र जी के शिष्य थे। विद्या समाप्त होने पर इन्होंने गुरु से दक्षिणा माँगने का हठ किया। गुरु ने आठ सौ श्यामकर्ण घोड़े माँगे। यह राजा ययाति के पास माँगने गए जिसने अपनी पुत्री

माधवी देकर कहा कि जो इससे एक पुत्र उत्पन्न करे उससे दो सौ श्यामकर्ण घोड़े लीजिए। गालव इसे क्रम से हर्यश्व, दिवोदास और उशीनर के पास ले गए और दो दो सौ घोड़े लेकर उन्हें एक एक पुत्र उत्पन्न करने दिया। जब गालव जी को कोई राजा नहीं मिला तो उन्होंने छः सौ घोड़े और माधवी को ले जाकर गुरु को दिया। विश्वामित्र ने उन छः सौ घोड़ों को ले लिया और माधवी से एक पुत्र उत्पन्न कर गालव को गुरु दक्षिणा से मुक्त कर दिया। हरिवंश में गालव को विश्वामित्र का पुत्र लिखा है।

गंगावतरण—अयोध्यानरेश सगर को केशिनी नामक रानी से असमंजस और सुमति से साठ सहस्र पुत्र हुए। असमंजस बड़ा निर्दय था। इसलिए देश से निकाल दिया गया, पर उसका पुत्र अंशुमान सज्जन था। सगर ने अश्वमेध यज्ञ आरंभ किया जिस पर इंद्र ने घोड़े को चुरा लिया और उसे वह जहाँ कपिलदेव जी तप कर रहे थे बाँध आया। सगर ने अपने साठ सहस्र पुत्रों को घोड़ा खोजने के लिये भेजा। वे खोजते खोजते उन ऋषि के आश्रम में पहुँचे और घोड़े को देखकर 'चोर चोर' कहने लगे। कपिल जी के क्रोध से हुंकार करने पर वे वहीं भस्म हो गए। बहुत समय बीतने पर अंशुमान घोड़े और चाचाओं को खोजता हुआ वहीं पहुँचा और उसने गरुड़ जी से सब वृत्तांत सुना। उन्होंने सम्मति दी कि लोकपावनी गंगा जी के जल से यह भस्म बहाया जाने पर उनकी मुक्ति होगी। अंशुमान घोड़ा लेकर लौट आया और उसने पिता से सब वृत्तांत कह दिया।

सगर गंगा जी को लाने का कुछ उपाय न कर सके और उनकी मृत्यु पर अंशुमान राजा हुआ। वह अपने पुत्र दिलीप को राज्य देकर तप करने चला गया और वहीं उसकी मृत्यु हुई। दिलीप के पुत्र भगीरथ हुए। भगीरथ ने राजा होने पर राज्य मंत्रियों को सौंप कर गोकर्ण तीर्थ में जा तप किया। पहले ब्रह्माजी को प्रसन्न कर गंगाजल और पुत्र माँगा और फिर महादेव जी को प्रसन्न कर आकाश से गिरती हुई गंगा को धारण करने के लिये उन्हें बाध्य किया। गंगा बड़े वेग से गिरी पर शिव जी

की जटा में ही लुप्त हो गईं। तब फिर तप कर भगीरथ ने शिव जी से गंगाजल माँगा। इसपर गंगाजी का प्रादुर्भाव हुआ और भगीरथ के पितरगण स्वर्ग को सिधारे।

चित्रकेतु—शूरसेन देश का राजा था जिसे एक करोड़ रानियाँ थीं। कोई पुत्र न होने से यह चिंतित था। एक दिन अंगिरा ऋषि आए जिनसे राजा ने अपनी इच्छा कही। मुनि ने यज्ञ करा कर पटरानी को चरु खिलाया। जब पुत्र हुआ तब राजा का प्रेम पुत्र और उसकी माता पर अधिक हो गया जिससे अन्य सपत्नियाँ उससे द्वेष करने लगीं। अंत में उन्होंने पुत्र को विष दे दिया। मृत पुत्र को देख कर राजा अत्यंत शोक करने लगा। तब उसी समय अंगिरा ऋषि और नारद जी वहाँ आए और उन्होंने अनेक प्रकार से ज्ञानोपदेश किया। राजा राज्य छोड़ कर ऋषियों के बताए मंत्रों के जप से विद्याधर हो गया। पार्वती जी के शाप से यही वृत्रासुर हुआ था।

चंद्रमा—चंद्रमा ने जब दिग्विजय कर राजसूय यज्ञ किया तब उसने घमंड से अपने गुरु बृहस्पति की स्त्री छीन ली। चंद्रमा ने दैत्यों की सहायता से देवताओं से युद्ध ठाना और कई बार माँगने पर भी बृहस्पति को उनकी स्त्री तारा नहीं लौटाई। अंत में ब्रह्माजी ने मध्यस्थ होकर तारा को बृहस्पतिजी को दिला दिया और तत्काल हुए पुत्र को चंद्रमा का गर्भजात होने से उसे दिलाया। यही पुत्र बुध नामक ग्रह हुआ।

तपस्विनी—विश्वकर्मा की हेमा नामक कन्या ने नृत्य से महादेव जी को तुष्ट करके दिव्य स्थान प्राप्त किया जहाँ वह दिव्य नामक गंधर्व की कन्या स्वयंप्रभा के साथ रहती थी। जब वह ब्रह्मलोक जाने लगी तब स्वयंप्रभा से कहती गई कि 'त्रेता में जब रामदूत यहाँ आयेंगे तब उनका सत्कार कर तुम रामजी का जाकर दर्शन करना। तब तुम परम पद पाओगी।'

त्रिशंकु—सूर्यवंशी राजा त्रिशंकु ने सशरीर स्वर्ग जाने की इच्छा से गुरु वशिष्ठ से यज्ञ कराने की प्रार्थना की, पर उनके स्वीकार न करने पर वे वशिष्ठ के पुत्रों के पास गए। उन लोगों की बात भी जब

राजा ने न मानी तब उन लोगों ने शाप दिया कि चांडाल हो जाओ। चांडाल होकर यह विश्वामित्र के पास पहुँचे और अपनी इच्छा प्रकट की। मुनि ने यज्ञ आरंभ किया पर जब देवता अपना भाग लेने न आए तब क्रोधित हो वे अपनी तपस्या के बल त्रिशंकु को सशरीर स्वर्ग भेजने लगे। इंद्र ने उधर से उन्हें मर्त्यलोक को लौटाया। तब त्रिशंकु उलटे होकर चिल्लाए। विश्वामित्र ने उन्हें वहीं रोक कर दक्षिण की ओर सतर्षियों और नक्षत्रों की रचना आरंभ की। देवता भयभीत होकर विश्वामित्र के पास आए और प्रार्थना करने लगे। तब विश्वामित्र ने कहा कि मैंने त्रिशंकु को सशरीर स्वर्ग पहुँचाने की प्रतिज्ञा की है, अतः अब वे जहाँ के तहाँ रहेंगे और हमारे बनाए सतर्षि तथा नक्षत्र उनके चारों ओर घूमते रहेंगे। देवताओं ने भी यह स्वीकार कर लिया और वे उसी प्रकार अब तक लटके हुए हैं।

दधीचि—यह बड़े तपस्वी थे। वृत्रासुर से परास्त होने पर देवताओं ने भगवान के आज्ञानुसार आकर इनसे प्रार्थना की और इनके शरीर की हड्डी माँगी। तब दधीचि जी ने परोपकारार्थ शरीर छोड़ दिया। उनकी अस्थि से विश्वकर्मा ने वज्र बनाया। इसी अस्त्र से वृत्रासुर मारा गया।

दंडक—इक्ष्वाकु के पुत्र दंडक विंध्याचल और नीलगिरि के मध्यस्थ प्रांत के राजा थे। ये शुक्राचार्य के शिष्य थे जिनकी बड़ी पुत्री अरजा का इन्होंने कौमार्यभंग किया था। मुनि ने क्रोध से शाप दिया कि 'इंद्र सौ योजन पर्यंत पत्थर बरसा कर इनका राज्य नष्ट कर दे।' इस शाप से वह प्रांत निर्जन हो गया और राजा के नाम पर दंडकारण्य कहलाया।

दुंदुभि—इस नाम का एक राक्षस था जिसे बालि ने मार कर ऋष्यमूक पर्वत पर फेंक दिया था। इस पर्वत पर मतंगऋषि का आश्रम था जिन्होंने रक्त देखकर शाप दिया था कि यदि बालि इस पर्वत पर आवेगा तो उसका मस्तक फट जायगा और वह मर जायगा। इसी कारण बालि उस पर्वत पर नहीं जाता था।

दुर्वासा—यह अत्रि मुनि के पुत्र थे और इन्होंने और्व मुनि की पुत्री कंदली से सौ अपराध क्षमा करने की प्रतिज्ञा कर विवाह किया था। इसके १०१ अपराध करने पर ऋषि ने शाप देकर इसे भस्म कर दिया। और्व मुनि ने शोकातुर हो शाप दिया कि तुम्हारा दर्प चूर्ण होगा। इसके अनंतर यह अयोध्या के सूर्यवंशीय राजा अंबरीष के यहाँ गए जो बड़े हरिभक्त वैष्णव थे। रामायण में इन्हें अत्रिपुत्र और महाभारत, भागवत तथा हरिवंश में नाभाग का पुत्र लिखा है। इन्होंने एकादशी का व्रत किया था। इस व्रत के सब कृत्य समाप्त करने पर यह पारण की तैयारी में थे कि अतिथि-स्वरूप दुर्वासा वहाँ आ पहुँचे। मुनि निमंत्रण लेकर स्नान करने चले गए। वहाँ उन्होंने इतनी देर की कि पारण का समय जाने लगा। तब राजा ने केवल जल पीकर पारण किया क्योंकि यह भोजन में गिना भी जाता है और नहीं भी। दुर्वासा आकर जब सब वृत्तांत से अवगत हुए तब उन्होंने क्रोधित हो राजा के नाश करने के लिये कृत्या प्रगट की। भगवान के सुदर्शन चक्र ने जो अंबरीष का शरीररक्षक था अपने तेज से कृत्या को भस्म कर दिया और वह दुर्वासा की ओर झपटा। दुर्वासा ब्रह्मा, शिव और विष्णु सब के पास गए पर कहीं रक्षा न पाने पर अंत में राजा ही की शरण आए। राजा ने चक्र की स्तुति कर उसे शांत किया और ऋषि हरिभक्तों की प्रशंसा करते हुए चले गए।

ध्रुव—स्वयंभू मनु के पुत्र राजा उत्तानपाद के दो स्त्रियाँ—सुनीति और सुरुचि थीं। सुनीति से ध्रुव और सुरुचि से उत्तम उत्पन्न हुए। राजा का सुरुचि पर अधिक प्रेम था। एक दिन राजा उत्तम को गोद में लिए बैठे थे। इसी बीच में ध्रुव खेलते हुए वहाँ आ पहुँचे और राजा की गोद में बैठ गए। इस पर उनकी विमाता सुरुचि ने उन्हें अवज्ञा के साथ वहाँ से उठा दिया। ध्रुव इस अपमान को सह न सके और घर से निकलकर तप करने चले गए। विष्णु भगवान उनकी भक्ति से बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उन्हें वर दिया कि 'तुम सब लोकों और ग्रहों नक्षत्रों के ऊपर उनके आधार स्वरूप होकर अचल भाव से स्थित रहोगे

और जिस स्थान पर तुम रहोगे वह ध्रुवलोक कहलावेगा।' इसके अनंतर ध्रुव ने घर आकर पिता से राज्य प्राप्त किया और छत्तीस हजार वर्ष राज्य कर वे ध्रुवलोक को चले गए।

नल-नील—समुद्र के तटवासी ऋषियों के शालिग्राम की मूर्तियों को जब वे ध्यानस्थ होते थे तब ये नल-नील समुद्र में फेंक दिया करते थे। यह देखकर उन ऋषियों ने शाप दिया कि तुम लोगों का छुआ हुआ पत्थर जल में न डूबेगा।

नहुष—वृत्रासुर को मारने से ब्रह्म हत्या लगने के कारण जब इंद्र मानस सरोवर में जा छिपा तब इंद्रासन को खाली देख कर बृहस्पति ने राजा नहुष को इंद्रपद दिया। यह अयोध्या नरेश इक्ष्वाकुवंशी अंबरीष के पुत्र और ययाति के पिता थे। इंद्राणी पर मोहित हुए और उन्होंने उसे अपने पास बुलाना चाहा। बृहस्पति की संमति से इंद्राणी ने कहला भेजा कि 'सप्तर्षि द्वारा उठाई हुई पालकी पर आओ तब हम तुम्हारे साथ चलें।' नहुष ने वैसा ही किया पर जल्दी के कारण वह ऋषियों से कहने लगा 'सर्प, सर्प' (जल्दी चलो)। इस पर अगस्त्य मुनि ने शाप दिया कि 'सर्प हो जा'। यह स्वर्गभ्रष्ट हो सर्प हुए और राजा युधिष्ठिर द्वारा मुक्त हुए।

नारद—इन देवर्षि के बारे में अनेक पुराणों में अनेक कथाएँ हैं पर श्रीमद्भागवत में भगवान व्यास को संबोधित कर स्वयं नारद जी ने जो अपना वृत्तांत कहा है वह इस प्रकार है कि वे वेदज्ञ ब्राह्मणों की किसी दासी के पुत्र थे। वे उन्हीं तपस्वियों की सेवा में रहने लगे तथा उनकी एक बार जूठन खाकर पाप निवृत्त हो गए। ऋषियों द्वारा कही हुई अनेक कथाओं को सुनकर उनकी भक्ति भावना दृढ़ हो गई। जब यह पाँच वर्ष के थे तभी इनकी माता सर्प के काटने से मर गई। तब सांसारिक स्नेहबंधन से मुक्त होकर हरिकीर्त्तन करते हुए वे उत्तर दिशा की ओर चले गए। बहुत से देश, बन लाँघते हुए एक घोर निर्जन वन में भूख प्यास से पीड़ित होने के कारण पास ही की एक नदी के तट पर ये गए और स्नान तथा जलपान कर पीपल के एक वृक्ष के नीचे बैठ गए। मुनियों द्वारा सुने हुए उपदेशों के अनुसार ये ईश्वर का ध्यान करने

लगे। भक्तिपूर्वक ध्यान करने से इनके हृदय में भगवान् का प्राकट्य हुआ जिससे ये उस अपूर्व दर्शन में मग्न हो गए। उस दर्शन के लिये इन्होंने फिर अनेक प्रयत्न किए पर दर्शन नहीं हुआ। काल पाकर जब इनका शरीरपात हुआ तब ब्रह्मा जी के प्राण के साथ साथ इनकी आत्मा का भी प्रादुर्भाव हुआ। सृष्टि की रचना के आरंभ में मरीचि आदि मुनियों के साथ ये भी प्रकट हुए। हरिकीर्तन के कारण यह इस अवस्था को पहुँचकर भगवान के पार्षद और इच्छाचारी हो गए।

विष्णुपुराण में लिखा है कि ब्रह्मा जी ने अपने सब पुत्रों को प्रजा सृष्टि करने में लगाया पर नारद जी ने कुछ बाधा की, इस पर उन्होंने इन्हें शाप दिया कि 'तुम सदा सब लोकों में घूमते फिरोगे, एक स्थान पर स्थिर होकर न रहोगे।'

पुराणों से नारद जी भारी हरिभक्त सिद्ध होते हैं जो सर्वदा बीणा बजाकर भगवान का गुणगान किया करते हैं। इनका स्वभाव कलहप्रिय कहा गया है।

इन्होंने दक्ष प्रजापति के हर्यश्व नामक पुत्रों को जो पिता के आज्ञानुसार सृष्टिरचना में लगे थे ज्ञानमार्ग दिखला कर प्रजा की सृष्टि के मार्ग से हटा दिया। दक्ष यह समाचार सुनकर बड़े दुखित हुए। ब्रह्मा के कहने पर दक्ष ने फिर एक सहस्र पुत्र उत्पन्न किए उन शबलाश्व नामक पुत्रों को भी नारद जी ने वही ज्ञान सिखलाया जिससे उन्होंने भी अपने भाइयों का अनुसरण किया। दक्ष यह सुनकर बड़े क्रोधित हुए और नारद जी से मिलकर उन्हें शाप दिया कि 'दो घड़ी से कहीं अधिक ठहरोगे तो तुम्हारे शिर में पीड़ा होगी।'

नारदवचन—एक समय जानकी जी पार्वती पूजन को जा रही थीं कि मार्ग में नारद जी से भेंट हो गई। सीता जी के प्रणाम करने पर मुनि ने आशीर्वाद दिया कि 'इसी बाग में तुम पहले अपने पति को देखोगी और यहीं जिसे देखकर तुम्हारा मन आकर्षित हो उसे ही अपना पति जानना।

परशराम—जमदग्नि ऋषि को रेणुका स्त्री से पाँच पुत्र हुए—समन्वान्, सुषेण, वसु, विश्वावसु और परशुराम। एक दिन रेणुका गंगातट पर जल लाने गई और वहाँ राजा चित्ररथ को स्त्री सहित जलक्रीड़ा करते देखकर काम पीड़ित हो देर कर लौटी। ऋषि ने यह देखकर कुपित हो प्रत्येक पुत्र को मातृहत्या करने की आज्ञा दी। अन्य पुत्रों से स्नेहवश यह कृत्य न हो सका तब परशुराम ने आज्ञापालन किया। पिता ने प्रसन्न हो वर माँगने को कहा तब उन्होंने माता के लिये जीवन और अपने लिए परमायु और अजेयता माँग लीं। एक दिन कार्तवीर्य सहस्रार्जुन जमदग्नि के आश्रम पर आया और उसे नष्ट कर तथा होम धेनु के बछवे को लेकर चला गया। परशुराम ने जब यह सुना तब कार्तवीर्य के पीछे पहुँच उसकी सहस्र भुजाओं को काट डाला। कीर्तवीर्य के मनुष्यों ने एक दिन इनके पिता को मारकर उसका बदला लिया। परशुराम जी ने जमदग्नि को मरा हुआ देखकर पहले विलाप किया और फिर संपूर्ण क्षत्रियों के नाश की प्रतिज्ञा की। परशुराम जी ने संपूर्ण पृथ्वी के क्षत्रियों का नाश करके अश्वमेध यज्ञ किया और विजित पृथ्वी कश्यप को दान दे दी। कश्यप ने बचे बचाए क्षत्रियों के रक्षार्थ परशुराम जी से कहा कि 'यह पृथ्वी हमारी हो चुकी अब तुम दक्षिण समुद्र की ओर चले जाओ।'

प्रह्लाद—दैत्यराज हिरण्यकशिपु का पुत्र था। जब दैत्यराज तप को गया तब देवताओं ने दैत्यों पर चढ़ाई कर उन्हें भगा दिया। प्रह्लाद की माता को इंद्र ले जा रहा था पर नारद जी के उपदेश से उसे उनके आश्रम में छोड़ गया। यहीं गर्भ में प्रह्लाद जी हरिकथा सुनते थे जिससे वे बचपन ही से बड़े भगवद्भक्त हो गए। हिरण्यकशिपु ने इन्हें भगवद्भक्ति से विचिलित करने तथा नामस्मरण करने में बाधा डालेने के लिये अनेक प्रयत्न किए और बहुत कष्ट पहुँचाए पर वह इन्हें विचलित न कर सका। अंत को भगवान ने नृसिंह रूप धारण कर प्रह्लाद की रक्षा की और हिरण्यकशिपु को मार डाला।

बलि—यह दैत्यराज प्रह्लाद के पौत्र और बड़े धर्मात्मा थे। जब इन्होंने देवताओं को परास्त कर स्वर्ग पर अधिकार कर लिया तब देवातओं की माता अदिति ने व्रतकर भगवान को प्रसन्न किया। विष्णु भगवान ने उन्हीं के गर्भ से वामन अवतार लिया। इनके यज्ञोपवीत के समय बलि ने सौ अश्वमेध यज्ञ करना आरंभ कर दिया था, इससे से यज्ञ-मंडप में पधारे। बलि ने इनके तेज को देखकर स्वयं इनका स्वागत किया और अर्चन पूजन के अनंतर इच्छानुसार वर माँगने के लिये कहा। वामन जी के तीन पैर पृथ्वी माँगने तथा शुक्राचार्य के मना करने पर भी बलि ने जल लेकर तीन पैर भूमि दान कर दी। भगवान ने विराट् रूप धारण कर दो पैर में संसार नाप लिया तथा एक के बदले में बलि ने अपना शरीर दिया। वामन जी ने कृपा करके उसे सुतल लोक का राज्य देकर वहाँ विदा किया और स्वर्ग देवताओं को दिला दिया।

बेनु—ध्रुव के वंश में राजा अंग हुए जो बड़े धर्मात्मा थे। इनका पुत्र बेनु था जो बड़ा अधर्मी था और प्रजा को दुःख देता था। राजा अंग दुखी होकर बन में चले गए। तब ब्राह्मणों ने राज्यासन खाली देखकर बेनु का राज्याभिषेक कर दिया। अब यह अधिक उत्पात करने लगा और जब प्रजा को अति कष्ट हुआ तब उन्हीं ब्राह्मणों ने उसे क्रोध करके जला दिया। इसी के पुत्र ईश्वर के अवतार राजा पृथु हुए।

ययाति—चंद्रवंशी राजा नहुष के पुत्र थे। इनकी पहली स्त्री दैत्यगुरु शुक्राचार्य की पुत्री शर्मिष्ठा थी। पहली से यदु तथा तुर्वसु और दूसरी से दुह्यु, अनु और पुरु नामक पुत्र हुए। शुक्राचार्य के शाप से जब ययाति जराग्रस्त हुए तब उन्होंने अपने पुत्रों में से पुरु को, उसके स्वीकार करने पर अपनी जरा देकर उसका यौवन ले लिया। कुछ दिन यौवन का सुख भोगकर उन्होंने उसे पुरु को लौटा दिया और उसे ही राज्य देकर वे आप बन में चले गए। वहाँ शरीर त्याग कर स्वर्ग गए और कुछ दिनों बाद स्वर्गभ्रष्ट होकर अपने दौहित्रों के यज्ञ-मंडप में गिरे। वनवासिनी और तपस्विनी कन्या माधवी तथा दौहित्रों के पुण्यफल से इन्होंने पुनः स्वर्गारोहण किया।

परशराम—जमदग्नि ऋषि को रेणुका स्त्री से पाँच पुत्र हुए—समन्वान्, सुषेण, वसु, विश्वावसु और परशुराम। एक दिन रेणुका गंगातट पर जल लाने गई और वहाँ राजा चित्ररथ को स्त्री सहित जलक्रीड़ा करते देखकर काम पीड़ित हो देर कर लौटी। ऋषि ने यह देखकर कुपित हो प्रत्येक पुत्र को मातृहत्या करने की आज्ञा दी। अन्य पुत्रों से स्नेहवश यह कृत्य न हो सका तब परशुराम ने आज्ञापालन किया। पिता ने प्रसन्न हो वर माँगने को कहा तब उन्होंने माता के लिये जीवन और अपने लिए परमायु और अजेयता माँग लीं। एक दिन कार्तवीर्य सहस्रार्जुन जमदग्नि के आश्रम पर आया और उसे नष्ट कर तथा होम धेनु के बछवे को लेकर चला गया। परशुराम ने जब यह सुना तब कार्तवीर्य के पीछे पहुँच उसकी सहस्र भुजाओं को काट डाला। कीर्तवीर्य के मनुष्यों ने एक दिन इनके पिता को मारकर उसका बदला लिया। परशुराम जी ने जमदग्नि को मरा हुआ देखकर पहले विलाप किया और फिर संपूर्ण क्षत्रियों के नाश की प्रतिज्ञा की। परशुराम जी ने संपूर्ण पृथ्वी के क्षत्रियों का नाश करके अश्वमेध यज्ञ किया और विजित पृथ्वी कश्यप को दान दे दी। कश्यप ने बचे बचाए क्षत्रियों के रक्षार्थ परशुराम जी से कहा कि 'यह पृथ्वी हमारी हो चुकी अब तुम दक्षिण समुद्र की ओर चले जाओ।'

प्रह्लाद—दैत्यराज हिरण्यकशिपु का पुत्र था। जब दैत्यराज तप को गया तब देवताओं ने दैत्यों पर चढ़ाई कर उन्हें भगा दिया। प्रह्लाद की माता को इंद्र ले जा रहा था पर नारद जी के उपदेश से उसे उनके आश्रम में छोड़ गया। यहीं गर्भ में प्रह्लाद जी हरिकथा सुनते थे जिससे वे बचपन ही से बड़े भगवद्भक्त हो गए। हिरण्यकशिपु ने इन्हें भगवद्भक्ति से विचिलित करने तथा नामस्मरण करने में बाधा डालने के लिये अनेक प्रयत्न किए और बहुत कष्ट पहुँचाए पर वह इन्हें विचलित न कर सका। अंत को भगवान ने नृसिंह रूप धारण कर प्रह्लाद की रक्षा की और हिरण्यकशिपु को मार डाला।

बलि—यह दैत्यराज प्रह्लाद के पौत्र और बड़े धर्मात्मा थे। जब इन्होंने देवताओं को परास्त कर स्वर्ग पर अधिकार कर लिया तब देवातओं की माता अदिति ने व्रतकर भगवान को प्रसन्न किया। विष्णु भगवान ने उन्हीं के गर्भ से वामन अवतार लिया। इनके यज्ञोपवीत के समय बलि ने सौ अश्वमेध यज्ञ करना आरंभ कर दिया था, इससे से यज्ञ-मंडप में पधारे। बलि ने इनके तेज को देखकर स्वयं इनका स्वागत किया और अर्चन पूजन के अनंतर इच्छानुसार वर माँगने के लिये कहा। वामन जी के तीन पैर पृथ्वी माँगने तथा शुक्राचार्य के मना करने पर भी बलि ने जल लेकर तीन पैर भूमि दान कर दी। भगवान ने विराट् रूप धारण कर दो पैर में संसार नाप लिया तथा एक के बदले में बलि ने अपना शरीर दिया। वामन जी ने कृपा करके उसे सुतल लोक का राज्य देकर वहाँ विदा किया और स्वर्ग देवताओं को दिला दिया।

बेनु—ध्रुव के वंश में राजा अंग हुए जो बड़े धर्मात्मा थे। इनका पुत्र बेनु था जो बड़ा अधर्मी था और प्रजा को दुःख देता था। राजा अंग दुखी होकर बन में चले गए। तब ब्राह्मणों ने राज्यासन खाली देखकर बेनु का राज्याभिषेक कर दिया। अब यह अधिक उत्पात करने लगा और जब प्रजा को अति कष्ट हुआ तब उन्हीं ब्राह्मणों ने उसे क्रोध करके जला दिया। इसी के पुत्र ईश्वर के अवतार राजा पृथु हुए।

ययाति—चंद्रवंशी राजा नहुष के पुत्र थे। इनकी पहली स्त्री दैत्यगुरु शुक्राचार्य की पुत्री शर्मिष्ठा थी। पहली से यदु तथा तुर्वसु और दूसरी से दुह्यु, अनु और पुरु नामक पुत्र हुए। शुक्राचार्य के शाप से जब ययाति जराग्रस्त हुए तब उन्होंने अपने पुत्रों में से पुरु को, उसके स्वीकार करने पर अपनी जरा देकर उसका यौवन ले लिया। कुछ दिन यौवन का सुख भोगकर उन्होंने उसे पुरु को लौटा दिया और उसे ही राज्य देकर वे आप बन में चले गए। वहाँ शरीर त्याग कर स्वर्ग गए और कुछ दिनों बाद स्वर्गभ्रष्ट होकर अपने दौहित्रों के यज्ञ-मंडप में गिरे। वनवासिनी और तपस्विनी कन्या माधवी तथा दौहित्रों के पुण्यफल से इन्होंने पुनः स्वर्गारोहण किया।

रंतिदेव—यह राजा बड़ा दानी था। एक समय सब दे डालेने के अनंतर इसे अड़तालीस दिन तक जल पीने को भी नहीं मिला। उंचासवें दिन कुछ प्रबंध हो जाने पर ये भोजन का समान कर रहे थे कि क्रम से एक ब्राह्मण, शूद्र तथा एक अतिथि एक कुत्ते को लिये आ पहुँचे और भोजन का कुल सामान इन्हीं लोगों के आतिथ्य में समाप्त हो गया। केवल जल बचा था जिसे पीने के लिये इन्होंने हाथ उठाया ही था कि एक चांडाल आ गया और पीने के लिये जल माँगने लगा। राजा ने वह जल भी उसे दे दिया। अंत में भगवान ने प्रसन्न होकर इन्हें मोक्ष दिया।

राम-नाम का प्रभाव—(१) एक समय ब्रह्माजी ने देवताओं से पूछा कि तुम लोगों में पहले पूजनीय कौन है। इस पर सब देवता आपस में झगड़ने लगे। तब ब्रह्मा जी ने कहा कि जो पृथ्वी की परिक्रमा करके सब से पहले हमारे पास लौट आवेगा उसे प्रथम स्थान मिलेगा। अन्य देवताओं के वाहनों के साथ गणेश जी के बोझ से दबे हुए उनके बाहन मूसे का दौड़ना असंभव था, इस लिये वे बड़े खिन्न हुए। उसी समय नारद जी के आ जाने तथा उनकी सम्मति के अनुसार गणेश जी पृथ्वी पर रामनाम लिखकर और उसी की परिक्रमा कर ब्रह्मा जी के पास चले गए। ब्रह्मा जी ने नाम के प्रभाव को समझकर इन्हें प्रथम पूज्य-पद दिया। (२) एक समय महादेव जी ने पार्वती जी से अपने साथ भोजन करने के लिए कहा। पार्वती जी ने कहा कि मुझे सहस्रनाम का पाठ करना है, इस लिए मैं पीछे से प्रसाद ले लूँगी। महादेव जी ने उन्हें रामनाम लेकर भोजन करने को कहा। एक बार नाम लेने से सहस्रनाम का फल होता है। (३) समुद्रमंथन के समय हलाहल विष के प्रगट होने से जब संसार पीड़ित हुआ तब देवतादि शिवजी की शरण में गए। शरणागतवत्सल महादेव जी ने हरि नाम स्मरण कर उस विष का पान कर लिया। उनके हृदय में भगवान का वास था इस लिए उन्होंने विष को कंठ में ही धारण किया। (४) देखिए 'वाल्मीकि'। (५) देखिये 'नारद'।

रावण-पराजय—(१) रावण सहस्रार्जुन से युद्ध करने गया था। उसने इसे पकड़ कर बाँध रखा था और पुलस्त्य ऋषि के कहने पर छोड़ दिया।

(२) यह किष्किंधा में वानरराज बालि से भी युद्ध करने गया था। उसने इसे काँख में दबा लिया और चारों समुद्रों पर घूमके लौटने पर छोड़ दिया।

(३) कुबेर को विजय कर जब रावण उसके पुष्पक विमान पर चढ़ कर कैलास की ओर चला तब विमान रुक गया। नंदीश्वर के मना करने पर उनके मर्कट वदन पर रावण हँसा, तब नंदीश्वर ने शाप दिया कि बंदर तेरे कुल का नाश करेंगे। रावण ने क्रोधित होकर अपनी भुजाएँ पर्वत में घुसाकर उसे उठा लिया। तब शिव जी ने अँगूठे से पर्वत को दबा दिया जिससे रावण की भुजाएँ दबकर मरमरा उठीं। इस कष्ट से उसने ऐसा भयंकर नाद किया कि संसार काँप उठा। फिर उसने शिवजी की सामवेद से स्तुति कर उन्हें प्रसन्न किया। शिवजी ने उसे छोड़कर रावण पदवी दी और चंद्रहास नामक खड्ग दिया।

राहु—समुद्रमंथन के समय जब धन्वंतरि वैद्य अमृतकलश लेकर निकले तब दैत्यों ने उसे छीन लिया। देवता विष्णु भगवान की शरण गए। तब वे मोहिनी स्वरूप धारण कर रंग स्थल में आए। दैत्य उन्हें देखकर ऐसे काममोहित हो गए कि उन्होंने उस घट को उन्हें सौंप दिया। स्त्री स्वरूप भगवान ने देवताओं और दैत्यों को पंक्तिभेद कर बैठाया और देवताओं ही को अमृत पिलाना आरंभ किया। जब वे देवताओं को अमृत पिलाते हुए दैत्यों की पंक्ति के पास आए तब राहु नामक दैत्य यह देखकर कि अमृतघट खाली हो रहा है देवता का रूप धारण कर उनकी पंक्ति में मिल बैठा। जब भगवान ने उसे अमृत दिया तब सूर्य ने चंद्र और इसके कपट को खोल दिया। भगवान ने चक्र से उसका सिर काट दिया पर अमृत पीने के कारण उसके सिर और कबंध अमर हो गए। ब्रह्मा जी ने इन दोनों को राहु और केतु नाम देकर अष्टम और नवम ग्रह बना दिया। ये उसी बैर के कारण अमावस और पूर्णिमा में पर्वों पर सूर्य और चंद्र को ग्रहण करते हैं।

वाल्मीकि—यह अयोध्याधिपति महाराज रामचंद्र के समसामयिक रामायण के प्रसिद्ध प्रणेता तथा आदि कवि थे। इनका आश्रम अयोध्या और मथुरा के बीच में था। यद्यपि इनका जन्म द्विज कुल में था पर ये किरातों के साथ रहते थे और उन्हीं का आचरण कर लूट मार से अपना तथा अपने परिवार का भरण पोषण करते थे। जिस वन में ये रहते थे उसी में एक दिन सप्तर्षियों का आगमन हुआ—उन्हें लूटने के लिये ये उनपर झपटे, पर मुनियों ने इन्हें देखकर कहा कि 'रे द्विजाधम, क्यों आता है?' तब उन्होंने उत्तर दिया कि 'हमारे बहुत से पुत्र और स्त्री भूखे हैं इसलिये हम कुछ अपहरण करने को आए हैं।' मुनियों ने कहा कि पहले तू जाकर एक एक से पूछ कि तेरे किए हुए पाप में भी वे भाग लेंगे या नहीं। उन्होंने जाकर प्रत्येक से वही प्रश्न किया पर किसी ने पाप का भागी होना स्वीकार नहीं किया। तब वे संसार से विरक्त होकर ऋषियों के पास आए और उनसे उपदेश लिया। यह पहले राम शब्द का उच्चारण नहीं कर सके, तब ऋषियों ने उस शब्द का उलटा 'मरा' जपने का उपदेश दिया। यह ध्यानस्थ हो वही शब्द जपने लगे और बहुत समय बीतने पर इनके शरीर के ऊपर वल्मीक जम गया। सहस्र युग व्यतीत होने पर सप्तर्षि लौटे और इन्हें वल्मीक से निकलने को कहा। वल्मीक में से निकलने के कारण इनका नाम वाल्मीकि प्रसिद्ध हुआ। रामायण में यह कथा इन्होंने स्वयं रामचंद्र जी से कही थी।

शिवि—काशिराज शिवि के बानबे यज्ञ कर चुकने पर इंद्र अग्नि को कबूतर बनाकर और स्वयं बाज बनकर यज्ञशाला में पहुँचा। कबूतर राजा की गोद में छिप गया। बाज के इस कथन पर कि यदि मेरा आहार न मिलेगा तो मैं मर जाऊँगा राजा ने अपने शरीर से काट कर मांस देना चाहा। कबूतर के तौल भर मांस माँगने पर तुला मँगाई गई और सारे शरीर का मांस काटने पर भी जब तौल पूरा न हुआ तब राजा ने गला काटने की इच्छा की। वैसे ही भगवान ने प्रगट होकर इन्हें मुक्ति दी।

शबरी—इसके गुरु ने मरते समय कहा था कि तू अभी कुटी में रह। कुछ

दिन बाद यहाँ राम लक्ष्मण आवेंगे तब उनका दर्शन कर परमधाम को जाना।

सहस्रबाहु—यह हैहयवंशी कार्तवीर्य सहस्रार्जुन माहिष्मती पुरी का राजा था। जमदग्नि ऋषि का आश्रम नष्ट करने के कारण उनके पुत्र परशुराम जी द्वारा मारा गया। देखिए 'परशुराम'।

हरिश्चंद्र—अयोध्यानरेश हरिश्चंद्र प्रसिद्ध दानी और धर्मात्मा हो गए हैं। इंद्र ने द्वेष से विश्वामित्र को इनकी परीक्षा के लिये उभाड़ा। वे स्वप्न में इनसे सारी पृथ्वी दान लेकर सबेरे दक्षिणा लेने पहुँचे। दक्षिणा चुकाने के लिये पृथ्वी से न्यारी काशी में महाराज हरिश्चंद्र सकुटुंब आए और अपनी स्त्री को ब्राह्मण के हाथ बेच आधी दक्षिणा चुकाई। राजा ने अपने को डोम के हाथ बेचकर कुल दक्षिणा दे दी। इनके पुत्र के मरने पर इनकी स्त्री शव को ले श्मशान पर गई। अपने स्त्री पुत्र को पहचान कर भी राजा हरिश्चंद्र ने बिना कर लिये जलाने देना जब नहीं स्वीकार किया तब रानी ने अपनी साड़ी फाड़ कर देना चाहा। इस पर भगवान वहाँ आकर उन लोगों को अपने लोक में ले गए।

हिरण्यकशिपु—देखिए "प्रह्लाद"।

———



परिशिष्ट–५

पंचनामे की प्रतिलिपि

[देवनागरी लिपि में]

श्री जानकीवल्लभो विजयते

द्विश्शरं नाभिसंधत्ते द्विस्स्थापयति नाश्रितान् ।
द्विर्ददाति न चार्थिभ्यो रामो द्विर्नैव भाषते ।। १ ।।
तुलसी जान्यो दशरथहि धरमु न सत्य समान ।
रामु तजो जेहि लागि बिनु राम परिहरे प्रान ।। २ ।।
धर्म्मो जयति नाधर्म्मस्सत्यं जयति नानृतम् ।
क्षमा जयति न क्रोधो विष्णुर्जयति नासुरः ।। ३ ।।

अल्लाहो अकबर

चूँ अनंदराम बिन टोडर बिन देओराय व कन्हई बिन रामभद्र बिन तोडर मज़्कूर

दर हुजूर आमद : करार दादन कि दर मवाज़िए मतरूकः कि तफ़सीले आँ दर हिंदवी मजकूर अस्त

बिल् मुनासफः बतराजीए जानिबैन .करार दामेम व यक सद व पिंजाह बिघा ज़मीन ज्यादः किस्मत मुनासिफः खुद

दर मौजे भदैनी अनंदराम मज़्कूर व कन्हई बिन रामभद्र मज़्कूर तजवीज़ नमूदः

वरीं मानी राज़ीग़स्तः अतराफ़ सहीह शरई नमूदन्द बिनाबर आँ मुहर करदः शुद

श्रीपरमेश्वर

संवत् १६६९ समये कुआर सुदि तेरसी बार सुभ दीने लिषीतं पत्र अनंदराम तथा कन्हई के अंश बिभाग पुर्वमु आगें जे आग्य दुनहु जने मागा जे आग्य भै शे प्रमान माना दुनहु जने बिदित तफ़सीलु अंश टोडरमलु के माह जे यिभाग पदुहोत रा...

अंश अनंदराम

मौजे भदैनी मह अंश पाच तेहि मह अंश दुइ, अनन्दराम, तथा लहरतारा सगरेउ तथा छितुपुरा अंश टोडरमलुक तथा नयपुरा अंश, टोडरमलुक हील हुज्जती नास्ती लिखातं अनंदराम जे ऊपर लिखा से सही

साछी रायराम रामदत्त सुत
साछी रामसेनी उद्धव सुत
साछी उदेयकरन जगतराय सुत
साछी जमुनी भान परमानंद सुत
साछी जानकीराम श्रीकांत सुत
साखी कवलराम वासुदेव सुत
साखी चंद्रभान केसौदास सुत
साछी पांडे हरीवलभ पुरुषोत्तमसुत
साखी भावश्रो केसौदास सुत
साखी जदुराम नरहरि सुत
साखी अयोध्या लछी सुत
साखी सबल भीष्म सुत
साछी रामचंद्र वासुदीव सुत
साखी पितंबरदास वधीपूरन सुत
साखी रामराय गरीबराय मकट्टरी करन सुत

(शहीद ब माफिह जलाल मकबूली बखतही)
मुहर सादुल्लाह बिन ...
किस्मत अनंदराम
करिया करिया

अंश कन्हई

मौजे भदैनी मह अंश पाँच तेहि मह तीनि अंश कन्हई तथा मौजे शिवपुरा तथा नदेसरी अंश टोडर-मलुक हील हुज्जती नास्ती, लीषीतं कन्हई जे ऊपर लिषा से सही ।

साछी रामसिंह उद्धव सुत
साछी जादोराय गहररायसुत
साछी जगदीस राय महोदधी सुत
साखी चक्रपानी शीवा सुत
साखी मथुरा पीठा सुत
साखी काशीदास वासुदेव सुत
दसखत मथुरा ।
साखी खरगभान गोसाईंदास सुत
साखी रामदेव बीसंभर सुत
साखी श्रीकांत पांड़े राजचक्र सुत
साछी बिठलदास हरिहर सुत
साछी हीरा दसरथ सुत
साछी लोहग कीस्ना सुत
साखी नजराम शीतल सुत
साखी कृष्णदत्त भगवन् सुत
साखी बिनराबन जय सुत
साखी धनीराम मधुराय सुत

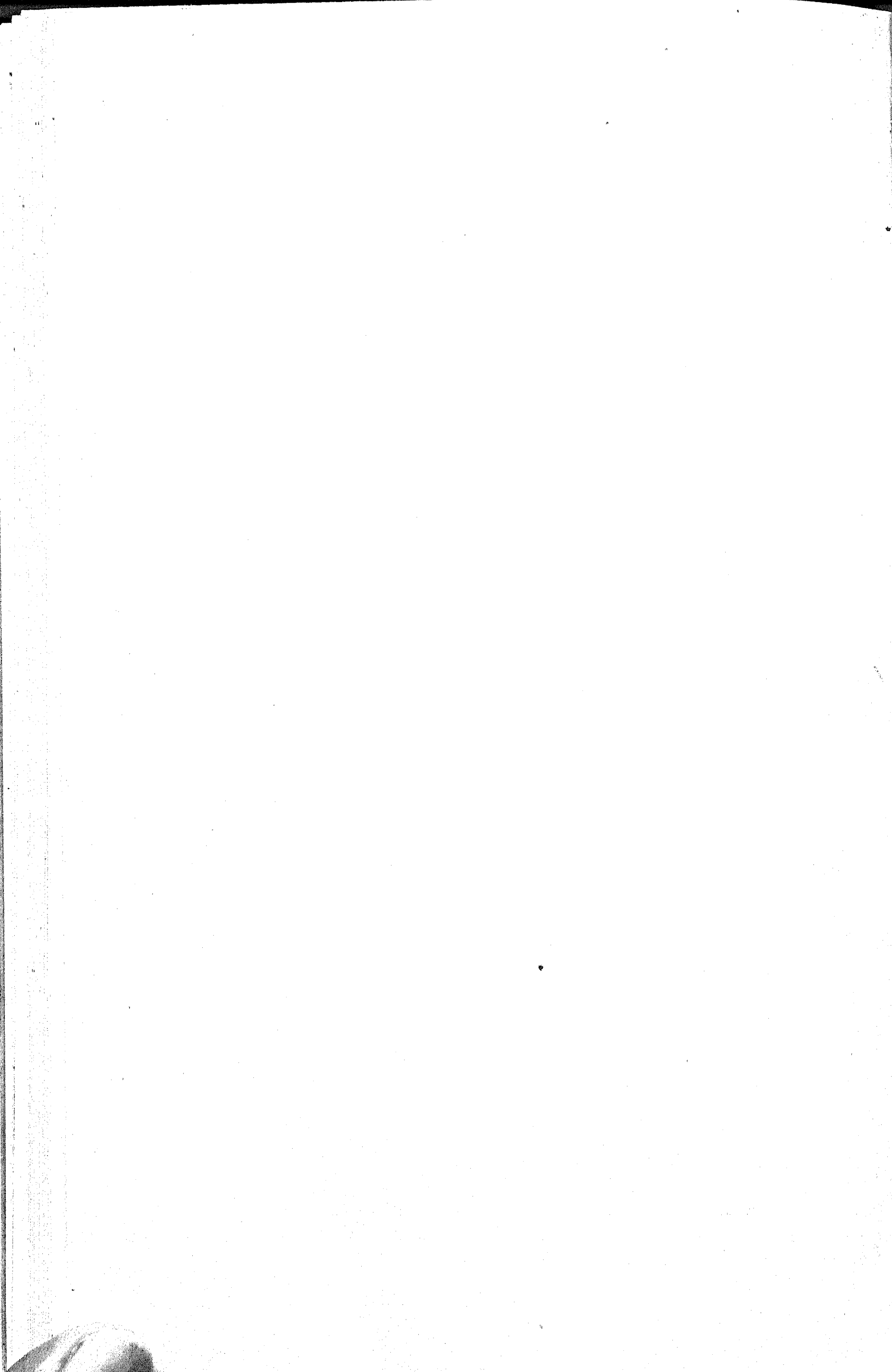
(शहीद ब माफिहताहिर इब्न खाजे दौलते कानूनगोय)
... ...

किस्मत कन्हई
करिया करिया

भदैनी दो हिस्सः लहरतारादरोबिस्त
क़रिया
नैपुरा हिस्से टोडर तमाम
करिया
चितूपुरा खुर्द हिस्सै टोडर तमाम

भदेनी सेह हिस्सा शिवपुर
दरोबिस्त
क़रिया
नदेसर हिस्सै टोडर तमाम
अन्हरुल्ला (अस्पष्ट)

मूल लेखों की शब्दानुक्रमणी



शुद्धिपत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृ०
संस्कुत	संस्कृत	२१
रेलिजस रिफार्म	रेलिजस रिफार्मर	३०
शिष्य ये	शिष्य थे	३८
सोउ तेहि सभा गयउ करि फेरू	सोउ हिय हारि गयेउ करि फेरू	३९
बिबिध क्रीड़ा	बिबिध बिधि क्रीड़ा	४१
देखन फिरौं	देखत फिरौं	४१
नयनन्हि नी रोमावलि ठाढ़ी।	नयनन्हि नीरु रोमावलि ठाढ़ी।	५९
हाट हाट मंदिर···	हाट बाट मंदिर···	७५
जनु तमु धरे	जनु तनु धरे	७७
सुदिन साधि	सुदिन साधि	८१
२।११७	२।२१७	
पुंनु गुनु कोषू	पुंनु गुनु दोषू	९१
चंडकर जोरी	चंडकर चोरी	९४
धुआँ देखि	धुआ देखि	१००
सुपनखहि समुझाइ	सूपनखहि समुझाइ	१००
राम बचन मुनि	राम बचन सुनि	१३१
लछिम अरु	लछिमन अरु	१४१
बसै भुसुंडा	बसै भुसुंडी	१४७
मृगलोचनी के नैन	मृगलोचनि के नैन	१४९
साधत कठिन अनेक	साधत कठिन बिबेक	१६२
इहिँ सबके	हहिँ सबके	१६३
थाह कि पावै कोई	थाह कि पावै कोइ	१६३
अथवाँ पद निर्बान	अथवा पद निर्बान	१६४
६७ में नहीं है	६, ७ में नहीं है	१६८
बिनु हरि कृपा न होई	बिनु हरि कृपा न होइ	१६९

विशेता	विशेषता (अंतिम पंक्ति)	१७८
सुंदर कांड (पष्ठ सोपान)	लंका कांड (षष्ठ सोपान)	२४७

(हस्तलेखों की संख्यागत) अशुद्धि—

पृष्ठ ४२७ पर हस्तलेख सं० ८७ के बाद पुनः ८८ के स्थान पर ७७ आरंभ हो गया है। और वही क्रम अंत तक चला है। इस प्रकार ७७–८६ तक क्रम दो बार आ गया है। सशुद्ध करने पर यह संख्या १३१ हो जायगी।

२७२ के बाद २६७ पृष्ठ आ गया है। और यही क्रम फिर से २७२ तक चला है। वास्तव में २७२ के बाद २७३ आना चाहिए था।

२८६ के बाद २८७ होना चाहिए था किंतु १८७ से १९४ तक क्रम चला है जब कि यह २८७ से २९४ होना चाहिए।

पृ० ३६४ के बाद २६५ छप गया है, वह ३६५ होना चाहिए।

पृ० ४३४ के बाद ३३५ छपा है, वहाँ ४३५ होना चाहिए।

पृ० ४६० के बाद २६१ छपा है, ४६१ होना चाहिए।

